

DEVIRAHASYA.

INTRODUCTION

In the following pages the Tantric works called Devirahasya and Uddhāraśa are presented in a printed form in the Devanāgarī Script. The former work that is the *Devirahasya* (The secret worship of the *Devi-Tripurā*) is written in the form of a dialogue between *Bhairava* and *devī*. It contains three parts the first being named as *Pūrvārdha*, the second as *Uttarārdha* and the third as *Parīśiṣṭa*.

In the *Pūrvārdha* there are twentyfive chapters called *patalas* devoted to the description respectively of (1) Initiation (2) Incantations of *Devi* (3) Incantations of *Siva* (4) Incantation of *Vishnu* (5) *Utkelana* or laying open for practice of incantations. (6) Vitalising of mantras (7) Method of removing curses attaching to incantations (8) Mental muttering called *Parāyana* (9) How to use, before and after, particular *Bijas* in the case of particular mantras (10) Preliminary practice of mantras (11) Sacrifice conducted in the preliminary practice of mantras (12) Diagrams (13) How to bear on the body emulets having the diagrams (14) Sage, metre etc, of incantation (15, 16) Worship done at crematoriums (17, 18) Purification of the articles of

Worship. (19) Origin of wine. (20) Ceremonious way of taking wine. (21) Peace prayers and hymns of the Śākta heroes (22) Purification of wine. (23) Purification of the maiden. (24) Different kinds of rosary and their purification. (25) Purification etc., of the diagrams

The Uttarārdha otherwise called *Rahasyavijaya* consists of the thirtyfive chapters embodying the *Pañchāṅgas-Pātala*, *Kavacha*, *Paddhati* *Sahasranāma* and *Stotra* of *Ganeśa*, *Sūrya*, *Lakṣmīnārāyaṇa*, *Śiva* and *Durgā*.

Parīśiṣṭa or the appendix gives the *Pañchāṅgas* of *Jvālmukhī*, *Śarika*, *Māharājñī* and *Bālā* the family goddesses of the Kashmiri pandits.

The *Uddhārakośa* put in the mouth of the sage *Dakṣināmūrti* is also included in the appendix. It contains seven sections. The first section gives the incantations of the goddesses *Tripurā*, *Lakṣmī*, *Sarasvatī*, *Tara*, *Bhuvaneśvarī* *Mātangi*, *Śarika*, *Rājñī*, *Bhīṣā* and *Jvālmukhī* along with the synonyms of some *Bijas*.

The second section furnishes incantations of the six additional goddesses *Bhadrakālī*, *Turī*, *Chhinnamastā*, *Dakṣinakālī*, *Śyāmā* and *Kālārātrī*

The third section gives the incantations of *Vajrayoginī*, *Vārāhī*, *Śraddhā*, *Kāmeśvarī*, *Gaurī*, *Annapurnā* and *Kulvāgīśvarī* and the seven boys namely *Ganeśa*, *Vatuka*, *Kumāra*, *Mṛtyuñjaya*, *Kartavyārjunā*, *Sugriva* and *Hanumān*.

The fourth section describes the incantations of the nine planets.

The fifth section gives the synonyms of each letter of the Sanskrit alphabet.

The sixth section deals with the incantations of Bhavānī, Bagalamukhī, Indrākshī and Khecharī.

The seventh section describes the bodily form of each of the goddesses, boys and planets mentioned in the preceding sections.

The Devīrahasya is traditionally supposed to form part of the bigger compilation called Rudrayāmala. The Uddhāraśa, though written in the form of a dialogue between Dakṣināmūrti and his disciple Akṣobhya, is a collection of quotations from no less than fortyseven Tāntric works.

Date and author of the composition. The Devīrahasya in all its parts seems to have been composed by some Kashmirian writer because as already referred to above the goddesses Jvalāmukhī, Śarika Mahārājī, Śaradā, Bhīḍā and Bālā are popular and have their shrines in the Kashmir Valley.

The word Phirangahā appearing at page 307 and that Safak at 317 of the Devīrahasya clearly show that the composition must have taken place, at last in its present form, long after the advent of the Mohamadans and Europeans into India

Srinagar the }
31st March, 1941. }

M. S. KAUL,

विषयानुक्रमिका

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|-------------------------------------|-----------|--------------------------|-----------|
| प्रथमः पटलः । | | मातङ्गमश्वोद्धारः | ११ |
| सम्प्रस्तावः | १ | भुवनेश्वरीमश्वोद्धारः | १२ |
| गुह्यशिवनिर्णयः | " | उग्रतारामश्वोद्धारः | " |
| तत्र दीक्षाग्रहणावश्यता | २ | क्षिप्रमस्तामश्वोद्धारः | " |
| गुरुपरीक्षा | " | सुमुषीमश्वोद्धारः | " |
| शिष्यपरीक्षा | " | सरस्वतीमश्वोद्धारः | " |
| गुरोरभाषे पुस्तकम् | ३ | अन्नपूर्णमश्वोद्धारः | " |
| गुह्यसङ्गाधे पुस्तकगुरुवैभाष्ये | " | महालक्ष्मीमश्वोद्धारः | १३ |
| विश्वदीनां दीक्षाऽप्राप्त्या | " | शारिकामश्वोद्धारः | " |
| दीक्षाग्रहणसमयग्रन्थः | " | शारदामश्वोद्धारः | " |
| तत्समयधिवेचनम् | ४ | रश्मीमश्वोद्धारः | " |
| धीवक्तृभाषणा | " | वपलासुषीमश्वोद्धारः | " |
| तत्र पूजवेष्टता | " | महातुरीमश्वोद्धारः | १४ |
| पूजाक्रमः | " | महाराष्ट्रमश्वोद्धारः | " |
| पूजाहोमनिरूपणम् | ५ | ज्वालामुषीमश्वोद्धारः | " |
| शिष्यस्य संस्कारक्रमः | ६ | मीनामश्वोद्धारः | " |
| विद्याविशेषमह्यनिर्णयः | ७ | कालरात्रीमश्वोद्धारः | " |
| शक्तिदीक्षानिरूपणम् | ८ | मयारीमश्वोद्धारः | १५ |
| द्वितीयः पटलः । | | यज्ञयोगिनीमश्वोद्धारः | " |
| देवी-वैष्णव-शैव-शाक्त-सम्प्रतिरूपण- | | धूम्रधाराक्षीमश्वोद्धारः | " |
| प्रस्तावः | | सिन्धुलक्ष्मीमश्वोद्धारः | " |
| तत्र बातामश्वोद्धारः | १० | कुलधर्माश्वीमश्वोद्धारः | " |
| पञ्चदशक्षरीमश्वोद्धारः | " | पद्मावतीमश्वोद्धारः | " |
| षोडशीमश्वोद्धारः | " | कुञ्जकामश्वोद्धारः | १६ |
| त्रिपुरामश्वोद्धारः | ११ | गौरीमश्वोद्धारः | " |
| विद्यारात्री (१०कालिका)मश्वोद्धारः | " | छेत्रीमश्वोद्धारः | " |
| भद्रकालीमश्वोद्धारः | " | नीलसरस्वतीमश्वोद्धारः | " |
| | | पराशक्तिमश्वोद्धारः | " |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|------------------------|-----------|----------------------------------|-----------|
| तृतीयः पटलः । | | भर्गस्य मन्त्रः | १६ |
| मृत्युञ्जयमन्त्रः | १७ | रुक्मैरघमन्त्रः | " |
| अमृतेश्वरमन्त्रः | " | कालाग्निभैरवमन्त्रः | २० |
| षट्कभैरवमन्त्रः | " | सद्योजातमन्त्रः | " |
| महेश्वरमन्त्रः | १८ | अघोरमन्त्रोद्धारः | " |
| शिवमन्त्रः | " | महाकालमन्त्रः | " |
| स एवापरः | " | कामेश्वरमन्त्रः | " |
| सदाशिवमन्त्रः | " | चतुर्थः पटलः । | |
| रुद्रस्य मन्त्रोद्धारः | " | लक्ष्मीनारायणमन्त्रः | २१ |
| महादेवमन्त्रः | " | राधाकृष्णमन्त्रः | " |
| करालमन्त्रः | " | विष्णुमन्त्रोद्धारः | " |
| त्रिकरालमन्त्रः | " | लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः | " |
| नीलकण्ठमन्त्रः | " | लक्ष्मीवराहमन्त्रः | " |
| शर्वस्य मन्त्रः | " | भार्गवराममन्त्रः | २२ |
| पशुपतिमन्त्रः | १९ | सीताराममन्त्रः | " |
| मृदमन्त्रोद्धारः | " | जनार्दनमन्त्रः | " |
| मिनाकिमन्त्रः | " | विश्वक्सेनमन्त्रः | " |
| गिरिशस्य मन्त्रोद्धारः | " | लक्ष्मीवासुदेवमन्त्रः | " |
| मीनस्य मन्त्रोद्धारः | " | पञ्चमः पटलः । | |
| महागणपतिमन्त्रः | " | बालामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः | २३ |
| प्रमथाधिपमन्त्रः | " | त्रिपुरभैरवीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः | " |
| कुमारमन्त्रोद्धारः | " | षोडशीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः | " |
| क्रोधनेशमन्त्रः | " | भद्रकालीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः | " |
| ईशस्य मन्त्रोद्धारः | " | मातङ्गीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः | " |
| कपालीशमन्त्रोद्धारः | " | भुवनेश्वरीमन्त्रोत्कीलनम् | २४ |
| रुक्मैरवमन्त्रः | " | तारामन्त्रोत्कीलनम् | " |
| संहारभैरवमन्त्रः | " | क्षिप्रमस्तामन्त्रोत्कीलनम् | " |
| ईश्वरमन्त्रोद्धारः | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|---|-----------|-----------------------------|-----------|
| सुमुखीमन्त्रोत्कीलनम् | २४ | अमृतेश्वरमन्त्रस्योत्कीलनम् | २७ |
| सरस्वतीमन्त्रोत्कीलनम् | " | घट्टकभैरवमन्त्रस्य० | " |
| अन्नपूर्णांमन्त्रोत्कीलनम् | " | नीलकण्ठमन्त्रस्य० | " |
| महालक्ष्मीमन्त्रोत्कीलनम् | " | सद्योजातशिवमन्त्रस्य० | " |
| शारिकामन्त्रोत्कीलनम् | " | महागणपतिमन्त्रस्य० | " |
| शारदामन्त्रोत्कीलनम् | " | अघोरभैरवमन्त्रस्य० | " |
| इन्द्राक्षीमन्त्रोत्कीलनम् | " | कामेश्वरमन्त्रस्य० | " |
| वगलामुखीमन्त्रोत्कीलनम् | " | लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य० | " |
| तुरीमन्त्रोत्कीलनम् | " | राधाकृष्णमन्त्रस्य० | " |
| महाराक्षीमन्त्रोत्कीलनम् | २५ | विष्णुमन्त्रोत्कीलनम् | २८ |
| ज्वालामुखीमन्त्रोत्कीलनम् | " | लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य० | " |
| भीष्मामन्त्रोत्कीलनम् | " | लक्ष्मीधराहमन्त्रस्य० | " |
| कालरात्रिमन्त्रस्योत्की० | " | भार्गवराजमन्त्रस्य० | " |
| भवानीमन्त्रोत्कीलनम् | " | सीताराममन्त्रस्य० | " |
| वज्रयोगिनीमन्त्रस्य० | " | जनादेनमन्त्रस्य० | " |
| धूमवाराहीमन्त्रोत्कीलनम् | " | विश्वक्सेममन्त्रस्य० | " |
| सिद्धलक्ष्मीमन्त्रोत्कीलनम् | " | वासुदेवमन्त्रोत्कीलनम् | " |
| कुलवागीश्वरीमन्त्रस्य० | " | पृष्ठः पटलः । | |
| पद्मावतीमन्त्रोत्कीलनम् | " | बालामन्त्रसंजीवनम् | २६ |
| कुब्जिकामन्त्रस्य० | " | त्रिपुरभैरवीमन्त्रस्य० | " |
| गौरीमन्त्रस्योत्कीलनम् | " | त्रिकूटामन्त्रस्य० | " |
| खेचरीमन्त्रोत्कीलनम् | " | मद्रकालीमन्त्रसंजीवनम् | " |
| नीलसरस्वतीमन्त्रस्य० | २६ | मातङ्गीमन्त्रसंजीवनम् | " |
| पराशक्तिमन्त्रस्य० | " | भुवनेश्वरीमन्त्रसंजीवनम् | " |
| केचन शैवमन्त्रा अनिष्कालितास्ते | " | उग्रतारामन्त्रस्य० | " |
| पुरश्चरणैव सिद्धा | " | क्षिप्रमस्तामन्त्रस्य० | ३० |
| प्रतिमन्त्र मन्त्रादिविजत्रिरावृत्त्या वा | " | सुमुखीमन्त्रस्य० | " |
| उत्कीलिता भवन्ति | " | सरम्भतीमन्त्रस्य० | " |
| मृत्युञ्जयमन्त्रोत्कीलनम् | २७ | | |

| विषयः | पार्थम् | विषयः | पार्थम् |
|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अक्षपूर्णमन्त्रसंजीवनम् | ३० | महागणपतिमन्त्रसंजीवनम् | ३२ |
| महालक्ष्मीमन्त्रस्य० | " | अघोरभैरवमन्त्रस्य० | " |
| शारिकामन्त्रस्य० | " | कामेश्वरमन्त्रसंजीवनम् | " |
| शारदामन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य० | ३३ |
| इन्द्राक्षीमन्त्रस्य० | " | राधाकृष्णमन्त्रस्य० | " |
| पद्मलामुखीमन्त्रस्य० | " | विष्णुमन्त्रसंजीवनम् | " |
| महातुटीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य० | " |
| महाराष्ट्रीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य० | " |
| ज्वालामुखीमन्त्रस्य० | " | भार्गवराममन्त्रस्य० | " |
| भीष्मामन्त्रसंजीवनम् | " | सीताराममन्त्रस्य० | " |
| कालरात्रीमन्त्रस्य० | ३१ | जनार्दनमन्त्रसंजीवनम् | " |
| भवानीमन्त्रस्य० | " | विश्वप्सेनमन्त्रस्य० | " |
| वज्रयोगिनीमन्त्रस्य० | " | वासुदेवमन्त्रस्य० | " |
| धूम्रवाराहीमन्त्रस्य० | " | सप्तमः पटलः । | |
| सिद्धलक्ष्मीमन्त्रस्य० | " | बालामन्त्रशापमोचनम् | ३४ |
| कुलवागीश्वरीमन्त्रस्य० | " | त्रिपुरभैरवीमन्त्रशापमोचनम् | " |
| पद्मावतीमन्त्रस्य० | " | त्रिकूटामन्त्रशापमोचनम् | " |
| कुब्जिकामन्त्रस्य० | " | दक्षिणकालिकामन्त्रस्य० | " |
| गौरीमन्त्रसंजीवनम् | " | भद्रकालीमन्त्रस्य० | " |
| खेचरीमन्त्रस्य० | " | मातङ्गीमन्त्रशापमोचनम् | ३५ |
| नीलसरस्वतीमन्त्रस्य० | " | भुवनीश्वरीमन्त्रस्य० | " |
| पराशक्तिमन्त्रस्य० | " | उग्रतारामन्त्रस्य० | " |
| सर्वेश्वरमन्त्र-संजीवनमन्त्र | ३२ | क्षिप्रमस्तामन्त्रस्य० | " |
| मृत्युञ्जयमन्त्रसंजीवनम् | " | सुमुखीमन्त्रशापमोचनम् | " |
| अमृतेश्वरमन्त्रस्य० | " | सरस्वतीमन्त्रशापमोचनम् | " |
| वटुकभैरवमन्त्रस्य० | " | अक्षपूर्णमन्त्रस्य० | " |
| नीलकण्ठमन्त्रसंजीवनम् | " | महालक्ष्मीमन्त्रस्य० | " |
| सद्योजातमन्त्रस्य० | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| शारिकामन्त्रशापमोचनम् | ३५ | महाकालभैरवमन्त्रशापमोचनम् | ३८ |
| शारदामन्त्रस्य० | " | कामेश्वरमन्त्रस्य० | " |
| इन्द्राक्षीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य० | " |
| वज्रलामुखीमन्त्रस्य० | " | राधाकृष्णमन्त्रस्य० | " |
| तुर्यामन्त्रस्य० | ३६ | विष्णुमन्त्रस्य० | " |
| महाराक्षीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य० | " |
| ज्वालामुखीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य० | " |
| भीष्मामन्त्रस्य० | " | भार्गवराममन्त्रस्य० | " |
| कालरात्रिमन्त्रस्य० | " | सीताराममन्त्रस्य० | " |
| भयानीमन्त्रस्य० | " | जनार्दनमन्त्रस्य० | " |
| वज्रयोगिनीमन्त्रस्य० | " | विश्वक्सेनमन्त्रस्य० | ३६ |
| धूम्रवाराहीमन्त्रस्य० | " | वासुदेवमन्त्रस्य० | " |
| सिद्धलक्ष्मीमन्त्रस्य० | " | अष्टमः पटलः । | |
| कुलवागीश्वरीमन्त्रस्य० | " | जपसाधनप्रकारः | ३६ |
| पद्मावतीमन्त्रस्य० | " | शुद्धपूजामन्त्रः | ४० |
| कुञ्जिकामन्त्रस्य० | " | पारायणजपविधिप्रश्नः | " |
| गौरीमन्त्रस्य० | " | पारायणजपनिर्णयः | ४१ |
| खेचरीमन्त्रस्य० | ३७ | नवमः पटलः । | |
| नीलसरस्वतीमन्त्रस्य० | " | वातामन्त्रसंपुटमन्त्रः | ४१ |
| पराशक्तिमन्त्रस्य० | " | लिकूटामन्त्रसंपुटमन्त्रः | ४२ |
| सदाशिवमन्त्रशापमोचनम् | " | त्रिपुरभैरवीमन्त्रस्य० | " |
| नृत्यपञ्चशापमोचनम् | " | भद्रकालीमन्त्रस्य० | ४३ |
| अमृतेश्वरमन्त्रस्य० | " | रोजमातङ्गीमन्त्रस्य० | " |
| शट्कभैरवमन्त्रस्य० | " | भुवनेश्वरीमन्त्रस्य० | " |
| नीलकण्ठमन्त्रस्य० | " | उग्रतारामन्त्रस्य० | " |
| सघोजातमन्त्रस्य० | " | द्विधमस्तामन्त्रस्य० | " |
| महागणपतिमन्त्रस्य० | " | | |
| स्यञ्जुन्दाधमन्त्रस्य० | ३८ | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|-------------------------------------|-----------|--------------------------|-----------|
| उच्छिष्टमातङ्गी (सुमुखी) मन्त्रस्य० | ४३ | नीलकण्ठमन्त्रस्य० | ४४ |
| सरस्वतीमन्त्रस्य० | " | सद्योजातमन्त्रस्य० | " |
| अक्षपूर्णा मन्त्रस्य० | " | महागणपतिमन्त्रस्य० | " |
| महालक्ष्मीमन्त्रस्य० | " | अधोरमैरवमन्त्रस्य० | ४५ |
| शारिकामन्त्रस्य० | " | कामध्वरेमन्त्रस्य० | " |
| शारदामन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य० | " |
| इन्द्राक्षीमन्त्रस्य० | " | राधाकृष्णमन्त्रस्य० | " |
| वगलामुखीमन्त्रस्य० | ४४ | विष्णुमन्त्रस्य० | " |
| तुषामन्त्रसंपुटमन्त्रः | " | लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य० | " |
| महाराक्षीमन्त्रस्य० | " | लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य० | " |
| ज्वालामुखीमन्त्रस्य० | " | भार्गवराममन्त्रस्य० | " |
| भीष्ममन्त्रसंपुटीकरणम् | " | सीताराममन्त्रस्य० | " |
| काक्षदात्रिमन्त्रस्य० | " | जनार्दनमन्त्रस्य० | " |
| भवानीमन्त्रस्य० | " | विश्वकृत्सेनमन्त्रस्य० | ४७ |
| वज्रयोगिनीमन्त्रस्य० | " | वासुदेवमन्त्रस्य० | " |
| धूम्रवाराहीमन्त्रस्य० | " | दशमः पटलः । | |
| सिञ्जलवर्मीमन्त्रस्य० | " | पुरश्चरवसामनम् | ४७ |
| कुलवागीश्वरीमन्त्रस्य० | " | तत्त्वाननिर्णयः | " |
| पद्मावतीमन्त्रसंपुटीकरणम् | " | पुरश्चर्यायन्त्रनिरूपणम् | ४८ |
| कुम्भिकामन्त्रस्य० | ४४ | तत्पूजाप्रकारः | " |
| गौरीमन्त्रसंपुटीकरणमन्त्रः | " | अपान्ते तर्पणविधिः | ४९ |
| अवरीमन्त्रस्य० | " | पुरश्चर्याप्रकारान्तराणि | " |
| नीलसरस्वतीमन्त्रस्य० | " | अन्यप्रकारेण पुरश्चर्या | ५० |
| पराशक्तमन्त्रस्य० | " | ग्रहणपुरश्चरणम् | " |
| सामान्यशैवमन्त्रसंपुटीकरणमन्त्रः | " | एकादशः पटलः । | |
| मृत्युञ्जयमन्त्रस्य० | " | पुरश्चरणदोमविधिः | ५१ |
| अमृतेश्वरमन्त्रस्य० | " | | |
| वटुकमैरवमन्त्रस्य० | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|----------------------------------|-----------|------------------------------------|-----------|
| तत्र श्रीचक्रपूजा कुर्यादपरिमिति | | मीढायन्त्रोद्धारः | ६० |
| तत्पूजा च | ५२ | कालरात्रीयन्त्रोद्धारः | " |
| अग्निपूजादिहोमनिरूपणम् | ५३ | भवानीयन्त्रोद्धारः | ६१ |
| कुलसाधकपूजा—तन्निर्णयश्च | ५४ | वज्रयोगिनीयन्त्रोद्धारः | " |
| तत्फलनिरूपणम् | " | धूम्रवाराहीयन्त्रोद्धारः | " |
| द्वादशः पटलः । | | सिद्धलक्ष्मीयन्त्रोद्धारः | " |
| चक्राणामुद्धारः | ५५ | कुलवार्गीश्वरीयन्त्रोद्धारः | " |
| वालायन्त्रोद्धारः | " | पद्मावतीयन्त्रोद्धारः | ६२ |
| त्रिपुरभैरवीयन्त्रोद्धारः | " | कुम्भिकायन्त्रोद्धारः | " |
| त्रिपुरसुन्दरीयन्त्रोद्धारः | ५६ | गौरीयन्त्रोद्धारः | " |
| श्रीचक्रोद्धारः | " | ऐश्वरीयन्त्रोद्धारः | " |
| कालिकायन्त्रोद्धारः | " | नीलसरस्वतीयन्त्रोद्धारः | ६३ |
| भद्रकालीयन्त्रोद्धारः | " | पराशक्तियन्त्रोद्धारः | " |
| मातङ्गीयन्त्रोद्धारः | " | शिवस्य साधारणयन्त्रोद्धारः | " |
| भुवनेश्वरीयन्त्रोद्धारः | ५७ | साधारणवैष्णवयन्त्रोद्धारः | " |
| उग्रतारायन्त्रोद्धारः | " | अघोरभैरवयन्त्रोद्धारः | ६४ |
| क्षिप्रमस्तायन्त्रोद्धारः | " | लक्ष्मीनारायणयन्त्रोद्धारः | " |
| सुमुखीयन्त्रोद्धारः | " | त्रयोदशः पटलः । | |
| सरस्वतीयन्त्रोद्धारः | ५८ | यन्त्रधारणविधिः | ६५ |
| अन्नपूण्ययन्त्रोद्धारः | " | यन्त्रपूजानिरूपणम् | " |
| महालक्ष्मीयन्त्रोद्धारः | " | गन्धाष्टकनिरूपणम् | " |
| शारिकायन्त्रोद्धारः | " | यन्त्रधारणयन्त्र—तत्पूजाप्रकारः | ६६ |
| शारदायन्त्रोद्धारः | ५९ | तद्धारणफलम् | ६८ |
| इन्द्राक्षीयन्त्रोद्धारः | " | चतुर्दशः पटलः । | |
| वगलामुखीयन्त्रोद्धारः | " | मन्त्रेषु ऋष्यादिविनिर्णयप्रस्तावः | ६८ |
| तुषांयन्त्रोद्धारः | " | ऋषिविनिर्णयः | ६९ |
| महारात्रीयन्त्रोद्धारः | ६० | छन्दोविनिर्णयः | " |
| ज्यान्तामुनीयन्त्रोद्धारः | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|---------------------------------------|-----------|--|-----------|
| देवताविनिर्णयः | ६६ | एकोनविंशः पटलः । | |
| बीजविनिर्णयः | " | सुरोत्पत्तिनिरूपणम् | ८३ |
| शक्तिविनिर्णयः | " | तस्या ध्यानम् | " |
| कौलिकविनिर्णयः | " | स्तुतिगुणः तथा प्रथमं पात्रं सदा- | |
| दिग्दन्धनविनिर्णयः | ७० | शिवाय दत्तं तद्विन्दुपाताद्- | |
| पञ्चदशः पटलः । | | गुडलताद्युत्पत्तिः | ८३ |
| श्मशानसाधनप्रस्ताव | ७० | इन्द्रदत्त-द्वितीयपात्रविन्दुपाताद् | " |
| साधनार्चाक्रमः | ७१ | द्राक्षादीनामुत्पत्तिः | ८४ |
| श्मशानभैरवोत्थितिक्रमः | " | उद्भूतदत्त-तृतीयपात्रविन्दुपाताद् | " |
| षोडशः पटलः । | | गोधूमाद्युत्पत्तिः | " |
| श्मशानपूजापद्धतिः | ७२ | पितृदत्तचतुर्थपात्रविन्दुपातात्संवि- | |
| वारक्रमेण भूतभैरवसाधनम् | ७३ | द्युत्पत्तिः | " |
| श्मशानकालिकापूजामन्त्रः | ७४ | परमेश्वरदत्तपञ्चमपात्रविन्दुपाता- | " |
| तस्याः पूजाक्रमः | " | त्पूरककाद्युत्पत्तिः | ८४ |
| सुरापानविधानम् | ७६ | इन्द्रदत्तषष्ठपात्रविन्दुपाताज्जातीकला | |
| पूजां विः । मपञ्चकसेवने प्रत्ययायः ७७ | | द्युत्पत्तिः | " |
| सप्तदशः पटलः । | | गुडदत्तसप्तमपात्रविन्दुपाताभारिके- | |
| मालाकपा रुद्रणशोधनम् | ७८ | लाद्युत्पत्तिः | ८५ |
| अष्टादशः पटलः । | | शुक्रदत्ताष्टमपात्रविन्दुपातात् | " |
| मालादिशोधनपद्धतिः | ७९ | खजूरालाद्युत्पत्तिः | " |
| गव्यादिनिरूपणम् | ७९ | सूर्याचन्द्रमसोर्नवमपात्रविन्दुपातात् | " |
| यन्त्रेश्वरीमन्त्रः | " | ओषध्याद्युत्पत्तिः | " |
| नृदन्तमालाशोधनमन्त्रः | ८१ | देवानां सुरावरणम् | " |
| रुद्रणशोधनमन्त्रः | " | पूजायां सुरावश्यकता | ८६ |
| साधकवक्रार्चानिरूपणम् | " | त्रिंशः पटलः । | |
| | " | पात्रग्रन्थान्निरूपणम् | ८६ |
| | " | कौलिकवीरस्वभावः | ८६ |

विषयानुक्रमिका

६

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|-------------------------------------|-----------|------------------------------|-----------|
| एकविंशः पटलः । | | अमृतीकरणमन्त्रः | १०५ |
| शान्तिस्तोत्रम् | ६१ | आनन्दमैरयमन्त्रः | १०६ |
| धीरघनन्दस्तोत्रम् | ६३ | आनन्दमैरयमन्त्रः | " |
| स्तोत्रफलप्रशंसा | ६७ | सुरादेयीध्यानं तन्मन्त्रः | १०७ |
| द्वाविंशः पटलः । | | कलय अमृततत्त्वध्यानम् | १०८ |
| सुराशुद्धिविधिनिर्णयः | ६८ | द्रव्यशोधनप्रस्तावः | " |
| हलिपादुर्भावे कलशस्था सुराशुकेण | | शोधनमन्त्रनिरूपणम् | १०९ |
| प्रक्षरिभिश्च यत्ता | " | भैरवपागः | ११० |
| अच्छवणाद्दैत्या मुदिता निर्बलान् | | त्रयोविंशः पटलः । | |
| देवान् स्वर्गाक्षिराकुर्वन् | " | शक्तिशोधनप्रस्तावः | १११ |
| नेराकृतैर्दैवैर्यज्ञे शिवादीनामाया- | | शक्तिप्रशंसा | ११२ |
| हनम् | ६९ | नवकन्यानिरूपणम् | " |
| तत्र शुचि पुरस्त्व निर्बलताकारणं | | शक्तिशोधनमन्त्रस्तदुप्यायीनि | ११३ |
| सुराशपः इति निवेदनम् | " | आसनशोधनाग्रे भूतशुद्ध्यादि | " |
| इवानां शिवस्तुतिप्रिया | " | धीवक्रस्थापनम् | " |
| प्राकाशवार्त्ताश्रवणम् | १०० | तत्र शक्तिस्थापनम् | ११४ |
| तुन सदाशिवस्तुतिः | " | शक्तिपवित्रीकरणमन्त्रः | " |
| महादेवस्य सुराशोधनप्रकार- | | कामिन्यभिषेकान्ते म्यासः | " |
| कथनम् | १०१ | पञ्चबाणमुद्राम्यासः | " |
| मण्डलनिर्णयः | " | नदिनीमन्त्रोद्धारः | " |
| मण्डले कलायां तन्नाममन्त्राश्च | " | कापालिनोमन्त्रोद्धारः | ११५ |
| छुरिकाविद्या | १०४ | वेश्याशोधनमन्त्रोद्धारः | " |
| तिरस्करिणीध्यानम् | " | रजकोशोधनमन्त्रोद्धारः | " |
| तिरस्करिणीविद्या | १०५ | नापितलीशोधनमन्त्रो० | " |
| पावमानी ऋक् | " | प्राह्वलीशोधनमन्त्रोद्धारः | " |
| कुण्डलिनीध्यानार्नातेनामृतेनामृती- | | शुद्धाणीशोधनमन्त्रोद्धारः | " |
| करणम् | " | गोपत्रीशोधनमन्त्रः | " |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|--------------------------|-----------|---|-----------|
| मालिनीशोधनमन्त्रः | ११५ | अष्टधा धातुयन्त्रोत्प्लेखनम् | १२१ |
| दीक्षितायां वीरतर्पणम् | ११६ | धातुनिर्मितयन्त्रस्य कियत्काला- न्तरेण पुनः शोधनम् | १२ |
| चतुर्विंशः पटलः । | | यन्त्रशोधनमन्त्रार्थाद | " |
| मालाशोधनप्रस्तावः | ११७ | यन्त्रस्थापनं तच्छुद्धिश्च | " |
| मालाया अक्षसंख्या | " | स्वर्णयन्त्रशोधनमन्त्रः | १२५ |
| मालारक्षद्वयनिरूपणम् | ११८ | रजतयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| मेढ्रनिरूपणम् | " | ताम्रयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| देवविशेषे मालाविशेषः | ११९ | स्फटिकयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| करमालानिर्णयः | " | रोधयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| कुलिकत्यागः | १२० | कपालयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| मालाशोधनम् | " | पाशासयन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| मालामन्त्रार्थादि | १२१ | वैष्णवशिलायन्त्रशोधनमन्त्रः | " |
| शंखमालाशोधनमन्त्रः | " | निशोथकालनिर्णयः | १२६ |
| सुक्लामालाशोधनमन्त्रः | " | महानिशाभनिरूपणम् | " |
| रौप्यमालाशोधनमन्त्रः | " | महानिशाभपत्रशंसा | १२७ |
| स्फटिकमालाशोधनमन्त्रः | " | | |
| रुद्राक्षमालाशोधनमन्त्रः | १२२ | पञ्चविंशः पटलः । | |
| मुलसीमाज्ञाशोधनमन्त्रः | " | तन्त्रोत्तरार्धप्रस्तावः | १२८ |
| मणिमालाशोधनमन्त्रः | " | देवानां भावनपेक्षानिरूपणम् | " |
| सुवर्णमालाशोधनमन्त्रः | " | सर्वेषु चक्रेष्वभेदयुक्त्या सर्वदेवपूजा | १२९ |
| पद्माक्षमालाशोधनमन्त्रः | " | तन्त्रोत्तरार्धे पञ्चाङ्गनिरूपणम् | " |
| दन्तमाला-मुण्डमालाशोधन० | " | गणपतिपञ्चाङ्गपितारः | " |
| सर्पमालाशोधनमन्त्रः | " | महागणपतिमन्त्रोद्धारः | १३१ |
| अन्यमालाशोधनमन्त्रः | " | गणपतिमन्त्रोद्धारः | " |
| करमालाशोधनमन्त्रः | १२३ | गणपतिध्यानम् | " |
| पञ्चविंशः पटलः । | | गणपतिलयाङ्गम् | १३२ |
| यन्त्रशोधनप्रस्तावः | १२३ | गणपतिमन्त्रतद्व्यादि | १३३ |
| | | महागणपतिमन्त्रेण पदकर्मनाशनं | " |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|----------------------------|-----------|---------------------------------|-----------|
| सप्तविंशः पटलः । | | त्रयस्त्रिंशः पटलः । | |
| महागणपतिपूजापद्धतिः | १३४ | सूर्यकपधम् | १७६ |
| अष्टाविंशः पटलः । | | चतुर्विंशः पटलः । | |
| महागणपतिकथयम् | १३६ | सूर्यसहस्रनामकम् | १८४ |
| एकोनविंशः पटलः । | | पञ्चविंशः पटलः । | |
| महागणपतिसहस्रनामकम् | १४२ | सूर्यमूलमन्त्रस्तोत्रम् | २०० |
| त्रिंशः पटलः । | | षट्त्रिंशः पटलः । | |
| महागणपतिमूलमन्त्रस्तोत्रम् | १४६ | सप्तविंशः पटलः । | |
| एकविंशः पटलः । | | लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गावतारः | २०४ |
| सूर्यपञ्चाङ्गावतारः | १४६ | नारायणमन्त्रसहकाराद्य | २०७ |
| सूर्यमन्त्रोद्धार | १६१ | नारायणमन्त्रार्घ्यादितिरूपणम् | २०८ |
| ऋष्यादिनिरूपणम् | १६२ | लक्ष्मीनारायणपञ्चमम् | " |
| डाकीलनादिमन्त्राः | " | लक्ष्मीनारायणलपाङ्गम् | " |
| सूर्यप्यानम् | १६३ | स्तम्भनाद्यष्टौ प्रयोगाः | २०९ |
| सूर्ययन्त्रोद्धार | " | सप्तविंशः पटलः । | |
| सूर्यतयाङ्गम् | " | लक्ष्मीनारायणपूजापद्धतिः | २११ |
| पद्ममुद्रानिर्णयः | १६४ | अष्टाविंशः पटलः । | |
| बिम्बमुद्रानिर्णय | " | लक्ष्मीनारायणकथयम् | २१६ |
| भास्करमुद्रानिर्णयः | १६५ | एकोनचत्वारिंशः पटलः । | |
| अशोढामुद्रानिर्णय | " | लक्ष्मीनारायणसहस्रनामकम् | २२३ |
| वशीकरणाद्यष्टौ प्रयोगाः | " | चत्वारिंशः पटलः । | |
| द्वाविंशः पटलः । | | लक्ष्मीनारायणमूलमन्त्रस्तोत्रम् | २३६ |
| सूर्यपूजापद्धतिनिरूपणम् | १६७ | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|-----------------------------------|-----------|-------------------------------|-----------|
| एकचत्वारिंशः पटलः । | | दुर्गामन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | २८४ |
| मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गावतारः | २४२ | सप्तचत्वारिंशः पटलः । | |
| मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः | २४४ | दुर्गापूजापद्धतिः | २८६ |
| मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः | २४५ | अष्टाचत्वारिंशः पटलः । | |
| मृत्युञ्जयलयाङ्गम् | " | दुर्गाकवचनिरूपणम् | २८४ |
| मृत्युञ्जयमन्त्रस्पर्धादि | " | एकोनपञ्चाशच्चमः पटलः । | |
| मृत्युञ्जयभ्यानम् | २४६ | दुर्गामन्त्रनामसहस्रकम् | २८८ |
| मृत्युञ्जयमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | " | पञ्चाशच्चमः पटलः । | |
| द्वाचत्वारिंशः पटलः । | | दुर्गामूलमन्त्रस्तोत्रम् | ३१० |
| मृत्युञ्जयपूजापद्धतिः | २४८ | एकपञ्चाशच्चमः पटलः । | |
| त्रयश्चत्वारिंशः पटलः । | | दुर्गारहस्यप्रस्तावः | ३१५ |
| मृत्युञ्जयकवचम् | २४२ | दुर्गाभुवननिर्ययः | ३१६ |
| चतुश्चत्वारिंशः पटलः । | | दुर्गागुप्तावेद्यानिर्ययः | ३१७ |
| मृत्युञ्जयसहस्रनामकम् | २६५ | दुर्गाभुवनार्वाप्रशंसा | ३१८ |
| पञ्चचत्वारिंशः पटलः । | | द्विपञ्चाशच्चमः पटलः । | |
| मृत्युञ्जयमूलमन्त्रस्तोत्रम् | २७७ | दुर्गामन्त्रसाधनरहस्यम् | ३१६ |
| षट्चत्वारिंशः पटलः । | | दुर्गामन्त्रसञ्जीवनम् | " |
| दुर्गापञ्चाङ्गावतारः | २८१ | दुर्गामन्त्रसंपुटीकरणम् | " |
| दुर्गामन्त्रोद्धारः | २८२ | त्रिपञ्चाशच्चमः पटलः । | |
| दुर्गामन्त्रस्पर्धादयः | " | शिवविद्यानिर्ययः | ३२० |
| दुर्गाभ्यानम् | २८३ | कस्या देव्याः कः शिवः | " |
| दुर्गायन्त्रम् | " | नीलकण्ठमन्त्रस्पर्धादि | ३२१ |
| दुर्गालयाङ्गनिरूपणम् | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|--------------------------------|-----------|--------------------------------|-----------|
| लक्षणध्यानम् | ३२१ | तत्र रात्रिजपविधिः | ३३१ |
| लक्षणध्यानश्रोतारः | " | होमादिवशांशनिर्णयः | " |
| चतुष्पञ्चाशत्तमः पटलः । | | होमाशक्तस्य श्रमयानसाधनयुक्तिः | ३३२ |
| लक्षाविधिनिरूपणम् | ३२२ | श्रमशानार्चनम् | " |
| लक्षाग्रशंसा | ३२३ | अष्टपञ्चाशत्तमः पटलः । | |
| लक्षाकालनिर्णयः | ३२४ | चक्रार्चननिरूपणम् | ३३४ |
| लोदीक्षादानम् | " | चक्रार्चने साधकनिर्णयः | " |
| पञ्चपञ्चाशत्तमः पटलः । | | आसनासर्गते कुम्भस्थापनम् | ३३५ |
| नन्दराजपुरश्चरः क्रमः | ३२५ | तस्यार्चाक्रमः | " |
| रक्षरूपं गुरुहस्तेन कारयितव्यं | ३२६ | बलिदानान्तरे तर्पणम् | ३३६ |
| नन्दवशांशतो होमार्चानि | " | पात्रार्चनम् | " |
| रक्षरूपस्थानानि | " | कन्यापूजनम् | " |
| रक्षरूपप्रकारान्तराणि | ३२७ | एकोनपटितमः पटलः । | |
| षट्पञ्चाशत्तमः पटलः । | | दुर्गातत्त्वनिरूपणम् | ३३७ |
| श्रद्धेभ्योविधिनिर्णयः | ३२८ | दक्षिणाधारनिर्णयः | " |
| श्रद्धेभ्योविधिराजपेन वर्ण्य- | | धामाधारनिर्णयः | " |
| क्षपुरक्षर्याफलम् | ३२९ | कुलाधारनिर्णयः | ३३८ |
| गुर्गामन्त्रोद्धारः | " | आधारपरो मुक्तिभाह | " |
| गारवामन्त्रोद्धारः | " | षट्पटितमः पटलः । | |
| गारिकामन्त्रोद्धारः | ३३० | धीदुर्गारहस्यं गुरुपूजनम् | ३३९ |
| उमुर्गामन्त्रोद्धारः | " | गुर्वर्चास्थानानि | " |
| गलामन्त्रोद्धारः | " | गुर्वर्चापञ्चम् | " |
| सप्तपञ्चाशत्तमः पटलः । | | गुर्वर्चापञ्चे गुरुपूजनम् | " |
| होमविधिनिरूपणम् | ३३१ | गुरुप्रार्थनास्तुतिः | ३४० |
| | | देवीरहस्यध्वजस्तुत्यम् | ३४१ |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|-------|-----------|-------|-----------|
|-------|-----------|-------|-----------|

(परिशिष्टम् ।)

तत्र ज्वालामुखीपञ्चाङ्गम् ।

| | |
|-----------------------------------|-----|
| ज्वालामुखीपटलावतारः | ३४३ |
| ज्वालामुखीमन्त्रोद्धारः | ३४४ |
| तत्फलनिरूपणम् | " |
| ज्वालामुखीयन्त्रोद्धारः | " |
| ज्वालामुखीलयाङ्गम् | ३४५ |
| ज्वालामुखीध्यानम् | ३४६ |
| ज्वालामुखीमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | ३४७ |
| ज्वालामुखीपूजापद्धतिः | ३४९ |
| ज्वालामुखीकवचम् | ३५७ |
| ज्वालामुखीसहस्रनामकम् | ३६० |
| ज्वालामुखीमूलमन्त्रस्तोत्रम् | ४०३ |

शारिकापञ्चाङ्गम् ।

| | |
|-------------------------------|-----|
| पञ्चाङ्गप्रस्तावः | ४०७ |
| शारिकामन्त्रोद्धारः | " |
| शारिकामन्त्रप्रशंसा | ४०८ |
| शारिकामन्त्रध्यादीनि | " |
| शारिकाध्यानम् | ४०८ |
| शारिकायन्त्रोद्धारः | ४०९ |
| शारिकालयाङ्गम् | " |
| शारिकामन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | ४१० |
| शारिकापूजापद्धतिः | ४१२ |
| शारिकात्रैलोक्यमोहनकवचम् | ४१६ |
| शारिकासहस्रनामकम् | ४२४ |
| शारिकामूलमन्त्रस्तोत्रम् | ४३६ |

महाराणीपञ्चाङ्गम् ।

| | |
|--------------------------------|------|
| पञ्चाङ्गप्रस्तावः | ४४ |
| महाराणीमन्त्रोद्धारः | ४४ |
| महाराणीयन्त्रोद्धारः | ४५ |
| महाराणीयन्त्रलयाङ्गम् | |
| महाराणीमन्त्रध्यादीनि | ४५ |
| महाराणीध्यानम् | |
| महाराणीमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | |
| महाराणीपूजापद्धतिः | ४४.. |
| महाराणीकवचम् | ४५६ |
| महाराणीसहस्रनामकम् | ४६० |
| महाराणीमूलमन्त्रस्तोत्रम् | ४७७ |

बालापञ्चाङ्गम् ।

| | |
|-------------------------------|-----|
| पञ्चाङ्गप्रस्तावः | ४८१ |
| बालामन्त्रोद्धारः | ४८२ |
| बालामन्त्रध्यादीनि | ४८२ |
| बालाध्यानम् | ४८२ |
| बालायन्त्रोद्धारः | ४८३ |
| बालालयाङ्गम् | " |
| अस्या मन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः | ४८४ |
| बालापूजापद्धतिः | ४८६ |
| बालाकवचम् | ५०० |
| बालासहस्रनामकम् | ५०२ |
| बालास्तोत्रम् | ५२० |

उद्धारकोशः ।

| | |
|-------------------------|-----|
| उद्धारकोशावतारप्रस्तावः | ५२२ |
|-------------------------|-----|

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|--------------------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| दक्षिणामूर्तये त्रिपुराया मन्त्रशिखा | ५२३ | शून्यबीजनामानि | ५२६ |
| अक्षोभ्यशिष्यमन्त्रोद्धारकथनम् | ५२४ | वट्याणबीजनामानि | ५३० |
| त्रिपुरामन्त्रोद्धार | " | महाराष्ट्रीमन्त्रोद्धारः | " |
| सहस्रबीजनामानि | " | अग्निबीजनामानि | " |
| परबीजनामानि | ५२५ | मीढामन्त्रोद्धार | " |
| मदनबीजनामानि | " | ज्वालामुखीमन्त्रोद्धारः | " |
| वाग्भवबीजनामानि | " | दशविद्यापासनाफलम् | ५३१ |
| शक्तिबीजनामानि | ५२६ | त्रिपुरापदसूचीनिरूपणम् | ५३२ |
| तारबीजनामानि | " | भद्रकालीमन्त्रोद्धार | " |
| दशविद्यानामनिरूपणम् | " | भद्रिकार्यबीजनामानि | " |
| सहस्रीमन्त्रोद्धारः | ५२७ | तुरीमन्त्रोद्धारः | ५३३ |
| नारबीजनामानि | " | ताराकाज्योतिस्तारानामानि | " |
| सरस्वतीमन्त्रोद्धार | " | छिन्नमस्तामन्त्रोद्धारः | " |
| नमा बीजनामानि | " | दक्षिणकालिकामन्त्रोद्धारः | " |
| तारामन्त्रोद्धार | " | श्यामामन्त्रोद्धार | " |
| व्योम्बीजनामानि | ५२८ | कालरात्रिमन्त्रोद्धार | " |
| कान्ताबीजनामानि | " | तद्भेदा | ५३४ |
| कुर्वबीजनामानि | " | सरस्वतीभेदा | " |
| फल्गुबीजनामानि | " | ताराभेदा | ५३५ |
| मुचनश्यरीमन्त्रोद्धार | " | भुवनेश्वरीभेदा | " |
| मनु (मन्त्र) नामानि | " | मातङ्गीभेदा | " |
| मातङ्गामन्त्रोद्धार | " | शारिकामेदद्वयम् | " |
| जिह्वाबीजनामानि | ५२९ | रात्रीभेदा | " |
| वागुराबीजनामानि | " | मीढा भद्रविहिनैवेति | " |
| चारुफबीजनामानि | " | ज्वालामुखीभेदा | " |
| पद्मबीजनामानि | " | त्रिपुरामदाः | " |
| शारिकामन्त्रोद्धार | " | तन्मन्त्रनिरूपणम् | ५३६ |
| सिन्धुरबीजनामानि | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|----------------------------------|-----------|---------------------------------|-----------|
| श्रिया मन्त्रोद्धारः | ५३६ | शारदामन्त्रोद्धारः | ५४२ |
| रुक्मिणीमन्त्रोद्धारः | ५३७ | कामेश्वरीमन्त्रोद्धारः | " |
| वाग्देवतामन्त्रोद्धारः | " | चन्द्रबीजनामानि | " |
| चाणीमन्त्रोद्धारः | " | ऊर्मिबीजनामानि | ५४३ |
| सरस्वतीमन्त्रोद्धारः | " | स्तनबीजनामानि | " |
| अनलप्रियामन्त्रोद्धारः | " | गौरामन्त्रोद्धारः | " |
| तारामन्त्रभेदाः | " | शिवबीजनामानि | ५४३ |
| भुवनेश्वरीमन्त्रभेदाः | " | अन्नपूर्णमन्त्रोद्धारो | " |
| मातङ्गीमन्त्रभेदाः | " | कुलवागेश्वरीमन्त्रोद्धारः | " |
| चक्रिया मन्त्रः | ५३८ | रुक्माबीजनामानि | ५४४ |
| कुण्डलिकामन्त्रः | " | नतकोबीजनामानि | " |
| शाम्बरीमन्त्रः | " | पञ्चकुमारमन्त्रानिरूपणप्रस्तावः | " |
| शारिकामन्त्रभेदौ | " | पञ्चकुमारनामानिर्देशः | ५४५ |
| ज्वालामुखीमन्त्रभेदाः | " | गणेशमन्त्रोद्धारः | " |
| भद्रकालीमन्त्रः | " | कुमारमन्त्रोद्धारः | " |
| दक्षिणकालीमन्त्रः | " | छाविबीजनामानि | " |
| द्विजमस्तामन्त्रभेदौ | " | कार्तवीर्यांजुनमन्त्रोद्धारः | " |
| अक्षोभ्यशिष्याय षोडशीविद्यानिरु- | | शुक्रबीजनामानि | ५४६ |
| पणानन्तरं मन्त्राभिलाषिणामन्य- | | हनुमत्-मन्त्रोद्धारः | " |
| मुनीनामाश्रमागमनम् | ५३९ | चटुकर्भैरवमन्त्रोद्धारः | " |
| मुनीनां प्रार्थना | " | अन्नबीजनामानि | ५४७ |
| दक्षिणामूर्तिमुखात्सप्तदेवीकथनम् | " | अग्निबीजनामानि | " |
| मुनीनां पुनर्मन्त्रप्रार्थना | ५४० | कल्पबीजनामानि | " |
| चज्ज्योगिनीमन्त्रोद्धारः | " | शतघ्नीबीजनामानि | " |
| अरुपा मन्त्रोपासाफलम् | ५४१ | मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः | " |
| धाराहीमन्त्रोद्धारः | " | सुग्रीयमन्त्रोद्धारः | " |
| वाल्मीकीबीजनामानि | ५४२ | नवग्रहमन्त्रकथनावतारः | ५४८ |
| तमोबीजनामानि | " | | |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|--------------------------|-----------|-------------------------|-----------|
| आदित्यमन्त्रोद्धारः | ५४६ | त्रियो ध्यानम् | ५६२ |
| अम्बरबीजनामानि | " | वाग्देवीध्यानम् | ५६३ |
| बुधस्य मन्त्रोद्धारः | " | ताराध्यानम् | " |
| पद्माननबीजनामानि | " | भुवनेश्वरीध्यानम् | " |
| शुक्रस्य मन्त्रोद्धारः | ५५० | मातङ्गीध्यानम् | " |
| बृहस्पतिस्यमन्त्रोद्धारः | " | शारिकाध्यानम् | ५६४ |
| वज्रमन्त्रोद्धारः | " | महाराष्ट्रीध्यानम् | " |
| नाट्यबीजनामानि | ५५१ | मीढाध्यानम् | " |
| भौमस्य मन्त्रोद्धारः | " | उषालामुखीध्यानम् | " |
| वेधबीजनामानि | " | मद्रकालीध्यानम् | ५६५ |
| शनेर्मन्त्रोद्धारः | " | तुरीध्यानम् | " |
| राहोर्मन्त्रोद्धारः | " | क्षिप्रमस्तकाध्यानम् | " |
| गर्जितबीजनामानि | " | दक्षिणकालिकाध्यानम् | " |
| केतुमन्त्रोद्धारः | ५५२ | श्यामा (काली) ध्यानम् | ५६६ |
| वृष्टिबीजनामानि | " | कालरात्रीध्यानम् | " |

| विषयः | पार्श्वम् | विषयः | पार्श्वम् |
|---------------------|-----------|-------------------------------------|-----------|
| भैरवस्य ध्यानम् | ५६६ | केतोर्ध्यानम् | ५७२ |
| सूर्यस्य ध्यानम् | ५७० | मयानोर्ध्यानम् | " |
| धुधस्य ध्यानम् | " | बगलामुखीध्यानम् | " |
| शुक्रस्य ध्यानम् | " | इन्द्राक्षीध्यानम् | ५७३ |
| शुद्धस्पतेर्ध्यानम् | " | सेचरीध्यानम् | " |
| चन्द्रस्य ध्यानम् | ५७१ | श्रृषीणां स्थस्थानगमनाद्या | " |
| भौमस्य ध्यानम् | " | देवीप्रार्थनानन्तरं शिवपार्वतीकैला- | " |
| शनेर्ध्यानम् | " | सगमनम् | ५७४ |
| राक्षोर्ध्यानम् | " | उद्धारकोशसमाप्तिः | " |

उद्धारकोशे प्रमाणत्वेनोपयर्णितानां

तन्त्राणां नामानि ॥

| | |
|-------------------------|--------------------------|
| १ आगमलहरीतन्त्रम् | १२ कामेश्वरतन्त्रम् |
| २ आगमशिरोमणिः | १३ कालरात्रीकल्पतन्त्रम् |
| ३ आगमसिन्धुः | १४ कालिकासर्वस्वतन्त्रम् |
| ४ आगमामृततन्त्रम् | १५ कालीपटलतन्त्रम् |
| ५ आगमामृतमञ्जरी | १६ कालीरहस्यतन्त्रम् |
| ६ आगमार्णवपीयूषतन्त्रम् | १७ कालीसर्वस्वतन्त्रम् |
| ७ आगमालङ्कारतन्त्रम् | १८ कुब्जाशिरोमणिः |
| ८ आगमालङ्करणम् | १९ कुब्जिकासर्वस्वम् |
| ९ आगमोद्योततन्त्रम् | २० कुलचूडामणिः |
| १० उद्दामरतन्त्रम् | २१ कुतसिद्धसन्तानः |
| ११ कामिनीकल्पतन्त्रम् | २२ कुलिकार्णवः |

तन्त्राणां नामानि

| | |
|----------------------------|-------------------------|
| २३ द्विभारहस्यः | ३६ रुद्रयामलतन्त्रम् |
| २४ द्विभ्राशिरोमणिः | ३७ धामकेश्वरतन्त्रम् |
| २५ ज्वालाशिरोमणिः | ३८ विम्बनाथसारोद्धारः |
| २६ तन्त्रमुक्तावली | ३९ विम्बयामलतन्त्रम् |
| २७ त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्वम् | ४० शारदाटीका |
| २८ त्रिपुराटीका | ४१ शारदापटलः |
| २९ त्रिपुरातिलकतन्त्रम् | ४२ शारदानिलकम् |
| ३० त्रिपुराशिरोमणिः | ४३ श्यामातन्त्रम् |
| ३१ त्रिपुरासारसर्वस्वम् | ४४ श्यामारहस्यम् |
| ३२ भैरवतन्त्रम् | ४५ सिद्धसारस्वततन्त्रम् |
| ३३ भैरवसर्वस्वम् | ४६ सुन्दरीशिरोमणिः |
| ३४ मन्त्रसागरः | ४७ सुन्दरीसर्वस्वम् |
| ३५ मुण्डमालातन्त्रम् | ४८ स्वतन्त्रतन्त्रम् |

देवीरहस्ये बीजाक्षरपारिभाषिकसूची ॥

| | | | |
|----------|--------|----------|-------|
| अग्निः | यं | कान्तिः | ह, हं |
| अच्छः | हसौ | कालिकं | प्रौ |
| अग्निधः | स, रु | काली | क्रौ |
| अभ्र | य, धी | कामः | लौ |
| अश्मरी | नमः | काङ्क्षा | म |
| आपः | स्वादा | कुषः | ज |
| इन्दुजा | म | कुट | वीषद |
| श्रीयमकं | नमः | कुन्ती | क्रौ |
| फान्ता | सौ | कुलिश | ग्यो |

| | | | |
|--------------|--------|----------|--------|
| फूर्च | हं | घराणि: | लं |
| शुषा | श्रं | नलिनी | ठः |
| केशः | जं | निर्जरः | च |
| कोलः | हं | पयः | स्यादा |
| खं | आं | परा | ह्रीं |
| गौतमः | ध | पद्मजं | ठाः |
| चन्द्रः | सः, ऐं | पातालं | थं |
| छविः | ह, हां | प्रणवः | जों |
| जगत् | नमः | पहुः | खं |
| जिह्वा | श्रीं | धिलं | ध |
| जीमूतः | य | भद्रिका | भै |
| ज्योतिः | त्रां | भास्वती | भै |
| द्वयं | स्यादा | भूः | ल |
| दिग्भ्यः | हां | भृगुः | स |
| हुलिः | मां, म | भेकी | मां, म |
| तटं | हं | मठं | ग्लों |
| तमः | लं | मदनः | ज्रीं |
| तमी | त | मन्मथः | ज्रीं |
| तारका | त्रां | मण्डकः | मां |
| तारा | त्रां | मत्स्य | प |
| तारं | ओं | मात्रादि | अ |
| तुरगं | फद | मा | थ्रीं |
| ध्यक्षं | ओं | माया | ह्रीं |
| देवः | च | मारजिन् | घो |
| द्वादशमात्रा | ऐं | मृत् | ह्लों |
| धनुर्धरः | रां | मृत्स्ना | ह्लों |

| | | | |
|------------|--------|----------|---------------|
| मृद्रीकं | घूं | बीची | प्लं |
| मेघः | घौं व | वेदी | स्वरं |
| मोहः | लं | वेश्या | खीं |
| यादः | ग्लौं | व्योषं | ह्रां |
| रमा | थ्रीं | शरत् | सः, सौः |
| रात्रिः | त | शक्तिः | सः सौः |
| लता | ए | शर्म | सौः, शां, आं, |
| लवणं | न | शर्वः | गीं |
| लक्ष्मीः | थ्रीं | शिरः | क |
| लज्जा | ह्रीं | शिवः | ह्रां |
| बभूः | रुीं | शिवं | गं |
| यत्नं | ख्यादा | शुभं | श |
| वज्र | भ्यो | शोभा | हं, खं |
| वर्णं | ह्रसौः | शङ्का | सः |
| वह्निः | रां | थ्रीः | थ्रीः |
| वह्निजाया | स्वादा | पडभिः | घो |
| वामाक्षि | ई | सकला | ह्रीं |
| वायुः | य | सर्पः | द |
| वाद्यं | व | सर्मारः | य |
| वायुरा | प्रीं | सिन्धुरं | प्रीं |
| वाल्मीकं | ग्लौं | सिन्धुः | व, रु |
| वायुपूज्या | प्रीं | सर्वः | ह्रां |
| | ८ | | |

| पृष्ठ | पंक्ती | अशुद्धम् | शुद्धम् |
|-------|-----------|------------------------|-------------------------|
| १५ | २३ | यीं | यी |
| २० | ८ | सिन्दु | सिन्धु |
| २७ | पर्याये १ | भ्रुकुटि | भ्रुकुटि |
| २६ | १० | सिद्ध्यै | सिद्ध्यै |
| ३४ | १२ | कूटं | कुटं |
| ३५ | १ | पद्यः | सतमः |
| ३७ | १७ | परं | परां |
| ५६ | ४ | संमोनं | संमोदनं |
| ६४ | १४ | मन्त्रोद्धार | यन्त्रोद्धार |
| ८३ | १३ | रक्ताङ्गाङ्गुली | रक्ताङ्गुली |
| १०७ | २६ | प्रपूज्य | प्रपूज्य |
| १०६ | २० | लाङ्ग्येभामर्त्यान्त्र | लाङ्ग्येभामर्त्यान्त्रः |
| ११६ | १४ | शिवामाला | शिवमाला |
| १४४ | ८ | विश्वम् | विश्वसुः |
| १५५ | १६ | गणेशस्य | गणेशस्य |
| १६३ | १७ | साधरम् | सादरम् |
| १६६ | १२ | चक्रायै | चक्राय |
| १७४ | ६ | कुङ्कुमाङ्कितं | कुङ्कुमाङ्कितं |
| २०० | २० | भुवम् | भुवम् |
| २१४ | ३ | दशधा | दशधा |
| २१६ | २ | वर्षाणि | वर्षाणि |
| २१६ | ४ | सुधादेव्यै | सुधादेव्यै |
| २१९ | १२ | दितेरत | दिते रत |
| २५६ | ६ | साहस्रमजपा | सहस्रमजपा |
| ३०८ | २१ | निलनेश्वरी | निलनेश्वरी |
| ३१३ | १७ | आजमान | आजमाय |
| ३१५ | १ | न दर्शयेत् | न दर्शयेत् |
| ३१७ | १० | व्याप्तं | व्याप्तं |

| पृष्ठे | पंक्तौ | अशुद्धम् | शुद्धम् |
|--------|--------|-----------|------------|
| ३७१ | २३ | घोत्तोल्प | घोत्तोल्प |
| ३७३ | १८ | क्रीकम | क्रीकम |
| ३९३ | ४ | योन्मत्ता | योन्मत्ता |
| ४२६ | ११ | दास | दासा |
| ४४६ | १६ | योन्नाटं | योन्नाटं |
| ४४८ | १ | मत्तया | मत्ताय |
| ४६३ | ६ | पावमानः | पावमानः |
| ४८६ | ८ | सिद्धि | सिद्धि |
| ४९६ | २६ | पात्रो | पात्रे |
| ५०५ | १५ | विशुद्धा | विशुद्धा |
| ५०६ | १० | मदिररा | मदिरारविता |
| ५२६ | ३ | दे कूर्वा | दे कूर्वा |
| ५३० | ६ | शच | शच |

॥ श्रीः ॥

अथ

श्रीदेवीरहस्यम्

ओं श्रीगणेशाय नमः । नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम् ।
यन् सवेषु तन्त्रेषु यामलादिषु भाषितम् ॥ १ ॥
परादेवीरहस्याख्यं तन्त्रं भस्त्रोऽविग्रहम् ।
तत्त्वं श्रीपोडशाक्षर्याः सर्वस्य मम पार्वति ॥ २ ॥
अप्रकाश्यमदातव्यं परमोऽवफलप्रदम् ।
मोगापवर्गदं लोके साधकानां सुखावहम् ॥ ३ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

मगवन् सर्वतन्त्रज्ञ कौलिकेश्वर शङ्कर ।
तत्प्रसादान्मया ज्ञातं तत्त्वं देव्याः सुदुर्लभम् ॥ ४ ॥
तन्त्रं भस्त्रात्मकं गुह्यं सूचितं भवता स्वयम् ।
परादेवीरहस्याख्यं दीक्षापूर्वं वदस्व मे ॥ ५ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

देवीरहस्यमीशानि शृणु त्वं भक्तिपूर्वकम् ।
येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ ६ ॥
अथाहं निर्णयं वक्ष्ये परमं गुरुशिष्ययोः ।

विचार्य विधिवद्वीमान् दीक्षाकर्म समाचरेत् ॥ ७ ॥
 ब्रह्मादिकीटर्पणन्तं जगत् स्थावरजङ्गमम् ।
 परादेव्या पशुत्वेन मोहितं विगतस्पृहम् ॥ ८ ॥
 तथापि तत्प्रसादेन सेवया तत्पदाब्जयोः ।
 कौलिकः पशुभावेन मुक्तो ज्ञानं भजेत् ततः ॥ ९ ॥
 दीक्षां तस्याः शिवे मन्त्री लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ।
 दीक्षितः स भवेज्ज्ञानी दीक्षाहीनो भवेत् पशुः ॥ १० ॥
 यस्य दीक्षा शिवे नास्ति जीवनं तस्य निष्फलम् ।
 स जातु नोत्तरेद् देवि निरयाम्बुनिधेः क्वचित् ॥ ११ ॥
 दीक्षाहीनस्य देवेशि पशोः कुत्सितजन्मनः ।
 पापौघोऽन्तिकमायाति पुण्यं दूरं पलायते ॥ १२ ॥
 तस्माद् यत्नेन दीक्षेया ग्राह्या कृतिभिरुत्तमा ।
 वाञ्छे वा यौवने चापि वार्धक्येऽपि सुरेश्वरि ॥ १३ ॥
 अन्यथा निरयी पापी पितृन् स्वान् निरयं नयेत् ।
 श्रतः पशुर्मनुष्यः सन् पशुषोर्नि ब्रजेच्छिवे ॥ १४ ॥
 पूर्वजन्मार्जितां प्राप्य वामनां परमार्थदाम् ।
 गुरुमन्वेपयेद् देवि कौलिकाचारदीक्षितम् ॥ १५ ॥
 गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम् ।
 निरामयं च निर्लोभं निःशेषागमपारमम् ॥ १६ ॥
 लब्ध्वा भक्त्या प्रणम्यादौ तोषयित्वा विशेषतः ।
 सिद्धमाध्यासिनिर्णीतां दीक्षां देव्या यथाविधि ॥ १७ ॥
 गृहीयात् परया भक्त्या साधको येन जायते ।
 गुरुश्च शिष्यं रम्याङ्गं कुलीनं गर्भदीक्षितम् ॥ १८ ॥
 गुरुभक्तिरतं बालं युवानं धिपयायुतम् ।

देवीभक्तिरतं मत्तं पापभीतं कृतात्मकम् ॥ १६ ॥

दृष्ट्वा दीक्षां परां दद्यात् कृतभागी भवेत् ततः ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् करुणाम्मोघे संशयोऽयं महान् मम ।

यस्य चित्ते परा भक्तिर्गुरुर्नास्ति तथाविधः ॥ २० ॥

कुलीनः सर्वतन्त्रज्ञो मन्त्रसाधनकक्षमः ।

भक्त्या परमया युक्तः स किं देव करिष्यति ॥ २१ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

अदीक्षित उपाध्यायविहीनः शक्तिभक्तिमान् ।

गुरोरभावे देवेशि पुस्तकं गुरुमाचरेत् ॥ २२ ॥

यदि कश्चिद् भवेद् देवि गुरुस्तत्रविचक्षणः ।

दीक्षितः शिवमन्त्रेण वैष्णवः शुभलक्षणः ॥ २३ ॥

तं परित्यज्य यो देवि पराभक्तोऽपि भक्तिमान् ।

पुस्तकं ॥ गुरुं कुर्यात् स भवेच्चिबषातकः ॥ २४ ॥

गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं भजेन्मन्त्रस्य सिद्धये ।

मूर्खं लोभात्मकं देवि कुलीनं च परित्यजेत् ॥ २५ ॥

पितुर्दीक्षां न गृह्णीयात् तथा मातामहस्य च ।

सौदरस्य कनिष्ठस्य मातुलस्य विशेषतः ॥ २६ ॥

दम्भं वित्तेच्छया लौल्यं न कुर्यान्मनसापि वा ।

परलोकेच्छया कुर्यात् परलोकमयाय वा ॥ २७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् परमेशान साधकानां हितेच्छया ।

कदा दीक्षा परा ग्राह्या साधकैस्तद्वदस्य मे ॥ २८ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

सुदिने शुभनक्षत्रे संक्रान्तावयनद्वये ।
 नवरात्रिदिने पित्रोः श्राद्धे स्वजनिवासरे ॥ २६ ॥
 नववर्षदिने देवि चन्द्रस्योपरागके ।
 तिप्पे स्वजन्मनक्षत्रे दीप्तां दद्याद्विचक्षणः ॥ ३० ॥
 तत्रादौ शुभनक्षत्रे स्नात्वा संपूज्य भैरवम् ।
 गत्वा नदीतटं दिव्यं लताकुसुमसुन्दरम् ॥ ३१ ॥
 द्वीपं वा परमं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम् ।
 देवतायतनं चापि प्राप्याशु प्रणमेत् ततः ॥ ३२ ॥
 विलिप्य विधिवद् देवि गुरुः कुर्यात् कृतादिकः ।
 वेदीमीशानदिग्भागे चतुष्कोण्यां मनोहराम् ॥ ३३ ॥
 तत्र देवि परादेव्याः श्रीचक्रं तु विभावयेत् ।
 सिन्दूरेण शिवे यन्त्रं मूलमन्त्रं समुच्चरन् ॥ ३४ ॥
 त्रिकोणं विन्दुसंयुक्तं पद्कोणं वृत्तमष्टदलम् ।
 वसुपत्रं त्रिवृत्ताङ्गं भृगुहृणोपशोभितम् ॥ ३५ ॥
 दीप्तायन्त्रमिदं देवि दीक्षाकाले प्रपूजयेत् ।
 गणेशधर्मवर्कशाः कुबेरसहिताः शिवे ॥ ३६ ॥
 विदिक्षु विदिगीशानाः पूजनीया यथाक्रमम् ।
 तारमायारमावीर्जैर्भूपदीपमस्तनकैः ॥ ३७ ॥
 मापां च मोहिनीं मेनां मङ्गलां सर्वमङ्गलाम् ।
 महाविद्या च देवेशि पद्कोणेषु प्रपूजयेत् ॥ ३८ ॥
 तारमायारमावीर्जैर्गन्धास्तप्रस्तनकैः ।
 गङ्गां च यमुनां देवि तदग्रेऽपि सरस्वतीम् ॥ ३९ ॥
 त्रिकोणे पूजयेद् धीमानीशानाद्येवपूर्वकम् ।
 विन्दौ श्रीमूलमन्त्रेण परादेवीं प्रपूजयेत् ॥ ४० ॥

सदाशिवं महारौद्रं कामेशं कामनेश्वरम् ।
 गन्धाक्षतप्रसूनार्घैर्धूपदीपादितर्पणैः ॥ ४१ ॥
 नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्रलैश्च सुवासितैः ।
 अष्टपत्रेषु देवेशि संपूज्या अष्ट मातरः ॥ ४२ ॥
 ब्राह्म्याद्या देवि मन्त्रेण अष्टभैरवपूर्वकम् ।
 ब्राह्मी नारायणी चैव कौमारी चापराजिता ॥ ४३ ॥
 माहेश्वरी च चामुण्डा बाराही नारसिंहिका ।
 वामावर्तक्रमेणैवं पूजनीया विशेषतः ॥ ४४ ॥
 तत्रैव पूजयेदष्ट भैरवान् भैरवेश्वरि ।
 महाकालं च कालाग्रिं करालं विकरालकम् ॥ ४५ ॥
 संहारं कुरुमीशानि सुप्तमुन्मत्तभैरवम् ।
 संपूज्य विधिवत् तत्र गन्धाक्षतप्रसूनकैः ॥ ४६ ॥
 यन्ममभ्यर्च्य देवेशि गुरुं संपूजयेत् ततः ।
 पूर्वं ततः खनेत् कुण्डं योनिरूपं त्रिकोणकम् ॥ ४७ ॥
 तत्रारणिं प्रपूज्यादौ वह्निमावाहयेच्छिवे ।
 तारं वह्निप्रयं चाग्ने वैश्वानरपदं वदेत् ॥ ४८ ॥
 प्रज्वलेति युगं प्रोच्येदिहागच्छेति संवदेत् ।
 इह सन्निधिमाधत्स्व वरं मे देहि-युग्मकम् ॥ ४९ ॥
 फड्बह्निजायां प्रोचार्य गन्धेनाभ्यर्चयेत् ततः ।
 परादेव्यास्तु मन्त्रेण घृतमाज्यं चरेच्छिवे ॥ ५० ॥
 मूलेनाग्रौ शिवे दद्यादाहुतीनां शतं परम् ।
 घृतखण्डादिमृद्धीकाखर्जूराम्बुजपायसैः ॥ ५१ ॥
 तत्र देवीं समावाह्य परां ध्यात्वा विशेषतः ।
 प्राङ्मुखो गुरुरासीन उत्तराभिमुखं शिशुम् ॥ ५२ ॥
 संस्थाप्य विधिवद् देवि कृत्वा विष्टरशोधनम् ।

भूतशुद्धिक्रमोपेतं प्राणार्पणविधिं चरेत् ॥ ५३ ॥

प्राणायामत्रयं कृत्वा विधायाचमनत्रयम् ।

तत्र मूलेन देवेशि दिशो चक्ष्वा परां स्मरेत् ॥ ५४ ॥

गुरुः शिष्याय शान्ताय पराप्रतीत्यै महेश्वरि ।

बहेः समक्षं यन्त्राग्रे दीक्षां परमदुर्लभाम् ॥ ५५ ॥

कर्णमूले महाविद्यां श्रीविद्यां साधकेश्वरः ।

आनन्दासङ्गहृदयः शनैस्त्रिभिः समर्पयेत् ॥ ५६ ॥

प्रथमं तु गणेशस्य मन्त्रं साङ्गं समर्पयेत् ।

ततो देव्याश्च गायत्रीं ततो मूलं महेश्वरि ॥ ५७ ॥

एवं समर्प्य देवेशि कृत्वा होमं यथाविधि ।

शिष्यो दीक्षां तु संप्राप्य गुरुमभ्यर्च्य शक्तिः ॥ ५८ ॥

तोषापिता प्रणामैश्च दक्षिणाभिः शुभाम्बरैः ।

तदाङ्गा सहसादाय जपाय परमेश्वरि ॥ ५९ ॥

यन्त्रं मन्त्रं च मालां च तन्त्रं वैकाङ्गमीश्वरि ।

पुनर्जातु शिवे शिष्यो गुरवेऽपि न दर्शयेत् ॥ ६० ॥

ततो होमं च संपाद्य बहुकं योगिनीगणम् ।

भूतान् सन्तर्प्य बलिना देवीं देवं विसर्जयेत् ॥ ६१ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् देवदेवेश मन्त्रानुग्रहकारक ।

गणेशं चैव गायत्रीं मूलविद्यां जपेत् परम् ॥ ६२ ॥

शैवं मन्त्रं जपन्त्रो वा वैष्णवं साधकेश्वरः ।

का कां विद्यां स गृह्णीयाच्छिन्ध्येतत् संशयं मम ॥ ६३ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

प्रथमेऽहनि देवेशि साधको गुरुभक्तिः ।

गणेशं देवि गायत्रीं मूलविद्यां जपेत् परम् ॥ ६४ ॥
 मुहूर्ते शुभदे देवि शैवं मन्त्रं जपेत् ततः ।
 गुरोः पादप्रसादेन लब्ध्वा कतिपयैर्दिनैः ॥ ६५ ॥
 ततो गुरुं शिवे मत्स्या वन्दनैः पूजनैः सदा ।
 प्रार्थनामिश्र संतोष्य श्रीविद्यां प्रार्थयेत् ततः ॥ ६६ ॥
 विना श्रीविद्याया देवि साधकोऽदीक्षितः स्मृतः ।
 अदीक्षितः पशुः प्रोक्तः पशुत्वान्निरयी भवेत् ॥ ६७ ॥
 स्वजन्मनि शिवे तस्माद् गुरुमभ्यर्च्य भक्तिः ।
 श्रीविद्यां प्रार्थयित्वादौ गृह्णीयात् सर्वसिद्धये ॥ ६८ ॥
 महात्रिपुरमुन्दर्याः श्रीविद्यां प्राप्य दुर्लभाम् ।
 सशिवां गिरिजे साक्षां प्रार्थयेद् दक्षिणां ततः ॥ ६९ ॥
 विना श्यामां न सिद्धिः स्यान्ममापि परमेश्वरि ।
 द्वाविंशत्यक्षरीं विद्यां प्रजपेत् साधकोत्तमः ॥ ७० ॥
 श्यामाविद्याजपेनाशु श्रीविद्या सिद्धिमेप्स्यति ।
 तामसी कालिका प्रोक्ता राजसी षोडशाक्षरी ॥ ७१ ॥
 सात्त्विकी च परादेवी महाश्रीषोडशाक्षरी ।
 राज्यं देयं शिरो देयं देया सन्ततिरर्थिने ॥ ७२ ॥
 वसुपूर्णं गृहं देयं न देया षोडशाक्षरी ।
 विद्यां त्रिपुरमुन्दर्या लब्ध्वा गुरुरग्रसादतः ॥ ७३ ॥
 मनसापीति नो ब्रूयाच्छ्रीविद्योपासकोऽस्म्यहम् ।
 श्यामां भजेत् पराविद्यां श्रीविद्यामेदरूपिणीम् ॥ ७४ ॥
 तेन सिद्धिर्भवेदाशु देवानामपि दुर्लभा ।
 यन्न दृष्ट्वापि न ब्रूयाद्गुरुस्तत्र समाचरेत् ॥ ७५ ॥
 गुरुरेव परा देवी गुरुरेव परा गतिः ।

गुरुमुल्लङ्घ्य यः कुर्यात् किञ्चित् स निरयं व्रजेत् ॥ ७६ ॥
 एवं देवि परामक्रो दीक्षितो गुरुपूजकः ।
 गुरुरपदेशतः कुर्याज् जपं पूजामहर्निशम् ॥ ७७ ॥
 स्वयं दीक्षां गुरोर्लब्ध्वा दीक्षितः पुण्यभाजनम् ।
 गुरुमभ्यर्च्य संप्रार्थ्य शक्तिदीक्षार्थमीश्वरि ॥ ७८ ॥
 दीक्षिता यस्य नो शक्तिस्तस्य दीक्षा तु निष्फला ।
 जन्मकोटिषु जप्तापि तस्य विद्या न सिध्यति ॥ ७९ ॥
 ततः शिवे गुरुः शिष्यं संपूज्य परमार्थवित् ।
 शिष्यस्त्रियं परारूपां देवीरूपां विचिन्तयेत् ॥ ८० ॥
 अभ्यर्च्य परमां शक्तिं परापद् वन्दनैः स्तवैः ।
 आदृत्य मातृवद् देवि कन्यावद् दीक्षयेत् तदा ॥ ८१ ॥
 परापद् पूजयित्वा दौ ततो दीक्षां समर्पयेत् ।
 उपविश्य गुरुस्तत्र पश्चिमाभिमुखः शिवे ॥ ८२ ॥
 दीक्षायै ग्राह्मुखीं कृत्वा पूजयेद् यश्वराजवत् ।
 ततः संपूज्य देवेशि यन्त्राग्रे देवतागृहे ॥ ८३ ॥
 शिवो भूत्वा पराविद्यां कर्णमूले समर्पयेत् ।
 संप्राप्य सशिवां विद्यां गुरुं पितृवदर्चयेत् ॥ ८४ ॥
 गन्धाद्यतप्रसूनाद्यैर्दक्षिणाम्बरपूर्वकैः ।
 तदाज्ञां शिरसादाय जपं कुर्यात्तु सर्वदा ॥ ८५ ॥
 शक्तिश्च दीक्षिता भूत्वा दीक्षितोऽपि स्वयं शिवे ।
 मत्तोऽपि सञ्छिन्ने जन्तुरमरत्नमवाप्नुयात् ॥ ८६ ॥
 गुरोः पादप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते ।
 स स्यामा म शिवा देवि वश्यं तस्य जगत् त्रयम् ॥ ८७ ॥
 इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयेरितम् ।

दीक्षाविधेर्महादेवि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ८८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दीक्षाविधि-
निरूपणं प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

अथ

द्वितीयः पटलः

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि मन्त्रान् साङ्गान् महेश्वरि ।
देवीनां वैष्णवाञ्छाक्ताञ्छैवांस्त्वं शृणु पार्वति ॥ १ ॥
त्रिपुरा अचरी चाला तथा त्रिपुरभैरवी ।
कालिका भद्रकाली च मातङ्गी भुवनेश्वरी ॥ २ ॥
उग्रतारा छिन्नशीर्षा सुमुखी च सरस्वती ।
अन्नपूर्णा महालक्ष्मीः शारिका शारदा ततः ॥ ३ ॥
इन्द्राक्षी वगला तुर्या राज्ञी ज्वालामुखी तथा ।
भीडा च कालरात्रिश्च भवानी वज्रयोगिनी ॥ ४ ॥
वाराही सिद्धलक्ष्मीश्च कुलवागीश्वरी ततः ।
(पद्मावती कुञ्जिका च गौरी श्रीखचरी ततः ॥ ५ ॥)
नीलसरस्वती देवि पराशक्तिः ततः स्मृता ।
एतासां देवि साङ्गानां शक्तीनां वक्ष्येहं मनून् ॥ ६ ॥
शैवान् मन्त्रांस्ततो वक्ष्ये यथावच्छृणु पार्वति ।
मृत्युञ्जयोऽमृतेशानो बहुकोऽपि महेश्वरः ॥ ७ ॥
शिवः मदाशिवो रुद्रो महादेवः करालकः ।

विकरालो नीलकण्ठः शर्वः पशुपतिर्मृदः ॥ ८ ॥

पिनाकी गिरिशो भीमो गणेशः प्रमथाधिपः ।

कुमारः क्रोधनश्वेशः कपाली क्रूरभैरवः ॥ ९ ॥

संहार ईश्वरो भर्गो रुद्रः कालाग्निरव्ययः ।

अघोरश्च महाकालः कामेश्वर इति स्मृतः ॥ १० ॥

वैष्णवान्छृणु देवेशि मन्त्रांस्तन्त्रेषु गोपितान् ।

येन श्रवणमात्रेण मन्त्री विष्णुपदं व्रजेत् ॥ ११ ॥

लक्ष्मीनारायणो राधाकृष्णो विष्णुर्नृसिंहकः ।

वराहो जामदग्न्यश्च सीतारामो जनार्दनः ॥ १२ ॥

विश्वक्सेनो वासुदेव इत्येवं दश वैष्णवाः ।

मन्त्रा अत्युत्तमा देवि जप्याः साधकसत्तमैः ॥ १३ ॥

एतेषां शाक्तशैवानां वैष्णवानां महेश्वरि ।

उद्धारान् वच्मि मन्त्राणां श्रुत्वा गोपय यत्नतः ॥ १४ ॥

(१) वाग्भवं कामराजश्च शक्तिर्मध्येऽभिधं न्यसेत् ।

नमोऽन्ते देवि बालाया मन्त्रोऽयं बाह्यवर्णकः ॥ १५ ॥

प्रकाशम्—“ ये क्लीं सौः बालायै नमः ” इति बाला ।

(२) वेधोबीजमधोऽध्वर्यामधो जिष्णुस्तमः परा ।

लुबिः शक्तिः शिरः कान्तिल्लमो माया शरत् शिरः ॥ १६ ॥

तमो मामाश्वले देव्या मन्त्रः पञ्चदशाक्षरः ।

हेपद्यम्—“ कर्पदलह्रीं हसकदलह्रीं सकलह्रीं ” इति ।

(३) लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तियुक्ता

तारं च भूतिकमले कथितापि विद्या ।

शक्त्यादिकं तु विपरीततया च प्रोक्तः

श्रीपोडशाक्षरविधिः शिवर्मस्तु पूर्णः ॥ १७ ॥

स्पष्टम्—“ओं ह्रीं क्लीं ऐं सौः उँ ह्रीं श्रीं कपर्दलह्रीं दसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं” इति ।

देवि चक्ष्याम्यहं गुह्यं त्रिपुराया रहस्यकम् ।

नित्यायाः शक्तयः पूज्या वाग्मवीकामशक्तयः ॥ १८ ॥

तारमायारमावीजैर्नाम मध्येऽञ्जलेऽश्मरी ।

मन्त्रोऽयं सर्वशक्तीनां सर्वसाधारणो मतः ॥ १९ ॥

त्रिपुरापूजने देवि पृथग् जाप्ये पृथग्मनुः ।

(४) कालीत्रयं कूर्चयुग्मं लज्जायुग्मं समुदरेत् ॥ २० ॥

दक्षिणे कालिके चेति पुनर्वीजानि पूर्ववत् ।

ठद्वयं स्यान्मनोरन्ते मन्त्रोऽयं भुवनेश्वरः ॥ २१ ॥

द्वाविंशत्यक्षरी विद्या विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता ।

स्पष्टम्—“क्रींक्लींक्लीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रींक्लींक्लीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा” इति काली ।

कान्पायाः शक्तयः पूज्याः कालीवीजेन केवलम् ।

अन्यथा मिद्धिहानिः स्यात् कालिकापूजने परम् ॥ २२ ॥

(५) कालीत्रयं कूर्चयुग्मं लज्जायुग्मं च भद्रिकाम् ।

भद्रकालिपदं त्रयाद् बीजानि प्रतिलोमतः ॥ २३ ॥

ठद्वयेन समायुक्तो भद्रकाली-महामनुः ।

प्रकाशम्—“क्रींक्लींक्लीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं भै भद्रकालि भै ह्रीं ह्रीं ह्रूं क्रींक्लींक्लीं स्वाहा” इति भद्रकाली ।

कालीकूर्चपरावीजैः परिवारादिशक्तयः ।

पूजनीया महादेवि भद्रकालीसमर्चने ॥ २४ ॥

(६) तारं परां समुद्धृत्य राजमातङ्गिनीति च ।

मम सर्वार्थसिद्धिं च देहि-युग्मं समुदरेत् ॥ २५ ॥

तुरगं ठद्वयं चान्ते मन्त्रोऽयं राजवल्लभः ।

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं राजमातङ्गिनि मम सर्वार्थसिद्धिं देहि २ फट् स्वाहा” इति मातङ्गी ।

तारेण पूज्या देवेशि शक्रयः परिवारगाः ।

(७) मायावीजं नाम मध्ये नमो मन्त्राञ्चले वदेत् ।

एकाक्षरीयं विदिता भुवने भुवनेश्वरी ॥ २७ ॥

प्रकाशम्—“ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ” इति भुवनेश्वरी ।

मायावीजेन संपूज्याः पूजाकालेऽत्र शक्रयः ।

(८) तारं परां वधूं कूर्चं तुरगं सकलाञ्चले ॥ २८ ॥

सार्धपञ्चाक्षरी तारा भवसागरतारिणी ।

स्पष्टम्—“ ओं ह्रीं क्लीं हूं फट् ” इत्युग्रतारा ।

तारकान्तातटैः पूज्याः शक्रयश्चक्रमध्यगाः ॥ २९ ॥

(९) लक्ष्मीं लज्जां तथा मायां मात्रां द्वादशिकीमथ ।

वज्रवैरोचनीये द्वे माये फट्स्वाहया पुते ॥ ३० ॥

स्पष्टम्—“ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ” इति द्विधमस्ता ।

मायायुग्मेन संपूज्याः शक्रयः परिवारगाः ।

(१०) वाग्भवं कामराजं च तथोच्छिष्ट-पदं वदेत् ॥ ३१ ॥

चण्डालिनीति प्रोचार्य सुमुखीदेवि चोद्धरेत् ।

महापिशाचिनि चेति मायार्णं पङ्कजत्रयम् ॥ ३२ ॥

वह्निजायाञ्चलो मन्त्रो गोपनीयो महेश्वरि ।

स्पष्टम्—“ ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखीदेवि महापिशाचिनि ह्रीं
ठः ठः ठः स्वाहा ” इति सुमुखी ।

वाक्कामवीजैः संपूज्याः शक्रयोऽन्याः परस्परम् ॥ ३३ ॥

(११) तारं माया च वाग्बीजं परा तारं महेश्वरि ।

सरस्वत्यै जगन्मन्त्रः प्रसिद्धोऽयं शिवाक्षरः ॥ ३४ ॥

स्पष्टं यथा—“ ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः ” इति सरस्वती ।

तारमायाक्षरैः पूज्या देव्यो देवीसमीपगाः ।

(१२) तारं परापि कमला कामं विश्वं नतो वदेत् ॥ ३५ ॥

भगवति माहेश्वरि चान्नपूर्णे च उद्वयम् ।

स्पष्टम्—“ ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा ” इति अन्नपूर्णा ।

आदिबीजद्वयेनैव पूज्या देव्याः समीपगाः ॥ ३६ ॥

[*(१३) तारं परां रमां कामं वाग्भवं शक्तिबीजकम् ।

महालक्ष्मिं प्रसीदेति युग्मं मा पङ्कजत्रयम् ॥ ३७ ॥

स्वाहान्तोऽयं महामन्त्रो महालक्ष्मीपदप्रदः ।

प्रकाशम्—“ ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः महालक्ष्मिं प्रसीद २ श्रीं ठः ठां हः स्वाहा ” इति महालक्ष्मीः ।

आदिबीजत्रयेणैव पूज्याः परमशक्तयः ॥ ३८ ॥]

(१४) तारं मायां त्रियं कूर्चं सिन्धुरं शर्म श्रो हेतु ।

नामाश्मरीं मनोरन्ते मन्त्रोऽयं भुवि दुर्लभः ॥ ३९ ॥

स्पष्टम्—“ ओं ह्रीं श्रीं हूं मां आं शं शारिकायै नमः ” इति शारिका ।

मायया पूजयेद् देवीः परिवारगताः शिवे ।

(१५) तारं माया स्मरः शक्तिरश्मरी नाम संबदेत् ॥ ४० ॥

भगवत्यै शारदायै मनोरन्ते परा वनम् ।

स्पष्टम्—“ ओं ह्रीं क्लीं सः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा ” इति शारदा ।

तारकामैः शिवे पूज्याः शक्तयः परमार्थदाः ॥ ४१ ॥

(१६) प्रणवं कमलां मायां वाग्भवं शक्तिमन्मथौ ।

इन्द्राक्षि वज्रहस्ते च हरमन्तेऽग्निवज्रभा ॥ ४२ ॥

मूलम्—“ ओं श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते फट् स्वाहा ” इति इन्द्राक्षी ।

आदिबीजत्रयेणैव पूज्याः श्रीचक्रदेवताः ।

(१७) तारं मृत्तानां च देवेशि वगलामुत्ति सर्वं च ॥ ४३ ॥

दुष्टानां वाचं मुखकं पदं स्तम्भय-युग्मकम् ।

जिह्वां कालय-युग्मं च मृत्तारं ठदयं मनुः ॥ ४४ ॥

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं वगलामुखि भव्यदुष्टानां धात्रं मुने पदं स्तम्भप २
जिह्वां फालय २ ह्रीं ओं स्वाहा ” इति वगलामुखी ।

बीजद्वयेन संपूज्याः परिवारगताः पराः ।

(१८) प्रणवस्तारका ज्योतिस्तारा मध्येऽभिधं न्यमेत् ॥ ४५ ॥

अन्तेऽश्मरी महादेवि मन्त्रोऽयं शत्रुसूदनः ।

प्रकाशम्—“ओं पुं श्रीं श्रीं महातुर्यं नमः” इति महातुरी ।

प्रणयेनार्चयेद् देवि परिवारान् यथाक्रमम् ॥ ४६ ॥

(१९) तारं परा रमा वह्निः कामः शक्तिः षडचरः ।

भगवत्यं च राश्यै च माया उद्वयमञ्चले ॥ ४७ ॥

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः भगवत्यै राश्यै ह्रीं स्वाहा” इति
महाराष्ट्री ।

तारामिभ्यां शिवे देवीपरिवारान् समर्चयेत् ।

(२०) तारं लज्जां त्रियं चैव ज्वालामुखि ममेति च ॥ ४८ ॥

सर्वशत्रून् भक्षय द्विरन्ते कूर्चं हरं पयः ।

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हं
फट् स्वाहा ” इति ज्वालामुखी ।

तारेण पूजयेद् देवि परिवारगताः पराः ॥ ४९ ॥

(२१) तारं परा रमा वेदी चन्द्रमन्मथशक्तयः ।

भीडाभगवतीत्येवं हंसरूपिणि उद्वयम् ॥ ५० ॥

स्फटं पथा—“ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं सौः भीडाभगवति हंसरूपिणि
स्वाहा ” इति भीडा ।

परारमार्णदेवेशि परिवारान् प्रपूजयेत् ।

(२२) प्रणवं वासना माया मन्मथः कमला ततः ॥ ५१ ॥

मध्ये नामाञ्चले सर्वं वश्यं कुरुद्वयं वदेत् ।

वीर्यं देहि पुनर्नाम गणेश्वर्याश्मरी स्मृता ॥ ५२ ॥

प्रकाशम्—“ओं ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु २ वीर्यं देहि २
गणेश्वर्यं नमः ” इति कालरात्री ।

तारचन्द्रेण संपूज्यं परिवारांस्ततो यजेत् ।

(२३) तारं रमा रमा तारं तारं माया रमा रमा ॥ ५३ ॥

हूंकडन्तः समाख्यातो मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ।

प्रकाशम्—“ओं श्रीं श्रीं ओं ओं ह्रीं श्रीं श्रीं हूं फट्” इति भवानी ।

मावीजैः पूजयेद् देवि परिवारगताः पराः ॥ ५४ ॥

(२४) परार्णं वज्रयोगिन्यै ठद्वयं प्रणवादितः ।

मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशः साधकानां जयप्रदः ॥ ५५ ॥

मूलम्—“ओं ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा” इति वज्रयोगिनी ।

मायावीजेन देवेशि परिवारान् समर्चयेत् ।

(२५) चन्द्रवाहीकमोहार्णचन्द्रा मध्येऽभिधं न्यसेत् ॥ ५६ ॥

चन्द्रो मठं पद्मयुगं हरं नीरमयं मनुः ।

वासनामोहबीजेन पूजयेत् परिवारगान् ॥ ५७ ॥

मूलम्—“ॐ ग्लौं लं ॐ नमो भगवति यार्तालि वारहि देवते यत्ताह्नुलि
ॐ ग्लौं ठः ठः फट् स्वाहा” इति धूम्रवाराही ।

(२६) तारं रमायुगं माया हरितं चन्द्रमन्मथौ ।

शक्तिर्नामारमरीमन्त्रः सिद्धलक्ष्म्या उदाहृतः ॥ ५८ ॥

प्रकाशम्—“ओं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं सौः सिद्धलक्ष्म्यै नमः” इति
सिद्धलक्ष्मीः ।

रमया पूजयेदन्याः परिवारगताः शिवे ।

(२७) तारं कामो दिम्बलक्ष्मीः कूर्चं कांचामिधं ततः ॥ ५९ ॥

चन्द्रः पद्मः स्पृहा पद्मो वेदया पद्मो वनं मनुः ।

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं ह्रीं श्रीं हूं हूं हूं भूं भूपहस्ते कुलयागीभ्वरि ॐ ठः भूं ठः
श्रीं ठः स्वाहा” इति कुलयागीभ्वरी ।

कामेन पूजयेद् देवि परिवारान् यथाक्रमम् ॥ ६० ॥

(२८) तारं परा रमा कामा चीर्ची पद्यावतीति च ।

मम वरं देहि—युग्मं हरं नीरमयं मनुः ॥ ६१ ॥

परया पूजयेद् देवीः परिवारगताः पराः ।

प्रकाशम्—“ओं ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावति मम वरं देहि २ फट् स्वाहा” इति पद्मावती ।

(२६) तारं रमा वागुरार्णं नाम मध्ये ततः परा ॥ ६२ ॥

पद्मो वनमयं मन्त्रः सर्वसिद्धिफलप्रदः ।

वागुरार्णेन देवेशि पूजयेत् परिवारगाः ॥ ६३ ॥

प्रकाशम्—“ओं श्रीं प्रीं कुम्भिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा” इति कुम्भिका ।

(३०) प्रणवं कमला माया बान्हीकं च शिवं ततः ।

गौरि शर्वो वनं देवि मन्त्रः सर्वार्थसिद्धिदः ॥ ६४ ॥

स्पष्टम्—“ओं श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरि गौं स्वाहा” इति गौरी ।

रमया परिवाराय पूजयेत् साधकोत्तमः ।

(३१) मेकी तमः परा शक्तिः खेचर्यं चाश्मरी ततः ॥ ६५ ॥

मन्त्रोऽयं खेचरो नाम खेचरत्वप्रदायकः ।

परया पूजयेद् देवीः परिवारगताः प्रिये ॥ ६६ ॥

स्पष्टम्—“मलह्रीं सौः खेचर्यं नमः” इति खेचरी ।

(३२) तारं व्योर्षं वाग्भवं च कूर्चं नीलसरस्वति ।

हरं नीरं मनोरन्ते मन्त्रोऽयं वाक्प्रदायकः ॥ ६७ ॥

व्योर्षेण पूजयेद् देवि परिवारा यथाविधि ।

प्रकाशम्—“ओं ह्रां ऐं हं नीलसरस्वति फट् स्वाहा” इति नीलसरस्वती ।

(३३) तारं रमा परा कामः शक्तिर्वस्त्रं ततोऽभिधम् ॥ ६८ ॥

वाग्भवं ठद्वयं देवि मन्त्रराजोऽयमीरितः ।

प्रकाशम्—“ओं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः दसौः पराशक्त्यं ऐं स्वाहा” इति पराशक्तिः

मूलेन पूजयेदन्या देवीस्तत्परिवारगाः ॥ ६९ ॥

इत्येष शात्रमन्त्राद्वयः पटलो देवदुर्लभः ।

अधुना ते मनून् शैवान् वक्ष्यामि शृणु पार्वति ॥ ७० ॥

इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या प्रकाशितम् ।

गुह्यातिगुह्यगुप्तं च गोपनीयं स्वयोनित्व ॥ ७१ ॥

इति श्रीवृद्धयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शाक्तमन्त्रो-
द्धारनिरूपणं द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

अथ

तृतीयः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

यो देवदेवो देवेशि महाशृत्पुञ्जयः स्मृतः ।

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि तस्माहं शृणु पार्वति ॥ १ ॥

(१) अथ ह्यहं शक्तिशोभेऽपि शोभा

मां तस्माद्वै पालय द्विस्तथैव ।

तस्माच्छक्तिः खं शरद् ह्यजतारं

मन्त्रोद्धारो देवि शृत्पुञ्जयस्य ॥ २ ॥

अमृतेशस्य वक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं महेश्वरि ।

येन विज्ञातमात्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

(२) तारं ह्यजं शरन्नाम मध्ये विश्वं तथाञ्जले ।

मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशः सुमुखीशिववज्रमः ॥ ४ ॥

(३) प्रणवं भूतिबीजं च बहुकाय समुदरेत् ।

आपदुद्धारणायेति कुरुयुग्मं समुच्चरेत् ॥ ५ ॥

वदुक्ताय परावीजं मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः ।

(४) तारं व्योषं महादेवि ततो महेश्वराय च ॥ ६ ॥

विश्वमन्ते मनोर्दधान्मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धिदः ।

(५) तारं विश्वं शिवायेति मन्त्रोऽयं भोगमोचदः ॥ ७ ॥

(६) तारं व्योषं शिवायेति नमोऽन्तेऽस्त्यपरो मनुः ।

इति शिष्यस्य मन्त्राः ।

(७) तारं वाखी शरत् कामः सदाशिवाय प्रोद्धरेत् ।

विश्वमन्ते स्मृतो मन्त्रो मन्त्रमौलिमणिः परः ॥ ८ ॥

इति सदाशिवस्य ।

(८) तारं व्योषं शिवो रुद्र प्रसीदेति युगं वदेत् ।

अन्ते ठद्वयमीशानि मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः ॥ ९ ॥

इति रुद्रस्य ।

(९) तारं परा शिवो देवि महादेवाय ठद्वयम् ।

नन्त्रः शिवमदो देवि शैवानां परमार्थदः ॥ १० ॥

(१०) तारं फाली शिवो नाम तुरीरूपं च ठद्वयम् ।

मन्त्रो मैत्रविविरुयातः कलौ भोगापवर्गदः ॥ ११ ॥

इति फरालस्य ।

(११) तारं वाग्भवमामाया विकरालाय विन्यसेत् ।

अन्ते ठद्वयमुच्चार्य मन्त्रराजोऽयमीरितः ॥ १२ ॥

इति विषरालस्य ।

(१२) मण्यं हरितं हिम्नं नीलकण्ठाय चारमरी ।

दुर्गेऽनीलकण्ठस्य मन्त्रोद्धारो दशाक्षरः ॥ १३ ॥

(१३) तारं परा रमा-वीजं शर्मायेति पदं वदेत् ।

अन्तेऽक्षमरी मनोर्देवि मन्त्रोऽयं भोगदः स्मृतः ॥ १४ ॥

- (१४) प्रणवो चाग्भवो मारः शक्तिः पशुपतेर्वनम् ।
मन्त्रोऽयं देवदेवस्य वल्लभो मुक्तिसाधनम् ॥ १५ ॥
- (१५) तारं परा मृडायेति विश्वमन्ते मनुः स्मृतः ।
- (१६) तारं हृजं परा लक्ष्मीर्मध्ये धृयात्पिनाकिने ॥ १६ ॥
अन्तेऽश्मरी मनोदेवि मन्त्रोऽयं वैरिखदनः ।
- (१७) तारं शिवो मठं देवि गिरिशायश्मरी मनुः ॥ १७ ॥
- (१८) तारं परा मदिका च भीमायान्तेऽश्मरी मनुः ।
- (१९) माया शिवाचरं मायः महागणपमुद्धरेत् ॥ १८ ॥
तयेऽश्मरी मनोरन्ते मन्त्रोऽयं विघ्नहारकः ।
- (२०) तारं परा च बाह्यीकं प्रमथाधिपमुद्धरेत् ॥ १९ ॥
प्रसीद-द्वयमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः ।
- (२१) छविः कुमाराय मनोरन्ते विश्वं मनुः परः ॥ २० ॥
सर्वदेवेन्द्रपददो भोगदो मोक्षदः स्मृतः ।
- (२२) तारं काली शिवो देवि क्रोधनेशाप चाश्मरी ॥ २१ ॥
मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशो वैरिवर्गनिवर्हणः ।
- (२३) तारं परा रमा लक्ष्मीरीशायेति वनं मनुः ॥ २२ ॥
- (२४) तारं शिवः कामराजः कपालीशाय संवदेत् ।
अन्ते ठद्वयमुद्धृत्य मन्त्रोऽयं स्याद् दशाचरः ॥ २३ ॥
- (२५) तारं कालीयुगं माया क्रूरमैरव श्रोद्धरेत् ।
प्रसीद-द्वयमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धिदः ॥ २४ ॥
- (२६) तारं वाणी शरत् कामः संहारायाञ्जले वनम् ।
मन्त्रोऽयं देवदेवस्य वर्णितस्ते दशाचरः ॥ २५ ॥
- (२७) तारं मा भूतिर्मा लक्ष्मीरीश्वरायाश्मरी मनुः ।
- (२८) तारं च भास्वती माया मर्गायान्तेऽश्मरी मनुः ॥ २६ ॥
- (२९) तारं चान्धिः परा वीजं खरवे चाश्मरी मनुः ।

(३०) प्रणवं कमला माया कालाग्रये-पद ततः ॥ २७ ॥

विश्वमन्ते मनोर्देवि मन्त्रराजोऽयमीरितः ।

(३१) तारं व्योषं शिवो देवि सद्योजाताय चारमरी ॥ २८ ॥

उग्रताराशिवस्यायमव्ययस्य मनुः स्मृतः ।

(३२) मात्रादिः षडभिज्ञवह्निकुलिशास्तस्माद्विलं मारजि-

ब्रह्मी वज्रकगौतमाग्निपुगलं राज्यशिवज्जाङ्कितम् ।

शङ्कौ र्वा च तमी शुभौ वक्युतौ शक्त्यौ[शक्ति]र्वज्जाश्मका

राज्यन्धीन्दुजसिन्दुमत्स्यकुलिशा मन्त्रोऽयमाधोरिकः ॥२९॥

(३३) कूर्चद्वन्द्वं महाकाल प्रसीदेति पदद्वयम् ।

मायाद्वयं वह्निजाया राजराजेश्वरो मनुः ॥ ३० ॥

(३४) वाग्मवं मदनशक्तितारका मा परा सकलविद्ययाञ्चिता ।

तारयुक्तविपरीतबीजकः षोडशाक्षरविधिः शिवः स्मृतः ॥ ३१ ॥

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रहस्यं परमं परम् ।

तत्र भक्त्या मयारूपातं नचारूपेयं दुरात्मने ॥ ३२ ॥

इति धीरुद्रयामले तन्त्रे धीदेवीरहस्ये शिवमन्त्रो-

द्धारनिरूपण तृतीय. पटल ॥ ३ ॥

चतुर्थः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि वैष्णवांस्तत्त्वतो मनून् ।

येषा स्मरणमात्रेण दीक्षितो दीक्षितो भवेत् ॥ १ ॥

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ।

अष्टासिद्धिप्रदं सद्यः साधयाना मुदुर्लभम् ॥ २ ॥

(१) तारं परा च हरित परा लक्ष्मीस्ततोऽभियम् ।

लक्ष्मीनारायणायेति निश्चमन्ते मनुः स्मृतः ॥ ३ ॥

(२) तारं रमा वाग्मवकामशक्ति-

र्मायागिराधेति पदं वदेत् ।

कृष्णाय कूर्चं हरठद्रुपं स्या-

च्छ्रीकृष्णमन्त्रो मनुराजमौलिः ॥ ४ ॥

(३) तारं परायुगं तारं विष्णवे विश्वमश्वले ।

देवदेवस्य मन्त्रोऽयं विष्णोस्तव समीरितः ॥ ५ ॥

(४) तार रमा भूविजनाकस्मराथ

शक्तिर्नृवीज नरसिंहदेवम् ।

तुर्गोद्धित वाक नटफडनं ने

प्रोक्तो हि लक्ष्मीनरसिंहमन्त्रः ॥ ६ ॥

(५) तार रमार्थं सकला स्मरथ

लक्ष्मीनारायण-पद वदेत् तु ।

अन्तेऽस्मरी वैष्णवधामदायी

लक्ष्मीनारायण मनुः स्मृतम् ॥ ७ ॥

- (६) तारं परा भूति रमा कुचार्यं
श्रीजामदग्न्याय सरोजयुग्मम् ।
आपस्तथान्ते गदितोऽयमीढ्यो
यथेष्टदो भार्गवराममन्त्रः ॥ ८ ॥
- (७) तारं परा रमा लक्ष्मीसीतारामेति संवदेत् ।
प्रसीद-युगमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं मुक्तिकारणम् ॥ ९ ॥
- (८) तारं मा भूतिमा मारुषां वदेज्जनार्दनाय च ।
विश्वमन्ते मनोर्देवि मन्त्रोऽयं रिपुसूदनः ॥ १० ॥
- (९) तारं परायुगं लक्ष्मीविश्वम्सेनाय संवदेत् ।
कूर्चं पद्मप्रयं नीरं वैष्णवानां सुदुर्लभः ॥ ११ ॥
- (१०) तारं परा रमा वाणी कामो लक्ष्मीपदं वदेत् ।
वासुदेवाय विश्वं स्यान्मन्त्रोऽयं भोगमोक्षदः ॥ १२ ॥
इदं तत्त्वतमं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम् ।
वैष्णवानां च सर्वस्थं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये वैष्णवमन्त्रो
द्धारनिरूपण चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

अथ

पञ्चमः पटलः ।

श्रीमैत्रव उवाच ।

अथ वक्ष्ये महत्तत्त्वं मन्त्राणां परमार्थदम् ॥
येन विज्ञातमात्रेण विद्या सिध्यति सत्त्वरम् ॥ १ ॥
उत्कीलनविधिं वक्ष्ये सर्वमन्त्ररहस्यकम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥ २ ॥
शाक्तानां देवि मन्त्राणां शैवानां च विशेषतः ।
वैष्णवानां मन्त्रां तु वक्ष्याम्युत्कीलनं परम् ॥ ३ ॥
प्रथमं देवि बालापास्त्यचर्याः शृणु पार्वति ।
वाणीमन्ते त्रिरुचार्य भवेदुत्कीलनं मनोः ॥ ४ ॥
अन्त्यकूटं वदेदादौ द्विर्देवि जपसिद्धये ।
भवेत् त्रिपुरमरब्धा मनोः उत्कीलनं परम् ॥ ५ ॥
कूटत्रयाणां प्रथमं वर्णं वर्णं समुदरेत् ।
जपेच्छ्रीषोडशाचर्या भवेदुत्कीलनं मनोः ॥ ६ ॥
अथ वक्ष्ये रहस्यं ते कालिकाया महेश्वरि ।
निष्कीलिता स्याद्विषयं द्वाविंशत्यक्षरी परा ॥ ७ ॥
भद्रिकां प्रथमं दद्यादन्ते कालीत्रयं वेदेत् ।
भद्रकालीमनोर्देवि भवेदुत्कीलनं तथा ॥ ८ ॥
उद्धयान्ते परां दद्यात् जपेत् साधकमक्षयः ।
भवेदुत्कीलनं देवि राज्ञमानाङ्गिनीमनोः ॥ ९ ॥
विश्रान्ते सकलां दद्याज्जपेत् पार्वति जायते ।

मनोः श्रीसुवनेश्वर्याः स्यादुत्कीलनमुत्तमम् ॥ १० ॥
 वधूमादौ पठेदन्ते तारं जप्त्वा च पार्वति ।
 अथमुत्कीलनो मन्त्रस्तारायाः समुदाहृतः ॥ ११ ॥
 मात्रां द्वादशिकीमादौ जपेन्मन्त्रस्य पार्वति ।
 द्विषशीर्षामनोरेष स्यादुत्कीलनकः परः ॥ १२ ॥
 मायामादौ वनान्ते च वाग्भवं साधको जपेत् ।
 सुमुख्या मन्त्रराजस्य भवेदुत्कीलनं तथा ॥ १३ ॥
 वाग्भवं प्रथमं दद्यादिश्वान्ते प्रणवं जपेत् ।
 सरस्वतीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ १४ ॥
 विश्वमादौ जपेद् देवि वनान्ते मदनं पठेत् ।
 अन्नपूर्वामनोरेष स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ १५ ॥
 रमामादौ मनोर्दद्यात् पञ्चमयमथाञ्जले ।
 महालक्ष्मीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ १६ ॥
 सिन्धुरं सञ्जपेदादौ मायामन्ते महेश्वरि ।
 शारिकामन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ १७ ॥
 वनमादौ च नामाग्रे तारं दत्त्वा जपेच्छिवे ।
 शारदामन्त्रराजस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ १८ ॥
 शक्तिबीजं पठेदादौ ठद्वयान्ते च मन्मथम् ।
 इन्द्राक्षीमन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ १९ ॥
 मृद्धीजं च मनोरादौ वनान्ते प्रणवं जपेत् ।
 मन्त्रोऽयं जगलामुख्या मन्त्रोत्कीलनसिद्धिदः ॥ २० ॥
 त्रिः पठेदश्मरीप्रान्ते प्रणवं साधकोत्तमः ।
 तुरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयमुत्कीलनफलप्रदः ॥ २१ ॥
 वक्षिमादौ तथा चान्ते' तारं दत्त्वा महेश्वरि ।

जपेन्मन्त्रं महाराज्ञीमनूत्कीलनसिद्धये ॥ २२ ॥
रमामादौ जपेद् देवि मन्त्रान्ते सकलां जपेत् ।
ज्वालामुखीमनोरेष मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनक्षमः ॥ २३ ॥
वेदीवीजं पठेदादौ नामान्ते प्रणवं जपेत् ।
भीडामन्त्रस्य मन्त्रोऽयमुत्कीलनफलप्रदः ॥ २४ ॥
विश्वान्ते चाग्भवं दद्यात् काममादौ जपेत् प्रिये ।
कालरात्रिमनोर्देवि स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ २५ ॥
तारत्रयं पठेदन्ते मा-त्रयं प्रथमं जपेत् ।
भवानीमन्त्रराजस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषनुत् ॥ २६ ॥
परामन्ते जपेद् देवि वज्रयोगेश्वरीमनोः ।
उत्कीलनाख्यो मन्त्रोऽयं भग्नमिद्विफलप्रदः ॥ २७ ॥
मठमादौ जपेद् देवि ठद्वयान्ते हरं तथा ।
वाराहीमन्त्रराजस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ २८ ॥
हरितं प्रथमं देवि विश्वान्ते चाग्भवं जपेत् ।
सिद्धलक्ष्मीर्मनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ २९ ॥
वैश्यामादौ वनान्ते च लिम्बवीजं जपेच्छिवे ।
उत्कीलनाख्यो मन्त्रोऽयं कुलवागीश्वरीमनोः ॥ ३० ॥
वीचिवीजं जपेदादौ ठद्वयान्ते च तारकम् ।
पद्मावतीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥ ३१ ॥
वागुरां मञ्जुपेदादौ वनान्ते सकलां जपेत् ।
कुब्जकामन्त्रराजस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ॥ ३२ ॥
मठमादौ मनोर्देवि प्रणवं ठद्वयाञ्चले ।
मन्त्रं जपेदयं मन्त्रो गौरीमन्त्रस्य कीलहृत् ॥ ३३ ॥
शक्तिमन्ते जपेद्विश्वं प्रथमं परमेश्वरि ।

खेचरीमन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ ३४ ॥

कूर्चमादौ मनोरन्ते व्योषं दत्त्वा जपेच्छिवे ।

मनोर्नीलसरस्वत्याः स्यादुत्कीलनको मनुः ॥ ३५ ॥

शक्तिमादौ मनोर्देवि वासनामञ्जले जपेत् ।

पराशक्तेर्मनोर्देवि कीलदोषापहो मनुः ॥ ३६ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना शैवमन्त्राणां केचिद् देवि मन्त्रतमाः ।

निष्कीलिता मया ख्याताः केचित् पार्वति कीलिताः ॥ ३७ ॥

महेश्वरः शिवो रुद्रो महादेवः करालकः ।

विकरालः शिवो शर्वो मृडः पशुपतिस्तथा ॥ ३८ ॥

पिनाकी गिरिशो भीमः कुमारः प्रमथाधिपः ।

क्रोधेश ईश ईशानि कपाली क्रूरभैरवः ॥ ३९ ॥

संहार ईश्वरो भर्गो रुरुः कालाग्निभैरवः ।

एते मन्त्रा महादेवि कीलदोषविवर्जिताः ॥ ४० ॥

पुरश्चरणमात्रेण फलं दास्यन्ति सत्त्वरम् ।

अथवा देवदेवेशि वक्ष्ये तत्त्वं परात् परम् ॥ ४१ ॥

एतेषां शैवमन्त्राणां श्रुत्वा गोप्यतमं कुरु ।

मन्त्रादिबीजं देवेशि प्रतिमन्त्रं जपेत् सुधीः ॥ ४२ ॥

त्रिवारं साधको येन भवेदुत्कीलनं मनोः ।

मृत्युञ्जयोऽमृतेशानो वटुको नीलकण्ठकः ॥ ४३ ॥

सद्योजातो गणेशश्च देवेशोऽघोरभैरवः ।

महाकालो महादेवि कामेश्वर इति त्रिषे- ॥ ४४ ॥

एते मन्त्रा मया देवि कीलिता मन्त्रसिद्धये ।

एतेषां मृणु मन्त्राणां देवेश्युत्कीलनं परम् ॥ ४५ ॥

येनोच्चारणमात्रेण मन्त्रमिद्धिः प्रजायते ।

हजवीजं जपेदादौ अन्ते शक्तिं जपेत् प्रिये ॥ ४६ ॥

श्रीमृत्पुञ्जयमन्त्रस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनामिधः ।

तारमन्ते जपेदादौ शक्तिं मन्त्रस्य पार्वति ॥ ४७ ॥

अमृतेश्वरमन्त्रस्य स्यादयं कीलदोषहृत् ।

* (परामादौ जपेदन्ते प्रणवं साधकोत्तमः ॥ ४८ ॥

मन्त्रो बहुकमन्त्रस्य स्यादयं कीलनाशकः ।)

हरितं प्रथमं दत्त्वा मन्त्रान्ते च शिवं जपेत् ॥ ४९ ॥

दुर्गाशिवस्य मन्त्रोऽयं नीलकण्ठस्य कीलनुत् ।

शिवमादौ जपेदन्ते तारं पार्वति साधकः ॥ ५० ॥

उग्रताराशिवस्यायं मन्त्रो मन्त्रस्य कीलहृत् ।

मायामन्ते जपेद् देवि शिवमादौ च साधकः ॥ ५१ ॥

महागणपतेर्मन्त्रो मनोरुत्कीलनामिधः ।

विश्वमादौ मनोर्देवि मात्रादिं चाञ्जले जपेत् ॥ ५२ ॥

अघोरमैरवस्यायं मनोरुत्कीलनो मनुः ।

एषामपि महाकालो निष्कीलित इति स्मृतः ॥ ५३ ॥

अस्य मन्त्रप्रसादेन सर्वे निष्कीलिताः शिवे ।

कामेशकूटत्रयतः प्रथमार्णवत्रयं जपेत् ॥ ५४ ॥

श्रीविद्याशिवमन्त्रस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ।

अथोहं वैष्णवानां ते मन्त्राणां वच्मि पार्वति ॥ ५५ ॥

उत्कीलनमनून् येषां जपमात्राच्छिवं भजेत् ।

हरितं प्रथमं दद्यादन्ते प्रणवंमीश्वरि ॥ ५६ ॥

लक्ष्मीनारायणस्यायं स्यादुत्कीलनको मनुः ।

शक्तिमादौ मनोरन्ते वाग्भवं साधको जपेत् ॥ ५७ ॥

श्रीराधाकृष्णमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ।

परायुगं जपेदन्ते विश्वमादौ जपेन्मनोः ॥ ५८ ॥
 विष्णुमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्यादुत्कीलनकाभिधः ।
 स्वरमादौ जपेदन्ते नृवीजं साधकोत्तमः ॥ ५९ ॥
 लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ।
 तारमन्ते रमामादौ जपेत् साधकसत्तमः ॥ ६० ॥
 लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य भवेदुत्कीलनं परम् ।
 कुचवीजं जपेदादौ मन्त्रान्ते पद्मयुग्मकम् ॥ ६१ ॥
 मनोमार्गिवरामस्य भवेदुत्कीलनं शिवे ।
 परामन्ते रमामादौ जपेत् पार्वति सिद्धये ॥ ६२ ॥
 श्रीसीतारामभद्रस्य मनोर्मन्त्रोऽस्ति कीलहृत् ।
 मामन्ते प्रथमं मां च जपेत् पार्वति साधकः ॥ ६३ ॥
 जनार्दनमनोर्मन्त्रः स्यादुत्कीलनकाभिधः ।
 लक्ष्मीमादौ परामन्ते सकृदुच्चारयेत् सुधीः ॥ ६४ ॥
 विश्वक्सेनमनोर्देवि स्यादुत्कीलनको मनुः ।
 काममादौ च मन्त्रान्ते तारं देवि जपेत् सुधीः ॥ ६५ ॥
 वासुदेवमनोर्मन्त्रः स्यादुत्कीलनकाभिधः ।
 इति तत्त्वं महादेवि मन्त्राणां परमार्थदम् ।
 तत्र लेहेन कथितं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ६६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रं श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रोत्कीलन-
 विधिनिरूपणं पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

अथ

षष्ठः पटलः ।

श्रीमैरव उवाच ।

अथ ते वर्णयिष्यामि सञ्जीवनमनूत् प्रिये ।
एषामुच्चारमात्रेण मन्त्रः सिद्धिमदो भवेत् ॥ १ ॥
बालाया देवि त्र्यक्षर्याः शक्तिमादौ पठेत् सुधीः ।
सञ्जीवनाख्यो मन्त्रोऽयं दिव्यो मन्त्रस्य सिद्धये ॥ २ ॥
पराम्रयं पठेदादौ जीवनं भैरवीमनोः ।
कूटप्रयाणां देवेशि त्रिकूटाया जपेत् सुधीः ॥ ३ ॥
द्वितीयाष्टमं देवि भवेत् सञ्जीवनं मनोः ।
सिद्धविद्या महाश्यामा सर्वदोषविवर्जिता ॥ ४ ॥
जप्या सिध्वै सदा सद्भिर्ब्रह्मविद्भिर्मुमुक्षुभिः ।
भद्रिकापुगलं देवि दद्यादन्ते मनोः शिवे ॥ ५ ॥
भद्रकालीमनोरेप स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
तारं परा पठेदन्ते जपादौ साधकेश्वरि ॥ ६ ॥
राजमातङ्गिनीदेव्या भजेत् सञ्जीवन मनोः ।
वारप्रयं पठेदादौ मूलमन्त्रस्य वै पराम् ॥ ७ ॥
मन्त्रस्य भुवनेश्वर्या भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
कालीं तारं पठेदन्ते मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ॥ ८ ॥
उग्रतारामनोरेप स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।

वासनां मूलमन्त्रस्य जपेदन्ते महेश्वरि ॥ ६ ॥
 छिन्नमस्तामनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
 परामादौ जपेद् देवि काममन्ते तथैव च ॥ १० ॥
 सुमुखीमन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं प्रिये ।
 तारद्वयं जपेन्मन्त्री मन्त्रान्ते भान्त्रिकेश्वरि ॥ ११ ॥
 सरस्वतीमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
 विश्वमन्ते जपेदादौ ठद्वयं कालिकेश्वरि ॥ १२ ॥
 अन्नपूर्णामनोरेण भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 वाणीमन्ते जपेदादौ कामराजं च साधकः ॥ १३ ॥
 महालक्ष्मीमनोर्देवि भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 कूर्चमादौ परामन्ते जपेत् साधकसत्तमः ॥ १४ ॥
 शारिकामूलमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं प्रिये ।
 कामराजं जपेदादौ मायाबीजं तथाञ्चले ॥ १५ ॥
 शारदामन्त्रराजस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः ।
 मन्मथं शक्तिबीजं च जपेदादौ च साधकः ॥ १६ ॥
 इन्द्राक्षीमूलमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः परः ।
 मृत्लापीजं जपेद् देवि प्रणवं च वनाञ्चले ॥ १७ ॥
 वगलामन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 तारकं मूलमन्त्रान्ते त्रिरुच्चार्य जपेत् प्रिये ॥ १८ ॥
 तुर्यामन्त्रस्य निर्णीतः सञ्जीवनमनुः परः ।
 वह्निबीजं जपेदन्ते शक्तिमादौ महेश्वरि ॥ १९ ॥
 राज्ञीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सञ्जीवनकरः स्मृतः ।
 कूर्चमादौ च तुरगं जपेदन्ते महेश्वरि ॥ २० ॥
 ज्वालाशुक्लीमनोरेष मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।
 वाग्मवं प्रणवादौ च ठद्वयान्ते जपेत् पराम् ॥ २१ ॥
 एष सञ्जीवनो मन्त्रो भीडामगवतीमनोः ।

तारमन्ते रमामादौ जपेत् साधकसत्तमः ॥ २२ ॥
 गणेश्वरीकालराज्याः स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
 कूर्धमादौ हरान्ते मां जपेत् साधकसत्तमैः ॥ २३ ॥
 भवानीमूलमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 मायामुधार्य देवेशि त्रिरादौ त्रिस्तथाञ्जले ॥ २४ ॥
 सञ्जीवनमनुर्देवि स्याद्वज्रयोगिनीमनोः ।
 मठमन्ते मठं चादौ जपेत् पार्वति कौस्तिकः ॥ २५ ॥
 मन्त्रोऽयं धूम्रवाराह्या मनोः सञ्जीवनाभिधः ।
 हरितं मूलमन्त्रान्ते जपेदादौ च मन्मथम् ॥ २६ ॥
 सिद्धलक्ष्मीमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
 काङ्क्षामादौ रमामन्ते जपेत् साधकसत्तमः ॥ २७ ॥
 भवेत् सञ्जीवनं देवि कुलवागीश्वरीमनोः ।
 काममादौ महादेवि जपेदन्ते रमां शिवे ॥ २८ ॥
 पद्मावतीमनोरेष स्मृतः सञ्जीवनो मनुः ।
 वागुरां पङ्कजान्ते च प्रणवादौ परां जपेत् ॥ २९ ॥
 कुब्जिकामूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं जीवनाभिधः ।
 बाह्यं प्रणवादौ च मूलान्ते तु शिवं जपेत् ॥ ३० ॥
 गौरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्यात् सञ्जीवनकाभिधः ।
 कूटमन्ते विश्वमादौ जपेत् पार्वति साधकः ॥ ३१ ॥
 खेचरीमन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं शिवे ।
 वाणीमादौ परामन्ते जपेन्मान्त्रिकसत्तमः ॥ ३२ ॥
 भवेत् सञ्जीवनं देवि नीलासरस्वतीमनोः ।
 वाग्भवं प्रणवादौ च काममन्ते जपेत् शिवे ॥ ३३ ॥
 एष सञ्जीवनो मन्त्रः पराशक्तिमनोः स्मृतः ।

अधुना शैवमन्त्राणां निष्क्रीलानां महेश्वरि ॥ ३४ ॥
 वक्ष्ये तत्त्वं रहस्यं ते सञ्जीवनकरं परम् ।
 मूलमन्त्राञ्चले मन्त्री जपेत् तारं पृथक् पृथक् ॥ ३५ ॥
 सर्वेषां शैवमन्त्राणां भवेत् सञ्जीवनं प्रिये ।
 तथापि कीलितानां ते सञ्जीवनमनूत् ब्रुवे ॥ ३६ ॥
 येषां साधनमात्रेण मूलविद्याशु सिध्यति ।
 सूर्यनामाक्षरद्वन्द्वं जपेदादौ च साधकः ॥ ३७ ॥
 मृत्युञ्जयमनोरेप मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।
 विश्वमादौ विश्वमन्ते जपेन्मान्त्रिकनायकः ॥ ३८ ॥
 अमृतेश्वरमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 बटुकायेति तारादौ जपेत् पार्वति साधकः ॥ ३९ ॥
 सञ्जीवनमनुः प्रोक्तो बटुकस्यैष दुर्लभः ।
 शिवं च प्रणवादाँ तु जपेत् साधकवन्दिते ॥ ४० ॥
 श्रीनीलकण्ठमन्त्रस्य मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।
 परामादौ त्रिरुचार्य जपादौ सञ्जपेत् सुधीः ॥ ४१ ॥
 सद्योजातमनोरेप स्मृतः सञ्जीवनो मनुः ।
 शिवमन्ते द्विरुचार्य जपेद् देवि जपादितः ॥ ४२ ॥
 महागणपतेर्मन्त्रो मनोः सञ्जीवनाभिधः ।
 वज्रबीजानि मूलादौ जपेत् पार्वति साधकः ॥ ४३ ॥
 अधोरदेवमन्त्रस्य मनुः सञ्जीवनः स्मृतः ।
 निर्दोषो मन्त्रराजोऽयं महाकालस्य पार्वति ॥ ४४ ॥
 अस्योच्चारणमात्रेण मन्त्राः सिध्यन्ति सर्वदा ।
 कूटत्रयेभ्यो देवेशि द्वितीयाक्षरमुच्चेत् ॥ ४५ ॥
 जपेत् कामेशमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं शिवे ।
 अथाहं वक्ष्यामि ते मनूनां वक्ष्ये जीवनम् ॥ ४६ ॥

याञ्जत्रा साधको देवि भवेद्भैरवसन्निभः ।
 हरितं मूलमन्त्रान्त जपेत् पार्वति साधकः ॥ ४७ ॥
 लक्ष्मीनारायणमनोर्भवेत् सञ्जीवनं परम् ।
 शक्तिमन्ते मनोरादौ वाग्भवं साधको जपेत् ॥ ४८ ॥
 श्रीराधाकृष्णमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः ।
 विश्वान्ते प्रणवं देवि जपेत् साधकसत्तमः ॥ ४९ ॥
 विष्णुमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्मृतः सञ्जीवनाभिधः ।
 नृबीजं प्रथमं देवि प्रणवं चाञ्चले जपेत् ॥ ५० ॥
 लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।
 रमामन्ते त्रिरुद्यार्य जपेदानन्दनिर्भरे ॥ ५१ ॥
 लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः ।
 परायुगं जपेदादौ मन्त्रराजस्य पार्वति ॥ ५२ ॥
 मन्त्रो भार्गवरामस्य मनोः सञ्जीवनः स्मृतः ।
 मन्त्रान्ते प्रणवं देवि तारादौ सकला जपेत् ॥ ५३ ॥
 श्रीसीताराममन्त्रस्य मनोः सञ्जीवनो मनुः ।
 विश्वमादौ परामन्ते जपेत् पार्वति मान्त्रिकः ॥ ५४ ॥
 जनार्दनमनोरेष मन्त्रः सञ्जीवनः स्मृतः ।
 परामादौ परामन्ते सतारां साधको जपेत् ॥ ५५ ॥
 विश्ववसेनमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।
 रमामादौ रमामन्ते जपेदादौ सञ्जपेत् सुधीः ॥ ५६ ॥
 श्रीलक्ष्मीवामुदेवस्य मनोः सञ्जीवनो मनुः ।
 इतीदं मन्त्रमर्च्यं रहस्यं माग्मद्भुतम् ।
 तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनित् ॥ ५७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्र-विदेशीय-मन्त्रमन्त्र-
 विधिनिरूपण पष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अथ

सप्तमः पटलः ।

श्रीमैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि विद्या शापहरीं शिवे ।
सर्वेषामेव मन्त्राणां कलौ निस्तेजसां शृणु ॥ १ ॥
या बाला भैरवी सैव सैव त्रिपुरसुन्दरी ।
त्रिपुरा यास्ति सा काली श्यामा सैव परा स्मृता ॥ २ ॥
तार परां रमां चाले शिवशाप विमोचय ।
विमोचय हर नीरं बालाशापहरी स्मृता ॥ ३ ॥
वाणी शरत् स्मरो रुद्रशापं मोचय मोचय ।
तुरग ठद्वयं देवि भैरवीशापमोचनम् । ॥ ४ ॥
बालापीजत्रयं कूटमाद्यं तारं परा रमाम् ।
सदाशिवस्य शाप च मोचय-द्वयमुद्धरेत् ॥ ५ ॥
शरत् कूट पठेदन्ते विद्येयं शापहारिणी ।
श्यामा परमविद्येयं द्वाविंशत्यक्षरी परा ॥ ६ ॥
महार्थोपोढशीविद्या सर्वदोषविवर्जिता ।
तथापि दुर्लभा विद्या वक्ष्येऽहं शापहारिणीम् ॥ ७ ॥
द्वाविंशत्यक्षरीदेव्या यथा मन्त्रो हि सिध्यति ।
कालीं हर्च पर नाम दक्षिणे कालिके तथा ॥ ८ ॥
वसिष्ठशाप प्रोक्षार्य मोचय-द्वयमीश्वरि ।
कालीं हर्च परा नीरमेषा स्याच्छापहारिणी ॥ ९ ॥
कालीं भीमा तट भद्रकालि भीमा शिवस्य हि ।

शापं मोचय-युग्मापो विद्येयं शापहारिणी ॥ १० ॥
 तारं परां च मातङ्गि कालशापं विमोचय ।
 तुरगं नीरमन्ते तु विद्येयं शापहारिणी ॥ ११ ॥
 मायां भैरवशापं च मोचय-द्वयमञ्जले ।
 मायां स्याद्भुवनेश्वर्या विद्येयं शापहारिणी ॥ १२ ॥
 प्रणवं कामिनीं मायां ब्रह्मशापं विमोचय ।
 विमोचयापस्ताराया विद्येयं शापहारिणी ॥ १३ ॥
 वासनां कमलां मायां रुद्रशापं विमोचय ।
 मोचयापो मथारुपातं द्विघ्नमस्ताडुमोचनम् ॥ १४ ॥
 वाग्मनं कामराजं च शिवशापं विमोचय ।
 परां नीरमियं त्रिधा सुमुख्याः शापहारिणी ॥ १५ ॥
 प्रणवं वामनां तारं सरस्वति वदेत् ततः ।
 दुर्घातःशापं मुञ्चाशु ठद्वयं शापमोचनम् ॥ १६ ॥
 तारं परामन्त्रपूर्णं शिषशापं विमोचय ।
 कूर्चं हरं वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ १७ ॥
 तारं रमां महालक्ष्मि विष्णुशापं विमोचय ।
 तुरगं नीरमीशानि विद्येयं शापहारिणी ॥ १८ ॥
 तारं च सिन्धुरं देवि शारिके ब्रह्मलाञ्छनम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥ १९ ॥
 तारं मायां शारदे च विष्णुशापं विमोचय ।
 शक्तिर्नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २० ॥
 तारं वाणीं शम्भुनाममिन्द्राचि ब्रह्मलाञ्छनम् ।
 मोचय द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥ २१ ॥
 तार मृत्नां च वगले रुद्रशापं विमोचय ।
 तार मृदं वनं देवि त्रियेयं शापहारिणी ॥ २२ ॥

तारं तारां च तुर्ये तु शिवशापं विमोचय ।
 तारकं ठद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २३ ॥
 तारं वह्निं शरद्रात्रि ब्रह्मशापं विमोचय ।
 विमोचय वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २४ ॥
 तारं रमां परां ज्वालामुखि भैरवलाञ्छनम् ।
 कूर्चं नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २५ ॥
 तारं परां रमां भीडे ध्रुवशापं विमोचय ।
 मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २६ ॥
 तारं वार्णीं च डिम्बं च कालरात्रि शिवस्य च ।
 शापं मोचय नीरं च विद्येयं शापहारिणी ॥ २७ ॥
 तारं रमां रमां तारं रुद्रशापं विमोचय ।
 कूर्चं हरं वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ २८ ॥
 तारं परां परां तारं वज्रयोगिनि प्रोद्धरेत् ।
 शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी ॥ २९ ॥
 तारं रमां च चाराहि नारदाङ्गं विमोचय ।
 मठं नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ३० ॥
 तारं रमां सिद्धलक्ष्मि सिद्धशापं विमोचय ।
 घाणीं शरत् स्मरो नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥ ३१ ॥
 तारं व्योमं रमां काङ्क्षां कुलवागीश्वरि स्फुटम् ।
 शिवशापं च मुञ्चापो विद्येयं शापहारिणी ॥ ३२ ॥
 तारं मायां च पद्मं च पद्मावति हरेस्तथा ।
 शापं मुञ्चयुगे नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥ ३३ ॥
 तारं मायां कुञ्जिके च जदनुशापं विमोचय ।
 नीरमन्ते महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ३४ ॥
 तारं शिवं गौरि भृगोः शापं मोचय मोक्ष्य ।

नीरमन्ते मनोर्देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ३५ ॥
 * (तारं खेचरि रुद्रस्य शापं मोचय मोचय ।
 परां नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ३६ ॥)
 तारं वाणी च नीलेति सरस्वति हरिञ्जलम् ।
 मोचयापो मनोरन्ते विद्येयं शापहारिणी ॥ ३७ ॥
 तारं शक्तिः पराशक्ते शिवशापं विमोचय ।
 विमोचय शरन्नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥ ३८ ॥
 अधुना शैवमन्त्राणां कीलितानां महेश्वरि ।
 सर्वसाधारणीं विद्यां चक्ष्येऽहं शापहारिणीम् ॥ ३९ ॥
 निष्कीलितानां मन्त्राणां विद्यां शापहरीं मृषु ।
 यस्या उच्चारमात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिध्यति ॥ ४० ॥
 तारं परां रमां वाणीं कामं शक्तिं सदाशिव ।
 शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी ॥ ४१ ॥
 तारं हृजं शरद् रुद्रशापं मोचय मोचय ।
 शरद् हृजं च तारं च विद्येयं शापहारिणी ॥ ४२ ॥
 तारं ततोऽमृतेशान शिवशापं विमोचय ।
 युग्ममन्ते तथा तारं विद्येयं शापहारिणी ॥ ४३ ॥
 तारं परां च बहुक ब्रह्मशापं विमोचय ।
 द्वयं च देवीप्रणवो विद्येयं शापहारिणी ॥ ४४ ॥
 तारं च नीलकण्ठेति दुर्वासाङ्गं विमोचय ।
 मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ४५ ॥
 तारं ब्रविः परा तारं सद्योजात रविञ्जलम् ।
 मोचय उद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ४६ ॥
 तारं शिवं गणेशान रुद्रशापं विमोचय ।

वनमन्ते महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ४७ ॥
 तारमाद्यश्चरहविदेव स्वच्छन्दनायक ।
 शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी ॥ ४८ ॥
 तारं कूर्चं परां देवि महाकाल विधिञ्जलम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥ ४९ ॥
 वाग्भवं कामशक्तिश्च भैरवाङ्कं विमोचय ।
 तारं परामाद्यबीजं विद्येयं शापहारिणी ॥ ५० ॥
 अथ वैष्णवमन्त्राणां शृणु पार्वति सादरम् ।
 विद्यां शापहरीं सद्यो मन्त्रसिद्धिर्भवेद् यतः ॥ ५१ ॥
 तारं रमां च लक्ष्मीति नारायण शिवञ्जलम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥ ५२ ॥
 तारं शक्तिः परा तारं राधाकृष्ण विधिञ्जलम् ।
 मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ५३ ॥
 तारं परां रमां विष्णो रुद्रशापं विमोचय ।
 तारं ठद्वयमन्ते च विद्येयं शापहारिणी ॥ ५४ ॥
 तारं परा नृवीजं च नरमिह शिवञ्जलम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥ ५५ ॥
 तारं रमां च लक्ष्मीति वराह हरिलाञ्छनम् ।
 मोचय-द्वयमापोऽन्ते विद्येयं शापहारिणी ॥ ५६ ॥
 तारं कूर्चं मार्गवेति शुकशापं विमोचय ।
 तुरगं ठद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥ ५७ ॥
 तारं रमां राममद्र गुरुशापं विमोचय ।
 हरं ठद्वयमन्ते च विद्येयं शापहारिणी ॥ ५८ ॥
 * (तारं रमा रमा तारं जनार्दन विधिञ्जलम् ।

मोचपापो महादेवि विधेयं शापहारिणी ॥ ५६ ॥)
 तारं परां रमां तारं विश्वक्सेन मनुञ्चलम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विधेयं शापहारिणी ॥ ६० ॥
 तारं रमा रमा लक्ष्मीवासुदेव शिवञ्चलम् ।
 मोचय-द्वयमापश्च विधेयं शापहारिणी ॥ ६१ ॥
 इतीदं परमं तत्त्वं रहस्यं सारमुत्तमम् ।
 गुह्यं सर्वस्वमीशानि गोपनीयं विशेषतः ॥ ६२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शापहरीविधौऽष्ट-
 निरूपणं सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अथ

अष्टमः पटलः

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि जपसाधनमुत्तमम् ।
 येन साधितमात्रेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ १ ॥
 गुरुपादप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते ।
 पुरस्क्रियाजपेनैव चेत्तां साधयितुं क्षमः ॥ २ ॥
 वाग्मी धनी जधी शूर इह भोगी स भूपतिः ।
 परत्र साधको देवि भवेद् भैरवसन्निभः ॥ ३ ॥
 मुदिने शुभनक्षत्रे ग्रानःकृत्यं विधाय च ।

मृगहं मृगुरुं नीत्वा नत्वा पादा महेश्वरि ॥ ४ ॥
 प्रक्षाल्य पूजायतने श्रीचक्रं पूजयेच्छिवे ।
 सिन्दूरेण लिखेत् व्यसं गुरुं तत्र निवेशयेत् ॥ ५ ॥
 तारं शिवत्रयं देवि गुरवे पदमुचरेत् ।
 विश्वमन्त्रे महादेवि गुरुमब्रवीत्प्रमुत्तमः ॥ ६ ॥
 अनेन मूलमन्त्रेण गुरुं संपूजयेत् सुधीः ।
 मातृकाभिः ममं देवि यथास्थानेषु पार्वति ॥ ७ ॥
 गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्द्रव्यैर्देवि शुभाम्बरैः ।
 गुरुं सन्तोषयेत् तत्र दक्षिणाभिः कुलामृतैः ॥ ८ ॥
 तदाज्ञां शिरसादाय जपाय साधकोत्तमः ।
 रत्नां प्रातर्महादेवि गुरुं नत्वा च साधकः ॥ ९ ॥
 प्रादुसुखः प्रणतो भूत्वा जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
 शिवशक्त्योः पृथग् देवि जपं संपाद्य साधकः ॥ १० ॥
 पङ्क्तं मूलमन्त्रस्य दशांशेन जपेत् ततः ।
 ततो देवि जपेन्मन्त्री छन्दोगुनिमनुं ततः ॥ ११ ॥
 ततो देवि जयी जप्त्वा होमं कुर्याद् दशांशतः ।
 तर्पयित्वा दशांशेन मार्जयेत् तद्दशांशतः ॥ १२ ॥
 भोजयित्वा दशांशेन जपमिद्विर्भवेत् ततः ।
 जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्महेश्वरि ॥ १३ ॥
 न स्तवान्नार्चनाद् ध्यानात् सिद्धिर्भवति तादृशी ।
 पारायणजपेनास्ति यादृशी मन्त्रिणां शिवे ॥ १४ ॥
 श्रीदेव्युवाच ।
 भगवन् परमेशान साधकानां हितेच्छया ।
 पारायणजपं ब्रूहि यद्यहं तव वल्लभा ॥ १५ ॥
 श्रीभैरव उवाच ।

देवि पारायणं वक्ष्ये विद्याजपफलाप्तये ।
 येन मिद्धिपुतो मन्त्री भवेद्भैरवमन्त्रिणः ॥ १६ ॥
 अमंख्याताश्च विख्याताः पारायणजपाः प्रिये ।
 तेषां तत्त्वं परं वक्ष्ये येन ब्रह्ममयो भवेत् ॥ १७ ॥
 पारायणस्तु स जपः सन्ध्यन् यद् ब्रह्मचिन्तनम् ।
 तस्यैव सगुणस्यात्र चिन्तनं घटिकाजपः ॥ १८ ॥
 द्विविधोऽयं जपो देवि सगुणो निर्गुणस्तथा ।
 सिद्धः साध्य इति स्मृत्या जपेत् पारायणं मनुम् ॥ १९ ॥
 कलेर्धुगारम्भदिने दिनेशो हृष्टेस्त्रिजोऽभ्युदितो बभूव ।
 तदादि नित्यं घटिककमानात् प्रत्यक्षरं याति दिने दिनेऽर्कः ॥ २० ॥
 नवार्णमश्रवालिमेति सूर्यो मध्यन्दिने सायमथ प्रभाते ।
 त्रिभागमाद्यन्तर्यामस्तथान्ते विधाय मन्त्रस्य जपेन्मुमुक्षुः ॥ २१ ॥
 एकादिपञ्चाशतिवर्णपङ्क्त्या संयोज्य मन्त्रस्य नवाक्षराणि ।
 घटीप्रमाणाः कुलमातृकाया भवन्ति वर्णा मन्त्राजसिद्ध्यै ॥ २२ ॥
 आर्ह-विभूषितां कृत्वा मातृकां हंभूषिताम् ।
 मूलविद्यां जपेन्मन्त्री शिवशक्तिमयीं शिवे ॥ २३ ॥
 पञ्चनादान् परित्यज्य यो जपेत् षोडशाक्षरीम् ।
 पञ्चपष्टाक्षरीमूलान् पञ्चनादात्मको भवेत् ॥ २४ ॥
 आदितो देवि विद्यादौ विद्यामध्ये तदग्रतः ।
 विद्यान्तेऽपि त्वजोद्विद्यां शिवरूपां शिवो भवेत् ॥ २५ ॥
 शहके विश्वरूपोऽपि सूर्योऽङ्कारे तदोदितः ।
 तदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् मातृकासु चरेद्भविः ॥ २६ ॥
 वासनावशतस्त्यक्तो बद्धितेजोमयो भवेत् ।
 लक्ष्मीं प्राप्य शिवो मन्त्री नैमाग्यान्ता यथाक्रमम् ॥ २७ ॥
 पयोद्विद्यया विद्यामार्हं पल्लवितां क्रमात् ।

हंसान्तां सञ्जपेद् देवि मन्त्री मातृकया सदा ॥ २८ ॥
 अयं पारायणो नाम जपः सिद्धिप्रदः कलौ ।
 महाश्रीषोडशीविद्यामष्टभूतिमयीं पराम् ॥ २९ ॥
 वेदादिभूतां प्रजपेन्मातृकाभिः कुलाश्रयः ।
 इदं रहस्यं परमं पारायणजपात्मकम् ।
 ब्रह्मविद्यालयोत्थानं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ३० ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पारायणजपविधि-
 निरूपणमष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

अथ

नवमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अथाहं सर्वमन्यासां वक्ष्ये संपुटसदक्रमम् ।
 यं विज्ञाय भवेद् देवि सर्वसौख्यमयः सुधीः ॥ १ ॥
 बालायाः शक्तिबीजं तु दद्यादादौ महेश्वरि ।
 बालात्रिपुरसुन्दर्याः संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ २ ॥
 मायात्रयं पठेदन्ते त्रिकूटाया महेश्वरि ।
 साध्यस्त्रिपुरभैरव्याः संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ ३ ॥
 शक्त्यादिद्वये मन्त्रस्य दद्यादादौ जपेन्मनुम् ।
 महात्रिपुरसुन्दर्या भग्नोऽयं संपुटाभिधः ॥ ४ ॥
 रयामास्ति दक्षिणाकाली द्वाविंशत्यक्षरी शिवे ।

सर्वदोषविनिर्मुक्ता पुरापि कथितं मया ॥ ५ ॥
 भद्रिकामञ्चले दत्त्वा जपेन्मूलं महेश्वरि ।
 भद्रकात्त्या अयं मन्त्रः संपुटाख्योऽस्ति सुन्दरि ॥ ६ ॥
 तारमन्ते जपेद् देवि त्रिवारं मोक्षरेत् सुधीः ।
 राजमातङ्गिनीदेव्याः संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ ७ ॥
 विश्वान्ते च परासीजं दशवारं पठेच्छिवे ।
 मन्त्रोऽयं भुवनेश्वर्याः संपुटाख्यः सुसिद्धिदः ॥ ८ ॥
 तुरगं मूलमन्त्रादौ जपेत् पार्वति साधकः ।
 उग्रतारामनोरेष मन्त्रः श्रीसंपुटाभिधः ॥ ९ ॥
 मायाद्वयं जपेदन्ते साधकः साधकेश्वरि ।
 मन्त्रोऽयं छिन्नमस्तायाः संपुटाख्योऽतिदुर्लभः ॥ १० ॥
 पद्मत्रयं पठेदादौ मायामन्ते महेश्वरि ।
 देव्या उच्छिष्टमातङ्गाः संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ ११ ॥
 वाग्भवं च मनोरन्ते पठेत् साधकमत्तमः ।
 मरुत्वत्या मनोर्देवि मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ १२ ॥
 तारं कामं मनोरन्ते दद्यात् पार्वति साधकः ।
 अश्वपूर्णमनोरेष मनुः स्यात् संपुटाभिधः ॥ १३ ॥
 वाग्भवं त्रयमं दद्यादन्ते दद्याच्च मन्मथम् ।
 देवताया महालक्ष्म्याः संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ १४ ॥
 सिन्धुरं साधको दद्यान्मनोरन्ते महेश्वरि ।
 शारिकामूलमन्त्रस्य मन्त्रः संपुटकाभिधः ॥ १५ ॥
 तारं कामं मनोरन्ते पठेत् साधकमत्तमः ।
 शारदायाः सरस्वत्या मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ १६ ॥
 शक्तिमादौ पठेन्मन्त्री वाणीमन्ते महेश्वरि ।

इन्द्राक्ष्या वज्रहस्ताया मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ १७ ॥
 रमनां मृत्तिकाबीजं मनोरन्ते पठेत् मुधीः ।
 श्रीदेव्या व्रगलामुख्या मन्त्रः संपुटकाभिधः ॥ १८ ॥
 तारं दद्यान्मनोरन्ते जपेत् पार्वति साधकः ।
 महातुर्षा मनोरेष संपुटाख्योऽस्ति सिद्धिदः ॥ १९ ॥
 वक्त्रिं वार्णीं पठेदन्ते जपेत् पार्वति साधकः ।
 महाराक्ष्या मनोरेष मनुः स्यात् संपुटाभिधः ॥ २० ॥
 कूर्चमार्दा हरं चान्ते जपेन्मूलं महेश्वरि ।
 ज्वालामुख्या अयं मन्त्रः संपुटाख्योऽस्ति पार्वति ॥ २१ ॥
 तारं शक्तिं मनोरन्ते ठड्यं प्रथमं पठेत् ।
 संपुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रो भीडाया देवदूर्लभः ॥ २२ ॥
 कुरु बीजं जपेदादौ विश्वान्ते प्रणवं पठेत् ।
 कालरात्रिमनोरेष मन्त्रः संपुटकारणम् ॥ २३ ॥
 रमां तारं पठेदन्ते कूर्चमार्दा महेश्वरि ।
 भवानीमूलमन्त्रस्य संपुटोऽयं मघेरितः ॥ २४ ॥
 तारादौ सकलां दद्यादन्ते तारं जपेत् प्रिये ।
 संपुटो वर्णितो देवि श्रीवज्रयोगिनीमनोः ॥ २५ ॥
 मठरीजं जपेदादौ मन्त्रान्ते पङ्कजं जपेत् ।
 मन्त्रोऽयं धूम्रनाराय्याः संपुटाख्यो मघेरितः ॥ २६ ॥
 कामराजं जपेदादौ विश्वान्ते वाग्भवं जपेत् ।
 मिद्वलक्ष्मीमनोरेष संपुटो वर्णितो मया ॥ २७ ॥
 स्पृष्टामार्दा जपेद् देवि वनान्ते पङ्कजं जपेत् ।
 मन्त्रोऽयं संपुटाख्योऽस्ति कुलनागीश्वरीमनोः ॥ २८ ॥
 कामराजं जपेदादौ वनान्ते मकला जपेत् ।
 वज्रपरीमनोरेष मन्त्रः स्यात् संपुटाभिधः ॥ २९ ॥

वागुरां प्रणवादां च वनान्ते पङ्कजं जपेत् ।
 कुञ्जिकामूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ३० ॥
 मठमादां महादेवि ठट्टयान्ते शिवं जपेत् ।
 गौरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटो वर्णितो मया ॥ ३१ ॥
 विश्वान्ते सज्जपेत् कूटं कूटादां शरद्वं जपेत् ।
 खंचरीमूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ३२ ॥
 कूर्चं जपेन्मनोरादां वनान्ते तुरगं जपेत् ।
 मनोर्नीलसरस्वत्याः संपुटो वर्णितो मया ॥ ३३ ॥
 चागभवं प्रथमं देवि प्रणवं ठट्टयाञ्चले ।
 पराशक्तिमनोरेप मन्त्रः संपुटकारणम् ॥ ३४ ॥
 निष्क्रीलिताना मन्त्राणां शैवानां कुलपूजिते ।
 सर्वसाधारणं वक्ष्ये संपुटं मुरपूजिते ॥ ३५ ॥
 तारद्वयं जपेदादां मध्ये नामाञ्चले पराम् ।
 सर्वेषां शैवमन्त्राणां संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ ३६ ॥
 तारं हृज्ज पठेन्मध्ये पालय-द्वयमादितः ।
 मृत्युञ्जयमनोरेप संपुटो वर्णितो मया ॥ ३७ ॥
 विश्वमादां महादेवि शक्तिमन्ते जपेत् सुधीः ।
 अमृतेश्वरमन्त्रस्य संपुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥ ३८ ॥
 कुरु द्वयादां प्रणव परान्तेऽपि कुरु-द्वयम् ।
 संपुटाख्यो मनुः श्रोत्रो वटुकस्य मया शिवे ॥ ३९ ॥
 हरित द्विः समुच्चार्य मध्ये नाम ततः पराम् ।
 मन्त्रोऽय नीलकण्ठस्य संपुटाख्यो मयेरितः ॥ ४० ॥
 तारमन्ते परामादां जपेत् साधकमत्तमः ।
 मद्योजातस्य मन्त्रस्य मन्त्रोऽय संपुटाभिधः ॥ ४१ ॥
 परात्रय शिवान्ते च प्रणवान्ते शिवत्रयम् ।

महागणपतेरेष मन्त्रः संपुटकारकः ॥ ४२ ॥
 विश्वबीजं जपेदादौ विश्वमन्ते जपेत् प्रिये ।
 मन्त्रोऽस्त्ययोरदेवस्य वर्णितः संपुटाभिधः ॥ ४३ ॥
 कूटमादौ महादेवि कूटान्ते वाग्मवं जपेत् ।
 श्रीकामेश्वरमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ४४ ॥
 एतेषामपि मन्त्राणां शैवानां कुलनायिके ।
 निष्कलितो महाकालमन्त्रो दोषविवर्जितः ॥ ४५ ॥
 श्रधुना वैष्णवानां ते मन्त्राणां परमेश्वरि ।
 वक्ष्ये संपुटमन्त्रांश्च साधकानां हितेच्छया ॥ ४६ ॥
 नामान्ते कमलां देवि विश्वान्ते प्रणवं जपेत् ।
 लक्ष्मीनारायणमनोर्मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ४७ ॥
 हरमादौ महादेवि ठद्वयान्ते रमां जपेत् ।
 श्रीराधाकृष्णमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ४८ ॥
 तारमन्ते जपेदादौ विश्वं विश्वसमर्चिते ।
 श्रीविष्णुमूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ४९ ॥
 स्मरमादौ जपेद् देवि रमाबीजं तथाश्रले ।
 लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ५० ॥
 विश्वमादौ मनोर्देवि नाम्नोऽग्रे सकलां जपेत् ।
 लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ५१ ॥
 सरोजं प्रथमं देवि वनान्ते च रमां जपेत् ।
 जामदग्न्यमनोरेष मन्त्रः संपुटकारकः ॥ ५२ ॥
 तारमन्ते वनं चादौ जपेत् साधकसत्तमः ।
 श्रीसीताराममन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ५३ ॥
 विश्वान्ते नाम देवेशि मायुगं प्रथमं जपेत् ।

श्रीजनार्दनमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ५४ ॥
 परामादौ परामन्ते जपेत् साधकनायकः ।
 विश्वक्सेनमनोरेष मन्त्रः संपुटकारकः ॥ ५५ ॥
 वाणीमादौ जपेद् देवि लक्ष्मीमन्ते महेश्वरि ।
 श्रीवासुदेवमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं संपुटाभिधः ॥ ५६ ॥
 इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रहस्यं तत्त्वमुत्तमम् ।
 तव स्नेहेन निर्णीतं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ ५७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये संपुटवि-
 धिनिरूपणं नवमः पटलः ॥ ६ ॥

अथ

दशमः पटलः

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पुरश्चरणसाधनम् ।
 येन साधितमात्रेण मन्त्रः सिद्धिप्रदो भवेत् ॥ १ ॥
 जीवहीनो यथा देही' सर्वकर्मसु न क्षमः ।
 पुरश्चरणहीनो हि न मन्त्रः सिद्धिदायकः ॥ २ ॥
 वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तदर्धं वा महेश्वरि ।
 एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ ३ ॥
 वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ।

अर्धरात्रेऽपि मध्याह्ने पुरश्चरणमारमेत् ॥ ४ ॥
 सुदिने शुभनक्षत्रे सुमुहूर्ते महेश्वरि ।
 स्वगुरुं पूजयित्वा दौ पुरश्चर्यां समारभेत् ॥ ५ ॥
 गुरोराज्ञां समादाय स्नात्वा वेदीं चरेत् सुधीः ।
 चतुष्कोणामीशदिशि स्वहस्तपरिविस्तृतम् ॥ ६ ॥
 तत्र लिप्त्वा महादेवि सिन्दूरेणाष्टगन्धकैः ।
 लिखेद् बिन्दुत्रयसप्तमादौ षडश्रं वृत्तमण्डलम् ॥ ७ ॥
 वसुपत्रं रघुत्ताड्यं भृगेहेनोपशोभितम् ।
 पुरश्चर्यायन्त्रमेतद्गदितं गिरिजे मया ॥ ८ ॥
 सर्वसाधारणं पूज्यं साधकैस्तत्त्वदर्शिभिः ।
 इन्द्राग्निममांसाद-वरुणानिलवित्तदाः ॥ ९ ॥
 सेश्वरा लरप(ट)ज्ञाभ्रपसेहंभीजमण्डिताः ।
 पूज्या सहेतयो देवि धराभवनमण्डले ॥ १० ॥
 ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी नारसिंहिका ।
 वाराही चण्डिका देवि पूजनीयापराजिता ॥ ११ ॥
 समैरवा वसुदले वामावृत्त्या मुमुक्षुभिः ।
 पार्वती कुब्जिका दुर्गा चामुण्डा नीलवारिणी ॥ १२ ॥
 कात्यायनी पूजनीया षडश्रेषु महत्तरैः ।
 गङ्गा च यमुना देवि पूज्या त्र्यश्रे सरस्वती ॥ १३ ॥
 त्रिन्दौ पूज्या च सशिवा साधकैरिष्टदेवता ।
 मूलमन्त्रेण गन्धार्घ्यपुष्पधूपादिदीपकैः ॥ १४ ॥
 तत्र बिन्दौ न्यसेद्यन्त्रं खेष्टदेव्या महेश्वरि ।
 वेदीविदिक्षु संस्थाप्य मन्त्री घटचतुष्टयम् ॥ १५ ॥
 मूलेन साधको देवि यवान् संमन्य वापयेत् ।

वह्निनिर्घृतिचातेशक्रमेणैवं समर्चयेत् ॥ १६ ॥
 गणेशं भारतीं दुर्गां चेत्रपालं घटेषु च ।
 स्वस्वमूलेन देवेशि तत्र पूजा तथाद्विकीम् ॥ १७ ॥
 कुर्यात् तदग्रतो देवि पुरश्चरणमारमेत् ।
 श्रीचक्रं पूजयित्वादौ ततः कुर्याज्जपं सुधीः ॥ १८ ॥
 शान्तो दम्भं तथा लौल्यं त्यजेन्मन्त्रस्य सिद्धये ।
 ब्रह्मचर्यधरो मन्त्री ध्यायन् देवीं वरप्रदाम् ॥ १९ ॥
 जपेन्मूलं वशी लवं नियमेन समाहितः ।
 हविष्याशी महादेवि ततः सिद्धमनुर्भवेत् ॥ २० ॥
 जप्त्वा मन्त्री मन्त्रराजं हुत्वा देवि दशाशतः ।
 तर्पयेत् तद्दशाशेन मार्जयेत् तद्दशाशतः ॥ २१ ॥
 भोजयेत् तद्दशाशेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ २२ ॥
 रात्रौ परस्त्रिय बाला रयामा वा मदनातुल्यम् ।
 आनीय पूजयेन्मन्त्री यथोक्तविधिना शिवे ॥ २३ ॥
 नमो मुक्तकचो धीरो मधुपानपरायणः ।
 शक्तिवच्चःसमाश्लिष्टो जपेन्मूलं यथाविधि ॥ २४ ॥
 लक्ष्मेकं दशाशेन संस्कृतं होमतर्पणैः ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् तस्य देवानामपि दुर्लभा ॥ २५ ॥
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
 पुत्रजन्मोत्तमवदिने स्रुतिकाकुलमन्दिरे ॥ २६ ॥
 मान्त्रिको मूलमन्त्रं स्व जपेद् दशादिनावाधि ।
 दशाशसंस्कृतं मन्त्रं कुर्यात् सिद्धो भवेन्मनुः ॥ २७ ॥
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।

मृतकाशौचदिवसे प्रथमे साधको जपेत् ॥ २८ ॥
 मनुं वशीं दिने रात्रौ वीरो भूत्वा पथार्थतः ।
 एकादशेऽहनि सुधीः कुर्यान्मन्त्रं तु संस्कृतम् ॥ २९ ॥
 कर्मणा मनसा वाचा मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ।
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ ३० ॥
 सूर्योदयात् समारभ्य यावत् सूर्योदयान्तरम् ।
 तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ ३१ ॥
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
 सूर्योपरागवेलायां जपेन्मन्त्रं महेश्वरि ॥ ३२ ॥
 जप्त्वा होमादिकं कृत्वा मन्त्रसिद्धिर्मवेद् ध्रुवम् ।
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ ३३ ॥
 चन्द्रोपरागे देवेशि जपेन्मूलं यथाविधि ।
 दशांशसंस्कृतो मन्त्रो भवेद्यन्तामणिः क्षणात् ॥ ३४ ॥
 यस्य नास्ति जपे शक्तिः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ।
 वर्णलक्षपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥ ३५ ॥
 इदं तत्त्वं हि मन्त्राणां सारात् सारं परात् परम् ।
 अत्रार्थं गुह्यमीशानि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ ३६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्या-
 विधिनिरूपण दशमः पटलः ॥ १० ॥

अथ

एकादशः पटलः ।

—:ॐ*:*—

श्रीमैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पुरश्चर्याफलं परम् ।

यं लब्ध्वा साधको देवि मर्त्योऽप्यमरतां लभेत् ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवंस्तत्त्ववेत्ता त्वं सकलागमपारगः ।

पुरश्चरणहोमस्य घट मेऽद्य विधिं विमो ॥ २ ॥

श्रीमैरव उवाच ।

जप्त्वा मनुं लक्षसंख्यं साधको मन्त्रसाधकः ।

गत्वा रहःस्थलं देवि होमं कुर्याद् दशांशतः ॥ ३ ॥

सुदिने शुभनक्षत्रे साधको मैरवार्चने ।

गृहीत्वा होमसंभारं व्रजेत् प्रयतमानसः ॥ ४ ॥

तत्रैकतः दमशानं ॥ धृत्वा संमुखपृष्ठयोः ।

पेशान्यां दिशि देवेशि लिखेच्छ्रीचक्रमुत्तमम् ॥ ५ ॥

तन्ममभ्यर्च्य विधिना श्रीचक्रं मूलविधया ।

ततो मन्त्रं जपेत् सिद्धमष्टोत्तरशतावधि ॥ ६ ॥

पूर्वस्यां दिशि सद्यन्नात् खनेत् कुण्डं त्रिकोणकम् ।

हस्तैकविस्तरं चाधो हस्तैकपरिमाणतः ॥ ७ ॥

कुण्डेऽसिन् त्रिलिखेद्यन्त्रं त्र्यथं विन्दुविराजितम् ।

यत्कोणमष्टपत्रं च त्रिंशत् भूगृहाङ्कितम् ॥ ८ ॥

ततः पूजां चरेद् देवि कुण्डचक्रस्य पार्वति ।

यथोक्तविधिना येन साधको दीक्षितो भवेत् ॥ ९ ॥

गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्तथा ।
 चतुर्द्वारेषु संपूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः ॥ १० ॥
 माया च मोहिनी मत्ता माधवी वह्निवल्लभा ।
 वर्तुली' वीरसुर्वाम्या पूज्या अष्टदलस्थिताः ॥ ११ ॥
 अम्बालिकाम्बा बगला छिन्नशीर्षाम्बिका भगा ।
 पद्मकोणमध्यगाः पूज्याः कुण्डचक्रे महेश्वरि ॥ १२ ॥
 वह्निं वैश्वानरं चाग्निं त्रिकोणे पूजयेच्छिवे ।
 स्वाहाभगवतीं चिन्दौ जातवेदसमर्चयेत् ॥ १३ ॥
 अग्निं मूलेन देवेशि वह्नेर्दशकलास्ततः ।
 तारं वह्निः शिवोऽन्धिश्च ह्रजं शक्तिर्महेश्वरि ॥ १४ ॥
 अग्ने वैश्वानरं ब्रूयाज्जटाभारेति संवदेत् ।
 भास्वरेति त्रिनेत्रेति ज्वालामुख-पदं वदेत् ॥ १५ ॥
 प्रज्वलेति युगं ब्रूयाज्जातवेदासि संवदेत् ।
 ठद्वयं संवदेदन्ते मन्त्रोऽयं वह्निवल्लभः ॥ १६ ॥
 अनेन मूलमन्त्रेण वह्निचक्रं प्रपूजयेत् ।
 गन्धाक्षतप्रसन्नैश्च धूपदीपादितर्पणैः ॥ १७ ॥
 नैवेद्याचमनीयाघैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।
 तत्र संपूज्य देवेशि श्रीचक्रं नवयोनिकम् ॥ १८ ॥
 ततो दिग्भैरवान् भूतानर्चयेत् कुसुमैः परम् ।
 ततो देवि प्रमथ्याग्निं कुण्डचक्रे कुलेश्वरि ॥ १९ ॥
 चिन्दौ वह्निं समावाह्य मूलेनोज्ज्वालयेच्छिवे ।
 अग्निं सन्दीप्य मूलेन प्रथमेद् वह्निमुद्रया ॥ २० ॥
 मूलेनाहुतिभिर्वह्निं हुनेत् षोडशभिस्ततः ।
 अष्टोत्तरशतानुत्था दद्यादाज्येन पार्वति ॥ २१ ॥

आहुतीः पायसैर्देवि मृद्धीकागुरुपुष्पकैः ।
 मत्स्यण्डशर्कराचन्द्रैः कस्तूरीदृषदङ्कितैः ॥ २२ ॥
 ततो जप्त्वा महाविद्यां साधकान् पूजयेच्छिवे ।
 पञ्च वा नव वा देवि तथैकादश वा शिवे ॥ २३ ॥
 कुलीनान् धार्मिकाञ्छुद्धान् दीक्षितान् चाप्यदीक्षितान् ।
 दृढव्रताञ्छुभाचारान् देवीभक्तिरतांस्तथा ॥ २४ ॥
 वैष्णवान् गिरिजे शैवान् गुरुभक्तिपरायणान् ।
 तत्र संपूज्य विधिवज् ज्ञात्वा भैरवसन्निभान् ॥ २५ ॥
 पाद्यार्घ्यमधुपर्काद्यैर्गन्धाक्षतसुपुष्पकैः ।
 तान् संपूज्य महादेवि दशांशं होममाचरेत् ॥ २६ ॥
 श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् देवदेवेश तन्त्रज्ञ परमेश्वर ।
 कुलसाधकपूजाया संशयं छेतुमर्हसि ॥ २७ ॥
 तत्र पूजाविधौ नाथ सर्वे पूज्या द्विजोत्तमाः ।
 अथवा क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा वा वद विस्तरात् ॥ २८ ॥
 श्रीभैरव उवाच ।

प्रभृते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ।
 निभृते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥ २९ ॥
 सर्वदा शिवचक्रेऽस्मिन् संप्रदायोऽयमीरितः ।
 न पुरश्चरणार्चायां तत्र सर्वे द्विजोत्तमाः ॥ ३० ॥
 एकस्तु क्षत्रियः पुण्यो दाता वैष्णवसत्तमः ।
 दृढव्रतः शुभाचारः कुलीनः शिवपूजकः ॥ ३१ ॥
 शाक्तः परममन्त्रश्च कुलचक्रे निगद्यते ।
 तत्र होमं च संपाद्य दद्यान्नेश्वमादरात् ॥ ३२ ॥
 कुलचक्रगतान् देवि ब्राह्मणान् साधकोत्तमान् ।

पूजयेत् क्षत्रियो वीरो भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ ३३ ॥
 गन्धाद्यतसुपुष्पैश्च धूपदीपादिभिः शिवे ।
 नैवेद्याचमनीयाद्यैर्मर्च्यैर्भोज्यैश्च लेह्यकैः ॥ ३४ ॥
 सन्तर्प्य साधकान् देवि परमानन्दसेवितः ।
 साधकः क्षत्रियं वीरं दातारं वीरसेवकम् ॥ ३५ ॥
 आशीर्भिर्बर्धयेद् देवि प्रणमेत् त्रिपुराम्बिकाम् ।
 कुलचक्रगता वीराः कुलचक्रमपूजकाः ॥ ३६ ॥
 सर्वे ते कुलदेव्यन्ते यान्ति शीघ्रं कुलालयम् ।
 क्षत्रियोऽपि महादेवि कुलसहान् कुलार्थवित् ॥ ३७ ॥
 सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिसमन्वितः ।
 इह लोके श्रियं प्राप्य भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ॥ ३८ ॥
 परत्र परमेशानि मृतो देवीपदं व्रजेत् ।
 एवं विधाय मन्त्रज्ञो होम जपफलाप्तये ॥ ३९ ॥
 पुरश्चर्याफलं देवि वर्णलक्ष्यस्य सोऽश्नुते ।
 वर्णलक्षजपस्यैवं फलमाप्नोति कौलिकः ॥ ४० ॥
 सर्वे तत्र स्थिता नत्वा रमशानस्थं च मैरवम् ।
 संहारमुद्रया देवीं विसृज्य साशिवां शिवे ॥ ४१ ॥
 सर्वे ते साधकश्रेष्ठा भवेयुः कुलभागिनः ।
 इदं रहस्यं देवेशि भक्त्या तव मयोदितम् ।
 अप्रकाश्यमदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ ४२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्याहोम
 विधिनिरूपणमेकादश पटल ॥ ११ ॥

अथ

द्वादशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्यं सर्वस्वमुत्तमम् ।
श्रीचक्रनिर्णयं नाम पटलं देवदुर्लभम् ॥ १ ॥
देवीनां परमप्रीत्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।
यस्य कस्य न वक्तव्यं गोपनीयं विशेषतः ॥ २ ॥
त्रयस्त्रिंशतिदेवानां कोटयः स्युर्महेश्वरि ।
देवीनां च तथा देवि त्रयस्त्रिंशतिकोटयः ॥ ३ ॥
तासां मध्ये प्रधानाः स्युस्त्रयस्त्रिंशतिदेवताः ।
पूर्वोक्ता या महादेवि तासां गन्त्रोत्तमाञ्छृणु ॥ ४ ॥
(१) अथ वक्ष्ये तव प्रीत्या बालागन्त्रं महेश्वरि ।
सर्वार्थसाधकं देवि सर्वाशापरिशूरकम् ॥ ५ ॥

बिन्दुस्त्रिकोणरसकोणकनागपत्र-

वृत्तत्रयाञ्चितमहीसदनत्रयं च ।

बालादिवक्रमिदमार्तिहरं गिरीश-

ब्रह्मेन्द्रविष्णुनमितं गदितं मया ते ॥ ६ ॥

(२) अथो त्रिपुरभैरव्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।

सकलागमसाराढ्यमापदुद्धारणचमम् ॥ ७ ॥

बिन्दुस्त्र्यश्रं नागकोणं दशारं

वृत्ताञ्चितं वसुपत्रं कलारम् ।

वृत्तत्रयं भूतिकेतत्रयं च

श्रीचक्रं ते वर्णितं भैरवीयम् ॥ ८ ॥

(३) अथो त्रिपुरसुन्दर्या वक्ष्ये श्रीचक्रनिर्णयम् ।

सर्वसंमोने देवि सर्वसिद्धिप्रवर्तकम् ॥ ९ ॥

शून्यं मध्यगमत्रिकोणसहितं दिग्दन्तिकोणाङ्कितं

विंशारं मनुमिश्रितं करिदलश्रीषोडशाराश्रितम् ।

सद्वृत्तत्रयमंयुतं च धरणीगेहाङ्कितं त्रैपुरं

भक्त्याभीष्टफलप्रदं कलियुगे श्रीचक्रमुद्योतते ॥ १० ॥

विन्दुस्त्रिकोणसुकोणदशारसुग्म-

मन्वश्रनागदलसङ्गतषोडशारम् ।

वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च

श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥ ११ ॥

(४) अथाहं कालिकायास्ते यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।

सर्वार्थसिद्धिदं लोके सर्वकामप्रपूरकम् ॥ १२ ॥

त्रिकोणम्यं शून्यं तदुपरि शरत्कोणसहितं

त्रिकोणं पद्कोणं भगवति च वृत्तं वसुदलम् ।

त्रिवृत्तं तद्भागे क्षितिभुवनशुक्रं च जयता-

दिदं श्यामायन्त्रं मरणभयवर्गप्रमथनम् ॥ १३ ॥

(५) अथाहं भद्रकाल्यास्ते यन्त्रोद्धारं सुरप्रियम् ।

ब्रवीमि दयया देवि सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १४ ॥

मध्ये तुर्यवरं खमण्डलयुतं द्विःसप्तकाराङ्कितं

द्विस्तुर्यारयुगं चतुर्गुणचतुष्पत्राश्लीशोभितम् ।

सद्वृत्तत्रयमण्डितं वहिरिलागेद्वयोद्भासितं

जीवाद्यन्त्रमिदं यथेष्टफलदं श्रीभद्रकालीप्रियम् ॥ १५ ॥

(६) अथ वक्ष्यामि मातङ्गा यन्त्रं तन्त्रविनिश्चितम् ।

देवदेवि तव प्रीत्या नचान्यत्र प्रकाशयेत् ॥ १६ ॥

विन्दुस्त्रिकोणं वसुकोणयुक्तं

वृत्तं ततो नागदलं त्रिवृत्तम् ।

भूमन्दिरं पार्वति वहिरेखं

मातङ्गिनीयन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ १७ ॥

(७) अथाहं भुवनेश्वर्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ।

प्रीत्या भक्त्या महेशानि नचारूपेयं महारमणिः ॥ १८ ॥

विन्दुस्त्रिकोणं रसकोणसंयुतं

वृत्ताश्रितं नागदलेन मण्डितम् ।

कैलारवृत्तत्रयभूगृहाङ्कितं

श्रीचक्रमेतद् भुवनेश्वरीप्रियम् ॥ १९ ॥

(८) अथ वक्ष्यामि ताराया यन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।

भोगमोक्षप्रदं देवि गोप्यं कुरु महेश्वरि ॥ २० ॥

विन्दुस्त्रिकोणं च षडस्युक्तं

वृत्तं तथाष्टारमलं त्रिवृत्तम् ।

सभूपुरं चैकजटाविलास-

मेहं मया यन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ २१ ॥

(९) अथाहं लिखमस्ताया यन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।

प्रवक्ष्यामि तव प्रीत्या न वक्तव्यं मुमुक्षुभिः ॥ २२ ॥

विन्दुस्त्रिकोणं च वहिस्त्रिकोणं

त्रिकोणमूर्ध्वं शुभवृत्तविम्बम् ।

वस्त्रश्रयुक्तं धरणीगृहं स्यात्

श्रीचक्रमेतत् परदेवतायाः ॥ २३ ॥

(१०) अथ वक्ष्यामि ते देव्या यन्त्रोद्धारं महेश्वरि ।

सुमुख्याः सारसर्वस्वं न देयं ब्रह्मवादिभिः ॥ २४ ॥

विन्दुं चानलकोणं च विलिखेद् वाणाश्रकोणाङ्कितं

वृत्तं नागदलेन मण्डितमथो श्रीषोडशाराङ्कितम् ।

सद्वृत्तत्रयसंयुतं च धरणीगेहाङ्कितं पार्वति

श्रीचक्रं सुमुखीप्रियं विजयताद् भोगापवर्गप्रदम् ॥ २५ ॥

(११) अथ वक्ष्यामि तत्त्वं ते यन्मोक्षद्वारं महेश्वरि ।

सारस्वत्याः कौलिकानां भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ २६ ॥

त्रिकोणं सविन्दुं ततः पट्ककोणं

सवृत्तं ततो नागपत्रं त्रिवृत्तम् ।

धरामन्दिरं वहिरेखोज्ज्वलं ते

मयोक्तं हि सारस्वतं यन्ममेतत् ॥ २७ ॥

(१२) अथाहमन्नपूर्णाया यन्मराजं ब्रवीमि ते ।

सर्वसंमोहनं देवि सर्वभोगैरुसाधनम् ॥ २८ ॥

त्रिकोणं रसारं त्रिकोणं त्रिकोणं

त्रिकोणं त्रिकोणं त्रिकोणं हि वृत्तम् ।

ततो नागपत्राञ्चितं चात्रिवृत्तं

धरामन्दिरं चाक्षपूर्णैष्टचक्रम् ॥ २९ ॥

(१३) अथ वक्ष्ये शिवे यन्त्रं महालक्ष्म्याः परात् परम् ।

यमभ्यर्च्य मया प्राप्तं दुर्लभं परमं पदम् ॥ ३० ॥

खं वह्न्यारगतं च कारममलं वृत्तं वहिः शोभनं

बाह्ये नागदले कैलारविलसद्दृष्टत्रयोद्भासितम् ।

भूगोदत्रयशोभितं तव मया निर्णीतमेतत् परं

श्रीचक्रं परमार्थदायि च महालक्ष्मीप्रियं मिद्धिदम् ॥ ३१ ॥

(१४) यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि साधकानां शुभावहम् ।

शारिकाया महादेवि लीलालयलयाकुलम् ॥ ३२ ॥

खत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तोद्-

द्योतनागदलवृत्तमण्डलम् ।

भूगृहं शिखिरवीन्दुभाञ्चितं

यन्त्रमेतदुदितं शिलालयम् ॥ ३३ ॥

(१५) यन्त्रोद्धारं महादेवि शारदाया ब्रवीम्यहम् ।

सर्वार्थसाधकं चक्रं सर्वकामप्रपूरकम् ॥ ३४ ॥

मध्ये बिन्दुस्तद्वहिः स्यात् त्रिकोणं

पद्कोणं स्याद् वृत्तवस्वश्रयुक्तम् ।

वृत्ताकारं षोडशारं त्रिवृत्तं

भूगृहं स्याच्छारदायन्त्रमेतत् ॥ ३५ ॥

(१६) अथाहं ते प्रवक्ष्यामि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम् ।

इन्द्राक्ष्यास्तत्सर्वस्वं त्रिषु लोकेषु गोपितम् ॥ ३६ ॥

बिन्दुस्त्रिकोणजपडश्रपडत्रयुक्त-

पद्कोणवृत्तवसुपत्रकलाश्रमिश्रम् ।

भूगृहविम्बमनलेनशशिप्रभाम-

मिन्द्राक्षिणीप्रियतरं जयचक्रमेतत् ॥ ३७ ॥

(१७) अथ ते वगलामुख्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।

सर्वमिद्विप्रदं देवि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ३८ ॥

बिन्दुस्त्रिकोणं च रसारवृत्त-

वस्वश्रवृत्ताञ्चितषोडशारम् ।

वृत्तत्रयं भूसदनत्रयं च

श्रीचक्रमेतद् वगलामुखीयम् ॥ ३९ ॥

(१८) अथाहं ते महातुर्यायन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।

ब्रवीमि परमप्रीत्या सकलाभीष्टमाधनम् ॥ ४० ॥

विन्दुस्त्रिकोणं नवयोनिधुक्तं

वृत्ताञ्चितं नागदलं त्रिवृत्तम् ।

धरागृहं वदितुटीभिरीढ्यं

तुर्यालयं चक्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ ४१ ॥

(१९) यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ।

सर्वार्थसाधकं चक्रं सर्वसंमोहनं तथा ॥ ४२ ॥

विन्दुस्त्र्यश्रं षडश्रं च वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।

वृत्तत्रयं धरासप्त राज्ञीश्रीचक्रमीरितम् ॥ ४३ ॥

(२०) अथ यन्त्रवरं वक्ष्ये ज्वालामुख्या महेश्वरि ।

सर्वतत्त्वैकनिलयं सर्ववाञ्छितदायकम् ॥ ४४ ॥

मध्ये शून्यं तदुपरि शरत्कोणमालिख्य देवि

तत्राधस्तात् त्रिकमथ बहिर्दिग्दलं वृत्तमेकम् ।

वस्त्रं द्विः कदलजशरद्भुजभूगेहयुक्तं

ज्वालामुख्या जगति जयताञ्चक्रमेतन्महेशि ॥ ४५ ॥

(२१) अथ वक्ष्यामि देवेशि भीडायन्मनुचमम् ।

सर्वागमरहस्याढ्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ ४६ ॥

विन्दुस्त्र्यश्रं काश्रमिथं सुवृत्तं

वस्त्रं स्यात् तद्गहिः षोडशारम् ।

वृत्तत्रयं भूमिगेहयाढ्यं

भीडायन् सर्वसिद्धिप्रदं स्यात् ॥ ४७ ॥

(२२) अथ वक्ष्यामि देवेशि कालरात्र्या अनुत्तमम् ।

यन्त्रोद्धारं परानन्दसाधनैकरसायनम् ॥ ४८ ॥

विन्दुस्त्रिकोणरसकोणमुवृत्तनाग-

पत्रं कलारयिलसददहनोरुत्तम् ।

भूमन्दिरत्रयमिदं गिरिपुत्रि यन्त्रं

श्रीकालरात्रिनिलयं परमार्थदं स्यात् ॥ ४६ ॥

(२३) अधाहं ते प्रवक्ष्यामि भवान्या यन्त्रमुत्तमम् ।

मूलमन्त्ररहस्याद्यं सर्वमिदं प्रदायकम् ॥ ५० ॥

चिन्दुस्त्रिकोणं च पटत्रयुक्तं

वृत्तं च नागारकलादलाढ्यम् ।

वृत्तत्रयं भूसदनत्रयं स्यात्

श्रीचक्रमानन्दपदं भवान्याः ॥ ५१ ॥

(२४) अथ वक्ष्ये महादेवि यन्त्रराजं सुदुर्लभम् ।

श्रीवज्रयोगिनीदेव्याः सर्वमौख्यप्रवर्धनम् ॥ ५२ ॥

चिन्दुस्त्रिकोणं च बहिः पटत्रं

वृत्तैकस्वश्र-रष्टतयुक्तम् ।

धरागृहं यन्त्रमिदं महेशि

श्रीवज्रशब्दाङ्कितयोगिनीयम् ॥ ५३ ॥

(२५) अथ वक्ष्यामि वाराह्या यन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।

सर्वमङ्गलमाङ्गन्यं साधकानां शुभावहम् ॥ ५४ ॥

त्रिकोणं सचिन्दुं पुनः स्यात् त्रिकोणं

ततः सप्तवारं त्रिकोणं प्रकुर्यात् ।

गजाश्रं कलारं हि वृत्तत्रयाङ्कं

परासद्य यन्त्रं वराहेश्वरीयम् ॥ ५५ ॥

(२६) अथ वक्ष्ये महादेवि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम् ।

सर्ववैरिप्रशमनं सर्ववाञ्छितपूरकम् ॥ ५६ ॥

चिन्दुस्त्रिकोणपट्कोणवृत्ताष्टदलमण्डितम् ।

त्रिवृत्तं भूगृहं यन्त्रं सिद्धलक्ष्म्या मया स्मृतम् ॥ ५७ ॥

(२७) अथ यन्त्रवरं वक्ष्ये कुलवागीश्वरीप्रियम् ।

साधकेष्टप्रदं दिव्यं परपदरसालयम् ॥ ५८ ॥

त्रिकोणं सविन्दुं शराश्रं सवृत्तं
ततो नागपत्राश्रितं षोडशारम् ।

त्रिवृत्तं धरासद्व पद्मास्पदं ते
सुयन्त्रं प्रदिष्टं च वागीश्वरीयम् ॥ ५९ ॥

(२८) अथ वक्ष्यामि देवेशि यन्त्रं पद्मावतीप्रियम् ।
सर्वार्थसाधकं दिव्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ ६० ॥

बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणसवृत्तनाग-
पत्रादिषोडशदलानलवर्तुलं च ।
भूमन्दिरत्रयमिदं सकलार्थदं स्यात्
पद्मावतीप्रियतरं जयचक्रमेतत् ॥ ६१ ॥

(२९) अथ वक्ष्ये महादेवि कुब्जिकायन्त्रमुत्तमम् ।
सर्वदेवरहस्यं च गोपनीयं विशेषतः ॥ ६२ ॥

बिन्दुस्त्रिकोणं रसकोणयुक्तं
वृत्तं ततो नागदलं^१ रष्टत्तम् ।
धरागृहं सर्वरहस्यगर्भं
श्रीकुब्जिकायन्त्रमिदं मयोक्तम् ॥ ६३ ॥

(३०) अथ वक्ष्ये महादेवि गौरीयन्त्रं सुदुर्लभम् ।
सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वविघ्नप्रशमनं शिवे ॥ ६४ ॥

मध्ये त्रिकोणं खयुतं^२ षडश्रं
वृत्तं तथा नागदलाप्रिवृत्तम् ।
भूमन्दिरं कौलकुलेष्टतत्त्व-
भूतं सुचक्रं कथितं हि गौर्याः ॥ ६५ ॥

(३१) अथ वक्ष्ये महादेवि खेचरीयन्त्रमुत्तमम् ।

योगिनां दुर्लभं योगसाधनानन्दकारणम् ॥ ६६ ॥

विन्दुस्त्रिकोणकं वृत्तं वसुपत्राप्रिवृत्तकम् ।

धरागृहं मयाख्यातं खेचरीयन्त्रमुत्तमम् ॥ ६७ ॥

(३२) अथ नीलसरस्वत्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।

महाचीनपदस्थानां सिद्धिदं भोगदं शिवे ॥ ६८ ॥

विन्दुस्ततोऽन्यारपडध्रुक्

वृत्तं ततो नागदलामिदृष्टम् ।

धरागृहं वक्तुटीभिरीड्यं

यन्त्रं परं नीलसरस्वतीयम् ॥ ६९ ॥

(३३) अथ देव्याः पराशक्तेर्यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।

सर्वसंपत्प्रदं दिव्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ ७० ॥

विन्दुस्त्रिकोणं वृत्ताढ्यवसुपत्राप्रिवृत्तकम् ।

भूगृहं यन्त्रमेतत्ते पराशक्तेर्मया स्मृतम् ॥ ७१ ॥

(३४) अथाहं यन्त्रमीशानि शिवस्य परमं ब्रुवे ।

सर्वसाधारणं सर्ववाञ्छितैकप्रदायकम् ॥ ७२ ॥

विन्दुस्त्रिकोणवसुकोणदशारवृत्त-

नागाश्रयोदशदलानलवृत्तध्रुक् ।

भूमन्दिरत्रयमिदं परमार्थदं स्यात्

साधारणं जगति यन्त्रमनादि नैवम् ॥ ७३ ॥

(३५) अथाहं वैष्णवं देवि यन्त्रराजं ब्रवीमि ते ।

सर्वसाधारणं लोके वैष्णवानां शुभप्रदम् ॥ ७४ ॥

विन्दुस्त्रिकोणवसुकोणसुवृत्तनाग-

पत्राढ्यषोडशदलाश्वितवृत्तविम्बम् ।

भूमन्दिरं जयति यन्त्रमिदं भवानि

साधारणं परमवैष्णवधाम नत्यम् ॥ ७५ ॥

(३६) सर्वेषामेव मन्त्राणां शैवानां परमेश्वरि ।

गुरुरयोरौ वक्ष्येऽहं तस्य यन्त्रमनुत्तमम् ॥ ७६ ॥

त्रिकोणं सविन्दुं शराश्रं सकाश्रं

ततो नागपत्रं सवृत्तं कलारम् ।

चतुर्भूयहोद्भासितं वद्विरेखं

सदोद्घोततेऽघोरदेवस्य यन्त्रम् ॥ ७७ ॥

(३७) सर्वेषामेव मन्त्राणां वैष्णवानां महेश्वरि ।

लक्ष्मीनारायणः श्रेष्ठस्तस्य यन्त्रं ब्रवीम्यहम् ॥ ७८ ॥

विन्दुद्विकोणं वस्वश्रं वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।

षोडशारं रवृत्तं च भूगेहेनोपशोभितम् ॥ ७९ ॥

लक्ष्मीनारायणस्यैतच्छ्रीचक्रं परमार्थदम् ।

इतीदं सर्वदेवानां रहस्यं परमाद्भुतम् ।

तत्त्वं तव मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिरत् ॥ ८० ॥

—=❖=—

इति श्रीगण्ड्यामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये यन्त्रोद्धार-
निरूपणं द्वादश पटल ॥ १२ ॥

अथ

त्रयोदशः पटलः ।

—:***:—

श्रीभैरव उवाच ।

मृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वकामिकम् ।
यन्प्रधारणपूजाया विधिं साधारणं परम् ॥ १ ॥
विना वर्म विना नास्तीं सदसक्तं महेश्वरि ।
न सिद्धिः साधकस्यास्ति भैरवस्यापि पार्वति ॥ २ ॥
यः साधको जपेद् विद्यां यन्त्रधारणवर्जितः ।
सा विद्या कोटिजप्तापि तस्य निष्फलतां व्रजेत् ॥ ३ ॥
शुभेऽङ्घ्रि शुभनक्षत्रे शुभवारे महेश्वरि ।
ब्राह्म्ये गृहूर्ते उत्थाय स्नात्वा ध्यात्वा गुरुं निजम् ॥ ४ ॥
सशिवां देवतां ध्यात्वा रहःस्थाने सुधूपिते ।
गन्धाष्टकेन विलिखेद् यन्त्रं मूलेन वेष्टितम् ॥ ५ ॥
तद्वाक्षे कवचं दिव्यं तथा नामसहस्रकम् ।
लिखेत् कनकलेखन्या भूर्जपत्रे सुशोभने ॥ ६ ॥
गन्धाष्टकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमं प्रिये ।
अवाच्यं देवभक्ताय परशिष्याय सर्वथा ॥ ७ ॥
स्वयंभूकुसुमं कुण्डगोलोत्थं रोचनागुरु ।
कर्पूरं मृगनामिश्रं मद्यं च मलयोद्भयम् ॥ ८ ॥
अपरं ते प्रवक्ष्यामि सिद्धिदं गन्धसाधनम् ।
वैष्णवानां च शैवानां शाक्तानां च शुभावहम् ॥ ९ ॥

काश्मीर-गोरोचन-पूगकादि-

दूरङ्गनामोज-मरुद्र-मूर्वाः ।

पूतानकं चन्दनमिश्रमेतद्-

गन्धाटकं भैरवभैरवीष्टम् ॥ १० ॥

गन्धाटकं मधुमेन निषोध्य कुलमाधकः ।

न्याससूच्यादिकं कृत्वा ध्यायेद् देवीं शिवाङ्गनाम् ॥ ११ ॥

लिखेत्— निजं दिव्यं तद्वाद्ये मूलमन्त्रतः ।

नानुक्ता दिलिखेन्मन्त्री तद्वाद्ये कनकं लिखेत् ॥ १२ ॥

मथा नाममहत्तं च लिखित्वा भूर्जपत्रे ।

वेष्टयेत् प्रेतपत्रेण पीतनीलक्रमणं च ॥ १३ ॥

निजेष्टदेवीध्यानाभ-वर्णेन परमेश्वरि ।

लाक्षाया परिषेष्टप्राथ मुक्तेनाथ वेष्टयेत् ॥ १४ ॥

ततः परां गुदीं दिव्यां देवीरूपां लिखित्य च ।

गन्धधातु-गन्धश्च बिन्दौ संस्थापयेच्छिरे ॥ १५ ॥

यन्त्रधारण-यन्त्रं ते वक्ष्ये साधकपूजिते ।

कौलिकानां हितार्थाय गोपनीयं विशेषतः ॥ १६ ॥

बिन्दुरित्कोणं पदकोणं पङ्क्तं वस्तुपत्रकात् ।

त्रिष्टुप् च धरासमं यन्त्रधारण-यन्त्रकम् ॥ १७ ॥

बिन्दुरेण लिखेद् देवि लयाङ्गं पूजयेच्छिवे ।

यस्य पूजनमात्रेण मन्त्री भैरवतां व्रजेत् ॥ १८ ॥

गणेशं धर्मराजं च वरुणं च कुबेरकम् ।

वस्तुदारेषु संपूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः ॥ १९ ॥

अमिताङ्गं च कालाग्निं संहारं रुद्रभैरवम् ।

कगलं विकरालं च सुप्तोन्मत्तभैरवी ॥ २० ॥

अष्टपत्रेण संपूज्य भैरवानष्ट पार्वणि ।

दुर्गां चण्डीं च सुमुखीं शिवादूतीं शिवां जयात् ॥ २१ ॥

बहिः पद्मोदये पूजयेत्ता मूलेन साधकैः ।
 चारां च चारिण्यं त्रयां चरतां दिज्यां तदा ॥ २३ ॥
 छिन्ननस्तां दण्डोऽनु पूजयेत् साधकोत्तमः ।
 भवानी कुब्जिका गौरी त्र्यम्बके पूज्या महेश्वरि ॥ २४ ॥
 बिन्दौ स्वदेवतामिष्टां त्रिशिवां कौलिकोत्तमः ।
 गन्धार्घ्यप्रदानैश्च धूपदीपादितर्पणैः ॥ २५ ॥
 नैवेद्याचमनीपाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।
 तत्र बिन्दौ महादेवि यथाविभवमात्मनः ॥ २६ ॥
 मौर्वणं राजतं मुक्तामणिताम्रादिपूर्वकम् ।
 देवताप्रीतये दद्याद् दक्षिणां गुरवेऽपि च ॥ २७ ॥
 तत्र स्वयं गुटीं दिव्यां देवीरूपां कुलेश्वरि ।
 पञ्चामृतैः पञ्चगव्यैः स्नापयेत् साधकोत्तमः ॥ २८ ॥
 संस्थाप्य गुटिकां मन्त्री बिन्दौ संस्थापयेत् ततः ।
 प्राणान् दक्षाऽऽवाहनादिमुद्रा मन्त्री प्रदर्शयेत् ॥ २९ ॥
 पाद्यार्घ्यमधुपर्कादि सर्वं तत्र निवेदयेत् ।
 चिन्तयेद् देवतारूपां पूजयेद् यन्त्रराजवत् ॥ ३० ॥
 संपूज्य गुटिकां दिव्यां तदग्रे साधको जपेत् ।
 मूलमन्त्रं यथाशक्त्या मालयाः करमालया ॥ ३१ ॥
 पठेत् तत्रैव कवचं मन्त्रनाममहस्रकम् ।
 स्तोत्रं मन्त्रमयं देवि मन्त्रिचक्रं प्रपूजयेत् ॥ ३२ ॥
 तैः मम साधकैः कुर्यात् पात्रवन्दनमीश्वरि ।
 तान् सन्तर्प्य सुधीर्मत्तया धारयेद् देवतं हृदि ॥ ३३ ॥
 विमृज्य त्रिशिवां देवीं नमेत् संहारमुद्रया ।

धारयेन्मूर्तिं वा वाहौ गुटिकां वरदायिनीम् ॥ ३३ ॥
 य एवं धारयेद् यन्त्रं जपेन्मन्त्रं स साधकः ।
 साक्षाद् भवभयोन्मुक्तो भवेद् भैरवसन्निभः ॥ ३४ ॥
 जपसिद्धिर्मवेत् तस्य य एवं धारयेद् गुटीम् ।
 बहुनोक्तेन किं देवि स भवेद् भैरवः स्वयम् ॥ ३५ ॥
 इदं तत्त्वतमं दिव्यं सर्वस्वं परमार्थदम् ।
 सारात् सारतरं गोप्यं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ ३६ ॥

इति भीरव्यामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये यन्त्रधारणविधि-
 निरूपणं त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

अथ

चतुर्दशः पटलः ।

—*:*:*—

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् श्रोतुमिच्छामि च्छन्दोमुनिविनिर्णयम् ।
 तथा देवीश्वरादीनां देवतायीजनिर्णयम् ॥ १ ॥
 शक्तिकीलकदिग्बन्धनिर्णयं परमेश्वर ।
 वक्तुमर्हसि मे देव यद्यस्ति मयि ते दया ॥ २ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

एतद् गुह्यतमं देवि देवानां सारमुत्तमम् ।
 देवीनामादिदेवानां मन्त्राणां मे रहस्यकम् ॥ ३ ॥
 वक्ष्यामि तव भक्त्याहमृपिच्छन्दोविनिर्णयम् ।
 देवानां मन्त्रराजस्य देवीनां वा तथैव च ॥ ४ ॥

पष्टिकल्पसहस्राणि येनैव विहितो जपः ।
 तथान्दपष्टिलक्षाणि पष्टिजन्मान्तरेषु च ॥ ५ ॥
 पुरश्चर्याकरो देवि सर्पिरित्यभिधीयते ।
 ऋषिहीनो भवेन्मन्त्रो जप्तो जन्मान्तरेषु च ॥ ६ ॥
 मत्पुत्रायकरो लोके साधकानां महेश्वरि ।
 यदा मन्त्रो मया वक्त्रान्महादेवि बहिष्कृतः ॥ ७ ॥
 वेष्टितो येन तेजस्वी तच्छन्द इति गीयते ।
 छन्दांसि विविधान्येषां मन्त्राणां परमेश्वरि ॥ ८ ॥
 छन्दोहीनो भवेन्मन्त्रो नष्टो मर्त्य इव प्रिये ।
 यदा जप्तो मनुर्देवि मया परमभङ्गितः ॥ ९ ॥
 मादुर्धभूष मे सद्यो या सा शोक्तेति देवता ।
 मन्त्रराजस्य देवीनां येनोत्पत्तिर्मया कृता ॥ १० ॥
 तद्बीजमिति मन्त्राणां वर्यते परमेश्वरि ।
 बीजहीनो भवेन्मन्त्रः सिद्धिहानिकरः शिवे ॥ ११ ॥
 बीजहीनं जगद्बीजं जलहीनो नदो यथा ।
 जपान्ते जगदुत्पत्तिम्यितिसंहारिकी मतिः ॥ १२ ॥
 जाता मे येन देवेशि सा शक्तिरिति गीयते ।
 शक्तिहीनो महादेवि मन्त्रो विभक्तो मतः ॥ १३ ॥
 महामाङ्गन्यदो मन्त्रो देवीनां शक्तिबीजतः ।
 जप्त्वा स्तुत्वा महादेवि पुनर्येन स गोपितः ॥ १४ ॥
 निस्तेजस्कः पुनर्जातः कीलकं तदुदाहृतम् ।
 निष्कीलितं जपान्ते च मनुमथद्वया शिवे ॥ १५ ॥
 त्यक्त्वा साधकराजस्य मिद्धि हरति भैरवः ।
 जपकाले महादेवि राक्षसा भूतप्रेतकाः ॥ १६ ॥

दिशो दश पलायन्ते येन दिग्बन्धनं च तत् ।
 दिग्बन्धने विना देवि जपः पाठोऽपि वा तथा ॥ १७ ॥
 निष्फलो विघ्नकृन्नित्यं तेन दिग्बन्धनं चरेत् ।
 एतैर्विहीनो मन्त्रोऽस्ति निष्फलो विघ्नकारकः ॥ १८ ॥
 ममापि देवि किं वक्ष्ये पुनः क्षुद्रेषु जन्तुषु ।
 इत्येष पटलो गुह्यरहस्यस्य परमेश्वरि ॥
 गोपनीयो महावीरैरित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ १९ ॥

इति श्रीरघुप्यामले तन्त्रे धीदेवीरहस्ये ऋष्यादि-
 निरूपणं चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

अथ

पञ्चदशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रमशानसोऽग्रसाधनम् ।
 येन साधनमात्रेण साधको भैरवो भवेत् ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् भवता भक्त्या प्रसादोऽयं महान् कृतः ।
 विन्मृतोऽयं विधिर्गुह्यः रमशानस्यार्चनाङ्कितः ॥ २ ॥
 मर्यतन्त्रेष्वविख्यातः स्मारितो मेऽर्घुना परः ।

श्रीभैरव उवाच ।

त्रयस्त्रिंशत्तिकोटीनां देवतानां हि शङ्कयः ।
 नामभिर्विंश्रुता देवि भवत्या मे परं श्रुताः ॥ ३ ॥
 तासां वक्ष्येऽधुना देवि श्मशानार्चा यथाविधि ।
 साधका येन जायन्ते सर्वसिद्धियुताः शिवे ॥ ४ ॥
 विना श्मशानविधिना पूजायोगजपादयः ।
 न सिद्ध्यन्ति वरारोहे कलौ भैरवशापतः ॥ ५ ॥
 त्रिंशत्कोटयो देव्यः सर्वाः प्रेतालयस्थिताः ।
 तत्र गत्वाच्येद् यस्तु स भवेद् भैरवोपमः ॥ ६ ॥
 तत्र घोरारवर्देवि महाकालः सृगालकैः ।
 सारमेयैश्च यक्षेन्द्रैः मोरगैः सपिशाचकैः ॥ ७ ॥
 वेतालभूतप्रेतैश्च श्मशानार्चा करोति हि ।
 तत्र भूता महाघोराश्चत्वारो विघ्नकारकाः ॥ ८ ॥
 दिग्विदिक्षु भ्रमन्ते ते देव्यष्टौ भूतभैरवाः ।
 ते संमुखगताः क्रूरा भूताः कुर्वन्ति विघ्नियम् ॥ ९ ॥
 भैरवा विघ्नहन्तारः शिवं कुर्वन्त्यसंमुखे ।
 तेषां विधिं प्रवक्ष्यामि गुह्यं सारोत्तमोत्तमम् ॥ १० ॥
 अप्रकारयमदातव्यं श्मशानार्चनमुत्तमम् ।
 रवौ चन्द्रे कुजे सौम्ये गुरौ शुक्ले शनौ तथा ॥ ११ ॥
 पुनः सूर्ये भ्रमन्ते ते दिग्विदिक्ष्वष्टभैरवाः ।

पूर्वोत्तरेशानसमीरणाग्नि-

केनाशरक्षोवरुणादिदिक्षु ।

महोग्र-चित्राङ्गद-चण्ड-मास्व-

ज्ञोलाक्ष-भूतेश-कराल-मीमाः ॥ १२ ॥

एते भ्रमन्ते सततं श्मशाने

दिग्भैरवा भूतयुता महेशि ।

एतान् समभ्यर्च्य वसेत् श्मशाने

स्यादन्यथा धीम्रमणं विपत्तिः ॥ १३ ॥

इति धीरद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्मशानार्चन-
विधिनिरूपणं पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

अथ

षोडशः पटलः ।

श्रीमैरव उवाच ।

अथाहं पूजनस्थास्य वक्ष्ये पद्धतिमादरात् ।

गद्यपद्यमयीं देवि मन्त्रसिद्धिप्रदायिनीम् ॥ १ ॥

रात्रिशेषे समुत्थाय साधको विहिताह्निकः ।

श्मशानार्चनसंभारं समादाय च मानुषः ॥ २ ॥

सवीरो वीरभूमिं तु ब्रजेद्रात्रिमुखे प्रिये ।

तत्र देवि विधिं वक्ष्ये शृणु पार्वति सादरम् ॥ ३ ॥

गुह्यं सारतमं गोप्यं नाख्येयं सिद्धिवाञ्छकैः ।

तत्र रात्रिमुखे सवीरः श्मशानं गत्वा सप्तपदान्तां भूमिमुत्खृज्य श्मशा-
नवेलां नोत्तहयेत् । तत्र संभारं संस्थाप्य स्वहस्तपादौ प्रक्षाल्य त्रिरा-
चम्य प्रणायामत्रयं मूलेन विधाय, पूर्ववदाचम्य स्वमूलमृषिच्छन्दो-
न्यासं कृत्वा कराङ्गन्यासौ कृत्वा मूलमष्टोत्तरशतं जपेत् । यथाश-
क्ति जप्त्वा देवीं सशिवां स्वगुरुं ध्यात्वा, कवच-सहस्रनाम-स्तवान्
पठन् वेलां सप्तपदमात्रामुल्लङ्घ्य, श्मशानमण्डलं प्रदक्षिणाकृत्या प्रविश्य
चितां प्रणमेत् ।

ववालाकरालवदने कल्पान्तदहनप्रिये ।

प्राणिप्राणालयोद्ध्वे चित्ते मेऽनुग्रहं कुरु ॥ ४ ॥

इति नत्वा, यथाकारं प्रशस्ताप्रशस्तान् भूतभैरवान् संमुखपृष्ठयोर्दृष्ट्वा
पूजामारभेत् ॥ श्रीदेवी उवाच ।

भगवन् भैरवान् भूतान् शापानुग्रहकारकान् ।

कथं संधारयेन् मन्त्री तत्र संमुखपृष्ठयोः ॥ ५ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

एतद् देवि परं गुह्यं भूतभैरवसाधनम् ।

वक्ष्यामि तव भक्त्याहं न चाल्पेयं दुरात्मने ॥ ६ ॥

भूतो रवौ पूर्वगतो महोद्य

श्चित्राङ्गदोऽप्सुत्तरगो हिमाशी ।

चण्डस्तंशेयानगतो महीजे

मास्वान् बुधे भैरव एव चापौ ॥ ७ ॥

लोलाक्षको वह्निगतः सुरेज्य

भूतेश्वरो दक्षिणगोऽसुरेज्ये ।

करालको निर्वृत्तिगोऽपि मन्दे

रवौ धुनः पश्चिमगोऽपि भीमः ॥ ८ ॥

एवं भ्रमन्ते सततं महेशि

दिग्भैरवा भूतगणाः रमशाने

सुधाशुवृद्धौ शशिहीनपद्मे

तद्वपरीत्येन शिवे भ्रमन्ति ॥ ९ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

महोग्रभीमयोः पूजा पञ्चयोर्मौमनान्यगोः ।

कथं देव करिष्यन्ति द्वयोर्मस्तत्त्वारणोः ॥ ११ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

पौर्णमास्यां शिवे दृष्ट्वा ग्रहवार ततोऽष्टधा ।

रविवार च संगुण्य प्रथमं वा द्वितीयकम् ॥ १२ ॥

प्रथमे रविवारे तु महोग्रं पूर्वगं यजेत् ।

द्वितीये पश्चिमे भीमं पूजयेच्छुक्लपक्षके ॥ १३ ॥

कृष्णपक्षेऽर्चयेद् भूतान् विपरीतक्रमेण तु ।

अधुनैषां प्रवक्ष्यामि पूजासारं महेश्वरि ॥ १४ ॥

अवाच्यं परशिष्याय कृचैलाय दुरात्मने ।

रमशानपूजामप्रस्य महाकाल श्रुतिः स्मृतः ॥ १५ ॥

उष्णिक् छन्द इति उपात देवी रमशानकालिका ।

परा बीजं तटं शक्तिः काली कीलकमीरितम् ॥ १६ ॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।

दिना तालद्रव्यं दत्त्वा नाराचमुद्रां प्रदर्शयेत् । इत्यासनशुद्धिं विधाय
भूतशुद्धिं कुर्यात् । ओं ह्रं आकुञ्जेन सुषुम्नावर्त्मना प्रदीपकलिङ्गाकारं
ब्रह्मपथान्तर्गन्वा स्वर्जायं तत्र सदाशिवं लीनं ध्यात्वा, आदौ यमिति
वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन पापपुरुषं घामकुक्षिस्थं शोषयेत् । तमिति
यद्विबीजेन चतुष्पाष्टिपारजप्तेन दाहयेत् । यमिति वरुणबीजेन द्वादश-
द्वारजप्तेन साधयेत् । तमिति भूबीजेन दशधा जप्तेन शरीरं पिण्डीभूतं
विभाज्य स्वर्जायं हृदि संस्थाप्य प्राणानर्पयेत् । इति भूतशुद्धिः ॥ ओं प्राङ्गी-
कौं यरंलंवं शेषंसंष्टं सोहृ दंलंः मम प्राणा इह प्राणाः, पर्वं मम जीव इह
स्थितः, एवं मम सर्वेन्द्रियाणि, मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाग्राणप्राणा इहै-
वागस्त्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । इति प्राणान् समर्प्य, मातृकाम्यासं
विधाय पूर्वयत् कराङ्गन्यासौ कृत्वा, तत्र चिताया ईशाने चतुरध्यां वेदीं
विधाय, तत्र श्रीचक्रं दिग्भाज्य एथोक्तविधिनाभ्यर्च्य, तत्र नवभद्रान्
संपूज्य, पूर्वं घटुक संपूज्य भूतभैरवान् संपूजयेत् । ओम्नी महोप्राय

श्रीभैरव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पानपूजाविधिं परम् ।
 साधका येन जायन्ते कलौ भैरवसन्निभाः ॥ १८ ॥
 श्मशानेषु चरेत् पानं निशीथे वा महेश्वरि ।
 विना पानं न सिद्धिः स्यात् साधकानां कलौ ध्रुवम् ॥ १९ ॥
 सुरा संविद्वारुणीति त्रिधा पानं सदोत्तमम् ।
 तेषु ब्रह्मादयो देवा निलीना मुक्तये परम् ॥ २० ॥
 आसयो मधुरं मद्यं शीघ्रं चेति त्रयं परम् ।
 तत्र सर्वे स्थिता देवा वासवाद्या अहर्निशम् ॥ २१ ॥
 संपूज्य सशिवां देवीं प्रवृत्ते भैरवार्चने ।
 तत्र पानं परादेव्या महानन्दप्रदायकम् ॥ २२ ॥
 विना पानं न सिद्धिः स्याद् विना शक्तिसमर्चनम् ।
 न सिद्ध्यति शिवे मन्त्रः श्मशानार्चा विना तथा ॥ २३ ॥
 तस्मात् श्मशानं संपूज्य शक्तिमभ्यर्च्य साधकः ।
 पानं भजेत् परादेव्याः श्रीचक्राग्रे यथाविधि ॥ २४ ॥
 संवित्पानं चरेद्रात्रौ दिनापानं च शीघ्रना ।
 अहोरात्रे सुरापानं भोगदं मोक्षदं शिवे ॥ २५ ॥
 संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ।
 स, वैष्णवः स शाक्तश्च स शैवो यः श्मशानगः ॥ २६ ॥
 श्मशानभजनाद्वीरो भवेद् भैरवसन्निभः ।
 पानं तावद्भजेद् देवि यावत् संविन्मनोमयी ॥ २७ ॥
 यदि तत्र विकारः स्यात् पानं तद् ब्रह्मघातवत् ।
 यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः ॥ २८ ॥
 तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम् ।

विना पूजां चरेद्यस्तु पानं वा चर्वणादकम् ॥ २६ ॥
 मकारान् पञ्च देवेशि कुलटां वा परस्त्रियम् ।
 स रोगी निन्दितो लोके परपिण्डोपजीवकः ॥ २७ ॥
 ब्रह्मघातवदीशानि शीघ्रं मृत्युमुखं व्रजेत् ।
 आत्मोच्छिष्टं न दातव्यं परोच्छिष्टं न भक्षयेत् ॥ २८ ॥
 यद्युच्छिष्टं वीरचक्रे कौलिको भक्षयेच्छिवे ।
 सिद्धिहानिर्भवेत् सद्यो योगिन्यो भक्षयन्ति तम् ॥ २९ ॥
 पूजाकाले निशीथे च ध्यात्वा देवीं शिवाङ्कगौम् ।
 अभ्यर्च्य विधिना पानं कृत्वा चर्वणपूर्वकम् ॥ ३० ॥
 मकारैः पञ्चभिर्देवि तर्पयित्वा परस्त्रियम् ।
 पानं पानं शिवे पानं सप्तवारं समुधरेत् ॥ ३१ ॥
 तेन देवी शिवाङ्कोपविष्टा प्रादुर्भविष्यति ।
 इत्येषा पद्धतिर्गुह्या श्मशानार्चनसंयुता ॥ ३२ ॥
 गद्यपद्यमयी दिव्या तत्त्वसर्वस्वसंयुता ।
 तव स्नेहेन विख्याता न प्रकारया कदाचन ।
 इति गुह्यतमं देवि रहस्यं देवदुर्लभम् ।
 अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनीयं मया निवृत् ॥ ३३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्मशानार्चनविधि-
 निरूपण षोडश पटल ॥ १६ ॥

सप्तदशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् सर्वतन्त्रज्ञ सर्वलोकनमस्कृत ।

श्रीदेव्या यन्त्रराजस्य मालाकङ्कणयोरपि ॥ २ ॥

शोधनं श्रोतुमिच्छामि त्वयैव प्राङ्निवेदितम् ।

येन शुद्धिर्भवेद् देव द्रव्याणां माधकस्य हि ॥ २ ॥

श्रीभरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि शोधनं सर्वकामदम् ।

सर्वसाधारणं लोके पटलं गुह्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥

मुदिने देवि गताद्वा रमशानं साधकोत्तमः ।

कपालं नरदन्तानां माला कङ्कणमीश्वरि ॥ ४ ॥

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा मृतं यन्त्रे निधापयेत् ।

पुनरष्टोत्तरशतं जप्त्वा तेनैव तर्पयेत् ॥ ५ ॥

देवान् पितॄन् ऋषीन् देवि माया-मा-कामवीजकैः ।

रमशानमल्ललिप्तेन शुद्धेन सुरवन्दिते ॥ ६ ॥

ततो यत्र लिखेद् देवि कपाले साधकोत्तमः ।

मालां कुर्यान्नृदन्ताना मङ्गलाभीष्टसिद्धये ॥ ७ ॥

वामाचारपरः श्रीमान् यो न कुर्यान्महेश्वरि ।

यत्र मालां शिवे तस्य मन्त्रहानिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ ८ ॥

कपालं नृतकसाशु गृहीत्वा स्फटिकप्रभम् ।

श्मशानभस्म शुद्धं च कृत्वा साधकसत्तमः ॥ ९ ॥
 स्वमश्रुं साधयेद् धीमानन्यथा सिद्धिहानिदः ।
 कपालयन्त्रं देवेशि केशकङ्कणमुत्तमम् ॥ १० ॥
 नृदन्तमालां द्रव्यं च मुण्डपात्रं महेश्वरि ।
 गोपयेत् साधकोऽस्त्यन्तं देवीरूपं विचिन्तयेत् ॥ ११ ॥
 य एवं साधकः कुर्यात् तस्य सिद्धिरदूरतः ।
 अन्यथा सिद्धिहानिः स्वान्ममापि परमेश्वरि ॥ १२ ॥
 इतीदं पटलं दिव्यं गुह्यं सर्वस्वमुत्तमम् ।
 अप्रकारयमदातव्यं गोपनीयं विशेषतः ॥ १३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये द्रव्याविशोधन-
 निरूपण सप्तदश पटल ॥ १७ ॥

अथ

अष्टादशः पटलः ।

—: *~*~:—

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् देवदेवेश मालायन्त्रार्चनं परम् ।
 शोधन श्रोतुमिच्छामि विस्तरात् परमार्थदम् ॥ १ ॥
 श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ।

शोधनस्य हि द्रव्याणां मालादीना भैक्षरि ॥ २ ॥

तत्रादौ साधको रात्रिशेष उत्थाय पद्मपद्मासन. स्वशिरःस्थसदस्या-
राधोमुखकमलकर्णिकान्तर्गत निजगुरुं ध्यात्वा, देवीं च हृद्विषये
ध्यात्वा, मानसैरुपचारैरभ्यर्च्याजपाजप गुरवे वेद्यै च समर्प्य प्रण-
मेत् । ततो वहिरागत्य तत्रादौ गत्वा ज्ञानसन्ध्यादि विधाय, याग
गेहमेत्य नित्यकर्म समाप्य यन्त्रशोधनाचारभेद । तत्रेशानादिविषये
चतुष्कोणां हस्तैकविस्तृतां पिथ्वक् सम्यक्कया चेर्षां विधाय विलिप्य
सिन्दूरेण स्वदेवतायन्त्र विभाव्य, यथोक्त्या पूजया संपूज्य द्रव्यादीन्या-
नाप्य यन्त्रादीन् शोधयेत् ॥

स्त्रीकेशैश्च चरेद् देवि कङ्कणं साधकोत्तमः ।

फङ्कण दन्तमालां च यन्त्रं कापालिकं शिवे ॥ ३ ॥

द्रव्यं मधु तथा मत्स्यं मांसं मुद्रां च मैथुनम् ।

मकारपञ्चसंयुक्तं पूजयेद् भैरवेश्वरीम् ॥ ४ ॥

तत्रेषानीयासनादिशुद्धिं कृत्वा, स्वमूलस्य सङ्कल्पपूर्वमृष्यादिन्यास
कुर्यात् । ततो मूलेनाचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा भूतशुद्ध्यादिप्राणाद्
संस्थाप्य पञ्चगव्येनौषधसप्तकेन शोधनं कुर्यात् ॥

स्तन्यं शुक्रं चारणालं तक्रं रक्तं स्वयोनिजम् ।

पञ्चगव्यमिति प्राज्यं कुर्यात् साधकसत्तमः ॥ ५ ॥

काशमीर-गोरोचन-पूगकादि

कुरङ्गनाभीजमथापि मूर्धा ।

पूताममेवं मलयोद्भवं च

सद्यन्त्रशुद्धौ महदौषधानि ॥ ६ ॥

एभि. सम्यक्कया यन्त्रं माला कङ्कण -संलिप्य मूलविद्यया पृथक्
पृथक् शोधनं कुर्यात् । “ओं ह्रीं श्रीं क्लीं देवि यन्त्रेश्वरि क्लीं श्रीं ह्रीं श्रीं
यन्त्र शोधय २ ह्रश्च क्ल ठ ठ ठ स्वाहा ।”

इमा मन्त्रात्मिका विद्यामष्टोत्तरशतं जपेत् ।

यन्त्रे देवीं समाग्राह्य पूजयेत् साधकोत्तमः ॥ ७ ॥

तत्रादौ यन्त्र मूलविद्यया पञ्चगव्यौषधै संशोध्य, सिन्दूरयन्त्रे

विन्दूपरि संस्थाप्य पुर्यधत् स्योक्तक्रमेण पूजयेत् । ततो मालामौषधादिना
मूलविधया शोधयेत् । “ॐॐह्रींह्रींर्ध्रींर्ध्रीं ह्रीं ह्रीं मालारूपिणि सर्वतो-
पमणिणि हं नृदन्तमालां शोधय २ फट् ठःठःठः स्वाहा” । इत्येवम-
ष्टोत्तरशतं जप्त्वा मूलविधया पञ्चगव्येन शोधयेत् । ततः कट्टणं शत-
वालानां र्शकेशस्य कृत्वा मूलविधया शोधयेत् । “ॐह्रींलींर्ध्रींर्ध्रीं
पेशिनि निराकेशिनि कट्टणं शोधय २ हुं फट् ठःठःठः स्वाहा” । इति
मूलविधामष्टोत्तरशतं जप्त्वा पञ्चगव्यौषधजलेन संशोष्य, धामद्वस्तद्व-
द्वस्तयोर्निधत्त्य स्वमूलं नृदन्तमालया यथाशक्त्या जपेत् । ततः कथ-
स्तोत्रसहस्रनामादिपाठं विधाय, मूलेन नैवेद्य निवेद्य तदग्रे चक्रपूजां कुर्या-
त् । साधकैरेकादशक्रमेण वृत्ताद्वत्त्या यागमण्डपे उपविश्य, मध्ये त्रिकोणं
सविन्दुं षडध्रकं वृत्तमष्टदलं वृत्तत्रयं भृगुदं विलिख्य रक्तपुष्पैः पूजयेत्—
वाद्ये-गं गणेशाय नमः, धं धर्मराजाय नमः, धं पद्मराय नमः, ह्रीं सुदे-
राय नमः, इति संपूज्य । अष्टदलेषु ह्रीं किराताय नमः, ह्रीं
विकिराताय नमः, ह्रीं संहाराय नमः, ह्रीं रुक्मैरवाय नमः,
ह्रीं महाकाताय नमः, ह्रीं काताग्नये नमः, ह्रीं सुप्तभैरवाय नमः,
ह्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः, इत्यभ्यर्च्य । षडध्रे-ॐह्रीं जयायै नमः, ॐ
विजयायै०, ॐ कामायै नमः, ॐ रत्नै नमः, ॐ प्रीत्यै नमः, ॐ
मनेन्मनायै नमः, इति पुष्पैरभ्यर्च्य । ततस्त्रिकोणे-गां गङ्गायै नमः, यां
यमुनायै नमः, म सरस्वत्यै नमः इत्यभ्यर्च्य, विन्दौ मूलं० महोमायायै
नमः, एष सपूज्य, तत्र धीदेवीं ज्योतीरूपां गोघृतेन विमाल्य
पञ्चवक्त्रा च पूजयेत् । तत्र भैरवं भैरवीं च पूजयेत् । तत्र यदुक सद्य-
क्षिकं च पूजयेत् । “प्रवृत्ते भैरवे तन्ने सर्वे धर्मा द्विजातयः । निवृत्ते
भैरवे तन्ने सर्वे धर्मा पृथक् पृथक्” ॥ तत्रैव नव कन्याः अभ्यर्च्य,

नामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-

मग्रे मुद्राधरणकवटकौ शूकरस्योष्णशुद्धिः ।

तन्त्री वीणा मरसमधुरा सद्गुरुः सत्कथार्थ

वामाचारः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ ८ ॥

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् संविन्मनोमयी ।

यदि तत्र विंकारः स्यात् पानं तद् ब्रह्मघातवत् ॥ ९ ॥

मधुपानपरो मन्त्री शक्तिं सन्तोषयेद्व्रते ।

रेतसा तर्पयेद् देवीं शक्तिं पानेन तर्पयेत् ॥ १० ॥

शक्त्युच्छिष्टं पिबेन्मद्यं वीरोच्छिष्टं तु चर्वणम् ।

मकारपञ्चसंयुक्तं कुर्याच्छ्रीचक्रमण्डलम् ॥ ११ ॥

साधकान् साधको भक्त्या सन्तर्प्य पानमोजनैः ।

सन्तर्प्य देवतामिष्टां मिष्टान्नैश्वर्यैः शिवे ॥ १२ ॥

स्वगुरुं पूजयेद् भक्त्या तर्पयेच्छक्तिः परम् ।

सन्तोषयित्वा स्वगुरुं दक्षिणाभिश्च वन्दनैः ॥ १३ ॥

तदाक्षां शिरसादाय नित्यकर्मणि सिद्धिदाम् ।

तत्रैवं चक्रे साधकानभ्यर्च्यानन्दमैरवं स्यात्मानं भ्यात्वा पदान्
न्दमयो भूत्वा, संहारमुद्रया देवीं सशिवां विरुज्य वरद्वत् प्रणमेत् ।

इत्येवं पद्धतिं गुह्यां गद्यपद्यैकरूपिणीम् ।

सकलागमसाराढ्या गोपयेत् साधकोत्तमः ॥ १४ ॥

इति श्रीरहस्यामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शोधनपद्धति-

निरूपणमष्टादश. पटलः ॥ १८ ॥

अथ

एकोनविंशः पटलः ।



श्रीभरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि सुरोत्पत्तिं महेश्वरि ।
यस्याः श्रवणमाग्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ॥ १ ॥
समूद्रे मध्यमाने तु धीरान्धो सागरोत्तमे ।
तत्रोत्पन्ना सुरादेवी कुमारीरूपधारिणी ॥ २ ॥
नम्रा कालाग्निसदृशी कृतहासोल्लसन्मुखी ।
अष्टादशभुजा दिव्या नवकुम्भधरा तथा ॥ ३ ॥
नवपात्रधरा तद्वन्मदिरारुणलोचना ।
नानाकुसुमभूषाढ्या मुक्ताकेशी त्रिलोचना ॥ ४ ॥
नानारत्नाङ्गदयुता मुक्ताहारलताश्रिता ।
रक्ताक्षालुलीयशोभाढ्या तुङ्गापीनस्तनाश्रिता ॥ ५ ॥
विचित्ररत्नखचितकाञ्चीगुणनितम्बिनी ।
रत्नसिंहासनगता परमानन्ददायिनी ॥ ६ ॥
ता इष्ट्वा तुष्टुर्बुद्धेर्वी ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
समुरासुरगन्धर्वाः सेश्वराः ससदाशिवाः ॥ ७ ॥
तदा प्रसन्नवदना वरदानोद्यता सुरा ।
आर्द्रा पात्र ददां दिव्यमानन्दरसपूरितम् ॥ ८ ॥
मदाशिवाय देवेशि स नत्वा पात्रमग्रहीत् ।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां चाता गुडलनाम्बु ॥ ९ ॥

बिन्दुपातात् कणा जाताम्तेभ्यो जाताः सहस्रशः ।
 इक्षुमेदाश्च मदिरास्त्र्यपणाद्याः मितादयः ॥ १० ॥
 कम्पका नागवल्ली च स्रवन्तीति मद्देशरि ।
 गौडी चैतद्युता प्रोक्ता सर्वार्थफलदायिनी ॥ ११ ॥
 ततो ददौ परं पात्रमीश्वराय सुरा शिबे ।
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्ग्या ततो जाताहिवल्लरी ॥ १२ ॥
 बिन्दुपातकणेभ्योऽपि द्राक्षाभेदाः सहस्रशः ।
 मृद्वीकाया महादेवि जाताः परमपावनाः ॥ १३ ॥
 माध्वी प्रोक्ता महाविद्यासाधने सर्वसिद्धिदा ।
 ततो ददौ परं पात्रं रुद्रापामृतपूरितम् ॥ १४ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्ग्या जाता गोधूमजातयः ।
 तत्कणेभ्यो भदन्ती च जाता वै चान्यजातयः ॥ १५ ॥
 पैष्टी प्रोक्ता सुरा देवि परमानन्ददायिनी ।
 ततो ददौ परं पात्रं विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १६ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्ग्या संविजाता ततः त्रिये ।
 तत्कणेभ्योऽपि देवेशि तद्भेदाः कनकादयः ॥ १७ ॥
 अन्ये च बहवो जाता भेदा मदनवर्षकोः ।
 बिजयेति मया प्रोक्ता वैष्णवी परमार्थदा ॥ १८ ॥
 संविदासत्रयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ।
 ततो ददौ परं पात्रं श्रीसुरा परमेष्ठिने ॥ १९ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्ग्या जातः शीघ्र परूपकः ।
 तत्कणेभ्योऽपि सञ्जाता भदाः चौद्रसादयः ॥ २० ॥
 पानक प्रोक्तामीशानि सर्वसाधारणं परम् ।
 ततो ददौ परं पात्रमिन्द्रायामृतनिर्भरम् ॥ २१ ॥

पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जातं जार्त्तफलं ततः ।
 तत्कण्ठेभ्योऽपि सञ्जाता भेदाग्रामलकादयः ॥ २२ ॥
 पानकं नाम तद् दिव्यं रसायनमुदाहृतम् ।
 ततो ददौ परं पात्रं गुरवे गिरिजे सुरा ॥ २३ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां गुडपुष्पं ततः शिवे ।
 जातं तत्कण्ठजा भेदा नारिकेलफलादयः ॥ २४ ॥
 पानकं नाम देवेशि रसायनमिदं परम् ।
 ततो ददौ परं पात्रं शुक्रायामृतपूरितम् ॥ २५ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाताः स्वर्जूरपादपाः ।
 तत्कण्ठेभ्योऽपि सञ्जाता भेदा भादामकादयः ॥ २६ ॥
 पानकं तदपि प्रोक्तं दिव्यं सन्तोषकारणम् ।
 ततो ददौ परं पात्रं सूर्याचन्द्रमसोः मरुतै ॥ २७ ॥
 पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाता सञ्जीवनौषधिः ।
 तत्कण्ठेभ्योऽपि सञ्जाता विविधौषधयः शिवे ॥ २८ ॥
 पानकं तदपि प्रोक्तं सर्वसाधारणं परम् ।
 सर्वार्थफलदं देवि सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ २९ ॥
 दत्त्वा दिव्यं रसं देवी सुरा तत्र तिरोदधे ।
 ते सर्वे परमेशानि सुरानन्दैकनिर्भराः ॥ ३० ॥
 मदाशिवादयो देवाः सुरायै च वरं ददुः ।
 ये पिबन्ति परं पानं परमानन्दकारणम् ॥ ३१ ॥
 ते सर्वे यान्ति परमं पदं शाश्वतमव्ययम् ।
 विना गौडीं तथा माध्वीं सुरा यः पूजयेच्छिवाम् ॥ ३२ ॥
 शिवं नारायणं रुद्रं स भवेन्निरपास्पदम् ।
 अदीक्षितः पशुर्देवि दीक्षितोऽप्यसुरः पशुः ॥ ३३ ॥

तस्मात् सुरां शिवेऽभ्यर्च्य पूजायां वैष्णवोत्तमः ।
 पिवेद्गौडीं तथा मार्घ्यां पैष्टीमासवमुत्तमम् ॥ ३४ ॥
 पानकं च शुभाः सर्वे पूर्वाभावे परः परः ।
 इतीदं परमं तत्त्वं कौलिकानां रहस्यकम् ।
 आनन्देश्वरसर्वस्वं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ३५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदीर्घारदस्ये सुरोत्पत्तिनिरूप-
 णमेकोनविंशः पटलः ॥ १६ ॥

अथ

विंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पात्रवन्दनमीश्वरि ।
 तत्कालं यद्वदानन्दपात्रं देवैश्च वन्दितम् ॥ १ ॥
 पूजायां पात्रमानन्दभरितं परमेश्वरि ।
 गुरुणा दत्तमभ्यर्च्य प्रणमेच्छिरसा तदा ॥ २ ॥
 श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृताक्षवितं
 चेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः ममाराधितम् ।

आनन्दागमकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतं
 वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम् ॥ ३ ॥ *
 हैमं सिन्धुरमावहं दधितया दत्तं च पेयादिभिः
 किञ्चिच्चलरक्कपङ्कजदृशा सानन्दमुद्गीचित्रम् ।
 वामे स्वादुविशुद्धशुद्धिकण्ठं पाणौ विधामात्मके
 वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दकसंवर्धनम् ॥ ४ ॥
 सर्पाभ्रायकलाकलापकलितं कौतूहलोद्घोषितं
 चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुररुणव्रक्षादिभिः सेवितम् ।
 ध्यातं देवगणैः परं मुनिगणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा
 वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्माग्रबोधचमम् ॥ ५ ॥
 मयं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः पूरितं
 सुद्रामैधुनधर्मकर्मनिरतं चाराम्लतिक्राथयम् ।
 आचार्याष्टकसिद्धभैरवफलान्यामेन संशोषितं
 पायात् पञ्चमकारतत्त्वनिर्लेपं पात्रं चतुर्थं जुमः ॥ ६ ॥
 आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं भर्हीमण्डलं
 मयं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः ।

सोऽहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणैरक्षतै-

रादित्यप्रभुषैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः ॥ ७ ॥

सञ्छेत्रामलभद्रपीठपरमानन्दोदयादायकं

रम्यं राज्यकरं सदा सुखकरं सायुज्यसाम्राज्यदम् ।

नानाव्याधिभवान्धकारहरणं जन्मान्तरध्वंसनं

श्रीमद्भैरवभैरवीप्रियतरं पात्रं च पण्डं नुमः ॥ ८ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिर्तुर्यपरतश्चैतन्यसाक्ष्यप्रदं

विद्युद्भास्करवह्निचन्द्रधनुषां ज्योतिष्कलाव्यापितम् ।

येर्ह्यपिङ्गलमध्यगा त्रिवलया तैस्याः प्रबोधोद्धरं

पात्रं सप्तर्ममूपखेन तरुणानन्दप्रदं पातु माम् ॥ ९ ॥

खड्गं पात्रैकमश्वलं च गुटिका कण्ठे हि सारस्वतं

शत्रोर्वाग्बलशौर्यकार्यहरणं देहस्थितेः कारणम् ।

बौद्धासिद्धिकरं मनःस्थितिकरं वर्धयं जगद्योपितां

पात्रं चाष्टममष्टसिद्धिकरणं प्रौढप्रसन्नं भजे ॥ १० ॥

सर्वानन्दकरं सदाशिरपदं सर्वार्थसंपत्प्रदं

साम्राज्यार्थकरं समस्तसुखदं चाज्ञानविध्वंसनम् ।

आयुःकान्तियशोविवर्धनकरं संसारमोहच्छिद

पात्रं लक्षगुणात्मकं च नवमं प्रौढप्रतापं भजे ॥ ११ ॥

प्रक्षविष्णुमहेशानां देवानां च विशेषतः ।

दूर्लभं पावनं पात्रं दशमं प्रणमाम्यहम् ॥ १२ ॥

पापघ्नं शान्तिशुभदं दिव्यं स्वादु सुखालयम् ।

पात्रमेकादशं वन्दे गुरुमेवासुखागतम् ॥ १३ ॥

पात्रं कृत्वा करे मन्त्री सर्वकर्म लभेत् सुखी ।

इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते भैरवो भवेत् ॥ १४ ॥

देहस्याखिलदेवता गजमुखाः चेत्राधिपा भैरवाः

योगिन्यो बटकाश्च यच्चपितरः पेशाचिकाश्चेतकाः ।

अन्ये भूचरसेचराः प्रतिपगा बेतालभूतग्रहा-

स्तुमाः स्युः कुलपुत्रकस्य पिबतः पानं मदीपं चरुम् । १५ ।

(करे माला मुखे हाता वामे रामा सुकोमला ।

हृदये त्रिपुरा घाला धागशाला गृहे गृहे ॥ १६ ॥

पात्रं भैरवपात्रं गोत्रं श्रीनाथपादुकागोत्रम् ।

शास्त्रं संप्रिच्छास्त्रं ज्ञानं तत्त्वाप्रबोधकं ज्ञानम् ॥ १७ ॥)

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-

मग्रे मुद्राश्चणकवटको बृकरस्पोष्णशुद्धिः ।

स्कन्धे वीणा सरममधुरा सद्गुरोः सत्कथा च

कौलो मार्गः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ १८ ॥

अस्तिपिशितपुरन्ध्री-भोगपूजापरोऽहं

बहुविधकुलमार्गारम्भसंभावितोऽहम् ।

पशुजनत्रिमुग्वोऽहं भैरवीमाभितोऽहं

गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽह शिवोऽहम् ॥ १९ ॥

करे पात्रं मुखे स्तोत्रमानन्दो हृदयान्तरे ।

भक्तिगुरुपदाम्भोजे शैर्यं किमतः परम् ॥ २० ॥

एकेन शुष्कवटकेन घटं पिबामि

नार्पि पिबामि महमा नवगार्दकेण ।

आम्वाद्य मांसमलिरोहितमुण्डसण्डं

गङ्गां पिबामि यमुनां सह सागरेण ॥ २१ ॥

वामे चन्द्रमुखी मुखे च मदिरा पात्रं कराम्भोरुहे

मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसम् ।

जिह्वायां जपसाधनं परिणतिः कौलक्रमाभ्यासने

ये सन्तो नियतं पिबन्ति सुरसं ते भुक्तिमुक्ती गताः ॥ २२ ॥

पीता पीता पुनः पीता यावत् पतति भूतले ।

पुनरुत्थाय चै पीता पुनर्जन्म न विद्यते ॥ २३ ॥

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा क्षुचा ।

सुपुष्पावर्त्मना नित्यमक्षय्यतीर्जुहोम्यहम् ॥ २४ ॥

प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीक्षुचम् ।

धर्माधर्मकलालेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् ॥ २५ ॥

यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः ।

तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम् ॥ २६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पात्रवन्दनविधि-
निरूपणं विंशः पटलः ॥ २० ॥

अथ

एकविंशः पटलः ।



श्रीमैत्रय उवाच ।

देवि वक्ष्यामि पूजान्ते शान्तिस्तोत्रमनुचमम् ।

वीरा येन परानन्दपदं प्राप्स्यन्ति निःस्पृहाः ॥ १ ॥

योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितम् ।

नमामि शिरसा नार्थं भैरवं भैरवीप्रियम् ॥ २ ॥

अनादिषोरसंसार-व्याधिध्वंसकहेतवे ।

नमः श्रीनाथवैद्याय कुलौषधप्रदायिने ॥ ३ ॥

आपदो दुरितं रोगाः समयाचारलहनात् ।

ते मर्वेऽत्र व्यपोहन्तु दिव्यचक्रस्य मेलनात् ॥ ४ ॥

आपुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिर्लाभः सुखं जयः ।

कान्तिर्मनोरथश्चास्तु पान्तु सर्वाश्च देवताः ॥ ५ ॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां

पत्नीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम् ।

देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञेः

करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥ ६ ॥

नन्दन्तु सायककुलान्वयदर्शका ये

सृष्ट्याद्यनारूप्यचतुरस्रमहान्वया ये ।

नन्दन्तु मरुकुलकौलरताः परे ये

ऽर्घ्येभ्ये विशेषपदभेदकशाम्भवा ये ॥ ७ ॥

नन्दन्तु मिद्वगुरवः स्वगुरुकर्मधा

ज्येष्ठानुगाः समयिनो वदुकाः कुमार्यः ।

षड्योगिनीप्रवरवीरकुलप्रसूता

नन्दन्तु भूमिपतिगोद्विजमाधुलोकाः ॥ ८ ॥

नन्दन्तु नीतिनिपुणा निरवघनिष्ठा

निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च ।

नित्या निरन्तररता गुरवो निरीहाः

शाक्ताश्च शान्तमनसो हृतशोकशङ्काः ॥ ९ ॥

नन्दन्तु योगनिरताः कुलयोगयुक्ता

आचार्यसामयिकमाधर्कपुत्रकाश्च ।

गावो द्विजा युवतयो यतयः कुमार्यो

धर्मे भवन्तु निरता गुरुभक्तियुक्ताः ॥ १० ॥

नन्दन्तु साधककुला ह्यणिमादिनिष्ठाः

शापाः पतन्तु द्विपतैः कुलयोगिनीनाम् ।

सा गाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्पयस्या

यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥ ११ ॥

याश्चक्रक्रमभूमिकावसतयो नाडीषु याः संस्थिता

याः कायदुमरोमकूपनिलया याः संस्थिता धातुषु ।

उच्छ्वासाभिमिरुत्तरङ्गनिलया निःश्वासरासाश्च या-

स्ता देव्यो रिपुभक्षणोद्यमपरास्त्वप्यन्तु कौलाचिताः ॥ १२ ॥

या दिव्यक्रमपालिकाः चितिगता या देवतास्तोयगा

या नित्यं प्रथितप्रभाः शिखिगता या मातरिश्वाश्रयाः ।

या ज्योषामृतमण्डलामृतमया याः सर्वदा मर्चगा-

स्ताः सर्वाः कुलमार्गपालनपराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे ॥ १३ ॥

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि भुवनतले भूतले निस्तेले वा
पातले वा तले वा पवनसलिलगोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ।

चेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिमांसैः

प्रीत्या देव्यः सदा वः शुभवलिगिधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः । १४ ।

ब्रह्मा श्रीशेषदुर्गागुहचटुकगणा भैरवाः चैत्रपाला

वेतालादित्यरुद्रग्रहचसुमनुमिद्धाप्सरोगुद्यकापाः ।

भूता गन्धर्वविद्याघरञ्चपिपितृयक्षासुराहिप्रभूता

योगीशाश्चारणाः किंपुरुषमुनिसुराक्षक्रगाः पान्तु सर्वे ॥ १५ ॥

सत्यं चेद्गुरुवाक्यमेव पितरो देवार्थं चैद्योगिनी-

प्रीतिश्चेत् परदेवता च यदि चेद्वेदाः प्रमाणाश्च चेत् ।

शास्त्रेयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेवा(भाशा)स्ति चेत्

सन्त्यत्रापि च कौलिकाश्च यदि चेत् स्थान्मे जयः सर्वदा । १६ ।

तृप्यन्तु मातरः मर्वाः ममुद्राः सगणाधिपाः ।

योगिन्यः चैत्रपालाश्च मम देहे व्यवस्थिताः ॥ १७ ॥

शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बमंयुतम् ।

कालाभ्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥ १८ ॥

पठित्वेदं नमेद् वीरान् वीरवन्दनमाचरेत् ।

स्तवेद् वीराश्च नमेद् वीरान् मन्त्रमिद्धिः प्रजापते ॥ १९ ॥

इति शान्तिस्तोत्रम् ॥ अथ वीरवन्दनस्तोत्रम् ।

जगत्त्रयाभ्यर्चितशामनेभ्यः

परार्थमंपादनकोपिदेभ्यः ।

ममुद्धतज्जेशमहोरगेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २० ॥

प्रदीणसर्वासंभवामनेभ्यः

सर्वार्थतत्त्वोदितसाधनेभ्यः ।

सर्वप्रजाभ्युद्धरणोद्यतेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २१ ॥

निस्तीर्णसंसारमहार्णवेभ्य-

स्तृष्णालतोन्मूलनतत्परेभ्यः ।

जरारूजामृत्युनिवारकेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २२ ॥

सद्धर्मरक्षाकरमाजनेभ्यो

निर्वाणमार्गोत्तमदेशिकेभ्यः ।

सर्वत्र संपूर्णमनोरथेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २३ ॥

लोकानुकम्पाभ्युदितादरेभ्यः

कारुण्यमैत्रीपरिभावितेभ्यः ।

सर्वार्थचर्यापरिपूरकेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २४ ॥

विध्वस्तानिशेषकुत्रासनेभ्यो

ज्ञानाग्निना दग्धमलेन्धनेभ्यः ।

प्रज्ञाप्रतिष्ठापरिपूरकेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २५ ॥

सर्वार्थिताशापरिपूरकेभ्यो

वैनेषपक्षाद्वयोद्यतेभ्यः ।

विस्तीर्णसर्वार्थगुणाकरेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २६ ॥

१ 'सर्वधिक' क पाठः । २ 'वासनेभ्य' क पाठः । ३ 'क्षयो' क, ख, पाठः ।

४ 'पु' ख, पाठः । ५ 'बोधनेभ्य' ग पाठः ।

अनन्तकर्माजितशासनेभ्यो

ब्रह्मेन्द्ररुद्रादिनमस्कृतेभ्यः ।

परम्परालुग्रहकारकेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २७ ॥

विभ्रमभूतादिमहामयेभ्यो

मपञ्चकाचारपरायणेभ्यः ।

समस्तसौभाग्यकलाकरेभ्यो

नमो नमः कारणनायकेभ्यः ॥ २८ ॥

विभ्रमहर्दुष्कर्मजवासनेभ्यः

समन्ततो जुष्टमहापशोभ्यः ।

लभ्यामलज्ञानकृतास्पदेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ २९ ॥

सर्वागमाभ्योविमहास्रवेभ्यः

श्रीचक्रपूजार्थपरायणेभ्यः ।

श्रीवीरचर्याचरणक्षमेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३० ॥

श्रीमन्त्रकोटिद्युतिभूषणेभ्यो

द्वाविंशदुल्लासदशातिगेभ्यः ।

अद्वैततत्त्वामृतभाजनेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३१ ॥

पद्मत्रिशतालक्षणभूषितेभ्यः

प्रोत्फुल्लपद्माकरलोचनेभ्यः ।

अनन्यचामीकरविग्रहेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३२ ॥

सम्बोधसंभारसुसंस्थितेभ्यः

संसारनिर्वाणनिदर्शनेभ्यः ।

महाकृपावेष्टितमानसेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३३ ॥

परैक्यविज्ञानरसाकुलेभ्यो

वामाश्रिताचारभयानकेभ्यः ।

स्वातन्त्र्यविध्वस्तजगत्तमोभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३४ ॥

श्मशानचर्याप्तमहाफलेभ्यो

मोहान्धकारापहृतिक्षमेभ्यः ।

परस्पराज्ञापारिपालकेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३५ ॥

विधूतकेशालिकपालकेभ्यः

सुरासवारक्रविलोचनेभ्यः ।

नवीनकान्तारत-तत्परेभ्यो

नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥ ३६ ॥

निभूतिलिप्ताङ्गदिगम्बरेभ्य-

श्रिताग्रिधूमालिभयानकेभ्यः ।

कपालसौन्द्रामृतपानकेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ३७ ॥

मिध्यष्टकाधौनमहामुनिभ्यः

श्रीभैरवाचारकृतादरेभ्यः ।

स्वाधीनतान्यवकृतनिर्जरेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ३८ ॥

प्रशान्तशास्त्रार्थविचारकेभ्यो

निवृत्तनानारसकाव्यकेभ्यः ।

निरस्तनिःशेषविकल्पनेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ३९ ॥

स्वात्मैक्यभावान्तरिताशयेभ्यः

सायुज्यसाम्राज्यसुखाकरेभ्यः ।

श्रीसच्चिदानन्दितविग्रहेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ४० ॥

पराप्रसादास्पदमानसेभ्यो

ब्रह्माद्वयज्ञानरसाकुलेभ्यः ।

शिवोऽहमित्याश्रितचेतनेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ४१ ॥

सर्वथा सर्वदानेन्दं सर्वं घटपटादिस्तत् ।

जगज्जनितविस्तारं ब्रह्मेदमिति वेद्म्यहम् ॥ ४२ ॥

अहमेव परो हंसः शिवः परमकारणम् ।

मत्प्राये स तु मच्चात्मा लीनः समरसीगतः ॥ ४३ ॥

सच्चिदानन्दनिलयं परापरमकारणम् ।

शिवाद्वयप्रकाशाढ्यं श्यामलं धाम धीमहि ॥ ४४ ॥

अनेन वीरस्त्वकीर्तनेन

समुद्धृतकेशसुवासनोऽहम् ।

संसारकान्तारमहार्णवेऽस्मिन्-

निमज्जमानं जगदुद्धरेयम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीकृष्णायामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शान्तिस्तोत्र-

वीरवन्दना-निरूपणमैकाविंशः पटलः ॥ २१ ॥

अथ

त्राविंशः पटलः ।

श्रीमैत्रव उवाच ।

मृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुराशुद्धिविधिं परम् ।
यं विधाय कलौ भक्षी भविता मुक्तिभाजनम् ॥ १ ॥
यैरेव पातकी देवि साधको द्रव्यसङ्करैः ।
शुद्धैस्तैरेव पूजायां भवेद्भोगापवर्गमाक् ॥ २ ॥
यदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् सुरा ख्यातिमुपागता ।
तदा सर्वे सुरा देवि ब्रह्मविष्णुहरादयः ॥ ३ ॥
तत्संसर्गोद्भवानन्द-निर्भरान्तरमानसाः ।
असुरा राक्षसा यक्षा गन्धर्वा मानवादयः ॥ ४ ॥
भजन्ति च सुरां दिव्यां मन्त्रसंस्कारमभिताम् ।
कालेन कलशस्थाभूत् सुरादेवी सुरेश्वरि ॥ ५ ॥
कलिना कालरूपेण बाधिते जगति म्रिये ।
शप्ता शुक्लेण देवेशि रुचकारणहृत्यया ॥ ६ ॥
शुक्रशापवशाद् देवा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
ब्रह्मर्षयः सुरादेव्यै ददुः शापं यथाक्रमम् ॥ ७ ॥
ब्रह्महत्या सुरापानं समं ज्ञेयं महेश्वरि ।
सुरा शप्ता यदा देवैस्तदा दैत्या मुदं ययुः ॥ ८ ॥
सुरां पीत्वा तु दितिर्जदेवा बलविवर्जिताः ।
स्वर्गाभिराकृता देवि प्ररन्दरपुरःसराः ॥ ९ ॥

तदा जिष्णुं पुरस्कृत्य देवा यज्ञमतन्वत ।
 सदाशिवादयो देवि प्रादुर्भूता मत्तोत्तमे ॥ १० ॥
 वर वृणु यथाभीष्टं देवनायक सांप्रतम् ।
 तं तवाशु प्रयच्छामो गच्छामो नित्यं स्वकम् ॥ ११ ॥
 तदा शक्रोऽब्रवीद् देवि पुरस्कृत्य गुरं शिवे ।
 तृणाग्रबिन्दुमाश्रेण सुरायाः प्राशितेन च ॥ १२ ॥
 या तृप्तिर्जायतेऽस्माकं न सामृतघटीशतैः ।
 सा शक्ता ब्रह्मणा देवी विष्णुना शङ्करेण च ॥ १३ ॥
 तां विना निर्बला जाताः शत्रुभिश्च पराजिताः ।
 तदा सर्वे सुरा देवं शिवमीश्वरमव्ययम् ॥ १४ ॥
 तुष्टुः परया भक्त्या प्रणिपत्य पुनः पुनः ।
 एकाक्षराय रुद्राय अकारायात्मरूपिणे ॥ १५ ॥
 उकारायादिदेवाय विद्यादेहाय वै नमः ।
 तृतीयाय मकाराय शिवाय परमात्मने ॥ १६ ॥
 क्षर्षाय मोमवर्षाय यजमानाय वै नमः ।
 नमस्ते रगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे ॥ १७ ॥
 नमो भवाय देवाय शर्षाय च कपर्दिने ।
 शिराय क्षितिरूपाय सदासुरभये नमः ॥ १८ ॥
 ईशानाय नमस्तुभ्यं संस्पर्शाय नमो नमः ।
 पशूनां पतये चैव पात्रकामिततेजसे ॥ १९ ॥
 भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय वै नमः ।
 महादेवाय सोमाय अमृताय नमो नमः ॥ २० ॥
 उग्राय यजमानाय नमस्ते कर्मयोगिने ।
 इति स्तुता परं देवं भैरवं शिवमीश्वरम् ॥ २१ ॥

प्रणमः सकला देवा ब्रह्मविष्णुहरादयः ।
 तदा वागुदभूद् व्योम्नः पञ्चव्योमशरीरिणाम् ॥ २२ ॥
 सुरेयं सर्वदा सेव्या सकलैस्तु मुमुक्षुभिः ।
 युक्त्यानया प्रसङ्गेन यथावदनुपूर्वशः ॥ २३ ॥
 चतुर्धा वेदरूपोऽहमृग्यजुःसामरूपवान् ।
 अथर्वाहं च मन्त्रात्मा परमात्मा शिवोऽव्ययः ॥ २४ ॥
 वेदानालोड्य वेदार्थं मन्त्ररूपं विधाय च ।
 कुरुकुलां महाविद्यां सदाशिव प्रकाशय ॥ २५ ॥
 आगमं नाम शास्त्रं तु चतुष्पष्ट्यात्मकं परम् ।
 तस्मिन् सुरादिशुद्धिं तु प्रकाशय मनूष्यैः ॥ २६ ॥
 इति वाणी शिवोद्भूता विरराम यदा परा ।
 सदाशिवं महेशानं तुष्टुयुः प्रणताः सुराः ॥ २७ ॥
 ओंकाररूपिणे देव नमस्ते विश्वरूपिणे ।
 नमो देवादिदेवाय महादेवाय वै नमः ॥ २८ ॥
 अर्धनारीशरीराय सांख्ययोगप्रवर्तिते ।
 वेदशास्त्रार्थगम्याय शाश्वताय नमो नमः ॥ २९ ॥
 दीनार्तत्राणरुर्त्रे च नमस्ते दिव्यचक्षुषे ।
 नमः सहस्रशीर्षाय नमः माहात्मिकाङ्घ्रये ॥ ३० ॥
 नमो मन्त्राय चिद्व्योमवासिने परमात्मने ।
 इति स्तुत्वा महादेवो महात्मा श्रीमदाशिवः ॥ ३१ ॥
 प्रोवाचागमशास्त्रं तु मोक्षमार्गं महात्मनाम् ।
 देवदेवीति या देवी या भवानीति विश्रुता ॥ ३२ ॥
 सदाशिवं प्रणम्याशु प्रोवाच श्लक्ष्णया गिरा ।
 वद देवागमं शास्त्रं रहस्यं परमाद्भुतम् ॥ ३३ ॥

यस्योधारणमात्रेण शापहीना भवेत् सुरा ।

श्रीशिव उवाच ।

मृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुराशुद्धिं यथाक्रमम् ।

मकाराणां च सर्वेषां शोधनं सिद्धिर्बर्धनम् ॥ ३४ ॥

वेदो निष्कलशब्दो वै वेदार्थोऽस्त्यागमः शिवे ।

वेदार्थागमतत्त्वज्ञैः सुरा सेव्या मुमुक्षुभिः ॥ ३५ ॥

न वेदागमयोर्भेदः सर्वथेति त्रिनिश्चयः ।

शास्त्राणां परमेशानि भ्रान्तिः कार्या न कौलिकैः ॥ ३६ ॥

अधुना मृणु देवेशि सुराशोधनमुत्तमम् ।

येन शोधनमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ ३७ ॥

मण्डलं वामतः कृत्वा जलेन रजसापि वा ।

कुङ्कुमेनाष्टगन्धेन सर्वथा वीरभस्मना ॥ ३८ ॥

त्रिकोणं विन्दुसंयुक्तं वृत्तं च चतुरश्रकम् ।

सामान्यार्घ्योदकेनाशु संप्रोक्ष्य कुलसुन्दरि ॥ ३९ ॥

तत्राधारं च संस्थाप्य वह्निमण्डलमर्चयेत् ।

बहेः कलाः समभ्यर्च्य यथावद्वर्ण्यते मया ॥ ४० ॥

रकारं विन्दुसंयुक्तं वह्निविम्बं च डेऽन्तिकम् ।

दशकलात्मने विश्वमिति मन्त्रेण पूजयेत् ॥ ४१ ॥

धूम्रा च नीलवर्णा च कपिला विस्फुलिङ्गिनी ।

ज्वाला हैमवती कण्वचाहनी हण्वचाहनी ॥ ४२ ॥

रौद्री सङ्कर्षणी चैव वैश्वानरकला दश ।

पूजयित्वा विधिना गन्धाक्षतप्रघ्नकैः ॥ ४३ ॥

कलशं संस्थूलं दिव्यं पुष्पमालादिशोभितम् ।

हैम वा राजत मार्दं स्थापयेद् वीरमुद्रया ॥ ४४ ॥

शम्भुना च यथा देवि विष्णुना च यथा पुरा ।

ब्रह्मणा च यथा पूर्वे तथा तां स्थापयाम्यहम् ॥ ४५ ॥
 इति संस्थाप्य कलशं तत्र सूर्यं प्रपूजयेत् ।
 सूर्यनाम समुच्चार्य जीवमश्रं महेश्वरि ॥ ४६ ॥
 सूर्यमण्डलहेन्तं च श्रीद्वादशकलात्मने ।
 विश्वमन्त्रे प्रयोक्तव्यं मनुनानेन पूजयेत् ॥ ४७ ॥
 कला द्वादश सूर्यस्य पूजयेद्व्यथे मया ।
 तपिनी तापिनी चैव बोधिनी चैव रोधिनी ॥ ४८ ॥
 कलिनी शोषणी चैव वरेण्याकर्षणी तथा ।
 माया विश्वावती हेमप्रभा सौरकला इमाः ॥ ४९ ॥
 संपूज्य कलशे देवि कौलिकः कुलसिद्धये ।
 सुरया पूरयेत् कुम्भं विलोमैर्मातृकाचरैः ॥ ५० ॥
 तदिदं चामृतं साक्षाच्चन्द्ररूपं विचिन्तयेत् ।
 चन्द्रमण्डलमभ्यर्च्य मन्त्रेणानेन पार्वति ॥ ५१ ॥
 शक्तिमुच्चार्य देवेशि सोममण्डलद्वेष्टम् ।
 विश्वाञ्चलाय देवेशि श्रीषोडशकलात्मने ॥ ५२ ॥
 इति संपूज्य चन्द्रस्य कलाः षोडश पूजयेत् ।
 अमृता मानदा तुष्टिः पुष्टिः प्रीती रतिस्तथा ॥ ५३ ॥
 श्रीश्च द्वीश्च स्वधा रात्रिर्ज्योत्स्ना हैमवती तथा ।
 छाया च पूर्णिमा नित्या चामावस्था च षोडशी ॥ ५४ ॥
 एताः संपूज्य मन्त्रेस्तु यजेद् देवीं च भैरवीम् ।
 मूलेन तत्र कलशे त्रिकोणं च त्रिमासेत् ॥ ५५ ॥
 बिन्दुविम्बे परा ध्याता पूजयेदिष्टदेवताम् ।
 प्रणवेनार्चयेद् देवि शिवं गन्धेन वायुना ॥ ५६ ॥
 तत्र तारं च माया च परमस्वामिन्पुद्धरेत् ।

परमाकाशशून्यं च बाहिनीति समुद्धरेत् ॥ ५७ ॥
 चन्द्रार्काग्निमक्षणीति पात्रे विश-युगं वदेत् ।
 उदयान्तामिमां वियां जपेत् दशधा घटे ॥ ५८ ॥
 तत्रैव मातृकान्ते च जपेच्चमिमां प्रिये ।
 आकृष्णेन रजसेति नार्त्नीं परमपावनीम् ॥ ५९ ॥
 दशधैतामृचं देवि मधुवानश्रुताभिधाम् ।
 तत्रानन्देशगायत्रीं जपेत् दशधा प्रिये ॥ ६० ॥
 वाङ्मायामाः ममुच्चार्य तयानन्देश्वराय च ।
 विघ्नहे श्रीसुरादेव्यै धीमहीति ततो वदेत् ॥ ६१ ॥
 तन्मोर्धनारीश्वरश्च प्रचोदयात् समुद्धरेत् ।
 गायत्रीं दशधा जप्त्वा हंसः शुचिपदार्चयेत् ॥ ६२ ॥
 अग्निमीळे पुरोहितं त्रिःसङ्गप्येति कौलिकः ।
 वकारं दीर्घपदकाद्यं प्रोच्चार्य तदनन्तरम् ॥ ६३ ॥
 ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै कुटान्तकम् ।
 दशधा प्रजपेद्विद्यामिमे लोर्जेत्यृचं जपेत् ॥ ६४ ॥
 तारं मायार्णवड्दीर्घान् प्रोच्चार्येति सुधे ततः ।
 शुक्रशापं मोचय द्विर्बनान्तं च मनुं जपेत् ॥ ६५ ॥
 अग्न आयाहीति श्रुत्वा दशधा प्रजपेत् प्रिये ।
 शुक्रशापहरीं वियां प्रजपेदुच्यते यथा ॥ ६६ ॥
 सूर्यमण्डलसंभूते वर्णालयमेभवे ।
 अमाचीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ ६७ ॥
 देवानां (वेदानां) प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
 तेन सत्येन देवेभि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ ६८ ॥
 एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं परम् ।

कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ ६६ ॥

ब्रह्मशापविनिर्मुक्ता तं मुक्ता विष्णुशापतः ।

विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव सांप्रतम् ॥ ७० ॥

एतैर्मन्त्रैः समभ्यर्च्य त्रिवारं कौलिकः शिवे ।

शत्रो देवीरिति ऋचं दशधा प्रजपेद् घटे ॥ ७१ ॥

ततो मायां रमां देवि पङ्क्तुं पङ्दीर्घमाजितम् ।

क्षुरिकाकारिण्युच्चार्य शोभिनीति ततो वदेत् ॥ ७२ ॥

विकारानस्य द्रव्यस्य हर-युग्मं च ठद्वयम् ।

क्षुरिकाख्यां जपेद्विधां दशधा कलशोपरि ॥ ७३ ॥

यो विश्वचक्षुरिति च ऋचं वै दशधा जपेत् ।

गुहं ध्यात्वा सहस्रारे हृत्पत्रेऽपीष्टदेवताम् ॥ ७४ ॥

प्रणम्य कौलिको ध्यायेत् श्रीतिरस्करणीं जपेत् ।

नीलतोयदसङ्काशां नीलकुन्तलशोभिताम् ॥ ७५ ॥

नीलाम्बरधरां देवीं नीलोत्पलविलोचनाम् ।

नीलपुष्पविभूषाढ्यां नीलालङ्कारभूषिताम् ॥ ७६ ॥

नीलाङ्गरागसंछन्नां नीलवैदूर्यमालिनीम् ।

इन्द्रनीलनिबद्धांशुमहार्धमणिभूषिताम् ॥ ७७ ॥

नीलवाजिसमारूढां नीलसङ्गायुधां पराम् ।

निद्रापटेन नीलेन भुवनानि चतुर्दश ॥ ७८ ॥

मोहयन्तीं महापायां द्रव्यनिन्दकमक्षिणीम् ।

वीरपानरतान् वीरान् पालयन्तीं समन्ततः ॥ ७९ ॥

सङ्केतमण्डलं दिव्यं ह्यादयन्ता स्ववासमा ।

परमानन्दवपुषीं परमानन्दभरणीम् ॥ ८० ॥

परमानन्दजननीं प्रणमामि पराम्बिकाम् ।

इति ध्यात्वा जपेद्विधां यथावद् वर्ण्यते मया ॥ ८१ ॥
 वाक्काममठमायाश्च तिरस्करणि संवदेत् ।
 मकलजनं प्रोक्षार्य वाग्वादिनि ततो वदेत् ॥ ८२ ॥
 सकलपशुजनं च वदेद् प्रातमनःपदम् ।
 चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणादीनि चेति तिरस्वुरु ॥ ८३ ॥
 तिरस्वुरु ततः पञ्चत्रयं ठट्टपमूदरेत् ।
 श्रीतिरस्करणीं विद्यां सञ्जपेद् दशधा यटे ॥ ८४ ॥
 पावमान्याः परं ब्रह्म शुद्धं ज्योतिः मनातनम् ।
 पितृन्तस्योपतिष्ठति धीरं सर्पिर्मधूदकैः ॥ ८५ ॥
 अचमेतां जपेदादौ त्रिवारं त्रिजपेद् ततः ।
 पावमान्यं परं ब्रह्म पावमान्यः परो रसः ॥ ८६ ॥
 पावमान्यं परं ज्ञानं तेन तां पावयाम्यहम् ।
 इति जप्त्वा गुरुं ध्यात्वा जपेद् वरुणबीजकम् ॥ ८७ ॥
 हंस इत्यर्कमन्त्रं च देवीं कुण्डलिनीं सरेत् ।
 प्रसुप्तभुजगाकारां सार्धत्रिवलयं शुभाम् ॥ ८८ ॥
 सूर्यकोटिकरालाभां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ।
 वह्निकोटिदूरादधर्पां विमतन्तुतनीयमीम् ॥ ८९ ॥
 पद् चक्राणि त्रिभिधाशु सुपुष्पावर्त्मना नयेत् ।
 सहस्रारस्थितं देवं नत्वा शिवपदे लयेत् ॥ ९० ॥
 शिवशक्तयोर्महज्ज्योतिर्ध्यात्वा चन्द्रकलाप्लुतम् ।
 अमृतं वामनामाग्रात्रिःसार्धं कलशे क्षिपेत् ॥ ९१ ॥
 अमृतीकृत्य तद् द्रव्यं घेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् ।
 मायां रमा कामकलाममृतेऽप्यमृतोद्भवे ॥ ९२ ॥
 अमृतवर्षिण्युच्चाये अमृतं स्नायय-द्रवम् ।
 अंशं विष्णुकलान्ते च पठेत् पार्वति कौनिकः ॥ ९३ ॥

विश्वान्तममृतेश्वर्यं मनुमेनं जपेद् घटे ।
 ध्यात्वा मृतमयं द्रव्यं कर्पूरादिसुषामितम् ॥ ६४ ॥
 एलालवङ्गकस्तूरी-चन्दनोशीरमिश्रितम् ।
 विधाय मूलमश्रेण तीर्धान्यावाहयेद् घटे ॥ ६५ ॥
 तारं शिवं शिवोद्भूतिं मूलमेतत् समुदरेत् ।
 गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ ६६ ॥
 नर्मदे सिन्धुकावेरि द्रव्येऽसिन् सन्निधिं कुरु ।
 इत्यावाह्य महादेवि मुद्रयाङ्कुरारूपया ॥ ६७ ॥
 सर्वतीर्थमयं द्रव्यं ध्यायेत् परमपावनम् ।
 द्रव्यमध्ये बिन्दुयुतं त्रिकोणं च विभावयेत् ॥ ६८ ॥
 योनिमुद्रां निबद्ध्याशु ध्यायेदानन्दमैरवम् ।
 सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥ ६९ ॥
 अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
 अमृताण्यमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम् ॥ १०० ॥
 वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वा(र्पा)भरणभूषितम् ।
 कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाढमरुवादिनम् ॥ १०१ ॥
 पाशाङ्कुरधरं देवं गदामुसलधारिणम् ।
 खड्गखेटकपट्टीश-मुद्गरोन्मूलकुन्तिनम् ॥ १०२ ॥
 विचित्रखेटकं मुण्डवरदामयपाणिकम् ।
 लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥ १०३ ॥
 दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं कुम्भे जपेदानन्दमैरवम् ।
 हकारं च भृशं देवं मण्डकं धरणिं ततः ॥ १०४ ॥
 (तथा जीमूतबीजं च हुतसुग्वीजमुदरेत् ।)
 वायुं केशं तयानन्दमैरवाय ततोऽञ्चले ॥ १०५ ॥
 विकृष्टं च मनुं जप्त्वा दशधा भैरवीं यजेत् ।

आनन्दमैरवीं ध्यायेद् यथावद् वर्यते शिवे ॥ १०६ ॥
 समुद्रे मध्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ।
 तत्रोत्पन्ना सुरा देवी कुमारीरूपधारिणी ॥ १०७ ॥
 भावयेश सुरां देवीं चन्द्रकोट्यधुतप्रभाम् ।
 हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ १०८ ॥
 अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् ।
 ग्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥ १०९ ॥
 शक्तिं शिवं निर्जरं च भेकीं भूषीजमेव च ।
 मेघं वह्निं समीरार्णं केशं चैव समुद्धरेत् ॥ ११० ॥
 सुरादेव्यै कुटं चान्ते विद्यां च दशधा जपेत् ।
 मैरवं मैरवीं चैव यष्ट्वा पार्वतिं कालिकः ॥ १११ ॥
 महामुद्रां धेनुमुद्रां योनिं मत्स्यं प्रदर्शयेत् ।
 वद्ध्वा च लेलिहानारूपां मुद्रां कुण्डलिनीं पुनः ॥ ११२ ॥
 मूलाधारात् समुत्थाय सुपुत्रावर्त्मना प्रिये ।
 द्वादशान्तं समास्थाप्य सोहं हंम इति खरेत् ॥ ११३ ॥
 शिवेन सह संयोज्य परानन्दमयो भवेत् ।
 तदुद्धृतामृतवृष्टिमुत्सृजेद् धामनासया ॥ ११४ ॥
 प्रणवेन च देवेशि परद्रव्ये नियोजयेत् ।
 साक्षादमृतवत्त्वाहं ध्यायेत् कलशमुत्तमम् ॥ ११५ ॥
 वारुणं बीजमुच्चार्य मूलमन्त्रं समुच्चेत् ।
 दशधा प्रजपेद् देवि गन्धाक्षतपुरःसरैः ॥ ११६ ॥
 पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैर्माल्यैर्विविधभूषणैः ।
 संपूज्य कलशं दिव्यं घण्टानिःस्वानपूर्वकम् ॥ ११७ ॥
 धूपदीपैर्महोत्साहः परमैर्विविधैर्घैः ।
 प्रपूज्य परमा भक्त्या प्रणामैः स्तुतिपूर्वकैः ॥ ११८ ॥

सर्वदेवमयं कुम्भं ध्यायेद् देवेशि माधकः ।
 या सुरा सा उमादेवी यो द्रव्यं स महेश्वरः ॥ ११६ ॥
 यो गन्धः स भवेद् ब्रह्मा यो मोहः स जनार्दनः ।
 स्वादे च संस्थितः सोमः फेनायामनलः स्थितः ॥ १२० ॥
 इच्छायां मन्मथो देवरद्धर्मास्तुच्छिष्टभैरवः ।
 द्राघे गङ्गा स्थिता देवि घटस्थाः सप्त मागराः ॥ १२१ ॥
 सर्वतेजोमयं द्रव्यं परमानन्दनिर्भरम् ।
 सर्वशापविनिर्मुक्तं सर्वमन्त्रसुसंस्कृतम् ॥ १२२ ॥
 परमामृतभावेन भैरवं भैरवीं यजेत् ।
 माहेश्वरैर्महावीरैर्महाचीनपदस्थितैः ॥ १२३ ॥
 महाशक्तिमयैर्मान्यैः सेव्यं द्रव्यमिदं प्रिये ।
 सन्तर्प्य देवतामिष्टां योगिनीगणमेश्वरम् ॥ १२४ ॥
 बहुकं चेत्रपालांश्च त्रिस्त्रिंशत्कोटिदेवताः ।
 मातृमार्तृगणान् सर्वान् भूतप्रेतादिसंयुतान् ॥ १२५ ॥
 सन्तर्प्य विधिवद् देवि गुरुं गुरुवरांस्ततः ।
 गुरुं ध्यात्वा परां ध्यायेद्वीरान् संपूज्य शक्तिवतः ॥ १२६ ॥
 शक्तियुक्तो यजेत् पात्रमित्याज्ञा पारमेश्वरी ।
 शक्तिहीने वृथापानं शिवहीने वृथार्चनम् ॥ १२७ ॥
 शिवशक्तिसमायोगे वीरपूजा विमोचदा ।
 इतीदं शोचनं दिव्यं सुरायाः सुरदुर्लभम् ॥ १२८ ॥
 तव स्नेहेन निर्णीतं शृणुष्वान्यदपि प्रिये ।
 मयं मांमं तथा मीनो मुद्रा मैथुनमेव च ॥ १२९ ॥
 मकारपञ्चकं पूज्यं शिवशक्तिसमागमे ।
 पूजायां यद्यदानीतं मर्त्यं भोज्यं च लेखकम् ॥ १३० ॥

पेयं चोष्यं फलं पुष्पं सर्वं मन्त्रेण मन्त्रयेत् ।
 विनाभिमन्त्रणेनैतद् यो मोहाद् भक्षयेच्छिवे ॥ १३१ ॥
 स माभिकोऽपि देवेशि सहसा निरयी भवेत् ।
 चतुरस्रं लिखेद्विम्बं तत्र मीनान् निधापयेत् ॥ १३२ ॥
 शोषयेद् दाहयेद् देवि स्नावयेन्मनुना शिवे ।
 वायुबीजेन बाह्व्येन वासुणेन यथाक्रमम् ॥ १३३ ॥
 बेनुयोनिमहामत्स्यां मुद्रार्थैव प्रदर्शयेत् ।
 दशधा प्रजपेन्मन्त्रमानन्देश्वरमैरवम् ॥ १३४ ॥
 प्रजप्य प्रपठेद्विधा ययोक्ता कौलिकेश्वरि ।
 कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत् ॥ १३५ ॥
 बलिना निगृहीतं च कौलिकानां हितेच्छया ।
 भैरवीपरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवद् हरिः ॥ १३६ ॥
 मायां च हरये विश्वं जपेदृचमतः परम् ।
 ज्यम्बकं यजामहीति मन्त्रं त्रिःसज्जपेत् सुधीः ॥ १३७ ॥
 प्रपूज्य गन्धपुष्पैस्तु प्रणमेद् देवता पराम् ।
 चतुरस्रे महादेवि मांमपात्रं निधापयेत् ॥ १३८ ॥
 संशोष्य सन्दह्य पलमासाध्य कुलमुन्दरि ।
 मुद्रात्रयं प्रदर्याशु प्रपठेत् कौलिको यनुम् ॥ १३९ ॥
 छागलाग्येणभर्त्याञ्चै(न्तः)कृतरूपाय विष्णवे ।
 बल्यर्थं शिवशक्तयोस्तं प्रपद्ये विष्णुमन्ययम् ॥ १४० ॥
 प्रतर्पयामि बल्यर्थं पवित्रीभव साग्रतम् ।
 त्रिः पठित्वा श्राव्यं देवि जपेत् कौलिकमत्तमः ॥ १४१ ॥
 प्र तद्विष्णुरिति स्मृत्वा प्रणमेद् योनिमुद्रया ।
 मुद्रापात्रं समानीय स्थापयेच्चतुरश्रके ॥ १४२ ॥

संशोषणं दाहनं च स्नावनं पूर्ववच्चरेत् ।
 मुद्रात्रयं च संदर्श्य प्रपठेद् वेदवद् विधिम् ॥ १४३ ॥
 देवतापूजने यानि सौरभेयानि सांप्रतम् ।
 चत्वर्यं देवदेव्योश्च पवित्राणीह मिद्वये ॥ १४४ ॥
 मूलं च दशधा जप्त्वा जपेदृचमनुत्तमाम् ।
 (तद्विष्णोः परमं मन्त्रं प्रजप्योपरि कौलिकः ॥ १४५ ॥
 प्रणम्य भक्तिभावेन कुण्डगोलं च शोधयेत् ।
 चतुरश्रे च संस्थाप्य शोपयेद् दाहयेत् सुधीः ॥ १४६ ॥
 आस्नावयेत् परं र्जीर्णैर्मुद्राभिरभिरक्षयेत् ।)
 मूलं च दशधा जप्त्वा जपेदृचमथोपरि ॥ १४७ ॥
 विष्णुर्योनिमिति स्मृत्वा प्रजप्य प्रणमेत्ततः ।
 सर्वेषु देवद्रव्येषु समानीतेषु कौलिकैः ॥ १४८ ॥
 ऋचमेतां जपेत् सम्यक् मन्त्रमेनं समुदरेत् ।
 ग्लूंम्लूंस्लूंम्लूंन्तूं देवेशि स्वान्तं खं कामकालिकम् ॥ १४९ ॥
 अमृतेऽप्यमृतोद्भूतेऽप्यमृतेश्वरि चामृतम् ।
 स्नावय-द्वयमुद्धृत्य ठद्वयं च समुदरेत् ॥ १५० ॥
 इयं शापहरी विद्या मकाराणां महेश्वरि ।
 पञ्चानां पञ्चकल्पानां स्मरणीयार्चनाविधौ ॥ १५१ ॥
 संशोध्य शिवद्रव्याणि मन्त्रैर्मुद्राभिरेव च ।
 ऋग्भिः क्रमेण मूलेन स्ना(पा)वयेच्च यथाक्रमम् ॥ १५२ ॥
 आनन्दरससंपूर्णैः कलशामृतत्रिन्दुभिः ।
 एवं संशोध्य द्रव्याणि परमाणि कुलेश्वरि ॥ १५३ ॥
 भैरवं भैरवीं देवीं यजेद् वीरसमागमे ।
 अथवा भैरवं देवमकृता देवतार्चनम् ॥ १५४ ॥
 पशुपानविधौ पीत्वा वीरोऽपि नरकं व्रजेत् ।

एवं संस्कृत्य देवेशि गुरुभाक्त्रिपुरःसरम् ॥ १५५ ॥
 यः पिबेत् परमं पानं शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।
 इतीदं परमं गुह्यं रहस्यानां रहस्यकम् ॥ १५६ ॥
 अष्टसिद्धिमयं तत्त्वं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

इति श्रीरुद्रपामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सुराशोधनविधि-
 निरूपणं द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥

अथ

त्रयोविंशः पटलः ।

श्रीमैत्रव उवाच ।

अधुना शृणु देवेशि शक्तिशोधनमुत्तमम् ।
 येन^१ श्रवणमात्रेण पराशक्तिपदे लयेत् ॥ १ ॥
 अदीक्षितकुलासङ्गात् सिद्धिहानिः प्रजायते ।
 तत्कथाश्रवणं चेत् स्यात् तत्तत्स्वप्नगमनं यदि ॥ २ ॥
 श्रीदेव्युवाच ।

कुलाचारक्रमार्चायां सिद्धिं कामयते तु यः ।
 म कुलीनः कथं देव पूजयेत् कुलयोषितम् ॥ ३ ॥
 श्रीमैत्रव उवाच ।

संशोधनमक्रता वै स्त्रीषु मयेषु कौलिकः ।
 कृतेऽपि सिद्धिहानिः स्यात् कुद्धा भवति चण्डिका ॥ ४ ॥

अभिपेकाद् भवेत् सिद्धिर्भस्त्रस्योच्चारणाच्छ्रुमा ।
 रतिकाले महेशानी दीक्षाकाले च कन्यका ॥ ५ ॥
 पलाद्वा यन्नतो बुद्ध्या स्ना(पां)वयेत् परयोपितम् ।
 सुरया रेतसा वापि जलेन मधुनाथ वा ॥ ६ ॥
 सङ्गेऽभिपेचयेन्नारीं चण्डां वा मन्त्रवर्जिताम् ।
 स्वकीयां परकीयां वा रूपयौवनगर्विताम् ॥ ७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् देवदेवेश 'कुलाचारैकसिद्धये ।
 कुलयोगी कथं कुर्याज्जोधनं कुलयोपिताम् ॥ ८ ॥
 श्रीभैरव उवाच ।

कुलजां युवतिं वीक्ष्य नमस्कुर्यात् कुलेश्वरः ।
 विधाय मानसीं पूजां मन्त्रं योगी समुचरेत् ॥ ९ ॥
 चालां वा यौवनोन्मत्तां वृद्धां वा सुन्दरीं तथा ।
 कुत्सितां वा महादुष्टां नमस्कृत्य विभावयेत् ॥ १० ॥
 तासां महारो निन्दा च कौटिल्यमप्रियं तथा ।
 सर्वथा नैव कर्तव्यमन्यथा सिद्धिरोधकृत् ॥ ११ ॥
 स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रिय एव हि भूषणम् ।
 स्त्रीगणेषु सदा भाव्यमन्यथा स्वस्त्रियामपि ॥ १२ ॥
 विपरीतरता सापि भविता हृदयोपरि ।
 साधकस्य भवेदाशु कामधेजुरिवापरा ॥ १३ ॥
 नाधर्मो जायते तेन न कश्चिद् धर्महा भवेत् ।
 तत्परः परतन्वीनां परतत्त्वे प्रलीयते ॥ १४ ॥
 नटी कापालिकी वेश्या रजकी नापिताङ्गना ।
 ब्राह्मणी शूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका ॥ १५ ॥

मालाकारस्य कन्यापि नव कन्याः प्रकीर्तिताः ।
 एतासु कांचिदानीय संशोधनमयाचरेत् ॥ १६ ॥
 पूजयेत् कौलिको देवि यथावद् वर्यते मया ।
 शक्तिशोधनमन्त्रस्य ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ॥ १७ ॥
 त्रिष्टुप् छन्द इति ख्यातं देवता च पराम्बिका ।
 चाग्नीजं बीजमीशानि शक्तिः शक्तिरितीरिता ॥ १८ ॥
 कामेशः कीलकं देवि दिग्बन्धो हरमीश्वरि ।
 भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगो महेश्वरि ॥ १९ ॥
 महानिशापामानीय नव कन्याश्च भैरवान् ।
 एकादश नवाष्टौ वा कौलिकः कौलिकेश्वरि ॥ २० ॥
 शोधयेन्नवभिर्मन्त्रैः पूजयेत् कौलिकोत्तमः ।
 माधकः संस्पृशेदादौ कृत्वा विष्टरशोधनम् ॥ २१ ॥
 भूतशुद्धिं विधायापि प्राणार्पणविधिं चरेत् ।
 मन्त्रमंकल्पकं कृत्वा मुन्यादिन्यासमाचरेत् ॥ २२ ॥
 विधाय मातृकान्यासं कराङ्गन्यासपूर्वकम् ।
 हृत्पीठार्चां विधायार्थं श्रीचक्रार्चनमाचरेत् ॥ २३ ॥
 संशोध्य देवद्रव्याणि कुण्डगोलादिकं तथा ।
 वीरार्चनं वीरकान्तासेवनं देवदुर्लभम् ॥ २४ ॥
 यथोक्तविधिना देवीं संपूज्य श्रीपराम्बिकाम् ।
 शक्तिं नामे तु संस्थाप्य पूजयेद्दर्यते मया ॥ २५ ॥
 त्रिकोणं चाथ पद्कोणं व्यथत्रयमथो हविः (बहिः) ।
 शिवत्रयं कामत्रयं हेतित्रयं महेश्वरि ॥ २६ ॥
 ब्रह्मत्रयं नवत्रयं मिन्दूरेण विभाषयेत् ।
 श्रीचक्रेषु हि नट्यादिमालिन्यन्तं विचार्य च ॥ २७ ॥

यामेवासां कुमारीणां कौलिकस्तु समानयेत् ।
 तदीयं यन्मन्त्रालिख्य तस्मिस्तामेव पूजयेत् ॥ २८ ॥
 श्रीचक्रे स्थापयेद् वामे कन्यां भैरववल्लभाम् ।
 मुक्तकेशीं वीतलज्जां सर्वाभरणभूषिताम् ॥ २९ ॥
 सर्वशृङ्गारशोभाढ्यां तारुण्यमदगर्विताम् ।
 आनन्दलीनहृदयां सौन्दर्यातिमनोहराम् ॥ ३० ॥
 शोधयेन्द्वाद्विमश्रेण सुरानन्दामृताम्युभिः ।
 पालावीजत्रयं देवि प्रोक्ष्य तदनन्तरम् ॥ ३१ ॥
 त्रिपुरायै ततो विश्वं विश्वान्ते नामपूर्वकम् ।
 इमां शक्तिं पवित्रीति कुरु-युगं समुद्धरेत् ॥ ३२ ॥
 मम शक्तिं कुरु-युगं वह्निजायां समुद्धरेत् ।
 मन्त्रेणानेन देवेशि कामिनीमभिषेचयेत् ॥ ३३ ॥
 अभिषिच्य कुमारीं तां न्यासजालं प्रविन्यसेत् ।
 मातृकावन्महादेवि कामग्राणांस्ततो न्यसेत् ॥ ३४ ॥
 चन्द्रवीजद्वयं देवि कामराजं च मोहनम् ।
 शक्तिवीजं ततो देवि यथावद्विन्यसेत् प्रिये ॥ ३५ ॥
 ललाटे वदने न्यस्य (चांसे) हृदये योनिमण्डले ।
 सर्वसंक्षोभणं वाणं सर्वविद्रावणं तथा ॥ ३६ ॥
 सर्वाकर्षणवाणं च सर्वसंमोहनं ततः ।
 वशीकरणवाणं च पञ्चेषोः पञ्चवाणकान् ॥ ३७ ॥
 विन्यस्य वाणमुद्राश्च पञ्चैता देवि दर्शयेत् ।
 योनिचिम्बे जपेन्मन्त्रान् नव यान् वंर्णयाम्यहम् ॥ ३८ ॥
 (१) तारं चन्द्र च वाग्बीजं कामं शक्तिं ततो वदेत् ।
 नटिनीति महासिद्धिं मम देहि-युगं वदेत् ॥ ३९ ॥

ठद्वयं प्रोचरेदन्ते मन्त्रोऽयं नटिनीप्रियः ।

(२) कालीं कूर्चं परां शक्तिं कामं कापालिनि प्रिये ॥ ४० ॥

रेतो मुख-युगं ब्रूयादन्ते दहनवल्लभा ।

देवि कापालिकीमन्त्रः कामदेववशङ्करः ॥ ४१ ॥

(३) तारद्वन्द्वं च हरितं मेघपद्दीर्घबीजकम् ।

वेश्ये कामदुषे रेतो मुख-युग्माग्रिवल्लभा ॥ ४२ ॥

वेश्याशोधनमन्त्रोऽयं सर्वकौलिकवल्लभः ।

(४) वेदाद्यं बाग्भवं कामं शक्तिं लक्ष्मीं परां स्मरेत् ॥ ४३ ॥

रजकीति महासिद्धिं देहि मे हर-ठद्वयम् ।

रजकीशुद्धिमन्त्रोऽयं कुलयोषिद्वशङ्करः ॥ ४४ ॥

(५) तारं तारत्रयं वस्त्रं प्रोचरेन्नापिताङ्गने ।

हर-युग्मं च मे विघ्नांस्तुरगं ठद्वयं ततः ॥ ४५ ॥

नापितस्त्रीशुद्धिमन्त्रो महामाङ्गन्यदायकः ।

(६) वेदाद्यं भूतिबीजं च तारं मायां धनुर्धरः ॥ ४६ ॥

ब्राह्मणि स्मर वीर्यं च मुखे मुखेति सर्वदा ।

सिद्धिं मे देहि देहीति हरं दहनवल्लभा ॥ ४७ ॥

ब्राह्मणीशुद्धिमन्त्रोऽयं महासिद्धिमदायकः ।

(७) तारं रमा रमा तारं शूद्राणि च रतप्रिये ॥ ४८ ॥

रेतः स्तम्भय मे सिद्धिं देहि-युग्मं ततो वनम् ।

शूद्राणीशुद्धिमन्त्रोऽयं कामिनीजनमोहनः ॥ ४९ ॥

(८) तारकं शिवपद्दीर्घमंयुतं मठबीजकम् ।

गोपालि मे सिद्धदण्डं द्रावय-द्वयमुद्धरेत् ॥ ५० ॥

ठद्वयान्तो महामन्त्रो गोपीशोधनसाधकः ।

(९) तारद्वयीसंपुटितां मृद्रीकां दीर्घमंयुताम् ॥ ५१ ॥

उद्धृत्य मालिनि प्रेम कुरु-युग्मं मयि स्मरेत् ।
 तुरगं ठद्वयं प्रान्ते मन्त्रोऽयं मालिनीप्रियः ॥ ५२ ॥
 एवं शोधनमन्त्रास्ते वर्णिताश्च पृथङ्मया ।
 योनौ जपेत् कुमारीणां कौलिकः करमालया ॥ ५३ ॥
 संजप्य दक्षकण्ठे च मूलमन्त्रं त्रिरुचरेत् ।
 अदीक्षितापि देवेशि दीक्षितैव भवेत् तदा ॥ ५४ ॥
 दीक्षितां शोधितां वीरो भजेत् सर्वार्थसिद्धये ।
 तारं व्योपमौष्मकं च शिवायेति स्वयम्भुवम् ॥ ५५ ॥
 संपूज्य शिवमन्त्रं च जपेत् संस्तभ्य पुंश्वजम् ।
 जप्त्वा निरुध्य तं दण्डं केरभीतुण्डमुद्रया ॥ ५६ ॥
 आनन्दतर्पितां कान्तां वीरः खानन्दविग्रहः ।
 रतेन तर्पयेत् तत्र श्रीचक्रे वीरसंसदि ॥ ५७ ॥
 पठन् मणवमुद्धृत्य मन्त्रराजं कुलेश्वरि ।
 धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्मागौ मनमा क्षुचा ॥ ५८ ॥
 सुपुत्राधर्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ।
 स्वाहान्तमन्त्रमुच्चार्य जपन् मूलं स्मरन् पराम् ॥ ५९ ॥
 कुर्यान्निधुवनं मन्त्री मन्त्रमिदमवामुपात् ।
 रतान्ते मञ्जपेन्मूलं पठेन्मन्त्रमिमं पुनः ॥ ६० ॥
 तारद्वयान्तरगतं परमानन्दकारणम् ।
 प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीक्षुचम् ॥ ६१ ॥
 धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नीं जुहोम्यहम् ।
 स्वाहान्तेनाशु मन्त्रेश शुक्रमादाय पार्वति ॥ ६२ ॥
 श्रीचक्रे तर्पयेद् देवीं ततः सिद्धिमवामुपात् ।
 संपूज्य कान्तां सन्तर्प्य स्तुत्या नत्वा परस्परम् ॥ ६३ ॥

संहारमुद्रया मन्त्री शक्तिं वीरान् विसर्जयेत् ।
इतीदं परमं दिव्यं शक्तिशोधनमुत्तमम् ॥ ६४ ॥
तव स्नेहेन निर्णीतं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शक्तिशोधन-
विधिर्घनिरूपणं त्रयोविंशः पटलः ॥ २३ ॥

अथ

चतुर्विंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

मृणुष्वावहिता भूत्वा मालाशोधनमुत्तमम् ।
येन शोधनमात्रेण माला सिद्ध्यति सत्फला ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

माला फीदृग्विधा नाथ क्रियते कौलिकोत्तमैः ।
क्रियत्फला कियत्संख्या मर्त्वं मे वक्तुमर्हसि ॥ २ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

नवान्ता यथिता संख्या कालोऽयं द्वादशावधिः ।

माला जपस्य देवेशि रहस्यामिदमैश्वरम् ॥ ३ ॥

कालान्मा सविता प्रोक्ता बल्लभे जपदेवता ।

द्वादशात्मा स सविता तदन्तावृत्तिरीरिता ॥ ४ ॥

माला रजिपला प्रोक्ता मंग्यया कौलिकेश्वरि ।

आवर्तयेत् नवधा तामेव जपमिदमे ॥ ५ ॥

अधान्तर्गुह्यमाचवे तव स्नेहेन पार्वति ।
 मालारहस्यसर्वस्वं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥ ६ ॥
 रुद्राणां तु शतं चैकं भैरवाष्टकयोजितम् ।
 कृत्वा मेरुं महारुद्रं जपमाला विनिर्मिता ॥ ७ ॥
 न हन्याद् भैरवान् रुद्रैः रुद्रांश्च भैरवैस्तथा ।
 अन्यथा जपहानिः स्याद्भुद्रस्य वचनं यथा ॥ ८ ॥
 अष्टोत्कृष्टशतं देवि गोलकानां मुखं मुखे ।
 पायुं पायौ निबध्नीयात् सूत्रे मन्त्रमनुष्मरन् ॥ ९ ॥
 ऊर्ध्वे मेरुं महाकेतुं निबध्य कुलसुन्दरि ।
 शङ्खमुक्ताप्रगालार्क-रुद्राक्षवरवीरुधाम् ॥ १० ॥
 मणिकाञ्चनपद्माक्षनृदन्तानां यथाक्रमम् ।
 सर्वेषां गोलकानां च मेरुं रुद्राक्षमाचरेत् ॥ ११ ॥
 नरदन्तरिरोधानां मेरुं वाजिरदं चरेत् ।
 पद्ममासेनाक्षमुक्ताणां शोधनं साधकश्चरेत् ॥ १२ ॥
 ततो जपेन्महाविद्यां कौलिको जपमालया ।
 गुणैस्त्रिभिस्त्रिरावर्त्य पद्मत्रिंशच्चत्तुर्गोलकान् ॥ १३ ॥
 तारं मेरुं विदध्यात् तु तच्चमालासु कौलिकः ।
 अष्टोत्कृष्टशते प्रौढा मालेय देवि दुर्लभा ॥ १४ ॥
 प्रणवान्तरिता वर्णा देवि लोमानुलोमतः ।
 वर्णिता मातृकामाला वेदादिहविराश्रिता ॥ १५ ॥
 तारद्वयं स्वरान्ते च दद्याद्भोमानुलोमतः ।
 तारद्वयं च वर्गान्ते वर्णाद्यन्ते च तद्द्वयम् ॥ १६ ॥
 विधाय तुरगं मेरुं जपेच्छ्रवत्यर्णमालया ।
 तारकामैः सपुटिता मालेयं गुरुपद्मभा ॥ १७ ॥

देवदेवस्य- देवेशि स्वतन्त्रस्य महेशितुः ।

पडाननोद्भवास्ताराः पद् पडाम्नायसूचकाः ॥ १८ ॥

चतुर्णामाश्रमाणां तु शङ्खार्कवस्वीरुधाम् ।

रुद्राचाणां प्रकुर्वीत मालां सर्वार्थसिद्धिदाम् ॥ १९ ॥

मुक्तामवात्सद्रत्न-हेमपद्माक्षशालिनाम् ।

पूर्वाम्नायादिभेदानां मालां कुर्याद्यथाक्रमम् ॥ २० ॥

लामानुलोमवर्णानां द्वयोत्कृष्टशतं शिवे ।

तारकामेन संयोज्य ब्रह्मोत्कृष्टशतं शिवे ॥ २१ ॥

क्षः सुमेरुं नियोज्यादौ वर्णलोमानुलोमकैः ।

स्वरवर्णयशोल्लान्तान् योजयेत् परमेश्वरि ॥ २२ ॥

श्रीशिवाक्षरमालेयं वर्णिता स्नेहतो मया ।

श्रीमहापोडशीविद्यागुरुनादाय पार्वति ॥ २३ ॥

पद्त्रिंशच्चत्त्वमात्राभिर्षोजयेत् सप्तभिर्ग्रहैः ।

शिवामालेयमाख्याता शिवसायुज्यसिद्धये ॥ २४ ॥

पञ्चपण्यक्षरीणाम्भित्त्वारिंशतिभैरवैः ।

अधिकैर्योजयेन्माला भैरवीयमुदाहता ॥ २५ ॥

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ।

तर्जनीमूलपर्यन्तं करमालेयमाहता ॥ २६ ॥

दशांशं मञ्जपेद् देवि केवलं करमालया ।

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ॥ २७ ॥

तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद् द्वादशपर्वसु ।

कनिष्ठिकाचतुष्पर्वानामापर्यन्तं तथा ॥ २८ ॥

मध्यमापर्यं देव्येकं तर्जन्याथ चतुष्टयम् ।

संयोज्य मंजपेद् विद्यां मन्त्री द्वादशपर्वसु ॥ २९ ॥

शक्तिमालेयमाख्याता त्यक्त्वा पर्वचतुष्टयम् ।
 दुर्गावृत्त्या जपेद् देवि सहस्राद्ययुतावधि ॥ ३० ॥
 दिक्पालाश्च गृहाश्चाष्टौ सन्ति षोडशपर्वसु ।
 प्रलम्बपर्वत्रितये त्रयो देवाः समाहिताः ॥ ३१ ॥
 ऋग्रहो च मन्दारौ दिक्पालौ यमनिर्ऋती ।
 कुलिकश्चेति विख्यातो जपहानिकरो मतः ॥ ३२ ॥
 कुलिकं सन्त्यजेद् देवि मन्त्री करजपे सदा ।
 कनिष्ठामूलपर्वादिक्रमेण करगाः सुराः ॥ ३३ ॥
 तान् शृणुष्व महादेवि यथावद्वर्ण्यते मया ।
 ईशानोऽग्निर्निर्ऋतिश्च वायुरिन्द्रो यमस्तथा ॥ ३४ ॥
 वरुणश्च कुबेरश्च सूर्यः सोमो बुधो गुरुः ।
 मितराह्वारसौरान्तौ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ३५ ॥
 जपसिद्धिकरा देवि सकलाः करदेवताः ।
 कुलिकं सन्त्यजेद् देवि जपकाले स्वसिद्धये^१ ॥ ३६ ॥
 कुलिको मुद्गरो ज्ञेयो मुद्गरे ॥ महद्भयम् ।
 मुद्गरोल्लङ्घने शक्तिर्महारुद्रस्य केवलम् ॥ ३७ ॥
 कुलिकं च महाकेतुं मेरुरूपं न लहयेत् ।
 अन्यथा देवि मन्त्री च देवताशापमाप्नुयात् ॥ ३८ ॥
 अथ पाशमासिकौ शुद्धिं मालानां ते ब्रवीम्यहम् ।
 यया सिद्धिर्भवेद् देवि देवानामपि दुर्लभा ॥ ३९ ॥
 मालाशोधनकाले तु गत्वा प्रेतालयं मुधीः ।
 विधाय मसना स्नानं जलेन मन्त्रितेन वा ॥ ४० ॥
 तत्र स्नात्वोपविश्याथ कृत्वा बिष्टरशोधनम् ।
 भूतशुद्धिकमोपेतं प्राणार्पणमिधिं ततः ॥ ४१ ॥

- देहशुद्धिं विधायाथ भस्मसङ्कल्पमाचरेत् ।
 मालाशोधनमभ्यस्य अपिः कालाग्निरुद्रकः ॥ ४२ ॥
 चन्द्रोऽनुष्टुप् महादेवि देवी रमशानमैरवी ।
 कालरात्रीति विख्याता मृण्मालाविलासिनी ॥ ४३ ॥
 हरितं धीजमाख्यातं नलिनी शङ्खिरीरिता ।
 सूर्याख्यं कीलकं मालाशुद्धये चिन्तियोगकः ॥ ४४ ॥
 अपिच्छन्दोदैवतादिन्यासं कुर्यात् कुलार्थवित् ।
 अङ्गन्यासं विधायाथ करन्यासादिपूर्वकम् ॥ ४५ ॥
 विधायासनशुद्धिं च भूतशुद्धिक्रमं चरेत् ।
 प्राणान् देवि प्रतिष्ठाप्य श्रीचक्रार्चनमाचरेत् ॥ ४६ ॥
 योगपीठार्चनं कृत्वा द्रव्यादीनि विशोधयेत् ।
 क्षेत्रेश-योगिनीपृष्ठं सन्तर्प्य कुलसुन्दरि ॥ ४७ ॥
 लयाङ्गं पूजयेद् देवि पूजान्ते सङ्गपेन्मनुम् ।
 मालाया देवदेवेशि यथाम्नायं यथाविधि ॥ ४८ ॥
 श्रीचक्रोपरि संस्थाप्य शोधयेत् कलशामृतैः ।
 मालामूलेषु देवेशि मूलपत्रेषु साधकः ॥ ४९ ॥
 मालामग्नान् भवक्षयेऽहं शृणुष्यावहिता प्रिये ।
 (१) तारं रमा रमा तारं शङ्खिनीति-पदं वदेत् ॥ ५० ॥
 तारं मा तारमन्तेष्पो मन्त्रोऽयं शङ्खमालिकः ।
 (२) तार लज्जा-युगं तारं मुक्तामालिनि मा-युगम् ॥ ५१ ॥
 ठद्वयं मन्त्रराजोऽयं मुक्तामालाविशोधनः ।
 (३) तारं धधूं च वेदाद्यं रौद्रे च रोध्रमालिनि ॥ ५२ ॥
 अन्धिवीजं ठद्वयं च मन्त्रोऽयं रौध्रमालिकः ।
 (४) तारं मात्राद्यमुच्चार्य सूर्याख्यवीज-युगमकम् ॥ ५३ ॥
 अर्कमाले हरं नीरं मन्त्रः स्फटिकशुद्धिकृत् ।

- (५) तारमन्धिरमामायाः सिन्धुं रुद्राक्षमालिनि ॥ ५४ ॥
शुद्धा भव वनं मन्त्रो देवि रुद्राक्षशोधनः ।
- (६) तारं तारात्रयं तारं वर्धुं तुलसि वैष्णवि ॥ ५५ ॥
वौषट् वनं महामन्त्रस्तुलसीशोधनाभिधः ।
- (७) तारं तारां च मृद्वीका मणिमाले मनोहरे ॥ ५६ ॥
ठड्यं मन्त्रराजोऽयं मणिमालाविशोधनः ।
- (८) वेदाद्यं कमला कुन्ती वागीजं कामशक्तिकम् ॥ ५७ ॥
सुवर्णमाले शक्त्यापो मन्त्रोऽयं स्वर्णशोधनः ।
- (९) तारं च वायुपूज्या च तारं पद्माक्षमालिनि ॥ ५८ ॥
हरितं ठड्यं मन्त्रो देवि पद्माक्षशोधनः ।
- (१०) तारात्रयं मा-त्रयं च कामराजत्रयं शिवे ॥ ५९ ॥
शिषः शक्तिर्दन्तमाले मृण्डमाले च वागुरा ।
वर्धुर्वस्त्रं वनं मन्त्रो नरदन्तविशुद्धिकृत् ॥ ६० ॥
पृथङ्पृथङ् महामन्त्रैः श्रीचक्रस्थां महेश्वरि ।
मालां संशोध्य संपूज्य मूलं जप्त्वा दशांशतः ॥ ६१ ॥
गन्धाक्षतप्रघ्नैश्च पूजयेत् कौलिकोत्तमः ।
- (११) ओमाले माले महामाले सर्वतन्त्रैस्तरुणिणि ॥ ६२ ॥
चतुर्वर्गस्तपि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।
स्याहान्तोऽयं महामन्त्रः सर्वमालाविशोधनः ॥ ६३ ॥
- (१२) शिवर्चाजं मधुचार्यं ततोऽविघ्नं कुरु स्मरेत् ।
मे ठड्यं महामन्त्रः मदीं मालाविशोधनः ॥ ६४ ॥
एवं संशोध्य संस्कृत्य संपूज्य कुलमुन्दरि ।
मालाभादाय देवेशि सञ्जपेदर्धरात्रके ॥ ६५ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

करमालास्तया प्रोक्ता बह्व्यस्तासां च शोधनम् ।
वद देव कथं कुर्यात् कौलिकः सर्वसिद्धये ॥ ६६ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

काली कामः कृपा कुन्ती करमाले हरं वनम् ।
मन्त्रोऽयं करमालायाः शुद्धिदः सर्वसिद्धिदः ॥ ६७ ॥
यएमासेनैव मालानां शोधनं साधकश्चरेत् ।
ततो जपेन्महाविद्यां सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ ६८ ॥
इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां सर्वस्य पारदैवतम् ।
तव भक्त्या मयाख्यातं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ६९ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये माला-सम्पन्नादिशोधन-
निरूपणं चतुर्विंशः पटलः ॥ २४ ॥

अथ

पञ्चविंशः पटलः ।

—ः-०*०-ः—

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवदेवेशि यन्त्रशोधनमुत्तमम् ।
वक्ष्यामि तव भक्त्याहं कौलिकानां हिताय च ॥ १ ॥
सौवर्ण्यं राजतं ताम्रं स्फाटिकं रौद्रिकं तथा ।
कापालिकं च पाशासं श्रीचक्रं वैष्णवाश्रमिकम् ॥ २ ॥
एतेष्वष्टसु दिव्येषु योगपीठेषु पार्वति ।

विभावयेन्महायन्त्रं दैवं भौमं च भाविकम् ॥ ३ ॥
 ऊर्ध्वरेखमधोरेखं तृतीयं गन्धचित्रितम् ।
 त्रिविधं यन्त्रमीशानि सुसिद्धं^१ सिद्धसाध्यकम् ॥ ४ ॥
 सहस्रभं च पाशासं शोधयेदुत्तरायणे ।
 पञ्चमे पञ्चमे देवि ततः सिद्धिप्रदं भवेत् ॥ ५ ॥
 शराङ्कुशं वैष्णवारमं शोधयेद् दक्षिणायने ।
 चतुर्थे च चतुर्थे च ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ६ ॥
 सौवर्णं स्फाटिकं यन्त्रं वर्षान्ते शोधयेत् सुधीः ।
 राजतं ताम्रिकं यन्त्रं पणमासान्ते च शोधयेत् ॥ ७ ॥
 एवं मयोक्तकालेषु शोधयेद् यन्त्रमीश्वरि ।
 सिद्धये कौलिको देवि यथावद्वर्ण्यते मया ॥ ८ ॥
 यन्त्रशोधनमन्त्रस्य ऋषिः प्रोक्तो मया शिवः ।
 त्रिष्टुप् छन्द इति ग्यातं पराशक्तिश्च देवता ॥ ९ ॥
 रमा बीजं परा शक्तिः कामः कीलकमीश्वरि^२ ।
 श्रीचक्रशुद्धिसिद्धिर्धर्म विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ १० ॥
 मुन्यादिना चरेन्न्यासं करन्यामं पडङ्कम् ।
 ततो विष्टरशुद्धिं च प्राणार्पणविधिं चरेत् ॥ ११ ॥
 इष्टर्षिदेवतान्यामं कराङ्गन्यासमाचरेत् ।
 विधाय मातृकान्यामं लयाङ्गन्यासमंप्रुतम् ॥ १२ ॥
 अर्धतारीश्वरन्यामं गोढान्याममतः परम् ।
 मूलत्रिखण्डकं न्यामं कृत्वा प्राणचयं शिवे ॥ १३ ॥
 पीठपूजां म्बुदये कृत्वा पद्मचक्रदीपनम् ।
 म्बुर्गसिंहासने म्याप्य श्रीचक्रं स्वेष्टदेवतम् ॥ १४ ॥
 शोधयेन्मधूना देवि कुण्डगोलोद्भवेन वा ।

अष्टगन्धेन वा देवि पारुषेण रसेन वा ॥ १५ ॥

इभ्याज्येन महादेवि संस्थाप्य कूलपूजिते ।

श्रीचक्रं मूलमन्त्रेण पूजयेत् तत्र कौलिकः ॥ १६ ॥

(१) यागमयं शक्तिबीजं वाक् शक्तिं चक्रेश्वरि प्रिये ।

यन्त्रं सौवर्णमुद्धृत्य शोधय-द्वयमुद्धरेत् ॥ १७ ॥

ठद्वयं स्वर्णयन्त्रस्य मन्त्रः शोधनकारकः ।

(२) तारं सिन्धुं च तारं च राजतं यन्त्रमुद्धरेत् ॥ १८ ॥

शोधय-द्वयमापश्च यन्त्रशोधनको मनुः ।

(३) तारं तारा च तारं च वधूं तारं च तारका ॥ १९ ॥

ताम्रेश्वरीति यन्त्रं मे शोधयापो महामनुः ।

(४) वेदार्थं कमलां मायां तारं यन्त्रं कुलाम्बिके ॥ २० ॥

शोधय-द्विर्वनं मन्त्रः स्फाटिकाश्मविशोधनः ।

(५) प्रणयं कूचरीबीजं मा माया वायुपूजिता ॥ २१ ॥

रुद्रेश्वरि परा यन्त्रं शोधयापो मनुः स्मृतः ।

(६) तारं वाक् कामराजश्च शक्तिः कपालमालिनि ॥ २२ ॥

यन्त्रं शोधय ठद्वन्द्वं कपालशोधनो मनुः ।

(७) तारं गौरी च तार्तीयं वाक् कामश्च चितासने ॥ २३ ॥

यन्त्रं शोधय ठद्वन्द्वं मनुः पाशामशोधनः ।

(८) वेदार्थं हरितं वाणी शक्तिः कामो रमा रमा ॥ २४ ॥

नित्ये त्रिष्णुशिलायन्त्रं शोधयापो मनुः स्मृतः ।

इत्येवं यन्त्रमीशानि रत्नसिंहासनस्थितम् ॥ २५ ॥

मूलमन्त्रेण संस्थाप्य पूर्वोक्तौषधवारिणा ।

मन्त्रैरेभिः प्रजप्तंश्च पूजयेद् गन्धमाल्यकैः ॥ २६ ॥

संपूज्य देवि संशोध्य ततः पूजैः शिवोदितार्म् ।

यथोक्तां साधकः कुर्याद् द्रव्यशोधनपूर्वकम् ॥ २७ ॥
 अष्टाङ्गपूजां निर्माय निशीथे जपमाचरेत् ।

श्रीभैरव्युवाच ।

भगवन् कुलकौलेश भैरवाष्टकमध्यग ।

निशीथकालं मे ब्रूहि संशयोऽयं महान् मम ॥ २८ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

अर्धरात्रस्तु त्रिविधो यन्मुहूर्तचतुष्टयम् ।

निशीथो वार्धरात्रश्च तृतीयैव महानिशा ॥ २९ ॥

द्वितीये च तृतीये च यामे यामलभैरवि ।

मुहूर्ते द्वे समादाय तथा द्वे च महेश्वरि ॥ ३० ॥

द्वे मुहूर्ते निशीथस्तु परतो द्वे मुहूर्तके ।

अर्धरात्रौ मुहूर्ते द्वे पूजार्हः परमेश्वरि ॥ ३१ ॥

मुहूर्तकं समादाय परतश्चैकमीश्वरि ।

यामद्वयादर्धरात्रौ वर्णितः कौलसिद्धये ॥ ३२ ॥

शिवे मध्यमयोः सन्धिर्यामयोर्या महानिशा ।

तस्यां परां जपेद्यस्तु स भवेच्छिवसन्निभः ॥ ३३ ॥

निशीथे पूजयेद्यत्रमर्धरात्रे जपेन्मनुम् ।

महानिशायां प्रजपेत् परां कौलिकसत्तमः ॥ ३४ ॥

किं किं न साधयेज्जोके यन्ममापि हि दुर्लभम् ।

रजः शुक्रं सुरां देवि मांसं मीनं च मैथुनम् ॥ ३५ ॥

मर्वथा शोधयेद् देवि मूलमन्त्रेण मात्रिकः ।

पिबेन्मद्यं भजेद्रामा स्मरेद् भैरविभैरवम् ॥ ३६ ॥

नमेद्वरुं जपेद् विद्यामिति कौलमतं परम् ।

प्रातःकृत्यं शिवे कृत्वा श्रीचक्रं पूजयेत् ततः ॥ ३७ ॥

जपेन्मन्त्री महाविद्यां स्तोत्रपाठं चरेत् ततः ।
 परां जपेत् सदा सत्यां ततो याति परं पदम् ॥ ३८ ॥
 महापदि महोत्पाते महाशोके महामये ।
 महामोहे महाऽर्साख्ये महादारिद्र्यसङ्कटे ॥ ३९ ॥
 महारण्ये महाशून्ये' महाऽज्ञाने महारणे ।
 दुरापदि दुराशे च दुर्भिक्षे दुर्निमित्तके ॥ ४० ॥
 समस्तत्रेशसहाते स्मरेद् देवि पराम्बिकाम् ।
 वक्त्रे सरस्वती तस्य लक्ष्मीस्तस्य गृहे सदा ॥ ४१ ॥
 धन्या च जननी तस्य येन देवी समर्चिता ।
 इदं सारं हि तन्म्राणां मन्त्राणां तत्त्वमुत्तमम् ।
 मयोदितं तव लेहान्नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ४२ ॥

इति श्रीदेवप्रियामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये भैरवभैरवीसंवादे परमार्थश्री-
 पिकायां यन्त्रशोघनादिविधि-जप-पूजाकालनिरूपणं
 पञ्चविंशः पटलः ॥ २५ ॥

समाप्तमिदं पूर्वार्धम् ।



अथ

षड्विंशः पटलः ।

श्रीमैरव्युवाच ।

भगवन् भूतमव्येश कुलधर्मप्रकाशक ।

कुलेश थोतुमिच्छामि तन्नस्यास्योत्तरार्धकम् ॥ १ ॥

श्रीमैरव उवाच ।

अधुना देवि कालेशि कालिकानां हितेच्छया ।

तन्त्रोत्तरार्धं वक्ष्यामि रहस्यविजयाभिधम् ॥ २ ॥

दुर्गादेवी परादेवी पराशक्तिः पराम्यिका ।

देवदेवीति या ख्याता गायत्रीति श्रुता स्मृता ॥ ३ ॥

नेजोमयी महाश्यामा महात्रिपुरसुन्दरी ।

पञ्चात्मिका पञ्चमीशी पञ्चव्योमप्रकाशिनी ॥ ४ ॥

उग्रदुर्गा परा या श्रीस्तज्ज्योतिः परमं पदम् ।

परादेवीति या दुर्गा सा शिवः सा हरिः स्मृता ॥ ५ ॥

सा सूर्यः सविता सैन महागणपतिः स्मृता ।

पञ्चमी पञ्चिका देवी पञ्चमाचारवर्तिनी ॥ ६ ॥

पञ्चाक्षरीति गायत्री परमात्मेति कीर्त्यते ।

पञ्चकृत्यमयी देवी सर्वदेवीमयी शिवा ॥ ७ ॥

गणेशार्कहरीशान-दुर्गारूपा सरस्वती ।

महाश्यामा महाविद्या पूजनीया यथाक्रमम् ॥ ८ ॥

न कुर्याद् भेदमेतेषां कालिको वैष्णवोऽथवा ।

गणेशार्कहरीशान-दुर्गाणां परमार्थवित् ॥ ९ ॥

पूजयेदैव्यभावेन देवीभक्त्यैव भक्तिमान् ।
 देवीचक्रेऽर्चयेत् सर्वारिहवलिङ्गेऽथवा शिवे ॥ १० ॥
 सालिग्रामशिलायां वा सूर्यपीठेऽथवा प्रिये ।
 श्रीगणेश्वरचक्रेण न भेदं कारयेद् बुधः ॥ ११ ॥
 भेदं वै कुरुते यस्तु स शैवः शिवहा भवेत् ।
 पृथक् पृथक् शिवे कुर्यादर्चनं कौलिकोत्तमः ॥ १२ ॥
 गणेशस्य च सूर्यस्य विष्णोर्देवि शिवस्य च ।
 श्रीदेव्या उग्रदुर्गाया मन्त्री देवीरहस्यवित् ॥ १३ ॥
 अद्याहं तव देवेशि प्रेम्णा वक्ष्ये कुलात्मकम् ।
 रहस्यविजयं नाम तन्त्रं तन्त्रोत्तरार्धकम् ॥ १४ ॥
 पञ्चाङ्गभूतमेतेषां सर्वमन्त्रार्चनामयम् ।
 गणेशस्य च पञ्चाङ्गं पञ्चाङ्गं सवितुस्तथा ॥ १५ ॥
 लक्ष्मीनारायणस्यापि पञ्चाङ्गं श्रीशिवस्य च ।
 दुर्गादेव्याश्च पञ्चाङ्गं दुर्गादेवीरहस्यकम् ॥ १६ ॥
 उत्तरार्धमिति प्रोक्तं तन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।
 सर्वस्वेतद् देवेशि तन्त्रं देवीरहस्यकम् ॥ १७ ॥
 अथैवमभक्तेभ्यो गोपयेत् कुलनायकः ।
 प्रथमं देवि पञ्चाङ्गं महागणपतेः शृणु ॥ १८ ॥
 येन श्रद्धामात्रेण विघ्ननाशो भवेत् क्षणात् ।
 मेरुपृष्ठे सुखासीनं महादेव त्रिलोचनम् ॥ १९ ॥
 सुरासुरगर्ण्युक्त्रं ब्रह्माच्युतनमस्कृतम् ।
 सिद्धकिन्नरगन्धर्वैश्चभूतपिशाचकैः ॥ २० ॥
 तोषितं नतिभिः स्तोत्रैः पार्वतीमहितं शिवम् ।
 ससितं भाषमाणं च ब्रह्मणा हरिणा सह ॥ २१ ॥

पार्वती प्रणता भूत्वा वचनं समभाषत ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ सर्वधर्मप्रकाशक ।

कार्यस्य देवतानां च मनुष्याणां तथैव च ॥ २२ ॥

विघ्नः केन भवेद् देव संशयं छिन्दि शङ्कर ।

श्रीभैरव उवाच ।

देवि वक्ष्ये रहस्यं ते प्रश्नोत्तरमिदं महत् ।

अवक्रव्यममक्रेभ्यो भक्रेभ्यो मुक्तिसाधनम् ॥ २३ ॥

विनायको गणाध्यक्षो गणेश इति यः प्रभुः ।

विघ्नकर्ता जगत्त्राता विघ्नहर्तेति विश्रुतः ॥ २४ ॥

तस्य भक्तस्य देवस्य मर्त्यस्यापि महेश्वरि ।

विघ्नो न बाधते जातुं यस्तं संपूजयेत् मदा ॥ २५ ॥

यो जपेद् देवि तन्मन्त्रं क्वचं तस्य धारयेत् ।

पठेन्नाम्नां सहस्रं तु स्तोत्रं मूलैकमाधनम् ॥ २६ ॥

विघ्नो न बाधते तस्य कार्यहानिर्न वा भवेत् ।

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव महादेव गणेशस्य जगत्प्रभो ।

मन्त्रं यन्त्रं स्तवं वर्म नाम्नां महत्समुत्तमम् ॥ २७ ॥

पूजां श्रोतुमहे त्वत्तो वाञ्छामि परमेश्वर ।

श्रीभैरव उवाच ।

यो देवदेवो व्रतदो गणेशो विघ्ननायकः ।

गजाननो गणाध्यक्षो विनायक इति श्रुतः ॥ २८ ॥

पञ्चाङ्गमग्निलं तस्य वक्ष्यामि तव प्रीतये ।

तत्रार्द्रां ते श्रवक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं सुरेश्वरि ॥ २९ ॥

यन्त्रोद्धारं लयाङ्गं च महागणपतेः शिवे ।

अथ यन्त्रोद्धारः—

तारं मा सकला सरो यथशिवौ नाप्तो वरोति द्वयं

सर्पः सर्वमतो जनं झुलिलते जीमूतशर्माक्षरम् ।

मेकी खं लयणं समीरसाहितं मन्त्राञ्चले ठट्टयं

स्रष्टाविंशतिवर्णको निगदितो वनायकोऽयं मनुः ॥ ३० ॥

इति यन्त्रोद्धारः । प्रकाशम्—उत्थोर्होर्ज्ञोर्ग्लान गणपतये वरवत् सवै-

जनं मे वशमानय स्याद्वा ॥ (२८)

तत्त्वलक्षं सवेदाङ्क पुरधर्या प्रकीर्तिता ।

घटे चतुष्पथे शून्यगृहे प्रेतालये चरेत् ॥ ३१ ॥

नास्यं विघ्नो न वाशौचं न वा मन्त्रविपर्ययः ।

न ज्ञेशो नच दुर्षुद्धिर्न मोहो नच शोकता ॥ ३२ ॥

सर्वथा सिद्धयन्त्रोऽयं महागणपतेः शिवे ।

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ॥ ३३ ॥

सर्वममोहनं चरु गणेशस्य जगत्प्रभोः ।

अथ यन्त्रोद्धारः—

त्रिकोणं खण्डं दशार महेशि

सुवृत्तं तथा नागपत्रं कलारम् ।

सुवृत्तं चतुर्द्वारपुङ्ख प्रपुङ्खं

गजास्यस्य श्रीचक्रमेतत् प्रसिद्धम् ॥ ३४ ॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।

येन स्मरणमात्रेण सर्वो विघ्नः पलायते ॥ ३५ ॥

उघटकोटिदिवाकराशुसदृशं अचं किरीटोज्ज्वल

पात्रं मोदकपूर्णमोज्ज्वलश पद्माचसूत्रं शुभैः ।

विभ्राणं शुचिनागसम्भवलसत्कायं धुम्रोज्ज्वलं

ध्यायेत् सिद्धयुगासनं गणपतिं त्रैलोक्यचिन्तामणिम् ॥ ३६ ॥

गामित्यादिकरन्यासं हृदयादिपङ्कजम् ।

पङ्कग्वीजमागेन कन्यन्यासं चरेत् ततः ॥ ३७ ॥

लयाङ्गमधुना वक्ष्ये यन्त्रस्य परमेश्वरि ।

पूजनं सर्वतन्त्रेषु गोपितं शरजन्मना ॥ ३८ ॥

इन्द्रधर्मेशवरुणाः कुबेरसाहितास्तथा ।

पूर्वपश्चिमयोः पूज्या दक्षिणोत्तरयोस्तथा ॥ ३९ ॥

इति द्वारपालाः ।

नन्दिवीरेशसौभाग्य-भृङ्गिरीटिविराटकाः ।

पुष्पदन्तविकर्तान्त्य-चित्तलोहितमुन्दराः ॥ ४० ॥

नूपुराढ्यविचारोग्ररूप-सुप्तपिर्तकाः ।

गङ्गाः षोडश संपूज्याः षोडशारेषु सुन्दरि ॥ ४१ ॥

करालं विकरालं च संहारं रुरुमेव च ।

महाकालं च कालाग्निं मितास्यमसितात्मकम् ॥ ४२ ॥

अष्टपत्रेषु देवेषु पूजयेदष्ट भैरवान् ।

विनायकं विम्वराजं गणाध्यक्षं गजाननम् ॥ ४३ ॥

हेरम्भं मोदकाहारं ईशानमरिन्दमम् ।

एकदन्तं वक्रतुण्डं दशारेषु प्रपूजयेत् ॥ ४४ ॥

कुमारं च जयन्तं च प्रद्युम्नं सुरसुन्दरि ।

त्रिकोणे पूजयेद्विन्दौ महागणपतिं प्रभुम् ॥ ४५ ॥

गणेशं चैव गाङ्गेयं सिंहामनमतः परम् ।

त्रिघ्नान्तकाखुबाहौ च त्रिपुरान्तकमीश्वरि ॥ ४६ ॥

उपर्युपरि सपूज्य पूजयेदायुधास्ततः ।

शतपत्रं सहस्रारं दन्तमाला महेश्वरि ॥ ४७ ॥

मोदकाङ्कितपात्रं च कलशं परशु वतः ।

शङ्खौ मंपूजयेद्विन्दौ लयाङ्गमिदमुच्यते ॥ ४८ ॥
 मन्त्रस्यास्य गणेशस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः ।
 गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवो गणपतिः स्मृतः ॥ ४९ ॥
 शिवत्रीजं च वीजं स्यान्मायाशक्तिरुदाहृता ।
 कुरुद्वयं कीलकं स्यात् सर्वमश्रैकसाधनम् ॥ ५० ॥
 त्रैलोक्यत्रिजये देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ।
 अयुतं च जपेन्मूलं हुत्वा सर्वैर्यवाङ्कुरम् ॥ ५१ ॥
 मोहयेत् परमेशानि मारयेद् रिपुमण्डलम् ।
 अयुतं च जपेन्मूलं वटे हुत्वा चित्तानले ॥ ५२ ॥
 स्तम्भपेदखिलांलोकान् वादिदस्पुत्रलानि च ।
 नद्यां साधक एवाशु जपेदयुतसंख्यया ॥ ५३ ॥
 जुहुयादिभविष्यमासं रिपुमुच्चाटयेद् धुरम् ।
 त्रिद्वेषयेच्च ब्रह्माणं गिरिजे नात्र संशयः ॥ ५४ ॥
 वने निम्बरसं हुत्वा जप्त्वा मूलमथायुतम् ।
 वशयेदपि राजानमाकर्षयति योषितः ॥ ५५ ॥
 इतीदं पटलं गुप्तं महागणपतेः शिवे ।
 सर्वतश्चैकमर्वस्व गोपनीयं विशेषतः ॥ ५६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरुद्रस्य महागणपति(पटल)मन्त्रो-
 ऽङ्गनिरूपण पञ्चविंश पटल ॥ २६ ॥

सप्तविंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अद्याहं पद्वतिं वक्ष्ये महागणपतेः पराम् । .

गद्यैकसारसर्वस्वामानन्दैकतरङ्गिणीम् ॥ १ ॥

साधको रात्रिशेषे समुत्थाय पद्मासनं यदध्या, मूलेन त्रिरात्रम्य
स्थिरितिं सहस्रारपद्मकेसरोज्ज्वलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं शुक्लालङ्कारं
ध्यात्वा नत्वा, तच्छासनामादाय बहिरागत्य मलोत्सर्गशोधनं विधाय,
घण्टां शौचं कृत्वा नद्यादौ गत्वा बाह्यीकरीजेन दन्तान् विशोध्य शिषवी-
जेन गणदूपाणि कृत्वा, श्रीह्रींक्लीं इति मलापकर्पणं कानं विधाय
मूलेनाकुशमुद्रया तत्र त्रिकोणं विलिख्य, "गङ्गे य यमुने चैव गोदा-
वति सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु" ॥
इति तत्र तीर्थमावाह्य, देवं सशिवं (सशक्तिं) मूलेनावह्य मूलेन मुखं
त्रिः प्रोक्ष्य त्रिरात्मानं पयसि प्रोक्ष्मज्ज्य, "ह्रीं हंसः धीसूर्याय" एव
तेऽर्थो नमः, इत्यर्कायाश्चन्द्रयं दृष्ट्वा जलादयद्यत्तु देविकीं सन्ध्यां
निर्वर्त्य तान्त्रिकीं कुर्यात् । ततो वामकरे जलं धृत्या घर्मणावगुण्ठ्य
मूलेन सप्तधाभिमन्त्र्य तद्गलितोदकविन्दुभिः स्थशिरः सप्तधा प्रोक्ष्य,
तज्जलमिडयान्तर्नीत्वा वामनासया विरिच्य सुषुम्नामार्गेण दक्षहस्ते
निक्षिप्य, अस्त्राय फडिति मन्त्रेण घामभागस्थशिलायामास्फालयेत्,
इत्यघर्मणं विधायान्त्र्य प्राणायामत्रयं करेत् । यथा—पूरकः १६
कुम्भकः ३२ रेचकः ६४ एवं विधाध, गायत्रीं त्रिजपेत् । ओं ह्रीं
यक्रतुण्डाय विद्महे श्रींक्लीं गङ्गदन्ताय धीमहि ध्यौं गणपतिस्तुतः
प्रचोदयान् ३, इति यथाशक्त्या जप्त्वा गायत्र्या देवीदेवयोरर्घ्यत्रय
दत्त्वा, 'मूल समस्तभुवनान्तरायहरणं हरपुत्रं गणगन्धर्वमिन्द्रयन्त्रितं
प्रकटविकटास्त्रायपरापररूपं गणाध्यक्षं गजाननं महागणपतिं चरद्गणेशं

गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीमहागणपतिदेवतायै नमो हृदि, गं
 धीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्त्यै नमो गुह्ये, कुरु कुरु कीलकाय
 नमः पादयोः, त्रैलोक्यविजये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु, इति
 ऋष्यादिन्यासः । गा अद्भुष्टाभ्यां नमः, हृदयाय नमः । गौ तजं-
 नीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा । गुं मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ।
 गै अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुं । गौ कनिष्ठाभ्यां नमः, नेत्रेभ्यो
 घौषट् । गः करतलपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट् । इति करपङ-
 क्तन्यासः ॥ ओं आत्मतत्त्वं हृदयाय नमः । ओं विद्यातत्त्वं शिरसे स्वाहा ।
 ओं शिष्यतत्त्वं शिखायै वषट् । ओं गुरुतत्त्वं कवचाय हुं । ओं योगतत्त्वं
 नेत्रेभ्यो घौषट् । ओं मर्यतत्त्वं मखाय फट् । इति तत्त्वन्यासः ॥ ओं
 फं पंगं घं डं झं हृदयाय नमः, ईं चं छं जं भं जं ईं शिरसे स्वाहा, उं टं ठं डं-
 ढं णं ऊं शिखायै वषट्, एं तं थं दं धं नं णं कवचाय हुं, ओं पं फं यं भं मं झं
 नेत्रेभ्यो घौषट्, अं यं रं लं वं शं पं सं हं ळं क्षं अस्त्राय फट् । एवं कर-
 न्यासः । इति कल्पन्यासः ॥ ओं काशीपीठाय नमो हृदये, ओं
 काशीपीठाय नमः शिरसि, ओं मधुपुरीपीठाय नमः शिखायां ।
 ओं उद्दुडीयानपीठाय नमः कवचे । ओं अयोध्यापीठाय नमो
 नेत्रयोः । ओं जालन्धरपीठाय नमः अस्त्रे, इति पीठन्यासः ॥
 ओं हृदयाय नमः । ह्रीं गणपतये शिरसे स्वाहा । श्रीं परावन्द
 शिखायै वषट् । क्लीं सर्वजनं मे कवचाय हुं । ग्लौं यशमानय
 नेत्रेभ्यो घौषट् । गं स्वाहा अस्त्राय फट् । एवं करन्यासः, इति
 मन्त्रन्यासः ॥ एवं न्यासं विधाय श्रीचक्रं ध्यात्वा चतुरङ्गं षोडशदलं

मध्ये नवरत्नपञ्चितरत्नमयचेदिकार्यं नमः । उपरि रत्नसिंहासनाय
नमः । उपरि उच्चैःश्वेतच्छुभाय नमः । पीठस्य कल्पिताग्निकोणादिषु
धर्माय नमः, इत्यादि । कल्पितपूर्वादिषु अधर्माय नमः, इत्यादि । सिंहा-
सनमध्ये आनन्दकन्दाय नमः । संविद्यालाय० । सहस्रदलकमलाय० ।
प्रकृतिमयपत्रेभ्यो० । विहृतिमयकेसरेभ्यो० । पञ्चाशद्वर्णयोजाट्यसर्व-
तत्त्वरूपायै कलिकायै नमः । उपरि अं अकर्मण्डलाय नमः । सौं
सोममण्डलाय नमः । रं वाह्मिमण्डलाय नमः । तं तमसे० । रं रजसे० ।
सं सत्त्वाय० । ह्रीं गं ह्रीं सूर्यमन्त्रात्मनाय नमः । ओं अं अं इत्यादिकान्त-
मुद्याय, शिवशक्तिमन्त्रादिभ्यश्चर० इत्यादिसकलतत्त्वात्मने ह्रीं योगपीठाय
नमः, इति योगपीठपूजां विधाय पात्राणि स्थापयत् । स्वधामभागे
शिकोणपदकोणवृत्तचतुरश्ररूपं यन्त्रं विलिख्य शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य, गां
इदयाय नमः । गां शिरसे० । गूं शिखाय० । गं कण्ठाय० । गीं
नेत्रेभ्यो० । गं अग्राय फट् । इति त्रिपादिकां प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य,
रं वाह्मिमण्डलाय दशकलात्मने नमः । अमहागणपतिपात्रासनाय नमः
इति गन्धाक्षतेरभ्यर्च्य, नदुपांर पात्रं संस्थाप्य, ओं सूर्यमण्डलाय
द्वादशकलात्मने नमः । अमहागणपत्यर्घ्यपात्राय नमः, ततो मूलेना-
पूर्य ओं चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः । गणपतिपात्राय नमः इति
गन्धाक्षतेरभ्यर्च्य, ततोऽङ्कुशमुद्रया “गङ्गे ख यमुने तापे गोदावारं
भरस्वति । नमो दे सिन्धुकायोरं जलेऽस्मिन् मर्ध्नाथे कुम्भे ॥” इति
तार्धमावाह्य, मूलेनाष्टधाभिमुख्य पङ्क्तिः संपूज्य, मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य
फण्डिति छ्वाटिकार्चः संस्थ, दृमित्यवगुण्ट्य, धमित्यमूर्ताहत्य, शङ्ख-
चक्रमुखलयोनमुद्राः प्रदर्श्य, तेनैव जलेन वागवस्त्राणि प्रोक्षयेत् ।
मूलं श्रीं परमात्मनिरूपेण महागणपतिचन्द्रमण्डलनिवासाय चन्द्रा-
मूलेन पूरय पूरय इत्य पात्रश्रीकुम्भे २ ओं ह्रीं जुम्भः स्थाप्य । अनेन
सर्वं प्रोक्षयेत् । तदुत्तर पादान्मनीषमधुपर्कपात्राण्यं संस्थाप्य संपू-
ज्यात्मानं तन्मये विभाज्य, ओं नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय
योगपीठात्मनेऽनन्ताय नमः इति संपूज्य, सशक्तिकं देय मूलेनावाह्य
मूलेन नयमुद्राः प्रदर्श्य, मूलपङ्क्तिं विधाय प्राणान् प्रतिष्ठाप्य स्वात-
न्त्रियुदीये मूलेन पाद्यार्घ्यं दद्यात् । एवं पाद्यार्घ्यान्मनीषमधुपर्क-
आनादि विधाय मान्वाक्षरभ्यर्च्य, नैर्धपदेनैर्धपात्रमनीषादीन् निषेध

पुष्पाञ्जलिप्रयं दत्त्वा देवस्यावरणदेवताः पूजयेत् । ओं ह्रीं धीं सर्वांशापू-
 रकचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ओं ह्रीं धीं इन्द्राय नमः पूर्वे ।
 ३ घरुणाय नमः पश्चिमे । ३ धर्मराजाय नमो दक्षिणे । ३ कुबेराय
 नमः उत्तरे । इति चतुरश्रं गन्धाक्षतैर्दक्षिणावर्तेनाभ्यर्च्य, प्रथमावरणम् ॥ मूलेन पुष्पा-
 ञ्जलिं दत्त्वा ओं ह्रीं धीं नन्दिने नमः । ३ वीरेशाय नमः । ३ सौभाग्याय
 नमः । ३ भृङ्गिरीटिने नमः । ३ विराट्काय नमः । ३ पुष्पदन्ताय
 नमः । ३ विकर्ताय नमः । ३ अन्त्यगणाय नमः । ३ चित्तगणाय
 नमः । ३ लोहिताय नमः । ३ सुन्दराय नमः । ३ नूपुराढ्याय नमः ।
 ३ विचाराय नमः । ३ उग्ररूपाय नमः । ३ सुताय नमः । ३ चिन्त-
 काय नमः । इति षोडशारं गन्धाक्षतैर्दक्षिणावर्तेनाभ्यर्च्य, द्वितीयावरणम् ॥
 मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ओं ह्रीं धीं करालाय नमः, ३ विकरालाय नमः,
 ३ संहाराय० । ३ हरये० । ३ महाकालाय० । ३ कालाग्रये० । ३
 सितास्याय० । ३ असितामने नमः । इति वसुदत्तं गन्धाक्षतदूर्वाभिर्दक्षि-
 णावर्तेनाभ्यर्चयेदिति तृतीयावरणम् ॥ मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ओं ह्रीं धीं
 विनायकाय नमः । ३ विघ्नराजाय नमः । ३ गणाध्यक्षाय० । ३ गजा-
 ननाय० । ३ हेरम्भाय० । ३ मोदकाहाराय० । ३ द्वैमातुराय० । ३
 अरिन्द्माय० । ३ एकदन्ताय० । ३ वक्रतुण्डाय नमः । इति गन्धाक्ष-
 तदूर्वाभिर्दक्षिणावर्तेन दशारमभ्यर्चयेदिति चतुर्थावरणम् ॥ मूलेन पुष्पाञ्जलिं
 दत्त्वा ३ कुमाराय नमः अग्रे । ३ जयन्ताय० वक्त्रे । ३ प्रद्युम्नाय०
 वामे । इति गन्धाक्षतदूर्वाभिः त्रिकोणमभ्यर्चयेदिति पञ्चमावरणम् ॥
 मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलविद्यामुच्चार्य ह्रीं स्वशक्तिसहिताय महाग-
 णपतये नमः इति सप्तधा बिन्दुं संपृजयेदिति षष्ठावरणम् ॥ मू० ह्रीं गणेश-
 णाय नमः । ह्रीं गङ्गेयाय नमः । ह्रीं सिंहासनाय नमः । ह्रीं विघ्ना-
 न्तकाय नमः । ह्रीं आग्निवाहाय नमः । ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः । इत्युपरि
 गन्धाक्षतदूर्वाभिरभ्यर्चयेदिति सप्तमावरणम् ॥ उपरि मूलं० ह्रीं शत-
 पत्राय नमः, ह्रीं सहस्राराय नमः, ह्रीं दन्तमालायै नमः, ह्रीं मोद-
 कपात्राय नमः, ह्रीं मुधाकलशाय नमः, ह्रीं परशवे नमः, ह्रीं

शुभाय नमः, ह्रीं पाञ्चजन्याय नमः, इति, “दर्शनेनापि शत्रुस्य किं पुनः स्पर्शनेन च । विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये” ॥ इति सप्तधा संपूजयेदित्यष्टमावरणम् ॥ मूलमुच्चार्य गन्धाततदूर्वापुष्पधूप-
दीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलञ्जत्रचाभरादीन् समर्प्य, देवाग्रे संकल्पपूर्वं षडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यात्वा, मूलेन मालामभ्यर्च्य यथाशक्त्या मूलं जपेत् । ततो मूलमुच्चार्य देवाय जपं समर्प्य, कण्ठतहसना-
मस्तवराजपाठं देवाग्रे कृत्वा, मूलं “प्रातःप्रभृति सायान्तं साया-
दिप्रातरन्ततः । यत्करोमि गणाध्यक्ष तदस्तु तव पूजनम्” ॥ इति नत्वा स्तम्भारमुद्रया सशक्तिकं देवं विसर्जयेत् ॥

इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ।

महागणपतेर्दिव्यां सर्वथा देवि गोपयेत् ॥ १ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये परदण्डेशपूजा-
पद्धतिनिरूपणं सप्तविंशः पटलः ॥ २७ ॥



अथ

अष्टाविंशः पटलः ।

विघ्नेशे विश्ववन्द्यं सुविपुलयशसं लोकरचाप्रदत्तं

साक्षात् मर्मापदासु प्रशमनसुमतिं पार्वतीप्राणसूनुम् ।

प्रायः सर्वानुरेन्द्रैः ससुरमुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं

कारुण्येनान्तराधामितमयशमनं विघ्नराजं नमामि ॥ २ ॥

ज्योतीर्दीपं शिरः पातु महागणपतिः प्रभुः ।

विनायको ललाटे मे विघ्नराजो भूर्गो मम ॥ ३ ॥

पातु नेत्रे गणाध्यक्षो नासिकां मे गजाननः ।

श्रुती मेऽवतु हेरम्बो गण्डौ मे मोदकाशनः ॥ ४ ॥

द्वैमातुरो मुखं पातु चाधरौ पात्ररिन्दमः ।

दन्तान् ममैकदन्तोऽव्याद् वक्रतुण्डोऽनताद् रसाम् ॥ ५ ॥

गाङ्गेयो मे गलं पातु स्कन्धौ सिंहासनोऽवतु ।

विमान्तको भुजां पातु हस्तौ मूषकवाहनः ॥ ६ ॥

उरू समावतान्नित्यं देवस्त्रिपुरघातनः ।

हृदयं मे कुमारोऽव्याजयन्तः पार्श्वयुग्मकम् ॥ ७ ॥

प्रद्युम्नो मेऽवतात् पृष्ठं नाभिं शङ्करनन्दनः ।

कटिं नन्दिगणः पातु शिश्रं वीरेश्वरोऽवतु ॥ ८ ॥

मेढ्रे मेऽवतु सौभाग्यो भृङ्गिरीटी च गुह्यकम् ।

घिराटकोऽनतादूरु जानू मे पुष्पदन्तकः ॥ ९ ॥

जङ्घे मम त्रिकर्तोऽव्याद् गुल्फावन्त्यगणोऽवतु ।

पादौ चित्तगणः पातु पादाधो लोहितोऽवतु ॥ १० ॥

पादप्रष्ठं सुन्दरोऽव्याद् नूपुराढ्यो वपुर्मम ।

विचारो जठरं पातु भूतानि चोग्ररूपकः ॥ ११ ॥

शिरमः पादपर्यन्तं वपुः सुप्तगणोऽवतु ।

पादादिमूर्धपर्यन्तं वपुः पातु त्रिनर्तकः ॥ १२ ॥

विस्मारितं तं यत् ध्यानं गणेशस्तत् मदावतु ।

पूर्वे मां ह्रीं करालोऽव्यादाग्नेये विकरालकः ॥ १३ ॥

दक्षिणे पातु संहारो नैर्ऋते रुग्भैरवः ।

पश्चिमे मां महाकालो वज्रायै कालाग्निभैरवः ॥ १४ ॥

उत्तरे मां सिताक्षोऽव्यादैशान्यामसितात्मकः ।

प्रभाते शतपत्रोऽव्यात् सहस्रारस्तु मध्यमे ॥ १५ ॥

दन्तमाला दिनान्तेऽव्यान्निशि पात्रं सदावतु ।

कलशो मां निशीथेऽव्यान्निशान्ते परशुस्तथा ॥ १६ ॥

सर्वत्र सर्वदा पातु शङ्खपुष्पं च मद्भुजः ।

ॐॐ राजकुले ह्रीं रणभये ह्रीं ह्रीं कुटूतेऽवतात्

श्रीं श्रीं शत्रुगृहे शशौ जलभये श्रीं श्रीं वनान्तेऽवतु ।

ग्लौंग्लौंग्लौंग्लौं सच्चमीतिषु महाव्याध्यातिषु ग्लौंग्लौं

नित्यं यक्षपिशाचभूतफण्डिषु ग्लौंग्लौं गणेशोऽवतु ॥ १७ ॥

इतीदं कवचं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।

वज्रपञ्जरनामानं गणेशस्य महात्मनः ॥ १८ ॥

अङ्गभूतं मनुमयं सर्वाचारैकसाधनम् ।

विनानेन न सिद्धिः स्यात् पूजनस्य जपस्य च ॥ १९ ॥

तस्मात् तु कवचं पुण्यं पठेद्वा धारयेत् सदा ।

तस्य सिद्धिर्महादेवि करस्या पारलौकिकी ॥ २० ॥

यंयं कामयते कर्म तंतं प्राप्नोति पाठतः ।

अर्थरात्रे पठेन्नित्यं सर्वामीष्टफलं लभेत् ॥ २१ ॥

इति गुह्यं मुक्कवचं महागणपतेः त्रिपम् ।

सर्गमिद्धिमयं दिव्यं गोपयेत् परमेश्वरि ॥ २२ ॥

इति श्रीकृद्रयामले तन्त्र धीर्देवीरुद्रस्य महागणपतिकवच-

निरूपणमष्टाविंशः पटलः ॥ २८ ॥

एकोनत्रिंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

शृणु देवि रहस्यं मे यत्पुरा सूचितं मया ।
तव भक्त्या गणेशस्य वक्ष्ये नामसहस्रकम् ॥ १ ॥
श्रीदेवी ।

भगवन् गणनाथस्य वरदस्य महात्मनः ।
श्रोतुं नामसहस्रं मे हृदयं प्रोत्सुकायते ॥ २ ॥
श्रीभैरवः ।

प्राह मे त्रिपुरनाशे तु जाता विघ्नकुलाः शिवे ।
मोहेन मुह्यते चेतस्ते सर्वे बलदर्पिताः ॥ ३ ॥
तदा अभुं गणाध्यक्षं स्तुता नामसहस्रकैः ।
विघ्ना दूरात् पलायन्त कालरुद्रादिव प्रजाः ॥ ४ ॥
तस्यानुग्रहतो देवि जातोऽहं त्रिपुरान्तकः ।
तमद्यापि गणेशानं स्तौमि नामसहस्रकैः ॥ ५ ॥
तमद्य तव भक्त्याहं साधकानां हिताय च ।
महागणपतेर्वक्ष्ये दिव्यं नामसहस्रकम् ॥ ६ ॥
(पाठकानां च दातॄणां सुखसंपत्प्रदायकम् ।
दुःखापहं च श्रोतॄणां भजनानामसहस्रकम्) ॥ ७ ॥

अस्य श्रीवरदगणेशसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं
छन्दः, श्रीमहागणपतिदेवता, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कुरु २ कीलकं,
धर्मार्थकाममोक्षार्थं सहस्रनामस्तवपाठे विनियोगः । पूर्ववद् ध्यानम्—

उर्ध्वीर्ध्वीर्ध्वी-गणाध्यक्षो ग्लौग-गणपतिर्गुणी ।
 गुणाग्रो निर्गुणो गोप्ता गजवक्त्रो विभावसुः ॥ ८ ॥
 विश्वेश्वरो विभादीप्तो दीपनो धीवरो धनी ।
 सदाशान्तो जगत्ततो विश्वक्सेनो विभाकरः ॥ ९ ॥
 विसम्भी विजया वैद्यो वारानिधिरनुत्तमः ।
 अर्णोयान् विभवी श्रेष्ठो ज्येष्ठो गायत्रिप्रियो गुरुः ॥ १० ॥
 सृष्टिकर्ता जगद्धर्ता विश्वभर्ता जगन्निधिः ।
 पतिः पीतविभूषाङ्गो रक्ताक्षो लोहिताम्बरः ॥ ११ ॥
 विरूपाक्षो विमानस्यो विनयः सनयः सुखी ।
 सुरुपः सारत्निकः सत्यः शुद्धः शङ्करनन्दनः ॥ १२ ॥
 नन्दीश्वरो सदानन्दी चन्दिस्तुत्यो त्रिचक्षणः ।
 दैत्यमर्दी मदाक्षीरो मदिरारुणलोचनः ॥ १३ ॥
 सारात्मा विश्वसारश्च विश्वचारी त्रिलेपनः ।
 पर ब्रह्म पर ज्योतिः सार्क्षी यक्षो विकल्पनः ॥ १४ ॥
 वीरेश्वरो वीरहर्ता सौभाग्यो भाग्यवर्धनः ।
 भृङ्गिरीटी भृङ्गमाली भृङ्गकूजितनादितः ॥ १५ ॥
 विनर्तको विनेतापि विनतानन्दनोऽर्चितः ।
 वैनतेयो विनम्राङ्गो विश्वनेता विनायकः ॥ १६ ॥
 विराट्को विराटश्च विदग्धो विधिरात्मभूः ।
 पुष्पदन्तः पुष्पहारी पुष्पमालाविभूषणः ॥ १७ ॥
 पुष्पेर्षमथनः पुष्टो विकर्ता वर्तरीकरः ।
 अन्त्योऽन्तकश्चित्तगणश्चित्तचिन्तापहारकः ॥ १८ ॥
 अचिन्त्योऽचिन्त्यरूपश्च चन्दनाकुलमुण्डकः ।
 लिपितो लोहितो लुप्तो (१००) लोहिताक्षो विलोभकः ॥ १९ ॥

लुब्धाशयो लोभरतो लाभदोऽस्तद्व्यगात्रकः ।
 गुन्दरः गुन्दरीपुत्रः समस्तासुरघातनः ॥ २० ॥
 नूपुराढ्यो विभवदो नरो नारायणो रविः ।
 विचारी वान्तदो वाग्मी नितर्कः विजयेश्वरः ॥ २१ ॥
 सुप्तो युद्धः सदारूपः सुखदः सुखमेवितः ।
 विकर्तनो विषचारी विनटो नर्तको नटः ॥ २२ ॥
 नाट्यो नाट्यप्रियो नाटोऽनन्तोऽनन्तगुणात्मकः ।
 विश्वमूर्तिश्चपाती च विनतास्यो विनर्तकः ॥ २३ ॥
 करालः कामदः कान्तः कमनीयः कलाधरः ।
 कारुण्यरूपः कुटिलः कुलाचारी कुलेश्वरः ॥ २४ ॥
 विकरालो भणश्रेष्ठः संहारो हारभूषणः ।
 रुरु रम्यमुखो रत्नो रेवतीदयितो रसः ॥ २५ ॥
 महाकालो महादंष्ट्रो महोरगभयापहः ।
 उन्मत्तरूपः कालामिरप्रियूर्येन्दुलोचनः ॥ २६ ॥
 सितास्यः सितमान्यश्च सितदन्तः सितांशुमान् ।
 असितात्मा भैरवेशो भाग्यवान् भगरान् भगः ॥ २७ ॥
 भर्गात्मजो भगावामो भगदो भगवर्धनः ।
 शुभङ्करः शुचिः शान्तः श्रेष्ठः श्रव्यः शचीपतिः ॥ २८ ॥
 वेदाद्यो वेदकर्ता च वेदवेद्यः सनातनः ।
 विद्याप्रदो वेदसारो वेदिको वेदपारगः ॥ २९ ॥
 वेदध्वनिरतो वीरो वरो वेदागमार्थप्रित् * ।
 तत्त्वज्ञः सर्वगः साधुः मदयः ॥ मद् (२००) अमन्मयः ॥ ३० ॥
 निरामयो निराकारो निर्भयो नित्यरूपभृत् ।

* 'निधि' क ख ग पाठ । २ 'रण' द पाठ । इदं नामश्रवणम् । ३ सन्मय
 वेति नामधेयम् ।

निर्वैरो वैरिविध्वंसी मत्तवारणसन्निभः ॥ ३१ ॥
 शिवङ्करः शिवसुतः शिवः मुखाविवर्धनः ।
 श्वेत्यः श्वेतः शतमुखो मुग्धो मोदकभोजनः ॥ ३२ ॥
 देवदेवो दिनकरो धृतिमान् द्युतिमान् धवः ।
 शुद्धात्मा शुद्धमतिमान्छुद्धदीप्तिः शुचित्रतः ॥ ३३ ॥
 शरण्यः शौनकः शूरः शरदम्भोजधारकः ।
 दारकः शिखिवाहेष्टः शीतः शङ्करवल्लभः ॥ ३४ ॥
 शङ्करो निर्भवो^१ नित्यो लयकृष्णल्यतत्परः ।
 लूतो लीलारसोल्लासी विलासी त्रिभ्रमो भ्रमः ॥ ३५ ॥
 भ्रमणः शशभृत् सूर्यः शनिर्धरणिनन्दनः ।
 शुद्धो विबुधसेन्यश्च बुधराजो बलन्धरः ॥ ३६ ॥
 जीवो जीवप्रदो जैत्रः स्तुत्यो नृत्यो नतिप्रियः ।
 जनको जिनमार्गज्ञो जैनमार्गनिवर्तकः ॥ ३७ ॥
 गारीसुतो गुरुरवो गौराङ्गो गजपूजितः ।
 पर पद परं धाम परमात्मा कविः कुजः ॥ ३८ ॥
 राहुर्दत्यशिररछेदी केतुः कनककुण्डलः ।
 ग्रहेन्द्रो ग्राहितो ग्राह्योऽग्रणीर्घुर्घुरनादितः ॥ ३९ ॥
 पर्जन्यः पीवरो पोत्री पीनवचाः परार्जितः ।
 वनेचरो वनपतिर्वनवासः सरोपमः ॥ ४० ॥
 पुण्य पूतः पवित्र च परात्मा पूर्णविग्रहः ।
 पूणेन्दुशकलाकारो मन्युः पूर्णमनोरथः ॥ ४१ ॥
 युगात्मा युगभृद् वज्रा (३००) याज्ञिको यज्ञवत्सलः ।
 यशस्वी यजमानेष्टो वज्रभृद् वज्रपञ्जरः ॥ ४२ ॥

^१ शिषानन्दविवर्धन ' क ख ह पाठ । २ ' निर्भय ' क ख पाठ । ३ ' मर
 ' ख पाठ । ४ ' याग ' क ग ह पाठ ।

मणिर्मद्रो मणिमयो मान्यो मीनध्वजाश्रितः ।
 मीनध्वजो मनोहारी योगिनां योगवर्धनः ॥ ४३ ॥
 द्रष्टा स्रष्टा तपस्वी च विग्रही तापसप्रियः ।
 तपोपयस्तपोमूर्तिस्तपनश्च तपोधनः ॥ ४४ ॥
 रुचको मोचको रुष्टस्तुष्टस्तोमरधारकः ।
 दण्डी चण्डांशुरव्यक्तः कमण्डलुधरोऽनघः ॥ ४५ ॥
 कामी कर्मस्तः कासः कोलः क्रन्दितदिकटः ।
 आमको जगतिपूज्यश्च जाड्यहा जडसूदनः ॥ ४६ ॥
 जालन्वरो जगद्दासी हासकृद् हवनो हविः ।
 हविष्मान् हव्यवाहाघो हाटको हाटकाङ्गदः ॥ ४७ ॥
 सुमेरुर्हिमवान् होता हरपुत्रो हलङ्कपः ।
 हाताप्रियो हृदाशान्तः क्रान्ताहृदयपोषणः ॥ ४८ ॥
 शोषणः क्रेशहा क्रूरः कठोरः कठिनाकृतिः ।
 कृवरो धीमयो व्याता ध्येयो धीमान् दयानिधिः ॥ ४९ ॥
 दविष्टो दमनो द्युस्यो दाता नाता सितः समः ।
 निर्गतो नैगमी गम्पो निर्जेयो जटिलोऽञ्जरः ॥ ५० ॥
 जनर्जवो तितारातिर्जगद्व्यापी जगन्मयः ।
 चामीकरनिभोऽन्नाद्यो नलिनायतलोचनः ॥ ५१ ॥
 रोचनो मोचनो मन्त्री मन्त्रकोटिसमाश्रितः ।
 पञ्चभूतात्मकः पञ्चसायकः पञ्चजक्तकः ॥ ५२ ॥
 पञ्चमः पश्चिमः पूर्वः (४००) पूर्णः कीर्णालकः कुण्डिः ।
 कठोरहृदयो ग्रीवालङ्कृतो ललिताशयः ॥ ५३ ॥
 लोलचित्तो बृहन्नासो मासपचर्तुरूपवान् * ।
 ध्रुवो द्रुतगतिर्धर्म्यो धर्मो नाकिप्रियोऽनलः ॥ ५४ ॥

अगस्त्यो अस्तभुवनो भुवनैकमलःपहः ।

सागरः स्वर्गतिः स्वन्नः सानन्दः साधुपूजितः ॥ ५५ ॥

सतीपतिः समरसः सनकः सरलः मुरः ।

सुराप्रियो वसुपतिर्वासवो वसुपूजितः ॥ ५६ ॥

वित्तदो वित्तनाथश्च धनिनां धनदायकः ।

राजी राजीवनयनः स्मृतिदः कृत्तिकाश्वरः ॥ ५७ ॥

आश्विनोऽश्वमुखः शुभ्रो भरणी भरणीप्रियः ।

कृत्तिकासनगः कोलो रोही रोहणपादकः ॥ ५८ ॥

अश्लेषोऽरिमर्दा च रोहिणीमोहनोऽमृतम् ।

मृगराजो मृगशिरा माधवो मजुरध्वनिः ॥ ५९ ॥

आर्द्राननो महानुद्धिर्महोरगविभूषणः ।

अश्लेषदत्तविभवो अकरालः पुनर्मयः ॥ ६० ॥

पुनर्देवः पुनर्जेता पुनर्जीवः पुनर्वसुः ।

तिचिरिस्तिमिकेतुश्च तिमिचारकघातनः ॥ ६१ ॥

तिष्यस्तुलाधरो जम्भ्यो विश्लेषोऽश्लेष एणराद ।

मानदो माधवो मादो वाचालो मघवोपमः ॥ ६२ ॥

मेघ्यो मघाप्रियो भेयो महाघुण्डो महाशुभ्रः ।

पूर्वफाल्गुनिकः स्फातः फल्गुरुत्तरफाल्गुनः ॥ ६३ ॥

फेनिलो ब्रह्मदो ब्रह्मा नस्तन्तुममाश्रयः ।

घोखाहस्तश्चतुर्हस्तो हस्तिवक्तो हलायूधः ॥ ६४ ॥

चित्राम्बरः (५००) अर्चितपदः स्वादिनः स्वातिविग्रहः ।

विशाखः शिखिसेन्यश्च शिखिध्वजसहोदरः ॥ ६५ ॥

अणू रेणुः कलास्फारोऽनूरू रेणुमुतो नरः ।

अनूराधाप्रियो राघवः श्रीमज्जुक्रः शुचिसितः ॥ ६६ ॥

ज्येष्ठः श्रेष्ठार्चितपदो मूलं त्रिजगतो गुरुः ।

शुचिः पूर्वस्तथापादयोत्तरापाद ईश्वरः ॥ ६७ ॥
 श्रव्योऽभिजिदनन्तात्मा श्रवो वेपितदानवः ।
 श्रावणः श्रवणः श्रोता धनी धन्यो धनिष्ठकः ॥ ६८ ॥
 शातातपः शातकुम्भः शतंज्योतिः शतंभिषक् ।
 पूर्वाभाद्रपदो भद्रश्चोत्तराभाद्रपदितः ॥ ६९ ॥
 रेणुकातनयो रामो रेवतीरमणो रमी ।
 अश्विपुक् कार्तिकेयेष्टो मार्गशीर्षो मृगोत्तमः ॥ ७० ॥
 पुष्यशौर्यः फाल्गुनात्मा वसन्तश्चित्रको मधुः ।
 राज्यदोऽभिजिदात्मीयस्तारेशः तारकद्युतिः ॥ ७१ ॥
 प्रतीतः प्रोज्झितः प्रीतः परमः पारमो हितः ।
 परहा पञ्चभूः पञ्चबाधुः पूज्यः परं महः ॥ ७२ ॥
 *पुराणागमविद् योग्यो माहिषो रासभोऽग्रगः ।
 ग्राहो मेघो वृषो मन्दो मन्गथो मिथुनार्चितः ॥ ७३ ॥
 कल्कभृत् कटको दीनो मर्कटः कर्कटो घृणी ।
 कुक्कुटो वनजो हंसः परहंसः मृगालरुः ॥ ७४ ॥
 सिंहः सिंहासनो मूषो मोक्षो मूपकवाहनः (६००) ।
 पुत्रदो नरकप्राता रुन्याप्रीतः कुलोद्बहः ॥ ७५ ॥
 अतुल्यरूपो बलदस्तुलाभृन् तुल्यसाक्षिकः ।
 अलिचापधरो धन्वी कच्छपो मकरो मणिः ॥ ७६ ॥
 स्थिरः प्रभुर्महाकर्मा महाभोगी महायशः ।
 वसुमूर्तिधरो व्यग्रोऽसुरहारी यमान्तकः ॥ ७७ ॥
 देवाग्रणीर्गणाध्यक्षो हम्बुजालो महामनिः ।
 अङ्गदी कुण्डली मक्तिप्रियो भक्तप्रिर्धनः ॥ ७८ ॥
 गाणपत्यप्रदो मायी वेदवेदान्तपारगः ।

कात्यायनीसुतो ब्रह्मपूजितो विघ्ननाशनः ॥ ७६ ॥
 संसारभयविध्वंसी महोरस्को महीधरः ।
 विघ्नान्तको महाप्रीवो भृशं मोदकमोदितः ॥ ८० ॥
 वाराणसीप्रियो मानी गहन आसुवाहनः ।
 गुहाश्रयो विष्णुपदीतनयः स्थानदो ध्रुवः ॥ ८१ ॥
 परार्द्धिस्तुष्टो विमलो मौलिमान् वल्लभाप्रियः ।
 चतुर्दशीप्रियो भान्यो व्यवसायो मदान्वितः ॥ ८२ ॥
 अचिन्त्यः सिंहपुगलनिविष्टो बालरूपधृद् ।
 धीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो महाबलममन्वितः ॥ ८३ ॥
 सर्वात्मा हितकृद् वैद्यो महाकुक्षिर्महामतिः ।
 करणं मृत्युहारी च पापसहनिर्गतकः ॥ ८४ ॥
 उद्भिद् वज्री महादैत्यसूदनो दीनरक्षकः ।
 भूतचारी प्रेतचारी बुद्धिरूपो मनोमयः ॥ ८५ ॥
 अहङ्कारवपुः सांख्यपुरुषास्त्रिगुणात्मकः ।
 तन्मात्ररूपो भूतात्मा इन्द्रियात्मा वशीकरः ॥ ८६ ॥
 मलत्रयबहिर्भूतो क्षवस्यात्रयवर्जितः ।
 नीरूपो यदुरूपश्च किन्नरो नागविक्रमः ॥ ८७ ॥
 एकदन्तो महावेगः सेनानी त्विदशाधिपः ।
 विश्वकर्ता विश्वबीजं (७००) श्रेयः संपद्वह्नीर्धृतिर्मतिः ॥ ८८ ॥
 सर्वशोपकरो वायुः सूक्ष्मरूपः सुनिश्चलः ।
 संहर्ता सृष्टिकर्ता च स्थितिकर्ता लयाश्रितः ॥ ८९ ॥
 सामान्यरूपः सामास्योऽधर्वशीषा यजुर्भुजः ।
 अग्नीक्षयः काव्यकर्ता शिञ्जाकारी निरुज्रवित् ॥ ९० ॥
 शेषरूपधरो मुख्यः शब्दब्रह्मस्वरूपमाह् ।

विचारवाञ्छाक्षधारी सत्यव्रतपरायणः ॥ ६१ ॥
 महातपा घोरतपाः सर्वदो भीमविक्रमः ।
 सर्वसंपत्करो व्यापी मेघगम्भीरनादभृत् ॥ ६२ ॥
 समृद्धो भूतिदो भोगी वेशी शङ्करवत्सलः ।
 शम्भुभक्तिरतो मोक्षदाता भवदवानलः ॥ ६३ ॥
 सत्यस्तपा ध्येयमूर्तिः कर्ममूर्तिर्महांस्तथा ।
 * समाष्टिव्यष्टिरूपश्च पञ्चकोशपराङ्मुखः ॥ ६४ ॥
 तेजोनिधिर्जगन्मूर्तिश्चराचरवपुर्धरः ।
 प्राणदो ज्ञानमूर्तिश्च नादमूर्तियुतोऽक्षरः ॥ ६५ ॥
 भूताद्यस्तैजसो भावो निष्कलश्चैव निर्मलः ।
 कृत्यश्चेतनो रुद्रः क्षेत्रविद् पुरुषो बुधः ॥ ६६ ॥
 अनाधारोऽप्यनाकारो धाता च विश्वतोमुखः ।
 अप्रतर्क्यवपुः स्कन्दानुजो भानुर्महाप्रभः ॥ ६७ ॥
 यज्ञहर्ता यज्ञकर्ता यज्ञानां फलदायकः ।
 यज्ञगोप्ता यज्ञमयो दक्षयज्ञविनाशकृत् ॥ ६८ ॥
 वक्रतुण्डो महाकायः कोटिसूर्यसमप्रभः ।
 एकदंष्ट्रः कृष्णपिङ्गो विकटो धूम्रवर्णकः ॥ ६९ ॥
 दङ्कधारी जम्बुकश्च नायकः शूर्पकर्णकः ।
 सुवर्णगर्भः सुमुखः श्रीकरः सर्वसिद्धिदः ॥ १०० ॥
 सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो महात्मा चन्दनच्छविः ।
 स्वङ्गः स्वद्यः (८००) शतानन्दो लोकनिष्ठो लोकविग्रहः ॥ १०१ ॥
 इन्द्रो जिष्णुर्धूमकेतुर्वह्निः पूज्यो दवान्तकः ।
 पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ॥ १०२ ॥

कुम्भभृत् कलशो कुञ्जो मीनमांससुतर्पितः ।
 राशिताराग्रहमयस्तिथिरूपो जगद्विभुः ॥ १०३ ॥
 प्रतापी प्रतिपत्प्रेयान् द्वितीयोऽद्वैतनिधितः ।
 त्रिरूपश्च तृतीयाभिस्त्रयीरूपस्त्रयीतनुः ॥ १०४ ॥
 चतुर्थीवल्लभो देवो पारगः पञ्चमीरवः ।
 षड्सास्वादकोऽज्ञातः षष्ठी पष्टिकवत्सरः ॥ १०५ ॥
 सप्तार्णवगतिः सारः सप्तमीश्वर ईहितः ।
 अष्टमीनन्दनोऽज्ञातो नवमीभाकिभावितः ॥ १०६ ॥
 दशदिकपतिपूज्यश्च दशमी दुहिणो दुतः ।
 एकादशात्मा गणपो द्वादशीयुगचर्चितः ॥ १०७ ॥
 त्रयोदशमनुस्तुत्यश्चतुर्दशसुरप्रियः ।
 चतुर्दशेन्द्रसंस्तुत्यः पूर्णिमानन्दविग्रहः ॥ १०८ ॥
 दर्शादर्शो दर्शनश्च दानप्रस्यो मुनीश्वरः ।
 मौनी मधुरनाड्मूल मूर्तिमान् मेघराहनः ॥ १०९ ॥
 महागजो जितक्रोधो जितशत्रुर्जयाश्रयः ।
 रौद्रो रुद्रप्रियो रुक्मो रुद्रपुत्रोऽघतापनः ॥ ११० ॥
 भवप्रियो भवानीष्टो भारभृद् भूतभावनः ।
 गान्धर्वकुशलोऽङ्गुष्ठो वैकुण्ठो विष्णुसेवितः ॥ १११ ॥
 वृत्रहा विघ्नहा सीरः समस्तदुरितापहः ।
 मञ्जुलो मार्जनो मत्तो दुर्गापुत्रो दुरालसः ॥ ११२ ॥
 अनन्तचित्सुधाधारो वीरो वीर्यकसाधकः ।
 मास्त्रन्मुकुटमाणिवयः कून्तिकङ्किणिजालकः ॥ ११३ ॥
 शुण्डाधारी तुण्डचलः कुण्डली मुण्डमालकः ।

पद्मान्नः पद्महस्तश्च (६००) पद्मनाभसमर्चितः ॥ ११४ ॥

उद्गीथो नरदन्ताढ्यमालाभूषणभूषितः ।

नारदो वारणो लोलश्रवणः शूर्पकश्रवाः ॥ ११५ ॥

बृहदुल्लासनासाढ्यन्यासत्रैलोक्यमण्डलः ।

इलामण्डलसंभ्रान्तकृतानुग्रहजीवकः ॥ ११६ ॥

बृहत्कर्णाञ्चलोद्भूतवायुबीजितदिक्रटः ।

बृहदास्यवाक्रान्तभीमब्रह्माण्डभाण्डकः ॥ ११७ ॥

बृहत्पादसमाक्रान्तसप्तपातालवेपितः ।

बृहद्दन्तकृतात्युग्ररणानन्दरसालसः ॥ ११८ ॥

बृहद्स्तधृताशेषायुधनिर्जितदानवः ।

स्फुरत्सिन्दूरवदनः स्फुरत्तेजोग्निलोचनः ॥ ११९ ॥

उद्दीपितमणिस्फूर्जन्नूपुरध्वनिनादितः ।

चलत्तोयप्रवाहाढ्यनदीजलकणाकुलः ॥ १२० ॥

भ्रमत्कुञ्जरसङ्घातवन्दिताङ्घ्रिसरोरुहः ।

ब्रह्माच्युतमहारुद्रपुरःसरसुरार्चितः ॥ १२१ ॥

अशेषशेषप्रभृतिव्यालजालोपसेवितः ।

गूर्जत्पञ्चाननारावप्राप्ताकाशधरातलः ॥ १२२ ॥

हाहाहूहकृतात्युग्रसुरविभ्रान्तमानसः ।

पञ्चाशद्दर्शनीजाढ्यमभ्रमन्त्रितविग्रहः ॥ १२३ ॥

वेदान्तशास्त्रपीयूषधारासावितभूतलः ।

शङ्खध्वनिसमाक्रान्तपातालादिनभस्तलः ॥ १२४ ॥

चिन्तामणिर्महामल्लो भल्लहस्तो बलिः कलिः ।

कृतप्रेतायुगोल्लासमासमानजगत्त्रयः ॥ १२५ ॥

द्रापरः परलोकैककर्मध्वान्तमुधाकरः ।

मुधासिक्कचपुर्ण्यासन्नद्वाण्डादिकटाहकः ॥ १२६ ॥

अकारादिचकारान्तवर्णपाङ्क्तिसमुज्ज्वलः ।
 अकाराकारमोहीततारनादनिनादितः ॥ १२७ ॥
 इकारेकारमन्त्रालयमालाभ्रमणलालयः ।
 उकारोकारप्रोद्गारिघोरनागोपवीतकः ॥ १२८ ॥
 अवर्याङ्कितअकारपद्मद्वयसमुज्ज्वलः ।
 लृकारपुतलृकारशङ्खपूर्णदिगन्तरः ॥ १२९ ॥
 एकारैकारगिरिजास्तनयानविचक्षणः ।
 ओकारौकारविश्वादिभूतसृष्टिक्रमालसः ॥ १३० ॥
 अंश्रःवर्णावलीव्यासपादादिशीर्षमण्डलः ।
 कर्णतालकृतात्पुष्पार्वापुष्पोजितनिर्जरः ॥ १३१ ॥
 रगेशध्वजरत्नाङ्किकिरीटारुणपादकः ।
 गर्विताशेषगन्धर्वगीततत्परश्रोत्रकः ॥ १३२ ॥
 घनयाहनरागीशपुरःसरसुरार्चितः ।
 डयर्णामृतधाराढ्यशोभमानैकदन्तकः ॥ १३३ ॥
 चन्द्रकुकुमजम्बालललिप्तसुन्दरविग्रहः ।
 छत्रचामररत्नाल्यमुकुटालङ्किताननः ॥ १३४ ॥
 जटानदमहानर्धमणिपङ्क्तिविराजितः ।
 भ्राकारिमधुपत्रातगाननादनिनादितः ॥ १३५ ॥
 अवर्णकृतसंसारदंत्यासरूपपूर्णमुद्गरः ।
 टङ्कारुकफलास्यादवेपिताशेषमूर्धजः ॥ १३६ ॥
 ठकाराट्टरडकाराङ्गठकारानन्दतोषितः ।
 एवर्णामृतपीयूषधाराधरमुधाधरः ॥ १३७ ॥
 ताम्रमिन्दूरपुञ्जाढ्यललाटफलकन्धविः ।
 थकारधनपङ्क्त्याढ्यमन्तोषितद्वित्रजः ॥ १३८ ॥
 दयामयहृदमोजधृतत्रैलोक्यमण्डलः ।

धनदादिमहायज्ञसंसेवितपदाम्बुजः ॥ १३६ ॥
 नमिताशेषदेवौघकिरीटमणिरञ्जितः ।
 परवर्गापवर्गादिमार्गज्येदनदक्षकः ॥ १४० ॥
 फणिवक्रसमाक्रान्तगलमण्डलमण्डितः ।
 यद्वयूयुगभीमोग्रसंतर्जितसुरासुरः ॥ १४१ ॥
 भवानीहृदयानन्दवर्धनैकनिशाकरः ।
 मदिराकलशस्फीतकरालैककराम्बुजः ॥ १४२ ॥
 यज्ञान्तरायसङ्घातघातसजीकृतायुधः ।
 रत्नाकरसुताकान्तकान्तिकीर्तिविवर्धनः ॥ १४३ ॥
 लम्बोदरमहाभीमवपुर्दानीकृतासुरः ।
 वरुणादिदिगीशानरचितार्चनचर्चितः ॥ १४४ ॥
 शङ्करैकप्रियप्रेमनयनानन्दवर्धनः ।
 षोडशस्वरितालापगीतगानत्रिचक्षुः ॥ १४५ ॥
 समस्तदुर्गतिसरित्राथोच्चारणकोटुपः ।
 हरादिब्रह्मवैकुण्ठब्रह्मगीतादिपाठकः ॥ १४६ ॥
 क्षमापूरितहृत्पद्मसंरक्षितचराचरः ।
 ताराङ्गमश्रुवर्णैकविग्रहोज्ज्वलविग्रहः ॥ १४७ ॥
 अकारादिक्षकारान्तविद्याभूषितविग्रहः ।
 ॐश्रींविनायको ज्योतीर्विघ्नाध्यक्षो गणाधिपः ॥ १४८ ॥
 हेरम्बो मोदकाहारो चक्रतुण्डो विधिस्मृतः ।
 वेदान्तगीतो विद्यार्थी शुद्धमन्त्रः षड्चरः ॥ १४९ ॥
 गणेशो वरदो देवो द्वादशाक्षरमन्त्रितः ।
 सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रिताशेषविग्रहः । १५० ॥
 गाङ्गेयो गणसेन्यश्च ॐश्रीं द्वैमातुरः शिवः ।
 ॐह्रींश्रीं श्रीं ग्लौं गंदेवो महागणपतिः प्रभुः (१०००) ॥ १५१ ॥

इदं नाम्ना सहस्रं ते महागणपतेः स्मृतम् ।

गुह्यं गोप्यतमं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ १५२ ॥

सर्वमन्ननिधिं दिव्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ।

ग्रहतारामयं राशिचर्यपङ्क्तिममन्वितम् ॥ १५३ ॥

सर्वविद्यामयं ब्रह्मसाधनं साधकप्रियम् ।

गणेशस्य च सर्वस्वं रहस्यं त्रिदिवाकसाम् ॥ १५४ ॥

यथेष्टफलदं लोके मनोरथप्रपूरणम् ।

अष्टसिद्धिमयं साध्य साधकानां जयप्रदम् ॥ १५५ ॥

विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना जपम् ।

अणिमाद्यष्टसिद्धीनां साधनं स्मृतिमात्रतः ॥ १५६ ॥

चतुर्थ्यामर्धरात्रे तु पठेन्मन्त्री चतुष्पथे ।

लिखेद्भर्जे रवौ देवि पुरणं नाम्ना सहस्रकम् ॥ १५७ ॥

धारयेत्तु चतुर्दश्यां मध्याह्ने मूर्ध्नि वा भुजे ।

योषिद्वामकरे बद्ध्वा पुरुषो दक्षिणे भुजे ॥ १५८ ॥

स्तम्भयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शङ्करम् ।

वशयेदपि त्रैलोक्यं मार्गयेदखिलान् रिपून् ॥ १५९ ॥

उच्चाटयेच्च गीर्गाणान् शमयेच्च धनञ्जयम् ।

बन्ध्या पुत्राल्लभेच्छीघ्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥ १६० ॥

त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ गणेशस्य पुरः शिवे ।

नमः शक्तिपुत्रो देवि भुक्ता योगान् यथोप्सितान् ॥ १६१ ॥

प्रत्यहं वरदं पर्येद्विषयं साधकोत्तमः ।

य एनं पठते नाम्ना सहस्रं भक्तिपूर्वकम् ॥ १६२ ॥

तस्य पितादिविभवो दागधुःसपदः मदा ।

रणे राजभये द्यूते पटेन्नाम्ना सहस्रकम् ॥ १६३ ॥

सर्वत्र जयमाप्नोति गणेशस्य प्रसादतः ।

इतीदं पुण्यसर्वस्वं मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १६४ ॥
महागणपतेर्गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपति-
सहस्रनामनिरूपणमेकोनत्रिंशः पटल ॥ २६ ॥

अथ

त्रिंशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् परमेशान महागणपतेर्विभोः ।
स्तोत्रमङ्गतमं गृहि मूलमन्त्रस्य तत्त्वतः ॥ १ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

महागणपतेर्वक्ष्ये स्तोत्रं तत्त्वनिरूपणम् ।
जीवसाङ्गे कलौ शीघ्रं जीवन्मुक्तिप्रदायकम् ॥ २ ॥

अस्य श्रीमहागणपतेः स्तोत्रस्य भैरव ऋषि गायत्र्य छन्दः श्रीमहाग-
णपतिदेवता ग बीज ह्रीं शक्ति कुर कुट वीलकं जीवन्मुक्तिवामनाथं
महागणपतिस्तचराजपाठे विनियोगः ॥ ध्यानम्—

द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं
शशिमूर्त्याग्निलोचनं सुरेशम् ।

अहिभूषितकण्ठमक्षयं
भ्रमयन्त हृदये स्मरे गणेशम् ॥ ३ ॥

तारं नारदगीतमाद्यमनिशं यः साधकेन्द्रो जपे-
 द्रात्रावहि निशामुखे श्वगृहे शून्यालये वा प्रभो ।
 तस्य स्मेरमुखाम्बुजाः प्रतिदिनं लावण्यदर्पोज्ज्वलाः
 स्वर्वेश्याश्च वशीभवन्ति त्रिदिवे भूमौ समस्ता नृपाः ॥ ४ ॥

सकलां सकलां जपेद्यदा गणनाथप्रियमन्त्रमेव यः ।
 सकलक्षमापतिमूर्धसु स्फुरच्चरणाब्जो भुवि शोभते च सः ॥ ५ ॥
 कमलां कमलास्पृही च यो हृदये ध्यायति देवमध्यगाम् ।
 तव मन्त्रप्रभावतस्तदा कमला सद्मनि तस्य निश्चला ॥ ६ ॥
 कामराजमनिशं सरातुरो यो जपेच्छ्रुति गणेश तावकम् ।
 उर्वशीवदनपद्मपद्मदो धीयतेऽधरपरागकामृतम् ॥ ७ ॥
 मठं जपेद्यो निशि शून्यगेहे विमुक्तकेशो गणनाथ भक्त्या ।
 रणे रिपूनिन्द्रममान् विजित्य प्राप्तोनि राज्यं नृपचक्रवर्ती ॥ ८ ॥
 शिवार्णमन्तर्यदि माधको जपेदग्न्यभूमौ शिवमन्त्रिणौ विभो ।
 चराचरे वै विचरेद्विमाने जगत्यणेषामरचक्रवर्ती ॥ ९ ॥
 गणपतय इति मूलमनुं यो जपते भजते शृणुते पठते ।
 गणकिन्नरासिद्धमुगसुरैर्नमिनां लभते गाणपत्यं सः ॥ १० ॥
 वर वरदेति च मन्त्रमिमं यो भजते निशि वा दिवमेऽप्यनिशम् ।
 वदने वमने सद्ने वमते हृदि वारु कमला तव भक्तिरपि ॥ ११ ॥
 मयं जने मे इति मन्त्रराजं जपन्ति ये भोजनकावसाने ।
 भजन्ति ते नन्दनचन्दनादिष्टुत्सेषु लीलां सुरमुन्दरीभिः ॥ १२ ॥
 वशमानयेति भगवन् यदि जपति सरतप्तहृदयश्च ।
 वशमेति किन्नरमुताप्पुर्वशी मततं मुरतदक्षा ॥ १३ ॥
 म्वाहेति मन्त्राक्षरयुग्ममेतजपेद् दिनान्तेऽप्यशनादिकाले ।
 रोगा अशेषा विलयं प्रयान्ति तमांसि मय्येऽभ्युदिते यथाशु ॥ १४ ॥

पद्महस्तममृतांशुसन्निभं शङ्खयुग्ममपरं च दधानम् ।
 व्यक्ष्मग्निसदृशं स्मरन्ति ये ते श्रयान्ति त्रिदिवं विमानगाः ॥ १५ ॥
 बिन्दुव्यश्रदशारवासवकलावेदाश्रमध्ये विभो
 ये ध्यायन्ति भवन्तमीड्यवपुषं त्रैलोक्यरक्षापरम् ।
 जिज्ञा भूमिमनल्पकल्पनिवहान् भुक्त्वा सहार्ग्ययुताः
 पश्चाद्यान्ति गणेश तावकपदं देवासुरैर्दुर्लभम् ॥ १६ ॥
 इति गणपतेः स्तोत्रं मन्त्रात्मकं परमं जपेत्
 पठति शृणुयाद्भक्त्या नित्यं समस्तरहस्यकम् ।
 इह धनपतिर्लक्ष्मीमायुः सुतांल्लभतेऽचिराद्
 व्रजति त्रिदिवं जीवन्मुक्तः परत्र स साधकः ॥ १७ ॥
 इति स्तवोत्तमं देवि महागणपतेः परम् ।
 गोप्यं गुप्तं सदा गोप्यं पञ्चाङ्गं सुरसुन्दरि ॥ १८ ॥
 पञ्चाङ्गं च गणेशस्य रहस्यं मम पार्वति ।
 विना शिष्याय नो दद्यात् साधकाय विना तथा ॥ १९ ॥
 विना दानं न दातव्यं विना दानं न ग्राहयेत् ।
 अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् सर्वथा दानमाचरेत् ॥ २० ॥
 पटलं पट्टति वर्म मन्त्रनामसहस्रकम् ।
 स्तोत्रं पञ्चाङ्गमनिशं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २१ ॥

ॐ

इति श्रीकट्यामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपतेः
 स्तोत्रनिरूपणं त्रिंश. पटलः ॥ ३० ॥

—:—०*०—:—

इति गणपतिपञ्चाङ्गं समाप्तम् ॥

अथ

एकत्रिंशः पटलः ।

अथ सूर्यपञ्चाङ्गम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

कैलासशिखरासीनं भैरवीपतिमीश्वरम् ।
भैरवं चन्द्रमुकुटं गणगन्धर्वसेवितम् ॥ १ ॥
पद्मगामरयोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।
भस्माङ्गरागधवलं सर्पगोनसकङ्कणम् ॥ २ ॥
सिंहचर्मपरीधानं गजचर्मोत्तरीयकम् ।
कपालखट्वाङ्गधरं धण्डाढमरुधारिणम् ॥ ३ ॥
त्रिशूलपाशासंकरं वरामयकं शिवम् ।
सुण्डमालाधरं कामकालान्धकमयङ्गरम् ॥ ४ ॥
ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रनमितं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।
यक्षेशकिमरोपेतं सुरासुरनमस्कृतम् ॥ ५ ॥
रत्नोमारीमहाप्रेत-भूतवेतालसंहलम् ।
साध्यसिद्धपिशाचोप-भैरवप्रणतं प्रभुम् ॥ ६ ॥
महाविसेवितं देवं पार्वतीसहितं विभुम् ।
गङ्गाधरं मत्तलास्यं हस्तिनाननपङ्कजम् ॥ ७ ॥
नन्दिरुद्रार्चितं शम्भुं दृष्ट्वा प्रोवाच भैरवी ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् देवदेवेश भक्तानामभयप्रद ।

त्वं शिवः परमेशानस्त्वं विष्णुस्त्वं प्रजापतिः ॥ ८ ॥

सत्त्वाश्रितो रजोरूपस्तामसो लोकनाशनः ।

निर्गुणो भैरवाध्यक्षः कारखानां च कारणम् ॥ ९ ॥

वेदमूलो वेदगम्यो जगत्प्राता जगत्पतिः ।

त्वं मे प्राणाधिको देव क्रीतासि तव किङ्करी ॥ १० ॥

पुरा पृष्टोऽसि भगवन् मया त्वं भक्तिपूर्वकम् ।

अथ तद्वद तत्त्वं मे यद्यहं तव वल्लभा ॥ ११ ॥

श्रीभैरवः ।

किं वक्ष्यामि शिवे तत्त्वं यत् तवास्ति सुदुर्लभम् ।

विस्मृतं वद मे शीघ्रं वक्ष्ये प्राणाधिकासि मे ॥ १२ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव महादेव दैत्यनायकपूजित ।

सकलागमसारज्ञ कौलिकानां हितेच्छया ॥ १३ ॥

वद शीघ्रं दयासिन्धो पञ्चाङ्गं पूर्वसूचितम् ।

देवदेवस्य सूर्यस्य सर्वतत्त्वोत्तमोत्तमम् ॥ १४ ॥

श्रीभैरवः ।

एतद् गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं द्वादशात्मनः ।

सर्वागमरहस्यं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति ॥ १५ ॥

पटलं, मित्यपूजायाः पद्धतिं कवचं परम् ।

भस्त्रनामसहस्रं च स्तोत्रं मूलात्मकं प्रिये ॥ १६ ॥

पञ्चाङ्गमिदमीशानि देवदेवस्य भास्वतः ।

सर्वसारमयं दिव्यं रहस्यं मम दुर्लभम् ॥ १७ ॥

अदातन्यमभक्तेभ्यो भक्तेभ्यो भोगदायकम् ।
 अथाहं पटलं वक्ष्ये मूलमन्त्रमयं प्रिये ॥ १८ ॥
 यस्य श्रवणमात्रेण सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।
 यो देवदेवो भगवान् भास्करस्तेवसां निधिः ॥ १९ ॥
 प्रत्यक्षदेवो वेदानां कर्ता साक्षी च कर्मणाम् ।
 सवितेति च वेदेषु परमात्मा जगत्पतिः ॥ २० ॥
 गायत्रीनम्रः सूर्यः सृष्टिस्तितिलयेश्वरः ।
 कालात्मा च परं धाम परं ब्रह्मेति गीयते ॥ २१ ॥
 तस्यादिदेवदेवस्य सूर्यस्य सवितुः शिवे ।
 मन्त्रोद्धारं परं वक्ष्ये सर्वसिद्धिमयं कलौ ॥ २२ ॥
 तारं डिम्बं भूतिशक्ती च सूर्यं
 डेन्तं मध्ये विश्वमन्त्रे भवानि ।
 मन्त्रोद्धारः सवितुर्घणितस्ते
 दुर्गाक्षरो भोगमोक्षकहेतुः ॥ २३ ॥
 नास्य बिम्बो न वा दोषो न साध्यादिभयं शिवे ।
 न शौचानियमो वापि विपर्ययभयं नहि ॥ २४ ॥
 अष्टसिद्धिप्रदो मन्त्रः सर्वरोगहरः परः ।
 सर्वार्थसाधको देवि न दोषो यस्य कस्यचित् ॥ २५ ॥
 वर्णलवं जपेन्मन्त्रं साधकः साङ्गमीश्वरि ।
 किं किं न लभते मन्त्री वाञ्छितं सूर्यमुद्रणात् ॥ २६ ॥
 लघमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं साधको हुनेत् ।
 तर्पयेत् तदशांशेन मार्जयेत् तदशांशतः ॥ २७ ॥
 भोजयेत् तदशांशेन मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ।
 यदेष्टरूपे श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ॥ २८ ॥
 अर्धरात्रेऽथ मध्याह्ने परश्रवणमाचरेत् ।

सूर्योपरागसमये आसावधि विमुक्तिः ॥ २६ ॥
 यज्जपेत् तद्भवेत् सिद्धं भोगमोक्षैककारणम् ।
 मन्त्रस्यास्य महादेवि श्रुतिर्व्रद्धा समीरितः ॥ २७ ॥
 गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं सविता देवता स्मृतः ।
 न्योषं बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि ॥ २८ ॥
 धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इति स्मृतः ।
 प्रायाचीजेन पङ्दीर्घमागिना न्यासमाचरेत् ॥ २९ ॥
 करन्यासपङ्क्तानि यथावदनुपूर्वशः ।
 कोलत्रयं पठेद् देवि जपादौ साधकोत्तमः ॥ ३० ॥
 उत्कीलनं भवेद् देवि मन्त्रराजस्य पार्वति ।
 शरत्त्रयं पठेन्मध्ये मूलमन्त्रस्य साधकः ॥ ३१ ॥
 सञ्जीवनमनुः श्रोत्रो मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।
 मातृकाशोधितं मन्त्रं कृत्वा पार्वति साधकः ॥ ३२ ॥
 निस्तौटिल्यो भवेन्मन्त्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
 वेदादिडिम्बकान्त्यञ्चं शक्तिर्मध्ये पठेच्छिवे ॥ ३३ ॥
 शिवशापं मोचय द्विः पुनर्जाया विभावसोः ।
 इयं शापहरी विद्या जप्त्वा साधकसत्तमैः ॥ ३४ ॥
 दशधा सवितुर्देवि येन मन्त्री शिवं भजेत् ।
 सिद्धं मन्त्रं जपेद् देवि यथाशक्त्याक्षमालया ॥ ३५ ॥
 सर्वरोगैर्विमुक्तो हि भोगमोक्षफलं लभेत् ।
 जगदन्तं पठेद् देवि शरद्वारं च कौलिकः ॥ ३६ ॥
 सप्तुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रो मन्त्ररक्षामणिः परः ।
 गुरुपदेशतो ज्ञेयः सूर्यास्त्रमनुरुत्तमः ॥ ३७ ॥
 यं जप्त्वा सवितुर्मन्त्रो भवेत् कल्पद्रुमोऽचिरात् ।
 तारं न्योषं च सूर्याय विग्रहे तदनन्तरम् ॥ ३८ ॥

मायां शक्तिं समुच्चार्य ज्योतीरूपाय धीमहि ।

तन्नः शिवश्च शक्तिश्च परमात्मा प्रचोदयात् ॥ ४२ ॥

वर्णिता सूर्यगायत्री सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।

दशधा साधकैर्जप्या संध्यास्वर्चासु तर्पणे ॥ ४३ ॥

ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि सर्वदेवरहस्यकम् ।

सर्वरोगापहं देवि भोगमोक्षफलप्रदम् ॥ ४४ ॥

कल्पान्तानलकोटिभास्वरमृत्वं सिन्दूरधूलीजपा-

वर्णं रत्नकिरीटिनं दिनयनं श्वेताब्जमध्यासनम् ।

नानाभूषणभूषितं स्मितमुखं रक्ताम्बरं चिन्मयं

सूर्यं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोभ्यां दधानं भजे ॥ ४५ ॥

यन्मोक्षद्वारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ।

सर्वसंमोहनं दिव्यं सर्वसिद्धिमयं शिवे ॥ ४६ ॥

विन्दुत्रिकोणबसुकोणसुवृत्तरूपं

दिव्याष्टपत्रविलसद्दहनारणादपम् ।

रेखात्रयाश्रितधरासदनं च देवि

श्रीचक्रमेतदुदितं सवितुर्वरेयम् ॥ ४७ ॥

लयाङ्गमस्य यन्मस्य वक्ष्ये पार्वति साधरम् ।

यस्य श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ ४८ ॥

शक्राग्निममांसाद-धरुणानिलविचदाः ।

सेशाः पूज्या नदिर्द्वारे यन्मराजस्य साधकैः ॥ ४९ ॥

गणेशश्चण्डवेतालो लोलाक्षो विकरालकः ।

अन्तर्द्वास्थाः शिवे पूज्या वामावर्तेन साधकैः ॥ ५० ॥

दिग्गजसिद्धमनुष्पारुणं गुरुपद्मित्रयं शिवे ।

वृत्तत्रयेऽर्चयेन्मन्त्री गन्धपुष्पाद्यतादिभिः ॥ ५१ ॥

चन्द्रं भौमं बुधं जीवं शुक्रं सौरं तमस्तथा ।

केतुं वसुदले देवि वामावृत्यार्चयेत् सुधीः ॥ ५२ ॥
 दीप्तां सूक्ष्मां जयां भद्रां विमला निर्मलां ततः ।
 विद्युतां सर्वतोवक्त्रां ग्रहैर्वसुदलेऽर्चयेत् ॥ ५३ ॥
 सूर्य दिवाकरं भानुं मास्करं रविमीश्वरि ।
 तप्तारं तपनं धर्मं वसुकोणे समर्चयेत् ॥ ५४ ॥
 हंसं गृहपतिं देवि त्रिकोणे च त्रयीतनुम् ।
 श्रीविन्दुमण्डले देवि सवितारं समर्चयेत् ॥ ५५ ॥
 कलाः समर्चयेद् देवि वसुकोणे त्रिकोणके ।
 तपिनीं तापिनीं चैव बोधिनीं चैव रोधिनीम् ॥ ५६ ॥
 कोलिनीं शोपिणीं चैव वरेण्याकर्षिणीयुताम् ।
 एताः संपूज्य वस्त्रश्रे कौलिकः कुलसिद्धये ॥ ५७ ॥
 माया विश्वावतीं हेमप्रभा ज्यश्रे समर्चयेत् ।
 विस्फुरां सवितारं च त्रिन्दुविम्बे समर्चयेत् ॥ ५८ ॥
 कमलैः केवलं देवं पूजयेदायुधानि च ।
 सुवर्णपद्मं संपूज्य रत्नाढ्यकलश शिवे ॥ ५९ ॥
 मूलेन विधिवद् देवं नमेत् कैवल्यसिद्धये ।
 लयाङ्गमेतदाख्यात सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ ६० ॥
 मुद्रा पद्माभिधा देवि दर्शयेदर्चनाभिधौ ।
 अङ्गुष्ठौ विमुखौ मध्ये सयोज्य तर्जनीद्वयम् ॥ ६१ ॥
 कनिष्ठिके च सयोज्य मध्यमानामिकाः पृथक् ।
 पद्ममुद्रेयमाख्याता निम्बमुद्रा शृणु प्रिये ॥ ६२ ॥
 अङ्गुष्ठौ संमुखौ कृत्वा मधुखोरङ्गुलीश्वरेव ।
 ऊर्ध्वं करयुगं कृत्वा बिम्बमुद्रेयमीरिता ॥ ६३ ॥
 अधोमेखूर्वामध्या तदूर्ध्वं सव्यमध्यमा ।

तथैव कौलिकः कुर्याद्भागतः सव्यतोऽङ्गुलीः ॥ ६४ ॥

इयं तु मास्करीमुद्रा त्रैलोक्यवशकारिणी ।

सर्वरोगापहा ख्याता दर्शनीयार्चनाविधौ ॥ ६५ ॥

अद्भुष्टयोश्च चन्द्रारौ ज्ञेयावनामयोस्तथा ।

सितासितौ च तर्जन्योः राहुकेतु प्रलम्बयोः ॥ ६६ ॥

मध्ये तु अस्करं देवं ध्यात्वा मुद्रां प्रदर्शयेत् ।

आवाहने च गन्धादौ नैवेद्ये च विसर्जने ॥ ६७ ॥

धूपदीपादिनैवेद्यं देयं सर्व खशोल्कया ।

खशोल्काख्या महामुद्रा (सर्वरोगापहारिणी ॥ ६८ ॥

सर्वार्थसाधनकरी दुःखदारिद्र्यनाशिनी ।

यद्धा मुष्टिपुर्णं देवि पर्व पर्वणि योजयेत् ॥ ६९ ॥

अद्भुष्टयोर्नि यद्धोर्ध्वे सर्वयोन्युत्तमोत्तमाम् ।

खशोल्काख्या महामुद्रा > शत्रुवर्गविमर्दिनी ॥ ७० ॥

रविं वृद्धा प्रणम्यादौ दर्शनीया महेश्वरि ।

महामुद्रा महागोप्या महामार्तण्डवल्लभा ॥ ७१ ॥

इमां यो भानवीं मुद्रां दर्शयेत् पूजने सुधीः ।

शतवर्षसहस्राणां पूजाफलमवाप्नुयात् ॥ ७२ ॥

प्रयोगानष्ट वक्ष्येऽहं शृणु पार्वति सादरम् ।

येषां साधनमात्रेण मन्त्रः सिद्धिप्रदो भवेत् ॥ ७३ ॥

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणं ततः ।

वशीकरणविद्वेषौ शान्तिकी पौष्टिकी क्रिया ॥ ७४ ॥

एतेषां साधनं वक्ष्ये साधकानां हितेऽन्या ।

अप्रकाश्यमदातन्यं क्लौं रत्नापहं शिवे ॥ ७५ ॥

(१) रवौ प्रभाते शयनादुत्थायावश्यकं चरेत् ।

क्लाता जपेन्महादेवि सूर्याग्निं साधकोऽप्युत्तम् ॥ ७६ ॥

हुनेद् दशांशतो देवि पद्मपद्माक्षशर्कराः ।

सर्पिषा स्तम्भनं सद्यो वादितस्करपायसाम् ॥ ७७ ॥

(२) रवौ मध्याह्नवेलायां जपेदयुतसंख्यया ।

हुनेद् दशांशमीशानि घृतपद्माक्षनागरान् ॥ ७८ ॥

तर्पयेत् पयसा सद्यो मोहनं द्युसदामपि ।

(३) रवौ सायं जपेन्मूलं नदीतीरस्थितो रहः ॥ ७९ ॥

अयुतं तद्दशांशेन हुनेत् पद्माक्षपर्पटान् ।

घृतेन दध्ना सन्तर्प्य मारुणं द्विषतां भवेत् ॥ ८० ॥

(४) रवौ निशीथे संजप्य मूलमन्त्रायुतं शिवे ।

हुनेद् दशांशमम्भोजशटीघृतकुलत्थकैः ॥ ८१ ॥

आकर्षणं भवेत् सद्यो देवि नाकस्त्रियामपि ।

(५) रवौ ब्राह्मे ग्रहर्ते तु स्नात्वा तत्र जपेज्जले ॥ ८२ ॥

अयुतं मूलविद्याया दशांशं जुहुयात् सुधीः ।

घृतमत्स्यण्डकर्पूर-पद्मपद्माक्षकेसरान् ॥ ८३ ॥

इन्द्रोऽपि वशातां याति किं पुनः बुद्धभूमिषः ।

(६) सूर्योदये जपेद्विद्यां साधकोऽयुतसंख्यया ॥ ८४ ॥

जुहुयात् सर्पिरम्भोज-मुस्तापर्पटशर्कराः ।

विषेण तर्पयेद् देवं भवेद्विद्वेषणं द्विषाम् ॥ ८५ ॥

(७) रवावधौदिते देवि कूपभूमौ जपेन्मनुम् ।

अयुतं तद्दशांशेन हुनेद् घृतयवाकणाः ॥ ८६ ॥

अम्भोजकेसरं शुण्ठीं शान्तिर्भवति तत्त्वयात् ।

अतिशृष्टेरनाशृष्टेः राजर्भातेर्भद्रेश्वरि ॥ ८७ ॥

(८) रवावस्तङ्गतेऽप्यर्धे जपेद्दानीरमूलके ।

मन्त्रायुतं महादेवि जुहुयाद् घृतगोपयः ॥ ८८ ॥

पद्मपद्माक्षकिञ्चनक-मत्स्याण्डार्कदत्तानि च ।

दशांशं तर्पयेद् दध्ना घीरेण मितया सुधीः ॥ ८६ ॥

महापुष्टिर्भवेन्नोक्ते देवानामपि दुर्लभा ।

इत्येष पटलो गुह्यः सवितुशक्तिवद्भ्रमः ॥ ८७ ॥

सर्वमन्त्रमयो दिव्यो गोपनीयो ध्रुमुक्षुभिः ।

इति श्रीरघुपामले तन्त्रे श्रीदिव्यारहस्ये सूर्यपटलनिरूपण-

मेकात्रिंशः पटलः ॥ ३१ ॥



अथ

द्वात्रिंशः पटलः ।



तदासां गृहीत्वा बहिरागत्य मलादीन् संत्यज्य, वर्णानुरूपं शौचं विधाय
 देवं ध्यात्वा प्राणायामत्रयं विधाय, तत्त्वत्रयेणाचम्य दन्तधावनं
 कुर्यात् । तद्यथा—ॐ सर्वजनमनोहराय कामदेवाय चोपद्, इति
 दन्तान् संशोध्य, क्षामिति गण्डूषत्रयं विधाय प्रणवेन त्रिराचम्य शिरो-
 मुखद्वत्कुक्षिनाभिपृष्ठलिङ्गजानुपादेषु प्रत्येकं मूलबीजाक्षराणि न्यसेत् ।
 तत उपस्पृश्य मायाबीजेन ताराघेन प्राणायामत्रयं कुर्यात् । पूरकं
 १६ कुम्भकं ६४ रेचकं ३२ इति प्राणायामसमामोदानव्यानादीन्
 नियम्य, नद्यादौ गत्वा मृत्त्रयं मूलेन त्रिधाभिमन्त्र्य, मलापकर्पणं कर्त्तुं
 निर्माय ओंगांगीं 'गङ्गे च यमुने चैव गोदाधरि सरस्वति । त्रये
 सिन्धुकाधरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥' इत्यङ्कुरमुद्रया सूर्यम-
 ण्डलास्तीर्थान्यायाह्य, 'ओं भगवन् भवभूतेश प्रहनायक भास्कर ।
 बिहूप वेदनेत्रेश परमार्थोदय प्रभो ॥ यावत् त्वां तर्पयिष्यामि ताव-
 द्भागो इहावह ।' इत्याषाह्य, तृतीयां मृदमङ्गे विलिप्य मूलं सप्तधा
 समुच्चार्य, कुम्भमुद्रां प्रदर्श्य जले त्रिरुन्मज्जेत् । इति स्नात्वा, देवं
 ध्यात्वा मूलेन देवायार्घ्यत्रयं दत्त्वा मूलविद्यां दशधा जप्त्वा सूर्यना-
 यड्या महामार्तएडायार्घ्यत्रयं दद्यात् । ओं ह्रीं सूर्यरूपाय विमोहे ह्रीं स-
 ज्योतीरूपाय धीमहि तन्नो हंस प्रचोदयात् ३ । ओं हंसः महामार्त-
 एडाय प्रकाशशक्तिमहिनाय नमः । इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा ।
 मूलेन त्रिर्माजर्जनपूर्वमाचम्य धासोऽन्यत् परिधाय संध्यां कुर्यात् ।
 यथा—जले इयत्थं कृत्वा स्वदेह उपस्पृश्य, धामहस्ते जलं धृत्वा दक्ष-
 हस्तेनाच्छाद्य, लवणं यद्व इति त्रिरभिमन्त्र्य दक्षकरे धृत्वा, तत्रलि-
 ताम्बुयिन्दुभिः स्वमूर्ध्नि द्वादशधा समार्ज्य, इडया तज्जलमन्तर्नीत्या,
 शरीरं क्लृप्य प्रक्षाल्य धामनामया विरेच्य तज्जलं कृष्णं पापकर्म
 स्ववामभागस्थवज्रशिलायामास्फालयेदिति मलापकर्पणं कृत्वा, ओं ह्रीं
 आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ओं ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
 ओं ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इति त्रिराचम्य, पूर्ववत् १६ ।
 ६४ । ३२ त्रिः प्राणानाचम्य गायत्रीं दशधा जपेत् । "सपितुर्वेदि
 गायत्रीं कौलिको दशधा जपेत् । महापातकयुक्तोऽपि सर्वरोगैः प्रमु-
 च्यते ॥" इति जप्त्वा, मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा जप देशाप समर्प्य,
 मूलमुच्चार्य "उदयन्तमनामाम परमं ह्योम विन्मयम् । अन्यथं सधि-

वाकाशमगम्य ज्योतिरुत्तमम् स्याद्वा-इत्युपस्थाय जलाञ्जलिं दत्त्वा , पुनर्जले श्रीचक्रं वा योनिचक्रं विन्दुमण्डितं विलिख्य , मूलान्ते श्रीम-
हामार्तण्डदेवः सूर्यः सविता विस्फुरासहितस्तृप्यतामिति द्वादशवारं
संतप्य , प्रत्येकं परिचारदेवताः संतप्य , पित्रादितर्पणं विधाय विरा-
चम्य , ज्ञानेशाय वरुणाय ओं हूं श्रूं वां वरुणाय धौपद , इति नत्वा ,
देवं सदैवीकं विसृज्य , हृत्कुशेशयकोशान्तर्लीनं ध्यात्वा , आनशाटीं निर्वर्त्य
यागमण्डपमागच्छेदिति सन्ध्याविधिः ॥

तत्र पादौ प्रक्षाल्य गेहान्तः प्रविश्य सामान् त्र्यौदकेनाभ्युक्ष्य , ओं ह्रां
देहस्यै नमः , ओं गं गणपतये नमः , ओं सं सरस्वत्यै नमः , ओं हुं दुर्गायै
नमः , ओं तां क्षेत्रपालाय नमः , मध्ये वास्तुदेवताभ्यो नमः , इति
पूर्वद्वारादारभ्योत्तरद्वारपर्यन्तमभ्यर्च्य , द्वारोर्ध्वं गङ्गायै नमः , दक्षिणे
यमुनायै नमः , द्वाराधः सरस्वत्यै नमः , उत्तरे खड्गायै नमः , मध्ये
सुधार्षवाय नमः , इति संपूज्य मूलेन निरीक्ष्य , छोटिकामिः संताप्य
यथार्हमासन उपविश्य शोधनं कुर्यात् ।

ओं प्रां आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठं ऋषिं सुतलं कुन्दः कूर्मो
देवता आसनशोधने विनियोगः । ओं प्रां पृथिव्यै नमः “ ओमहि त्वया
भूता लोका देवि त्वं विष्णुना भूता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं
कुरु आसनम् ॥ ” ओं प्रां द्वां ह्रीं आचारशाक्तिकमलासनाय नमः , अं
अनन्ताय नमः , धमनाताय नमः , पद्माय नमः , परागैभ्यो नमः ,
अष्टदलपद्मासनाय नमः , सहस्रदलपद्मासनाय नमः , ओं हंसः श्रीक-
ण्ठिकायै नमः , सप्ततुरगेभ्यो नमः , इति संपूज्य दिव्यदृष्ट्या दिव्या-
स्तालत्रयेणान्तरिक्षगतान् धामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमान् विमानानुत्तार्य ,
“ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विप्रक-
र्तास्ते नश्यन्तु शिवाग्रया ॥ ” इत्यक्षतप्रक्षेपेण भूताग्निः स्मार्य , ओं ह्रां
अस्त्राय कदिति दिव्यन्धनं कृत्वा , “ ओं हंसः मां रक्ष २ हूं फद स्याद्वा ”
इत्यात्मरक्षां विधाय , हूं फद वामनासना पायुमापूर्य , ह्रीं फद शुभ-
विधा , सः फद निरेक्ष्य , स्यात्मानं हंसरूपं ध्यात्वा ओं हूं हंसः इत्या
शुद्धेन गुलहृत्कडलीनां सार्धत्रिघलपां दीर्घाकारमुत्थाप्य , प्रदीपकालि
काकारां विसतन्नुतनीयसीं तटिकोटिप्रभा चन्द्रकोटिशिखलां सूर्यको
टिदुर्दशां धदिकोटिकरालां सुषुप्रामागैण पदचक्रं मित्रा ग्रहपथान्त

नीत्वा परमशिषेन संयोज्य , सामरस्योद्भवानन्दामृतेन सन्तप्य , पुन-
स्तेनैव पथा मूलाधारं प्रापयित्वा , घामे पापपुरुषं श्मश्रुलं रक्ताक्षं
धूम्रवर्णं यज्ञचर्मधरं स्वाङ्गुष्ठाकारं विचिन्त्य , यरंवल्हं इति भूतबीजैः
शोषण-दाहन-साधनादीन् कुर्यात् । यथा—आदौ प्राणायामयोगेन यमिति
वायुबीजेन षोडशवारजप्तेन शोषयेत् । ततो रमिति वद्विबीजेन चतुष्प-
ष्टिवारजप्तेन दाहयेत् । घमिति वरुणबीजेन द्वात्रिंशद्वारजप्तेन सावयेत् ।
लमिति भूर्बीजेन दशधा जप्तेन देहं दृढं विचिन्त्य , हमित्याकाशबीजेन
दशधा जप्तेन शून्यात्मकं स्वात्मानं ध्यात्वा हृदयारविन्दकर्णिकायां
देवं सूर्यं ध्यायेत् । “ देदीप्यमानमुकुटं मणिकुण्डलमण्डितम् । देवं
सहस्रकिरणं विस्फुरालिङ्गितं स्मरेत् ॥ ” इति ध्यात्वा स्वात्मानं देव-
रूपं स्मृत्वा , ओंआंह्रींकोह्रांहीं हंसः मम प्राणा इह प्राणा ८ मम जीव इह
स्थितः ८ मम सर्वेन्द्रियाणि वाहमनश्चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः
इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा , इति भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाक्रमः ॥
ततो मूलन्यासं विधाय , मूलान्ते शिरसि त्रिः सूर्यं संपूज्य मन्त्र-
सङ्कल्पं कुर्यात् ।

ओंअस्य श्रीसूर्यपूजामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः , गायत्र्यं छन्दः ,
श्रीसविता देवता , हां बीजं , ह्रीं शक्तिः , ओंकीलकम् , धर्मार्थका-
ममोक्षार्थं सूर्यपूजायां विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः शिरसि , गाय-
त्र्यच्छन्दसे नमो मुखे , श्रीसवित्रे देवतायै नमो हृदि , हां बीजाय
नमो नाभौ , ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये , ओंकीलकाय नमः पादयोः ,
अये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । हां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः , ह्रीं तर्ज-
नीभ्यां नमः , हूं मध्यमाभ्यां नमः , ह्रूं अनामिकाभ्यां नमः ह्रौं कनि-
ष्ठिकाभ्यां नमः , हः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । हां हृदयाय० । ह्रीं शिरसे० ।
हूं शिखायै० । ह्रूं कवचाय० । ह्रौं नेत्राय० । ह्रः अस्त्राय० । इति
करपङ्कजन्यासः । ओंनमः शिरसि , हां नेत्रयोः , ह्रौं मुखे , सः हृदे ,
सूं कुक्षौ , यौ नाभौ , यं जानुनोः , नं पादयोः , मः शिरसः पादपर्य-
न्तमिति सप्तधा व्यापयेदिति मूलविधान्यासः ॥

ओंहां ऋग्वेदात्मने सूर्याय नमः शिरसि । ओंह्रीं यजुर्वेदात्मने सूर्याय
नमः कुक्षौ । ओंसः सामवेदात्मने सूर्याय नमो गुह्ये । ओं अथर्ववे-
दात्मने सूर्याय नमः पादयोः । इति त्रिव्यापयेदिति वेदन्यासः ॥

ओंहां आत्मरूपाय सूर्याय हृदयाय नमः । ओंहो परमात्मने
सूर्याय शिरसे स्वाहा । ओंहूं सर्वभूतात्मने सूर्याय शिखायै० ।
ओंहें क्षानात्मने सूर्याय कवचाय० । ओंहो अन्तरात्मने सूर्याय
नेत्रत्रयाय० । ओंहः हंसात्मने सूर्याय अस्त्राय फट् । एवमङ्गुली-
न्यासः । इत्यात्मन्यासः ॥

ओंहां सोमात्मने सूर्याय अङ्गुष्ठाभ्यां० । ओंहो भौमात्मने सूर्याय तर्ज-
नीभ्यां० । ओंहूं युधात्मने सूर्याय मध्यमाभ्यां० । ओंहें जीवात्मने सूर्याय
अनामिकाभ्यां० । ओंहो शुक्रात्मने सूर्याय कनिष्ठिकाभ्यां० । ओंहः सौरात्मने
सूर्याय करतलपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । इति ब्रह्मन्यासः ॥

ओंअंआंइंउंऊंझंझंलंलंरंरंओंओंअंअः सूर्याय नमः मूलाधारे । हां कं-
रंरंघंघं सूर्याय नमः मणिपूरे । हों चंछंजंभंभं सूर्याय नमः स्वाधि-
ष्ठाने । सः टंठंडंढं सूर्याय नमः अनाहते । सूर्याय तंथंदंथं सूर्याय
नमः विशुद्धौ । नं पंफंवंभंभं सूर्याय नमः आक्षाय्यां । मः यंरंलंवंशं-
पंलंठंठं सूर्याय नमः करग्रहे । इति सप्तधा व्यापयेदिति मूलशु-
द्धिमातृकान्यासः ॥

अंआं गायत्रीछन्दसे सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे । इंइं त्रिपुल्लन्दसे
सूर्याय नमः आक्षाय्यां । उंऊं अनुपुल्लन्दसे सूर्याय नमो विशुद्धौ ।
झंझंलंलं उणिक्छन्दसे सूर्याय नमः अनाहते । रंरं विरादछन्दसे
सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने । ओंओं सप्तादछन्दसे सूर्याय नमो मणि-
पूरे । अंअः गृहतीक्ष्णन्दसे सूर्याय नमो मूलाधारे । इति सप्तधा
व्यापयेदिति सप्तछन्दोन्यासः ॥

ओं गौराभ्याय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे । हां पाण्डुराभ्याय सूर्याय
नमः आक्षाय्यां । हों सिताभ्याय सूर्याय नमो विशुद्धौ । सः श्वेता-
भ्याय सूर्याय नमः अनाहते । सूर्याय हिमाभ्याय सूर्याय नमः स्वाधि-
ष्ठाने । नं रौराभ्याय सूर्याय नमो मणिपूरे । मेः कुन्दाभ्याय सूर्याय
नमो मूलाधारे । इति त्रिव्यापयेत् इति सप्ततुरगन्यासः ॥

ओं अजपादेवतायै सूर्याय नमः करग्रहे । हां गायत्रीदेवतायै सूर्याय
नमः आक्षाय्यां । हों सायित्रादेवतायै सूर्याय नमो विशुद्धौ । सः सर-
स्यतीदेवतायै सूर्याय नमः अनाहते । सूर्याय व्यस्यतीदेवतायै सूर्याय
नमः स्वाधिष्ठाने । नं ब्रह्मवादिनीदेवतायै सूर्याय नमो मणिपूरे । मः पञ्चमु-

खीदेवतायै सूर्याय नमो मूलाधारे । इति त्रिवर््यापयेदिति गायत्रीन्यासः ॥

ओं शिवतत्त्वाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे । हां शक्तितत्त्वाय सूर्याय नमः आज्ञायां । ह्रीं मायातत्त्वाय सूर्याय नमो विशुद्धौ । सः विद्यातत्त्वाय सूर्याय नमः अनाहते । सूर्याय कलातत्त्वाय सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने । नं नियतितत्त्वात्मने सूर्याय नमो मणिपूरे । मः आत्मतत्त्वाय सूर्याय नमो मूलाधारे । इति त्रिवर््यापयेदिति तत्त्वन्यासः ॥

ओं कामरूपपीठेशाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे । हां उद्दडीयानपीठेशाय सूर्याय नमः आज्ञायां । ह्रीं जालन्धरपीठेशाय सूर्याय नमो विशुद्धौ । सः पूर्णगिरिपीठेशाय सूर्याय नमः अनाहते । सूर्याय मधुपुरीपीठेशाय सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने । नं अघन्तीपीठेशाय सूर्याय नमो मणिपूरे । मः धाराणसीपीठेशाय सूर्याय नमो मूलाधारे । मूलं कुवक्षेत्रपीठेशाय सूर्याय नमः सर्वाङ्गेषु । इति त्रिवर््यापयेदिति पीठन्यासः । इति द्वादशन्यासाः । यथोक्तम्

मुनिमायामूलविद्या-वेदात्मग्रहशुद्धयः ।

छन्दस्तुरगगायत्री-तत्त्वपीठादयः पुनः ॥

एते हि द्वादश न्यासाः सर्वतन्त्रेषु गोपिताः ।

वर्णितास्तव देवेशि सर्वरोगापहारकाः ॥

एतान् यः कुरुते न्यासान् सवितुः सर्वसिद्धये ।

तस्य लक्ष्मीधनारोग्यविद्याकीर्तिसुखाप्तयः ॥

न्यासान्ते मास्करं ध्यायेत् पूजाकोटिकलं लभेत् । इति ॥

अथ मातृकान्यासः—अं कं ५ आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ईं छं ५ ईं तर्जनीभ्यां ० । उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां ० । एं तं ५ ऐं अनामिकाभ्यां ० । औं पं ५ आं कनिष्ठिकाभ्यां ० । अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं अः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः । एवं षट्ङ्गन्यासः । इति स्वराद्यन्तमातृकान्यासः ॥

अथ शुद्धमातृकान्यासः—अं नमः शिरसि । आं नमो मुखवृत्ते । एं ईं दक्षनेत्रे । ईं यामनेत्रे । उं दक्षकर्णे । ऊं यामकर्णे । औं दक्षनासापुटे । अं यामे । लृं दक्षगण्डे । लूं यामे । एं ऊर्ध्वोष्ठे । ऐं अधोष्ठे । औं ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । आं अधोदन्तपङ्क्तौ । अं शिरसि । अः मुखे । कं दक्षगामूले । खं कुपरे । गं मणियन्त्रे । घं अङ्गुलिमूले । ङं

अङ्गुल्यग्रे । चं चामपादमूले । छं कुपरे । जं मणियन्धे । भं अङ्गु-
लिमूले । जं अङ्गुल्यग्रे । टं दक्षपादमूले । ठं जानुनि । डं गुल्फे ।
ढं अङ्गुलिमूले । णं अङ्गुल्यग्रे । तं चामपादमूले । थं जानुनि । दं
गुल्फे । धं अङ्गुलिमूले । नं अङ्गुल्यग्रे । प दक्षपार्श्वे । फं चामे ।
यं पृष्ठे । भं नाभौ । मं जठरे । यं हृदि । रं दक्षांसे । ले ककुदि ।
घं घामांसे । शं हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं । पं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं । सं
हृदादिदक्षपादाग्रान्तं । हं हृदादिवामपादाग्रान्तं । लं पादादिशिरःपर्यन्तं ।
क्षः नमः शिरसः पादपर्यन्तामेति त्रिर्व्यापयेत् । इति मातृकान्यासः ॥ ह्रीं
नमः शिरसि, हं नमो हृदि, सः नमः पादयोः, मूलं शिरसः पादप-
र्यन्तं त्रिर्व्यापयेदिति न्यासं विधाय हृत्कमलकर्णिकान्तगतं देवं ध्यायेत्—

जपादाडिमविम्बामं द्विश्रुजं चारुणाम्बरम् ।

सप्ताश्वरथसंपुङ्गं मणिकुण्डलमण्डितम् ॥

कीयूरहाराभरणं- कलशाम्भोजधारिणम् ।

सवितारं जगन्नाथं विस्फुरालिङ्गितं भजे ॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैरभ्यर्च्य, स्वचामे त्रिकोणवृत्तमण्डले विलिख्य
“ रं चाङ्गिमण्डलाय दशकलात्मने नमः ” इति संपूज्य, त्रिपदी क्षालितां
संस्थाप्य, तत्र शङ्खं संस्थाप्य शङ्खे “ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकला-
त्मने नमः ” इति संपूज्य, तीर्थजलेनापूर्य “ सः सोममण्डलाय षोड-
शकलात्मने नमः ” इत्यभ्यर्च्य, हंसः सूर्याय ह्रीं नमः इति त्रिर्ग-
न्धाक्षतपुष्पैः समभ्यर्च्य, ओंगांगीगूं “ गङ्गे च यमुने चैव ” इत्यादिना
सूर्यमण्डलात् तीर्थान्यङ्गुशमुद्रयावाह्य, ओंहांह्रींसः हंसः शुचिपदे सूर्याय
नमः इति संपूज्य, धेनुयोनिमत्स्यखशोल्कामुद्राः प्रदर्श्य प्रणमेत् ।

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च ।

विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये ॥

इति सामान्यार्घ्यं विधाय, सुघाढ्यं कुर्यात् । यथा सामान्यार्घ्यस्य
दक्षे त्रिकोणवृत्तचतुरथ विलिख्य, सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य, ओंहां हृद-
याय नमः पूर्वं । ओंह्रीं शिरसि स्वाहा दक्षिणे । ओंहूं शिखायै षषट् पश्चिमे

ओं हं कवचाय हुं उत्तरे । ओं ह्रीं नेत्रेभ्यो यौपद अधः । ओं हं
अस्त्राय फट ऊर्ध्वे । इति संपूज्य , ओमितीशने , इमित्याग्नेये , सः
इति अग्ने , इति ज्येष्ठं संपूज्य , क्षालिताधारं संस्थाप्य " हं वाहि-
मण्डलाय दशकलात्मने नमः " इत्यभ्यर्च्य , तत्र

सौवर्णं राजतं चापि रक्तं वा मृण्मयं घटम् ।

स्थापयेच्छोभितं दिव्यमालाभिः कुङ्कुमाञ्चितम् ॥

इति संस्थाप्य " हंसः सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः " इति संपूज्य ,
मधुमात्रेणापूर्य तत्रानामिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन संपूर्य , " सौ-
सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः " इति सोममण्डलादमृतीकरण-
मुद्रयामृतं ध्यात्वा तत्रानीय कुम्भे निक्षिप्य , ओम्ना इत्यादितान्तमु-
च्चार्य मूलमुच्चार्य , " आंर्त्रीचूंर्मीर्घ्रीघ्नः अः अमृते अमृतोद्भवे अमृ-
ताकर्षिणि अमृतवर्षिणि महामार्तण्डमण्डलेभ्यरि सुधादेवि परमानन्दे-
भ्यरि ह्रां ह्रींसः हंसः सोहं स्वाहा " इति दशधा जपेत् इति जपवा ।

सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे ।

अमाभीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥

वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।

तेन सत्येन देवेशि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।

कषोन्नवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥

कृष्णशापविनिर्मुक्ता तं ब्रह्मा ब्रह्मशापतः ।

विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा मव सांप्रतम् ॥

पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः ।

पवमानं परं ब्रह्म तेन तां पावयाम्यहम् ॥

इति त्रिः संपूज्य गङ्गादितीर्थान्यावाहा घेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य
" हंसः सोहं स्वाहा " इत्यमृतीहृत्य , मूलं दशधा प्रजप्य गन्धाक्षतपुष्पैः
संपूज्य महामृतमय तीर्थं भ्यावेदिति घटस्थापनम् ॥

दत्त्वा, आवाहनसंस्थापनसंनिर्गन्धनावगुण्ठनसंमुष्णी (करणसुप्रसन्नामृ-
तीकरणपरमी) करणानुपूर्वं धेनुयोनिमत्स्यपद्मयिष्यभानुपशोल्कामुद्राः
प्रदर्श्य, मूलान्ते भगवन् सूर्य इदं रत्नसिंहासनमास्यताम् । मूलान्ते परमा-
चरणदेवता रश्मिमण्डलाधिगता प्यात्वा, मूल पाद्याचनीय-मधुपर्कधम-
नीयपात्रेभ्यः सर्वे समर्प्य, मूलान्ते भगवन्नेर्घ्यं गृहाण वाँपद्, मू० गन्धं
गृहाण नमः, मू० पुष्पाणि गृहाण त्रपद्, मू० सर्वाङ्गे गङ्गोदकं नमः, मू०
भगवन् रत्नवस्त्रालङ्कारादि गृहाण नमः, मू० भगवन् रत्नपादुके गृहाण
नमः, मू० भगवन् रत्नसिंहासनं नमः, मू० गन्धाक्षतपूर्वं पुष्पाणि
गृहाण नमो वाँपद्, मू० भगवन् धूपं गृहाण नमः, मू० भगवन्
दीपं गृहाण नमः, इति यशोल्कया सर्वे दत्त्वा, आत्मपुरतस्त्र्यधं
सद्युक्तं भूमौ विलिख्य, तत्र साधारं पात्रं संस्थाप्य, नैवेद्यं निवेद्य
मूलेनामृतीकृत्य, यशोल्कया निरीक्ष्य, मूलं दशधा जप्त्वा, धेनु-
योनिमुद्रे प्रदर्श्य, उँहाँहोँस. भगवन् सूर्य श्रपोशानं नमः, अमृतो-
पस्तरणमसि स्वाहा इति जलं दत्त्वा, पुण्ड्रकमुद्रां प्रदर्श्य त्रासमुद्र-
याऽऽत्राय, मूलान्ते देवं संतृप्तं ध्यान्वा इदमाचमनीयं स्वधा, (अमृ-
तापिधानमसि स्वाहा) मू० नाम्बल नमः, मूलान्ते सप्तधा परमपा-
त्रान्तेन सन्तर्प्य विष्णुरामपि त्रि. सन्तर्प्य प्रणमेत् । ततः परिवार-
देवता ध्यायेत् । यथा—

सौम्यानि रक्त्रवर्णानि वरदाञ्जकराणि च ।
भूषितानि द्विहस्तानि भानोर्गङ्गानि भावयेत् ॥
दंष्ट्राकरालमन्युग्रं प्रज्वलन्पावकप्रभम् ।
तर्जयद् विघ्नमङ्घ्रान्तमिन्धमस्त्रं विचिन्तयेत् ॥
मोमं कुमुदकुन्दाभं भौमं चामीकरप्रभम् ।
नीलरत्ननिभं सांभ्यं गुरुं गोरोचनानिभम् ॥
गोक्षीरमन्निभं शुक्रं शनि नीलाञ्जनप्रभम् ।
कामरूपधराः सर्वे दिव्याम्बरविभूषणाः ॥
वामोऽन्यस्तमद्वस्ता दक्षहस्ताभयप्रदाः ।

ध्यानपूर्वं ग्रहानेवं सुभवत्या कौलिकोऽर्चयेत् ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, वीरपात्रामृतेन संहतिक्रमेण स्ववामावृत्त्या पूजयेत् । द्वाःस्थादिदेवायुधध्यःनार्चनान्तं पूजाक्रमः, इति शिवशासनम् यथा-ले इन्द्रधीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, वीरपात्रामृतेन तर्पयेत् । रं अग्निधीपादुकां पू० । टं यमधीपा० । सं निर्ऋतिधी० । वं वरुणी० । यं वायुधी० । सं सोमधी० । हं ईशानधी० । ॐ ब्रह्मधी० । ह्रीं अनन्तधी० । इति पद्मपत्रैरभ्यर्चयेत् (अभीष्टसिद्धि०) इति प्रथमावरणम् ॥

ओं गं गणेशधीपादुकां पू० । ॐ चं चण्डवेतालधीपा० । ॐ लोलाक्षधीपा० । ॐ विकरालधी० । इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरेषु वामावर्तनान्तर्द्वाःस्थान् संपूजयेदिति (अभीष्ट०) इति द्वितीयावरणम् ॥

मू० गुं स्वगुरुपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः, इति गुरुपात्रामृतेन संपूज्य, या संतर्प्य, पं परमगुरुधी०, पं परमेष्ठिगुरुधी०, इति वृत्तत्रयेषु वायव्यादीशान्तं संपूजयेदिति तृतीयावरणम् ॥

सौः ज्योत्स्नादेवीदीक्षासहितसोमधीपा० । इति ग्रहपात्रामृतेन तर्पयेत् । सं सृत्वासाहितमङ्गलधी० । वं जयासहितबुधधी० । जु मन्त्रासहितजीवधी० । धीं विमलासहितशुक्रधी० । शं निर्मलासहितशनिधी० । रां विद्युतासहितराहुधी० । कं सर्वतोयन्त्रासहितकेतुधी० । इति गन्धाक्षतपद्मपरागैर्वाभावर्तनं घसुदले पूर्वादीशान्तं संपूजयेदिति चतुर्थावरणम् ॥

ओं ह्रीं तपनीसहितमूर्यधीपा० । ३ तापिनीसहितदिवाकरधी० । ३ पोधिनीसहितमानुधी० । ३ रोधिनीसहितभास्करधी० । ३ कलिनीसहितरविधी० । ३ शोपिणीसहितत्वष्ट्रधी० । ३ घरेण्यासहिततपनधी० । ३ प्राक्किरीसहितधर्मधी० । इति धीपरमपात्रामृतेन म्यवामावृत्त्या घसुकोरे पद्मपत्रैः संपूजयेदिति पञ्चमावरणम् ॥

ओं ह्रीं मायामहितहंमधीपा० इतीशाने । ३ विश्वामतीसहितग्रहपति-

श्री० इति आग्नेये । ३ हेमप्रभासहितत्रयीतनुश्री० इत्यग्रे । इति गन्ध-
पुष्पाक्षतैरर्चयेदिति षष्ठावरणम् ॥

३ "जगद्धर्मिमये मातर्घण्टायै नमः" इति संपूज्य शनैर्वादन-
मूलविद्यामुच्चार्य श्रीविष्णुरासहितसवित्रश्री०, इति द्वादशवारं शतपत्रैः
केवलमभ्यर्चयेदिति सप्तमावरणम् ॥

३ रत्नकलशश्रीपा०, ३ सुवर्णकमलश्री०, इति परमपात्रामृतेन वाम-
दक्षिणयोः करकमलयोः संपूजयेदित्यष्टमावरणम् ॥ इत्थं संपूज्य,
मूलेन मूलदेवतां त्रिः सन्तर्प्य प्रणमेत् । ततो मूलदेवतासहिताय श्रीस्-
र्याय सपरिच्छदाय परमाञ्जं नैवेद्यं निवेदयामि नमः, मूलेन इत्या
मूलान्ते सप्तप्रदक्षिणानि कृत्वा मूलान्ते मेरुपुण्ड्रकमुद्रां प्रदर्श्य पुनः
पुनः प्रणमेत् ॥

दक्षिणान्तर्गता वामा वामान्तरगताः पराः ।

अङ्गुलीर्योजयेद् देवि चाङ्गुष्ठां संमुखं चरेत् ॥

आवर्त्य व्योमवद् हस्तावङ्गुष्ठां देव्यधोमुखं ।

मेरुपुण्ड्रकमुद्रेयं दिव्या भास्करवज्रभा ॥

नैवेद्ये च प्रणामे च पुण्ड्रकाख्यां प्रदर्शयेत् ।

इति नत्वा संकल्पपूर्वं षडङ्गं विधाय प्राणायामत्रयं कृत्वा अर्कमालया
मूलं यथाशक्त्या जपेत् । जपान्ते,

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणासत्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देव तत्प्रसादात् प्रभाकरं ॥

इति जपं देवाय समर्प्य, योनिमुद्रया प्रणमेत् । ततः कथंचसहस्रना-
मस्तवराजपाठं कुर्यात् (चैवभेदेवादिनित्यकर्म कुर्यात्) । तदपि धिम्बमु-
द्रया देवाय समर्प्य दण्डवत् प्रणम्य, "ओं ह्रीं श्रीं वीरवटुकाय नमः ।
ओं पांशुं यो योगिनीभ्यो नमः । ओं क्षां क्षेत्रपालेभ्यो नमः । ओं त्रां त्रौ
तेजश्चरणाभ्यां नमः, इति वारं निवेद्य, "ओं ह्रीं सर्वभूतेभ्यः सर्व-
धिष्ठरुद्भ्यो वलिर्वीर्यम्" इति वारं दत्त्वा, (ततः सूर्यस्य जप्तापयेत्)

श्रीसामयिकैः सह वीरचन्दनं विधाय, तदन्ते “ ओं सोहं हंसः
स्वाहा ” इत्यानन्दपात्रं शिरसि निःक्षिप्य, परमानन्दमयो भूत्वा स्वात्मानं
तेजोमयं सूर्यरूपं विभाव्य “ उहः अस्त्राय फट् ” सूर्यास्त्रं ध्यात्वा
प्रणम्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा भानवीं मुद्रां प्रदर्श्य, संहारमुद्रया श्रीचक्रे
विन्दुविम्बात् सूर्यतेजोमयं पुष्पमादाय पिङ्गलयाघ्राय तत्सौरं तेजः
परमशिवेन संयोज्य, पुनर्मूलाधारं प्राप्य स्यात्मानं तेजोमयरूपं दिव्यं
नाटयन् स्वशक्त्या सह यथासुखं विहरेत् ॥

. इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्मगधरूपिणी ।

तव स्नेहेन निर्णीता नाख्येया कौलिकैः मित्रे ॥

इति श्रीरुद्रपामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यपूजापद्धति-
निरूपणं द्वात्रिंशः पटलः ॥ ३२ ॥

अथ

त्रयस्त्रिंशः पटलः ।

—०७ ०८०:३०—

श्रीभैरव उवाच ।

यो देवदेवो भगवान् मास्करो महर्षा निधिः ।

गायत्रीनायको मास्वान् सवितेति प्रगोयते ॥ १ ॥

तस्याहं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिषम् ।

सर्वमन्त्रमयं गुह्यं भूलविद्यारहस्यकम् ॥ २ ॥

सर्वपापार्हं देवि दुःखदारिद्र्यनाशनम् ।

महाकुष्ठहरं पुण्यं सर्वरोगनिवर्हणम् ॥ ३ ॥

सर्वशत्रुसमूहघ्नं संग्रामे विजयप्रदम् ।

सर्वतेजोमयं सर्वदेवदानवपूजितम् ॥ ४ ॥

रणे राजभये घоре सर्वोपद्रवनाशनम् ।

मातृकावेष्टितं वर्म भैरवानननिर्गतम् ॥ ५ ॥

ग्रहपीडाहरं देवि सर्वसङ्कटनाशनम् ।

धारणादस्य देवेशि ब्रह्मा लोकापिनामहः ॥ ६ ॥

विष्णुर्नारायणो देवि रणे दैत्याञ्जयिष्यति ।

शङ्करः सर्वलोकेशो चासवोऽपि दिवस्पतिः ॥ ७ ॥

श्रोतृधीशः शशी देवि शिवोऽहं भैरवेश्वरः ।

मन्त्रान्मर्कं परं वर्म सवितुः सारमुत्तमम् ॥ ८ ॥

यो धारयेद् भुजे मूर्ध्नि रविवारे महेश्वरि ।

स राजषष्ठ्यमो लोके तेजस्वी वैरिमर्दनः ॥ ९ ॥

बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य धारणात् ।

इह क्षत्तमीधनारोग्य-वृद्धिर्भवति नान्यथा ॥ १० ॥

परत्र परमा मुक्तिर्देवानामपि दुर्लभा ।

कवचस्यास्य देवेशि मूलविद्यामयस्य च ॥ ११ ॥

वज्रपञ्जरकारूपस्य मुनिर्ब्रह्मा समीरितः ।

गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥ १२ ॥

माया बीजं शरत् शक्तिर्नमः कीलकमीश्वरि ।

सर्वार्थसाधने देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ १३ ॥

अस्य श्रीवज्रपञ्जरकवचस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीसविता देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वार्थसाधने वज्रपञ्जरकवच-पाठे विनियोगः ॥

ओंअंआंइई शिरः पातु ओं सूर्यो मन्त्रविग्रहः ।
 उंऊंअंऊं ललाटे मे ह्रीं रविः पातु चिन्मयः ॥ १४ ॥
 नृत्तुंएँ पातु नेत्रे ह्रीं ममारुणसारथिः ।
 ओंअंअंअः श्रुती पातु सः सर्वजगदीश्वरः ॥ १५ ॥
 कंखंगंधं पातु गण्डौ खं सूरः सुरपूजितः ।
 चंछंजंभं च नामां मे पातु र्या अर्यमा प्रभुः ॥ १६ ॥
 टंठंढंढं मुखं पायाद् यं योगीश्वरपूजितः ।
 तंथंदंथं गलं पातु नं नारायणवल्लभः ॥ १७ ॥
 पंफंयंभं मम स्कन्धौ पातु मं महतां निधिः ।
 यरंलंवं भुजौ पातु मूलं मकलनायकः ॥ १८ ॥
 शंपंसंहं पातु वक्षो मूलमन्त्रमयो ध्रुवः ।
 लक्षः कुक्षिं सदा पातु ग्रहनाथो दिनेश्वरः ॥ १९ ॥
 उंअंणंनं मे पातु पृष्ठं दिवसनायकः ।
 अंअंइई उंऊंअंऊं नाभिं पातु तमोपहः ॥ २० ॥
 तृत्तुंएँ ओंअंअंअः लिङ्गं मेऽन्याद् ग्रहेश्वरः ।
 कंखंगंधं चं छंजंभं कटिं भानुर्ममावतु ॥ २१ ॥
 टंठंढंढं तंथंदंथं जानू भास्यान् भमावतु ।
 पंफंयंभं यरंलंवं जङ्घे मेऽन्याद् बिभाकरैः ॥ २२ ॥
 शंपंसंहंलंघः पातु मूलं पादौ त्रयीतनुः ।
 ङंअंणंनं मे पातु सविता सकलं वपुः ॥ २३ ॥
 सोमः पूर्वे च मा पातु भौषोऽग्री मा सदावतु ।
 गुधो मा दक्षिणे पातु नैऋत्या गुरुरेव माम् ॥ २४ ॥
 पश्चिमे मां सितः पातु वायव्या मा शनैश्वरः ।
 उत्तरे मां तमः पायादैशान्या मा शिखी तथा ॥ २५ ॥

ऊर्ध्वं मां पातु मिहिरो मामधस्ताज्जगत्पतिः ।

प्रभाते भास्करः पातु मध्याह्ने मां दिनेश्वरः ॥ २६ ॥

सायं वेदप्रियः पातु निशीथे विस्फुरापतिः ।

सर्वत्र सर्वदा सूर्यः पातु मां चक्रनाथकः ॥ २७ ॥

रणे राजकुले घृते विवादे शत्रुसङ्घटे ।

सद्दामे च ज्वरे रोगे पातु मां सविता प्रभुः ॥ २८ ॥

ओंओंओं उत ओंउऊहसमयैः सूर्योऽवतान्मां भयाद्

ह्रींह्रींहुं^३ हहहा हसौः हसहसौः हंसोऽवतात् सर्वतः ।

सःसःसः सससा नृपाढनचराश्चौराद्रणात् संकटात्

पायान्मां कुलनायकोऽपि सविता ओंह्रींहसौः सर्वदा ॥ २९ ॥

द्रांद्नींद्ं^३ दर्धनं तथा च तराणिर्भाभैर्भयाद् भास्करो

रारौत्सं रुरुत्सं रविर्ज्वरभयात् कुष्ठाच्च शूलामयात् ।

अंअंअं विविर्वी महामयभयं मां पातु मार्तण्डको

मूलव्यासतनुः सदावतु परं हंसः सहस्रांशुमान् ॥ ३० ॥

इति श्रीकवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम् ।

सर्वदेवरहस्यं च मातृकामन्त्रवेष्टितम् ॥ ३१ ॥

महारोगभयघ्नं च पापघ्नं मन्मुखोदितम् ।

शुभं यशस्करं पुण्यं सर्वश्रेयस्करं शिवे ॥ ३२ ॥

लिखित्वा रविवारे तु तिथ्ये वा जन्मभे प्रिये ।

अष्टगन्धेन दिव्येन सुधाचीरेण पार्वति ॥ ३३ ॥

अर्कचीरेण पुण्येन भूर्जतचि महेश्वरि ।

कनकीकाष्ठलेखन्या कवचं भास्करोदये ॥ ३४ ॥

श्वेतस्रवेण रक्तेन श्यामेनावेष्टयेद् गुटीम् ।

सौवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे ॥ ३५ ॥

रणे रिपूञ्जमेद् देवि वादे सदसि जेष्यति ।
 राजमान्यो भवेन्नित्यं सर्वतेजोमयो भवेत् ॥ ३६ ॥
 कण्ठस्या पुत्रदा देवि कुक्षिस्था रोगनाशिनी ।
 शिरःस्था गुटिका दिव्या राजलोकप्रशङ्करी ॥ ३७ ॥
 भ्रूजस्या घनदा नित्यं तेजोबुद्धिविगर्धिनी ।
 बन्ध्या वा काकबन्ध्या वा मृतप्रत्ता च याङ्गना ॥ ३८ ॥
 कण्ठे सा धारयेन्नित्यं बहुपुत्रा प्रजायते ।
 यस्य देहे भवेन्नित्यं गुटिकैषा महेश्वरि ॥ ३९ ॥
 महास्त्राणीन्द्रमुक्कानि ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वति ।
 तद्देहं प्राप्य व्यर्थानि भविष्यन्ति न संशयः ॥ ४० ॥
 त्रिकालं यः पठेन्नित्यं कवचं वज्रपञ्जरम् ।
 तस्य सत्रो महादेवि सविता वरदो भवेद् ॥ ४१ ॥
 अज्ञाता कवचं देवि पूजयेद् यत्नपीठतुम् ।
 तस्य पूजार्जितं पुण्यं जन्मकांटिषु निष्फलम् ॥ ४२ ॥
 शतावर्तं पठेद्दर्भं सप्तम्यां रविवासरे ।
 महाकुष्ठादितो देवि मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४३ ॥
 नीरोगो यः पठेद्दर्भं दरिद्रो वज्रपञ्जरम् ।
 क्षुधनीषाञ्जायते देवि सद्यः सूर्यप्रसादतः ॥ ४४ ॥
 भक्त्या यः प्रपठेद् देवि कवचं प्रत्यहं श्रिये ।
 इह लोके श्रियं भुवता देहान्ते मुक्तिमाप्नुयात् ॥ ४५ ॥

इति श्रीहृष्टयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये वज्रपञ्जराख्यसूर्यकवच
 निरूपणं अथर्विण. पटल ॥ ३३ ॥

चतुस्त्रिंशः पटलः .

श्रीभैरव उवाच ।

देवदेवि महादेवि सर्वाभयवरप्रदे ।
तं मे प्राणप्रिया प्रीता वरदोऽहं तव स्थितः ॥ १ ॥
किञ्चित् प्रार्थय मे प्रेम्णा वक्ष्ये तत्ते ददाम्यहम् ।

श्रीदेवपुत्राच ।

भगवन् देवदेवेश महारुद्र महेश्वर ॥ २ ॥
यदि देवो धरो मह्यं वरयोग्यास्म्यहं यदि ।
देवदेवस्य सवितुर्वद नाममहत्तकम् ॥ ३ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

एतद्ब्रह्मतमं देवि सर्वस्वं मुम पार्वति ।
रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं कामनावहम् ॥ ४ ॥
यो देवो भगवान् सूर्यो वेदकर्ता प्रजापतिः ।
कर्मसाक्षी जगद्यजुः स्तोतुं तं केन शक्यते ॥ ५ ॥
यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते ।
तस्यादिदेवदेवस्य सवितुर्जगदीशितुः ॥ ६ ॥
मन्त्रनाममहस्यं ते वक्ष्ये साम्राज्यसिद्धिदम् ।
सर्वपापार्पहं देवि तन्त्रवेदागमोद्धृतम् ॥ ७ ॥
माङ्गल्यं पाँष्टिकं चैव रक्षोघ्नं पावनं महत् ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ८ ॥
धनदं पुण्यदं प्रणयं श्रेयस्करं यशस्करम् ।

पश्यामि परमं तत्त्वं मूलविद्यात्मकं परम् ॥ ६ ॥

ब्रह्मणो यत् परं ब्रह्म पराणामपि यत् परम् ।

मन्त्राणामपि यत् तत्त्वं महत्तामपि यन्महः ॥ १० ॥

शान्तानामपि यः शान्तो मनूनामपि यो मनुः ।

योगिनामपि यो योगी वेदानां मणवश्च यः ॥ ११ ॥

ब्रह्माणामपि यो भास्वान् देवानामपि वामवः ।

ताराणामपि यो राजा चापूनां च प्रमज्जनः ॥ १२ ॥

इन्द्रियाणामपि मनो देवीनामपि यः परा ।

नगानामपि यो मेरुः पक्षमानां च वासुकिः ॥ १३ ॥

तेजसामपि यो रक्षिः कारुणानां च यः शिवः ।

सविता यस्तु गायत्र्याः परमात्मेति कीर्त्यते ॥ १४ ॥

वक्ष्ये परमहंसस्य तस्य नामसहस्रकम् ।

सर्वदारिद्र्यशमनं सर्वदुःखविनाशनम् ॥ १५ ॥

सर्वपापप्रशमनं सर्वतीर्थफलप्रदम् ।

ज्वररोगापमृत्युभं सदा सर्वाभयप्रदम् ॥ १६ ॥

तत्त्वं परमतत्त्वं च सर्वसारोत्तमोत्तमम् ।

राजप्रसादविजय-स्तुतीनिभकारणम् ॥ १७ ॥

आयुष्करं पुष्टिकरं सर्वयज्ञफलप्रदम् ।

मोहनस्तम्भनाकृष्टि-वशीकरणकारणम् ॥ १८ ॥

अदातन्यममन्त्राय सर्वकामप्रपूरकम् ।

मृणुष्यावहिता भूता सूर्यनामसहस्रकम् ॥ १९ ॥

अस्य धीर्सूर्यनामसहस्रस्य धीप्रता ऋषिः, गायत्र्य छन्दः धीभगवान् सविता देवता, हा वीजः, म शक्तिः, ह्रीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षाभे सूर्यसहस्रनामपाठे विनियोगः । ध्यानम्—

कल्पान्तानलकोटिभास्वरमुखं सिन्दूरधूलीजपा-

मणं स्वकिंराष्ट्रिन दिनयन श्वेताब्जमध्यामनम् ।

नानाभूषणभूषितं सितमुखं रत्नाभ्यं चिन्मयं

सूर्यं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोभ्यां दवानं भजे ॥ १ ॥

प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्रमरीचिभिः शोभितभूमिदेशम् ।

सप्ताश्वगं सद्ध्यजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदन्जे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं ह्रीं सः हसः सोह^१ सवितौ भास्करो भगः ।

भगवान् सर्वलोकेशो भूतेशो भूतभावनः ॥ ३ ॥

भूतात्मा सृष्टिकृत् स्रष्टा कर्ता हर्ता जगत्पतिः ।

आदित्यो वरदो वीरो वीरलो विश्वदीपनः ॥ ४ ॥

निश्चकृद् विश्वहृद् भक्तो भोक्ता भीमोऽभयापहः ।

विश्वात्मा पुरुषः साक्षी^२ परं ब्रह्म परात् परः ॥ ५ ॥

प्रतापवान् विश्वयोनिर्विश्वेशो विश्वतोमुखः ।

कौमी योगी महाशुद्धिर्मनस्वी मनुरन्ययः ॥ ६ ॥

प्रजापतिर्विश्वचन्द्रो वन्दितो भुवनेश्वरः ।

भूतभक्ष्यभविष्पात्मा तत्त्वात्मा ज्ञानवान् गुणी ॥ ७ ॥

सात्त्विको राजसस्तामस्तमस्वी करुणानिधिः ।

सहस्रकिरणो भास्वान् भार्गवो भृगुरीश्वरः ॥ ८ ॥

निर्गुणो निर्ममो नित्यो नित्यानन्दो निराश्रयः ।

तपस्वी कालकृत् कालः कमनीयतनुः कृशः ॥ ९ ॥

दुर्दर्शः सुदशो दाशो दीनबन्धुर्दयाकरः ।

द्विभुजोऽष्टभुजो धीरो दशबाहुर्दशातिगः ॥ १० ॥

दशाशफलदो विष्णुर्जिगीर्ण्यवाञ्जयी ।

जटिलो निर्मयो मानुः पद्महस्तः कुशीरकः ॥ ११ ॥

१ ' हसौ हस ' ड पाठ । २ ' आदित्य ' ख पाठ । ३ ' साक्षात् ' ड पाठ ।

४ ' कामयोगी ' क पाठ । ५ ' महस्वी ' घ पाठ । ६ ' निमल ' ख पाठ ।

७ ' निरानन्द ' ग पाठ । ८ ' दयानिधि ' ग पाठ ।

समाहितगतिर्धाता विधाता कृतमङ्गलः ।
 मार्तण्डो लोकधृत् त्राता रुद्रो मद्रप्रदः प्रभुः ॥ १२ ॥
 श्रुतिशमनः शान्तः शङ्करः कमलासनः ।
 अविचिन्त्यगुः (१००) श्रेष्ठो महाचीनक्रमेश्वरः ॥ १३ ॥
 महार्तिदमनो दान्तो महामोहहरो हरिः ।
 निपतारमा च कालेशो दिनेशो भक्तवत्सलः ॥ १४ ॥
 कन्याणकारी कनठकर्कराः कामवल्लभः ।
 व्योमचारी महान् सत्यः शम्भुरम्भोजवल्लभः ॥ १५ ॥
 सामगः पञ्चमो द्रव्यो ध्रुवो दीनजनप्रियः ।
 त्रिजटो रत्ननाड्य रत्नवत्सो रतिप्रियः ॥ १६ ॥
 कालयोगी महानादो निश्चलो दृश्यरूपधृक् ।
 गम्भीरघोषो निर्घोषो घटहस्तो महोमयः ॥ १७ ॥
 रत्नाम्बरधरो रक्तो रत्नमान्यानुलेपनः ।
 सहस्रहस्तो विजयो हरिणामी हरीश्वरः ॥ १८ ॥
 मुण्डः कुण्डी भुजङ्गेशो रथी सुरथपूजितः ।
 न्यग्रोधवासी न्यग्रोधो वृक्षकर्णः कुलन्धरः ॥ १९ ॥
 शिखी चण्डी जंटी ज्वाली ज्वालातेजोमयो विभुः ।
 हंसो हेर्मकरो हारी हरिद्रक्षासनस्थितः ॥ २० ॥
 हरिदश्वो जगद्भासी जगतां पतिरिद्विर्लः ।
 विरोचनो विलासी च विरूपाक्षो विकर्तनः ॥ २१ ॥
 त्रिनायको विभासश्च भासो भासा पतिः पतिः ।
 मतिमान् रतिमान् स्वचो विशालाक्षो विशङ्खपतिः ॥ २२ ॥

बालरूपो गिरिचरो गीर्षतिर्गोमतीपतिः ।

गङ्गाधरो गणाध्यक्षो गणमेव्यो गणेश्वरः ॥ २३ ॥

गिरीशनयनावासी सर्वनामी सतीप्रियः ।

सत्यात्मकः सत्यधरः सत्यसन्धः सहस्रगुः ॥ २४ ॥

अपारमहिमा मुक्तो मुक्तिदो मोक्षकामदः ।

मूर्तिमान् (२००) दुर्धरोऽमूर्तिस्तुष्टिरूपो लयात्मकः ॥ २५ ॥

प्राणेशो ध्यानदोऽपानसमानोदानरूपवान् ।

चपको घटिकारूपो मुहूर्तो दिनरूपवान् ॥ २६ ॥

पक्षो मास ऋतुर्वर्षा दिनकालेश्वरेश्वरः ।

अयनं युगरूपश्च कृतं त्रेतायुगस्त्रिपात् ॥ २७ ॥

ट्ठापरश्च कलिः कालः कालात्मा कलिनाशनः ।

मन्वन्तरात्मको देवः शक्रंस्त्रिभुवनेश्वरः ॥ २८ ॥

वासरोऽग्निर्यमो ऋक्षो वरुणो यादमा पतिः ।

वायुर्वैश्वानरः शैव्यो गिरिजो जलजासनः ॥ २९ ॥

अनन्तोऽनन्तमहिमा परमेष्ठी गतञ्जरः ।

कल्पान्तकलनः क्रूरः कालाग्निः कालसूदनः ॥ ३० ॥

महाप्रलयकृत् कृत्यः कृत्याशीर्भुगवर्तनः ।

कालान्तो युगधरो युगादिः शहकेश्वरः ॥ ३१ ॥

आकाशनिभिरूपश्च सर्वकालप्रवर्तकः ।

अचिन्त्यः सुपलो बालो जलाकाजलभो वरः ॥ ३२ ॥

वरदो वीर्यदो वाग्मी त्रामपतिर्वाग्मिलासदः ।

साख्येश्वरो वेदगम्यो मन्त्रेशस्तत्रनायकः ॥ ३३ ॥

जलाचारपरो नृत्यो नतितष्टो नतिप्रियः ।

अलमस्तुलमीमेव्यस्तुष्टा रोगनिवर्हणः ॥ ३४ ॥
 प्रस्कन्दनो विभागश्च नीरागो दशदिक्पतिः ।
 वैराग्यदो विमानस्यो रत्नकुम्भधरायुधः ॥ ३५ ॥
 महापादो महाहस्तो महाकायो महाशर्यः ।
 ऋग्यजुःसामरूपश्च लघाथर्वणशाखिलः ॥ ३६ ॥
 महत्तशाखी सद्बुद्धो महाकल्पप्रियः पुमान् ।
 कल्पवृक्षश्च मन्दारो (३००) मन्दाराचलशोभनः ॥ ३७ ॥
 मेरुहिमालयो माली मलयो मलयद्रुमः ।
 सन्तानकुसुमच्छन्नः सन्तानफलदो विराट् ॥ ३८ ॥
 चौराम्भोधिर्घृताम्भोधिर्जलधिः क्लेशनाशनः ।
 रत्नाकरो महामान्यो वैर्यो वैष्णधरो वणिक् ॥ ३९ ॥
 वसन्तो मारमामन्तो ग्रीष्मः कल्मषनाशनः ।
 वर्षाकालो वर्षपतिः शरदम्भोजवल्लभः ॥ ४० ॥
 हेमन्तो हेमकेयूरः शिशिरः शिशुवीर्यदः ।
 सुप्रतिः सुगतिः साधुर्विष्णुः साम्बोऽम्बिकासुतः ॥ ४१ ॥
 सारग्रीवो मद्भागजः सुनन्दो नन्दिमेवितः ।
 सुमेरुशिखरावामी सप्तपातालगोचरः ॥ ४२ ॥
 आकाशचारी नित्यात्मा विभुत्वविजयप्रदः ।
 कुलकान्तः कुलाद्रीशो विनयी विजयी विषत् ॥ ४३ ॥
 विश्वम्भरो विर्यचारी विर्यद्रूपो विर्यद्रथः ।
 सुरथः सुमतन्तुत्यो वैष्णवादनतन्परः ॥ ४४ ॥
 गोपालो गोमयो गोप्ता प्रतिष्ठायी प्रजापतिः ।

आवेदनीयो वेदाक्षो महादिव्यवपुः सुराद् ॥ ४५ ॥
 निर्जीवो जीवनो मन्त्री महार्णवनिनादभृत् ।
 वसुरावर्तनो नित्यः सर्वाग्रायप्रभुः सुधीः ॥ ४६ ॥
 न्यायनिर्वाणः शूली कपाली पद्ममध्यगः ।
 त्रिकोणनिलयश्चेत्यो बिन्दुमण्डलमध्यगः ॥ ४७ ॥
 बहुमालो महामालो दिव्यमालाधरो जपः ।
 जपाकुसुमसङ्काशो जपपूजाफलप्रदः ॥ ४८ ॥
 सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सहस्रनयनो रविः ।
 सर्वतत्त्वाश्रयो ब्रह्मो वीरवन्द्यो विभावसुः ॥ ४९ ॥
 विश्वावसुर्वसुपतिर्वसुनाथो विसर्गवान् ।
 आदिरादित्यलोकेशः सर्वगामी (४००) कलाश्रयः ॥ ५० ॥
 भोगेशो देवदेवेन्द्रो नरेन्द्रो हव्यवाहनः ।
 विद्याधरेशो विघ्नेशो यक्षेशो रक्षणो गुरुः ॥ ५१ ॥
 रक्षःकुलैकवरदो गन्धर्वकुलपूजितः ।
 अप्सरोवन्दितोऽजय्यो जेता दैत्यनिवर्हणः ॥ ५२ ॥
 गुह्यकेशः पिशाचेशः किन्नरीपूजितः कुजः ।
 सिद्धसेव्यः समान्नायः साधुसेव्यः सरित्पतिः ॥ ५३ ॥
 ललाटाक्षो विश्वदेहो नियमी नियतेन्द्रियः ।
 अर्कोऽर्ककान्तरक्षेशोऽनन्तबाहुरलोपकः ॥ ५४ ॥
 अलिपात्रधरोऽनङ्गोऽप्यम्बरेशोऽम्बराश्रयः ।
 अकारमातृकानाथो देवानामादिराकृतिः ॥ ५५ ॥
 आरोग्यकारी चानन्दविग्रहो निग्रहो ग्रहः ।
 आलोककृत् तथादित्यो वीरादित्यः प्रजाधिपः ॥ ५६ ॥
 आकाशरूपः स्वाकार इन्द्रादिसुरपूजितः ।

इन्दिरापूजितश्चेन्दुरिन्द्रलोकाश्रयस्तिर्नः ॥ ५७ ॥
 ईशान ईश्वरश्चन्द्र ईश ईकारवल्लभः ।
 उन्नतास्योऽप्युखपुरुषताद्रिचरो गुरुः ॥ ५८ ॥
 उत्पलोऽप्युच्चलत्केतुरुच्चैर्हयगतिः सुखी ।
 उकाराकारमुखितस्तयोष्मा निधिरूपयः ॥ ५९ ॥
 अनुरूसारथिश्चोष्णभानुरूकारवल्लभः ।
 ऋणहर्ता ऋतिहस्त ऋभृषणभूषितः ॥ ६० ॥
 ऐतान्न लृमनुस्यायी लृलृगण्डयुगोज्ज्वलः ।
 एणाङ्कामृतदधीनपट्टभृद् बहुगोचरः ॥ ६१ ॥
 एकचैकधरश्चैकोऽनेकधनुस्तथैवयदः ।
 एकारधीजरमण एऐश्चोष्णामृताकरः ॥ ६२ ॥
 ओंकारकारणं ब्रह्म औकारौचित्यमण्डनः ।
 ओऔदन्तालिरहितो महितो महतां पतिः ॥ ६३ ॥
 अंविद्याभूषणो भूष्यो लक्ष्मीशोऽम्बीजरूपवान् ।
 अःस्वरूपः (१००) स्वरमयः सर्वस्वरपरात्मकः ॥ ६४ ॥
 अंअःस्वरूपमन्त्राङ्गः कलिकालनिवर्तकः ।
 कर्मैकवरदः कर्मसाक्षी कल्मषनाशनः ॥ ६५ ॥
 कचध्वंसी च कपिलः कनकाचलचारकः ।
 कान्तः कामः कपिः क्रूरः कीरः केशनिघ्नदन्तः ॥ ६६ ॥
 कृष्णः कापालिकः कुब्जः कमलाश्रयणः कुली ।
 कपालमोचकः काशः काश्मीरघनसारभृद् ॥ ६७ ॥
 कृमत्किन्नरगीतेष्टः कुरुराजः कुलन्धरः ।
 कुवासी कुलकौलेशः ककाराचरमण्डनः ॥ ६८ ॥

खवासी खेटकेशनः खङ्गमुण्डधरः खगः ।
 खगेश्वरश्च खचरः खेचरीगणसेवितः ॥ ६६ ॥
 खरांशुः खेटकधरः खलहर्ता खवर्यकः ।
 गन्ता गीतप्रियो गेयो गयावासी गणाश्रयः ॥ ७० ॥
 गुणातीतो गोलगतिर्गुच्छलो गुणसेवितः ।
 गदाधरो गर्दहरो गाङ्गेयवरदः प्रगी ॥ ७१ ॥
 गिङ्गिलो गेटिलो गान्तो गकाराघरमास्करः ।
 घृणिमान् घुर्घुरारावो घण्टाहस्तो घटाकरः ॥ ७२ ॥
 घनच्छन्नो घनगतिर्घनवाहनतर्पितः ।
 डान्तो डेशो डकाराङ्गश्चन्द्रकुङ्कुमवामितः ॥ ७३ ॥
 चन्द्राश्रयश्चन्द्रधरोऽच्युतश्चम्पकसन्निभः ।
 चामीकरप्रभश्चण्डभानुश्चण्डेशवल्लभः ॥ ७४ ॥
 चञ्चककोरकोकेष्टश्चपलश्चपलाश्रयः ।
 चलत्पताकश्चण्डाद्रिश्चिवरकधरोऽचरः ॥ ७५ ॥
 चित्कलावर्धितक्षिन्त्यधिन्ताध्वंसी चवर्णवान् ।
 छत्रभृच्छलहृच्छन्दच् छुरिकाच्छिन्नविग्रहः ॥ ७६ ॥
 जाम्बूनदाङ्गदोऽजातो जिनेन्द्रो जम्बुवल्लभः ।
 जम्बारिर्जङ्घिर्दो जङ्गी जनलोकतमोपहः ॥ ७७ ॥
 जयकारी (६००) जगद्धर्ता जरामृत्युविनाशनः ।
 जगत्त्राता जगद्धाता जगद्धेयो जगन्निधिः ॥ ७८ ॥
 जगत्साक्षी जगच्चतुर्जगन्नाथप्रियोऽजितः ।
 जकागकारमुकृतो ऋजाल्लक्षाकृतिर्भट्टः ॥ ७९ ॥

१ 'खवांसी' ख पाठ । २ 'खेश्वरश्च' ख पाठ । ३ 'गदाहारः' ख, पाठः ।
 ४ 'सुधी,' ख, पाठ । ५ 'गङ्गिल ग पाठ' । ६ 'गजगण्डाहताकर,' ख पाठः ।
 ७ 'हन्' ख ग पाठः, ८ 'जङ्गिल,' ग ग, पाठः । ९ 'बोनि,' क, ख, पाठः ।

भिल्लीधरो भकारेशो भञ्जालुलिकराम्बुजः ।
 भवाचराश्रितष्टकृष्टिमासनसंस्थितः ॥ ८० ॥
 टीत्कारष्टकधारी च ठःस्वरूपष्टठाधिपः ।
 डम्भरो डामरुडिण्डी डामरीशो डलाकृतिः ॥ ८१ ॥
 डाकिनीसेवितो डाढी डढगुन्फाकुलिप्रभः ।
 णेशप्रियो णवर्णेशो णकारपदपङ्कजः ॥ ८२ ॥
 ताराधिपेश्वरस्तध्यस्तन्त्रीवादनतत्परः ।
 त्रिपुरेशस्त्रिनेत्रेशस्त्रयीतनुरधोच्चजः ॥ ८३ ॥
 तामस्तामरसेष्ट तमोहर्ता तमोरिपुः ।
 तन्द्राहर्ता तमोरूपस्तपसां फलदायकः ॥ ८४ ॥
 तुल्यादिकलनाकान्तस्तकाराचरभूषणः ।
 स्थाणुसलीस्थितो नित्यं स्याविरः स्यादिहलः स्थूलः ॥ ८५ ॥
 थकारजालुरध्यात्मा देवनायकनायकः ।
 दुर्जयो दुःखहा दाता दारिद्र्यच्छेदनो दैमी ॥ ८६ ॥
 दौर्भाग्यहर्ता देवेन्द्रो द्वादशाराब्जमध्यगः ।
 द्वादशान्तैकवसतिर्द्वादशात्मा दिवस्पतिः ॥ ८७ ॥
 दुर्गमो दैत्यशमनो दूतगो दुरतिक्रमः ।
 दुर्ध्व्यो दुष्टवंशमो दयानाथो दयाकुलः ॥ ८८ ॥
 दामोदरो दीधितिमान् दकाराचरमातृकः ।
 धर्मबन्धुधर्मनिधिधर्मराजो धनप्रदः ॥ ८९ ॥
 धनदेष्टो धनाध्यक्षो धरादर्शो धुरन्धरः ।
 धूर्जटीक्ष्णवासी च धर्मक्षेत्रो धराधिपः ॥ ९० ॥
 धाराधरो धुरीणश्च धर्मात्मा धर्मवत्सलः ।
 धरामृद्वल्लमो धर्मी धकाराचरभूषणः ॥ ९१ ॥

नेर्मप्रियो नन्दिरुद्रो (७००) नेता नीतिप्रियो नयी ।
 नलिनीवल्लभो सुत्रो नाट्यकृन्नाट्यवर्धनः ॥ ६२ ॥
 नरनाथो नृपस्तुत्यो नभोगामी नमःप्रियः ।
 नमोन्तो नमितारातिर्नरनारायणाश्रयः ॥ ६३ ॥
 नारायणो नीलरुचिर्नम्राङ्गो नीललोहितः ।
 नादेरूपो नादमयो नादविन्दुस्वरूपकः ॥ ६४ ॥
 नाथो नागपतिर्नागो नगराजाश्रितो नगः ।
 नाकस्थितोऽनेकवर्णकृत्काराक्षरमातृकः ॥ ६५ ॥
 पद्माश्रयः परं ज्योतिः पीवरांमः पुटेश्वरः ।
 प्रीतिप्रियः प्रेमकरः प्रणतार्तिभयापहः ॥ ६६ ॥
 परत्राता परध्वंसी पुरारिः पुरसंस्थितः ।
 पूर्णानन्दमयः पूर्णतेजाः पूर्णेश्वरीश्वरः ॥ ६७ ॥
 पटोलवर्णः पटिमा पाटलेशः परात्मवान् ।
 परमेशवपुः प्रांशुः प्रमत्तः प्रणतेष्टदः ॥ ६८ ॥
 अपारपारदः पीनः पीताम्बरप्रियः पविः ।
 पाचनः पिचुलः प्लुष्टः प्रमदाजनसौख्यदः ॥ ६९ ॥
 प्रेमोदी प्रतिपक्षप्रः प्रकाराक्षरमातृकः ।
 फलं भोगापवर्गस्य फलिनीशः फलात्मकः ॥ १०१ ॥
 फुल्लदम्भोजमध्यस्थः फुल्लदम्भोजधारकः ।
 स्फुटद्योतिः स्फुटाकारः स्फटिकाचलचारकः ॥ १०२ ॥
 स्फूर्जत्किरणमाली च प्रकाराक्षरपार्श्वकः ।
 बालो बलप्रियो बान्तो बिलध्वान्तहरो बली ॥ १०३ ॥
 बालादिर्वर्वरध्वंसी बब्रोलामृतपानकः ।
 बुधो बृहस्पतिर्बृहन्तो बृहदश्वो बृहद्वतिः ॥ १०४ ॥
 बपृष्टो भीमरूपश्च भामयो भेश्वरप्रियः ।

भगो भृगुर्भृगुस्थायी भार्गवः कविशेखरः ॥ १०५ ॥
 भाग्यदो भानुदीप्ताङ्गो भनाभिश्च भमावृकः ।
 महाकालो (८००) महाध्यक्षो महानादो महामतिः ॥ १०६ ॥
 महोज्ज्वलो मनोहारी मनोगामी मनोमयः ।
 मानदो मल्लहा मल्लो मेरुमन्दरमन्दिरः ॥ १०७ ॥
 मन्दारमालाभरणो माननीयो मनोमयः ।
 मोदितो मदिराहारो मार्तण्डो मुण्डमुण्डितः ॥ १०८ ॥
 महानराहो मीनेशो मेपगो मिथुनेष्टदः ।
 मदालसोऽमरस्तुत्यो मुरारिवरदो मनुः ॥ १०९ ॥
 माधवो मेदिनीशश्च मधुकैटभनाशनः ।
 माल्यवान् मेघनो मारो मेघावी मुमलापुधः ॥ ११० ॥
 मुकुन्दो मुररीशानो मरालफलदो मदः ।
 मदनो मोदकाहारो मकाराक्षरमावृकः ॥ १११ ॥
 यज्ञा यज्ञेश्वरो यान्तो योगिनां हृदयस्थितः ।
 यात्रिको यज्ञफलदो यायी यामलनायकः ॥ ११२ ॥
 योगनिद्राप्रियो योगकारणं योगिवत्सलः ।
 यष्टिधारी च यज्ञेशो योनिमण्डलमध्यगः ॥ ११३ ॥
 युपुत्सुजयदो योद्धा युगैर्धर्मानुवर्तकः ।
 योगिनीचक्रमध्यस्थो युगलेश्वरपूजितः ॥ ११४ ॥
 यान्तो यक्षकतिलको यकाराक्षरभूषणः ।
 रामो रमणशीलश्च रत्नभानू रुरुप्रियः ॥ ११५ ॥
 रत्नमाली रत्नतुङ्गो रत्नपीटान्तरस्थितः ।
 रत्नांशुमाली रत्नाढ्यो रत्नकङ्कणनूपुरः ॥ ११६ ॥

रत्नाङ्गदलसद्भाहू रत्नपादुकमण्डितः ।
 रोहिणीशाश्रयो रत्नाकरो रात्रिश्चरान्तकः ॥ ११७ ॥
 रकाराक्षररूपश्च लज्जाबीजाश्रितो लवः ।
 लक्ष्मीभानुर्लतावासी लसत्कान्तिश्च लोकभृत् ॥ ११८ ॥
 लोकान्तकहरो लामावस्त्रमो लोमशोऽलिगः ।
 लिङ्गेश्वरो लिङ्गनादो लीलाकारी ललम्बुसः ॥ ११९ ॥
 लक्ष्मीबाँझोऽकिध्वंसी लकाराक्षरभूषणः ।
 वामनो वीरवीरेन्द्रो वाचालो (६००) वाक्पतिम्रियः ॥ १२० ॥
 पाचामगोचरो वान्तो वीणावेणुधरो वनम् ।
 वाग्भवो वालिशध्वंसी विद्यानायकनायकः ॥ १२१ ॥
 वकारमातृकामौलिः शाम्भवेष्टप्रदः शुक्रः ।
 प्रशी शोभाकरः शान्तः शान्तिकृच्छमनम्रियः ॥ १२२ ॥
 शुभङ्करः शुक्लवस्त्रः श्रीपतिः श्रीपूतः श्रुतः ।
 श्रुतिगम्यः शरद्रीजमण्डितः शिष्टसेवितः ॥ १२३ ॥
 शिष्टाचारः शुभाचारः शेषः शेषालताङ्गनः ।
 शिपिविष्टः शिविः शुक्रसेव्यः शाखरमातृकः ॥ १२४ ॥
 पद्माननः पदकरकः पौडशस्त्रभूषितः ।
 पदपदस्वनसन्तोषी पदाम्नापप्रवर्तकः ॥ १२५ ॥
 पदसास्वादसन्तुष्टः पकाराक्षरमातृकः ।
 धर्मभानुः सुरभानुः सुरिभानुः सुखाकरः ॥ १२६ ॥
 समस्तदैत्यवंशघ्नः समस्तसुरसेवितः ।
 समस्तसाधकेशानः समस्तकुलशेखरः ॥ १२७ ॥
 गुरधर्मः सुपाधर्मः स्वधर्मः साक्षरेश्वरः ।
 हरित्प्रयो हरिभानुर्हविर्भृग् हव्यवाहनः ॥ १२८ ॥

हालासूर्यो होमसूर्यो हुतसूर्यो हरीश्वरः ।
 ह्रींजीजसूर्यो ह्रींसूर्यो हकाराक्षरमातृकः ॥ १२६ ॥
 कंजीजमण्डितः सूर्यः क्षोणीसूर्यः क्षमापतिः ।
 क्षुत्सूर्यः क्षान्तसूर्यश्च कंचःसूर्यः सदाशिवः ॥ १२७ ॥
 अकारसूर्यः चःसूर्यः सर्वसूर्यः कृपानिधिः ।
 शूःसूर्यश्च श्रुवःसूर्यः स्वाःसूर्यः सूर्यनायकः ॥ १२८ ॥
 ग्रहसूर्यश्च चक्षुसूर्यो क्षप्रसूर्यो महेश्वरः ।
 राशिसूर्यो योगसूर्यो मन्त्रसूर्यो मनूत्तमः ॥ १२९ ॥
 तत्त्वसूर्यः परासूर्यो विष्णुसूर्यः प्रतापवान् ।
 रुद्रसूर्यो ब्रह्मसूर्यो वीरसूर्यो वरोत्तमः ॥ १३० ॥
 धर्मसूर्यः कर्मसूर्यो विश्वसूर्यो विनायकः । (१०००)
 इतीदं देवदेवेशि मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १३१ ॥
 देवदेवस्य सयितुः सूर्यस्यामिततेजसः ।
 सर्वसारमयं दिव्यं ब्रह्मतेजोविवर्धनम् ॥ १३२ ॥
 ब्रह्मज्ञानमयं पुण्यं पुण्यतीर्थफलप्रदम् ।
 सर्वयज्ञफलैस्तुभ्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १३३ ॥
 सर्वश्रेयस्करं लोके कीर्तिदं धनदं परम् ।
 सर्वव्रतफलोद्भूतं सर्वधर्मफलप्रदम् ॥ १३४ ॥
 सर्वरोगहरं देवि शरीसारोग्यवर्धनम् ।
 प्रभावमस्य देवेशि नाम्ना सहस्रकस्य च ॥ १३५ ॥
 कल्पकोटिशतैर्वर्षेभ्यश्च शक्नोमि वर्णितुम् ।
 यं यं काममभिध्यायेद् देवानामपि दुर्लभम् ॥ १३६ ॥
 तं तं प्राप्नोति सहसा पठनेनास्य पार्वति ।
 यः पठेच्छ्रावयेद्वापि शृणोति नियतेन्द्रियः ॥ १३७ ॥

स वीरो धर्मिणां राजा लक्ष्मीवानपि जायते ।
 धनवाञ्जायते लोके पुत्रवान् राजवल्लभः ॥ १४१ ॥
 आयुरारोग्यवान् नित्यं स भवेत् संपदां पदम् ।
 रवौ पठेन्महादेवि सूर्यं संपूज्य कौलिकः ॥ १४२ ॥
 सूर्योदये रविं ध्यात्वा लभेत् कामान् यथेप्सितान् ।
 संक्रान्तौ यः पठेद् देवि त्रिकालं भक्तिपूर्वकम् ॥ १४३ ॥
 इह लोके श्रियं भुक्त्वा सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।
 सप्तम्यां शुक्लपक्षे यः पठेदस्तंगते रवौ ॥ १४४ ॥
 सर्वारोग्यमयं देहं धारयेत् कौलिकोत्तमः ।
 व्यतीपाते पठेद् देवि मध्याह्ने संयतेन्द्रियः ॥ १४५ ॥
 धनं पुत्रान् यशो मानं लभेत् सूर्यप्रसादतः ।
 चक्रार्चने पठेद् देवि जपन् मूलं रविं स्मरन् ॥ १४६ ॥
 रवीभूता महात्मीनक्रमाचारविचक्षणः ।
 सर्वशत्रून् विजित्याशु लभेन्नक्ष्मीं व्रतापवान् ॥ १४७ ॥
 यः पठेत् परदेशस्थो बहुकार्त्तनतत्परः ।
 कान्ताश्रितो वीरमयो भवेत् स शिवसन्निभः ॥ १४८ ॥
 शतावर्तं पठेद्यस्तु सूर्योदययुगान्तरे ।
 सविता सर्वलोकेशो वरदः सहसा भवेत् ॥ १४९ ॥
 बहुनात्र किमुक्तेन पठनादस्य पार्ष्णि ।
 इह लक्ष्मीं सदा भुक्त्वा परव्रामोति सत्पदम् ॥ १५० ॥
 रवौ देवि लिखेद्भूर्जे मन्त्रनामसहस्रकम् ।
 अष्टगन्धेन दिव्येन नीलपुष्पहरिद्रया ॥ १५१ ॥
 पञ्चामृतौषधीमिश्रं नृपकुपीयूषविन्दुभिः ।
 विलिख्य विधिवन्मन्त्री यन्मध्येऽर्णवेष्टितम् ॥ १५२ ॥
 गुटीं विधाय सवप्य मूलमन्त्रमनुस्मरन् ।

कन्याकर्तितमूत्रेण वेष्टयेद्रक्तलाक्षया ॥ १५३ ॥
 सुवर्णेन च संवेष्ट्य पञ्चगव्येन शोधयेत् ।
 साधयेन्मन्त्रराजेन धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे ॥ १५४ ॥
 किं किं न साधयेद् देवि यन्ममापि सुदुर्लभम् ।
 कुष्ठरोगी च शूली च प्रमेही कुक्षिरोगवान् ॥ १५५ ॥
 भगन्धरातुरोऽप्यर्शी अश्मरीवांश्च कृच्छ्रवान् ।
 मृच्यते सहसा धृता गुटीमेतां सुदुर्लभाम् ॥ १५६ ॥
 वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा च कामिनी ।
 धारयेद्गुटिकामेतां वक्षसि स्मयतर्पिता ॥ १५७ ॥
 वन्ध्या लभेत् सुतं कान्तं काकवन्ध्यापि पार्वति ।
 मृतवत्सा वहन् पुत्रान् सुरूपांश्च चिरायुषः ॥ १५८ ॥
 रणे गत्वा गुटीं धृत्वा शङ्खजिता लभेच्छ्रियम् ।
 अक्षताङ्गो महाराजः सुखी स्वपुरमाविशेत् ॥ १५९ ॥
 यो धारयेद् भुजे नित्यं राजलोकवशङ्करीम् ।
 गुटिकां मोहनाकर्षस्तम्भनोच्चाटनक्षमाम् ॥ १६० ॥
 स भवेत् सूर्यसङ्काशो महसा महसां निधिः ।
 धनेन धनदो देवि विभवेन च शंकरः ॥ १६१ ॥
 श्रियेन्द्रो यशसा रामः पौरुषेण च भार्गवः ।
 गिरा बृहस्पतिर्देवि नयेन भृगुनन्दनः ॥ १६२ ॥
 वलेन वायुसङ्काशो दयया पुरुषोत्तमः ।
 आरोग्येण घटोद्भूतिः कान्त्या पूरणेन्द्रमग्निभः ॥ १६३ ॥
 धर्मेण धर्मराजश्च रत्नं रत्नाकरोपमः ।
 गाम्भीर्येण तथाम्मोधिर्दातृत्वेन बलिः स्वयम् ॥ १६४ ॥
 मिद्ध्या श्रीभरवः साक्षादानन्देन चिदीश्वरः ।

किं प्रलापेन बहुना पठेद्वा धारयेच्छिवे ॥ १६५ ॥
 शृणुयाद् यः परं दिव्यं सूर्यनामसहस्रकम् ।
 स भवेद् भास्करः साक्षात् परमानन्दविग्रहः ॥ १६६ ॥
 स्वतन्त्रः स प्रयात्यन्ते तद्विष्णोः परमं पदम् ।
 इदं दिव्यं महत् तत्त्वं सूर्यनामसहस्रकम् ॥ १६७ ॥
 अप्रकाश्यमदातव्यमवक्तव्यं दुरात्मने ।
 अभक्ताय कुचैलाय परशिष्याय पार्वति ॥ १६८ ॥
 कर्कशायाकुलीनाय दुर्जनायाद्युद्धये ।
 गुरुभक्तिविहीनाय निन्दकाय शिवागमे ॥ १६९ ॥
 देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिपराय च ।
 कुलीनाय सुभक्ताय सूर्यभक्तिरताय च ॥ १७० ॥
 इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां वेदागमरहस्यकम् ।
 सर्वमन्त्रमयं गोप्यं गोपनीयं स्योनिषत् ॥ १७१ ॥

इति श्रीवद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यसहस्रनाम-
 निरूपणं चतुर्विंशः पटलः ॥ ३४ ॥

अथ

पञ्चत्रिंशः पटलः ।

श्रीमैरव उवाच ।

अधुना देवि उच्यामि स्तोत्रं मन्त्रनिरूपणम् ।

पञ्चमाहमयं तत्त्वं सर्वापत्तारणं ध्रुवम् ॥ १ ॥

अष्टसिद्धिमयं साध्यं सिद्धिदं बुद्धिवर्धनम् ।
 सर्वमयप्रशमनं तेजोबलविवर्धनम् ॥ २ ॥
 महादारिद्र्यहरणं पुत्रपौत्रप्रदं शिवे ।
 भोगापवर्गदं लोके रहस्यं मम पार्वति ॥ ३ ॥
 स्तोत्रस्यास्य महादेवि ऋषिर्मेक्षा समीरितः ।
 गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥ ४ ॥
 बीजं च ध्योपमाख्यातं भाया शक्तिरितीरिता ।
 प्रणवः कीलकं देवि विश्वं दिग्मन्धनं तवः ॥ ५ ॥
 भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ।

अस्य श्रीसुखस्तोत्रमन्त्रस्य, श्रीमत्ता ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, सविता
 यता, हा बीजः, ह्रीं शक्तिः, ओं कीलकः, नमो दिग्मन्धने, भोगापवर्गसि-
 द्ध्यर्थं पाठे विनियोगः ॥ ध्यानम्—

देदीप्यमानमुकुटं माणिक्यडलमण्डितम् ।
 विस्फुरालिङ्गितं ध्यात्वा स्तोत्रमेतदुदीरयेद् ॥ ६ ॥
 कल्पान्तानलकोटिप्रास्वरमुत्तं सिन्दूरपूलीजपा-
 धर्यं रत्नकिरीटिनं द्विनयनं श्वेतान्जमध्यासनम् ।
 नानाभूषणभूषितं स्मितमुत्तं रत्नाम्बरं चिन्मयं
 मूर्धं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोर्भ्यां दधानं भजे ॥ ७ ॥
 वेदाद्यं नादविन्दुस्फुरितशशिकलालङ्कृतं मधमूलं
 यो ध्यायेद्देवविद्याध्ययनमिरहितो जात्यपूष्यो दरिद्रः ।
 सद्यः स घोषिपालोज्ज्वलमुकुटलसद्रजनीराजिताङ्घ्रि-
 र्वागीशं जेष्यते द्वाक् सुरसदासि सुधापूरिताभिश्च वाग्भिः ॥ ८ ॥
 शिवाकारं वर्द्धि शशधरकलाविन्दुललितं
 विभो ध्यायेच्चित्ते मनुमुकुटरत्नं जपति यः ।

स संग्रामे जित्वा सकलरिपुसङ्घातमचिराद्

भवेत् सप्राङ् भूमौ व्रजति हि परासुस्तव पदम् ॥ ६ ॥

व्योमानलारूढमिति सरेद् यो

वामाचिविन्दीन्दुकलाभिरामम् ।

गद्यादिपद्यामृतवर्षिणी वाग्

वक्त्रे विभो तस्य करस्थिता श्रीः ॥ १० ॥

शक्तिं भक्तियुतो जपेद्यदि मनोर्मध्ये सरन् भास्करं

रोगातौ निजशक्तिकामरसिको हलारसेनालसः ।

चीरो चीर्यमयो निरामयवपुर्भूतेह भुक्त्वा त्रियं

स्वर्गस्त्रीजनवीजितः स भगवन् धामान्वयं यास्यति ॥ ११ ॥

सूर्यायेत्यभिधात्तराणि जपते यो देव मूर्धोदये

मूकः शोकयुतो महामयमयो दारिद्र्यपीडाकुलः ।

सद्यो गद्यसुपद्यसारसरला निर्याति वाणी मुक्त्वा

तस्यारोग्यतनोर्भवन्ति भगवन् वरयाः सदा संपदः ॥ १२ ॥

विश्वं विश्वमनोर्विभोऽश्वत्थगतं यो मानसे सञ्जपेद्

रात्रौ कामकलासमाहिततनुः कामातुरः कौतुकी ।

कामं हन्त तिलोत्तमोत्तमतमा कामाभिरामाऽममा

सद्यस्तस्य वशीभविष्यति महातेजस्विनो मानिनः ॥ १३ ॥

मणिमुकूटमरीचिस्फीतभास्त्रल्लाटं

कनककलशदिन्याम्भोजहस्तारविन्दम् ।

निखिलनिगमगम्यं विस्फुरालिङ्गिताङ्गं

मनसि सरमिजेष्टं सूर्यमीशं नमामि ॥ १४ ॥

भूगेशोभितप(मु)रारणभूषिताष्ट-

पत्राश्रितात्मनमुक्तेणगुराश्रविन्दौ ।

देवं निपणमुदितांशुसहस्रभास्त्रद-

देहं भजामि भगवन्तमनन्तमायम् ॥ १५ ॥

इति स्तोत्रं मन्त्रात्मकमखिलतन्त्रोद्धृतमिदं

पठेत् प्रातःस्नातो मिहिरभुवनेशस्य भवतः ।

भवेद् भोगी भूमौ विभवमहितः कीर्तिसहितः

परशान्ते विष्णोर्त्रजति परमं धाम सवितुः ॥ १६ ॥

इतीदं देवि पञ्चाङ्गं देवदेवस्य भास्यतः ।

तव स्नेहान्मयाख्यातं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥ १७ ॥

यद्गृहे वर्तते पुण्यं पञ्चाङ्गं परमात्मनः ।

सवितुः सर्वसर्वस्वं रहस्यं गुह्यमुत्तमम् ॥ १८ ॥

तद्गृहे निश्चला लक्ष्मीर्दामीव वसतिं चरेत् ।

नाप्रिभोतिर्न दारिद्र्यं न रोगो नाप्युपद्रवः ॥ १९ ॥

न राजभीतिर्नो शोकः सदा सर्वार्थसंपदः ।

इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां रहस्यं देवदुर्लभम् ॥ २० ॥

अदातव्यमभक्ताय दातव्यं च महात्माने ।

गुह्यातिगुह्यगुह्यं च सूर्यपञ्चाङ्गमुत्तमम् ॥ २१ ॥

सर्वदा सर्वथा गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।-

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यस्तोत्र-

निरूपणं पञ्चाविंशः पटलः ॥ ३५ ॥

—:०*०:—

ममाप्तं सूर्यपञ्चाङ्गम् ॥

अथ

षट्त्रिंशः पटलः ।

लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गम् ।

—:०:१:०:—

श्रीमैत्रव उवाच ।

कैलासोत्तुङ्गशिखरे रत्नराजिविराजिते ।

कल्पद्रुमवनाकीर्णे स्वर्णपापाणमण्डिते ॥ १ ॥

पद्मरागशिलामुक्ता-मणिमाणिक्यभूषिते ।

वसन्तकुसुमामोद-गन्धवाहैकवाहिनि ॥ २ ॥

नवरत्नशिलाभद्रं-पीठस्थं परमेश्वरम् ।

देवदेवं जगन्नाथं पार्वतीसहितं विश्वम् ॥ ३ ॥

वसन्तं च जपन्तं च ध्यायन्तं ब्रह्म शाश्वतम् ।

पद्मगाभरणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥ ४ ॥

कपालसट्पाङ्गकरं वराभयधरं हरम् ।

देवदानवयचेन्द्र-पिशाचोरगसेवितम् ॥ ५ ॥

गणगन्धर्वसिद्धौष-नारदारचितमव्ययम् ।

प्रसन्नवदनं देवं देवीं दृष्ट्वा महेश्वरम् ॥ ६ ॥

मण्योत्थाय सहसा बद्धाञ्जलिपुटं पुरः ।

उवाच पार्वती देवीं शिवं त्रैलोक्यनायकम् ॥ ७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

मगधन् देवदेवेश देवासुरनमस्कृतः ।
 तं शिवः सर्वलोकेशः सत्यः सच्चित्सरूपकः ॥ ८ ॥
 अनन्तः परमात्मेति त्रिजगत्कारणं प्रभुः ।
 उद्भूतिसितिकुम्भितं लयकुद् भुवनेश्वरः ॥ ९ ॥
 अनादिनिधनो देवस्त्रिगुणात्मापि निर्गुणः ।
 किं तत् परं महत्त्वं यज्जपस्यथ सन्ततम् ॥ १० ॥
 तच्च तं श्रोतुमिच्छामि ततो भक्तास्मि किङ्करी ।

श्रीभैरव उवाच ।

लक्ष्वारसहस्राणि वारितासि पुनः पुनः ।
 स्त्रीसभाधान्महादेवि पुनर्मो परिपृच्छसि ॥ ११ ॥
 भक्त्यानया प्रसन्नोऽहं तव पार्वति तत्त्वतः ।
 एतद्गह्वरं परमं वक्ष्ये गुह्यं दिवाकमाम् ॥ १२ ॥
 अयक्तव्यमिदं तवमदातव्यं महेश्वरि ।
 तव स्नेहेन वक्ष्यामि नचाख्येय महत्तमाभिः ॥ १३ ॥
 यो देवदेवो परदो लक्ष्मीनारायणो विदुः ।
 सर्गस्थितिकरो लोके प्रलयान्तकरो लये ॥ १४ ॥
 स एव परमेशानो देवपञ्चगव्यसाम् ।
 दैत्यकिन्नरयक्षेन्द्र-मनुजानलपायमाम् ॥ १५ ॥
 मत्सादिकीटपर्वन्त-जगत्त्रितयकारणम् ।
 अथर्वः सार्विकः सर्वभूतारमा परमेश्वरः ॥ १६ ॥
 तस्य देवस्य पश्चाद् पटलं पठति जिवे ।
 कवचं भस्त्रभूर्त्तं च मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १७ ॥
 मोक्षं त्रयामि देवेभि स्मरामि मनमा मदा ।
 पटाम्यहर्निशं गान्तः परमानन्दकारणम् ॥ १८ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

पञ्चाङ्गं देवदेवस्य लक्ष्मीनारायणस्य वै ।

श्रोतुमिच्छाम्यहं नाथ वक्तुमर्हसि सांप्रतम् ॥ १६ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

परमार्थप्रदं देवि पञ्चाङ्गं सर्वसिद्धिदम् ।

वक्ष्यामि परमेशस्य लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥ २० ॥

तत्रादौ पटलं वक्ष्ये मूलविद्यारहस्यकम् ।

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥ २१ ॥

अष्टमिद्धिप्रदं मघः साधकानां सुदुर्लभम् ।

तारं परा च हरितं परा लक्ष्मीस्ततोऽभिधम् ॥ २२ ॥

लक्ष्मीनागयणायेति विश्वमन्त्रे मनुः स्मृतः ।

नास्य विघ्नो नवा दोषो न भीतिर्न विपर्ययः ॥ २३ ॥

साधनान्मोक्षप्रदो मन्त्रः सर्वार्थफलदायकः ।

वर्णलक्ष्मपुरश्चर्या विनायं चास्ति दोषभारः ॥ २४ ॥

जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः ।

पुरश्चरणहीनोऽपि न मन्त्रः फलदायकः ॥ २५ ॥

षटेऽरण्ये रमशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ।

अर्धरात्रे च मध्याह्ने पुरश्चरणमाचरेत् ॥ २६ ॥

वर्णलक्ष्मं पुरश्चर्या तदर्थं वा महेश्वरि ।

एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ २७ ॥

प्रथमं गुरुदस्तेन साधकस्य कृतेषु वा ।

ततः स्वयं चरेद्वह्नीः पुरश्चर्या विधानतः ॥ २८ ॥

जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम् ।

मार्जनं तद्दशांशेन नद्दशांशेन भोजनम् ॥ २९ ॥

विना दशांशहोमेन न तत्फलमवाप्नुयात् ।
 पञ्चरत्नेश्वरीं विद्यां लक्ष्मीनारायणस्य हि ॥ ३० ॥
 जपेत् तां पञ्चभिः सार्धं पुरश्चर्याफलं लभेत् ।
 अथ मन्त्रस्य देवेशि संस्कारविधिमाचरेत् ॥ ३१ ॥
 विधिना येन सद्यस्तु साधकः सिद्धिभाग्भवेत् ।
 उत्कीलयेन्मनुं देवि ततः सञ्जीवयेत् पुनः ॥ ३२ ॥
 विद्यां शापहरीं देवि जपेत् सद्गुरुवक्ततः ।
 सिद्धं मन्त्रं जपेदन्ते पुनः संपुष्टितं चरेत् ॥ ३३ ॥
 एष योगवरो मन्त्रो योगिनां दुर्लभः कलौ ।
 अथोत्कीलनमाचरे मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ॥ ३४ ॥
 परार्णं हरितं श्रुतिं मा नाम सरूलां पठेत् ।
 पिश्वान्ते व्रणवो देवि सकृदुच्चारयेत् सुधीः ॥ ३५ ॥
 मन्त्रोत्कीलनमेतत् स्यात् सवतत्त्वमयं शिवे ।
 मन्त्रसञ्जीवनं वक्ष्ये शृणु पार्वति सादरम् ॥ ३६ ॥
 परा विभूतिर्मा तारं नामान्ये विश्वमीरितम् ।
 सञ्जीवनाख्यो गदितो मन्त्रराजो महेश्वरि ॥ ३७ ॥
 शिमेन वर्णिता विद्यां शिवे शापहरीं जपेत् ।
 वक्ष्यामि तव भक्त्याहं गुह्यां सर्वार्थदायिनीम् ॥ ३८ ॥
 तारं परा विदेवेशि ब्रह्मशापं ततः पठेत् ।
 मोक्षय-द्वयमुद्धृत्य परा मा ठद्वय जपेत् ॥ ३९ ॥
 विधेयं दुर्लभा लोके लक्ष्मीनारायणप्रिया ।
 मिद्धं मन्त्रं जपेन्मन्त्री पुनः संपुष्टितं चरेत् ॥ ४० ॥
 संपुष्टस्य मनुं वक्ष्ये सर्वागमसमुद्धृतम् ।
 विश्वमादौ मनुं पश्चाच्चाम चान्ते जपेत् मिये ॥ ४१ ॥
 संपुष्टाख्यो मनुर्देवि वर्णितोऽयं फलाप्तये ।

मन्त्रस्यास्य महादेवि वर्णितोऽत्र ऋषिः शिवः ॥ ४२ ॥
 त्रिष्टुप् छन्दो मयाख्यातं देवतापि समीरिता ।
 लक्ष्मीनारायणो देवि बीजं लक्ष्मीरुदाहृता ॥ ४३ ॥
 शक्तिः परा , तथा तारं कीलकं समुदाहृतम् ।
 भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४४ ॥
 ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ।
 येनैव ध्यानमात्रेण लक्ष्मीः सन्निधिमेष्यति ॥ ४५ ॥
 पूरणेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम् ।
 लक्ष्म्याश्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥ ४६ ॥
 तारमाभूतिबीजैस्तु षड्दीर्घान्तैर्महेश्वरि ।
 न्यामं कुर्यात् षडङ्गादि करशुद्ध्यादिपूर्वकम् ॥ ४७ ॥
 यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशामिद्विदं परम् ।
 सर्वसंमोहनं यन्त्रं वाञ्छितैकप्रदायकम् ॥ ४८ ॥
 विन्दुस्त्रिकोणं वस्त्रं वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।
 षोडशारं रघुत्तं च भृगुदेवोपशोभितम् ॥ ४९ ॥
 लक्ष्मीनारायणस्यैतच्छ्रीचक्रं परमार्थदम् ।
 लयाङ्गं देवि वक्ष्यामि भोगमोक्षफलप्रदम् ॥ ५० ॥
 वेदागमरहस्याख्यं पूजाकोटिफलप्रदम् ।
 वज्रशक्तिदण्डखड्ग-पाशयष्टिभ्यजास्ततः ॥ ५१ ॥
 शूल पूज्याः शिखे चैते बाह्यद्वारेषु सर्वदा ।
 इन्द्राग्रियममामाद-वरुणानिलवित्तदाः ॥ ५२ ॥
 मेश्वराः साधकैः पूज्या ब्रह्मानन्तादयस्ततः ।
 केशव माधवं कृष्ण गोविन्दं मधुसूदनम् ॥ ५३ ॥
 गङ्गाधरं शङ्खधरं चक्रपाणिं चतुर्भुजम् ।
 पद्मापुध कैंटभाणि घोरदंष्ट्रं जनार्दनम् ॥ ५४ ॥

वैकुण्ठं वामनं चैव पूजयेद् गरुडध्वजम् ।
 षोडशारेषु देवेशि वामावर्तेन साधकः ॥ ५५ ॥
 तत्रार्चयेन्महादेवि मन्त्री गुरुचतुष्टयम् ।
 आसिताङ्गं हसकेतुं वंशीपार्शि च पूजयेत् ॥ ५६ ॥
 वृत्तत्रयेषु देवेशि साधको गन्धपुष्पकैः ।
 संहारं रुरुकं चण्डं भूतेशं कालभैरवम् ॥ ५७ ॥
 कपालं भीषणं चैव तथा रमशानभैरवम् ।
 पूजयेत् साधकः सिद्ध्यै वसुपत्रे महेश्वरि ॥ ५८ ॥
 विष्णुं च वासुदेवं च देवं दामोदरं तथा ।
 नृसिंहं च महादेवि देवं सङ्कर्षणं तथा ॥ ५९ ॥
 त्रिविक्रमं चानिरुद्धं विश्वक्सेनं च साधकः ।
 लक्ष्मीशब्दाङ्कितं देवि वसुकोणेषु पूजयेत् ॥ ६० ॥
 गङ्गां च यमुनां चैव त्र्यम्बके सरस्वतीं तथा ।
 पूजयेद्ग्रन्थहीशकमयोगेन पार्वति ॥ ६१ ॥
 लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयेद् विन्दुमण्डले ।
 महालक्ष्मीं राज्यलक्ष्मीं सिद्धलक्ष्मीं च पूजयेत् ॥ ६२ ॥
 शङ्खं चक्रं गदां पद्मं पूजयेद् विन्दुमण्डले ।
 गन्धाक्षतप्रमूनादि-गुरुमान्यविभूषणैः ॥ ६३ ॥
 संपूजयामृतकुम्भस्यैर्विन्दुभिर्मन्त्रपूजितैः ।
 तर्पयेत् साधको देवं मकारैः पञ्चभिः परम् ॥ ६४ ॥
 लयाद्गमेतदारूपातं प्रयोगानष्ट पार्वति ।
 वक्ष्ये येन भवेत् सिद्धिर्मन्त्रस्यास्य विशेषतः ॥ ६५ ॥
 स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणौ ततः ।
 वशीकारं तथोचाटं शान्तिकं पौष्टिकं ततः ॥ ६६ ॥

एतेषां साधनं वक्ष्ये प्रयोगाणां महेश्वरि ।

एषां साधनमात्रेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ६७ ॥

(१) रवौ स्नात्वा महादेवि गत्वाश्चत्यतरोस्तलम् ।

जपेदयुतमीशानि हुनेत् तत्र दशांशतः ॥ ६८ ॥

घृतमत्स्यपटगुहजैः पुष्पैरानन्दमिश्रितैः ।

स्तम्भनं जायते सद्यो वादिवातार्कपाथसाम् ॥ ६९ ॥

(२) चन्द्रेऽर्धरात्रवेलायां गत्वा शृङ्गाटकं सुधीः ।

दिशो वद्ध्वासनं शोध्य प्राणायामं विधाय च ॥ ७० ॥

जपेन्मूलं हरिं ध्यात्वा हुत्वा देवि दशांशतः ।

घृतनागरपुष्पाग-करञ्जकुसुमानि च ॥ ७१ ॥

तर्पयित्वा दशांशेन मार्जयित्वा महेश्वरि ।

तद्भस्मना चरेद् भाले तिलकं साधकोचमः ॥ ७२ ॥

त्रैलोक्यं सहसा वृष्ट्वा मोहमेप्स्यति तन्मुखम् ।

(३) मौमे गत्वा श्मशानं च जपेदयुतसंख्यया ॥ ७३ ॥

हुनेद् दशांशतो देवि सर्पिर्गोधूमपापसम् ।

दूर्वापत्रं सासवं च मृत्पुष्पं त्रियते चणात् ॥ ७४ ॥

(४) बुधे गत्वाटवीं दूरं जपेज्-भङ्गातटे शिवे ।

अयुतं मूलमन्त्रं च हुनेत् सर्पिर्यवाकणान् ॥ ७५ ॥

दूर्वापूतासपषाक्षपत्राणि कुसुमानि च ।

रम्भापि पुरतस्तस्य सद्यः प्रादुर्भविष्यति ॥ ७६ ॥

(५) गुरौ गत्वा नदीतीरं जपेत् तत्र दशांशतः ।

हुनेदाज्येन मधुना शटीचन्द्रकरीरकान् ॥ ७७ ॥

तद्भस्मना साधितेन त्रैलोक्यं वश्यमेप्स्यति ।

(६) शुक्रेऽशोकतरुं गत्वा जपेदयुतसंख्यया ॥ ७८ ॥

हुनेत् सर्पिर्नागपटं शालिचूर्णं तुषाकुलम् ।

तर्पयेदासवाज्येक्षु-रसैर्धृक्ता दशाशतः ॥ ७६ ॥

शत्रोः शम्भुसमानस्य भवेदुच्चाटनं ध्रुवम् ।

(७) शनौ गत्वा नदीतीरं जपेदयुतसंख्यया ॥ ८० ॥

होमो दशाशतः कार्यो घृतपायसकुङ्कुमैः ।

सारणालैर्जम्बुकलैः शान्तिकं जापते क्षणात् ॥ ८१ ॥

(८) शुभर्वे शुभवारे वा गतोपवनमण्डलम् ।

जपेदयुतमीशानि हुनेदाज्येन पङ्कजैः ॥ ८२ ॥

सोत्पलं सकणं साम्लं महापुष्टिः प्रजायते ।

एतद्रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम् ॥ ८३ ॥

लक्ष्मीनारायणस्येदं सर्वस्वं परमार्थदम् ।

अदातव्यममक्रेभ्यो दुष्टेभ्यो वीरवन्दिते ॥ ८४ ॥

महावीनपटस्येभ्यो भोगदं मोचद कलौ ।

गोप्यं गुह्यतमं तत्त्वं गुह्याद्गुह्यतमं शिवे ।

आनन्दकारणं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ८५ ॥

इति श्रीवद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणपटल-
निरूपण पदत्रिंश पटल ॥ ३६ ॥

अथ

सप्तत्रिंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं गद्यपद्यंकरूपिणीम् ।

पद्यंति नित्यपूजाया लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥ १ ॥

धोसाङ्गः सवाहनः सपरिवारः सदेर्षिकः लक्ष्मीनारायणः सप्यतामिति त्रिः
सन्तर्प्य, मूलविद्याक्षरमुच्चार्य एकैकाञ्जलिना परिवारान् सन्तर्प्य,
देवर्षिपितृन् सन्तर्प्य, पूर्ववत् सूर्यागार्यत्रयं दत्त्वा (संहारमुद्रया
देवतां प्रणम्य) यागमण्डपं प्रविशेदिति सन्ध्याविधिः ॥

तत्र गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वारमभ्युक्ष्य, देहल्यप्रतश्चतुरधवृत्त-
मण्डलं विलिख्य, तत्र क्षालिताधारं संस्थाप्य, अस्त्राय फडिति साधारं
पात्रं संस्थाप्य, ॐ हृद्याय नमः इति हृन्मन्त्रेणापूर्य, ॐ तद्भीमनारायण-
सामान्यार्घ्याय नमः इत्यभ्यर्च्य "गङ्गे इति" तीर्थमावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य,
द्वारमभिषेचयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः ॥ पूर्वं गं गणपतये नमः, दक्षिणे
वां वटुकाय नमः, पश्चिमे तां क्षेत्रपालाय नमः, उत्तरे यां योगि-
नीभ्यो नमः, दक्षे गां गङ्गायै नमः, धामे यं यमुनायै नमः, ऊर्ध्वे
सं सरस्वत्यै नमः, अधो देहल्यां अस्त्राय फड इति द्वारदेवीः संपूज्य,
द्वारान्तः प्रविश्य विहितासने उपविश्य मूलेन निरीक्ष्य कवचेनाभ्युक्ष्य,
अस्त्राय फडिति सन्तारुप, पूजामण्डपं सधूपितं कृत्वा विष्टरशुद्धिं
कुर्यात् । ॐ ह्रीं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठं त्रयिः सुतलं छन्दः कूर्मो
देवता आसनशोधने धिनियोगः । प्रीं पृथिव्यै नमः, ॐ महि त्वया
धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां लोके पवित्रं
कुरु आसनम् ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिमलासनाय नमः, अनन्ताय नमः,
पद्माय नमः, पद्मनाभाय नमः, तत्रोपविश्य, तालत्रयं दत्त्वा, अपस-
पन्तु ते भूता ये भूता भुवि सस्थिताः । ये भूता विप्लकर्तारस्ते नश्यन्तु
शिवाज्ञया ॥ इति धामपार्थिव्यान्त्रयेण त्रिप्राप्त्यर्थं, नाराचमुद्रां प्रद-
र्शयेत्, इति आसनं संशोध्य गुरुं प्रणमेत् । अक्षमण्डपमण्डपकारं ध्यात्तं
येन खराखरम् ॥ तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ गुरुभ्यो
नमः परमगुरुभ्यो नमः परापरगुरुभ्यो नमः परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः
इति शिरसि संपूज्य, देवं प्रणम्य, जाह्नवीमित्याहुश्चनेन सुपुद्गावर्मेना
प्रदीपकलिकाक्षरा ग्रहपथान्तर्नीन्वा परमशिषेन सयोज्य तयोरैक्यं
यिमान्य, तदुद्धतामृतधारया तुल्यगुरुन् संतर्प्य, पुनस्तेनैव मार्गेण
झाकिन्यादिशक्तीः प्रीणयन्तीं कुण्डलिनीं स्व पदं प्राप्य वामकुक्षौ
पापपुरुषमहृष्टमात्राकारं धूम्रवर्णं ध्यान्वा, यरवल इति शोषणदादना-

सावनोत्पादनादि कुर्यात् । यं वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन शोषयेत् । रं वह्निबीजेन सतुःषष्ट्या जप्तेन दाहयेत् । वं चरुणबीजेन द्वात्रिंशद्धारजप्तेना-
सावयेत् । लमिति भूबीजेन दशधा जप्तेन शरीरं पिण्डीभूतं विधाय
प्राणप्रतिष्ठां कुर्यादिति भूतशुद्धिः ॥ ओं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं शं पं सं हं सो हंसः
हंसः मम प्राणा इह प्राणाः, १६ मम जीव इह स्थितः, १६ सर्वेन्द्रि-
याणि, १६ वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं विरं
तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः ॥ प्राणान् समर्प्य प्राणायामत्रयं
कृत्वा, पूर्वध्वाचम्य सङ्कल्पपूर्वं भ्यासं कुर्यात् ।

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणपूजामन्त्रस्य श्रीशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः,
लक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीबीजं, ह्रीं शक्तिः, ओं कीलकं, भोगापवर्गसि-
द्ध्यर्थे लक्ष्मीनारायणपूजायां विनियोगः । शिवऋषये नमः शिरसि,
त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, लक्ष्मीनारायणदेवतायै नमो हृदि, श्रीबीजाय
नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ओं कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु,
इति विन्यस्य षडङ्गादि कुर्यात् । ओं ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ओं ह्रीं श्रीं
तर्जनीभ्यां नमः । ओं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः । ओं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां
नमः । ओं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ओं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां
नमः । एवं षडङ्गन्यासः ॥ अथ (पुनः) करशुद्धिः—ओं कामरूपपी-
ठाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं जालन्धरपीठाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ।
ह्रसौः पूर्णगिरिपीठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः । ह्रीं अवन्तीपीठाय नमः
अनामिकाभ्यां नमः । श्रीं सप्तपुरीपीठाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ओं ह्रीं
ह्रसौः ह्रीं श्रीं वाराणसीपीठाय नमः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । इति कर
शुद्धिः । एवं षडङ्गन्यासः । अं अं ई ई उं ऊं ऋं ॠं यामपादादिगुल्फान्तम् ।
लं लृपं ऐं औं अं अं अं दक्षपादादिगुल्फान्तम् । के खं गं घं ङं गुल्फादिवाम-
पादमूलान्तम् । चं छं जं झं ञं गुल्फादिदक्षपादमूलान्तम् । टं ठं डं ढं नाभ्या-
दिवामयादृमूलान्तम् । तं थं दं धं नं नाभ्यादिदक्षयादृमूलान्तम् । पं फं बं मं
कट्यादिकुयन्तम् । यं रं लं वं यामस्कन्धादिवामकर्णान्तम् । शं षं सं हं
दक्षस्कन्धादिदक्षकर्णान्तम् । लंसः शिरसः पादपर्यन्तमिति त्रिव्यापयेत् ॥

अं पं यं गं घं ङं अं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, इं थं जं भं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः,
उं टं ठं डं ढं ऊं मध्यमाभ्यां नमः, एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः,
औं पं फं बं मं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अं यं रं लं वं शं पं सं हं हंसः

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, इति करन्यासः । एवं हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥

अथ मातृकान्यासः—ॐ नमः शिरसि, आं मुखवृत्ते, ईं दक्षनेत्रे,
ईं वामनेत्रे, उं दक्षकर्णे, ऊं वामकर्णे, ऋं दक्षनासापुटे, ॠं वामना-
सापुटे, लृं दक्षगण्डे, ॡं वामगण्डे, एं ऊर्ध्वोष्ठे, ऐं अधरोष्ठे,
औं ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ, औं अधोदन्तपङ्क्तौ, अं शिरसि, अः मुखे,
कं चर्मोदं दक्षबाहुसन्धिषु, खं चर्मोदं वामबाहुसन्धिषु, टं चर्मोदं दक्ष-
पादसन्धिषु, तं चर्मोदं वामपादसन्धिषु, पं दक्षपादौ, फं वामपादौ, बं
पृष्ठे, भं नाभौ, मं जठरे, यं हृदि, रं दक्षांसे, लं ककुभि, वं धामांसे, शं
हृदाविद्वत्तद्वेस्ताग्रान्तं, षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं, सं हृदादिदक्षपादा-
ग्रान्तं, हं हृदादिवामपादाग्रान्तं, लं पादादिशिरःपर्यन्तं, क्षः शिरसः
पादपर्यन्तामिति त्रिभ्यापयेत् ॥ ततः अं अं इति क्षान्तं न्यसेत् ।
अं अं इति क्षान्तं मातृकास्थानेषु न्यसेत् । अं अं इति क्षान्तं
न्यसेत् । अं अं इति क्षान्तं न्यसेत् । अं अं इति क्षान्तं न्यसेत् ।
केवलं मातृकास्थानेषु मूलं न्यसेदिति पोदा न्यासं विधाय, मूलमु-
च्चरन् देहशुद्धिं कृत्वा घटपूजां कुर्यात् । तत्र सामान्यार्घ्यस्य घामे
पिण्डुषट्कोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य, तत्र “ॐ पांठेभ्यो नमः” इत्य-
भ्यर्च्य, तत्र क्षालिताधारं संस्थाप्य रं बद्धिमण्डलाय दशकलात्मने
नमः इत्यक्षतैः संपूज्य, तत्र श्रीघटं संस्थाप्य, ब्रह्मणा च यथापूर्वं
विष्णुना च यथा पुरा । शम्भुना च यथा देवि तथा त्वां स्थाप-
याम्यहम् ॥ इति संस्थाप्य, अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः,
इति गन्धपुष्पैरभ्यर्च्य, मूलं विलोममातृकया परमात्मतेनार्प्य, सौः
सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इति संपूज्य, अस्त्रायकद्विति
कुम्भे द्रव्यं संताड्य मूलमुच्चरन् नामया विगन्धं गृहीयात् । तत्र
त्रिकोणं विलिख्य, मूलं त्रिरिष्ट्वा मूलेन प्रपूज्य, “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
सुषे शुक्रशापं मोचय मोचय अमृतं आवय आवय स्वाहा” इति
द्रव्योपरि दशधा संज्ञप्य, “ॐ सूर्यमण्डलसंभूते चण्डालयसम्भवे ।
अभार्याजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥” वैद्वाना प्रणवो यज
ब्रह्मानन्दमयं यदि । तेन सत्येन ते देवि ब्रह्मदत्त्वा व्यपोदतु ॥ पय-
माना परानन्दः पयमानः परो रसः । पयमानं परं ज्ञानं तेन त्वां

पावयाम्यहम् ॥^{१३} इति त्रिर्जप्त्वा, ओंशंश्रां अमृते अमृतोद्भवे
अमृतवपिणि अमृतं स्नायय स्नायय अंर्हो अमृतेश्वर्यं नमः, इति
द्रव्योपरि दशधा जप्त्वा, आनन्दभैरवभैरव्या ध्यात्वा दसतमलवर-
यजं आनन्दभैरवाय वषट्, इति दशधा जपेत् । ६ सुधोद्व्यै वौषट्,
इति द्रव्योपरि दशधा जप्त्वा, तत्र त्रिकोणं विलिख्य “गङ्गे न यमुने
चैव” इत्यादिना तीर्थमावाह्य, अकारादिषोडश ककारादिषोडश थका-
रादिषोडश पूर्वादित्रिकोणे न्यसेत् । मध्ये हंलं कं विलिख्य, मूलं दशधा
जप्त्वा गन्धपुष्पदूर्वाक्षतं संपूज्य, मत्स्यमुद्रादीन् शोधयेदिति द्रव्यशुद्धिः ॥

मीनोपरि धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य “ओं इयम्यकं यजामहे
सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
इति मूलं त्रिर्जप्त्वा मीनं शोधयेदिति मीनशुद्धिः ॥

मांसोपरि मुद्रानयं प्रदर्श्य, ओं प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा । यस्यास्यु त्रिषु विक्रमणेष्वधि-
पन्ति भुवनानि विश्वा ॥ इति, मूलं त्रिर्जप्त्वा मांसं शोधयेदिति
मांसशुद्धिः ॥

१ सुधारणवाय नमः, २ मणिमयदापाय नमः । अष्टदिक्षु २ नवरत्न-
 एडेभ्यो नमः, २ सुवर्णपर्वताय नमः, २ नन्दनोद्यानाय नमः, २
 कल्पयनाय नमः, २ पद्मयनाय नमः, २ विचित्ररत्नखचितभूमिकायै
 नमः, २ चिन्तामणिमण्डपाय नमः, २ नवरत्नवेदिकायै०, २ रत्न-
 सिंहासनाय०, २ उच्चैःश्वेतच्छत्राय नमः, पूर्वादिदिक्षु २ धर्मज्ञानवै-
 रागैश्वर्येभ्यो०, विदिक्षु २ अधर्माज्ञानवैराग्यानैश्वर्येभ्यो०, २ सं-
 सत्ताय०, २ र रजसे०, २ तं तमसे०, २ तत्त्वेभ्यो नमः, २
 ओं ह्रीं ह्रसौः मन्त्रवर्णभूषितकर्णिकायै०, प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०, विकृतिमय-
 केसरेभ्यो नमः, गरुडाय नमः, पञ्चाशद्वर्णयिभूषितपद्मासनाय नमः,
 मूलं सर्वतत्त्वात्मकाय श्रीयोगपीठाय नमः, इति संपूज्य देवं ध्यात्वा,
 त्रिखण्डं पुष्पगर्भितां निषद्भ्य “देवेश भक्तिमुलभ परिवारसमन्वित ।
 यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देव इहावह” ॥ इति पुष्पाञ्जलि
 लिप्या आवाहनादिका मुद्राः प्रदर्श्य, मूलं साङ्ग सदेवीक श्रीलक्ष्मीना-
 रायणदेव इहागच्छ २ इह संतिष्ठ २ इह संनिधन्स्व २ मूलं ओं ह्रीं-
 ह्रसौः आर्होर्हो हंसः लक्ष्मीनारायणप्राणा इह प्राणा ८ लक्ष्मीनारायण-
 जीव इह स्थितः ८ लक्ष्मीनारायणसर्वेन्द्रियाणि वाद्मनश्चक्षुःश्रोत्र-
 प्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति लेलिहानमुद्रया
 प्राणान् दत्त्वा, मूलं सदेवीक-लक्ष्मीनारायण इदमासनमास्थता, मूल
 विधान्ते पाद्याचमनीयमधुपक्वाचमनीयार्घ्यगन्धपुष्पाक्षत-स्नानालङ्काररत्न-
 पीठगन्धपुष्पाक्षत-धूपदीपनवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारात्रिकादीभि-
 र्येष्य प्रणम्य, मूलेन कलशामृतेन तत्त्वमुद्रया साङ्गं नवाहन सायुधं
 सदेवीकं सपरिच्छिद्दं लक्ष्मीनारायणं पूजयामि नमः तर्पयामि नमः,
 इति त्रिः सन्तर्प्य, देवाज्ञामादाय परिवारदेवताः पूजयेत् । पुष्पाञ्जलि
 दत्त्वा मूलं महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, मू० राज्य-
 लक्ष्मीश्रीपा०, मू० सिद्धलक्ष्मीश्री०, इति विन्दौ प्रथमाचरणम् ।
 ओं ह्रीं ह्रसौः गं गङ्गाश्रीपादुकां०, ओं ह्रीं ह्रसौः य यमुनाश्री०, ओं
 ह्रीं ह्रसौः सं सरस्वतीश्री०, इति त्र्यश्रे द्वितीयाचरणम् । ओं ह्रीं ह्रसौः
 शंखश्री०, ओं ह्रीं ह्रसौः चक्रश्री०, ओं ह्रीं ह्रसौः गदाश्री०, ओं ह्रीं ह्रसौः
 पद्मश्री०, इति विन्दौ तृतीयाचरणम् । मूल लक्ष्मीविष्णुश्रीपा०

ओं ह्रीं ह्रसौः लक्ष्मीवासुदेवधी० , ओं ह्रीं ह्रसौः लक्ष्मीहामोदरधी० , ओं ह्रीं
 ह्रसौः लक्ष्मीनृसिद्धधी० , ओं ह्रीं ह्रसौः लक्ष्मीसङ्कर्षणीधी० , ओं ह्रीं ह्रसौः
 लक्ष्मीत्रिविक्रमधीपादु० , ओं ह्रीं ह्रसौः लक्ष्मीअनिरुद्धधी० , ओं ह्रीं ह्रसौः
 लक्ष्मीविश्वक्सेनधी० , इति चतुर्थावरणम् । ओं ह्रीं ह्रसौः
 महाभैरवधीपा० , ॐ रुद्रभैरवधी० , ॐ चण्डभैरवधी० , ॐ भूतेश-
 भैरवधी० , ॐ कालभैरवधी० , ॐ कपालिभैरवधी० , ॐ मीपणभैरव-
 धी० , ॐ श्मशानभैरवधी० इत्यष्टश्लेषु पञ्चमावरणम् । ओं ह्रीं ह्रसौः
 अस्तिताङ्गभैरवधी० , ॐ हंसकेतुभैरवधी० , ॐ वंशीपाणिधी० , ॐ
 खगुद्धधी० , ॐ परमगुद्धधी० , ॐ परापरगुद्धधी० , ॐ परमेष्ठिगुद्धधी० ,
 इति षाट्पद्यादीशान्तं अन्तर्बृहत्तत्रये षष्ठावरणम् । ओं ह्रीं ह्रसौः केशपथी० ,
 ॐ माधवधी० , ॐ कृष्णधी० , ॐ गोविन्दधी० , ॐ मधुसूदनधी० , ॐ
 गदाधरधी० , ॐ शंखपाणिधी० , ॐ चक्रपाणिधी० , ॐ चतुर्भुजधी० , ॐ
 पद्मायुधधी० , ॐ कैटभारिधी० , ॐ घोरदंष्ट्रधी० , ॐ जनार्दनधी० , ॐ वैकु-
 ण्ठधी० , ॐ वामनधी० , ॐ गरुडध्वजधी० , इति षोडशश्लेषु सप्तमावरणम् ।
 ओं ह्रीं ह्रसौः लं इन्द्रधी० , ॐ रं वक्रिधी० , ॐ टं यमधी० , ॐ लं निर्ऋ-
 तिधी० , ॐ वं वरुणीधी० , ॐ यं वायुधी० , ॐ सं सोमधी० , ॐ
 हं ईशानधी० , ॐ ह्रीं अनन्तधी० ॐ ह्रीं ब्रह्मधी० , इति चतुरश्रेऽष्ट-
 मावरणम् । ओं ह्रीं ह्रसौः यज्ञधी० , ॐ शक्तिधी० , ॐ इण्डधी० , ॐ
 अङ्गधी० , ॐ पाशधी० , ॐ ध्वजधी० , ॐ यष्टिधी० , ॐ शूलधी० ,
 इति षाट्पद्याद्वारचक्रेषु नवमावरणम् । मूलं त्रिदशार्थं साङ्गं स्यादन्नं
 सायुधं सपरिच्छदं सलक्ष्मीकं लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयामि नमः
 तर्पयामि नमः , इति संपूज्य , त्रिः संतर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति
 दशमावरणम् ॥ ततः पुनर्नैवेद्याचमनीयताम्बूलज्योत्स्नादीन् निषेध
 देयाग्ने मालां मूलेन संपूज्य , यथाशक्त्या मूलं जप्या गुह्यातिगुह्य
 गोप्ता त्वं " इत्यादिना देवाय जपं समर्प्य , तद्गमे कपच-सहस्रना
 म-स्तपपाठान् कृत्वा तदपि देवीदेवयोः समर्प्य , साधकैः सा
 साधकः पात्रयन्दनं पुर्यात् । " यायन्न घलते दृष्टिर्पाषाण घलते

मनः । तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम्” इति पूर्णपार्श्वं दृष्ट्वा
शान्तिस्तौत्रे पठित्वा , पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा नासया पुष्पमाघ्राय , करग्रहे
सर्वदेवाकं देवं प्रापय्य , पुनर्हृत्कमलमानीय स्वयमपि लक्ष्मीनारायण-
विदितविप्रहो भूत्वा बाह्यतो वैष्णवाचारपरायणः सुखं विहरेत् ।
संहारमुद्रया च प्रणमेत् ।

इति श्रीदेवदेवस्य लक्ष्मीनारायणस्य ते ।

पद्मतिर्नित्यपूजाया बलिता, गोपितां कुरु ॥

गुह्यं गोप्यमिदं तत्त्वं पूजासारं महेश्वरि ।

गोपयेद् वैष्णवः सत्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणपूजापद्म-
तिनिरूपण सप्तत्रिंश पटलः ॥ ३७ ॥



अथ

अष्टाविंशः पटलः ।

—०-४-८—

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ।

कवचं मन्त्रगर्भं च वज्रपञ्जरकारुषया ॥ १ ॥

श्रीवज्रपञ्जरं नाम कवचं परमाद्भुतम् ।

रहस्यं सर्वदेवानां साधकानां विशेषतः ॥ २ ॥

यं धृत्वा भगवान् देवः प्रसीदति परः पुमान् ।

यस्य धारणमात्रेण ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ३ ॥
 ईश्वरोऽहं शिवो भीमो वासवोऽपि दिवस्पतिः ।
 सूर्यस्तेजोनिधिर्देवि चन्द्रमास्तारकेश्वरः ॥ ४ ॥
 वायुश्च बलवांल्लोके वरुणो यादसांपतिः ।
 कुबेरोऽपि धनाध्यक्षो धर्मराजो यमः स्मृतः ॥ ५ ॥
 यं धृत्वा सहसा पिप्पुः संहरिष्यति दानवान् ।
 जघान रावणादींश्च किं वक्ष्येऽहमतः परम् ॥ ६ ॥
 कवचस्त्रास्य सुभगे कथितोऽयं मुनिः शिवः ।
 त्रिष्टुप् छन्दो देवता च लक्ष्मीनारायणो मतः ॥ ७ ॥
 रमा बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि ।
 भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोग इति स्मृतः ॥ ८ ॥
 पूर्येन्दुवदनं पीतगसनं कमलासनम् ।
 लक्ष्म्या श्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥ ९ ॥
 ओं नामुदेवोऽवतु मे मस्तकं सशिरोरुद्धम् ।
 ह्रीं ललाटे सदा पातु लक्ष्मीपिप्पुः समन्ततः ॥ १० ॥
 ह्रौं नेत्रेऽगताल्लक्ष्मीगोविन्दो जगतां पतिः ।
 ह्रीं नामां सर्वदा पातु लक्ष्मीदामोदरः प्रभुः ॥ ११ ॥
 श्रीं मुखं सततं पातु देवो लक्ष्मीत्रिविक्रमः ।
 लक्ष्मी कण्ठं सदा पातु देवो लक्ष्मीजनार्दनः ॥ १२ ॥
 नारायणाय बाहू मे पातु लक्ष्मीगदाग्रजः ।
 नमः पाशो मदा पातु लक्ष्मीनन्दकनन्दनः ॥ १३ ॥
 श्रं श्रं श्रं पातु वक्षो ओं लक्ष्मीत्रिपुरेश्वरः ।
 उं उं श्रं श्रं पातु बुद्धिं ह्रीं लक्ष्मीगरुडध्वजः ॥ १४ ॥
 लृं लृं लृं पातु पृष्ठं ह्रौं लक्ष्मीनृसिंहकः ।
 ओं ओं श्रं श्रं पातु नाभिं ह्रीं लक्ष्मीविष्णुधरः ॥ १५ ॥

कंखंगंधं पातु श्रीं लक्ष्मीकैटभान्तकः ।

चंछंजंभं पातु शिश्रं लक्ष्मी लक्ष्मीश्वरः प्रभुः ॥ १६ ॥

टंठंठं कटिं पातु नारायणाय नायकः ।

तंथंदंघं पातु चोरु नमो लक्ष्मीजगत्पतिः ॥ १७ ॥

पंफंनंभं पातु जानू ओंही लक्ष्मीचतुर्भुजः ।

यंरंलंघं पातु जडे हसौः लक्ष्मीगदाधरः ॥ १८ ॥

शंपंमंहं पातु गुल्फौ द्वीथ्री लक्ष्मीरथाङ्गभृत् ।

ळंक्षः पादौ सदा पातु मूलं लक्ष्मीसहस्रपात् ॥ १९ ॥

डंजंणंनंभं मे पातु लक्ष्मीशः सकलं वपुः ।

इन्द्रो मां पूर्वतः पातु वह्निर्वह्नौ सदावतु ॥ २० ॥

यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम् ।

वरुणः पश्चिमेऽन्यान्मां वायव्येऽवतु मां भरतु ॥ २१ ॥

उत्तरे धनदः पायादैशान्यामीश्वरोऽवतु ।

वज्रशक्तिदण्डखड्ग-पाशवष्टिध्वजाङ्किताः ॥ २२ ॥

सशूलाः सर्वदा पान्तु दिगीशाः परमार्थदाः ।

अनन्तः पालधो नित्यमूर्ध्वं ब्रह्मावताश्च माम् ॥ २३ ॥

दशदिक्षु सदा पातु लक्ष्मीनारायणः प्रभुः ।

प्रभाते पातु मां त्रिष्णुर्भयाह्ने वासुदेवकः ॥ २४ ॥

दामोदरोऽवतात् मायं निशादौ नरासिंहकः ।

सङ्कर्षणोऽर्धरात्रेऽन्यात् प्रभातेऽन्यात् त्रिविक्रमः ॥ २५ ॥

अनिरुद्धः सर्गकालं त्रिश्चरमेनश्च सर्गतः ।

रणे राजकुले द्यूते विनादे शत्रुसङ्कटे ।

ओंहीहमौः हींथ्रीमूलं लक्ष्मीनारायणोऽवतु ॥ २६ ॥

ओंओंओंरणराजचौररिपुतः पायाध मां केशवः

हींहींहींहट्टदाहर्माः ह्रमहर्मा वहेर्वतान्माधवः ।

द्वीद्वीद्वीजलपर्वताग्रभयतः पायादनन्तो विभुः

श्रीश्रीश्रीशशशाललं प्रतिदिनं लक्ष्मीधवः पातु माम् ॥

इतीदं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम् ।

लक्ष्मीनारायणस्येष्टं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ २८ ॥

सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वसारस्वतप्रदम् ।

लक्ष्मीसंवननं तत्त्वं परमार्थरसायनम् ॥ २९ ॥

मन्त्रगर्भं जगत्सारं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ।

दशवारं पठेद्रात्रौ रतान्ते वैष्णवोत्तमः ॥ ३० ॥

स्वप्ने वरप्रदं पश्येन्नलक्ष्मीनारायणं सुधीः ।

त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं कवचं मन्मुखोदितम् ॥ ३१ ॥

स याति परमं धाम वैष्णवं वैष्णवोत्तमैः ।

महाचीनपदस्थोऽपि यः पठेदात्मचिन्तकः ॥ ३२ ॥

आनन्दूपूरितस्तूर्णं लभेद् मोक्षं स साधकः ।

गन्धाष्टकेन विलिखेद्रवौ भूजे जपन्मनुम् ॥ ३३ ॥

पीतल्लप्रेण संवेष्ट्य सौवर्णेनाथ वेष्टयेत् ।

धारयेद्दुटिकां मूर्ध्नि लक्ष्मीनारायणं स्मरन् ॥ ३४ ॥

रणे रिपून् त्रिजित्पाशु कन्याणी गृहमाविशेत् ।

वन्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥ ३५ ॥

मा वधीयान् कण्ठदेशे लभेत् पुत्रांश्चिरायुषः ।

गुरूपदेशतो भृता गुरुं ध्यात्वा मनुं जपन् ॥ ३६ ॥

वर्णलक्ष्मिपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ।

बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य पार्वति ॥ ३७ ॥

विनानेन न मिद्धिः स्यान्मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।

सर्वागमरहस्याढ्यं तच्चात् तत्त्वं परात् परम् ॥ ३८ ॥

अमङ्गाय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने ।
 दीचिताय कुलीनाय स्वाशिष्याय भद्रात्मने ॥ ३६ ॥
 महाचीनपदस्थाय दातव्यं कवचोचमम् ।
 गुह्यं गोप्यं महादेवि तत्तमीनारायणप्रियम् ।
 वज्रपञ्जरकं वर्म गोपनीयं स्वयोनिवद् ॥ ४० ॥

इति श्रीकृष्णायाम्ने तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायण-
 कवचनिरूपणमष्टाविंशः पटलः ॥ ३८ ॥

अथ

एकोनचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि विद्यां साहस्रनामिकीम् ।
 भोगदां मोक्षदां लोके लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥ १ ॥

श्रीमैरवी ।

भगवन् कुरुणाम्भोषे लक्ष्मीनारायणस्य मे ।
 भोगापवर्गदं दिव्यं वद नामसहस्रकम् ॥ २ ॥
 सर्वमश्रमयं तत्त्वं सर्वपूजाफलप्रदम् ।

सर्वागमरहस्याढ्यं सर्वदेवैकवन्दितम् ॥ ३ ॥

श्रीमैग्व उवाच ।

एतद्रहस्यं परमं मन्त्रनामसहस्रकम् ।

लक्ष्मीनारायणस्येष्टं सर्वस्य तच्चतो मम ॥ ४ ॥

गुह्यं गोप्यतमं देवि सुखदं धर्मवर्धनम् ।

लक्ष्मीसंयननं लोके परत्र परमार्थदम् ॥ ५ ॥

महाचीनपदव्यानां कौलिकानामभीष्टदम् ।

उपपातकपापानां शमनं दमकारकम् ॥ ६ ॥

सर्वतीर्थफलोद्भक्तं सर्वयज्ञफलप्रदम् ।

सर्वदेवस्तुतं साध्यं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ७ ॥

अवाच्यं मार्गहीनानामश्रव्यं दुष्टचेतसाम् ।

वैष्णवः कौलिकश्चेष्टः पठेन्नमसहस्रकम् ।

गुरुपदेशतो देवि सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ८ ॥

अथ श्रीलक्ष्मीनारायणसहस्रनामपाठस्य , श्रीशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीं वीजं, ह्रीं शक्तिः, उँ फीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थं सहस्रनामपाठे विनियोगः । ध्यानम्—

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलैर्मुद्दिभ्रते

दैत्यान् दारयते बलिं छलयते चित्रघणं कूर्धते ।

पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते

स्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

उल्लङ्घीविष्णुरीशानो लक्ष्मीकान्तो विनायकः ।

विश्वम्भरो विश्वनाथो विश्वद्विष्यद्वदनः ॥ १ ॥

लक्ष्मीरानो महात्मा च परमात्मा परापरः ।

अपारविभयो भव्यो भवभूतिमयो भवः ॥ २ ॥

लक्ष्मीधरो महींल्लक्ष्मीदेवो लक्ष्मीभवोत्तमः ।
 लक्ष्मीधराधरो लक्ष्मीधाराधरसमद्युतिः ॥ ३ ॥
 विशुतो विकलो व्यग्रो ॥ विलासी गीतवद्भयः ।
 विद्याधरप्रियो विद्यावादी विद्याविशारदः ॥ ४ ॥
 पटभृत् पाटलघोतः पीतपटधरो भयः ।
 भाग्यवान् भोगदो भार्गो भृगुमावविवर्धनः ॥ ५ ॥
 लक्ष्मीकौलेश्वरो लक्ष्मीशुद्धो लक्ष्मीविभावसुः ।
 लक्ष्मीवीरेश्वरो लक्ष्मीधन्यो लक्ष्मीविभाकरः ॥ ६ ॥
 अचिन्त्यो नित्यसंयोगी संयमी यमभीतिहृत् ।
 यामिनीशप्रियकरो राहुध्वंसी विषापहः ॥ ७ ॥
 धीरो भ्रमहरो भीमो भीमास्यो भीमवद्भयः ।
 हारकङ्कणभूषाढ्यो मौलिमान् नृपराक्षितः ॥ ८ ॥
 किङ्किणीरवसन्तुष्टो चंशीवादनतत्परः ।
 स्थाणुरूपधरगतिधारुवक्तो जयी नयी ॥ ९ ॥
 लक्ष्मीविनयबॉल्लक्ष्मीजयबॉल्ललिताकृतिः ।
 लक्ष्मीनेत्रवशी लक्ष्मीहासवश्यो विनर्तकः ॥ १० ॥
 नाट्यप्रियो नटो नन्दी सर्ववित् सर्वसारभृत् ।
 वासवो गोप्यमार्गेष्टो वैष्णवाचारतत्परः ॥ ११ ॥
 आत्मा परात्मा ज्ञानात्मा लोकाध्यक्षः सुरेश्वरः ।
 सत्यः स्तुत्यः शुचिर्नित्यो नित्यात्मा नित्यदर्शनः ॥ १२ ॥
 पञ्चनादमयोऽनन्तः पञ्चमाचारवद्भयः ।
 पञ्चमस्वरमङ्गीतः कीर्तिदो मोहनाशनः ॥ १३ ॥

लक्ष्मीपरः शुभोल्लक्ष्मीशक्तिभृद् भक्तितोषितः ।

लक्ष्मीयोगीश्वरो' लक्ष्मीयोगदो भोगिनायकः ॥ १४ ॥

लक्ष्मीलोकेश्वरो लक्ष्मीवसुर्लक्ष्मीमनोहरः ।

अचिन्त्यमहिमा(१००)ऽचिन्त्यगरिमा धोरनिखनः ॥ १५ ॥

सुखा सुखप्रदो दिव्यरूपो देवेश्वरेश्वरः ।

कामदेवो वैद्यवैद्यो' वेदविद् वेदनायकः ॥ १६ ॥

अप्यः सामगीतज्ञो यजुर्गङ्गाधुजां-पतिः ।

याज्ञिको यमिनां-प्राता त्रिलोकजनकोऽजरः ॥ १७ ॥

कामप्रदः कामिवरः कमनीयाकृतिः कुरुः ।

लक्ष्मीपृथुर्वसुप्रीतो लक्ष्मीश्रीदः श्रियःपतिः ॥ १८ ॥

लक्ष्मीकामो लक्ष्मणेशो लक्ष्मीरामोऽतिसुन्दरः ।

अनिर्वर्तो च निःसङ्गो निर्भयो निरुपद्रवः ॥ १९ ॥

निराभामो निराधारो निर्लेपो निरहङ्कृतिः ।

निराश्रयो निर्गुणश्च गुणातीतो गणेश्वरः ॥ २० ॥

ब्रह्मस्वरूपो ब्रह्मज्ञो बृंहणो ब्रह्मवर्धनः ।

महाकृत्युर्गङ्गावपुर्वराहो यज्ञनायकः ॥ २१ ॥

महारुद्रो महादेवो माधवो मधुसूदनः ।

लक्ष्मीनिरञ्जनो लक्ष्मीसिद्धिदः सिद्धिवर्धनः ॥ २२ ॥

लक्ष्मीश्रीवत्सवचाश्च लक्ष्मीकौस्तुभभूषितः ।

सर्वलोकधरो दान्तो दन्तिदन्तायुधो दमी ॥ २३ ॥

अप्रमेयभातिः शान्तः शमी कामो कृतागमः ।

महाकर्मा महावीरो मकारशिवपूजितः ॥ २४ ॥

याममार्गरमोद्विष्टः सर्वाचारैकैमध्यगः ।

पांसाहारी नित्यसङ्गी मीनासवरसाकुलः ॥ २५ ॥
 मृद्राप्रियो रतानन्दरतो रतिपतिप्रियः ।
 अघोरदेवो दैत्यारिर्जितदेवो दिवाकरः ॥ २६ ॥
 निशानाथोऽमृतमयो नवग्रहसमर्चितः ।
 सत्स्वरूपो विरूपाक्षो विभाकरशतग्रमः ॥ २७ ॥
निग्रहो विग्रही वामो वारांनिधिनिवासकः ।
 पीनबाहुः स्थूलपादो दीर्घचक्षुरलंभुजः ॥ २८ ॥
 पादामितक्रमातीतः सत्यसन्धः सनातनः ।
 लक्ष्मीसनातनो लक्ष्मीधर्माध्यक्षो घनेश्वरः ॥ २९ ॥
 लक्ष्मीधनप्रदो (२००) लक्ष्मीधर्मभागी च धर्मवान् ।
 वीरहा पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्प्रभुः ॥ ३० ॥
 पद्मासनो ब्रह्ममयो विसयी विगतस्वयः ।
 समानः समदृष्टिश्च विषमो विषमेक्ष्णः ॥ ३१ ॥
 चतुर्मूर्तिस्त्रिमूर्तिश्च चिन्तितश्चिञ्चिणीपतिः ।
 सहस्रबाहुः चणेशो मातृणो बलिजां पतिः ॥ ३२ ॥
 सर्वन्यायी सर्वमुखः सर्वमध्यगतः सत्ता ।
 चक्रार्चितो नक्रपतिर्वरुणः शक्रसोदरः ॥ ३३ ॥
 दर्पहा सर्पशयनः सर्पाशनेपरप्रदः - ।
 अमानो मानदो मान्यो मानवेन्द्रो मनूतमः ॥ ३४ ॥
 मनुवरयोऽमराध्यक्षो लक्ष्यो लोकैकरक्षकः ।
शोकहा दुर्गमो दृष्टो बलिहा कलिनाशनः ॥ ३५ ॥
 शुभाक्षो मदिराचीवः शुभकृत् शोभनाकृतिः ।
 अतिथिस्तिथिनाथश्च नक्षत्रपरिवेषणः ॥ ३६ ॥

चतुर्बाहुश्चतुःश्रोत्रो विश्रवा विलयप्रदः ।

प्रलयान्तकरः प्राज्यो जननीजनकप्रियः ॥ ३७ ॥

यशस्वी श्रीधरः शान्तः शङ्काशतविनाशकः ।

अक्रूरवरदः क्रूरः कीरवाग् गणनायकः ॥ ३८ ॥

सुवर्णमुकुटो मारो मारसर्मणिभूषणः ।

मात्रिको मञ्जुलो मन्त्री मात्रिकेष्टवरप्रदः ॥ ३९ ॥

लक्ष्मीवितर्कवाँल्लक्ष्मीसुन्दरो बन्धुरोऽभयः ।

अर्जितः सुखितस्तारस्तार्तीयः कार्तवीर्यकः ॥ ४० ॥

लक्ष्मीपद्मधरो लक्ष्मीचन्द्रहासो विकत्थनः ।

लक्ष्मीगोवर्धनधरो लक्ष्मीकम्बुधरो विराट् ॥ ४१ ॥

स्कन्दाश्रयो रिपुध्वंसी देवसेनाधिनायकः ।

अनुकूलोऽनुकूटश्च सानुमान् सोमसुन्दरः ॥ ४२ ॥

तामसः सात्त्विकः सभ्यः (३००) सोमराजो मरीचिमान् ।

अर्चिष्मान् विकलः कुन्धकन्धः सज्जनपोषकैः ॥ ४३ ॥

विराजो वामनो वेणुर्वानरो वारिवाहनः ।

वान्मीकिवरदो वन्दी वन्द्यो बन्धूकसन्निभः ॥ ४४ ॥

वर्णेश्वरो वर्णमाली वनमालातिमुन्दरः ।

भृगुर्भास्वद्रूपमोक्ता कर्ता हर्ता शतक्रतुः ॥ ४५ ॥

अतुन्यः कोमलः कोपी रमणो मणिकुण्डलः ।

लक्ष्मीकेयूरवाँल्लक्ष्मीमणिदामविराजितः ॥ ४६ ॥

लक्ष्मीनूपुरवाँल्लक्ष्मीप्रकामान्यत्रिभूषणः ।

लक्ष्मीगोघातुलित्राणो लक्ष्मीसौवर्णकङ्कणः ॥ ४७ ॥

लक्ष्मीविराजितो लक्ष्मीविप्रिधामरणोज्ज्वलः ।

ककारादिचकारान्तविद्याभूषणभूषितः ॥ ४८ ॥

अकाराद्यवरस्फीतो निःशेषस्वरमण्डितः ।

वर्णमान्यो महाविद्यामातृकाचरतच्चवान् ॥ ४९ ॥

लक्ष्मीकामेश्वरो लक्ष्मीकामुको निर्जरेश्वरः ।

कलावान् कीर्तिमान् कृतः कुम्भाण्डप्रत्यहारकः ॥ ५० ॥

केशान्तकः कालसूत्र कारकः कण्ठा कठी ।

क्रीतः कुञ्जः कम्बुधरः कलकण्ठः कुलालकः ॥ ५१ ॥

कुलाध्यक्षः कुलाचारी कुलाकुलपदार्चितः ।

करञ्जकः कर्तरीशः कनकः कर्तरीकरः ॥ ५२ ॥

कलङ्करहितः कोकः कोकशोकनिवर्हणः ।

कपिलः कलशी कोलः कालिकः कुलमानसः ॥ ५३ ॥

लक्ष्मीकुलाकुलो लक्ष्मीकुलजः कर्मवर्धनः ।

लक्ष्मीकाशीश्वरो लक्ष्मीनवनाथविनायकः ॥ ५४ ॥

लक्ष्मीकनिष्ठो निष्पिष्टो लक्ष्मीयोगीन्द्रयोगदः ।

खपरः खेचरः खेटः खगगामी खलान्तकः ॥ ५५ ॥

खरूपः खगरूपश्च खनित्रः खेटनायकः ।

खगायुधः खण्डधारी खञ्जनेक्षणभञ्जनः ॥ ५६ ॥

खरप्त्रंसी खरारावः खर्बुराकारभीषणः ।

खंखटोलः खगगतिः खेचरेश्वरसेवितः ॥ ५७ ॥

खेचरीगणसेव्यश्च खण्डगुद्रानियन्त्रितः ।

खड्गवृक्षः खड्गपालः खेतः खवर्यभूषणः (४००) ॥ ५८ ॥

लक्ष्मीखेशः स्लोकरूपो लक्ष्मीमास्वरमूर्तिमान् ।

लक्ष्मीखड्गाङ्गमृद्वलक्ष्मीखेचरः स्तारमलेपितः ॥ ५९ ॥

लक्ष्मीचितामिनिलयो लक्ष्मीभस्मीकृतानलः ।

लक्ष्मीभूतिप्रदो लक्ष्मीज्योतिष्मान् गाक्षराश्रितः ॥ ६० ॥

लक्ष्मीगीतः स्वरालापी गोपतिर्गोकुलेश्वरः ।

गङ्गाधरमियो गोष्ठी गोपालो गन्धर्वधनः ॥ ६१ ॥

गन्धवाहप्रियो गीतो गीतिज्ञो गीतलालसः ।

गुञ्जाहारप्रियो गण्डी गुरुर्गोवाहनोऽगर्दः ॥ ६२ ॥

गाम्भीर्यवान् गुरुतरो गुरुशब्दविवर्धनः ।

गुरुभक्तिमियो गोलो गण्डशैलनिवासकः ॥ ६३ ॥

गर्जन्नादो गोत्रपतिर्गोलमार्गप्रियोऽङ्गवान् ।

निरङ्गो गजवक्त्रेशो गणनायकनायकः ॥ ६४ ॥

गन्धर्वनाथवरदो गगनेचरपूजितः ।

गर्महीनो गर्मवाही गुण्यो गुणसागरः ॥ ६५ ॥

गुणातीतवर्गुण्यो गुप्तमार्गप्रवर्तकः ।

गुप्तमन्त्रप्रियो गोप्यो गुह्यो गुह्यकवल्लभः ॥ ६६ ॥

गोपीतो गिरिनाथश्च गिरिधारी जगन्निधिः ।

लक्ष्मीप्रियः प्रियः प्रीतो लक्ष्मीगरुडवाहनः ॥ ६७ ॥

लक्ष्मीकपोतनिलयो लक्ष्मीकल्पद्रुमो रविः ।

लक्ष्मीसन्तानकः सारो लक्ष्मीसारो लतापतिः ॥ ६८ ॥

लक्ष्मीप्राप्तोऽमुलक्ष्मा च लक्ष्मीसागरनन्दनः ।

घृणी घृणिमयो घृष्टो घुसृणारक्त ईश्वरः ॥ ६९ ॥

घृणामयोऽवहर्ता च घृणिनाथो धवर्णभारु ।

लक्ष्मीचिन्तामणिः सार्धुर्लक्ष्मीवीरो वरोचमः ॥ ७० ॥

लक्ष्मीचतुर्भुजो लक्ष्मीविश्वनाथो विनायकः ।

हवर्णोऽनन्तरूपश्च आनुज्ञो षोणरूपवान् ॥ ७१ ॥

। 'गव.' क. अ. 'गमः' घ. छ. पाठः । २ 'लक्ष्मीचिन्तामणिमलः' ग. पाठः ।

। 'दागतरूपश्च षोणश्च' क. पाठः ।

जगन्नायो जगद्भर्ता जगत्कर्ता जगत्स्थितिः ॥ ८३ ॥

जगत्क्षयकरो जेता जगतां पतिरुत्तमः ।

जगत्स्वामी जगद्धाता जगत्संहारकारकः ॥ ८४ ॥

जीवात्मा परमात्मा च जगद्भूतिप्रदो भवः ।

जगद्गुणी जगत्स्तुत्यो जगदानन्ददायकः ॥ ८५ ॥

जगत्सन्तोषभूतात्मा जगत्क्रोधदयान्वितः ।

जगद्दीप्तिकरो वेदोपासितो जगदीश्वरः ॥ ८६ ॥

जवी जवान्वितो जारो जगदाहम्वरप्रदः ।

जगत्सेव्यो जगत्प्रीतो जगदिष्टो जगन्मयः ॥ ८७ ॥

जृम्भणो जटिलो जीवो जम्भारातिवरप्रदः ।

जामाता जलधेर्जान्तो जटामुकुटमण्डितः ॥ ८८ ॥

जितारिर्जयदोऽजेयो जयकुट्टीरतापनः ।

लक्ष्मीकुचतटासीनो लक्ष्मीनयनगोचरः ॥ ८९ ॥

भलरीभोक्तृतो भ्राडी भण्डी शण्डप्रतापनः ।

भ्राङ्गारी भङ्गतिर्भिद्भीरवो भ्राङ्गारिन्दूपुरः ॥ ९० ॥

लक्ष्मीवरो (६००) महालक्ष्मीसेवितो देववन्दितः ।

अकारो अरलो अशो अवर्णामृतरूपवान् ॥ ९१ ॥

लक्ष्मीस्वभूः स्वर्गपतिर्लक्ष्मीवन्यो विधुन्तुदः ।

टैकारो टङ्कहस्तश्च टान्तष्टीत्कारकूजितः ॥ ९२ ॥

लक्ष्मीदेवो देवदेवो लक्ष्मीदान्तः कृपानिधिः ।

ठकुरो ठालको ठास्यो ठवर्णसुषमानिधिः ॥ ९३ ॥

लक्ष्मीविधुर्वितर्काख्यो चैनतेयध्वजो ध्वजः ।

डमरुडामरेशानो डकाराघरमण्डितः ॥ ९४ ॥

१ 'प्राता' क पाठः । २ 'प्रादो' क पाठः । ३ 'टकारो' क. 'गंकारो' ख. पाठः ।

४ 'लक्ष्मी' क ख. पाठः ।

लक्ष्मीपतिः पावराङ्गो लक्ष्मीनायकनायकः ।
 ढकारवाग् ढकमेधो ढकासुरनिग्रदनः ॥ ९५ ॥
लक्ष्मीजेता जयकरो लक्ष्मीशो लम्बमूर्धजः ।
 लक्ष्मीजगत्स्वितर्लक्ष्मीशौरिल्लक्ष्मीगदाधरः ॥ ९६ ॥
 खान्तो खदर्शको खेशो खषर्णामृतसाधितः ।
 लक्ष्मीदामोदरो लक्ष्मीप्राणो लक्ष्मीरथाङ्गभृत् ॥ ९७ ॥
 तुन्योऽतुन्यो महातुन्यचित्तस्तारार्णमण्डितः ।
तौतुलस्तुलसीनाथस्तपन्नो मन्त्रनायकः ॥ ९८ ॥
 तपःफलप्रदस्ताम्ररूपोऽंतुलपराक्रमः ।
 तृटिरूपस्तुटिगतिस्तपस्वी तापसप्रियः ॥ ९९ ॥
 तुहिनांशुस्तुहिनजस्तुषारकरशोभितः ।
 तुरीसेव्यस्तुलामध तकाराधरमण्डनः ॥ १०० ॥
 लक्ष्मीशङ्खायुधो लक्ष्मीनन्दकेशस्तवर्णभृत् ।
स्यविरः स्थूलगात्रश्च स्याणुसेव्यस्वशन्दकृत् ॥ १०१ ॥
 स्यालीरसप्रियो स्थूलः स्थकारेश्वर ईश्वरः ।
 लक्ष्मीजीवेश्वरो लक्ष्मीधरो लक्ष्मीनृसिंहकः ॥ १०२ ॥
 दयावान् धुपतिर्दधो धृतो दम्भविनर्मितः ।
 दारिद्र्यहा दुःखहर्ता दीर्माग्यक्षयकृत् दयी ॥ १०३ ॥
दीनो दीनप्रभुर्दम्भी दयितोदयवाञ्छकः ।
 दानकृद् दातृफलदो दनुजेन्द्रक्षयह्वरः ॥ १०४ ॥
 दैत्यहा दैत्यदर्पघ्नो दर्पवादिक्षयंकरः ।
 दारप्रियो दीर्घनखो दुष्टासुरनिग्रदनः ॥ १०५ ॥
देवदेवो यशोवन्द्यो दकाराधरमण्डितः (७००) ।
 लक्ष्मीदयाकरो लक्ष्मीदेवो लक्ष्मीदयानिधिः ॥ १०६ ॥

धनदो धनकृद्भ्यो धनदेशो धनप्रदः ।
 धृतिमान् धर्मवान् धर्मी धर्मकर्मविचक्षणः ॥ १०६ ॥
 धर्माध्यक्षो धनाध्यक्षो धवलो धैर्यवान् धनी ।
 धीरो धैर्यकरो धर्मदक्षो धनदपूजितः ॥ १०७ ॥
 लक्ष्मीधनी महालक्ष्मीधनो लक्ष्मीमनोमवः ।
नवीनो नूतनो नम्रो नटनो नाट्यतोषितः ॥ १०८ ॥
 नगो नागनगश्रेष्ठो नृगम्यो नागमण्डनः ।
नृसिंहो नृवरोऽनन्तो नरनारायणो नवः ॥ १०९ ॥
 नागराजो नागपतिर्नागान्तकध्वजोऽनलः ।
 नगारूढो निम्ननाभिर्नन्दिसेव्यो नटेश्वरः ॥ ११० ॥
 नलिनाक्षो नृबन्धोऽपि नायको नागनायकः ।
 नर्मदातीरक्रीडाकृञ्जलिनीपतिलोचनः ॥ १११ ॥
नरेशो नृपपूज्यश्च नागशायी नगोत्तमः ।
 नारायणो निष्कलङ्को नवर्णाकृतिरात्मवान् ॥ ११२ ॥
 लक्ष्मीनागो नगधरो लक्ष्मीनाथो नरूपवान् ।
 पुष्पप्रियः पुष्पशय्याशयानः पुष्पशेखरः ॥ ११३ ॥
 पुष्पधन्वा प्रसुप्तश्च पुष्पेषुपुष्पपूजितः ।
 पूज्यः पवित्रं परमं परमेष्ठी पितामहः ॥ ११४ ॥
 परं पर्दं परं पुण्यं परमायुः परात्परः ।
 पारावारमुतामर्ता परमेशः परं महः ॥ ११५ ॥
 पुण्यपदः- पुण्यकृत् पूतः पुराणागमपूजितः ।
 पुराणपुरुषः पीनः पीनवशा जितेन्द्रियः ॥ ११६ ॥
 पीतवासाः पीतमालः पीतवर्णः पराङ्मुखः ।

रेवतीरमणो राकापतिः सर्वकलाधरः ॥ १२९ ॥
 लक्ष्मीरामो महालक्ष्मीराजा लक्ष्मीत्रिविक्रमः ।
 लाक्षारुणो लीतराघो ललसिद्धो लतापतिः ॥ १३० ॥
 लङ्केशो लासिको लान्तो लम्बोदरप्रियः परः ।
 लक्ष्मीलीनोऽलिवर्णश्च लकाराकार ईश्वरः ॥ १३१ ॥
 वान्तदो वारसेनानीर्वराहो विग्रही विराट् ।
 विष्णुर्वसुन्धरानाथो वसुदो वसुधाधिपः ॥ १३२ ॥
 वागीश्वरो वेणुहस्तो वेतालो विरसो विपद् ।
 विद्वान् विशालनयनो विकारोऽविकृतिः पुमान् ॥ १३३ ॥

सप्तस्वरमयः सप्तपातालतलवासकः ।
 साच्चिकः सच्चसंपन्नः समस्तदुरितापहः ॥ १४१ ॥
 समस्तरिपुविध्वंसी समस्तासुरघातनः ।
 समस्तपातकध्वंसी समस्तसुरवन्दितः ॥ १४२ ॥
 लक्ष्मीसनातनो लक्ष्मीसनकः साधुपूजितः ।
 हरिर्हरो हरिहरो हाटकेशो हृदापहः ॥ १४३ ॥
 हरिद्रवर्णो हसितो हारी हरितलोचनः ।
 लक्ष्मीहरिर्हृषीकेशो लक्ष्मीहारधरोऽनघः ॥ १४४ ॥
 चामी चमापतिः चत्ता चमेशश्च चवर्णभाक् ।
 चणकुत्त चणदानाथः चमावान् जुभितासुरः ॥ १४५ ॥
 लक्ष्मीक्षमापुतो लक्ष्मीक्षत्ता लक्ष्मीचवर्णभृत् ।
 अनन्तोऽनन्तपूज्यश्चाप्यादिरादित्यसंज्ञिमः ॥ १४६ ॥
 इन्दिरावल्लभो देव ईश्वरधोग्ररूपवान् ।
 उष्मोज्ज्वलोऽपि शृणुहा ऋकारोज्ज्वलमातृकः ॥ १४७ ॥
 लवर्णवर्णो लृकार एनवर्णसमन्वितः ।
 ऐश्वर्यसहितधोष्ठस्तथोन्मत्तस्तराजितः ॥ १४८ ॥
 अंकारश्चैवमःकारस्वरूपः स्वरभूषितः ।
 ओङ्गीहर्ता ईश्रीदेवो लक्ष्मीनारायणः शिवः (१०००) ॥ १४९ ॥
 इति मन्त्रमयं नाम्नां सरसं तत्त्वमुत्तमम् ।
 अकारादिचकारान्त-विद्यानिलपमीश्वरि ॥ १५० ॥
 सर्वतीर्थमयं सर्वदेवदानवपूजितम् ।
 अश्वमेधसहस्राणि वाजिपेयस्य कोटयः ॥ १५१ ॥
 चान्द्रायणापुतं देवि महादानान्पनेकशः ।

रेवतीरमणो राकापतिः सर्वकलाधरः ॥ १२९ ॥
 लक्ष्मीरामो महालक्ष्मीराजा लक्ष्मीत्रिविक्रमः ।
 लात्तारुणो लीतराघो ललस्त्रिहो लतापतिः ॥ १३० ॥
 लङ्केशो लासिको लान्तो लम्बोदरप्रियः परः ।
 लक्ष्मीलीनोऽलिवर्णश्च लकाराकार ईश्वरः ॥ १३१ ॥
 बान्तदो वारसेनानीर्वराहो विग्रही विराट् ।
 विष्णुर्वसुन्धराताथो वसुदो वसुधाधिपः ॥ १३२ ॥
 वागीश्वरो वेणुहस्तो वेतालो विस्रो वियत् ।
 विद्वान् विशालनयनो विकारोऽविकृतिः पुमान् ॥ १३३ ॥
 वितर्की (६००) विनयी सिधाराजमान्यो विचारकः ।
 बाग्मी बानीरमूलस्यो बाचाष्टो वीरनायकः ॥ १३४ ॥
 लक्ष्मीवराहो वीरेशो लक्ष्मीवीरो वनेचरः ।
 शङ्करः श्रीधरः श्रीलः श्रीमी शीतांशुशीतलः ॥ १३५ ॥
 शशिर्मौलिः शरत्पागः शम्भुः शङ्कनिमृदनः ।
 शक्रः शत्रुचयकरः शत्रुकालकरः शिवः ॥ १३६ ॥
 लक्ष्मीशिवः श्रीपतिः श्रीवरो लक्ष्मीशिवप्रदः ।
 षोडशस्वरूपश्च षोडशार्णविभूषणः ॥ १३७ ॥
 षडङ्गविद्यावेत्ता च पकाराक्षरभूषितः ।
 लक्ष्मीषडङ्गधारी च लक्ष्मीषोडशवर्षभृत् ॥ १३८ ॥
 सुन्दरः स्वर्गवसतिः सर्वेशः सर्वतोमुखः ।
 सप्तसप्तिः सदाचारः साधुः साधुजनप्रियः ॥ १३९ ॥
 सरमः सरलः सालः सुखी सुखविर्धनः ।
 सप्तदीपवतीनाथः सप्तसागरनायकः ॥ १४० ॥

सप्तस्तरमयः सप्तपातालतलवासकः ।

साच्चिकः सत्त्वसंपन्नः समस्तदुरितापहः ॥ १४१ ॥

समस्तरिपुविध्वंसी समस्तासुरघातनः ।

समस्तपातकध्वंसी समस्तसुरवन्दितः ॥ १४२ ॥

लक्ष्मीसनातनो लक्ष्मीसनकः साधुपूजितः ।

हारेर्हरो हरिहरो हाटकेशो हृदापहः ॥ १४३ ॥

हरिद्रवणो हसितो हारी हरिवलोचनः ।

लक्ष्मीहरिर्हृषीकेशो लक्ष्मीहारधरोऽनघः ॥ १४४ ॥

चामी चमापतिः चत्ता चमेशश्च चवर्णभाक् ।

चणकृद् चणदानाधः चमावान् जुभितासुरः ॥ १४५ ॥

लक्ष्मीक्षमापुतो लक्ष्मीचत्ता लक्ष्मीचवर्णभृद् ।

अनन्तोऽनन्तपूज्यश्चाप्पादिरादित्यसंनिभः ॥ १४६ ॥

इन्दिरावल्लभो देव ईश्वरश्चोपरूपवान् ।

उन्मोज्ज्वलोऽपि ऋणहा ऋकारोज्ज्वलमादकः ॥ १४७ ॥

लृवर्णवर्णो लृकार एनवर्णसमन्वितः ।

ऐश्वर्यसहितश्चोपुन्तर्धान्मत्तस्वरान्वितः ॥ १४८ ॥

अंकारधैवमःकारस्वरूपः स्वरभूषितः ।

उर्द्धाहसौः र्द्धाभेदेवो लक्ष्मीनारायणः शिवः (१०००) ॥ १४९ ॥

इति मन्त्रमयं नाम्ना सहस्रं तत्त्वमुत्तमम् ।

अकारादिचकारान्त-विद्यानिलयमीश्वरि ॥ १५० ॥

सर्वतीर्थमयं सर्वदेवदानपूजितम् ।

अधमेधमहसायि वाज्रिपेदस्य कोटयः ॥ १५१ ॥

चान्द्रायणायुतं देवि महादानान्यनेकशः ।

मन्त्रनामसहस्रस्य कलां नार्धन्ति षोडशीम् ॥ १५२ ॥
 अर्धरात्रे पठेद्दीरः शक्तिवच्चःस्थितः शनैः ।
 स्वप्ने लक्ष्मीप्रियं देवं वरदं सोऽपि पश्यति ॥ १५३ ॥
 महाचीनार्चनं कृत्वा पठेद्दीरार्चने सकृत् ।
 शतवर्षसहस्राणि पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ १५४ ॥
 एकवारं पठेद्यस्तु संपूज्य गुरुमंनिधौ ।
 स भवेत् साधकः श्रीमां परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ १५५ ॥
 पुण्यदं वरदं नृत्यं तीर्थसाधनमुत्तमम् ।
 योगिनां योगदं पूज्यं भोगिनां भोगवर्धनम् ॥ १५६ ॥
 रोगिणां रोगशमनं सर्वदुष्कृतनाशनम् ।
 वैष्णवानां प्रियतरं मुक्तानां परमार्थदम् ॥ १५७ ॥
 अदातव्यमश्रोतव्यमन्यशिष्याय पार्वति ।
 विना दानं न गृहीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना ॥ १५८ ॥
 दत्त्वा गृहीताप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 इदं नामसहस्रं तु लक्ष्मीनारायणस्य ते ।
 तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिघत् ॥ १५९ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरदन्ये लक्ष्मीनारायणसहस्रनाम-
 निरूपणमेकोनचत्वारिंशः पटलः ॥ ३६ ॥

चत्वारिंशः पटलः ।

भीमैरव उवाच ।

अथाहं तत्त्वसर्वस्य रहस्यं परमार्थदम् ।

मन्त्रस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य वै ॥ १ ॥

पञ्चमाङ्गं महादेवि परमार्थप्रकाशकम् ।

चतुर्वेदागमस्तुत्यं भोगमोक्षैककारणम् ॥ २ ॥

गुह्यं गुप्ततरं तत्त्वं मन्त्रराजस्य पार्वति ।

कौलिकानां सदा सविदानन्दरसकारणम् ॥ ३ ॥

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणमन्त्रस्तोत्रराजस्य, शिव श्रुतिः, विष्णु स्मृतः
श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, श्री बीज, ह्रीं शक्तिः, श्री श्रीलक्ष्मी, योगापरम-
स्त्रियैर्षे पाठे विनियोगः । ध्यानम्—

पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम् ।

लक्ष्म्या श्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं यजे ॥ ४ ॥

किरीटिनं कुण्डलहारमण्डितं

पद्मासनं श्याममुखं चतुर्भुजम् ।

पीताम्बर शस्त्रगदाञ्जुषक-

पाणिं पुराणं पुरुषं यजे विद्वम् ॥ ५ ॥

प्रत्यहं यदि मानवो जपेद्भरिपादाम्बुजसेवनाकुलः ।

वनुजान्तकधाम याति नूनं परमानन्दमयो गतस्त्वयः ॥ ६ ॥

पराबीजं तुल्य यदि जपति जन्तुर्जपस्त्रि

सराश्रान्तः सार्वागमकूटिलमार्गोन्मिष्टतमयः ।

भवेत् कौलेशानः सकलरिपुदावाग्निजलदः

सुरस्त्रीभिः सार्धं सुरविटापिवाटीषु रमते ॥ ७ ॥

विबीजं यो महामन्त्रं जपेदानन्दनिर्भरः ।

आनन्दरूपो भविता लक्ष्मीनारायणप्रियः ॥ ८ ॥

विभूतिबीजं मनुराजतत्त्वं

जपेद्रतान्ते यदि कौलिकेन्द्रः ।

स याति देवासुरपूजिताङ्गिः

परं पदं सर्वसुरैरलभ्यम् ॥ ९ ॥

माबीजमन्तः परमार्थतत्त्वं

सत्त्वैकरूपं मनसा जपेद् यः ।

स कामिनीकामरसप्रवीणो

भवेदरीत्यामुरुदर्पहारी ॥ १० ॥

रमाबीजं नामाक्षरपदमवं मन्त्रमुकुटं

जपेद्यो यन्नाग्रे हरिचरणपद्मापित्तमनाः ।

भवेद् भूभृन्मौलिस्फुरितमणिमालाशुनिबद्ध-

प्रभाभास्वत्पादः स धरणिधरेन्द्रो विजयवान् ॥ ११ ॥

नारायणायेति जपेन्मनुं यो

रात्रौ प्रभाते परमार्थबीजम् ।

स वैरिदावामलवारिवाहो

भवेत् स गीर्भिर्गुरुर्गर्वहारी ॥ १२ ॥

विश्वं जपेद्यो हृदि विश्वसारं

विश्वम्भरध्यानपरः प्रभाते ।

साम्राज्यलक्ष्मीं स रिपून् विजित्य

लब्धेद् भुवि स्वर्गमतः परासुः ॥ १३ ॥

चतुरश्रपृष्ठपोडशार-वसुपत्राञ्चितकाधराधविन्दौ ।

कमलाधितमीश्वरं निविष्टं परमानन्दमयं भजाम्यनन्तम् ॥ १४ ॥

इति मन्त्रमयं पठेत् स्तवं यो

हृदि नारायणवद्भवं प्रभाते ।

कमला विमलाशयस्य तस्य

श्रुतिशीलस्य वशीभवत्यवश्यम् ॥ १५ ॥

इतीदं स्तोत्रमीशानि मूलमन्त्रमयं परम् ।

तव भक्त्या मयाख्यातं नचाख्येयं मुमुक्षुभिः ॥ १६ ॥

पञ्चाङ्गमिदमाद्यन्तं लक्ष्मीनारायणस्य ते ।

वर्णितं गोप्यमर्चाढ्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ सर्वलोकहितैरत ।

क्रीतास्मि भवतानेन कथनेनास्य शङ्कर ॥ १८ ॥

लक्ष्मीनारायणस्याद्य श्रुता पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।

मयाप्तः परमानन्दो दास्यहं ते ब्रवीमि किम् ॥ १९ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

एतद्ब्रह्मसमखिलं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।

वेदानालोढ्य तन्नाथ देवि ते कथितं मया ॥ २० ॥

देवानां दुर्लभं तत्त्वं पञ्चाङ्ग वैष्णवार्चिते ।

रहस्यं सर्वलोकानां सर्वम्भं मम पार्वति ॥ २१ ॥

अमकार्श्यमवक्त्रव्यमदातव्यं दुरात्मने ।

देवं शिष्याय शान्ताय पुरुषाङ्गिण्याय च ॥ २२ ॥

दानशीलाय भक्ताय कौलमार्गरताय च ।

महाधीनपदस्याय वैष्णवाय महात्मने ॥ २३ ॥

दत्ता मुक्तिं लभेद् देवि भक्तानां सुखदायिनीम् ।

इतीदं परमं तत्त्वं तच्चात्तत्त्वं परात्परम् ॥ २४ ॥
गोप्यं गुह्यं गोपनीयं चेत्याज्ञा पारमेश्वरी ।

इति भीठप्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सप्तमीनारायण-
स्तोत्राख्यानं अष्टवारिंशः पटलः ॥ ४० ॥

समाप्तं लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गम् ।

अथ

एकचत्वारिंशः पटलः ।

मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

कैलासशिखरे रम्ये मणिमालातिभास्वरे ।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापुष्पोपशोभिते ॥ १ ॥
विचित्ररत्नखचित-शिलामण्डपमण्डिते ।
किन्नरीमधुरालाप-मुखरीकृतदिग्मुखे ॥ २ ॥
भगवन्तमुमानाथमुपविष्टमुमाश्रितम् ।
ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रचन्द्रार्क-गुरुशुक्रसमन्वितम् ॥ ३ ॥
ब्रह्मार्पिवसुसिद्धौघ-गणगन्धर्वसेवितम् ।

चन्द्रार्धमुकुटोपेतं शूलखट्वाङ्गधारिणम् ॥ ४ ॥

चराभयकरं शान्तं कुन्तवाणामिसंयुतम् ।

खड्गखेटकहस्तं च पाशतोमरकायुधम् ॥ ५ ॥

भिषिडपालकरं प्रासपरिधायुधधारिणम् ।

गदाडमरुहस्तं च शतघ्नीचक्रमंयुतम् ॥ ६ ॥

अष्टादशभुजं देवं भूतिभूषितविग्रहम् ।

दिगम्बरं विशालाचं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ॥ ७ ॥

आनन्दमुदितं विश्वं विश्वनायकमीश्वरम् ।

जपन्तं प्रहसन्तं च गौर्यालङ्कितविग्रहम् ॥ ८ ॥

पद्मगाभरणोपेतं महादेवं महेश्वरम् ।

वदपद्मासनं शंभुं शरणागतवत्सलम् ॥ ९ ॥

प्रसन्नवदनं वृद्धा प्रणम्योत्थाय पार्वती ।

गिरा मधुरया देवं श्रोयाच्च परमेश्वरम् ॥ १० ॥

धीदेव्युवाच ।

मगवन् यः शिवो देवो महामृत्युञ्जयः ॥ ११ ॥

आदिनाथो जगत्प्राप्तो दीवानामक ईश्वरः ॥ ११ ॥

यणितः प्राङ् महादेवो गुणातीतश्रिदीश्वरः ।

मवता तस्य देवस्य परब्रह्मस्वरूपिणः ॥ १२ ॥

पञ्चाङ्गं श्रोतुमिच्छामि वक्तुमर्हसि मे प्रभो ।

श्रीभैरव उवाच ।

परमेश्वरदेवस्य महामृत्युञ्जयस्य ते ।

भरत्या वक्ष्यामि पञ्चाङ्गं नालयेयं यस्य कस्यचित् ॥ १३ ॥

पटलं पद्मं वर्म मन्त्रनामसहस्रकम् ।

स्तोत्रं पञ्चाङ्गभूतं च गोपयेयः स साधकः ॥ १४ ॥

तत्रादौ पटलं वक्ष्ये दीक्षानायकवल्लभम् ।

गुह्यं परमगुह्यं च गोप्तव्यं तु मुमुक्षुभिः ॥ १५ ॥

मन्त्रोद्धारं महादेवि दीक्षाफलविवृद्धये ।

दिव्यं सुखकरं साध्यं सिद्धं वक्ष्यामि सिद्धये ॥ १६ ॥

तारं हृज्जवतार्तिकं शिवशरन्मण्डूकनीजं ततो

वाच्यं पालय पालयेति च पुनः शक्तिः शिवः शाक्तिकम् ।

हृज्जं तारकभूषणं दिग्दितस्तज्जक्तिहेतोर्मया

दीक्षानायकवल्लभो मनुरयं त्रैलोक्यचिन्तामणिः ॥ १७ ॥

नास्थान्तरायबाहुल्यं सिद्धसाधारिद्रूपणम् ।

न कायक्लेशदौर्बन्यं नाचारनिदमभ्रमः ॥ १८ ॥

न पञ्चदोषशङ्कापि नोचमर्णाधिमर्णकौ ।

केवलं परमानन्दवर्धनो रिपुमर्दनः ॥ १९ ॥

मन्त्रोऽयं मन्त्रराजेन्द्रो दीक्षाफलसुरद्रुमः ।

विना पुरस्क्रियामेष मन्त्रराजो न सिध्यति ॥ २० ॥

तस्मात् पुरस्क्रिपाहेतोर्युक्तं संप्रार्थयेच्छिवे ।

गुरुहस्तेन यः कुर्यान्मन्त्रस्यास्य पुरस्क्रियाम् ॥ २१ ॥

तस्यायं मन्त्रराजेन्द्रो भवेत् कल्पद्रुमोपमः ।

वर्णलचं पुरश्चर्या तदर्धं वा महेश्वरि ॥ २२ ॥

एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ।

जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम् ॥ २३ ॥

मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम् ।

एवं विधाय मन्त्रस्य पुरश्चर्यां च साधकः ॥ २४ ॥

गुरवे दक्षिणां दत्त्वा यथाविभवमीश्वरि ।

ततो जपो भवेद् देवि सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ २५ ॥

अन्यथा न भवेत् सिद्धिर्दीक्षायाः सुमनोरपि ।
 यन्त्रोद्धारविधिं वक्ष्ये देवदेवस्य पार्वति ॥ २६ ॥
 सर्वसंमोहनं दिव्यं सर्वाशापरिपूरकम् ।
 बिन्दुत्रिकोणपदकोण-वृत्ताष्टदलमष्टितम् ॥ २७ ॥
 वृत्तत्रयं धरातलं भीचक्रं शैवमीरितम् ।
 लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि यन्त्रराजस्य पार्वति ॥ २८ ॥
 यस्य भवणमात्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ।
 इन्द्राद्या दश दिरूपाः सायुषा भृशदे शिवे ॥ २९ ॥
 दिव्यसिद्धौघमर्त्योषा गुरवोऽप्यारुणत्रये ।
 असिताङ्गो रुक्मश्चक्रोपेशोन्मत्तभैरवाः ॥ ३० ॥
 कपालीशो भीषणाख्यः संहारेशोऽष्टमः शिवे ।
 पूजनीया वसुदले साधकैस्तु मुमुक्षुभिः ॥ ३१ ॥
 कालाग्निरुद्रं नेत्रेशं विश्वनाथं महेश्वरम् ।
 सद्योजातं चामदेवं पूजयेत् कामपोनिषु ॥ ३२ ॥
 कामेश्वरं महाकालं देवं स्वच्छन्दभैरवम् ।
 त्रिकोणे पूजयेद् देवि स्वाग्रेसानामिमां गतः ॥ ३३ ॥
 बिन्दौ मृत्युञ्जयं देवं स्वशक्त्या सहितं शिवे ।
 अमृतेश्वरमीशानमीश्वरं ध्रुवनेश्वरम् ॥ ३४ ॥
 त्रिखण्डा पाशमीशानि सुधाकलशपुष्पमम् ।
 मुक्ताचमूषं देवाङ्गे पूजयेत् साधकोत्तमः ॥ ३५ ॥
 सैषूष्यं विधिवद् देवि मन्थात्ततः प्रसूतकैः ।
 धूपदीपादिनैवेद्यैस्ताम्रूर्लरत्नचामरैः ॥ ३६ ॥
 लयाङ्गमिदमाख्यातं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
 सर्वसिद्धिप्रदं देवि गोपनीयं विशेषतः ॥ ३७ ॥
 मन्त्रस्यास्य महादेवि महाचम-पदादिकः ।

सकहोल श्रविश्रद्धन्दो गायत्री देवता तथा ॥ ३८ ॥
 महामृत्युञ्जयो रुद्रो महादेवोऽधिदेवता ।
 बीजं च प्रणवो देवि शक्तिर्हृज्जाख्यबीजकम् ॥ ३९ ॥
 कीलकं शरदीशानि दिग्बन्धोऽस्त्यस्त्रमीश्वरि ।
 चतुर्वर्गेषु विद्याया विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४० ॥
 तारहजशरद्रीजैः षड्दीर्घैः प्राण(न्याम)माचरेत् ।
 करपोर्हृदयादीनामङ्गानां साधकोत्तमः ॥ ४१ ॥
 मूलादिबीजमात्रेण प्राणायामत्रयं चरेत् ।
 तत्त्वत्रयेणाचमनमात्मविद्याशिवादिना ॥ ४२ ॥
 अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि देवदेवेश्वरस्य हि ।
 येनैव ध्यानमात्रेण मन्त्री शैवं पदं व्रजेत् ॥ ४३ ॥
 चन्द्रार्काम्बिविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
 *मुद्रापाशसुधाघस्रत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ।
 कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
 कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥ ४४ ॥
 चन्द्रमण्डलमध्यस्थे रुद्रभालेऽतिविस्तृते ।
 तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥ ४५ ॥
 इति साध्यं पराबीजमन्त्रावयवभूषितम् ।
 रुद्रभालस्यमीशानि गोपनीयं विशेषतः ॥ ४६ ॥
 प्रयोगानष्ट वक्ष्यामि दुर्लभान् परमार्थदान् ।
 यान् विधाय शिवे मन्त्री भवेद् भैरवसन्निभः ॥ ४७ ॥
 स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः ।
 षशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ ४८ ॥

* मुद्रा त्रिसयदाक्या, इत्यर्थः । १ 'कोटीचन्द्रगलत्सुधाद्रुत' छ पाठ ।

२ 'प्राप्नोति' छ पाठ ।

एतेषां साधनं वक्ष्ये सर्वसौख्यैककारणम् ।

येन साधनमात्रेण सर्वसिद्धिर्भवेत् कलौ ॥ ४६ ॥

- (१) रवौ स्नानं शिवे कृत्वा नित्यकर्म समाप्य च ।
संकल्पपूर्वं मन्त्रं च जपेद्युतसंख्यया ॥ १० ॥

होमो दशांशतः सर्पिर्यवाकनकबीजकैः ।

स्तम्भनं जायते वादिभुस्त्रदस्युविचस्वताम् ॥ ५१ ॥

- (२) षन्त्रे संपूज्य देवेशं जपेद्युतसंख्यया ।

होमो घृतपवालाजशाकपत्रैर्दशांशतः ॥ ५२ ॥

तद्भस्मविलकेनैव मोहनं जगतां भवेत् ।

- (३) मङ्गले साधकः स्नात्वा गत्वा रमशानमण्डलम् ॥ ५३ ॥

अपुतं प्रजपेन्मन्त्रं होमो घृतविशालया ।

श्रीपर्णामिधुकोन्मिश्रैः श्रीफलैश्चिञ्चनीफलैः ॥ ५४ ॥

मृत्युं याति रिपुर्देवि दशाहावाधि मत्समः ।

- (४) जुष्टे स्नातार्चयेद् देवं श्रीचक्राग्रे जपेन्मनुम् ॥ ५५ ॥

अपुतं तद्दशांशेन हुनेत् सर्पिः शतावरीम् ।

त्रिकण्टकं त्रिवर्कं च स्त्रीषामाकर्षणं भवेत् ॥ ५६ ॥

- (५) गुरौ स्नात्वा जपेद्विद्यां परामपुतसंख्यया ।

होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माचचन्दनैः ॥ ५७ ॥

आरग्वधेन कण्ठया वरयामृतया शिवे ।

रिपू राजा धनी वीरो जिष्णुर्दासतमेष्पति ॥ ५८ ॥

- (६) शुके रमशाने वीरेशो जपेद्युतसंख्यया ।

चिताग्रे मूलविद्यां तु तद्दशांशं हुनेद् घृतम् ॥ ५९ ॥

समण्डकं शम्भूकं च रिपुमुच्चाटयेद् ध्रुवम् ।

- (७) शनौ स्नात्वा चरेत् पूजां जपेद्विद्यां तथापुतम् ॥ ६० ॥

हुनेदाज्यपयोमृत्त्रा-वार्ताकमृदुशाङ्गलान् ।

धत्तूरपुष्पसहितान् सर्वशान्तिः प्रजायते ॥ ६१ ॥

(८) सर्वदा सर्ववारेषु जपेदयुतसंख्यया ।

होमो दशाशतः कार्यो घृतपायसपङ्कजैः ॥ ६२ ॥

छागेणकूर्मवाराहपलपुङ्कैः समन्तकैः ।

पितृणां देवतानां च भूमृतां रोगिणां तथा ॥ ६३ ॥

दशाशं विधियद् दत्त्वा महापुष्टिः प्रजायते ।

इतीदं परमं तत्त्वं मन्त्रस्यास्य मयेरितम् ।

अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिरत् ॥ ६४ ॥

इति श्रीमद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युश्रयपटलनिरूपण
पञ्चमोऽध्यायः पटलः ॥ ४१ ॥



अथ

द्वाचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि पूजापद्धतिमुचमाम् ।

गद्यपद्यमयीं दिव्या कोटियज्ञफलप्रदाम् ॥ १ ॥

प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यः शिव भक्तितोऽर्चयेत् ।

तस्य पूजा तु त्रिफला शौचहीना यथा क्रिया ॥ २ ॥

ब्राह्म्ये मुहूर्ते उत्थाय वरुणपद्मस्तनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोमु-
सकमलवर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं ध्यायेत् । "श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे
स्वानन्दधिप्रदम् । यस्य सन्निधिमात्रेण त्रिदानन्दायते वंशुः ॥" इति नत्वा ,

श्रीगुरुं द्विशृजं शान्तं वरामयकराम्बुजम् ।

पूर्णेन्दुवदनाम्भोजं हसन्तं शक्तिसंयुतम् ॥

श्वेतवस्त्रपरीधानं नानालङ्कारभूषितम् ।

आनन्दमुदितं देवं ध्यायेत् पङ्कजविष्टरम् ॥

पञ्चभूतमन्त्रेण सप्तधारमभिमन्त्र्य दक्षदस्ते धृत्वा, वामानामिकाङ्गुष्ठयो-
गेन तद्गलितोदकविन्दुभिः स्वशिरो मूलमुधरन् दशधा प्रोक्ष्य पुनर्वा-
महलो विधाय, इदयान्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रक्षाल्य, पिङ्गलया
तज्जले सकलपुं दक्षदस्ते धृत्वा स्वयामभागस्थकल्पितवज्रशिलायामा-
स्फालयेदित्यघमर्पणं विधाय, पूर्ववत् पङ्क्तं कृत्वा, ॐजुंसः परमहं-
साय विद्महे सोमंसः सृत्युज्जपाय धीमहि जुञोतन्नोऽमृतेश्वरः प्रचोद-
यात् । इति दशधा प्रजप्य मूलं च यथाशक्त्या जप्या, गायत्र्या
देवीदेवयोरर्घ्यत्रयं दद्यात् । ॐजुंसः साङ्गायामृतेश्वरीसहिताय सृत्युज्जपाय
एव ते अर्थो नमः । तथा पूर्ववत् सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा, जले चतुरस्रं
सज्यस्रं विभाव्य मूलमुधरन् सप्तधा सदेवीकं देवं तर्पयेत् । म०
साङ्गः सवाहनः सायुधः सपरिच्छिदः सदेवीको सृत्युज्जयो भगवांस्तुप्यता-
मिति सन्तर्प्य, परिवारानेकैकाञ्जलिना सन्तर्प्य, ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं
सन्तर्प्य, पित्रादितर्पणं विधाय, पूर्ववद् देवं संहारमुद्रया स्यहृदि समा-
नीय शियोऽहमिति भाषयन् यागमण्डपमागच्छेदिति संध्याविधिः ॥

ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य, द्वारदेवताः पूजयेत् । 'ह्रूंफ'
इति द्वारं प्रक्षाल्य, ऊर्ध्वं गां गणेशाय नमः, वामदक्षिणक्रमेण
महालक्ष्म्यै नमः, सरस्वत्यै नमः, गङ्गायै नमः, यमुनायै नमः,
घात्रे नमः, विधात्रे नमः, नन्दाय नमः, मुनन्दाय नमः, प्रचण्डाय
नमः, चण्डाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः, येतालाय नमः, अग्नियेतालाय
नमः, इति संपूज्य, तत्रासने मन्त्रेण पुष्पं दत्त्वा अनन्तासनाय नमः,
पिमलासनाय नमः, पद्मासनाय नमः । ॐ पृथिव्य त्वया धृता लोका देवि
त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु वासनम् ॥
त्रिर्वागपार्ष्णिण्यातं दत्त्वा, अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाय ॥ इति विघ्नानुत्सार्य,
हं अघोराय फट् इति दश दिशो वदध्या भूतशुद्धिं कुर्यात् ।

अथाहं भूतशुद्धिं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, वामे गुहभ्यां नमः,
दक्षिणे गणेशाय नमः, अग्रे शिवाय नमः, पृष्ठे क्षेत्रपालाय नमः,
इति नमस्कृत्य, प्रणवेन प्राणायामत्रयं कृत्वा हूमिति मूलाधारात्

१ 'सप्तदशधा' ड. पाठः । २ 'विधाय' ड. पाठः । ३ 'सप्तदशधा' ड. पाठः ।

४ 'ततः वामनमन्त्रेण' ड. पाठः ।

कुण्डलं नीमुत्थाप्य सुपुञ्जावर्त्मना हृदयस्य जीवमादाय प्रस्रवन् भगतां विभाव्य हंस इति ग्रहाणि योजयेत् । ततः पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीं ज्ञान्यादिनाभ्यन्तं जलं, नाभ्यादिहृदयान्तं यद्वि, हृदयादिभूमभ्यान्तं वायुं, भूमभ्यादिदादशान्तमाकाशं प्रत्येकं प्रविलाप्य, आकाशमहद्गारेऽहद्गारं महत्तले तदहं प्रकृतौ तां सच्चिदानन्दरूपे ग्रहाणि विलाप्य, स्वात्मानं ब्रह्ममयं विभाव्य ।

अहं देवो न चान्योऽस्ति ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् ।

सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तमभाववान् ॥

एवं विभाव्य, स्वशरीरदक्षकुक्षौ पापपुरुषं ध्यायेत् ।

ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णसंयभुजद्वयम् ।

सुरापानहृदा युक्तं गुरुतन्त्रकाटिद्वयम् ॥

तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ।

उपपातकलोमानं रक्तस्मश्रुविलोचनम् ॥

खड्गचर्मधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत् ।

इति ध्यात्वा, शरीरं सकलप मलिनं विचिन्त्य प्राणायामपूर्वकं पञ्चभूतमन्त्रैर्मिष्पापं कुर्यात् । हृदादिभूमभ्यात् पर्याजेन षोडशधा जप्तेन धायुमापूर्वं पापं संशोष्य, नाभ्यादिहृदयान्तान्तर्गतमग्निमाग्निर्वाजेन चतु-
ष्पाष्टिधारजप्तेन सन्दीप्य पापं निर्वह्य, ज्ञान्यादिनाभ्यन्तं जलं यमिति यरुणर्वाजेन द्वात्रिंशद्धारजप्तेनादाय पापमम्भसासाध्य, लमिति भूर्वाजेन षोडशधा जप्तेन पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीं विचिन्त्य पिण्डीभूत स्वात्मकं ध्यात्वा, हगित्याकाशर्वाजेन सकृजप्तेन चैतन्यं संभाव्य चिदानन्दमयं स्वशरीरमुत्पाद्य प्राणान् धारयेदिति भूतशुद्धिः ॥

ॐ नमः शिवाय प्राणात्मने नमः, इति स्वहृदि पुष्पं दत्त्वा आर्हर्षोपर्यन्तं द्वात्रिंशदं हंसः सोहं जुं सः भौं मम प्राणा इह प्राणाः, १६ मम जीव इह स्थितः, १६ मम सर्वेन्द्रियाणि, १६ मम वाक्-
मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणभाणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा,
इति प्राणान् धृत्वा, मूलं स्वहृदि विलिख्य सशिर्वं शिषं संपूज्य,
शिखोऽहमिति विचिन्त्य मन्त्रसङ्कलं कुर्यात् । अस्य धीमहा नृस्युः-

यपूजामन्त्रस्य महाचमसकहोल श्रुतिः, देवीगायत्री छन्दः, धीमृत्युञ्ज-
यद्रो महादेवो देवता, ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकम्, धर्मार्थ-
काममोक्षार्थं पूजायां विनियोगः । अथ न्यासः । महाचमसकहोल-
श्रुत्ये नमः शिरसि, देवीगायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, धीमृत्युञ्जय-
द्रमहादेवदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो नाभौ, जुं शक्त्ये
नमो गुह्ये, सः कीलकाय नमः पादयोः, जपे (पूजायां) विनि-
योगाय नमः सर्वाङ्गेषु ॥ अथ करन्यासः । ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,
जुं तर्जनीभ्यां नमः, सः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ अनामिकाभ्यां
नमः, जुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, इति
करन्यासः ॥ अथ पङ्क्त्यन्यासः । ॐ हृदयाय नमः, जुं शिरसे
स्याहा, सः शिखायै वषट्, ॐ कषचाय हुं, जुं नेत्रेभ्यो वौषट्,
सः अस्त्राय फट् ॥

अथ मानृकान्यासः । ॐ नमः शिरसि । आं नमो मुखवृत्ते ।
ईं नमो दक्षनेत्रे । ईं वामनेत्रे । उं दक्षकर्णे । ऊं वामकर्णे । ॐ
दक्षनासापुटे । ॐ वामनासापुटे । लृं दक्षगण्डे । लृं वामगण्डे ।
पं ऊर्ध्वोष्ठे । पं अधरोष्ठे । ओ ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । औ अधोदन्तपङ्क्तौ ।
अं ललाटे । अः जिह्वायां । कं दक्षबाहुमूले । कं कुपरे । गं मणिपञ्चे
ध अङ्गुलिमूले । ऊं अङ्गुल्यग्रे । चं वामबाहुमूले । लृं कुपरे ।
जं मणिपञ्चे । भं अङ्गुलिमूले । भं अङ्गुल्यग्रे । टं दक्षपादमूले ।
ठं जानुनि । उं गुल्फे । दं अङ्गुलिमूले । शं अङ्गुल्यग्रे । तं वामपाद-
मूले । थं जानुनि । दं गुल्फे । धं अङ्गुलिमूले । नं अङ्गुल्यग्रे । पं
दक्षपार्श्वे । फं वामपार्श्वे । यं पृष्ठे । भं नाभौ । मं जठरे । यं
हृदि । रं दक्षांसे । लं ककुदि । वं वामांसे । शं हृदादिदक्षहस्ता-
ग्रान्तं । थं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं । सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं । हं
हृदादिवामपादाग्रान्तं । लं पादादिशिरःपर्यन्तं । लं नमः शिरसः
पादपर्यन्तम् । इति त्रिध्यापयेदिति मानृकान्यासः ॥

ॐ ह्रसौः अं श्रीकण्ठपूर्योदरीभ्यां नमः शिरसि । ॐ ह्रसौः आं
अनन्तेशविरजाभ्यां नमो मुखवृत्ते । ॐ ह्रसौः ईं सूक्ष्मेशशारमलीभ्यां
नमो दक्षनेत्रे । ॐ ह्रसौः ईं त्रिमूर्तिशिलोलाक्षीभ्यां नमो वामनेत्रे ।

ओङ्सौः उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकण्ठे । ओङ्सौः ऊं अघे-
 शदीर्घयोगाभ्यां नमो वामकण्ठे । ओङ्सौः श्रुं भावभूतीशदीर्घमुखीभ्यां
 नमो दक्षनासापुटे । ओङ्सौः श्रुं तिथीशयोमुखीभ्यां नमो वामना-
 सापुटे । ओङ्सौः लृं स्थाणुकेशदीर्घजिह्वाभ्यां नमो दक्षगण्डे । ओङ्सौः
 लृं हरेश्चक्रेशदीर्घाभ्यां नमो वामगण्डे । ओङ्सौः एं भ्रिएडीशोर्ध्वकं-
 थाभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ओङ्सौः ऐं भौतिकेशविकृतमुखोभ्यां नमः
 अधरोष्ठे । ओङ्सौः औं सद्योजातेशम्बालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्त-
 पङ्क्तौ । ओङ्सौः औं अनुग्रहेशोदकामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपङ्क्तौ ।
 ओङ्सौः अं अक्षरेशधीमुखीभ्यां नमो ललाटे । ओङ्सौः अः महा-
 स्नेशपिदामुखीभ्यां नमो जिह्वायाम् । ओङ्सौः कं क्रीडीशमहाकालीभ्यां
 नमो दक्षबाहुमूले । ओङ्सौः खं चण्डीशसरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे ।
 ओङ्सौः घं पञ्चालनेशसर्पसिद्धिभ्यां नमो मणियम्भे । ओङ्सौः घं
 शिवोत्तमेशत्रिलोकपिदाभ्यां नमः अङ्गुलिमूले । ओङ्सौः ङं एकवद्रे-
 शमन्त्रशक्तिर्था नमः अङ्गुल्यग्रे । ओङ्सौः चं कूर्मेशरमशक्तिभ्यां नमो
 वामबाहुमूले । ओङ्सौः छं एकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः कूर्परे । ओङ्सौः
 जं चतुराननेशसम्बोद्रीभ्यां नमो मणियम्भे । ओङ्सौः कं अजेशमा-
 विणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले । १ं जं शर्वेशनागरीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे ।
 २ं ङं सोमेशसेवरीभ्यां नमो दक्षपादमूले । २ं ङं लाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां
 नमो जानुनि । २ं ङं दाहकेशकपिणीभ्यां नमो गुल्फे । २ं ङं अर्ध-
 नारीशपीरिणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले । २ं छं उमाकान्तेशकाकोदरी-
 भ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे । २ं छं आषाढीशपूतनाभ्यां नमो वामपादमूले ।
 २ं घं दण्डीशमद्रकालीभ्यां नमो जानुनि । २ं घं अग्नीशयोगिनीभ्यां
 नमो गुल्फे । २ं घं अग्निशक्तिनीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले । २ं छं
 मेघेशगर्जिनीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे । २ं घं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमो
 दक्षपादम् । २ं फं शिखीशकुर्दिनीर्था नमो वामपादम् । २ं बं छ्वा-
 ताण्डेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे । (२ं नं त्रिरगणेशवज्रिणीभ्यां नमो

१ 'शित्ति' क, छ, घ, वाङः । २ 'मुखास्तरे' क, छ वाङः । ३ 'पञ्चास्तक' ङ वाङः ।

४ 'त्रिमुखि' ङ वाङः । ५ 'दाहकेश' ङ, वाङः । ६ 'कुर्दिनी' ङ वाङः ।

नाभौ । २ मं महाफालेशजयाभ्यां नमो जठरे । २ यं त्वगात्मभ्यां
 कपालीशसुमुखीभ्यां नमो हृदये) । २ रं अस्मात्मभ्यां भुजश्लेश-
 रेयतीभ्यां नमो दक्षांसे । २ लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां
 नमः ककुब्धि । २ धं मेदमात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमो वामांसे ।
 २ शं अस्थ्यात्मभ्यां वक्त्रेशधायवीभ्यां नमो हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं ।
 २ धं मज्जात्मभ्यां भ्येतेशरक्षोपन्धिनीभ्यां नमो हृदादियामहस्ताग्रान्तं ।
 २ सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमो हृदादिदक्षपादाग्रान्तं ।
 २ हं प्राणात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमो हृदादियामपादाग्रान्तं । २
 लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशन्यापिनीभ्यां नमः पादादिशिरःपर्यन्तं । २
 क्षः क्रोधात्मभ्यां संवर्तेशमहामायाभ्यां नमः शिरसः पादपर्यन्तमिति
 धीकण्ठादिमातृकाभ्यासः ॥

अथ कलान्यासः । ओंपेह्रींस्त्रैः सर्वज्ञाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
 ४ अमृतज्वालामालिने तर्जनीभ्यां नमः । ४ ज्वलितशिखिशिखाय
 मध्यमाभ्यां नमः । ४ घञ्जिणे घञ्जहस्ताय अनामिकाभ्यां नमः । ४
 अलुप्तशङ्खे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ४ पशुपतये करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।
 इति करन्यासः ॥

ओंपेह्रींस्त्रैः सर्वज्ञाय हृदयाय नमः । ४ अमृतज्वालामालिने
 शिरसे स्वाहा । ४ ज्वलितशिखिशिखाय शिखायै वषट् । ४ घञ्जि-
 णे घञ्जहस्ताय कवचाय हुं । ४ अलुप्तशङ्खे नेत्राभ्यां धौपट् । ४
 पशुपतये अस्त्राय फट् । इति हृदयादिन्यासः ॥

ओजुंसः निवृत्त्यात्मने शिवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ३ प्रतिष्ठा-
 त्मने सदाशिवाय तर्जनीभ्यां नमः । ३ विद्याकलात्मने ईश्वराय मध्य-
 माभ्यां नमः । ३ शान्तिकलात्मने महाकट्राय अनामिकाभ्यां नमः ।
 ३ शान्त्यतीताकलात्मने विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ३ ज्योतिष्क-
 लात्मने परब्रह्मणे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ॥

ओजुंसः निवृत्त्यात्मने शिवाय हृदयाय नमः । ३ प्रतिष्ठात्मने

सदाशिवाय शिरसे स्थाहा । ३ विद्याकलात्मने ईश्वराय शिखायै
वषट् । ३ शान्तिकलात्मने महारुद्राय कवचाय हुं । ३ शान्त्यती-
नाकलात्मने विष्णवे नेत्राभ्यां वीषट् । ३ ज्योतिष्कलात्मने परब्रह्मणे
अस्त्राय फट् । इति कलान्यासः ॥

ॐ जुसः नेत्रनाथाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । हंसः भगवधेनाय तर्ज-
नीभ्यां नमः । मां पालयपालय सोमसूर्याग्निनेत्राय मध्यमाभ्यां नमः ।
सोहंसः नेत्रनाथाय अनामिकाभ्यां नमः । जुंओं भगवधेनाय कनि-
ष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ जुसः हंसः मां पालयपालय सोहंसः जुंओं सोम-
सूर्याग्निनेत्राय करतलपृष्ठाभ्यां नमः । एव पञ्चन्यासः । शते नेत्रन्यासः ॥

ॐ नमः शिखि । जु भूमध्ये । सः मुखे । हं कण्ठे । सः
हृदि । मां हस्तयोः । पां स्तनयोः । लं कुक्षौ । यं पार्श्वयोः ।
पां पृष्ठे । ल नाभौ । य मेढ्रे । सौ जान्वोः । हं जङ्घयोः ।
सः पादयोः । जु पारादिशिरःपर्यन्तं । ॐ शिरसः पादपर्यन्तमिति
त्रिष्टयापर्यन्तमिति मूलमन्त्रन्यासः ॥

ईशानतत्पुरुषयोरघोस्कलितात्मनोः ।

सद्योजातेश्वामेश-युतयोर्न्याममाचरेत् ॥

इति शिवशासनम् ॥ ॐ मूलाधारे । जु भूमध्ये । सः करन्ध्रे ।
इमं न्यासं यथाशक्त्या विधाय दिव्यदेहं ध्यात्वा, हृदये ॐ जुसः
अमृतेश्वरणीठाय नमः । हृदि गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य, “ॐ जुसः हंसः
धौकालाग्निद्रुमसूक्ष्मकृत्कूर्मानन्तराहृष्टिष्वीशुधार्ष्वरत्नदीपरत्नमण्डप-
रत्नसिंहासनस्थाग्निमण्डलाकमण्डलामृतमरीचिमण्डलान्तर्गतसहस्रदलक-
मेलकर्णिकाकेसरकणामृतधाराप्रयाय योगपीठाय नमः” । इति सहृदये
संपूज्य, अमृतीकरणमुद्रां बद्ध्वा पद्ममुद्रान्तर्गतं पुण्य सन्निधाय,
मूलाधारान् बुग्गदलिनीं तडिन्कोटिप्रद्योतनीं सूर्यकोटिप्रकाशं वह्निको-
टिदुराधर्या चन्द्रकोटिसुशीतलां प्रदीपकलिकाकारामुत्थाप्य सुपुष्पा-
भागेण ब्रह्मपद्मान्तरस्यामृतेश्वरेण सह संयोज्य, सोममण्डलप्रच्युता-
मृतधारया संतर्प्य, पुनः स्वहृदि समानीय स्वस्थानं प्रापयित्वा मृत-
शरीरीभूय शिरोऽहमिति नायन् देवं भावेत् ।

पीयूषांशुशिरोमणिः करतले पीयूषकुम्भं वहन्
 पीयूषद्युतिसम्पुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः ।
 मां पीयूषमयसुन्दरवपुः पीयूषलक्ष्मीसखः
 पीयूषद्रववर्षणोऽप्यहरहः ग्रीणातु मृत्युञ्जयः ॥

एवं देवं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य कलशस्थापनं कुर्यात् ।
 स्वयामे त्रिकोणपदकोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन
 संपूज्य, "रं षड्मण्डलाय दशकलात्मने नमः" इति संपूज्याधारं
 संस्थाप्य, तत्र पात्रमाधारे निधाय "अं अर्कमण्डलाय द्वादशक-
 लात्मने नमः" इति पात्रान्तः संपूज्य, तत्र जलेन संपूर्य "सौः सोम-
 मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः" इति संपूज्य तत्राङ्कुशमुद्रया "ओंगां
 गां गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि
 जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु" ॥ इत्यादिना तीर्थमावाह्य मूलेनाष्टाभि-
 मन्त्रितं कृत्वा धेनुयोनिकलशमुद्राः प्रदर्श्य फटिति छोटिकाभिः संरक्ष्य,
 ह्रमित्यवगुण्ठ्य शङ्खचक्रयोनिमुद्राः प्रदर्श्य प्रणमेत् । "दर्शनेनापि
 शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च । विलयं यान्ति पापानि हिमयद्भास्क-
 रोदये ॥" इति सामान्यार्घ्यविधिः ॥

सामान्यार्घ्यस्य दक्षे बिन्दुत्रिकोणपदकोणवृत्तचतुरश्रं मण्डलं
 निर्माय "कामरूपोद्दीपयानजालन्धरपूर्णगिरिपीठेभ्यो नमः" इति चतु-
 रश्रेषु संपूज्य, षडश्रेषु षडङ्गमन्त्रान् संपूज्य, त्रिकोणे धीजत्रयं
 संपूज्य, चिन्धौ मूलेन संपूज्य, "ओंरं अग्निमण्डलाय दशकलात्मने
 नमः" इति प्रक्षालितमाधारं संस्थाप्य, "अं अर्कमण्डलाय द्वादश-
 कलात्मने नमः" इति कलशं कुम्भमुद्रया संस्थाप्य तत्र "ओंज्वांज्वां
 ज्वांज्वांज्वांज्वांसः अमृतेश्वरमैरवाय मृत्युञ्जयाय नमः" इति मूलेन
 वा मूलविद्यया तत्रमुद्रया धारापातेन परमानन्दद्रव्यादिना कुम्भमा-
 पूर्य "ओंसौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः" इति गन्धाक्ष-
 तपुष्पैरभ्यर्च्य, हंसः इति मन्त्रेण दश दिशो बद्ध्वा छोटिकाभिः
 संरक्ष्य ह्रमित्यवगुण्ठ्य, नमः इत्यभ्युक्ष्य, मूलं दशधा जप्त्वा मृतमुद्रां
 प्रदर्श्य, "ओंअंआंईओंजुंसः अमृतं अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं
 आवय २ ओंजुंसः अमृतेश्वर्यै नमः" इति दशधा जप्त्वा, ओंजुंसः

सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे । अमावीजमयि देवि शुक्रशापादिमु-
च्यताम् । ॐ जुंसः “देवानां प्रणवो वाँजं ब्रह्मानन्दमयं यदि । तेन
सत्येन देवेशि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ।” ॐ जुंसः “एकमेव परं ब्रह्म स्थूल-
सूक्ष्ममयं ध्रुवम् । कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ।” ॐ जुंसः
“ब्रह्मशापादिनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता विष्णुशापतः । विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा
भव सांप्रतम् ॥ ३ पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः । पवमाने
परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥” इति त्रिर्जप्त्वा, ॐ हस्तमल-
वर्युं आनन्देश्वरभैरवाय वौषट् इति दशधा जप्त्वा, सहस्रमलवर्युं
सुरादेव्यै वौषट् इति दशधा जप्त्वा, मूल त्रिर्जप्त्वा, “ॐ गङ्गे च
पमुने वैष” इत्यादिना अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्पाद्याह, कुण्डलिनीं
ज्योतीरूपामुत्थाप्य षट्चक्रं भित्त्वा, ब्रह्मरन्ध्रस्थपरमशिवमहार्केण
नियोज्य, “हंसः सोहं स्याहा” इति विचिन्त्य, तयोः सामर-
स्योद्भवानन्दामृतवह्ममाननासापुटनिःसृतामृतधारया कलशमापूर्वामृतमयं
ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य प्रणमेदिति
ब्रह्मशुचिः ॥

ततः “ॐ जुंसः हंसः परमामृतेशधीममृतेश्वरीश्वरमहामृतसुख-
पूजाद्रभ्येभ्यो वौषट्” इति कलशादमृतमादाय, ॐ जुंसः हंसः सोहं-
सः जुंजो” इति दशाक्षरमूलेन “धीममृतेश्वरीश्वरमहामृतसुखचन्द्रा-
मृतमयेन कलशामृतेन यागद्रव्याणि पवित्रीकुट २ सुधादिना पूर्य २
ॐ हौ स्याहा” इति गगनस्तूनि संशोध्य, सामान्यार्घ्यस्याप्रक्षि-
कोणं सहरं विभाज्य, मूलयीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य मूलविषया
पिन्दुमभ्यर्च्य, तत्राग्निस्वर्गसोमप्रवृत्तानि संपूज्य, दिव्यं पात्रं संस्थाप्य
कलशामृतेनापूर्य मूलविषया संपूज्य, पृथिव्यादिषट्त्रिंशत्तत्त्वानि संपूज्य,
महामुद्रां प्रदर्श्य अग्निपद्यामृतमुद्राः प्रदर्श्य मातृकां देवीं संपूज्य,
मूलवर्णास्तत्रान्तः संपूज्य, गङ्गादितीर्थान्पाद्याह, ईशानकलाः संपूज्य तत्पु-
रुषाद्योरसद्योजातवामदेवकलाः संपूज्य, शिवमयं ध्यात्वा परमामृतचुम्ब्या
पिन्दुपानाग्निर्दीपं भोज-वाह्य शिवमय जगद्भावपेविति परमार्थपात्रम् ॥

सामान्यार्घ्यस्य वामे शुक्रशक्तियोगिनीवीरवदुकचेश्वरपालपात्राण्ये
संस्थाप्य, तथोत्तरे पादाचमनीयमधुपर्काचमनीयार्घ्यपात्राण्ये स्थाप-

येदिति पात्रसंस्थापनम् ॥

पाद्यादिपात्रेषु पानीयं, गुरुपात्रादिषु दिव्यामृतं तत्रात्मानं मूल-
विधया संपूज्य, स्वाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य परमशिवेन संयोज्य
चन्द्रमण्डलस्थमहामृत्युञ्जयललाटावतंसचन्द्रकलास्रुतामृतधारया स्वा-
त्मानं संस्नाव्य, शिवोऽहमिति स्मृत्या, विज्ञानन्मयो भूत्वा, विभ्यं
भ्येतमिव ध्यात्वा सवेर्षाकं शिवं हृत्कमले ध्यात्वा, यथोक्तं स्मृत्वा
मानसैरुपचारैः संपूज्य, स्वात्मानं तन्मयं भावयित्वा, श्रीचक्र पुरोक्तं
चतुरधोऽङ्गासितारण्यविराजित-वसुदत्तलक्षित-पद्ममण्डित-त्रिकोणो-
ल्लसित-बिन्दुमण्डलं ध्यायन्मराजं विलिख्य वा प्रक्षाल्य, श्रीरत्नपीठे
संस्थाप्य योगपीठपूजां कुर्यात् ।

ओं जुंसः हंसः सोहंसः जु ओ अंआंईं उंउंअंअं लंलंपं
ओंओंअंअः कंखंघंङं चंछंजंझं टंठंडंणं तयंदंधंनं पंपंयंभंमं यंरं
लंवं शंपंसंहंलंलः ओं शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारा-
गकालनियतिपुरुषप्रकृत्यद्वन्द्वारबुद्धिमनस्सर्वचक्षुःश्रोत्रजिह्वाग्राणवाक्पाणि-
पादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुबहिसलिलपृथिव्यात्मने श्रीयो-
गपीठाय नमः, इति श्रीचक्रे संपूज्य, वसुपत्रेषु—यामायै नमः ।
ज्येष्ठायै० । रौद्रायै० । काश्यप्यै० । कलविकरण्यै० । यलविकरण्यै० ।
बलप्रमथन्यै० । सर्वभूतदमन्यै नमः । इत्यभ्यर्च्य, ओं जुंसः नमो
भगवते सकलगुणात्मशक्रियुक्ताय परानन्ताय योगपीठात्मने नमः,
इति योगपीठं संपूज्य, अमृतीकरणमुद्रां यद्वा मूलमन्त्रेण सङ्कल्या-
याहयेत् । मूलेन सुपुञ्जया हृत्कमलस्थे ज्योतिर्वामनासया नि.सार्धं
करस्थपुष्पेषु स्थितं ध्यात्वा देवमावाहयेत् ।

“ स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं तामहं परमेश्वर ।

आरण्यमिव हन्याशं बिन्दावावाहयाम्यहम् ॥

देवेश भक्तिमुलभ परिवारसमन्वित ।

यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावत् शिव इहावह ॥ ”

इति । मूलमुच्चार्य यन्त्रेषु पुष्पाणि दत्त्वावाह्य संस्थाप्य संनिरुध्य
मूलेन दश मुद्राः प्रदर्श्य, ओं जुंसः आंह्रींक्रौं यरंलंवं शंपंसह ओं जुंसः

इंसः अमृतेश्वरीसहितस्य मृत्युञ्जयदेवस्य प्राणाः इह प्राणाः, १६ जीव इह स्थितः, १६ सर्वेन्द्रियाणि वादमनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति देवीदेवयोः प्राणान् दत्त्वा, पञ्च मुद्राः प्रदर्श्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य महामुद्रया परमीकृत्य, पञ्चमैः सकलीकृत्य शङ्खचक्रत्रिस्रएवापाशकलशमालामुद्राः प्रदर्श्य, भगवन् अमृतेश्वरीसहित मृत्युञ्जय इदमासनं गृह्णातां । फट् भगवन् स्वागत-मित्युदीर्य नमस्कृत्य मुद्रया प्रणम्य । मू० भगवन् सदेवीक पापं नमः । मू० भगवन् सदेवीकाचमनीयं स्वधा । मू० भगवन् सदेवीक मधुपर्कः स्वधा । मू० भगवन् सदेवीक इदमाचमनीयं नमः । मूलं भगवन् सदेवीक इवमर्थं स्वाहा । मूलं भगवन् सदेवीक एव गन्धो नमः । मू० भगवन् सदेवीकाकृतपूर्यमेतानि पुण्याणि वीपद । इयामा-कूर्वाकसशिषाक्रान्ताभिमिश्रितं गङ्गोदक समादाय मूलमन्त्रेण मन्त्रयेत् । मू० भगवन् सदेवीक सर्वाङ्गे गङ्गोदकस्नानाय नमः । मूलं भगवन् स-देवीक महाभ्येतमहार्घ्यवस्त्रयुग्मं नमः । मू० भगवन् सदेवीक मुक्ताम-रणानि निवेदयामि नमः । मू० भगवन् सदेवीक रत्नसिंहासने उप-विश्यताम् । मू० भगवन् सदेवीक गन्धाक्षतपुष्पाणि गृह्णाण वीपद । मू० भगवन् सदेवीक धूपं गृह्णाण नमः । मू० भगवन् सदेवीक वीपं निवेदयामि नमः । धूपवीपौ दत्त्वा परमीकरणमुद्रां प्रदर्श्य त्रिकोणवृत्तमण्डलं विभाव्य साधारं पात्रं संस्थाप्य, दिव्योदनं पद्मसोपेतं नानाव्यञ्जना-भिवृतं धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, " ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा " इति निवेद्य, मूलं दशधा जप्त्वा प्राणादिपञ्चमासमुद्राः प्रदर्श्य " ॐ अमृ-ताविधानमसि स्वाहा " इति भगवन् शिवाय जले दत्त्वा, मूलेन ताम्बूलं निवेद्य, दिव्यपात्रामृतेन दशधा सन्तर्प्य प्रणम्य, परिवारदेवता देवा-ङ्गात् निष्कृता ध्यात्वा यथोपावितस्यानेषु संस्थाप्य ध्यात्वा प्रणाम-पूर्वकं प्राणायामत्रयं विधाय र्थचक्रे परिवारदेवताः पूजयेत् ।

ॐ जुंसः कामेश्वरभ्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः, इति वीरिपामृतमेतेशानाग्नेयाग्नेषु पूजयेत् । ॐ जुंसः महाकालभीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः । ॐ जुंसः स्वच्छन्दधी० । इति संपूज्य, मूलेन मूलदेवे संपूज्य सन्तर्प्य, इत्यग्रे प्रणमावरणम् ॥ ॐ जुंसः कालाग्रिदधी० । ३ नेत्रेशधी० । ३ विधनाथधी० । ३ महेश्वरधी० । ३ सद्योजा-

तथी० । ३ यामदेवथी० । इति संपूज्य, मूलेन मूलदेवं सन्तर्प्य
 पदकोणेषु द्वितीयावरणम् ॥ ओं जुंसः असिताङ्गभैरवथी० । ३ रुद्र-
 भैरवथी० । ३ खण्डभैरवथी० । ३ क्रोधराजभैरवथी० । ३ उन्मत्त-
 भैरवथी० । ३ कपालीशभैरवथी० । ३ भीषणभैरवथी० । ३ संहार-
 भैरवथी० । इति संपूज्य मूलेन मूलदेवं संतर्प्य स्ववामावर्तेनाष्टवले
 तृतीयावरणम् ॥ ओं जुंसः ब्रह्माणीथी० । ३ माहेश्वरीथी० । ३
 वैष्णवीथी० । ३ वाराहीथी० । ३ नारसिंहीथी० । ३ इन्द्राणीथी० ।
 ३ वामुण्डीथी० । ३ महालक्ष्मीथी० । इति योगिर्नापात्रामृतेन
 सन्तर्प्य, दिव्यामृतेन मूलदेवं सदेवीकं सन्तर्प्य स्ववामावर्तेन वसुधले
 चतुर्थावरणम् ॥ ओं जुंसः स्वगुरुथी० । ३ परमगुरुथी० । ३ पराप-
 रगुरुथी० । ३ परमेष्ठिगुरुथी० । इति गुरुपात्रामृतेन सन्तर्प्य दिव्या-
 मृतेन सदेवीकं देवं बिन्दौ सन्तर्प्य वृत्तत्रये पञ्चमावरणम् ॥ ओं लं
 इन्द्रथी० । ओं रं अग्निथी० । ओं टं यमथी० । ओं सं निर्ऋतिथी० ।
 ओं वं वरुणथी० । ओं यं वायुथी० । ओं सं सोमथी० । ओं हं ईशा-
 नथी० । ओं ह्रीं अनन्तथी० । ओं ब्रह्मथी० । इति धीरपात्रामृतेन
 संतर्प्य बिन्दौ देवं सन्तर्प्य, चतुरधे षष्ठावरणम् ॥ ओं धजूथी० ।
 शक्तिथी० । वण्डथी० । सङ्गथी० । पाशथी० । ध्वजथी० । गदाथी० ।
 त्रिशूलथी० । चक्रथी० । पद्मथी० । इति धीरपात्रामृतेन संपूज्य
 संतर्प्य, दिव्यामृतेन बिन्दौ देवे संतर्प्य सप्तमावरणम् ॥ मू० श्रीअ-
 मृतेश्वरीशक्तिसहित-श्रीमृत्युञ्जयथीपादुकां पू० त० । मूलं श्रीअमृतेश्वरथी-
 पादुकां० । मूलं ईशानथीपा० । मूलं भुवनेश्वरथीपा० । मूलं भीमदे-
 श्वरथीसहितदीक्षानायक-श्रीमद्वामृत्युञ्जयथीपा० । इति दशधा
 संपूज्य सन्तर्प्य अष्टमावरणम् ॥ मूलं त्रिशण्डाथी० । मूलं पाशथी० ।
 मूलं सुधाकलशथी० । मूलं मुक्ताक्षसूत्रथी० । इति परामृतेन बिन्दौ
 सन्तर्प्य सशक्तिकं देवं बिन्दौ संपूज्य नवमावरणम् ॥ मूलं मुष्टिमुद्रा-
 थी० । मूलं सारङ्गमुद्राथी० । मूलं लिङ्गमुद्राथी० । मूलं योनिमुद्रा-
 थी० । मूलं पञ्चमुखमुद्राथी० । इति बिन्दौ परमामृतेन सन्तर्प्य,
 मूलविद्यामुधार्य भीमदमृतेश्वरीशक्तिसहित-श्रीमद्वामृत्युञ्जयथीपादुकां
 पू० । इति बिन्दौ त्रिः संपूज्य दशमावरणम् ॥

इति नत्वा पुनर्नैवेद्यं " उर्वरक्षपात्रस्थितं दिव्यं नानाव्यञ्जनपुं-
तम् । दिव्यौदनं निषेद्याशु परमामृतसंस्तुतम् " इति मृगमुद्रया
निषेद्य प्रणम्य, मूलान्ते आचमनीयताम्बूलारात्रिकाचक्रप्रचामरादर्शम-
भृतीनि दिव्यानि वस्तूनि सदेवीकाय देवाय निषेद्य साष्टाङ्गं प्रणमेत् ।
देवाग्रे मालामादाय मूलं यथाशक्ति जप्त्वा " गुह्यातीति " जपं निषेद्य,
देवाग्रे कषचसदस्त्रनामस्तवराजपाठं कृत्वा तदपि देवीदेवयोः समभ्यं,
उँवाँवीँचूँतैँतौँषः ज्ञेयपात्रेभ्यो वीपद्, इति वलिं निषेद्य, उँवाँवाँ,
यूँयैँयैँयः ह्रसौःसःजुँडौँ सर्वयोगिनीभ्यो वलिर्नमः, उँह्रीँ सर्वविघ्नहृद्भ्यो
भूतेभ्यो वलिर्नमः स्वाहा, इति वलिं दत्त्वा प्रणाममुद्रां प्रदर्श्य
दण्डयत् प्रणमेत् । ततो वीरेन्द्रैः सह वीरपानं पिब्याप पूर्णपात्रं
हुत्वा स्वशक्तिमानभक्तिभरां निर्माय रतेन संतर्प्य शिवोऽहं भाषयन्
देवं सदेवीकं ज्योतीरूपं संहतिमुद्रया धीचक्रावुदयाप्य वामनासया-
न्वनीत्या तत्तेजः परमवैतन्व्यज्योतिषि ब्रह्मणि निर्वीर्यं ध्यात्वा " अह-
मेव परो हंसः शिवः परमकारणम् । मत्प्राये ॥ तु पश्चात्मा ज्ञानः
सामरसीगतः ॥ " इति ध्यात्वा, परमशिवो भूत्वा स्वशक्त्या सह
सुखं विहरेत् । यात्रे वीष्णवाचारणायणः कालं नयेत् । ततः धीच-
क्रमुदयाप्य मूलान्ते प्रक्षाल्य निर्मादयं ' उँ जुँस ह्रँ उँ स्वाहा ' इतीशान-
विधिं निर्मादयं लिपेत् ।

इतीदं देवदेवस्य महामृत्युञ्जयस्य ते ।

नित्यपूजासूतिः सम्पद्निर्णीता कुलमुन्दरि ॥

गुह्यातिगुह्यगोप्री सं, पद्वतिनित्यकर्मणः ।

वर्णिता नेत्रनाथस्य नाख्येया ब्रह्मवादिभिः ॥

सर्वतभैकसर्वस्वं रक्षसं पारलौकिकम् ।

पूजातर्कं मयाख्यातं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥

इति श्रीरघुनाथस्य तन्त्रे श्रीदेवोदस्ये श्रीमहामृत्युञ्जयपूजापद-

निनिरूपणं द्वाचत्वारिंशः पटलः ॥ ४२ ॥

अथ

त्रयश्चत्वारिंशः पटलः ।

—१७०१७—

श्रीमैरव उवाच ।

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् ।

महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाहुतम् ॥ १ ॥

यं धृत्वा यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम् ।

त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽसि महेश्वरि ॥ २ ॥

तदेव वर्षयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने ।

तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥ ३ ॥

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य श्रीमैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः
श्रीमहामृत्युञ्जयो महाकद्रो वेद्यता, ॐ श्रीं, जुं शाक्ते, सः कौलकं, इमिति
तत्त्वं, चतुर्थगंसाधने मृत्युञ्जयकवचपाठे विनियोगः । (व्याख्यम्—)

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भाले विचिन्त्य तम् ।

तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥ १ ॥

ओंजुंसः ह्रीं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।

ओंश्रीं शिवो ललाटं मे ओंह्रीं भुवौ सदाशिवः । २ ॥

नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती ।

त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः ॥ ३ ॥

मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः ।

हनुं मे हाटकेशानो मुखं वटुकमैरवः ॥ ४ ॥

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु ।

स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥ ५ ॥
 नखान् मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान् ।
 स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्गम ॥ ६ ॥
 कूर्चं कुबेरवरदः पार्श्वौ मे मारशासनः ।
 शर्वः पातु तथा नाभिं शूलीं शृणुं ममावतु ॥ ७ ॥
 शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः ।
 कटिं कालान्तकः पायादङ्गुलमेऽन्धकघातकः ॥ ८ ॥
 जागरूकोऽवताञ्जान् जह्ने मे कालभैरवः ।
 गुण्ठौ पायाजटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥ ९ ॥
 पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मे सदा ।
 शिरसः पादपर्यन्तं सघोजातो ममावतु ॥ १० ॥
 रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ।
 पूर्वं बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ॥ ११ ॥
 पश्चिमे पार्वतीनाथो ह्युत्तरे मां मनोन्मनः ।
 पेशान्यामीश्वरः पापादाग्नेय्यामप्रिलोचनः ॥ १२ ॥
 नैऋत्यां शङ्खुरव्यान्मां वायव्यां वायुसाहनः ।
 ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः ॥ १३ ॥
 दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयम् माम् ।
 रणे रानकुले घृते विषमे प्रणतशये ॥ १४ ॥
 पायाद् ओं जुं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ।
 प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥ १५ ॥
 सायं बलप्रमथनो निशायां नित्यचेतनः
 अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमयः ॥ १६ ॥
 सर्वदा सर्वतः पातु ओंजुंसः ह्रीं मृत्युञ्जयः ।

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ १७ ॥
 सर्वमन्नमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
 पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ॥ १८ ॥
 य इदं च पठेन्मन्त्री कवचं वार्त्तयेत् ततः ।
 तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः ॥ १९ ॥
 रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रूञ्जयं लभेत् ।
 जयं कृत्वा गृहं देवि संप्राप्स्यति सुखी पुनः ॥ २० ॥
 महाभये महारोगे महामारीभये तथा ।
 दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात् ॥ २१ ॥
 सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः ।
 धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसंपदः ॥ २२ ॥
 प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः ।
 इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु ।
 गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ २३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयकवचनिरूपणं
 त्रयश्चत्वारिंशः पटलः ॥ ४३ ॥



अथ

चतुश्चत्वारिंशः पटलः ।

—०-१३:-०—

श्रीगैरव उवाच ।

अधुना मृणु देवेशि सहस्राख्यस्तोत्तमम् ।

महामृत्युञ्जयस्यास्य सारात् सारोत्तमोत्तमम् ॥ १ ॥

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयसहस्रनामस्तोत्रमग्नस्य, गैरव ऋषिः, उष्णिक्
वन्ध, श्रीमहामृत्युञ्जयो देवता, ओं बीजं, जुं शक्तिः, सा कीलकं,
पुरुषार्थसिद्धये सहस्रनामपाठे विनियोगः । प्रधानम्

उद्यच्चन्द्रसमानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं

ओंजुंस्तःभुवनैकसृष्टिप्रलयोद्भूत्येकचाकरम् ।

श्रीमत्पारदशार्कमण्डिततनुं त्र्यम्बं द्विबाहुं परं

श्रीमृत्युञ्जयमीदृक्प्रविक्रमगुणैः पूर्णं हृदग्ने भजे ॥

ओंजुंस्तःहौं महादेवो मन्त्रज्ञो मानदायकः ।

मानी मनोरमाङ्गय मनस्वी मानवर्धनः ॥ १ ॥

मायाकर्ता यज्ञरूपो मल्लो मारान्तको मुनिः ।

महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रिजनप्रियः ॥ २ ॥

मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पक्षिकोऽमृतः ।

मातङ्गको मत्तचिच्छो मत्तचिन्मत्तभावनः ॥ ३ ॥

मानवेष्टप्रदो मेघो मेनकापतिनल्लभः ।

मानकायो मानस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः ॥ ४ ॥

जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः ।

ढामरेशो विरूपाक्षो विश्वभोक्ता विभावसुः ॥ ५ ॥

विश्वेशो विश्वनाथश्च विश्वसुर्विश्वनायकः ।

विनेता विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो^१ वटुः ॥ ६ ॥

स्थूलः सूक्ष्मोऽचलो लोलो लोलजिह्वः करालकः ।

विराधेयो विरागीनो विलासी लास्यलालसः ॥ ७ ॥

लोलाक्षो लोलधीर्धर्मी धनदो धनदारचितः ।

धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्म्यो धर्ममयो दयः ॥ ८ ॥

दयावान् देवजनको देवसेन्यो दयापतिः ।

दुलिचन्द्रुर्दरीवासो दम्भी देवमयात्मकः ॥ ९ ॥

कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्रीवोऽक्रीवात्मकः कुजः ।

मुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः * ॥ १० ॥

जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः ।

शनैश्चरो वेगगति(१००)र्गचालो राहुरण्ययः ॥ ११ ॥

केतुः कारापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः ।

चन्द्रो भद्रप्रदो^१ भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत् ॥ १२ ॥

क्रूरो धूर्तो वियोगी च सङ्गी गङ्गाधरो गजः ।

गजाननप्रियो गीतो गानी स्नानार्चनप्रियः ॥ १३ ॥

परमः पीवराङ्गश्च पार्वतीवल्लभो महान् ।

परात्मको विराड्वासो^१ वानरोऽमितकर्मकृत् ॥ १४ ॥

चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गुरुप्रियः ।

नन्दीश्चरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ॥ १५ ॥

नागहारो महानागो गोधरो गोपतिस्तपः ।

१ 'याकृप्रदो' ख. पाठः । २ 'सेवो' ग. ड. पाठः । * इत्थं नास्ति प्रथमम् ।

३ 'रुद्रपतिः' क. 'रुद्रप्रदो' ग. पाठः । ४ 'विराड्वासी' ख. पाठः ।

त्रिलोचनस्त्रिलोकेशस्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ॥ १६ ॥
 त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः ।
 व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिबर्णभाक् ॥ १७ ॥
 त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनायस्त्रिधाशान्तस्त्रिधागतिः ।
 त्रिधागुण्य विश्वकर्ता विश्वभर्ताऽऽधिपूरुषः ॥ १८ ॥
 उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृद् ।
 विवेकाक्षो विशालाक्षोऽविधिर्विधिरनुत्तमः ॥ १९ ॥
 विद्यानिधिः सरोज्याक्षो निःस्मरः स्मरनाशनः ।
 स्मृतिमान् स्मृतिदः स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥ २० ॥
 ब्राह्मव्रती ब्रह्मचारी चतुरथतुराननः ।
 चलाचलोऽचलगतिर्वेगी धीराधिपो वरः ॥ २१ ॥
 सर्ववासः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः ।
 सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः (२००) ॥ २२ ॥
 समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः ।
 सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी ॥ २३ ॥
 सुराद् सत्यः सत्यमती रुद्रो रौद्रवपुर्वसुः ।
 वसुमान् वसुधानायो वसुरूपो वसुप्रदः ॥ २४ ॥
 ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम् ।
 ईशोऽत्रशेषोऽत्रयवी शेषशायी श्रियः पतिः ॥ २५ ॥
 इन्द्रधन्द्रावतंसी च चराचरजगत्स्थितिः ।
 स्त्रिरः स्वाणुरणुः पीनः पीनवद्धाः परात्परः ॥ २६ ॥
 पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकूलः ।
 पशुरूपः पशुपतिः पशुञ्जानी पयोनिधिः ॥ २७ ॥
 वेद्यो वैद्यो वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृडः ।

शूली शुभङ्करः शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः ॥ २८ ॥

शशाङ्कधवलः स्वामी वज्री शङ्खी गदाधरः ।

चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुजमण्डितः ॥ २९ ॥

स्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः ।

देवो महोदाधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः ॥ ३० ॥

उग्ररूप उग्रपतिरुग्रवक्त्रास्तपोमयः ।

तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः ॥ ३१ ॥

हविर्हरो हयपतिर्हृषदो हरिमण्डितः ।

हरिवाही महौजस्को नित्यो नित्यात्मकोऽनलः ॥ ३२ ॥

संमानी संसृतिहारी सर्गां संनिधिरन्वयः ।

विद्याधरो विमानी च वैमानिकवरप्रदः ॥ ३३ ॥

वाचस्पति(३००)र्वसासरो वामाचारी बलन्धरः ।

वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥ ३४ ॥

वासी कोलश्रुतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः ।

दाक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥ ३५ ॥

भोगी रोगहरो हेयो हारी हरिविभूषणः ।

बहुरूपो बहुमतिर्बहुवित्तो विचक्षणः ॥ ३६ ॥

नृत्तकृच्चित्तसंतोषो नृत्तगीतविशारदः ।

शरद्वर्णविभूषाढ्यो गलदग्घोऽघनाशनः ॥ ३७ ॥

नागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत् ।

नटनो हाटकेशानो वरीयाथ निर्वर्णभृत् ॥ ३८ ॥

ऋद्धारी टङ्गदस्तश्च पाशी शार्ङ्गी शशिप्रभः ।

सहस्ररूपो समगुः साधूनामभयप्रदः ॥ ३९ ॥

साधुसेव्यः साधुगतिः सेनाफलप्रदो विभुः ।

सुमहा मद्यपो मत्तो मत्तमूर्तिः सुमन्तकः ॥ ४० ॥

कौली लीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः ।
 रोचिष्णुर्विष्णुरच्युतरचूननो नूननो नवः ॥ ४१ ॥
 न्यग्रोधरूपो भयदो भयहाऽभीतिघारणः ।
 धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥ ४२ ॥
 धराधरोऽन्धकारिषुर्विज्ञानी मोहवर्जितः ।
 स्थाणुकेशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥ ४३ ॥
 प्रियकृत् प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः ।
 प्रभाकरः प्रभादीप्तो मन्युमान् मानवेष्टदः ॥ ४४ ॥
 वीक्षणयाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णांशुस्तीक्ष्णलोचनः ।
 तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयीतनुः ॥ ४५ ॥
 हविर्भृग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो (४००) हलीपतिः ।
 हविष्मल्लोचनो हालामयो हरितरूपभृत् ॥ ४६ ॥
 अदिमाऽऽम्रमयो वृचो हुताशो हुतभृग् गुण्यो ।
 गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी क्रीमी ॥ ४७ ॥
 क्रमेश्वरः क्रमपरः क्रमिकृत् क्रान्तमानसः ।
 महातेजा महामारो मोहितो मोहवल्लभः ॥ ४८ ॥
 महस्वी त्रिदशो बालो बालापतिरघापहः ।
 बान्यो रिपुहरो हाही गोविर्गविमवोऽगुणः ॥ ४९ ॥
 सगुणो विचराद् धीर्यो विरोचनो विभावसुः ।
 मालामयो माधवश्च विकर्तनो विकर्तनः ॥ ५० ॥
 मानकृन्मुक्तिदोऽतुन्यो मुख्यः शत्रुभयङ्करः ।
 हिरण्यरेताः सुभगः मतीनायः मिरापतिः ॥ ५१ ॥
 मेद्री मैनाकमग्निनीपतिरुचमरूपभृत् ।
 आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रचयङ्करः ॥ ५२ ॥

वसुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वसुप्रियः ।
 समुद्रोऽमिततेजाश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी ॥ ५३ ॥
 गरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाय ईश्वरः ।
 यज्ञपेयो वाज्रपेयः शतक्रतुः शताननः ॥ ५४ ॥
 प्रातिष्ठस्तीव्रविस्मयी गम्भीरो भाववर्धनः ।
 गायिष्ठो मधुरालापो मधुमच्च माधवः ॥ ५५ ॥
 मायात्मा भोगिनां प्राता नाकिनामिष्टदायकः ।
 नाकीन्द्रो जनको जन्यः स्तम्भनो रम्भनाशनः ॥ ५६ ॥
 शङ्कर ईश्वर ईशः शर्वरीपतिशेखरः ।
 लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः ॥ ५७ ॥
 भर्गो (५००)ऽनर्घो नरेशानो नरवाहनसेवितः ।
 चतुरो भविता भावी भावदो भवभीतिहा ॥ ५८ ॥
 भूतेशो महितो रामो विरामो रात्रिवल्लभः ।
 मङ्गलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धिविवर्धनः ॥ ५९ ॥
 जयी जीवेश्वरो जारो जाठरो जद्गुतापनः ।
 जद्गुत्कन्याधरः कन्यो वत्सरो मासरूपधृत् ॥ ६० ॥
 श्वतुर्ध्वभूसुताध्यक्षो विहारी विहगाधिपः ।
 शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्रो भृगुसुतो भगः ॥ ६१ ॥
 शान्तः शिवप्रदोऽभेद्योऽभेदकृच्छान्तकृत् पतिः ।
 नाथो दान्तो भिन्नरूपी दातृश्रेष्ठो विशांपतिः ॥ ६२ ॥
 कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधी विग्रही रसः ।
 नीरसः सरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ॥ ६३ ॥
 पञ्चाक्षः पण्मुखश्चैव विमुखः सुमुखीप्रियः ।
 दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ॥ ६४ ॥

पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतात्मा पृथनान्तकः ।
 अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् चलघातनः ॥ ६५ ॥
 भल्ली भौलिर्भवाभावो भावाभावविमोचनः ।
 नारायणो मुक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ॥ ६६ ॥
 कारामोक्षप्रदोऽजेयो महाङ्गः सामगायनः ।
 तत्सङ्गमो नामकारी चारी स्वरनिबृधनः ॥ ६७ ॥
 कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रपाकुलः ।
 त्रपावान् दुर्गातित्राता दुर्गमो दुर्गघातनः (६००) ॥ ६८ ॥
 महापादो विपादश्च विपदां नाशको नरः ।
 महाबाहुर्महोरस्को महानन्दप्रदायकः ॥ ६९ ॥
 महानेत्रो महादाता नानाशास्त्रविचक्षणः ।
 महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः ॥ ७० ॥
 महाचक्षुर्महानासो महाग्रीवो दिगालयः ।
 दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाघसूत्रभृत् ॥ ७१ ॥
 रमशाननिलयोऽरागी महाकटिरनूतनः ।
 पुराणपुरुषोऽपारः परमात्मा महाकरः ॥ ७२ ॥
 महालस्यो महाकेशो महोष्ठो मोहनो विराट् ।
 महामुखो महाजङ्घो मण्डली कुण्डली नदः ॥ ७३ ॥
 असपन्नः पत्रकरः पात्रहस्तश्च पाटवः ।
 लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कम्पितः ॥ ७४ ॥
 कम्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः ।
 अनलः पवनः पाठः पीठस्थः पीठरूपकः ॥ ७५ ॥
 पाठीनः कुलिशी पीनो मेरुधामा महागुणी ।
 महानूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा ॥ ७६ ॥
 अयर्वर्षार्पः सोम्यास्यः श्वरसहस्रामितेक्षणः ।

यजुःसाममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः ॥ ७७ ॥
 याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञज्ञो धरणीपतिः ।
 जङ्गमी मङ्गदो भापादक्षोऽभिगमदर्शनः ॥ ७८ ॥
 अगम्यः सुगमः सर्वः खेटी खेताननो नयः ।
 अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यमः ॥ ७९ ॥
 प्रतापी प्रजयी प्रातर्मध्याह्नायमध्वरः ।
 त्रिकालज्ञः सुगणकः पुष्करस्थः परोपकृद् ॥ ८० ॥
 उपकर्तापहर्ता च घृणी रणजयप्रदः (७००) ।
 धर्मी चर्मन्मरथारूपधारविभूषणः ॥ ८१ ॥
 नक्तञ्चरः कालवशी वशी वशिधरोऽवशः ।
 वश्यो वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः ॥ ८२ ॥
 भस्माङ्गी मलिनाङ्गश्च मालामण्डितमूर्धजः ।
 गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥ ८३ ॥
 साकारो गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः ।
 अरुणश्चैकचिन्त्यश्च त्रिशङ्कुः शङ्कुधारणः ॥ ८४ ॥
 आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः ।
 वैश्यः शूद्रः कपोतस्थः तृष्टा तुष्टो रूपाकुलः ॥ ८५ ॥
 रोगी रोगापहः शूरः कपिलः कपिनायकः ।
 पिनाकी चाष्टमूर्तिश्च चितिमान् धृतिमांस्तथा ॥ ८६ ॥
 जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्हृताशः सोममूर्तिमान् ।
 सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥ ८७ ॥
 भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
 भवः सर्वस्तथा रुद्रः पशुनाथश्च शङ्करः ॥ ८८ ॥

गिरिजो गिरिजानाथो गिरीन्द्रश्च महेश्वरः ।
 गिरीशः खण्डहस्तश्च महानुग्रो गणेश्वरः ॥ ८६ ॥
 भीमः कपर्दी भीतिघ्नः खण्डपथण्डविक्रमः ।
 खण्डभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा विषापहः ॥ ८७ ॥
 कङ्कालः कलनाकारः श्रीकण्ठो नीललोहितः ।
 गणेश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजो दुरन्तकः ॥ ८८ ॥
 भृङ्गिरीटी रसासारो दयालू रूपमण्डितः ।
 अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः (८००) ॥ ८९ ॥
 (सयोजातः सूर्यमुज्जमेखली दुर्निमित्तहृत् ।
 दुःस्वमहृत् प्रसहनो गुणिनादप्रतिष्ठितः ॥ ९० ॥
 शुक्लस्त्रिशुक्लः संपन्नः शुचिर्भूतनिपेवितः ।
 यज्ञरूपो यज्ञमुखो यज्ञमानेष्टदः शुचिः ॥ ९१ ॥
 धृतिमान् मतिमान् दक्षो दक्षयज्ञविपातकः ।
 नागहारी भस्मधारी भूतिभूषितविग्रहः ॥ ९२ ॥
 कपाली कुण्डली भर्गः भक्तातिमञ्जनो विभूः ।
 वृषध्वजो वृषारूढो धर्मवृषविवर्धकः ॥ ९३ ॥
 महायलः सर्वतीर्थः सर्वलक्षणलबितः ।
 सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् ॥ ९४ ॥
 पवित्रस्त्रिककुन्मन्त्रः कनिष्ठः कुण्डलिनीलः ।
 ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतग्रीवाशशक्तिमान् ॥ ९५ ॥
 पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः ।
 देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ॥ ९६ ॥
 देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः ।

गुह्यप्रियो गणसेव्यः पवित्रः सर्वपावनः ॥ १०० ॥

ललाटाक्षो विश्वदेवो दमनः श्वेतपिङ्गलः ।

विमुक्तिर्मुक्तिरेजस्को भक्तानां परमा गतिः ॥ १०१ ॥

देवातिदेवो देवर्षिर्देवामुरवरप्रदः ।

कैलासगिरिवामी च हिमवद्गिरिसंश्रयः ॥ १०२ ॥

नाथपूज्यः मिद्वनुत्यो नवनाथसमर्चितः ।

कपर्दी कल्पकृद् रुद्रः सुमना धर्मवत्सलः ॥ १०३ ॥

वृषाकपिः कल्पकर्ता नियतात्मा निराकुलः ।

नीलकण्ठो धनाध्यक्षो नाथः प्रमथनायकः ॥ १०४ ॥

अनादिरन्तरहितो भूतिदो भूतिविग्रहः ।

सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः ॥ १०५ ॥

युगरूपो महारूपो महागीतो महाशृणुः ।

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरस्तरेभ्यश्च ।
 सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥ ११३ ॥
 वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालः करालकः ।
 महाकालो भैरवेशो वेशी कलविकरणः ॥ ११४ ॥
 बलविकरणो बालो बलप्रमथनस्तथा ।
 सर्वभूतादिदमनो देवदेवो मनोन्मनः ॥ ११५ ॥
 सद्योजातं मयद्यामि सद्योजाताय वै नमः ।
 नवे नवे नातिनवे भजस्व मां भवोद्भवः ॥ ११६ ॥
 भावनो भवनो भाव्यो बलकारी पं पदम् ।
 परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः ॥ ११७ ॥
 पारावारः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः ।
 ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं देवो ओं श्रीं ह्रीं भैरवोत्तमः ॥ ११८ ॥
 ओं ह्रीं नमः शिवायेति मन्त्रो बटुर्वरायुधः ।
 ओं ह्रीं सदाशिवः ओं ह्रीं आपदुद्धारणो मनुः ॥ ११९ ॥
 ओं ह्रीं महाकरालास्यः ओं ह्रीं उटुकर्भरवः ।
 भगवांस्त्र्यम्बक ओं ह्रीं ओं ह्रीं चन्द्रार्धशेखरः ॥ १२० ॥
 ओं ह्रीं सज्जटिलो धूम्रो ओं ह्रीं त्रिशुरधातनः ।
 ह्रीं ह्रीं हरिवामाङ्ग ओं ह्रीं ह्रीं त्रिलोचनः ॥ १२१ ॥
 ओं वेदेरूपो वेदत्रयं त्र्यम्बकः सप्तर्षिर्मान् ।
 रुद्रां घोररवोऽघोरो ओं त्र्यम्बकं अघोरैरवः ॥ १२२ ॥
 ओं जुमः पीयूषसक्तोऽमृताध्यवोऽमृतालमः ।
 ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिर्धनम् ॥ १२३ ॥
 उरारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुखाय मामृतात् ।
 ओं जुमः ओं भूर्भुवः सः ओं जुमः त्र्यम्बकः (१०००) ॥ १२४ ॥

इदं नाम्नां सहस्रं तु रहस्य परमाद्भुतम् ।

सर्वस्वं नाकिनां देवि जन्तूनां भुवि का कथा ॥ १२५ ॥

तव भक्त्या मयाख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।

गोप्यं सहस्रनामेदं साक्षादमृतरूपकम् ॥ १२६ ॥

यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रावयेच्छृणुयात्, तथा ।

मृत्युञ्जयस्य देवस्य फलं तस्य शिवे शृणु ॥ १२७ ॥

लक्ष्म्या कृष्णो घिया जीवो प्रतापेन दिवाकरः ।

तेजसा वह्निदेवस्तु कवित्वे चैव भार्गवः ॥ १२८ ॥

शौर्येण हरिसङ्काशो नीत्या द्रुहिणसन्निभः ।

ईश्वरत्वेन देवेशि मत्समः किमतः परम् ॥ १२९ ॥

यः पठेदर्घरात्रे च साधको धैर्यसंयुतः ।

पठेत् सहस्रनामेदं सिद्धिमाप्नोति साधकः ॥ १३० ॥

चतुष्पथे चैकलिङ्गे मरुदेशे वनेऽजने ।

श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे पाठात् सिद्धिर्न संशयः ॥ १३१ ॥

नौकायां चौरसङ्घे च सङ्कटे प्राणसंक्षये ।

यत्र यत्र भये प्राप्ते विषवद्विभयादिषु ॥ १३२ ॥

पठेत् सहस्रनामधु मुच्यते नात्र संशयः ।

भौमावस्थां निशीथे च गत्वा प्रेतालयं सुधीः ॥ १३३ ॥

पठित्वा स भवेद् देवि साक्षादिन्द्रोऽर्चितः सुरैः ।

शनौ दर्शदिने देवि निशायां सरितस्तटे ॥ १३४ ॥

पठेन्नाममहस्रं वै जपेदष्टोत्तरं शतम् ।

सुदर्शनो भवेदाशु मृत्युञ्जयप्रसादतः ॥ १३५ ॥

दिगम्बरो भुक्तकेशः साधको दशधा पठेत् ।

इह लोके भवेद्राजा परे मुक्तिर्मविष्यति ॥ १३६ ॥

इदं रहस्यं परम भक्त्या तव मयोदितम् ।

मभ्रगर्भं मनुमयं न चाख्येयं दुरात्मने ॥ १३७ ॥
 नो दद्यात् परशिष्येभ्यः पुत्रेभ्योऽपि विशेषतः ।
 रहस्यं मम सर्वस्य गोप्यं गुप्ततरं कलौ ॥ १३८ ॥
 पण्डितस्यापि नो वाच्यं गोपनीयं तथात्मनः ।
 दुर्जनाद् रक्षणीयं च पठनीयमहर्निशम् ॥ १३९ ॥
 श्रोतव्यं साधकमुखाद्गच्छणीयं सपुत्रवत् ।

इति श्रीकृद्रूपामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयसहस्रनाम-
 निरूपणं चतुश्चत्वारिंशः पटलः ॥ ४४ ॥

अथ

पञ्चचत्वारिंशः पटलः ।

—१८५—

श्रीभरव उवाच ।

देवि वक्ष्यामि ते स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
 मूलमधैकसर्वस्य रक्षणीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥
 दीक्षाकाले च पूजाया जपान्ते च पठेच्छिवे ।
 विसर्जने तथाह्वने ॥ दीक्षाफलमाप्नुयात् ॥ २ ॥
 अस्य वै स्तोत्रराजस्य अपिभरव ईश्वरि ।
 गापभ्यं हृन्द इत्युक्तं मरामृत्युञ्जयः शिवे ॥ ३ ॥

देयता प्रणवो बीजं शक्तिः शक्तिः स्मृता शिवे ।

हृजं कीलकमित्युक्तं सूर्यो दिग्बन्धनं तथा ॥

भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

चन्द्रार्काग्निविलोचनं सितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं

मुद्रापाशसुधाचस्रत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ।

कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं

कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये ॥ ५ ॥

पीयूषांशुसुधामणिः करतले पीयूषकुम्भं वहन्

पीयूषद्युतिसंपुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः ।

मां पीयूषमयूखसुन्दरवपुः पीयूषलक्ष्मीसखः

पीयूषद्रववर्णोऽप्यहरहः प्रीयातु मृत्युञ्जयः ॥ ६ ॥

देवं दिनेशाग्निशशाङ्कनेत्रं

पीयूषपात्रं कलशं दधानम् ।

दोभ्यां सुधांशुद्युतेमिन्दुचूडं

नमामि मृत्युञ्जयमादिदेवम् ॥ ७ ॥

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं बालेन्दुशेखरम् ।

(भद्रामेनं सरेद्राग्नौ मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥ ८ ॥

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भालेऽतिविस्तृते ।)

तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥ ९ ॥

मात्राद्यं भातृकामौलिचेदकल्पतरोः फलम् ।

यो जपेत् स भवेद्विश्वैमवास्पदमीश्वरि ॥ १० ॥

हृजबीजं कुलाचारविचारकुशलः शिवः ।

यो जपेत् तस्य वक्ताञ्जे नरीनर्त्ति हि भारती ॥ ११ ॥

(सविसर्गं शक्तिवीजं यो जपेत् साधकः शिव ।
 स भवेदाचिरादेज विश्वैश्वर्यस्य भाजनम् ॥ १२ ॥)
 देवेशाकाशवीजं ते विन्दुविम्बेन्दुमण्डितम् ।
 चिन्तयन् यो भवेच्चित्ते स शिवाद्वयतां लभेत् ॥ १३ ॥
 सविसर्गं भृगुं भर्गं सर्गप्रलयकारणम् ।
 निसर्गतो भजेद्योऽन्तर्लीयते स परं पदे ॥ १४ ॥
 लक्ष्मीशब्दाक्षरं विन्दुभूषणं यो जपेत् तव ।
 करे लक्ष्मीमुखे वाणी तस्य शम्भो रणे जयः ॥ १५ ॥
 पालयेति युगं देव यो जपेद्वीरसन्निधौ ।
 स सार्वभौमसाम्राज्यं भजेदन्ते सलोकताम् ॥ १६ ॥
 शरदं वरदा वीरसाधनीं सविसर्गकाम् ।
 जपेद्यः शरदम्भोदधवलं तद्यशो भवेत् ॥ १७ ॥
 आकाशवीजं साकाशं जपेद्यः कुशसंस्तरे ।
 स कौलिकशिरोरत्न-रञ्जिताङ्घ्रियुगो भवेत् ॥ १८ ॥
 शङ्करीजं सरेफं ते शम्भो पद्यामने जपेत् ।
 कङ्कालमालाभरणो भविता भैरवोपमः ॥ १९ ॥
 हृजरीजं जगद्वीजं तेजोरूपं च यो जपेत् ।
 तस्मै दास्यसि भोः शम्भो निजं धाम सनातनम् ॥ २० ॥
 ओंकारं माकारं गिरिश तव मन्त्राञ्चलगतं
 जपेद् यो हृत्पद्मे निरुपमपराजितमृदितः ।
 स साम्राज्यं भूर्मा भजति रजनीनायककला-
 लसन्मीलितः प्रान्ते प्रजति शिखसायुज्यपदवीम् ॥ २१ ॥
 विन्दुभूषणरकोणरसार-सारणस्कन्दनारणहृत्ते ।

भूगृहाद्व्य इति चक्रमण्डले तां निषण्णमुपसि स्तराम्यहम् ॥ २२ ॥

नानाविधानार्घ्यविभूषणाढ्यं

निःशेषपीयूषमयूखविम्बे ।

निषण्णमीशानमशेषशेष-

वाणीतनुं मृत्युहरं नमामि ॥ २३ ॥

इति स्तोत्रं दिव्यं सकलमनुराजैकनिकरं

पठेद्यः पूजान्ते शिव शिवगृहे वार्चनविधौ ।

रणे जिह्वा वैरीन् भजति नृपलक्ष्मीं स्वमहता

भवेदन्ते वीरः सकलसुरसेव्यः शिवसमः ॥ २४ ॥

इतीदं परमं स्तोत्रं महामृत्युञ्जयप्रियम् ।

पठेद्वा पाठयेन्नित्यं सर्वस्य देवदुर्लभम् ॥ २५ ॥

अदेयं परमं तत्त्वं महापातकनाशनम् ।

महामन्त्रमयं दिव्यं साधनैर्घनसाधनम् ॥ २६ ॥

त्रैलोक्यसारभूतं च त्रैलोक्याभयदायकम् ।

पठेन्निशीथे मन्त्री तु सद्यः सिद्धिर्भवेत् कलौ ॥ २७ ॥

चतुष्पथेऽर्चरात्रे ॥ ब्राह्मणे वापि मुहूर्तके ।

पठित्वा कौलिको देवि भवेद् भैरवसन्निभः ॥ २८ ॥

इतीदं मम सर्वस्य रहस्यं परमाद्भुतम् ।

यस्य कृत्स्नं न वक्रव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ २९ ॥

इति धीन्द्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयस्तोत्रनिरूपणं

पञ्चचत्वारिंशः पटलः ॥ ४५ ॥



समाप्तं मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम् ॥

अथ

षट्चत्वारिंशः पटलः ।

अथ श्रीदुर्गापञ्चाङ्गम् ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ साधकानां जगत्पद ।

यत् पुरा कथितं देव दुर्गापञ्चाङ्गमुत्तमम् ॥ १ ॥

सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ।

उदय कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया ॥ २ ॥

श्रीभरव उवाच ।

एतद् गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम् ।

दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया ॥ ३ ॥

तव स्नेहात् श्रवणमामि दुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि ।

गुह्यं गोप्यतमं दिव्यं न देयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ४ ॥

पा देवी दैत्यदमनी दूर्गेत्यष्टाक्षरा शिवा ।

देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरः ॥ ५ ॥

पुरन्दरद्वितीयाय त्रयार्थाय सुरादिषाम् ।

सर्वं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी ॥ ६ ॥

सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते मंदारिष्यति तामसी ।

इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥ ७ ॥

अष्टाक्षरी महाविद्या मंथ्यानीता परात्मिका ।

तस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिनौकमाम् ॥ ८ ॥

वक्ष्यामि परमप्रीत्या न चारूपेयं दुरात्मने ।

पटलं तव वक्ष्यामि दुर्गायास्तत्त्वमुत्तमम् ॥ ९ ॥

येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ।

दुर्गाया देवि वक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं पराश्रयम् ।

सर्वतन्त्रेष्वविरूपातं सर्वकामफलप्रदम् ॥ १० ॥

तारं माया चाक्रिकं चक्रिदूर्वा

वायव्यार्थं विश्वमन्ते भवानि ।

दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्या-

मन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥ ११ ॥

नास्यान्तरायबाहुल्यं नाप्यमित्रादिदूषणम् ।

नो वा मयासंयोगो नाचार्युगविश्रवः ॥ १२ ॥

साक्षात् सिद्धिप्रदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ।

अष्टाक्षरोऽष्टसिद्धीशो गोपनीयो दिग्भ्यः ॥ १३ ॥

महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः ।

मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥ १४ ॥

वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्थं वा महेश्वरि ।

एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ १५ ॥

मूलोत्कीलनमिदं तु सञ्जीवनमुमंस्कृतम् ।

पुरश्चर्यां चरेत् पश्चात् मण्डुटाढ्यं चरेन्मनुम् ॥ १६ ॥

ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गायास्तत्त्वसिद्धिदम् ।

यं जप्त्वा साधको भूमां विचरेद्देवो यथा ॥ १७ ॥

अपिरस्य स्मृतो देवि मन्त्रस्यायो महेश्वरः ।

छन्दोऽनुष्टुप् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा स्मृता ॥ १८ ॥

चाक्रिक धीममोशानि माया शक्तिरिति स्मृता ।
 तार कीलकमाशाना विश्व उन्धनमीश्वरि ॥ १६ ॥
 धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।
 तारमायात्तरैर्देवि न्यास पटदीर्घभागिभिः ॥ २० ॥
 निहत्य पङ्क्तिपून् देवि न्यासेद् दुर्गा कुलेश्वरीम् ।

दुर्गानिभा विनयना विलसत्किरीटा

शङ्खाब्जगद्भजरसेटकशूलचापान् ।

मतर्जनीं च दधती मङ्गिषामनन्था

दुर्गा नगारकुलपीठगता भजेऽहम् ॥ २१ ॥

यशोद्धार प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कुलमन्दिरम् ।

सर्वमिद्विग्रह चक्र मर्माशापरिपूरकम् ॥ २२ ॥

विन्दुत्रिकोण रसरायविभ्य

उत्ताष्टपत्राञ्चितरहितवृत्तम् ।

धरागदोद्भामितमिन्दुचूडे

पूज्याः पृथक् पृथक् देवि गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे ॥ २८ ॥
 दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चक्रे मूलमुच्चार्य साधकः ।
 पूजयेत् पद्मकिञ्जल्कैः पङ्कजे पद् कुलाम्बिकाः ॥ २९ ॥
 शैलपुत्रीं स्वामाग्रात् पूजयेद् ब्रह्मचारिणीम् ।
 चण्डघण्टां च कूष्माण्डां स्कन्दमातरमीश्वरि ॥ ३० ॥
 कात्यायनीं च संपूज्य दूर्वागन्धाक्षतैः परम् ।
 पुनः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा श्रीचक्रे परमार्थदे ॥ ३१ ॥
 पूजयेद् देवतास्तिस्रः कुलस्यास्त्रिपुराम्बिकाः ।
 कालरात्री महागौरी देवदूतीति पार्वति ॥ ३२ ॥
 त्रिकोणाग्राच्छिवे पूज्याः सिन्दूराक्षतपुष्पकैः ।
 दूर्वादलाञ्जलिं दत्त्वा मन्त्रराजेऽष्टमिद्विदे^१ ॥ ३३ ॥
 पूजयेदम्बिकां दुर्गामष्टाक्षरविभूषणाम् ।
 विन्दौ देवीमष्टभुजां विद्यामष्टाक्षरीं शिवे ॥ ३४ ॥
 नीलकण्ठं शिवं विन्दौ पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
 तत्रापुधानि देवेशि पूजयेदष्ट साधकः ॥ ३५ ॥
 शङ्खं पद्ममणिं बाणान् धनुः खेटकमीश्वरि ।
 शूलं संतर्जनीं दिव्यां नानापुष्पैः समर्चयेत् ॥ ३६ ॥
 देवदेव्यौ विन्दुपीठे पूजयेत् सर्वसिद्धये ।
 अथ वक्ष्ये महादेवि प्रयोगानष्ट सिद्धये ॥ ३७ ॥
 यान् विधाय कलौ मन्त्री भवेत् कल्पद्रुमोपमः ।
 स्तम्भनं मोहनं चैव मारणार्कषणे ततः ॥ ३८ ॥
 वशीकारं तपोघाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।
 एषां साधनमाचक्षे प्रयोगाणां महेश्वरि ॥ ३९ ॥
 महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ।

- (१) अयुतं प्रजपेन्मूलं रमशाने निशि साधकः ॥ ४० ॥
हुनेत् दशांशतः सर्पिर्वान्मासासृगच्युतान् ।
सम्भनं आयते चित्रं वादिकामिज्जनाम्भसाम् ॥ ४१ ॥
- (२) अयुतं प्रजपेद् देवि वटे रुद्राक्षमालया ।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्याक्षपट्टजैः ॥ ४२ ॥
भारगधैः सुधामूलैर्मोहनं जायते चणात् ।
देवानां दानवानां च का कथाव्यधियां नृणाम् ॥ ४३ ॥
- (३) अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकमत्तमः ।
वेतमीमूलगो वापि हुनेत् तत्र दशांशतः ॥ ४४ ॥
घृतपायसशम्भुकान् रिपुर्मृत्युमुखं प्रजेत् ।
- (४) अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यागारे कुलेद्यरि ॥ ४५ ॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योपशटीशरैः ।
केपिथोर्जरपि प्रातर्भोगेदाकर्षणं स्त्रियाम् ॥ ४६ ॥
- (५) अयुतं प्रजपेन्मूलं चतरे सरितं हुनेत् ।
आज्याब्जक्षुरपापाण्ड-रक्तपुष्पाणि पार्षति ॥ ४७ ॥
शक्रोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः ।
- (६) अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोऽथत्यमूलगः ॥ ४८ ॥
हुनेदाग्रं दशांशेन केशं स्त्रीणां तर्च कणाः ।
रिपुमुच्चाटयेत् शीघ्रं यदि शक्रममो भवेत् ॥ ४९ ॥
- (७) अयुतं प्रजपेन्मूलं मुरदुर्मतले हुनेत् ।
घृताक्तकुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि साधकैः ॥ ५० ॥
रोगोपद्रवकालस्य मयः शान्तिर्भविष्यति ।
- (८) अयुतं प्रजपेन्मूलं लीलोपवनमण्डले ॥ ५१ ॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाजमस्तकैः ।

पादैरष्टभिरीशानि सद्यः पुष्टिः प्रजायते ॥ ५२ ॥
 इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रसर्वस्वरूपवान् ।
 दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥ ५३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गापटलनिरूपणं
 पट्चत्वारिंशः पटलः ॥ ४६ ॥

अथ

सप्तचत्वारिंशः पटलः ।

ॐ

श्रीभैरव उवाच ।

मृणु पार्वति वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ।

यस्याः श्रवणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत् ॥ १ ॥

ब्राह्म्ये मुहूर्तं चास्थाय, यद्वपचासनः स्वशिरःस्थसहस्रारार्धोऽमुषः
 मलकणिकान्तर्गतं निजगुरुं श्वेतधर्यं श्वेतालङ्कारालङ्कृतं त्रिशुजं स्वशिरः
 श्वेताम्बरभूषितया घामाङ्गे सहितं ध्यात्वा, मानसरुपचारैः संपूज्य दण्ड
 धत् प्रणमेत् ।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।

चक्षुस्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः सावान्महेश्वरः ।

गुरुरेव जगन् मयं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इति नत्वा तदाशां शृद्धीत्वा बहिरागत्य मलमूत्रादि संलज्य ,
वर्णोक्तं शौचं विधाय नद्यादौ गत्वा सुकूर्चं द्वादशाङ्गुलं दन्तधावनं
कुर्यात् । " ओं क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः " इति दन्तान्
विशोध्य , चाक्रिकवोजेन गड्ढपट्टकं विधाय , प्रणवेन मुखं त्रिः प्रोक्ष्य
" ओं ह्रीं मणिधरि वाज्रिणि शिखापरिसरे रत्न रत्न हूं फट् स्वाहा " इति
शिखां वद्ध्वा तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणायामं विधाय , मलापकर्षणं
कानं कृत्वा मन्त्रज्ञानं चरेत् । ततो मूलेन शृङ्गमानीय जलं प्रोक्षयेत् ।
मन्त्रभृदा सूर्यमण्डलं विचिन्त्य , " गङ्गे च यमुने चेति " तीर्थान्वाद्याह्य
जले यन्त्रं विभाव्य सनीलकण्ठां दुर्गांमावाहयेत् । तत्र पङ्कजं विधाय
देवीं सशिखां ध्यात्वा , मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा त्रिनिर्मज्ज्योन्मज्जेत् ।
तत्र कुम्भमुद्रां वद्ध्वा स्वमूर्ध्नि देवदेव्यौ जलेन क्षपयित्वा " ओं ह्रीं ह्रीं सः
मार्तण्डभैरवाय प्रकाशाशक्तिसहिताय एव तेऽर्घ्यं नमः । इति सूर्याया-
र्घ्यत्रयं दत्त्वा घातोऽन्यत् परिधाप्य , तत्त्वत्रयेणाचम्य त्रिः प्राणायामं
विधाय , पूर्णसंघ्यां कृत्वा पङ्कजं कृत्वा , चुलकेन जलमादाय तत्त्वमुद्र-
याच्छाद्य यंत्रं संवहं इति त्रिरभिमन्त्र्य मूलमुचरंस्तद्ग्रीहितोदकविन्दुभिः
सप्तधा स्थण्डिलस्य भुज्य , सव्यहस्ते शेषमुद्रकं धृत्वा इत्यन्तर्नीत्वा
देहान्तः पापं प्रक्षाल्य पिङ्गलया विरेच्य , पुरःकल्पितयज्ञशिलायां
धामतः फडिति निक्षिपेत् । इत्यधमर्षणं विधाय पूर्ववदाचम्य , जले
यन्त्रं ध्यात्वा मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा , मूलविधान्ते साङ्गे सयाहने
सायुधे सपरिच्छदे श्रीनीलकण्ठसहिते मातर्दुर्गे तृप्यतामित्यष्टवारं
संतर्प्य नीलकण्ठं त्रिः संतर्प्य , एकैकाञ्जलिना परिवारदेयताः सप्तर्प्य ,
देवदेव्यौ हृदि ध्यात्वा , जले चतुरश्रं विलिख्य , तत्रेशानादिक्रमेण
गुरुपाङ्क्तिं संतर्प्य देवीं गायत्रीं जपेत् । ओं ह्रीं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्ष-
रायै धीमहि तन्नः चण्डी प्रचोदयात् । इति यथाशक्त्या प्रजप्य ,
गायत्र्यान्तया देवदेवयोरर्घ्यत्रयं दत्त्वा जपं सप्तर्प्य , यागमण्डपमागच्छे-
दिति-संभ्याविधिः ॥

ततो शृङ्गमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वारदेवताः पूजयेत् । ओं गांगूं गणेशाय नमः पूर्वे । ओं सांग्हां चतुर्काय नमो वशिषे । ओं सांग्हां क्षेत्रपालाय नमः पश्चिमे । ओं यायू योगिनीभ्यो नमः उत्तरे । नं गङ्गायै नमो देहल्यां । यां यमुनायै नमः अधः । सौः सरस्वत्यै नमो मध्ये । इति

संपूज्य, गृहान्तः प्रविश्य यथार्हमासनं शोधयेत् । आं आसनशोधन-
मन्त्रस्य, मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, क्रमो देवता, आसनमन्त्रेण
विनियोगः । ओं प्रीं पृथिव्यै नमः । “ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं
विष्णुता धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुट्ट चासनम् ॥ ”
(ओंधुवा द्यौर्धुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं
जगद् ध्रुवो राजा विश्वामसि ॥) ” ओं आं आधारशक्तये नमः ।
मं मूलप्रकृत्यै नमः । अं अनन्ताय नमः । पं पद्माय नमः । प्रीं
पद्मनाभाय नमः । तत्रोपविश्य तालत्रयं कुर्यात् । “ अपसर्पन्तु ते
भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवा-
इया ॥ ” इति तालत्रयं दत्त्वा, धामपार्ष्णिघातत्रयेण विघ्नानुत्सार्य
नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गुरुं प्रणमेत् । गुरुम्रह्मा गुरुर्विष्णुरिति, अज्ञान-
तिमिरान्धस्येति, अखण्डमण्डलाकारमिति च पठित्वा, श्रीगुरवे नमः
स्वधामे । गुं गुरुभ्यो नमः । परमगुरुभ्यो नमः । परापरगुरुभ्यो
नमः । परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः । इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य न्यासपूर्वं
संकल्पं कुर्यात् । अस्य श्रीदुर्गादेवी (योगपीठपूजा) मन्त्रस्य, महेश्वर
ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः,
ओं कीलकं, नमः इति दिग्बन्धः, धर्मार्थकाममोक्षार्थं दुर्गापूजार्था
विनियोगः । अथ न्यासः । महेश्वरपूजये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे
नमो मुखे । श्रीदुर्गादेवतायै नमो हृदि । हुं बीजाय नमो नाभौ ।
ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये । ओं कीलकाय नमः पादयोः । नमो दिग्बन्धः
इति सर्वाङ्गेषु । ओं ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ओं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ओं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ओं ह्रं अनामिकाभ्यां नमः । ओं ह्रीं कनि-
ष्ठिकाभ्यां नमः । ओं ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ॥
एवं हृदादिषडङ्गन्यासः ॥

अथ मूलन्यासः । ओं नमः शिरसि । ह्रीं मुखे । हुं वक्षसि ।
हुं भुजयोः । गौं नाभौ । यै पृष्ठे । नं जान्वाः । मः पादयोः । इति
त्रिवर्णापेयत् । ओं आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि । ह्रीं विद्यातत्त्वाय
नमो मुखे । हुं शिवतत्त्वाय नमो हृदये । ओं मुरुतत्त्वाय नमो नाभौ ।
ओं ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमो जङ्घयोः । ओं हुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः ।

ओं अंआंकंसंगंधेडंई हृदयाय नमः । ह्रीं उंऊंचंलंजंमंजंमंजं शिरसे
स्वाहा । उं लुंउंवेडंउंलं शिखायै वषट् । उं पंतंयंदंधंनं कव-
चाय हुं । ह्रीं औंपंकवंमंमंऔं नेत्रेभ्यो वौषट् । उं अंयंरंलंवंशंपंसं-
दंलंल.अः अस्त्राय फट् इति हृदयादिन्यासः । एवं करन्यासः । इति
शुद्धमातृकान्यासः ॥

अथ मूलमातृकान्यासः । अं नमः शिरसे । आं नमो मुखवृत्ते ।
ईं दक्षनेत्रे । ह्रीं धामनेत्रे । उं दक्षकर्णे । ऊं धामकर्णे । ऋं दक्षगण्डे ।
ॠं धामगण्डे । लं दक्षनासापुटे । लूं धामनासापुटे । एं ऊर्ध्वोष्ठे । ऐं
अधरोष्ठे । औं ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ । औं अधोदन्तपंक्तौ । अं ललाटे ।
अः जिह्वायाम् । कं नमो दक्षबाहुमूले । खं कुपरे । गं माणिक्ये ।
घं अङ्गुलिमूले । ङं अङ्गुल्यग्रे । चं धामबाहुमूले । छं कुपरे । जं
माणिक्ये । झं अङ्गुलिमूले । ञं अङ्गुल्यग्रे । टं नमो दक्षपादमूले ।
ठं जानुनि । ड गुल्फे । ढं अङ्गुलिमूले । णं अङ्गुल्यग्रे । तं धाम-
पादमूले । थं जानुनि । दं गुल्फे । धं अङ्गुलिमूले । नं अङ्गुल्यग्रे ।
पं दक्षपार्श्वे । फ धामपार्श्वे । ब पृष्ठे । भं नाभौ । मं जठरे । यं
हृदि । रं दक्षांसे । लं ककुदि । यं धामांसे । शं हृदादिदक्षहस्ता-
ग्रान्तं । पं हृदादिधामहस्ताग्रान्तं । स्रं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं । हं
हृदादिधामपादाग्रान्तं । छं पादादिशिरःपर्यन्तम् । झः नमः शिरसः
पादपर्यन्तमिति भिर्यापयेत् । एवं न्यासं विधाय पूर्ववत् पङ्क्तं कृत्या
प्रणवेन प्राणायामत्रयं विधाय, (पूरकं १२ कुम्भकं १६ रेचकं ३२)
ओंह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा । ओंह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि
स्वाहा, ओंह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इति त्रिराचन्य, प्राणा-
यामयोगेन भूतशुद्धिं कुर्यात् ।

ओंह्रीं आकुञ्जेन सुषुप्तावर्त्मना प्रदीपकलिकाकारं तेजो ब्रह्मपद्या-
न्तनीत्या परमशिवे समानीय, तत्र सुधापृष्ठ्यां कुलगुरूं ध्यात्वा
तपैव संतर्प्य, पुनस्तेनैव मार्गेण पद्मक्रुल भित्त्वा तत्तेजः 'वस्था-
नमानीय, यमिति वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन वामकुक्षिगतं पापपु-
रुषं रुष्णयन् रक्तशमभ्रुलमङ्गुष्ठमात्राकारं ध्यात्वा शोषयेत् । रमिति
पृथ्वीबीजेन षोडशधा जप्तेन तं दाहयेत् । यमित्यमृतबीजेन षोडशधा

अनेन गलघन्द्रामृतवृष्ट्याप्लावयेत् । लमितीन्द्रबीजेन षोडशपारज्जनेन
(पिएडीभूतं स्यात्मकं ध्यात्वा, दमित्याकाशबीजेन सकृज्जनेन)
स्यात्मानं दिव्यदेहं विभावयेदिति भूतशुद्धिं कृत्वा, प्राणप्रतिष्ठां
कुर्यात् । ओं ह्रीं ह्रूं आं को सोह इंसः मम प्राणा इह प्राणाः, एवं ६
मम जीव इह स्थितः, ६ मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, ६ मम
यादमनश्चतुस्त्यक्थोप्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहेवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा,
इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः । एवं प्राणान् सस्थाप्य पूर्ववत् पङ्क्तं विधा-
याचम्य मूलदेवीं ध्यायेत् ।

भूगेहनागदत्तपृचरसारार-

त्रिन्दुस्थसन्महिषपीठगतां भवानीम् ।

दूर्वादलाग्रसदृशच्छविमष्टबाहुं

दुर्गा भजे त्रिनयनां विलसत्त्रिवीजाम् ॥

इति ध्यात्वा मूलाङ्गन्यासौ विधाय, श्रीचक्रचतुर्द्वारं त्रिवृत्तं साष्टदल
वृत्तपङ्क्तं त्रिकोणपिन्दुविचिन्त्य वा अष्टगन्धेन विलिख्य वा विभाव्य
पीठपूजां कुर्यात् । ओं ह्रीं मण्डूकाय नमः । १ कालाग्निद्वाराय नमः ।
२ मूलप्रकृत्यै नमः । २ आघारशक्त्यै नमः । २ कूर्माय नमः । २
अनन्ताय० । २ वराहाय० । २ शृङ्गिण्यै० । इत्युपर्युपरि संपूज्य, २
सुधाण्डपाय नमः मध्ये । २ नवरत्नविराजितनवक्षरद्वयपद्मीपाय
नमः । २ पद्मरागजएडाय नमः । २ स्वर्णनिरये० । २ नन्दनोद्या-
नाय० । २ कल्पवनाय० । २ पद्मवनाय० । २ विचित्ररत्नसचित्रभूमि-
कायै० । २ चिन्तामणिमण्डपाय० । २ नवरत्नसचित्ररत्नमयवेदिकायै० ।
२ रत्नसिंहासनाय० । तन्मध्ये २ सहस्रारपद्माय० । २ प्रकृतिमय-
पत्रेभ्यो० । २ विकृतिमयकेसरेभ्यो० । तन्मध्ये २ अष्टबीजविभूषि-
तकर्णिकायै० । तत्पार्श्वे २ धर्माय० । २ धानाय० । २ वैराग्या-
य० । २ ऐश्वर्याय० । चामर २ अर्चमाय० । २ अज्ञानाय० । २
अवैराग्याय० । २ अनैश्वर्याय० । मध्ये २ स सत्त्वाय० । २ रं रजसे०

२ त तमसे० । मूलविद्यामुध्यायं मद्धिपासनाय नमः । मूलमुध्यायं
मातृकाः प्रोध्यायं श्रौयोगपीठाय नमः इत्यभ्यर्च्य पात्रार्चनं कुर्यात् ।

ततः स्वदेहं गन्धादिना संपूज्य, तत्र स्वयमेव वृत्तत्रिकोणवतु-
रधमण्डलं विधाय मूलेनाभ्यर्च्य, मूलं दुर्गासामान्याध्यायं नमः ।
२ षड्भिर्मण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्याधारे, तन्मण्डलं षडङ्गेना-
भ्यर्च्य, तत्राख्यक्षालितं शुद्धं सस्थाप्य, शुद्धे अ अर्कमण्डलाय द्वाद-
शकलात्मने नमः इति संपूज्य, विलोममातृकया संपूज्य, सौ सोमम-
ण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, मूलाष्टाभिर्मन्त्रितं कृत्वा
“ गङ्गे च यमुने चैव ” इत्यादिना तीर्थमावाह्यं शुद्धं भावयेदिति
सामान्यार्घ्यविधिः ॥

सामान्यार्घ्यस्य यामे त्रिकोणपटकाणवृत्तवतुर्धमण्डलं विधाय
तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य, मूलमुध्यायं, श्रौगांकलशमण्डलाय नमः ।
ततः पूर्वेवत् मूलेनाभ्यर्च्य तत्राख्यक्षालिता त्रिपादिका सस्थाप्य, २
षड्भिर्मण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, तत्राख्यक्षालितं कलशं
सस्थाप्य, अ अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इत्यक्षतपुष्पैर-
भ्यर्च्य, तत्रानामिकाहुष्ठाभ्याममृतधारापातेन कलशमापूर्य, सौ सोम-
मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, उर्द्धोदाक्षोदक्षौ दुग्धं
अमृतं अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं आवय २ शुक्रशापं मोचय २
उर्द्धोदु क्षुरादेभ्ये धौवद्, इति सप्तधाभिर्मन्त्र्य, उर्द्धोदु हस्तक्षमलधर-
पञ्च आनन्दमैरवाय धौवद्, इति सप्तधाभिर्मन्त्र्य, उर्द्धोदु आनन्दमै
रवक्षुरादेवीपादुकाभ्यां नमः इति संपूज्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, उं
स्वर्गमण्डलसंभूते यदृणालयसंभवे । अमावीक्षमये देवि शुक्रशापाद्विमु-
च्यताम् ॥ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं भवम् । कथोद्भवा ब्रह्म-
इत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ पवमानं परमं पवमानं परं रसः ।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥ वेदानां प्रणवो याज
प्रह्मोऽनन्दमयः यद्भिः । तेन सत्येन तं दधि ब्रह्मइत्या व्यपोदतुं ॥ कृष्ण
शापाविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः । विमुक्ता मुनिशापेनै पयिषा भव
सर्वदा ॥ इति कलशं संपूज्य धनुयोनिमत्स्वमुद्रां प्रदर्श्य गरुडमु

१ 'वपट' ख पाठ । २ 'विद-यतु' ख पाठ । ३ 'द्विशापन' क पाठ ।

४ 'साधन' क पाठ ।

द्रयाञ्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः ॥ ओं ह्रीं तुं कृतावतारो हरिणा कलिना
पीडितं जगत् । यलिना निगृहीतं तु कौलिकानां द्वितीयं च ॥ श्री-
दुर्गापरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः । इति , मुद्राप्रयं प्रदर्श्य
शुद्धिं शोधयेत् । ओं ह्रीं तुं छागलादिगचान्तादिरुतरूपाय वै नमः ।
यत्पर्यं देवदेव्योश्च पवित्रीभय साम्प्रतम् ॥ मूलं त्रिधा जप्त्वा मुद्राप्रयं
दर्शयेदिति । ओं ह्रीं तुं श्रीदुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह सांप्रतम् ।
यस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये ॥ इति मूलं त्रिधा जपन्
मुद्राप्रयं सर्वस्योपरि दर्शयेदिति कलशादिविधिः ॥

ततो मूलेनानन्दभैरवाद्गोपविष्टं नीलकण्ठेशीं श्रीदेवीं ध्यात्वा मूले-
नाचाष्टा श्रीचक्रमर्चयेत् । तत्र मूलेन पाचाभ्यां च मनीयादि परिकल्प-
येत् । मूलेन देवदेव्योर्मधुपर्कां च मनीयादि निवेदयेत् । मूलेन नैवेद्यं
निवेद्य आचमनीयं नमः इति निवेद्य , गण्डूषप्रयं निवेद्य , मूलेन
ताम्बूलादि समर्पयेत् । ततो मूलपङ्कजं विधाय चतुरश्रं पूजयेत् ।
ओं ह्रीं तुं सर्वसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा , ओं ह्रीं तुं गं
गेशाय नमः पूर्वे । ॐ ह्रीं कुमाराय नमः दक्षिणे । ॐ श्रीं पुष्पद-
न्ताय नमः पश्चिमे । ॐ वैं विरुर्तनाय नमः उत्तरे । इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्य-
र्च्य प्रथमावरणम् ॥ ॐ असिताङ्गभैरवयुत-आह्वीश्रीपादु० । ॐ रुद्रभैरवयुत-
नारायणीश्रीपा० । ॐ चण्डभैरवयुत-चामुण्डाश्रीपा० । ॐ क्रोचेशभैरवयु-
तापराजिताश्रीपा० । ॐ उन्मत्तभैरवयुत-माहेश्वरीश्रीपा० । ॐ कपालि-
भैरवयुत-कौमारीश्रीपा० । ॐ भीमभैरवयुत-बाराहीश्रीपा० । ॐ संहार-
भैरवयुत-नारसिंहीश्रीपादु० । इति वामावर्तेन गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च-
येत् । इति द्वितीयावरणम् ॥ ओं ह्रीं तुं सर्वांशापूरकचक्राय नमः , इति
पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पट्कोणं पूजयेत् । ओं ह्रीं तुं शैलपुत्रीश्रीपा० । ॐ
ब्रह्मचारिणीश्री० । ॐ चण्डघण्टाश्री० । ॐ कूष्माण्डाश्री० । ॐ स्क-
न्दमातृश्री० । ॐ कात्यायनीश्री० । इति वामावर्तेन संपूजयेत् । इति
तृतीयावरणम् ॥ ओं ह्रीं तुं सौभाग्यप्रदाय चक्राय नमः , इति पुष्पा-
ञ्जलिं दत्त्वा त्रिकोणं पूजयेत् । ॐ काशरात्रीश्रीपा० । ॐ महागौरी-

धी० । ३ देवदुर्गाधी० । इति अग्रेष्ठानाग्रेयतोऽभ्यर्चयेत् । इति चतु-
र्थावरणम् ॥ ओङ्कारं अष्टासोद्विप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं
दत्त्वा मूलमुच्चार्य धोनीलकण्ठधीदुर्गाधीपा० इति सप्तवारं विन्द्या
अभ्यर्चयेत् । इति पञ्चमावरणम् ॥ विन्दूपरि मूलं अम्बिकाधीपा० । ३
अष्टाक्षराधीपा० । ३ अष्टभुजाधी० । ३ नीलकण्ठधीपा० । ३ जग-
दम्बिकाधी० । इत्यभ्यर्चयेत् । इति षष्ठावरणम् ॥ विन्दूपरि मू०
शङ्काय नमः । पद्माय० । छद्माय० । पाण्डेभ्यो० । धनुषे० । खेट-
काय० । शलाय० । तर्जन्यै नमः । मूलपिपां त्रिदशाय धोनीलकण्ठ-
धीदुर्गाधीपा० पू० त० इति मूलेन गन्धाक्षतपुष्पधूपदोपनैवेद्याचमनांय-
ताम्बूलच्छत्रचामरारत्रिकादोन् समर्पयेदिति सप्तमावरणम् ।

तत्र मूलेन बलिं निवेद्य सौः सर्वविघ्नरुद्भ्यो भूतेभ्यो नमः स्याद्वा ।
यांयाँयू योगिनीगणेश्वो नमः स्याद्वा । यांयाँ देव्यापुत्रवदुकनाथ कपि-
लज्जटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एहोहि इम बलिं यथोपाचितं
गृह्ण २ स्याद्वा । लांलाँ क्षेत्रपालाय नमः । इति बलिं दत्त्वा, सङ्क-
ल्पपूर्वं न्यासोद्वि विधाय देव्यग्रे मालामादाय यथाशक्ति मूलपिपां
जप्त्वा “गुह्याती” ति जपं समर्प्य, देव्यग्रे कवच-सहस्रनाम-स्तवपाठं
विधाय तदपि देवदेव्योः समर्प्य, “प्रातः प्रभृति सायान्तं सायावि
प्रातरन्ततः । यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम् ॥” इति पुष्पा-
ञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य, संहारमुद्रया देवदेव्यौ हृदि विस्तृत्य
स्वयमपि सदाशिवो भूत्वा स्वशक्त्या सह पात्रार्पणं विधाय पुनः
विहरेदिति ॥

इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धतिं गुह्यगोपिताम् ।

श्रीदुर्गास्तारसंभृतां गोपयेत् साधकेश्वरि ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीपद्मस्ये श्रीदुर्गापद्धतिनिरूपणं
सप्तचत्वारिंश पटलः ॥ ४७ ॥

—३७०:६६—

अथ

अष्टाचत्वारिंशः पटलः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं मन्त्रगर्भकम् ।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ १ ॥
परमार्थप्रदं दिव्यं महापातकनाशनम् ।
योगिप्रियं योगैर्गम्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ २ ॥
विनानेन न मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् ।
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥ ३ ॥
भैरवो भैरवेशानो विष्णुर्नारायणो बली ।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः ॥ ४ ॥
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लोकैर्कर्मभिः प्रिये ।
सूर्यस्तमोपहृथैव चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा ॥ ५ ॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् ।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः ॥ ६ ॥
कवचस्यास्य देवेशि अपिः प्रोक्तो महेश्वरः ।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाचरा स्मृता ॥ ७ ॥
चक्रित्रीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता ।
तारं कीलकमीशानि दिग्बन्धो वर्णितोऽरमरी ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इति स्मृतः ॥ ८ ॥

अस्य श्रीदुर्गाकवचस्य महेश्वर अपिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा

१ 'वक्ष्येह' ख पाठः । २ 'नित्य' क पाठः । ३ 'योगिगम्य' ख, पाठः ।

४ 'शानि' ख, पाठः ।

देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ओं, कीलकं चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनि-
योगः । नम इति दिग्बन्धः । ध्यानम्—

दूर्वाभिर्भां त्रिनयनां विलसत्किरीटां

शङ्खान्जलद्वयशरखेटकशूलचापान् ।

संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां

दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥

ओं मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम् ।

दुं नेत्रेऽष्टाधरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥ ९ ॥

मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला ।

वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिष्ठदिनी ॥ १० ॥

लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डपातिनी ।

भेकीबीजं सदा पातु दन्तान् मे रक्तदन्तिका ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्गवासिनी ।

ओं ऐं क्रीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥ १२ ॥

ओं सौः क्रीं मे पातु बाहू देवेशी वगलामुखी ।

ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥ १३ ॥

सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी ।

ओं ह्रीं श्रीं क्रीं पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा ॥ १४ ॥

श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वा हिमाचलनिवासिनी ।

ओं ह्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गाविहारिणी ॥ १५ ॥

ओं क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा ।

ओं ऐं ह्रीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीभगमालिनी ।

ऐं सौः ह्रीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥ १७ ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सौः पायादरू मम मनोन्मता ।

ओंजुंसःसौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता ॥ १८ ॥
 ओंऐंकीं मे पातु जह्ने मेरुपर्वतवासिनी ।
 ओंह्रींश्रीं गौ सदा पातु गुण्फौ मम गणेश्वरी ॥ १९ ॥
 ओंह्रींदूं पातु मे पादौ पार्वती पोडशाचरी ।
 पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी बह्वी मां वैष्णवी तथा ॥ २० ॥
 दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका ।
 पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता ॥ २१ ॥
 उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शाम्भवी तथा ।
 ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पालधस्ताच्छिवा सदा ॥ २२ ॥
 प्रभाते त्रिपुरा पातु मध्याह्ने मां महेश्वरी ।
 सायं सरस्वती पातु निशीथे च्छिन्नमस्तका ॥ २३ ॥
 निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ।
 अग्रेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका ॥ २४ ॥
 वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना ।
 सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना ॥ २५ ॥
 रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद् भूतेशवल्लभा ।
 यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका ॥ २६ ॥
 भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ।
 सर्वत्र सर्वदा पातु ओंह्रीं दुर्गा नवाचरा ॥ २७ ॥
 इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ।
 मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ २८ ॥
 वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ ।
 अष्टसिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् ॥ २९ ॥
 श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ।
 महापातककोटिं मानदं च यशस्करम् ॥ ३० ॥

अथमेधमहस्रस्य फलदं परमार्थदम् ।

अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचं भस्त्रसिद्धिदम् ॥ ३१ ॥

पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ।

स्वौ भूजे लिखेद् धीमान् कृत्वा कर्मादिकं प्रिये ॥ ३२ ॥

श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको भस्त्रसिद्धये ।

लिखित्वा धारयेद् वाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् ॥ ३३ ॥

किं किं न साधयेन्नोके गुटिका वर्मणोऽचिरात् ।

गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् ॥ ३४ ॥

धनार्थी^१ धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी^२ कृषिमण्डले ।

तामेवं धारयेद् देवि लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥ ३५ ॥

श्वेतपत्रेण संवेष्ट्य लाच्या परिवेष्टयेत् ।

सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद् रक्तरज्जुना ॥ ३६ ॥

गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा ।

कवचस्यास्य^३ गुटिका धृता मुक्तिप्रदायिनी ॥ ३७ ॥

कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते ।

महिमा च महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ ३८ ॥

अदातव्यमिदं वर्म भस्त्रगर्भं रहस्यकम् ।

अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ ३९ ॥

अदीक्षिताय नो दद्यात् कुर्वलाय दुरात्मने ।

अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् ॥ ४० ॥

दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभाक्तरिताय च ।

शान्ताय कूलसक्ताय शाक्राय कुलकाभिने ॥ ४१ ॥

इदं वर्म शिवे दत्त्वा कुलभागी भवेन्नरः ।

इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् ।

गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गाकवचनिरूपण-
मष्टाचत्वारिंशः पटलः ॥ ४८ ॥

—ॐ नमः—

अथ

एकोनपञ्चाशत्तमः पटलः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि ।
रहस्यं मम देवानां दुर्लभं जन्मिनामपि ॥ १ ॥
श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टारं त्रैलोक्यकारणम् ।
मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥ २ ॥
यं पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् ।
इह भोगी परत्रापि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ ३ ॥
इदं नामसहस्रं ते मन्त्रगर्भं रहस्यकम् ।
अश्वमेधायुतात् पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥ ४ ॥
श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात् सिद्धिदायकम् ॥ ५ ॥

अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रपाठस्य, श्रीमद्भैरव श्रुतिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीदुर्गा देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ओं कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थं

सद्वचनामपाठे विनियोगः । ध्यानम्—

दूर्वाणिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां

शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ।

संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां

दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥

ओं ह्रीं हुं जगदम्बा भा भद्रिका भद्रकालिका ।

प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिम्बदिनी ॥ ६ ॥

अनसूया तुदिस्तारा कृत्तिका कुम्भिका लया ।

प्रलया स्थितिः संभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी ॥ ७ ॥

महामाया महाविद्या मूलविद्या * चिदीश्वरी ।

मदालता मदोलुङ्गा मदिरा मदनप्रिया ॥ ८ ॥

आलिङ्ग्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी ।

आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ९ ॥

मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ।

सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी ॥ १० ॥

गङ्गाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी ।

तपोमयी दुरालम्बा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ ११ ॥

दुःखहा सुखदा साध्वी परमाभूतसुः सुरा ।

सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसंनिभा ॥ १२ ॥

समस्ता संपदम्भोजनिलया कर्णिकालया ।

विघ्नेश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दो गतिर्मतिः ॥ १३ ॥

धृतिदा दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी ।

गरिष्ठारिष्टहाऽदृष्टा कृपा काशी कुलाकुला ॥ १४ ॥

अकूलस्या पदन्याता न्यासरूपा निरुपिणी ।

निरुपाची कोटराची कुलकान्तापराजिता ॥ १५ ॥

अजिता कृलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ।

त्रितयी (१००) वेदविन्यासा मंन्यासा सुमतिर्भया ॥ १६ ॥

अभया स्वर्मुखा देवी महापधिरलम्बुसा ।

चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिखदिनी ॥ १७ ॥

चापलाची मदाविष्टा मदिरारणलोचना ।

पुरी त्रिपुरसू राम्ना रमा रामा मनोहरा ॥ १८ ॥

संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा ।

शशाङ्कमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥ १९ ॥

विषमाची निशालाची वाशा वागीश्वरी शिला ।

मनःशिला च कस्तूरी भगनाभिर्मृगेक्षणा ॥ २० ॥

मृगारिवाहना माध्वी मानदा मचंभापिणी ।

नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया ॥ २१ ॥

पुण्या पुण्यमतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया ।

चामुण्डा चोग्रचण्डा च महाचण्डाऽतमाऽतमाः ॥ २२ ॥

तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योतिःस्वरूपिणी ।

सुरूपा सद्गतिः सात्री सदसद्रूपाजिता ॥ २३ ॥

सृष्टिः स्थितिः चैमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्वनी ।

क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शरस्था शिववल्लभा ॥ २४ ॥

दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी ।

राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगेवल्लभा ॥ २५ ॥

कवचा कन्धरा कृष्णा कृत्तिका कण्टकान्तका ।

१ 'दुर्मुख' क पाठ । २ 'मनोरमा' क पाठ । ३ 'वशा' क पाठ ।
४ 'माध्वी' छ पाठ । ५ 'सूत्र' क पाठ । ६ 'तपस्विनी महा' क.
पाठ । ७ 'स्वर्गमति' क पाठ । ८ 'शरस्था' क ख. पाठ । ९ 'योगि' ट.
पाठ । १० 'विद्या' ट पाठ ।

कलङ्करहिता काली कम्पा कारमीरवल्लभा ॥ २६ ॥
 काशी कीर्तिप्रदा काञ्ची कारमीरी कोकिलस्वना ।
 प्रभावती (२००) महारौद्री रुद्रपत्नी रुद्रापहा ॥ २७ ॥
 रतिः स्तुतिस्वरीस्तुर्या तोतुलास्तलवासिनी ।
 तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पञ्जपुरी यमस्वसा ॥ २८ ॥
 यामी यमान्तका याम्या यमुना खर्नदी तडित् ।
 नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २९ ॥
 विगता निगतप्रश्ना कृष्णा कृष्टासिधारिणी ।
 वारी वारा उरधरा वरदा वीरसूदिनी ॥ ३० ॥
 वीरसूत्रामनाकारा दीर्घशूत्रा दयावती ।
 दरी धनप्रदा धात्री धानीबल्ली महोदरी ॥ ३१ ॥
 गणेश्वरी गया काञ्ची काञ्चीकिङ्किणियण्डिका ।
 माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रणेश्वरी ॥ ३२ ॥
 पौरन्दरी शची शीता शीतातपस्वभावजा ।
 स्वाभाविकगुणा गणया गाम्भीर्यगुणभूषणा ॥ ३३ ॥
 मूर्तिः सूर्यकला सुप्ता सप्तमप्तिस्वरूपिणी ।
 तेजस्विनी सदानन्दा सभामन्तोषार्थिनी ॥ ३४ ॥
 तर्पणा कर्पणा होता सङ्कल्पा शुभमन्यिका ।
 दर्भा द्रोणिकला ध्रान्ता ममिद्धा मुरोदिका ॥ ३५ ॥
 धूम्राहुतिश्वरमतिश्रामीररुचिश्चिता ।
 चिन्तानलेश्वरी नेलांकरा नीलसरस्वती ॥ ३६ ॥
 अपर्णा सुफला यत्रा सभया निर्भवानया ।
 भीमस्वना भर्गशिरा भान्वती भारुता विभा ॥ ३७ ॥
 विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी ।

पृथ्वीधरा विश्वधरा (३००) विश्वकर्मा प्रवर्तिका ॥ ३८ ॥
 विश्वमाया विश्वभाला विश्वम्भरविलासिनी ।
 उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रभूः प्रजा ॥ ३९ ॥
 तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः ।
 संपुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ४० ॥
 श्यामाकर्मणा शार्दूली शम्पा शीलांशुवल्गभा ।
 स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥ ४१ ॥
 चम्पकाभा चरा चीनादीना दीनजनप्रिया ।
 वसुन्धरा वामवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ४२ ॥
 समुद्रा सङ्गमा पूर्णाञ्ज्तराला तरुवासिनी ।
 पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४३ ॥
 माधवी मधुपानस्या मन्दिरा मन्दुरा मृगी ।
 मोमुर्वा रुरूपा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४४ ॥
 ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी ।
 अन्नरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४५ ॥
 गारुडी गगनालम्बा लम्पमानकचप्रिया ।
 पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्गभा ॥ ४६ ॥
 घलाका जगदन्ता च जरा जयपरमदा ।
 प्रीतिः कटोरवदना करालरदना रमा ॥ ४७ ॥
 जिह्वाहस्ता च रगला प्रणया विनयप्रदा ।
 किरी करालवपुषी शेमुषी मल्लिका मयी ॥ ४८ ॥
 उचीर्णा तर्षिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा ।
 शिखरी सरोजाक्षी पद्महस्ता (४००) मरस्वती ॥ ४९ ॥
 कमलाक्षी कमलजा करवालविहारिणी ।

कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया ॥ ५० ॥
 कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी ।
 कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा ॥ ५१ ॥
 कस्तूरीमृगसंस्था च कस्तूरीमृगरूपिणी ।
 कठोरा करमाला च कठोरकुचधारिणी ॥ ५२ ॥
 यज्ञमाता यज्ञभोक्ता यज्ञेशी यज्ञसंभवा ।
 यज्ञसिद्धिः क्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरचिका ॥ ५३ ॥
 वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी ।
 विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ॥ ५४ ॥
 शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी ।
 गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥ ५५ ॥
 दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।
 माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाङ्गी सर्वमङ्गला ॥ ५६ ॥
 सूर्यकोटिसहस्राभा चद्रकोटिनिभानना ।
 समुद्रकोटिमग्भीरा वायुकोटिमहाबला ॥ ५७ ॥
 सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डलवासिनी ।
 द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी ॥ ५८ ॥
 अकलङ्कशशाङ्काभा षोडशारनिवासिनी ।
 इत्यष्टनिलयाऽभीमा महाभैरवनादिनी ॥ ५९ ॥
 वर्णाढ्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी ।
 भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी ॥ ६० ॥
 भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ।
 कामेश्वरी कामरूपा कामतापविमोचिनी ॥ ६१ ॥
 गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी ।
 गतिदा गतिहा गीता गीतमी गुरुसेविता ॥ ६२ ॥

दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी ।

दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता ॥ ६३ ॥

नृत्यप्रिया नृत्यरता नर्तकी नर्तकप्रिया ।

नारायणी नरेन्द्रस्या नरमुण्डास्त्रिमालिनी ॥ ६४ ॥

भैरवी भैरवाराध्या भीमा भीमवरप्रदा (५००) ।

भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिवर्धिनी ॥ ६५ ॥

महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी ।

धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥ ६६ ॥

कुलीना कुलमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी ।

पञ्चाशद्वर्षबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥ ६७ ॥

पङ्कजयुवतीपूज्या पङ्कजरूपवर्जिता ।

कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी ॥ ६८ ॥

कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया ।

माया मतिर्महामाया भयदा भयहारिका ॥ ६९ ॥

नारी नारायणी गणया नारायणगृहप्रिया ।

मदिरापानसन्तुष्टा मदिरामोदधारिणी ॥ ७० ॥

तथ्या पथ्या कृती रथ्या रथस्था विततस्वरा ।

महती रागिणी भार्गी शुचिहामा हरीश्वरी ॥ ७१ ॥

हरिद्रव्यांशुलसिता लक्ष्मीनायकमुन्दरी ।

अम्बालिकाम्बा देवेशी अनघाग्रिशिखा श्रुतिः ॥ ७२ ॥

अलसान्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया ।

आद्या चादित्यसङ्काशा आदित्यकुलसुन्दरी ॥ ७३ ॥

आत्मरूपाधिशमनी आदिमायादिदेव ।

इन्द्रप्रसरिण्योतिरिनाग्रिशशिलोचना ॥ ७४ ॥

इन्द्रावरजसस्तुत्या इला चैचुरमाप्रिया ।

ईश्वरी ईशवनिता ईशा केशववल्लभा ॥ ७५ ॥

उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोचवाहना ।

उत्तङ्गा चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥ ७६ ॥

ऊष्मा ऊष्णा च गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाची ऊर्ध्वमस्तका ।

अद्विर्ध्वाचा अवर्येशी अणुहर्त्री अवान्तकी ॥ ७७ ॥

अटिजां चारुवस्त्रा च अटिणवासा (६००) महालया ।

लृकारा लृवकुरा लीना लृकारा वरधारिणी ॥ ७८ ॥

एणाङ्गमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला ।

ऐकारगतिरैश्वर्यदायिनी चैश्वरी गतिः ॥ ७९ ॥

ओंकारा बीजरूपा च औत्रिकी चेत्रधारिणी ।

अम्बिका लम्पिका पम्पा अःश्वरोद्धाररूपिणी ॥ ८० ॥

काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा ।

कदम्बनिलया कन्या काञ्चीमण्डनमण्डिता ॥ ८१ ॥

कलङ्करहिता कूर्मा काञ्चनाभा करीरगा ।

कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा ॥ ८२ ॥

कुलम्बा कालिनी कुन्या कुरुकुल्ला कपालिनी ।

कपालकुलनिर्विणा क्रीकारा कञ्जलोचना ॥ ८३ ॥

खञ्जनाची खड्गधरा खेटकापुष्पभूषणा ।

खर्पराट्वा च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ८४ ॥

खगापुधा खगगतिः खकाराचरभूषणा ।

गणाध्यावा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ८५ ॥

गोधा गदाधरा माञ्ज्या गगनेशी मही मला ।

गुप्तरा गटभूर्धूका गृध्राभा गणेश्वरी ॥ ८६ ॥

वनसारप्रिया साम्या धवर्णकृतभूषणा ।
 डान्ता डवर्णमुकुटा कवर्णकृतभूषणा ॥ ८७ ॥
 चान्द्री चान्द्रिस्तुता चार्वा चन्द्रिका चण्डनिःस्वना ।
 चक्षरीकस्वना देवी चक्षन्नामीकराङ्गदा ॥ ८८ ॥
 छत्रिका छुरिका छन्दा छत्रचामरभूषणा ।
 जंकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी ॥ ८९ ॥
 जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ।
 जलेश्वरी जगदध्येया जानकी जननी जटा ॥ ९० ॥
 भङ्गिका भरी भरत्कारी (७००) भरत्काश्चीरकिङ्किणी ।
 भिरिठका भम्पकृद् भम्पा भम्पत्रासनिवारिणी ॥ ९१ ॥
 नागुरुपा नङ्कुइस्ता नवर्णाक्षरसंमता ।
 टङ्गायुधा महातथ्या टङ्कारकण्या टसी ॥ ९२ ॥
 ठङ्गुरा ठत्करा ठानी डिएडीरवसना दला ।
 दण्डानिलमयी दण्डा दण्डाकारकरा दसा ॥ ९३ ॥
 णान्ता खीलायुधा नत्रा खवर्णाक्षरभूषणा ।
 तरुणी तुन्दिला तोन्दा तामसी तामसप्रिया ॥ ९४ ॥
 ताम्रानना ताम्रकरा ताम्रान्वरधरा तुला ।
 तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा ॥ ९५ ॥
 स्याणुपनी स्थली स्थूला स्थितिः स्तैर्यधरा स्थूला ।
 दन्तिनी दन्तुरा दावी देवकी देवनायिका ॥ ९६ ॥
 दमिनी शमिनी दण्ड्या दण्डइस्ता दुरानतिः ।
 दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्राविडवामिनी ॥ ९७ ॥
 दूरस्या दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ।
 दुःखमी द्रुतगाऽद्रुष्टा दया दाम्भिक्यनाशिनी ॥ ९८ ॥

धर्म्या धर्मप्रसूधन्या धनदा धातृवज्रभा ।
 धनुर्धरा धनुर्वल्ली धातुक्कवरदापिनी ॥ ६६ ॥
 धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीधूम्रलोचना ।
 नलिनी नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिनलोचना ॥ १०० ॥
 निर्मला निगमाचारा निशर्गा नगजा निमिः ।
 नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी ॥ १०१ ॥
 निरञ्जना जनी जन्वा (८००) निद्रालुनीरवासिनी ।
 नटिनी नाट्यनिरता नवतीतप्रियाऽनिला ॥ १०२ ॥
 नारायली निराकारा निर्लेपा नित्यवज्रभा ।
 पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ॥ १०३ ॥
 परोचरा पुरी पाठा पीनभोगा पुल्लोभजा ।
 पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाठीनवाहना ॥ १०४ ॥
 पापघ्नी शंषिनी^१ पाली पल्ली परममुन्दरी ।
 पिशाची च पिशाचमी पानपात्रधरा पुटा ॥ १०५ ॥
 पृथ्वी पञ्चमी पौत्री पुरुरवरमदा ।
 पञ्चपङ्का पञ्चशरी पञ्चाशतिमनुप्रिया ॥ १०६ ॥
 पाञ्चाली पञ्चधरा च पूजा पूर्यमनोरथा ।
 फलिनी फलदात्री च फल्गुहस्ता फलिप्रिया ॥ १०७ ॥
 फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा ।
 बलमाया बलस्तुत्या विन्वसेना बलाबला ॥ १०८ ॥
 बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी ।
 बुद्धमाता बौद्धमतिर्विद्धा बन्धनमोचिनी ॥ १०९ ॥
 भगिनी भगमाता च भगलिङ्गामृतदरा ।

१ ' विमदा ' ग. पाठः । २ ' पतिवती ' अ. ग. पाठः । ३ ' पुत्रा च ' इ. पाठः ।

४ ' बलवर्धनी ' इ. पाठः ।

भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगसर्पिणी ॥ ११० ॥
 भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ।
 मत्ता मनोहरा भीना मैनाकजननी मुरी ॥ १११ ॥
 मुरली मानवी होत्री महाम्बिजनमोदिता ।
 मत्तमातङ्ग्या माद्री मरालगातिरञ्जला ॥ ११२ ॥
 यक्षेश्वरेश्वरी यक्षा यजुर्वेदप्रियाश्रिता ।
 यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवद्विभा ॥ ११३ ॥
 यवनी यौवनस्था च यवा यच्चजनाश्रया ।
 यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभू(६००)रूपमूलिनी ॥ ११४ ॥
 रञ्जिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा ।
 रजोवती रजश्रिता राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥ ११५ ॥
 राज्ञी रात्रिश्वरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी ।
 लुलिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा ॥ ११६ ॥
 लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी ।
 लङ्का ललजटाजूटा लङ्घिता लोकसुन्दरी ॥ ११७ ॥
 लोकेशवरदा लेपा लयकर्त्री महालया ।
 वेदिर्विलम्बा वायी च वीणा वेणुर्वनेश्वरी ॥ ११८ ॥
 घन्दमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका ।
 शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधरा शमा ॥ ११९ ॥
 शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी ।
 श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलनेश्वरी ॥ १२० ॥
 सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ।
 सप्तमी साच्चिकी सत्त्वा सत्रव्याऽसुरसूदिनी ॥ १२१ ॥

१ 'भावेश्वरी' क. पाठः । २ 'मीट्री' ग. पाठः । ३ 'दृता' क. छ. पाठोऽ॥

४ 'लीया' अ. पाठः ।

सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी ।

समदा संमितिः संमा सवना सवनेश्वरी ॥ १२२ ॥

हंसी हरप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका ।

हेषा हृदयेश्वरी हेरा हलिनी हलदायिनी ॥ १२३ ॥

हेहा हादारवा हाला हालाहलहताशया ।

चमा चेमप्रदा चामा चोमाम्बरधरा चया ॥ १२४ ॥

चितिः चीराप्रिया लक्ष्मीः चित्तिभृत्तनया चुधा ।

चत्रिणी चाक्षणी चेत्रा चषा चःवीजमण्डिता ॥ १२५ ॥

वृक्षःवीजस्वरूपा च चकाराचरमातृका ।

दुर्गन्धनाशिनी दुर्वा दुर्गमा दुर्गवासिनी ॥ १२६ ॥

दुर्गा दुर्गाविंशमनी उर्द्धादुर्गवीजमण्डिता (१०००) ।

इति नामसहस्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम् ॥ १२७ ॥

दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ।

सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् ॥ १२८ ॥

श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ।

यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥ १२९ ॥

स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ।

इह लोके श्रियं भुवता परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ १३० ॥

दुर्गानामसहस्रं तु मूलमत्रैकसाधनम् ।

अर्धरात्रे पठेद्वातो मधुरस्नयसेवितः ॥ १३१ ॥

त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसंनिभः ।

यः पठेद् देवि मध्याह्ने स्त्रीपुत्रौ मुक्तकुन्तलः ॥ १३२ ॥

तस्य वैरिभूतं त्रैलोक्यं दर्शनाद् दैत्यघृदिनि ।

१ ' जपया ' ड. पाठः । २ ' राकारमातृका ' ड. पाठः । ३ ' पूजितः ' क, ख, पाठः । ४ ' मर्दिनि ' क. ख. पाठः ।

दहनादिव देवेशि पतङ्गकुलमद्रिजे ॥ १३२ ॥
 यः पठेद्वेत्सीमूले सायं पूजितभैरवः ।
 तस्यास्यकुहराद् वाणी निःसरेद्द्रव्यपयभाक् ॥ १३३ ॥
 यः पठेत् सततं देवि शयने स्त्रीरत्नाकुलः ।
 स भवेद्वैरिविद्रंसी धनेन धनदोषमः ॥ १३४ ॥
 चाग्निर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ।
 तेजसा सूर्यमङ्गाशो यशसा शशिसन्निभः ॥ १३५ ॥
 बलेन वायुतुन्योऽपि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ।
 देवि किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः ॥ १३६ ॥
 स्तम्भनाकर्षणोच्चाट-वशीकरणकक्षमः ।
 रघौ भूर्जे लिखेद् देवि निशीथे वाष्पगन्धकैः ॥ १३७ ॥
 मस्तन्यरेतोरजस्कैः साधको मन्त्रसाधकः ।
 लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्रमणिमीश्वरि ॥ १३८ ॥
 श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्ष्या परिवेष्टयेत् ।
 सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत् पीतसूत्रकैः ॥ १३९ ॥
 संपूज्य गुटिकां देवि शुभेऽङ्घ्रि साधकोत्तमः ।
 धारयेन्मूर्ध्नि वा वाहौ गुटिकां कामदायिनीम् ॥ १४० ॥
 रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ।
 बन्ध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ॥ १४१ ॥
 पुत्रान् लभेन्महादेवि साक्षाद्भ्रवणोपमान् ।
 गुटिकैषा महादेव्या गोप्या कामफलप्रदा ॥ १४२ ॥
 साधकैः सततं पूज्या माचाद् दुर्गास्वरूपिणी ।
 योऽर्चयेत् साधको दुर्गा गुटिका धारयेत् प्रिये ॥ १४३ ॥
 पठेद्ब्रह्म शिवे मन्त्रनामसाहस्रिको पराम् ।

अङ्गस्तोत्रं फलं तस्य देवि वृक्षेऽधुना शृणु ॥ १४४ ॥
 वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसङ्कटे ।
 अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे श्मशाने मिन्धुमङ्कटे ॥ १४५ ॥
 बाल्ये यक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा ।
 वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ १४६ ॥
 स्तम्भयेद्वातसूर्याम्बुचन्द्रादीन् साधकोत्तमः ।
 मोहयेत् त्रिजगत् सद्यः कान्ताश्चाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ १४७ ॥
 मारयेदखिलाञ्छत्रूनुच्चाटयति वैरिणः ।
 वशयेद् देवताः सद्यः किं पुनर्मानवारिख्ये ॥ १४८ ॥
 शमयेदखिलान् रोगान् महोत्पातानुपद्रवान् ।
 किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात् ॥ १४९ ॥
 इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाचर्या महेश्वरि ।
 सर्वस्य सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥ १५० ॥
 महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् ।
 पठेत् मंपूजयेद् देव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १५१ ॥
 इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ।
 दुर्गानामसदृशं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥ १५२ ॥
 अभक्राय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुमङ्कटे ।
 अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥ १५३ ॥
 दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ।
 शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नाममहस्रकम् ॥ १५४ ॥
 विना दानं न गृहीयात्त दद्याद् दक्षिणां विना ।
 दद्याद् गृहीताप्युभवोः मिद्विद्वान्निर्भवेद् ध्रुवम् ॥ १५५ ॥
 इदं नामसदृशं ते गुप्तं गोप्यतमं शिवे ।

तेत्त्वं भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं मयोनिवत् ॥ १५६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे धीदेवीरहस्ये दुर्गासहस्रनामतिरूपण-
मेकोनपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ४६ ॥

अथ

पञ्चाशत्तमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम् ।

मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १ ॥

दुःखार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम् ।

दुर्गाया अङ्गभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥ २ ॥

श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य ऋषिर्देवो महेश्वरः ।

छन्दोऽनुष्टुप् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा शिखे ॥ ३ ॥

दुं बीजं च परा शक्तिर्विश्वं कीलकमद्रिजे ।

धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य, श्रीमहेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गाष्टाक्षरा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकम्, धर्मार्थ-
काममोक्षार्थे पाठे विनियोगः । ध्यानम्-

दूर्वाणिर्भां त्रिनयनां विलसत्किरीटां

शङ्खान्जलशरखेटकशूलचापान् ।

सन्तर्जनीं च दधतीं महिषामनस्यां

दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥ ५ ॥

तारं हारं मन्त्रमालासु वीजं ध्यायेदन्तर्योऽम्ब लम्बालकान्तः ।

तस्य सारं सारमङ्घ्रिद्वयीं द्राग् रम्भायाति स्वर्गता कामवरया ॥६॥

मायां जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गातिखेदखिन्नः ।

भवेत् स भूमां नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्दः ॥७॥

चाक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि ।

साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः ॥८॥

चाक्रबीजमपरं सरोजिबे योऽरिवर्गविहिताहितव्ययः ।

आजिमण्डलगतो जयोद्विपून् चाजिवारखरथाश्रितो नरः ॥ ९ ॥

दूर्वावीजं यो जपेत् प्रेतभूमां साय मायाभस्मना लिप्तकायः ।

गीर्षाणाना नायको देवि मन्त्री भूत्वा राज्यं प्राज्यमाढ्यं करोति ॥१०॥

पायव्यवीजं यदि साधको जपेत् त्रिषाकुचद्वन्द्वनिर्मदनधमः ।

समस्तकान्ताजननेत्रवागुराविलासहंसो भविता स पार्वति ॥११॥

निशं निश्वेश्वरि यदि जपेत् कामकेलीकलान्ते

रात्रौ मात्राचरविलमितन्यास ईशानिवासः ।

तस्य स्मेराननसरसिजा भ्राजमनाङ्गलक्ष्मी-

र्वश्यावरयं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी सा ॥ १२ ॥

भूगेहाश्रितवद्विष्टचविलसद्भागारट्टाश्रित-

मग्न्यारोहसिताग्रिकोणविलसच्छ्रीपिन्दुपीठस्थिताम् ।

ध्यायेच्चेतसि शर्वपति भवती माध्वीरसाधूर्णितां

यो मन्त्री स भविष्यति स्मरममः स्त्रीणा धरण्यां दिवि ॥१३॥

दुर्गास्तरं मनुमय मनुराजमौलि

माणिक्यमुत्तमशिवाङ्गरदस्यभूतम् ।

प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां

भूमौ भवेत् स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥ १४ ॥

इति स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गैरुशिरोमणिम् ।

यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य चरयं जगत्त्रयम् ॥ १५ ॥

इदं पञ्चाङ्गमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम् ।

सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वोशापरिपूरकम् ॥ १६ ॥

गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ।

अभक्तायाप्रदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ १७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् भवतानेन कथनेन महेश्वर ।

श्रीपञ्चाङ्गस्य दुर्गाया सद्यः क्रीतास्म्यहं परम् ॥ १८ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

इदं रहस्यं परमं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ।

पञ्चाङ्गं वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनित्वम् ॥ १९ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गात्मोपनिषत्पत्रे

पञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५० ॥



❀ समाप्तं श्रीदुर्गापञ्चाङ्गम् । ❀



अथ

एकपञ्चाशत्तमः पटलः ।

— ❦ ❦ ❦ —

अथ दुर्गारहस्यम् ।

श्रीशैलराजशिखरे नानानुमसमाकुले ।
वसन्तलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥ १ ॥
एकदा देवमीशानं शशिशेखरमीश्वरम् ।
उमाभितार्थवपुषं देवदानवसेवितम् ॥ २ ॥
ध्यानासक्ताक्षिप्रितयं जटाजूटलतारुणम् ।
भस्माङ्गरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥ ३ ॥
जप्तादिदेवप्रणतं गान्धर्वजनवन्दितम् ।
यक्षराक्षसनागेन्द्र-नगेन्द्रकुलपूजितम् ॥ ४ ॥
भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ।
उत्थाय विनता भूत्वा पर्षष्टुञ्चत पार्वती ॥ ५ ॥
भगवन् सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ।
गुणातीत गुणाध्यक्ष भूतेश्वर महेश्वर ॥ ६ ॥
स्रजत्यवति नित्यान्ते मंहरत्यमितं जगत् ।
चराचरं भवानेव किं पुनर्जपसि प्रभो ॥ ७ ॥
किं ध्यायसि महादेव सततं भक्तवत्सल ।
यद शीघ्रं दयाम्बोधे ययहं प्रेयसी तव ॥ ८ ॥
श्रीभैरव उवाच ।

देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिदमद्भुतम् ।
 सर्वस्वं सारभूतं मे सर्वेषां तच्चमुत्तमम् ॥ ६ ॥
 लक्षवारसहस्राणि वारितासि पुनः पुनः ।
 स्त्रीस्यभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ॥ १० ॥
 अथ भक्त्या तव स्नेहाद्वक्ष्यामि परमाद्भुतम् ।
 देवीरहस्यतन्त्राख्यं तन्त्रराजं महेश्वरि ॥ ११ ॥
 सर्वागमैकमुकृतं सर्वसारमयं ध्रुवम् ।
 सर्वमन्त्रमयं दिव्यं पटलैर्दशभिर्पुतम् ॥ १२ ॥
 अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तन्नस्य पार्वति ।
 यस्याः श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ १३ ॥
 श्रीविद्यानिर्णयो देवि मन्त्रसाधनकोऽपरः ।
 शिवमन्त्रप्रकाशाख्यो दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥ १४ ॥
 पुरश्चर्याविधिर्देवि पञ्चरत्नेश्वरीक्रमः ।
 होमसाधनकश्चैव चक्रपूजाविधिः परः ॥ १५ ॥
 आचारनिर्णयो देवि दशमो दशमीविधिः ।
 तत्रादौ देवि वक्ष्येऽहं दुर्गाभुवनमद्भुतम् ॥ १६ ॥
 जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्वतम् ।
 नानारत्नसमाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १७ ॥
 इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् ।
 अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥ १८ ॥
 इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ।
 तत्रैव वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥ १९ ॥
 या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुन्दरी ।
 या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोदरवर्तिनी ॥ २० ॥
 विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरीम् ।

महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायावतारिता ॥ २१ ॥
 योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ।
 तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्या परमां जपे ॥ २२ ॥
 तामघाहं प्रवक्ष्यामि त्रिद्याचरणदायिनीम् ।
 यां शुक्ला स शिवो ज्ञातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥ २३ ॥
 यदाभूदरिहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी ।
 सादाद्भुवनरूपापि महाज्योतिःस्वरूपिणी ॥ २४ ॥
 तदा शङ्कुकाले तु ज्योतीरूपो महेश्वरि ।
 शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतोऽचेतनो विभुः ॥ २५ ॥
 अमृणोन्मादमाधारं जगतां गीजमुत्तमम् ।
 अंघ्रिं सस्तर मायां खं सृष्टोऽग्रमनुनायकः ॥ २६ ॥
 इति धुक्ता परानादं तारमित्यभिधीयते ।
 शिवो जज्ञाप सहसा गीजं त्रिजगतां शिवे ॥ २७ ॥
 तेन मायेतिशब्दं स शुश्राव गगनात्ततः ।
 हुम्भं भज महेशान सदानन्दात्तरथं परम् ॥ २८ ॥
 विन्दुनादमयो देवः शिवोऽभूत् परमेश्वरः ।
 ततो नादं स शुश्राव दुष्टवर्णविवर्जितम् ॥ २९ ॥
 दुर्गां भजेति स शिवः पञ्चनादात्मकोऽभवत् ।
 ततो जप्त्वा परा विद्यामसृजजगदम्बिके ॥ ३० ॥
 आदौ त्रायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिर्गयेन्मया ।
 इच्छामात्रं शिवे त्रिभुं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥ ३१ ॥
 ससर्ज लवमात्रं स शिविकण्ठः शिवः शिवे ।

१ 'राकक' क पाठः । २ 'मव' क ग प पाठः । ३ 'सृष्टो-
 मनुनायक' ख पाठः । ४ 'हाम भज' क ख ग पाठः ।
 ५ 'दुर्गां भजे' ख पाठः ।

इतीमां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुरपार्चनात् ॥ ३२ ॥
 किंकिं न साधयेन्नोके साधको मन्त्रसाधकः ।
 वस्त्रं यद्विं च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ॥ ३३ ॥
 वशीकुर्याद्यथामुद्ध्या येन तुर्याकुलं भवेत् ।
 श्रीचक्रमिदमाधारं देव्या विभक्कारणम् ॥ ३४ ॥
 गुह्यं सर्वस्ममन्वायाः, पूज्यं साधकसत्तमैः ।
 चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्यमञ्जार्कयोर्दलैः ॥ ३५ ॥
 येन देवी महामाया श्रीदुर्गाशु प्रसीदति ।
 चक्रे संपूजयेद्यस्तु नीलाभा दाहनीं द्युतिम् ॥ ३६ ॥
 नदीन्दुष्यर्षाम्बरज मण्डलाकारमर्चयेत् ।
 लसन्मुकुटरोचिष्णुः स भवेत् साधकोत्तमः ॥ ३७ ॥
 तस्य शङ्खनिभा कीर्तिर्भ्रमते भुवनत्रये ।
 सैशुरासुरगन्धर्व वशं याति महेश्वरि ॥ ३८ ॥
 शैरासवरसानन्दमयो भूत्वा जपेन्सनुम् ।
 खेटकास्तस्य तुष्यन्ति साधकस्याङ्गपूजनात् ॥ ३९ ॥
 तस्य रोगा विनश्यन्ति सर्वे शूलादयोऽचिरात् ।
 तर्जनीं तस्य वीक्ष्योपि रिपवो यान्ति विद्रुताः ॥ ४० ॥
 तस्य गेहे धनं गावो महिष्या विष्टर गजाः ।
 दुर्गा रत्नवती भूमित्तस्य पीठं मनोहरम् ॥ ४१ ॥
 साधकस्य भवेदेवं सपत्तिर्दुर्धार्चनात् ।
 एतं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ४२ ॥
 ध्यानेन येन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः ।
 इतीदं देवि तच्च ते कथितं परमाद्भुतम् ।
 अथ ह्ययमदातव्य गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४३ ॥

१ 'राचित्क' ख पाठ । २ 'महासिद्धि, सता इत्ये' ख पाठ ।

३ 'माशमय' ख पाठ । ४ 'तस्य यक्षपामि' क ग व पाठ ।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरुद्रस्ये मन्त्रविद्यानिरूप-
णमेकपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५१ ॥



अथ

द्विपञ्चाशत्तमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

मन्त्रसाधनकं वक्ष्ये रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ।
येन साधनमात्रेण मन्त्रः सिद्धिमुपैप्सति ॥ १ ॥
विनोत्कीलनमन्त्रेण न मन्त्रः सिद्धिदायकः ।
विना सज्जीवनेनापि संपुटेन विना शिवे ॥ २ ॥
विश्वमादौ मनोर्दधात् तारं दद्यात् तथाञ्चले ।
मनुरुत्कीलनाख्योऽयं सर्वसिद्धिप्रदः शिवे ॥ ३ ॥
चाक्रिकं नाम बीजं तु दद्यादादौ मनोः शिवे ।
तदग्रे नाम विन्यस्य तारमाये तदग्रतः ॥ ४ ॥
मनोरन्तेऽमरौ दद्यान्मनुः सज्जीवनाभिधः ।
ततः सिद्धमनुं देवि जपेन्माश्रिकसत्तमः ॥ ५ ॥
यथाशक्त्या ततो दद्यात् संपुटं साधकोत्तमैः ।
तारं परां चाक्रिवीजं विश्वमन्तेऽभिधं न्यसेत् ॥ ६ ॥

संपुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रः सर्वाशापूरकः स्मृतः ।

एवं संस्कृतमीशानि मनुं देव्या जपेत् सदा ॥ ७ ॥

सर्वसिद्धिमवाप्नोति साधको मन्त्रसाधकः ।

इतीदं मन्त्रतत्त्वं ते साधनाख्यं मद्देश्वरि ।

गुसाविगुह्यगुप्तं च गोप्तव्यं साधकोत्तमैः ॥ ८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रसाधननिरूपणं
त्रिपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५२ ॥

अथ

त्रिपञ्चाशत्तमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना शिवविद्यां ते वक्ष्यामि परमार्थदाम् ।

सर्वविद्यामयीं साध्यां सर्वतन्त्रेषु गोपिताम् ॥ १ ॥

केवलं यो जपेच्छाक्तं मनुं शैवं तु नो जपेत् ।

जन्मकोटिषु जप्नोऽपि न मनुः सिद्धिर्भाग्भवेत् ॥ २ ॥

यस्या देव्यास्तु यो देवः शिवस्तस्याः शिवो भवेत् ।

तेन विद्या महादेवि कलौ सिद्ध्यति सत्तरम् ॥ ३ ॥

कालिकाया महाकालः सुमुख्या अमृतेश्वरः ।

कामेश्वरस्त्रिकूटायाः शिव इत्येवमीश्वरि ॥ ४ ॥

छिन्नायाः कालरुद्रस्तु शारदायाः शिवः शिवः ।

श्रीभैरवः कालरात्र्याः शिव इत्येवमीश्वरि ॥ ५ ॥
 ज्वालामुख्या महादेवो वाग्देव्या विजयेश्वरः ।
 ईश्वरो भुवनेश्वर्याः शिव इत्येवमीश्वरि ॥ ६ ॥
 विश्वनाथस्तु पार्वत्या रात्र्या भूतेश्वरः शिवः ।
 मीडायास्तु विरूपाक्षः शिव इत्येवमीश्वरि ॥ ७ ॥
 नीलकण्ठस्तु दुर्गायाः शिव इत्येवमीश्वरि ।
 शिलाया वामदेवस्तु शिवः प्रोक्तः सुरेश्वरि ॥ ८ ॥
 सद्योजातस्तु तारायाः शिव इत्येवमीश्वरि ।
 अथ दुर्गाशिवस्यादौ वक्ष्ये मूलमनु परम् ॥ ९ ॥
 यं जप्त्वा परमेशानि विद्या सिद्ध्यति सत्वरम् ।
 श्रीनीलकण्ठमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिरीश्वरः ॥ १० ॥
 अष्टपिण्डो मयानुष्टुप् वर्णितो वीरवन्दिते ।
 दुर्गेश्वरो नीलकण्ठो देवता कथितो मया ॥ ११ ॥
 हरितं बीजमीशानि तारं शक्तिः स्मृता शिवे ।
 कीलकं विश्वमाख्यातं नियोगो मनुसिद्धये ॥ १२ ॥
 तारचन्द्रकटिम्बाद्यैः पद्मदीर्घन्यासमाचरेत् ।
 ध्यानमस्य शिवस्याथ श्रुता गुप्ततमं कुरु ॥ १३ ॥
 वन्द्यककाञ्चननिभं रुचिराद्यमालां
 पाशाङ्कुशौ वरमनीतिनमुं दधानम् ।
 हस्तैः शशाङ्कशकलाभरणं त्रिनेत्रं
 श्रीनीलकण्ठमुमया त्रितमाभयामि ॥ १४ ॥
 मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिमय परम् ।
 दुर्गारहस्यभूतं च भृशं पार्वति सत्वरम् ॥ १५ ॥
 प्रणवं हरितं व्योमं नीलकण्ठाय चारमरी ।

दुर्गेशनीलकण्ठस्य मन्त्रोद्धारो दशाक्षरः ॥ १६ ॥

अनेन मन्त्रराजेन जप्तमात्रेण पार्वति ।

दुर्गायाः परमा विद्या कलौ सिद्ध्यति सत्वरम् ॥ १

इतीदं गुह्यगुप्तातिगुह्यं सर्वस्वमीश्वरि ।

रहस्यं नीलकण्ठस्य गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ १८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शिवाविद्यानि-
रूपणं त्रिपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५३ ॥

—ॐ—

अथ

चतुष्पञ्चाशत्तमः पटलः ।

—ॐ—

श्रीभैरव उवाच ।

दीक्षाविधिं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितेच्छया ।

विधाय विधिवद् दीक्षां पशुत्वात् स विमुच्यते ॥ १ ॥

दीयते परमा सिद्धिः क्षीयते कर्मवासना ।

आप्यते परमं धाम तेन दीक्षा स्मृता शिवे ॥ २ ॥

ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं जगत् सर्वं महेश्वरि ।

पशुत्त्वान्मोहितं देव्या तस्माद् दीक्षां चरेत् कलौ ॥ ३ ॥

श्रीदेव्याः सेवया देवि चक्रार्चनपुरःसरम् ।

साधकः पशुभावेन मुक्तो ज्ञानं भजेत् ततः ॥ ४ ॥

दीक्षितो याति चरणं दीक्षाहीनो भवेत् पशुः ।
 दीक्षितस्तु भवेज्जानीं पशुभावोज्झितो विभुः ॥ ५ ॥
 सर्वपातकमुक्तो हि लभेत् स परनां गतिम् ।
 यस्य दीक्षा शिवे नास्ति जीवनान्तं च जन्मिनः ॥ ६ ॥
 स जातु नोचरेद् देवि निरयाम्बुनिधेः क्वचित् ।
 दीक्षारिणस्य देवेशि पशोः कुत्सितजन्मनः ॥ ७ ॥
 पापौघोऽन्तिकमायाति पुण्यं दूरं पलायते ।
 तस्माद्यत्नेन दीक्षैषा ग्राह्या कृतिभिरुपमैः ॥ ८ ॥
 बान्धवे वा यौवने वापि वार्षक्येऽपि सुरेश्वरि ।
 अन्यथा निरयी पापी पितॄन् स्नान्निरयं नयेत् ॥ ९ ॥
 अन्ते पशुमनुष्यः सन् पशुयोनिं व्रजेच्छिवे ।
 पूर्वपुण्यार्जितां प्राप्य चासनां परमार्यदाम् ॥ १० ॥
 गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम् ।
 लब्ध्वा भक्त्या प्रणम्यादौ तोषयित्वा विशेषतः ॥ ११ ॥
 प्रणामैर्वन्दनैर्देवि दक्षिणाम्बरपूर्वकम् ।
 सिद्धसाधारिनिर्णीतां दीक्षां देव्या यथाविधि ॥ १२ ॥
 पृष्ठीयात् परया भक्त्या साधको येन जायते ।
 गुरुश्च शिष्यं रम्याङ्गं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम् ॥ १३ ॥
 गुरुभक्तिरतं बालं कुलीनं गर्भदीक्षितम् ।
 देवीभक्तिरतं मूढं पापमीतं कृतात्मकम् ॥ १४ ॥
 वृष्टा दीक्षां परां दद्यात् कृतभागी भवेत् ततः ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् करुणाम्बोधे साधकानां हितेऽद्वया ।
 कदा दीक्षा परा ग्राह्या तापकैस्तद्वदस्य मे ॥ १५ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

सुदिने शुभनक्षत्रे सङ्क्रान्तावयनद्वये ।

नगरात्रिदिने पित्रोः श्राद्धे स्वजनिवासरे ॥ १६ ॥

नववर्षदिने देवि चन्द्रसोपरागके ।

शिवरात्र्यां स्वजन्मर्षे दीक्षां दुर्गाद्विषयः ॥ १७ ॥

तत्रादौ शुभनक्षत्रे स्नात्वा संपूज्य भैरवम् ।

गत्वा नदीतटे देवि तथा देवालयं क्वचित् ॥ १८ ॥

देवताग्रे गुरुं नत्वा नत्वा सन्तोषहेतवे ।

द्वीपं वीपधनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ १९ ॥

देवतायतनं वापि प्राप्त्वाशु प्रणमेत् ततः ।

तत्रादावासनं देवि संशोभ्य गुरुमर्चयेत् ॥ २० ॥

भूताग्निःसार्य देवेशि स्वाङ्गन्यासं चरेत् ततः ।

प्राङ्मुखो गुरुरासीनथोत्तराभिमुख शिशुम् ॥ २१ ॥

संस्थाप्य विधिबद्धं देवि देवीं स्मृत्वा परामयः ।

देवताग्रे पराप्रोत्य दीक्षां दद्याद्यथाविधि ॥ २२ ॥

कर्णमूले महाविद्या श्रीविद्या साधकेश्वरैः ।

आनन्दसङ्गद्वयः शनैस्त्रिभिः समर्पयेत् ॥ २३ ॥

गणेशस्य च गायत्र्यास्ततो मृत्युञ्जयस्य च ।

इष्टदेव्याः शिवस्यापि ततो विद्या समर्पयेत् ॥ २४ ॥

शिष्यो दीक्षां तु संप्राप्य गुरुमभ्यर्च्य शक्तिः ।

तोषयित्वा प्रणामैश्च दक्षिणाभिः शुभाभ्यरैः ॥ २५ ॥

तदाज्ञा सहसादाय पूजायै परमेश्वरि ।

यन्त्रं मन्त्रं च मालां च पञ्चाङ्ग परमेश्वरि ॥ २६ ॥

पुनर्जातु शिवे शिष्यो गुरवेऽपि न श्येत् ।
इति दीक्षाविधेः सारभूतं गुह्यं रहस्यकम् ।
गुह्यातिगुह्यगुह्यं तु न प्रकारयं मुमुक्षुभिः ॥ २७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दीक्षानिरूपणं
चतुष्पञ्चाशत्तमः पटलः ॥ २४ ॥



अथ

पञ्चपञ्चाशत्तमः पटलः ।

—०.००००—

श्रीपैरव उवाच ।

अधुना मन्त्रराजस्य पुरश्चरणमुत्तमम् ।
वक्ष्ये सिद्धिप्रदो येन मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ १ ॥
एकदा मुदिने देवि मुनचत्रे सुपर्वणि ।
पुरश्चरणकर्मादौ आरभेत् साधकोत्तमः ॥ २ ॥
वर्णलसं जपेन्मन्त्रं तदर्धं वा महेश्वरि^१ ।
एकलषावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ ३ ॥
लवसंरूपा प्रकृतेरूपा साधकैश्चेन्न शक्यते ।
एकलसं प्रजप्त्यन्यं नातो न्यूनं कदाचन ॥ ४ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

लवजज्ञो मनुर्देव यदि कल्पद्रुमो भवेत् ।

तदा किं साधको लोके लघुतत्त्वं वदस्व मे ॥ ५ ॥

कस्य हस्तेन मन्त्रस्य पुरश्चरणकक्रियाम् ।

कारयेत् साधकश्चैतत् संशयं खिन्धि धूर्जटे ॥ ६ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

साधु पृष्टं त्वया देवि शृणु वक्ष्यामि पार्वति ।

न कदाचित् स्वयं कुर्यादादौ मन्त्रपुरस्कियाम् ॥ ७ ॥

गुरुहस्तेन देवेशि साधकस्य करेण वा ।

कुर्यान्मन्त्रवरस्यास्य पुरश्चरणकक्रियाम् ॥ ८ ॥

जीवहीनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः ।

पुरश्चरणहीनोऽपि न मन्त्रः फलदायकः ॥ ९ ॥

अपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम् ।

मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम् ॥ १० ॥

मन्त्रस्यादौ प्रमादाच्चेत् स्वयं कुर्यात् पुरस्कियाम् ।

तदा जाप्यं भवेद् व्यर्थं चेन्नेष्विव घृतं यथा ॥ ११ ॥

तस्माच्च गुरुहस्तेन साधकस्य करेण वा ।

पुरश्चर्या स्वमन्त्रस्य कारयेत् साधकोत्तमः ॥ १२ ॥

पुरश्चरणसङ्कुप्यं दत्त्वादौ गुरवे शिवे ।

जपं यथाविधि कुर्याद् गुरुः कुलमनोः प्रिये ॥ १३ ॥

गुरोः पादप्रसादेन पुरश्चर्याफलं शिवे ।

गृहीयात् साधको देवि गुरुं सन्तोषयेत् ततः ॥ १४ ॥

येन मन्त्रः कलौ शीघ्रमिष्टसिद्धिप्रदो भवेत् ।

दक्षिणामिः शुभैर्वस्त्रैर्यथाविभवमात्मनः ॥ १५ ॥

ततः स्वयं पुरश्चर्या बह्वीः कुर्यात् तु साधकः ।

पर्वताग्रे नदीतीरे देवतायतने तथा ॥ १६ ॥

एकान्ते च शुचौ देशे जपेन्नियतमानसः ।
 ब्रह्मचर्यधरो वीरो मिताहारो जितेन्द्रियः ॥ १७ ॥
 अनृतं यत्सरं दम्भं त्यजेत् प्रतिग्रहं तथा ।
 पुरश्चरणकाले तु तद्दोमावसरे तथा ॥ १८ ॥
 मूलं जपैकलक्षं तु कृत्वा होमं दशांशतः ।
 साधकैः क्षत्रियेणापि दशांशं होममाचरेत् ॥ १९ ॥
 तर्पयेत् सुहितो देवीं भोजयेत् साधकांस्ततः ।
 पुरश्चर्याविधिश्चैव वर्णितः कुलसुन्दरि ॥ २० ॥
 अथर्धान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
 अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां पञ्चबोक्मबोरपि ॥ २१ ॥
 क्षर्पोदयात् समारभ्य यावत् क्षर्पोदयो भवेत् ।
 तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ २२ ॥
 चन्द्रवर्षग्रहे वापि प्रासावधि विमुक्तितः ।
 यावत्संख्यामनुर्जप्तस्तावदोमादिकं चरेत् ॥ २३ ॥
 सर्वसिद्धीश्वरो मन्त्रो भवेत् साधकवान्दिते ।
 शरत्काले रवौ देवि जपेन्मन्त्रं यथाविधि ॥ २४ ॥
 निशीथे रक्षेद्दोमं क्षत्रेण्यस्ताहुतिं शिवे ।
 तत्क्षणात् साधको देवि क्षत्रियोऽपि शुभं लभेत् ॥ २५ ॥
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
 गुरुमानीय संस्थाप्य देवतापूजनं चरेत् ॥ २६ ॥
 वस्त्रालङ्कारहेमाद्यैः सन्तोष्य गुरुमेव च ।
 उत्सृतं उत्सृतां चैव तस्य पर्वां तथैव च ॥ २७ ॥
 पूजयित्वा मनुं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
 अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ २८ ॥

सहस्रारे गुरोः पादपद्मं ध्यात्वा प्रपूज्य च ।
 केवलं देवमात्रेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ २६ ॥
 गुरवे दक्षिणां दद्याद् यथाविभवमात्मनः ।
 गुरोरनुज्ञामात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिद्ध्यति ॥ २७ ॥
 इत्येव पटलो गुह्यो मन्त्रसारमयो ध्रुवः ।
 अप्रकाश्यो न दातव्यो नाख्येयो ब्रह्मवादिभिः ॥ २८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्याविधिनिरूपणं
 पञ्चपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५५ ॥

—,०००००:—

अथ

षट्पञ्चाशत्तमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पञ्चरत्नेश्वरीविधिम् ।
 येन भवत्यमात्रेण विद्या सिद्ध्यति सत्वरम् ॥ १ ॥
 विना पञ्चरत्नेश्वरीमन्त्रजाप्यं
 न सिद्धिर्भवेत् साधकस्योत्तमस्य ।
 ततः पूजयेद् दीक्षितः श्रीगुरुं स्वं
 समस्ताष्टसिद्धीश्वरं देवदेवि ॥ २ ॥
 दुर्गायाः परमं तत्त्वं पञ्चरत्नेश्वरीमयम् ।
 मृणुष्यावहितो भूत्वा येन ह्यर्चिर्भवेत् कृतौ ॥ ३ ॥
 श्रीदुर्गा शारदा शारी सुमुक्ती भगलाह्वयी ।

पञ्चरत्नेश्वरी विद्या दुर्गायाः कथिता मया ॥ ४ ॥
 सुदिने देवि दुर्गायाः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ।
 वर्णलचपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥ ५ ॥
 साधकेषु चतुर्विधं श्रीदुर्गासाधकः शिवे ।
 श्रीगुरु बन्दनैः स्तुत्या तोषयित्वा धनैरपि ॥ ६ ॥
 दीक्षामन्येषु शिखरे दापयेत् साधकोत्तमः ।
 येन मन्त्रो हि दुर्गायाः सद्यः स्फुरति भारती ॥ ७ ॥
 पञ्चस्वपि महादेवि साधकेषु कलौ युगे ।
 पञ्चरत्नेश्वरीं दत्त्वा पुरश्चर्याफलं लभेत् ॥ ८ ॥
 श्रीदुर्गोपासकत्रैकः शारदोपासकः परः ।
 शारिकोपासकस्तन्यो मातङ्गास्तपरः शिवे ॥ ९ ॥
 पञ्चमो वगलामुरुषाधैकत्र मिलिताश्च ते ।
 पूजयेत्पुनरुक्तं देवि पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥ १० ॥
 अन्योन्य साधकाः पञ्च श्रीगुरोः पुरतः शिवे ।
 पुरश्चर्याफलं सिद्धिं प्रार्थयेद्युगुरोस्ततः ॥ ११ ॥
 एव सिद्धमनुलोके सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ।

(१) तार माया चाक्रिक चक्रिदूर्वा-

बायव्यार्ध्व विश्वमन्त्रे भवोनि ।

दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्या-

मन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाधरोऽयम् ॥ १२ ॥

(२) तार माया कामरात्रय शक्तिः

स्तम्भ तस्माद्भगवत्यै च नाम ।

भूतिस्तस्मादञ्चले षडय स्पात्

प्रोक्तं मुक्त्यै शारदा-मन्त्र एव ॥ १३ ॥

(३) तारं परा मातृसिन्धुरार्णाः

स्वं शर्म तन्मध्यगतं च नाम ।

अन्तेऽश्मरी पार्वति शारिकाया-

स्त्रयोदशार्णो मनुस्ति गोप्यः ॥ १४ ॥

(४) वाक् कामेष्टुच्छिष्टपदं त्रिमान्य

चैष्टालिनी वै सुमुखी च देवि ।

महापिशाची सकलात्रयान्जं

वनं मनुः स्यात् सुमुखीप्रियोऽयम् ॥ १५ ॥

(५) तारं मठं बगलामुखि सर्व-

दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय द्विः ।

पदं जिह्वां कीलय द्विर्मठं वा

तारं नीरं ब्रह्मणोऽर्त्यसूत्रविद्या ॥ १६ ॥

इत्येषा गुप्तविद्येयं प्रभावसहिता कलौ ।

पञ्चरत्नेश्वरी ग्राह्या पुरश्चरणसिद्धये ॥ १७ ॥

इतीदं तत्त्वमीशानि पुरश्चर्यारहस्यकम् ।

अनन्तफलदं गुह्यं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ १८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पञ्चरत्नेश्वरीविद्यानिरूपण

पदपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५६ ॥

—:०:५:—

सप्तपञ्चाशत्तमः पटलः ।

श्रीभैरव उवाच ।

अथ होमविधिं वक्ष्ये सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।

दुर्गारहस्यकं सारं मन्त्रराजस्य पार्वति ॥ १ ॥

ध्याता देवीं परां दुर्गां मुक्तं ध्यात्वा सशक्तिकम् ।

जपेच्छ्रीचक्रपुरतो निशीथे मन्त्रमीश्वरि ॥ २ ॥

अपुनं लक्ष्मेकं वा दशाशं होममाचरेत् ।

कोटिलक्षप्रजस्य मन्त्रस्य सुरसुन्दरि ॥ ३ ॥

विना दशाशहोमेन न तत्फलमवाप्नुयात् ।

विना श्मशानगमनं नित्यहोमजपादयः ॥ ४ ॥

न सिद्ध्यन्ति वरारोहे कलौ भैरवशापतः ।

घृतपायसमृद्धीका-गुडपुष्पसिताशरैः ॥ ५ ॥

होमो दशाशतः कार्यो जपस्य सुरवन्दिते ।

पञ्चामृतेन देवेशि तद्दशाशेन तर्पयेत् ॥ ६ ॥

तर्पयित्वा दशाशेन पञ्चामृतमुख सुधीः ।

तद्दशाशेन देवेशि ह्यष्टगन्धेन मार्जयेत् ॥ ७ ॥

भोजयित्वा दशाशेन दीक्षिताश्च द्विजोत्तमान् ।

ततो देवि पुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥ ८ ॥

अन्यथा सिद्धिहाणिः स्वाज्ञस्तस्यापि मनोः सदा ।

श्रीदेव्युवाच ।

यस्य नो भवति शक्तिर्होमं कर्तुं दशांशतः ।

स कथं क्रियते होमं तद्वदस्व महेश्वर ॥ ६ ॥

श्रीमैरव उवाच

यस्य होमं शिवे कर्तुं शक्तिर्नास्ति दशांशतः ।

तस्य युक्तिं ब्रवीम्यद्य कौलिकानां हिताय च ॥ १० ॥

शुभेऽहि सारं देवेशि गतोपवनमण्डलम् ।

श्मशानं संमुखं धृत्वा पृष्ठे वा परमेश्वरि ॥ ११ ॥

श्मशानं प्रणमेन्नृत्या साधकः साधकैः समम् ।

ज्वालाकरालवदने कल्पान्तदहनप्रिये ॥ १२ ॥

प्राणिप्राणालयोद्धते चिते मेऽनुग्रहं कुरु ।

इति नत्वा महादेवि ज्ञात्वा दिग्भूतभैरवान् ॥ १३ ॥

निबसेत् तत्र रात्रौ तु कुर्याद्दोमं कुलेश्वरि ।

ऐशान्यां दिशि देवेशि थीचक्रं तु विभावयेत् ॥ १४ ॥

संपूज्य विधिबन्धनैर्दिक्पालांस्तत्र पार्ष्वति ।

गणेशं पूजयेत्तत्र पूजयेत् कुलयोगिनीः ॥ १५ ॥

तत्पूर्वतः खनेत् कुण्डं हुनेदाग्न्यं च विधया ।

त्रिकोणं कुण्डमीशानि हस्ताधोगाधमद्विजे ॥ १६ ॥

हस्तैकविस्तृतं विश्वक् तस्मिंश्चक्रं विभावयेत् ।

चिन्दुं त्रिकोणं षट्कोणं वसुपत्रं त्रिवर्तुलम् ॥ १७ ॥

भृगुहार्द्रं मयारूपातं बहिचक्रं कुलार्चिते ।

गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्ततः ॥ १८ ॥

पूजनीया विशेषेण गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।

ब्राह्म्यादिमातरः पूज्या असिताद्याश्च भैरवाः ॥ १९ ॥

वसुपत्रेषु संपूज्या बहिचक्रे महेश्वरि ।

माया च मोहिनी चैव तृतीया च मनोन्मना ॥ २० ॥

मुक्तकेशी च मातङ्गी मदिराक्षी पटश्रके ।
 त्रिकोणे यमुना गङ्गा सपूज्या च सरस्वती ॥ २१ ॥
 विन्दौ दुर्गा च सपूज्या गन्धपुष्पाद्यैः शिवे ।
 विन्दावरणिमामन्त्र्य मूलमन्त्रेण मान्त्रिकः ॥ २२ ॥
 वह्निमावाह्य मूलेन तदावाहनमुद्रया ।
 उत्तरामप्रये स्वाहा मन्त्रेणेति सुरेश्वरि ॥ २३ ॥
 वह्निं मूलेन संस्कृत्य कृत्वाज्यं घृतमाश्वरि ।
 दशाशहोमसङ्कुपं कुर्यान्मन्त्रस्य साधकः ॥ २४ ॥
 मालया दहने दद्यादाहुतीनां शतत्रयम् ।
 आहुतीः क्षत्रियस्यस्तास्तत्र बह्वी हुनेत् प्रिये ॥ २५ ॥
 पुष्पैः फलैराज्यमिधैस्ततो दद्याद् बलिं प्रिये ।
 मकारैः पञ्चभिर्देवि पुनर्जन्वा च पूर्ववत् ॥ २६ ॥
 आहुतीनां शतं दद्यादष्टोत्तरमधोमुखः ।
 ततः साधकचक्रस्य क्षत्रियस्य च पार्वति ॥ २७ ॥
 पूजा विधाय चक्रेऽसितोषयेन्नुतिभिर्गुरुम् ।
 आशीर्भिर्वर्धयेत् क्षत्र येनाशु घोषिणो भवेत् ॥ २८ ॥
 क्षत्रियोऽपि वदेत् तत्र पुरश्चर्याफलं मनोः ।
 लभस्व साधकश्रेष्ठ ततः पूर्णाहुतिं हुनेत् ॥ २९ ॥
 ततो वर्म पठेद् देवि येन देवीमयो भवेत् ।
 ततो देवीं च सगिवा मन्त्री सहारमुद्रया ॥ ३० ॥
 साधकास्तर्पयित्वादौ मन्त्रययानादिभिः प्रिये ।
 विसृज्य साधकान् देवीं सशिवां सपरिच्छदाम् ॥ ३१ ॥
 पुरश्चर्याफलं प्राप्य साधको मुक्तिमाप्नुते ।
 इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रपूजामयो ध्रुवः ।

सर्वतत्त्वैकनिलयो गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥ ३२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये होमविधिनिरूपणं
सप्तपञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५७ ॥

—:ॐ:—

अथ

अष्टापञ्चाशत्तमः पटलः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अधुना चक्रपूजां ते वक्ष्यामि नगनन्दिनि ।
येन दुर्गा कलौ शीघ्रं वरदा भवति प्रिये ॥ १ ॥
एकादशार्चधि देवि साधकाः परमार्थदाः ।
एकादशापि चक्रे तु वर्णिताः साधकाः शुभाः ॥ २ ॥
उत्तमा नव देवेशि मध्यमाः पञ्च साधकाः ।
अधमास्तु त्रयो देवि न पूज्याश्चक्रमध्यगाः ॥ ३ ॥
विना चकार्चनं नैव नित्यपूजाजपादयः ।
फलंदा योगिनीशापात् तस्माच्चक्रं प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥
कुहूपूर्णेन्दुसंक्रान्ति-चतुर्दश्यष्टमीषु च ।
नवम्यां मङ्गले मन्दे चक्रपूजा शुभप्रदा ॥ ५ ॥
साधकाश्च मुनीर्ध्याश्च मिलिताः शिवमन्दिरे ।
देवतायतने वापि शून्ये शृङ्गाटकेऽथ वा ॥ ६ ॥

दिग्भूतभैरवान् देवि विचार्य पुरसाधकः ।
 उपविश्यासने देवि संशोध्य वीरप्रण्डले ॥ ७ ॥
 साधकानुपविश्यात् कुर्यात् संकल्पमादरात् ।
 न्यासे विधाय सर्गाङ्गे भूतशुद्ध्यादिकं चरेत् ॥ ८ ॥
 तत्र प्राणान् प्रतिष्ठाप्य श्रीचक्रं पूजयेच्छिवे ।
 आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये कुम्भस्नापनमाचरेत् ॥ ९ ॥
 गौडी माध्वी तथा पैष्टी चासवं पूजयेच्छिवे ।
 एतेषां रसमादाय तत्पतो भैरवार्चने ॥ १० ॥
 आनन्दरसपूजायां तुष्यते परमेश्वरी ।
 विप्राश्च चत्रिया वैरयाः शूद्राः पूज्याश्च पार्वति ॥ ११ ॥
 गौडी विमेषु शुभदा माध्वी चत्रेषु चोत्तमा ।
 वैरयेषु शुभदा पैष्टी शूद्रेषु शुभमासवम् ॥ १२ ॥
 ब्रह्मचत्रियवैरयानामानन्दस्तु शुभाग्रदः ।
 आसवं दूरतस्त्याज्यं साधकैस्तु मुमुक्षुभिः ॥ १३ ॥
 अमावे तु सुरानन्दरसानां परमेश्वरि ।
 मधुना पूजयेद् देवि देवमानन्दभैरवम् ॥ १४ ॥
 द्रव्यं संशोध्य देवेशि मकारान् पञ्च शोषयेत् ।
 श्रीचक्राग्रेऽर्चयेत् तत्र साधकान् भैरवागमे ॥ १५ ॥
 तत्र संपूज्य मन्त्रेशं देवमावाह्य भैरवम् ।
 योगिनीः पूजयेत् तत्र बहुकं पूजयेत् ततः ॥ १६ ॥
 गणेशं क्षेत्रपालांश्च पूजयेच्चक्रनायिकाम् ।
 सन्तर्प्य देवान् पितॄन् मुनीन् वेदान् महेश्वरि ॥ १७ ॥
 श्रीचक्राग्रे जपेन्मूलं पठेत् कञ्चमीश्वरि ।

१ 'परिसाधकः' ख पाठः । २ 'पूजामु पावना' ऊ. पाठः । ३ 'शिवं'
 छ. पाठः । ४ 'रमानन्द' ऊ. पाठः । ५ 'नायकान्' ख. ग. पाठः ।

मन्त्रनामसहस्रं च स्तोत्रं पुण्यं पठेत्ततः ॥ १८ ॥

ततो देव्यै बलिं दत्त्वा साधकांस्तर्पयेच्छिवे ।

भैरवांस्तर्पयेद्याष्टौ दीचितांस्तर्पयेत् ततः ॥ १९ ॥

उत्तमं नव पात्राणि पञ्च पात्राणि मध्यमम् ।

अधमं त्रीणि पात्राणि चैकपात्रं न पूजयेत् ॥ २० ॥

प्रवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः ।

निवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥ २१ ॥

नव कन्याः समभ्यर्च्य वीरेशो भैरवार्चने ।

रेतसा तर्पयेद् देवीं कुलकोटिं समुदरेत् ॥ २२ ॥

शक्तपुच्छिष्टं पिबेद् द्रव्यं वीरोच्छिष्टं तु चर्वणम् ।

मकारपञ्चसंयुक्तं कुर्याच्छ्रीचक्रमण्डलम् ॥ २३ ॥

स्वगुरुं पूजयेत् तत्र तर्पयेच्छक्तिः परम् ।

तोषयित्वा गुरुं देवि दक्षिणाभिश्च वन्दनैः ॥ २४ ॥

तदाज्ञां शिरसादाय कुर्यादानन्दमात्मनः ।

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-

मग्रे मुद्रा चणकवदुकौ ध्वजस्योष्णशुद्धिः ।

तन्त्री वीणा सरसमधुरा सद्गुरोः सत्कथायां

वामाचारः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ २५ ॥

इतीदं चक्रसर्वस्वं गुह्यं तत्तत्तत्कर्म परम् ।

तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ २६ ॥

इति श्रीब्रह्मसंहिता तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये चक्रपूजानिरूपण-

महापञ्चाशत्तमः पटलः ॥ ५८ ॥

अथ

एकोनषष्टितमः पटलः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गायास्तत्त्वमुत्तमम् ।
आचाराणां विधिं येन कलौ दुर्गा प्रसीदति' ॥ १ ॥
द्वौ मार्गौ चागमे स्थातां वामाचारस्तु दक्षिणः ।
तयोस्तत्त्वं कुलाचारः शृणु तेषां विधिं शिवे ॥ २ ॥
साधको दीक्षितो भूत्वा केन सिद्धिमवाप्नुयात् ।
तद्ब्रूदामि तव स्नेहान्नचाख्येयं दुरात्मने ॥ ३ ॥
त्रीणि बीजानि दुर्गायास्तदाचारास्तयः स्मृताः ।
प्रथमो दक्षिणाचारो वामाचारो द्वितीयकः ॥ ४ ॥
तृतीयस्तु कुलाचारो विधिं तेषां शृणु प्रिये ।
प्रभाते स्नानसन्ध्यादि मध्याह्ने जपमीश्वरि ॥ ५ ॥
और्ध्वमासनमाख्यातं भक्ष्यं पायसशर्कराः ।
माला रुद्राक्षसंभूता पात्रं पापाण्यसंभवम् ॥ ६ ॥
भोगः स्वकीयकान्ताभिर्दक्षिणाचार इत्ययम् ।
द्रव्येण अधुना देवि सिद्धिदानिकरो मतः ॥ ७ ॥
वामाचारं प्रवक्ष्यामि श्रीदुर्गासापनं परम् ।
यं विधाय कलौ शीघ्रं मान्विकः सिद्धिमाप्नुवेत् ॥ ८ ॥
माला नृदन्तसंभूता पात्रं पापाण्यमुण्डकम् ।
आसनं सिंहचर्मादि कङ्कणं स्त्रीकचोद्भवम् ॥ ९ ॥

द्रव्यमासवतश्चाढ्यं भक्ष्यं मांसादिकं शिवे ।
 चर्वणं बालमत्स्यादि मुद्रा चीखारवः कथा ॥ १० ॥
 मैथुनं वरकान्ताभिः सर्ववर्णसमानतः ।
 वामाचार इति प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदः शिवे ॥ ११ ॥
 अन्यथा सिद्धिहानिः खान्मग्नस्यास्य महेश्वरि ।
 तस्माद्दामं भजेन्नित्यं वाम एव परा गतिः ॥ १२ ॥
 दक्षिणं च कुलं चैव वीरैः साधकसत्तमैः ।
 त्याज्यं दूरात् कलौ देवि वाममेव भजेत् कलौ ॥ १३ ॥
 कुलाचारं प्रवक्ष्यामि सेव्यं योगिभिरुत्तमैः ।
 कुलस्त्रियं कुलगुरुं कुलदेवीं महेश्वरि ॥ १४ ॥
 नित्यं यत् पूजयेदित्थं स कुलाचार उच्यते ।
 कुलस्त्रियं शिवे ज्ञात्वा जुता जुता महेश्वरि ॥ १५ ॥
 हठादानीय संपूज्य तथा भोगं विधाय च ।
 रेतसा तर्पयेद् देवीं श्रीदुर्गा चक्रनायिकाम् ॥ १६ ॥
 नीलकण्ठं च विधिना जपं कुर्याद्विशेषतः ।
 तत्पूर्वकं चरेद्भोगं कुलकान्तां विभूषयेत् ॥ १७ ॥
 पानैः पेयैस्तथा भक्ष्यैः सन्तर्प्य कुलयोषितम् ।
 प्रत्यहं वै चरेदेवं कुलाचार इति स्मृतः ॥ १८ ॥
 इत्याचारपरः श्रीमान् कुलस्त्रीगुरुपूजकः ।
 वामाचारपरो मन्त्री मुक्तिभाग् भविता ध्रुवम् ॥ १९ ॥
 इत्येष पटलो गुह्यो देव्याश्चाचारवल्लभः ।
 अदातन्वोऽप्यभक्तेभ्यो न प्रकारयो मुमुक्षुभिः ॥ २० ॥
 इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये आचारनिरूपण-
 भेकोनपष्ठितमः पटलः ॥ ५६ ॥

अथ

षष्टितमः पटलः ।



धीमैरव उवाच ।

अधुना कथयिष्यामि श्रीदुर्गाया रहस्यकम् ।
तत्त्वं मन्त्रस्य देवेशि दशमीपूजनं परम् ॥ १ ॥
दीक्षागुरुः शिवे यस्तु दशमी स प्रकीर्तितः ।
पूजनं तस्य वक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ २ ॥
दीक्षां गृहीत्वा विधिवद् गुरोः कुलविचक्षणाद् ।
तदाङ्गां शिरसादाय साधयेत् स्वमनुं ततः ॥ ३ ॥
एकदा पुष्पदिवसे बृहते शुभदे तथा ।
गुरुमानीय देवेशि शून्यगेहे चतुष्पथे ॥ ४ ॥
रमशाने वा वने वापि स्वगृहे वापि पार्वति ।
तत्र भूमौ लिखेद्यन्त्रं यथावद् वर्णयेत् मया ॥ ५ ॥
विन्दुत्रिकोणं वसुकोणबिम्बं
वृत्ताष्टपत्रं शिखिवृत्तयुक्तम् ।
धरागृहं वह्निगृहीभिरीड्यं
यन्त्रं गुरोर्देवि मया प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥
सिन्दूरेण विलिख्यार्तः पूजयेच्चक्रमीश्वरि ।
गणेशचर्मवरुणाः कुबेरसहिताः शिवे ॥ ७ ॥
पूज्या द्वाःस्थाः सुपुष्पैश्च गन्धाक्षतपुरःसरैः ।
असिताङ्गो रुक्थण्डो क्रोधेशोन्मत्तभैरवौ ॥ ८ ॥

कपाली भीषणो देवि संहारोऽर्च्योऽष्टपत्रके ।
 परमानन्दनाथं च प्रकाशानन्दनाथकम् ॥ ९ ॥
 श्रीभोगानन्दनाथं च समयानन्दनाथकम् ।
 भुवनानन्दनाथं च सुमनानन्दनाथकम् ॥ १० ॥
 गगनानन्दनाथं च श्रीविश्वानन्दनाथकम् ।
 अष्टौ कुलगुरुन् देवि पूजयेद् वसुपत्रके ॥ ११ ॥
 मदनानन्दनाथं च श्रीलीलानन्दनाथकम् ।
 महेश्वरानन्दनाथं पूजयेद्द्वै त्रिकोणके ॥ १२ ॥
 बिन्दौ गुरुं च संपूज्य गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।
 तत्र बिन्दौ गुरुं देवि स्थापयेद् मन्त्रिपूर्वकम् ॥ १३ ॥
 संपूजयेत् स्वमूलेन दक्षिणां कालिकां यजेत् ।
 महाकालं यजेत् तत्र कामं कामेश्वरीं तथा ॥ १४ ॥
 गुरुं च परमं देवि परापरगुरुं तथा ।
 परमेष्ठिगुरुं चैव स्वगुरोर्मांभिः पूजयेत् ॥ १५ ॥
 संपूज्य विविधैः पुष्पैर्माल्यैराभरणोत्तमैः ।
 दक्षिणाभिर्महेशानि भक्ष्यैर्भोज्यैश्च लेह्यकैः ॥ १६ ॥
 चोष्यैः पेयैश्च खाद्यैश्च बलिं दत्त्वा च तर्पयेत् ।
 आनन्दरससंपूर्णं गुरुं वृष्ट्वा महेश्वरि ॥ १७ ॥
 ततो देवि गुरुं नत्वा प्रार्थयेत् स्वमनोरथम् ।
 य एवं पूजयेद् देवि स्वगुरुं पुण्यनासरे ॥ १८ ॥
 स एव भैरवः साचाद्विचरेद् भुवनत्रये ।
 गुरुरेव परो मन्त्रो गुरुरेव परो जपः ॥ १९ ॥
 गुरुरेव परा विद्या नास्ति किञ्चिद्गुरुं विना ।

१ 'भीष्वात्मानन्द' ड. पाठः । २ 'भजेत्' ड. पाठः । ३ 'पुण्या क. ख.
 पाठः । ४ 'तत्र' ड. पाठः ।

यस्य तुष्टो गुरुर्देवि तस्य तुष्टा मद्देश्वरी ॥ २० ॥

येन संतोषितो देवि गुरुः स हि सदाशिवः ।

यन्ने दृष्ट्यापि वै भ्रूयाद्गुरुस्तत्र समाचरेत् ॥ २१ ॥

पुण्यं वापुण्यमीशानि त्याज्यं ग्राह्यं कुलार्चिते ।

गुरुर्वदति यत् सद्यस्तत् कुर्यात् साधकोत्तमः ॥ २२ ॥

विना गुरुपदेशेन न सिद्ध्यति कलौ मनुः ।

तस्माद् गुरुं भजेद् भक्त्या तोषयेत् सततं गुरुम् ॥ २३ ॥

गुरोर्यत्र परीवादो निन्दा यत्र प्रवर्तते ।

कथौ तत्र पिघातव्यौ नो वा दूरं पलायनम् ॥ २४ ॥

गुरुर्देवि परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः ।

गुरुमभ्यर्चयेन्नित्यं येन देवी प्रसीदति ॥ २५ ॥

इतीदं दशमीतत्त्वं सर्वागमरहस्यकम् ।

सारात्सारतरं देवि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ २६ ॥

इतीदं परमं तत्त्वं तत्त्वं सर्वसमुत्तमम् ।

दुर्गारहस्यसाराख्यं गुह्यं गोप्यं च सापकैः ॥ २७ ॥

इति देवीरहस्याख्यस्तत्रोऽयं तन्त्रसागरः ।

सर्वस्य मे रहस्यं मे सर्वागमनिधिः परः^३ ॥ २८ ॥

श्रीदुर्गायास्तत्त्वभूतो मन्त्रराजमयो ध्रुवः ।

सिद्धिप्रदो महादेवि पूजनीयोऽस्ति सापकैः ॥ २९ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् भवता भक्त्या प्रसादोऽयं मयि कृतः ।

यच्चया वर्णितस्तत्रः श्रीदुर्गायाः कुलेश्वर ॥ ३० ॥

क्रीतासि तव दास्यसि भक्तासि त्रिपुरान्तक ।

सर्वथा रत्नणीयासि किमन्यत् कथयामि ते ॥ ३१ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

इदं देवीरहस्याख्यं तन्त्रराजं महेश्वरि ।

अदातव्यमभक्तेभ्यो दुरात्मभ्यो महेश्वरि ॥ ३२ ॥

स्वपुत्रेभ्योऽन्यशिष्येभ्यो न देयं तु मुमुक्षुभिः ।

इदं हि सारं तन्त्राणां तत्त्वं सर्वस्वोत्तमम् ॥ ३३ ॥

रहस्यं देवि दुर्गाया गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत-श्रीदेवीरहस्ये दशमीविधिनिरूपणं
पण्डितमः पटलः ॥ ६० ॥

समाप्तं चेदं देवीरहस्यतन्त्रम् ।

पञ्चाङ्कनन्दशशि (१६६५) संमितवैक्रमेऽब्दे

देवीरहस्यकमशेषसुतन्त्रसारम् ।

श्रीरुद्रयामलमहान्धिमहार्घरत्नं

संस्कृत्य शुद्धपदपाठसुमेलनाद्यैः ॥ १ ॥

प्राचीनहस्तलिखितानपि जीर्यभूयो-

ग्रन्थान् प्रयत्नवशतोऽनुविष्टृत्य लब्धान् ।

श्रीदार्यवीर्यसुमगलमुखस्फुरच्छ्री-

राजाधिराज-हरिसिंहनृपानुशिष्या ॥ २ ॥

उच्चैःपदाधिकृतिमाजन-काकजाति-

श्रीरामचन्द्रविबुधाधिकृतिप्रबन्धे ।

संपाद्य हरि शिवनाथसहायभाजा

प्राकाशि शशास्त्रिहरमट्ट-विपश्चितेदम् ॥ ३ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ
परिशिष्टम् ।
ज्वालामुखीपञ्चाङ्गम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

गृणु देवि श्रवक्ष्यामि भैरवि' प्राणवल्लभे ।
ज्वालामुख्यास्तु सर्वस्वं पटलं देवदुर्लभम् ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवंत्सं हि सर्वस्य ज्ञाता शालस्य धूर्जटे ।
थुतानि तन्मुखाम्भोजाद् ग्रन्थानि' विविधानि च ॥ २ ॥
ज्वालामुख्या महामन्त्रं यन्त्रं पूजा विधानतः ।
लपाङ्गं वद मे नार्थं यद्यहं श्रेयसी तव ॥ ३ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

गृणु देवि मनुं यन्त्रं लपाङ्गं भैरवेश्वरि ।
प्रयोगसाधनं वक्ष्ये गोप्याद् गोप्यतरं मम ॥ ४ ॥
इदं विश्वमहो क्रूरं भक्तिहीनं महेश्वरि ।
एकदा हंसरूपेण मनुनाहं जगत्परम् ॥ ५ ॥
देवेशि सप्तमनिशं ज्वालामुख्याः प्रसादतः ।
ज्वालामुख्या तथा मन्त्रो वर्णितो नार्थमानतः ॥ ६ ॥
तदा प्रभृति तन्मन्त्राजगत्सावरजङ्गमम् ।
सृजामि संहरिष्यामि रक्षामि च दिवानिशम् ॥ ७ ॥

१ ' भैरवनाथ ' छ पाठः । २ ' तन्त्राणि ' छ. पाठः । ३ ' शीम ' पाठः ।

४ ' नाह ' छ पाठः ।

यस्या मन्त्रप्रभावेण प्राप्तमैश्वर्यमुत्तमम् ।
 ज्वालामुखी जगन्माता सैव स्यात् त्रिगुणात्मिका ॥ ८ ॥
 सत्त्वेन सृज्यते विश्वं रजसा चैव पान्यते ।
 तमसा जीर्यते' यस्या गुणत्रयप्रभावतः ॥ ९ ॥
 त्रिलोकजननी माता सैव मेऽपीष्टदेवता ।
 तस्या यन्त्रं च मन्त्रं च ध्यानं लयाङ्गसंयुतम् ॥ १० ॥
 प्रयोगान् परमेशानि शृणु त्वं सावधानतः ।
 तत्रादौ तु मनोद्धारं सर्वांगमविनिश्चितम् ॥ ११ ॥
 प्रवक्ष्यामि महादेवि न प्रकार्यं मुमुक्षुभिः ।
 आदौ प्रणवमुद्धृत्य मायां च कमलां तथा ॥ १२ ॥
 ज्वालामुखि ममेत्यत्र सर्वशत्रून् समुधरेत् ।
 भक्षय-द्वयमुद्धृत्य कूर्चं तुरगसंयुतम् ॥ १३ ॥
 ठद्वयेन समायुक्तो ज्वालामुख्या ह्ययं मनुः ।
 मन्त्रोऽयं परमेशानि कलावीप्सितदायकः ॥ १४ ॥
 ब्रह्माहत्या गुरोर्हत्या स्त्रीहत्याभक्षयभक्ष्यम् ।
 अगम्यगमनं पापं मातृ-स्वसृगमोद्भवम् ॥ १५ ॥
 तत् चालयति मन्त्रोऽयं देवि सत्यं न संशयः ।
 अधुना शृणु देवेशि यन्त्रोद्धारं परात्परम् ॥ १६ ॥
 भुक्तिदं मुक्तिदं गोप्यं गीतवादित्रतोषितम् ।
 आनन्दसुन्दरं स्तुत्यं यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ॥ १७ ॥
 मत्सर्वस्वं न देष्टव्यं सारात्सारोत्तमोत्तमम् ।
 आदौ पट्कोणमुद्धृत्य चोर्ध्वरेखां निकर्षयेत् ॥ १८ ॥
 अधोरेखां समाकृष्य पार्श्वाभ्यां च निकर्षयेत् ।
 अधोरेखां क्षिपेदूर्ध्वमूर्ध्वरेखां क्षिपेदधः ॥ १९ ॥

मध्ये कुर्यात् त्रिकोणैक न्यसेद्विन्दुं शिवालये ।
 मध्ये यत् तु त्रिकोणं स्यात् सुन्दरीभवनं स्मृतम् ॥ २० ॥
 ऊर्ध्वत्रिकोणमन्यत् स्वाद् दक्षिणाकालिकालयम् ।
 मध्ये त्रिकोणविन्दौ श्रीज्वालामुख्या मठालयम् ॥ २१ ॥
 ततो वृत्तैकमालिख्य लिखेदष्टारमुत्तमम् ।
 षोडशारं समुद्धृत्य वृत्तैकोपरि पार्वति ॥ २२ ॥
 वृत्तत्रयं पुनर्न्यस्य लिखेद् भूपुरकं पुनः ।
 ज्वालामुख्या इदं यत्र त्रैलोक्योदरणक्षमम् ॥ २३ ॥
 न देष्टव्योऽन्यशिष्येभ्यो दिष्ट्वा तु ब्रह्महा भवेत् ।
 लयाङ्गं शृणु देवेशि ब्रह्मविष्णुसमर्चितम् ॥ २४ ॥
 यध्वराजस्य देवेशि समासेन यथार्थतः ।
 गणेशो धर्मराजश्च बासुकिर्नरसिंहकः ॥ २५ ॥
 चतुर्दशरेषु संपूज्याश्चतारो द्वारपालकाः ।
 पूर्वे च गणनाथस्तु दक्षिणे धर्मराजकः ॥ २६ ॥
 पश्चिमे बासुकिः पूज्य उचरे नरसिंहकः ।
 ततोऽष्टद्वयपत्रेषु पूज्या ज्वालाश्च षोडश ॥ २७ ॥
 वामावर्तक्रमेण देवि नानापूजाफलं लभेत् ।
 वारुणी चैव वात्याली वाराही कुलसुन्दरी ॥ २८ ॥
 कूर्वेरी कुलिका कुण्ठी कुत्सिता कुटिला कुङ्कः ।
 कुन्ती कुम्भेश्वरी कुन्ता कृपरी कारुणी कृतिः ॥ २९ ॥
 इति षोडश ज्वालाः स्युस्तस्मास्तु सकलाङ्गणाः ।
 ततोऽष्टद्वयपत्रेषु पूज्या द्वाष्टौ तु कन्यकाः ॥ ३० ॥
 माया च मोहिनी चैव बाला च भगरूपिणी ।
 भगावासा च भीरुण्डा मृदानी चैन्दवेश्वरी ॥ ३१ ॥

अष्टौ कन्याः समाख्याताः संपूज्याश्चाष्टपत्रके ।
 ततस्तु ज्वालामुख्यास्तु सुखदा दश पार्वति ॥ ३२ ॥
 वामावर्तक्रमेणैव पूजासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 ब्राह्मी च शाम्भवी दुर्गा वाराही कुलकामिनी ॥ ३३ ॥
 नारसिंही च कौमारी मातङ्गी भद्रकालिका ।
 उग्रतारा समाख्याता ज्वालादशकला इमाः ॥ ३४ ॥
 संपूज्या दशपत्रेषु साधकैश्च सुसिद्धये ।
 तत ऊर्ध्वं समभ्यर्च्य देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ३५ ॥
 तन्मध्येऽधःस्थिता पूज्या देवी दक्षिणकालिका ।
 तन्मध्ये पूजनीया च देवी ज्वालामुखी तथा ॥ ३६ ॥
 ज्वलिनी जटिनी चैव जाती जालन्धरी तथा ।
 बिन्दौ त्रिकोणमध्यस्थे यन्त्रस्य परमेश्वरी ॥ ३७ ॥
 देव्याश्चायुधपूजां च कुर्याच्च चतुरश्रके ।
 यन्त्रमध्यस्थिते देवि चतुरश्रे विदिग्गते ॥ ३८ ॥
 अभयं वरदं पद्मं पाशं (शरं) संपूजयेत् सुधीः ।
 ईशानानुक्रमेणैव पूजयेदायुधांस्तथा ॥ ३९ ॥
 लयाङ्गमिति ते श्रोत्रं ध्यानं शृणु महेश्वरि ।
 ध्यात्वा देवीं महादेवि मन्त्री स्याद् भैरवोपमः ॥ ४० ॥
 ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
 ज्वालाढम्बरभूषितां सुवदनां नित्यामन्दश्यां जनैः ।
 पद्मक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजाभयान् विभ्रतीं
 चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥ ४१ ॥
 उद्यच्छीतकरांशुसंनिभमुखीमापीनतुङ्गस्तनीं
 सद्यः फुल्लसरोजपाशममलं वामे करे विभ्रतीम् ।

दत्तेऽभीतिवरौ त्रिवर्णतिलसद्गात्राङ्गवर्णि परा
 रुद्राब्जस्यत्रिकोणमध्यविगता ज्वालामुखीमाश्रये ॥ ४२ ॥
 शीताशुशुतिसन्निभां शशिकलानूडा त्रिनेत्रां शिवा
 द्विःपट्टारसरोजपीठविगतां माध्वीरसाधूर्णिताम् ।
 त्र्यर्णोद्भासितसर्वगात्रलतिका ज्वालादिकन्याकुली
 रज्यत्पादयुगां त्रिलोकजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥ ४३ ॥

इति ध्यानत्रयं प्रोक्तं तन्मन्त्रविनिश्चितम् ।
 प्रयोगान् शृणु देवेशि श्रुत्वा गोप्यतमान् कुरु ॥ ४४ ॥
 स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे तथा ।
 विद्वेषण वशीकारमुच्चाटनमतः परम् ॥ ४५ ॥
 मूर्त्तिकं शान्तिकं चैव पौष्टिकं परमाद्भुतम् ।
 शृणुश्चावहिता भूत्वा येन ज्वाला प्रसीदति ॥ ४६ ॥
 (१) रत्नायुत्थाय मुहूर्ते ब्राह्मे वा चार्धरात्रके ।
 गत्वा नदीतटं कुर्याद्यथा नैमित्तिकीं क्रियाम् ॥ ४७ ॥
 स्नानसन्ध्याधिधिं कुर्याज्जपमष्टोत्तरं चरेत् ।
 ज्वालादेव्या मनु जप्त्वा त्रजेत् प्रेतालयं ततः ॥ ४८ ॥
 तत आनीय देवेशि भस्ममुष्टिं च साधकः ।
 निखनेद् कुण्डमेकं तु त्रिकोणं साधकोत्तमः ॥ ४९ ॥
 भस्ममुष्टिं च तत्कुण्डे चित्वा होमं समाचरेत् ।
 घृतेन तिलतैलेन पायसेन सुरेश्वरि ॥ ५० ॥
 मूलेन चाचरेद्दोमं यावन्मायादिकं भवेत् ।
 तस्योपरि पतेद् दण्डमैषिकं परमेश्वरि ॥ ५१ ॥
 होमं समाप्तं देवेशि कुर्यात् कथं परं सुधीः ।

(२) अर्धरात्रे समुत्थाय भस्माननीयं च लेपयेत् ॥ ५२ ॥

अङ्गेषु साधको धीमांल्लाटे तिलकं चरेत् ।

प्रभाते तु व्रजेन्मन्त्री सभामध्ये सुरेश्वरि ॥ ५३ ॥

तस्य दर्शनमात्रेण इन्द्रो जीवः पितामहः ।

स्तम्भवाग्भगवान् विष्णुर्भविष्यति न संशयः ॥ ५४ ॥

(३) मङ्गलेऽहि समुत्थाय मध्याह्ने चार्धरात्रके ।

आनीय नूतनं कुम्भं पूरयेत् पयसा त्रिपे ॥ ५५ ॥

तस्मिन्मध्ये चरेत् पूजां ज्वालागुह्या महेश्वरि ।

मन्त्री दिनाष्टकं तावद् गन्धार्घ्यकुसुमैस्तथा ॥ ५६ ॥

प्राप्तेऽन्यमङ्गलदिने दद्यान्मन्त्री चलिं शुभम् ।

कुक्कुटं च महेशानि तद्रक्तं च घटे क्षिपेत् ॥ ५७ ॥

ततो मूलेन नैवेद्यं दत्त्वा स्नानं समाचरेत् ।

तेन कुम्भस्य नीरेण साधको मन्त्रसाधकः ॥ ५८ ॥

कर्मणा मनसा वाचा मोहयेद् भुवनत्रयम् ।

सर्वज्ञस्य भमाप्येप करिष्यत्यन्यथा ध्रुवर्ष ॥ ५९ ॥

(४) अन्यदा शनिवारे तु गत्वा प्रेतालयं शिवे ।

सशिवां देवतां ध्यात्वा कुर्यात् स्नानमनुत्तमम् ॥ ६० ॥

ततोऽष्टोत्तरवारैकशतमावर्त्य मालया ।

योपिन्मूर्तिं विधायैव त्यजेद्रेतः प्रयत्नतः ॥ ६१ ॥

रेतसश्चोपरि चौद्रं क्षिप्वा मद्यं क्षिपेत् सुधीः ।

स्तन्यं संचिप्य विश्वेशि गोमूत्रमुपरि क्षिपेत् ॥ ६२ ॥

नरमूत्रं च संचिप्य खरमूत्रं च निःक्षिपेत् ।

गजमूत्रं तथा मध्ये मीनमांसं महेश्वरि ॥ ६३ ॥

तिलतैलं च लवणमारणालसमन्वितम् ।

घटं संपूर्य क्षिपेत् साधकः प्रेतमन्दिरे ॥ ६४ ॥

भूमौ चित्वा चिरोन्नित्यं जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
 मासमेकं समुल्लङ्घ्य दत्त्वा माहिषिकं बलिम् ॥ ६५ ॥
 ततो विरचयेद्भोमं पायसेन च सर्पिषा ।
 तथा विरीकलं हुत्वा जुहुयाच्च हरीतकीम् ॥ ६६ ॥
 ततो मासे गते देवि साधको मन्त्रसाधकः ।
 घटं निष्कर्षयेद्भूमौ प्रणम्य शिरसा पुनः ॥ ६७ ॥
 जपेदेकसहस्रं तु मूलमन्त्रं यथार्थतः ।
 अर्धरात्रे रिपोर्नाम गृहीत्वा तु चतुष्पथे ॥ ६८ ॥
 कुम्भं च साधको भिन्द्यात् सद्यः शत्रुर्मरिष्यति ।
 (५) अधाकर्षणकं घट्टये मभाते गुरुवासरे ॥ ६९ ॥
 गत्वा रहःस्थलं देवि कुर्यान्नैमित्तिकीं क्रियाम् ।
 ततः क्षीरं समानीय माहिष्यस्तन्यमेव च ॥ ७० ॥
 एकीकृत्य चरेद्भोमं सर्पिषा पायसेन च ।
 कृत्वा चैव प्रियाभोगं रेतः क्षीरे विनिःक्षिपेत् ॥ ७१ ॥
 होमयेत् पुष्पसङ्घातं पीतं रक्तं च पाण्डुरम् ।
 अन्वेष्टुरथ देवेशि शीतलं भस्म चोदरेत् ॥ ७२ ॥
 योजयेद्भेतसा साकं क्षिपेन्मन्त्री चतुष्पथे ।
 उर्वशी स्वर्गसंस्थापि प्रातः प्रादुर्भविष्यति ॥ ७३ ॥
 (६) चन्द्रवारे समुत्थाय गत्वा प्रेतालयं सुधीः ।
 मध्याह्ने नूतनं कुम्भे क्षिपेद् भस्मास्त्रिसंश्रयम् ॥ ७४ ॥
 घटमाञ्जाद्य वस्त्रेण क्षिपेद् भूमौ च मान्त्रिकः ।
 जपेद् दिनाष्टकं यावद् मूलमन्त्रमनुसरन् ॥ ७५ ॥
 अष्टमे दिवसे प्राप्ते कुम्भमाठ्ठस्य मान्त्रिकः ।
 अर्धरात्रे रिपोर्दारि घटं तत् स्फोटयेच्चरैः ॥ ७६ ॥

पादप्रहारदशभिः शत्रोर्विद्वेषणं भवेत् ।

- (७) बुधवारे सुनक्षत्रे पञ्चगव्यं समानयेत् ॥ ७७ ॥
 लिङ्गा भूमिं त्रिकोणं तु कुण्डं लिख्य महामनुम् ।
 तन्मध्ये पूरयेद्यत्र होमयेन्मूलजाचरैः ॥ ७८ ॥
 बलिं दद्यात् विडालं च साधको मूलमन्त्रतः ।
 जपेत् सप्तसहस्रं तु साङ्गं च त्रिधियन्त्ररः ॥ ७९ ॥
 यस्य नाम च सङ्गृह्य स्त्रियो वा पुरुषस्य च ।
 सप्तचारं सुरेन्द्रोऽपि वशीभवति नान्यथा ॥ ८० ॥
 ब्रह्माद्या निर्जराः सर्वे रम्भाद्या ह्यप्सरोगणाः ।
 यक्षमायान्ति देवेशि मन्त्रस्यास्य प्रसादतः ॥ ८१ ॥
- (८) शनिवारे खरं कृष्णं वनं गत्वा निशीथके ।
 यत्र संपूज्य तस्याग्रे बलिं दद्यात् स्वमूलतः ॥ ८२ ॥
 जपं च दशसाहस्रं कृत्वा कुण्ड खनेत् पथि ।
 तद्रक्तं होमयेत् सर्पिः शत्रोर्नाम समुच्चरेत् ॥ ८३ ॥
 तेनैव सर्वरिपवः संक्षयं यान्त्यसंशयः ।
- (९) शुभेऽङ्गि शुभनक्षत्रे गत्वा सिन्धुतटे शुभे ॥ ८४ ॥
 मूलेनैवाचरेद्दोमं शमीपत्रैस्तु साधकः ।
 तन्त्यादिचीरखण्डाद्यैः सर्पिषा तद्दशांशतः ॥ ८५ ॥
 होमं संपाद्य देवेशि दद्यात् पूर्णाहुतिं ततः ।
 तस्माच्च जायते पुष्टिर्देवानामपि दुर्लभा ॥ ८६ ॥
 इदं पटलमाख्यातं ज्वालाया ह्युत्तम मया ।
 रहस्यं परमं देवि सर्वस्य सारमुत्तमम् ॥ ८७ ॥
 दुर्लभं त्रिदिने-देवि न दातव्यं हि कस्यचित् ।
 निन्दकाय च दुष्टाय द्वेषिणे भक्तिवर्जिते ।
 गोप्य गुप्ततमं भूमौ कलाविष्टफलप्रदम् ॥ ८८ ॥

इति श्रीसुन्दर्यामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
श्रीज्वालामुखीपटलम् ॥



अथ पूजापद्धतिः ।



अधुना देवि पश्यामि ज्वालापद्धतिमुत्तमाम् ।
गद्यपद्यमयीं गुह्यां कोटियज्ञफलप्रदाम् ॥ १ ॥
प्रातः कृत्यमकृत्वा तु श्रीज्वाला पूजयेत् तु यः ।
तस्य पूजा च विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥ २ ॥

प्रसन्नयदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं

सरोच्चिरासि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा प्रणाममन्त्रान् पठेत् ।

नमामि सद्गुरुं शान्तं मत्पत्तं शिवरूपिणम् ।

शिरसा योगपीठस्य मुक्तिकामार्थमिदये ॥ २ ॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम् ।

यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥ ३ ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्ते येन चराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः सावान्महेश्वरः ।

गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

नमस्ते नाथ भगवञ्छिवाय गुरुरूपिणे ।

विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ॥ ७ ॥

नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे ।

सर्वाज्ञानतमोभेदभानरे चिदनाम ते ॥ ८ ॥

स्वतन्त्राय दयावल्गुविग्रहाय परात्मने ।

परतन्त्राय भक्तानां भक्त्यानां भक्त्यरूपिणे ॥ ९ ॥

प्रकाशिना प्रकाशाय विवेकाय विवेकिनाम् ।

ज्ञानिना ज्ञानरूपाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ॥ १० ॥

पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।

सदा सच्चितरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥ ११ ॥

इति श्रीगुरु प्रणम्य , सुप्रसन्न विभाव्य मनसा तदाज्ञां गृहीत्वा ,

मूलाधारे स्वर्यवर्णचतुर्दलकमलकर्णिकान्तर्गतत्रिकोणचक्रान्तर्गतशृङ्गाट-
कोपरि परां शक्तिं कुण्डलिनीमुद्यद्दिनकरसद्वस्त्रभास्वरां विद्युत्कोटिस-
न्निभां सकलमन्त्रमातरं पञ्चाशद्वर्णविग्रहामष्टात्रिंशत्कतारूपिणीं सर्व-
प्राणिजीवां त्रिधामधामानं सर्पाकारामूर्ध्वमुखीं सार्धत्रिवलयां विस-
तन्तुतनीयसीं सुप्तां विभाज्य गुरुपादिष्टनिजसद्वज्रनादेन सचैतन्यां
विधाय, तत्र चतुर्दलेषु यं नमः, शं नमः, पं नमः, सं नमः
इति पत्रेषु प्रादक्षिण्येन मध्ये मूलेन च संपूज्य, हंसः इति मन्त्रेण
सर्वयोत्थाप्य, ततो विद्रुमवर्णं स्याद्यष्टाने सिङ्गमूले पद्मदलकमले
तां नीत्वा, तत्र यं नमः, भं नमः, मं नमः, यं नमः, रं नमः,
लं नमः, इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो मणिपूरके नाभौ
नीलवर्णं दशदलकमले तां नीत्वा तत्र हं नमः, ठं नमः, ऐं नमः,
तं नमः, थं नमः, दं नमः, धं नमः, नं नमः, पे नमः, फं नमः,
इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो बलस्यनादिते पिङ्गल-
वर्णं द्वादशदलकमले तां नीत्वा तत्र कं नमः, खं नमः, गं नमः,
घ नमः, ङं नमः, चं नमः, छं नमः, जं नमः, झं नमः, ञं नमः,
टं नमः, ठं नमः, इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो विशुद्धौ
कण्ठे धूम्रवर्णं योऽशदलकमले तां नीत्वा तत्र अं नमः, आं नमः,
इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋ नमः, ॠं नमः, लृ
नमः, ॡं नमः, एं नमः, ऐं नमः, औं नमः, ओं नमः, अं
नमः, अः नमः, इति पत्रेषु मध्ये मूलेन च संपूज्य, तत आढा-
चक्रे भूमध्ये विद्युद्वर्णं द्विदलकमले तां नीत्वा तत्र हं नमः, सं
नमः, इति पत्रयोर्मध्ये मूलेन च संपूज्य, ततो ब्रह्मरन्ध्रगतद्वाद-
शान्तधर्मं प्राप्य तत्र सद्वस्त्रकमलकर्णिकान्तर्गतविन्दुरूपतन्त्रोमय-
परमशिखेन सहकृतां नीत्वा, ततः क्षयता परमाप्नुतेन तां सन्तप्य
तत्र नादध्वजतत्परां मुहूर्ते लयं विभाव्य, ततोऽधरोहे सर्वत्र सोऽह-
मिति मन्त्रेण कमलात्कमलेऽधरोहमारागमाद्याचक्रादेरुक्तेषु तेषु तेषु
कमलेषु तैस्तैरक्षरैः संपूज्यमाना उत्तदाधार-तत्तद्धानु-तत्तद्वर्ण-तत्त-
दाधेदेवताः सन्तर्पयन्ती मूलाधारं प्राप्य तत्रैव स्वस्थाने संस्थाप-
येत् । इत्यारोहाधरोहक्रमेण परा शक्तिं कुण्डलिनीं ध्यात्वा

प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे भतिप्रयाणेऽप्यमृतावमानाम् ।

अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामगला प्रपद्ये ॥

शति स्तुत्वा ,

नाहमस्मि न चान्योऽस्ति ध्येयं चात्र न विद्यते ।

आनन्दपदसलीन मनः समरसीगतम् ॥

अह देवी न चान्योऽस्ति ब्रह्मनाहं न शोकभाक् ।

त्रिनेत्रमिन्दुर्धकिरीटरत्नं कल्पान्तसूर्यप्रभमिन्दुहासम् ।

वृषामनं शूलकपालहस्तं वन्दे महादेवमहं चिदीशम् ॥ १ ॥

ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां

ज्वालाढम्बरभूषितां सुवदनां नित्यमदृश्यां जनैः ।

पद्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजामयान् विभ्रतौ

चिद्रूपां सकलार्थदीपनकर्त्रीं ज्वालामुखीं नम्यहम् ॥ २ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैराराध्य, ओमिति सेतुं हृदि दशधा विन्यस्य,
स्त्रीमिति महासेतुं विद्युजौ सहस्रारे च दशधा विन्यस्य, ओंश्रमूलं
ऐंश्रमामित्यादि स्रः इत्यन्तम् । ओमिति मणिपूरके निर्घोषं दशधा
जपेत् । ततो मन्त्रसंस्कारं कुर्यात् । यथा " ओं ओं ज्वालामुखि मम
सर्वशत्रून् भक्षय २ हूं फद् स्वाहा ह्रीं " इति त्रिजपेत्, इत्युत्की-
लनम् । हूं ओं ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय २ स्वाहा, इति
त्रि-लक्षजपनम् । चंडंजं मूलं मंजं इति त्रिजपेत्, इति तौटिश्यम् ।
ओं ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि भैरवशापं मोक्षय २ हूं फद् स्वाहा, इति शाप-
हरीं दशधा जपेत् । ओं ह्रीं श्रीं कुरुकुलायै स्वाहा, इति कुरुकुलां
दशधा जपेत् । ओं ह्रीं श्रीं नमो ज्वालामुख्यस्त्राय वददद दुहिते हूं
फद् इत २ कीलान् स्वाहा ज्वालामुखीं ह्रीं स्वाहा, इत्यस्त्रमन्त्रं त्रि-
जपेत् । ओं मूलं ओं इत्यशौचद्वयनिराकरणार्थं सप्तधा जपेत् । ओं ज्वा-
लामुख्यै विद्महे ह्रीं जगद्धृतिव्यै धीमहि श्रीं तन्नो ज्वाले प्रचोद-
यात्, इति मूलगायत्रीं दशधा जप्त्वा, मालामावाय ओं मां माले
महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा
भवे ॥ ओं ह्रीं सिद्ध्यै नमः, इति मनसा गन्धादिना ता संपूज्य, ओं ग
अधिपं कुरु माले त्वं सर्वभावेषु सर्वदा । इति मनसा पूजिता वक्ष-
करेण मालामावाय शिरसि श्रीगुरु शुक्रार्ण कण्ठे स्वर्णवर्णा मूलविद्यां
हृदि धीपरदेवीं यथोक्तरूपा ध्यायन् यथाशक्ति जपं कृत्वा जपान्ते

तं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।

शुभं कुरु मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥

इति पठित्वा माला शिरसि संस्थाप्य, ओं ह्राह्रां महादेवाय नमः

इति भैरवमन्त्रं यथोक्तप्रतिधिना संजप्य, मूलं ससंपुटं त्रिजपत्वा पुन

रपि प्राणायामादिन्यासान् विधाय ,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्तत्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देवि तत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इत्यनेन तेजोमयं जपं श्रीदेवीवामहस्ते समर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः ।

यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम् ॥

इति निजरहस्यं समर्प्य , स्वकार्यानुष्ठानाय ,

त्रैलोक्यचैतन्यमपि मुरेशि श्रीज्वालिके त्वचरणाङ्गयैव ।

प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥

संसारयात्रामनुवर्तमानं ज्वालागुरि त्वचरणाङ्गपालम् ।

स्पर्धातिरस्कारकलिप्रमादभयानि मां माभिभवन्तु मातः ॥

जानाम्यधर्मं नच मे निवृत्तिर्जानामि धर्मं नच मे प्रवृत्तिः ।

त्वया हृषीकेशि हृदिस्थयाहं यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

इति श्रीदेव्याणां प्रार्थ्य , मूलाधारदिद्वादशान्तनक्रपर्यन्तस्थिताभ्यो

महागणपतिप्रभृतिदेवताभ्यः श्रीशुक्रपवेशपातं सहजलिङ्गमजपाजपं सह-

स्य समर्पयेत् । यथा अथ पूर्वेशुरहोरात्राचरितमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकं

पद्मशताधिकमेकविंशतिसहस्रसंख्याकमजपाजपं मूलाधार-स्थाधिष्ठान-

मणिपूरानाहत-विशुद्धाद्या-प्रहरणेषु चतुर्वल-पद्मदल-दशदल-द्वादशदल-

षोडशदल-द्विदल-सहस्रदलेषु स्वर्णविद्रुमनीलपिङ्गलधूम्रविद्युत्कर्तुरवर्णेषु

स्थिताभ्यो गणपतिब्रह्मविष्णुरुद्र-जीवात्मपरमात्मश्रीगुरुपादुकाभ्यो यथा

भागशः समर्पयामि , इति स्मृत्वा कृताञ्जलिन्यमेत् । यथा-ओँ ऐँ ह्रीँ श्रीँ

मूलाधारचक्रस्थाय श्रीगणपतये अजपाजपानां पद्मसहस्राणि

समर्पे ० । १ मणिपूरचक्रस्थाय विष्णवेऽजपाजपानां पद्मसहस्राणि सम-

र्पया ० । २ अनाहतचक्रस्थाय रद्रायाजपाजपानां पद्मसहस्राणि सम-

र्पया ० । ३ विशुद्धचक्रस्थाय जीवात्मनऽजपाजपानां सहस्रं समर्पया ० ।

४ आज्ञाचक्रस्थाय परमात्मनेऽजपाजपानां सहस्रं समर्पे ० । ५ सहस्र-

यत्कमलकणिकामभ्यवर्तिन्ये श्रीगुरुपादुकायै अञ्जपाजपाना सहस्र सम
पंपामि नम । इत्यञ्जपाजप समर्प्य, अञ्जपामन्त्रेण प्राणायामं कृत्वा
सकल्पं कुर्यात् । यथा—

ओंअस्य ओम्अञ्जपागायत्रीमन्त्रस्य, हस्रं श्रुयि, अथऋगायत्री-
छन्दः, ओम्परमात्मा परमहंसो देवता, ५ योज स शक्ति, सोऽह
कोलक, ओम्शरस्तत्त्व, उदात्त स्वर, नम स्थान, हैमो वर्णः,
मम मुक्तिसाधनार्थे अञ्जपाजपे विनियोगः । ॐ हस्रश्रुयै नमः
शिरसि । ॐ अथऋगायत्रीछन्दसे नमो मुखे । ॐ ओम्परमहंसदे-
यतायै नमो ह्रोदे । ॐ ह योजाय नमो गुह्ये । ॐ स शक्तये नमः
पादयोः । ॐ सोऽह कालकाय नमो नाभौ । ॐ ओम्कारतन्त्राय नमो
हृदये । ॐ उदात्तस्वराय नमः कण्ठे । ॐ नमसे स्थानाय नमो मूर्ध्नि ।
ॐ हैमाय वर्णाय नमः सर्वाङ्गेषु, इति विन्यस्य मम मोक्षार्थेऽञ्जपा-
जपे विनियोगः इति कृताञ्जलि पठत् । इति श्रुत्यादिभ्यासः । ॐ
इसा सूर्यात्मने स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इत्तो सोमात्मने स्वाहा
तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ इक्षु निरञ्जनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट् ।
ॐ इत्तै निरामासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हु । ॐ इत्ती अनन्ततनु
सूर्यादेवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां यौपद । ॐ इत्त अथऋ-
योधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एव इत्यादिभ्यासः ।
यतो ध्यानम्—

या मूर्धानं यस्य विशा नदन्ति त्वं वै नाभिं चन्द्रवर्षो च नेत्रे ।
दिग्भिः श्रोत्रे यस्य पादौ चितिश्रद्धातन्त्रोऽसौ सर्वभूतान्तरात्मा ॥
इति विराट्स्वरूपं स्वात्मानं ध्यात्वा तदनुसन्ध्यायेन प्राणवायोर्निगमप्रवे-
शात्मकमञ्जपामन्त्रं पञ्चविंशतिवारं जपत्वा समर्प्य, श्रीगुरुपादिष्टमार्गेण
नादानुसन्धानपूर्वकं निरस्तसमस्तोपाधिना केनापि विघ्निलासेन प्रवर्त-
मानोऽस्मीति विनाश्य स्वकार्यानुष्ठानाय

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ।

विष्णुपति नमस्तुभ्य पादस्पर्शं चमस्व मे ॥

दोभ्यां चामृतपूर्णहेमकलशं शुक्लावमालाम्बरां

गङ्गासिन्धुसरिद्धयादिसहितां श्रीतीर्थशक्तिं भजे ॥

इति ध्यात्वा योनिमुद्रया मूलेन तज्जलमष्टधाभिमन्त्र्य ह्रीमित्यालोच्य ,
वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य , ओं आत्मतत्त्वाय नमः , ओं विद्यातत्त्वाय
नमः ओं शिवतत्त्वाय नमः , इति तत्त्वत्रयं जले विन्यस्य तेन निज-
शिरास्त्रिः प्रोक्ष्य , एकां मुद्रं जले लिप्त्वा द्वितां यमूदाङ्गानि संशोध्य
तृतीयां गृहीत्वा देवतावाहनं कुर्यात् । यथा—

ज्वालामुखि शिवारूढे ओं ह्रीं श्रीं बीजत्रयान्विते ।

परिवारयुते देवि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इति तृतीयया मूदा देवतामावाह्य तत्र जले यन्त्रं विभाव्य , ओं ह्रीं श्रीं
ज्वालामुखि मम शत्रुनृत्तारय २ , इति ज्वालामुखां त्रिरभिषिच्य ,
मूलेन स्वात्मानं पूर्ववत् त्रिराचम्य मूलं स्मरन् श्रवणादिसप्त-
चिह्नद्राणि निरुध्य त्रिनिर्मग्नयोन्मज्जेत् । ततः ' ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय एव
ते जलाञ्जलिः ' इति सूर्याय जलाञ्जलिं दत्त्वा त्रिराचम्य स्वशिरो
मूलेन सप्तधाभ्युक्ष्य दशधा मूलं सञ्चप्य , जलात्तीरमादह्य धीते
वाससीं परिधाप्य मूलेन त्रिपुण्ड्रमूर्ध्वपुण्ड्रं वा तिलकं कुर्यात् ।
इति ज्ञानविधिः ।

ततः प्रथमं धैरिर्कीं संभ्यां कृत्वा तान्त्रिकीमारभेत । यथा—पूर्व-
वदाचम्य प्राणायामध्यादिकरणदङ्गन्यासान् विधाय स्वपुरतस्तीर्थजलं
धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य तेन जलेन " ओं नमः " ,
इत्यादि " ह्रीं नमः " इत्यन्तं मातृकया स्वशिरोः प्रोक्ष्य , मूलेन च
त्रिः संशोध्य धामदस्ते जलमादाय दक्षदस्तेनाच्छाद्य , लंबेरंयदं इति
पाञ्चमौतिकैर्मन्त्रैः सप्तधाभिमन्त्र्य , मूलेन च त्रिरभिमन्त्र्य तज्जलावि-
शुभिस्तत्त्वमुद्रया मूलेन च स्वशिरास्त्रिः प्रोक्ष्यावशिष्टजलं दक्षदस्ते
निधाय , तेजोरूपं तज्जलमिडयाकृत्य स्वदेहान्तःस्थितं सकलकलुषं
प्रक्षाल्य , तज्जलं कृष्णयज्ञं पिबन्तया घटिर्निर्गतं मत्वा , पुनर्धामदस्ते
कृत्या स्वयामभागे ज्वलद्गुण्डिता ध्यात्वा " ओं श्रीं पशुहृ फद् " ,
इति पाशुपतास्त्रमन्त्रेण तस्यां शिलायामास्फालयेत् । मूलेन जलमा-
दाय प्रवदजात्या सदसदलपरंमामृतेनैकीभूतं विभाव्य निर्गमय

तेन जलेन " ओंअमृतमालिन्यै स्वाहा " इति कुशैः स्वशिरस्त्रिः प्रोक्ष्य,
 आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, एवं विद्यातत्त्वं०, शिवतत्त्वं०, शिव-
 तत्त्वं०, विद्यातत्त्वं०, आत्मतत्त्वं०, मूलं सर्वतत्त्वं शोधयामि० इति
 च त्रिराचम्य, एवं नवधाचम्य जलमञ्जलिनादायोत्थाय " ओंद्वाहो
 हंसः श्रीमातर्गण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं पारिकल्पयामि
 स्वाहा " इति कुलसूर्याय त्रिरर्घ्यं दत्त्वा, ततो हृत्पद्मात् सूर्यमण्डले
 मूलदेवीं नीत्वा तत्र विधिवद् ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य, ओं
 ज्वालारूपिण्यै विश्वे जगद्भक्षिण्यै धीमहि तन्नो ज्वाले प्रचोदयात् ।
 अनया मूलगायत्र्या चतसृषु सन्ध्यासु श्रीदेव्यै अर्घ्यघ्नं दत्त्वा
 गायत्रीं मूलं यथाशक्ति जप्या पुनरपि प्राणायामर्ध्यादिकरपङ्क्त्यासात्
 विधाय गुह्येति तर्पणं जपफलं च समर्प्य हृत्कमले श्रीदेवीं समानीय
 तीर्थं विस्तृजेत् । इति सन्ध्याविधिः ॥ इत्थं सन्ध्याचतुष्टयं कृत्वा
 श्रीदेवीरूपः साधकः स्यात्, तस्मात् सन्ध्याचतुष्टयमवश्यं कर्तव्यम् ।
 अथवा केवलां प्रातः सन्ध्यामेव कुर्यात् तां न संत्यजेदिति शिव-
 शासनम् ॥

ततस्तर्पणं विदध्यात् । तीर्थं पूर्ववदावाह्य मूलेनामृतमुद्रया चामृतं
 तीकृत्य, तत्र जले यन्त्रं ध्यात्वा तत्र देवीं हृदयात् सपरिवारामा-
 नीय पङ्क्तेन सकलीकृत्य, कुण्डलिनीप्रयोगेणासृतेनाभिपिच्य विधिवत्
 प्रपूज्य, पेशान्यां ॐ श्रीमच्छ्रीगुरुमुक्तानन्दनाथभैरवस्तृप्यतां इति त्रिः
 सन्तर्प्य, षड्भौ ॐ परमगुरुस्तृप्यतां, नैऋत्यां ॐ परमाचार्यगुरु०,
 वायव्ये ॐ परमेष्ठिगुरुः०, इति त्रिः सकृद्वा सन्तर्प्य, दिव्यौघ-सि-
 ङ्घौघ-मानयौघगुरुवस्तृप्यन्ताम् । ततो विन्दौ मूलं धीमहादेयभैरव-
 सहिता सपरिवारा सवाहना सायुधा समुद्रा श्रीज्वालामुखांदेवी
 तृप्यताम् । ह्रीं अखण्डभूतलभूर्भुवःस्वधारिण्यो योगिन्यो मातर-
 स्तृप्यन्ताम् इति सन्तर्प्य, पुनर्विन्दौ श्रीदेवीं सन्तर्प्य हृदि समानीय,
 तीर्थानि स्वस्थाने विस्तृज्य पुनरपि प्राणायामादि कृत्वा, मूलेन जल-
 पूर्णं कमण्डलुं गृहीत्वा मूलं स्मरन् यागगेहं प्रविशेत् । तत्र द्वार-
 देवता जलादिना पूजयेत् । यथा—गं गणपतये नमः चामशाखायां,
 धं भर्माय नमः दाक्षिणस्यां, न्तूं वासुकये नमः ऊर्ध्वे, नरसिंहाय

नमः अधः, उँसुमुख्यै नमः चामायां, ह्रीं सत्ये नमः दक्षिणस्यां,
धौ उमायै नमः ऊर्ध्वे, ह्रीं देहस्यै नमः अधः, ह्रीं अलिन्दायै
नमः, उँह्रीं ज्वालिन्दायै नमः, उँह्रीं द्वारिधायै नमः इति संपूज्य,
ओं वास्तुपुरुषाय नमः इति मध्ये । ततो धामाङ्गसङ्कोचेनान्तः प्रविश्य
मूलेन यागभूमिं संवीक्ष्य, तत्रासनमास्तोत्रोपासनशोधनं कुर्यात् ।
यथा—अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं वृन्दः, कुर्मो
देवता, आसनशोधने विनियोगः । मेरुपृष्ठश्रृण्वे नमः शिरसि,
सुतलच्छन्दसे नमो मुखे, कूर्माय देवतायै नमो हृदि, आसनशो-
धने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । उँग्रौ पृथ्वि स्यया धृता० इति
भूमिं प्राश्य, मण्डूकाय नमः, कालाभिरुद्राय नमः, ह्रीं आधाराश-
क्तिकमलासनाय नमः, ह्रीं पीठासनाय नमः, इत्यासनं संपूज्य,
तदुपरि समुपविश्य, संविदं यथामन्त्रं स्वीकुर्यात् ।

संविदे ब्रह्मसंभूते ब्रह्मपुत्रि सदानये ।

ब्राह्मणानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा मय सर्वदा ॥

उँब्राह्मण्यै नमः स्वाहा । उँ सिद्धिमूलकरे' देवि क्षीनबोधप्रबोधिनि ।
राजपूजाधिशङ्करि शत्रुपक्षानिच्छिनि ॥ ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा । ब्रह्मने-
न्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निप्रसररूपिणि । आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं' सभ्यगृहानं
प्रयच्छ मे ॥ ह्रीं रीश्यायै नमः स्वाहा । नमस्यामि नमस्यामि योग-
मार्गप्रदर्शिनि । त्रैलोक्यपवित्रये मातः समाधिफलदा भव ॥ ह्रीं
शुद्धायै नमः स्वाहा । उँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय २
सिद्धिं देहि २ धीग्बालामुलीपदं मे वक्ष्यमानय २ स्वाहा, इति तदुपरि
मूलं च सप्तधा सञ्जप्य योनिमुद्रयामृतीकृत्य, आगच्छागच्छ संतिष्ठ २
संनिधत्स्व २ संनिरुद्धा भव २ संनिधेहि २ सर्वापचारसादृतां पूजां
गृह्ण २ स्वाहा, इति मुद्राः प्रदर्श्य, च्छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धन विधाय,
धीगुरुपादुकाविधया स्वशिरसि धीगुरुपरम्परां सप्तधा विधा वा
सन्तर्प्य मूलेन स्वहृदि धीदेवीं सायुधां सवाहनां सपरिवारां सशियां
सन्तर्प्य, ऐं वदवद वाग्वादिनि मम जिह्वामे स्थिराभव सर्वसत्त्वध-
शङ्करि स्वाहा, इत्यनेन मुखे जुहुयात् । तत आनन्दमयो भूत्वा ।

प्राग्निशब्दं जपेस्तदुद्भवाभूतधारया निष्पापं शरीरमुत्पाद्य , ललाट-
स्थ-लमिति पृथ्वाधीजेन पीतवर्णेन सुवृद्धीकृत्य , ह्रीमिति मूलस्थयी-
जेन सैश्वर्ये सोहामिति मन्त्रेण कुण्डलिनीमभूतलोलीभूतां पञ्चभूतानि
जीयात्मानं च ब्रह्मपथे स्वस्वस्थाने संयोजयेत् । इति भूतशुद्धिः ॥

ततो देवीरूपमात्मानं विचिन्त्य हृदि हस्तं निधाय प्राणप्रतिष्ठां
कुर्यात् । यथा—ओंआर्होको यरंलवं-शंपंसदं-जंलं हंसः सोहं मम प्राणा
इह प्राणाः , १८ मम जीव इह स्थितः , १८ मम सर्वेन्द्रियाणि इह
स्थितानि , १८ मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं
चिरं तिष्ठन्तु स्याद्वा । इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय , स्वमूल-ऋष्यादि-
स्मरणं कुर्यात् । यथा—

ओं अस्य श्रीज्वालामुखीमन्त्रराजस्य श्रीवैश्वानर ऋषिः , अनु-
ष्टुप् छन्दः , श्रीमद्दैतकपिणी ज्वालामुखी देवता , ह्रीं बीजं , श्रीं शक्तिः ,
ह्रं कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे विनियोगः , इति कृताञ्जलिर्व-
देत् । वैश्वानरऋषये नमः शिरसि , अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे , ज्वाला-
मुखीदेवतायै नमो हृदि , ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये , श्रीं शक्तये नमः
पादयोः , ह्रं कीलकाय नमो नाभौ , उपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ।
ओंह्रांश्च अङ्गुष्ठाभ्यां नमः , ह्रींर्थां तर्जनीं० , त्रूंश्च मध्यमां० , ह्रूंश्च
अनामिकां० , ह्रींर्थां कनिष्ठिं० , हःश्च करतलं० । एवं हृदयादिन्यासः ॥
ओंह्रींर्थां नमः शिरसि , ज्वालामुखि हृदि , मम सर्वशत्रूं नमो नाभौ , भक्षय २
लिङ्गे , ह्रं गुह्ये , फट् स्वाहा नमः सर्वाङ्गेषु । इति मन्त्रन्यासः ॥

अथ समन्त्रमातृकान्यासः । ओंअंकंखंयंयंउं नमः शिरसि , पं
आं चं ५ ह्रीं ललाटे ईं टं ५ श्रीं नेत्रयोः , ईं तं ५ ज्वां मुखे , उं प
५ लां कण्ठे , ऊं यं मुं स्कन्धयोः , ऋं रं लिं पाणयोः , ऋं लं मम
स्तनयोः , लं यं सर्वं हृदि , लं यं शत्रूं कुक्षौ , ऐं यं भक्षय पार्श्वयोः ,
ऐं सं भक्षय नाभां . ओं हं हृ लिङ्गे , ओं लं फट् गुह्ये , अं अः लं
स्याद्वा नमः पादयोः । इति समन्त्रमातृकान्यासः ॥

अथान्तर्मातृकान्यासः । तत्र स्वरेः पुरकः , वादिमान्तैः कुम्भकः ,
यादिभी रेचकः । ओंअस्य श्रीअन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः ,
गायत्री छन्दः , श्रीअन्तर्मातृकासरस्वती देवता , इतो बीजानि , स्वराः
शक्तयः , अव्यक्त कीलकं न्यासे विनियोगः इति कृताञ्जलिं स्मृत्वा

न्यसेत् । ब्रह्ममृष्ये शि० , गायत्रीजुन्दसे मुखे , अन्तर्मातृकासरस्वती-
 देवतायै हृदि , हृन्व्यो वीजेभ्यो गुह्ये , स्वरेभ्यः शक्तिभ्यः पादयोः ,
 अन्यकलीलकाय नाभौ , न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु , इति
 मृत्यादिन्यासः ॥ ओं ऐं ह्रीं श्रीं अंकं ५ आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । एवं ४ ईं च
 ५ ईं तर्ज० , ४ उं टं ५ ऊं मध्यमा० , ४ एं तं ५ ए अनामिका० , ४
 ओं ५ औ कनिष्ठिका० , ४ अं यं १० अः करतलपृष्ठाभ्यां । एवं
 हृदादिन्यासः ॥ ततो ध्यानम्—

शुद्धस्फटिकसङ्काशां शुद्धचौमविराजिताम् ।

मुक्ताकरजस्फुरद्गुणां जपमालां कमण्डलुम् ॥

पुस्तकं वरदानं च विभ्रतीं परमेश्वरीम् ।

एवं ध्यात्वा हृदम्भोजे मातृकां विन्यसेत् तुधीः ॥

इति ध्यात्वा न्यासं कुर्यात् । अ १६ कण्ठे , कं १२ अनाहते , उं १०
 नाभौ , यं ६ स्वाधिष्ठाने , यं ४ मूलाधारे , ङङं भूमध्ये , इत्यन्तर्मा-
 तृका । ततो यद्विर्मातृकान्यासं यथाङ्गं कुर्यात् ।

ततस्तत्त्वन्यासः । मूलं आत्मतत्त्वाय स्वाहा पादादिनाभ्यन्तम् ।
 मू० त्रिधातत्त्वा० नाभ्यादिभूमध्यपर्यन्तम् । मू० शिवतत्त्वा० आक्षा-
 दिशिरोऽन्तम् । मू० सर्वतत्त्वेभ्यः स्वाहा सर्वाङ्गेषु । इति तत्त्वन्या-
 सः ॥ अथ मूलमन्त्रन्यासः । ओं नमो मस्तके ह्रीं ललाटे , श्रीं भूमध्ये ,

ष्वां नासिकायां, लां नेत्रयोः, मु मुखे, खि कण्ठे, मं स्कन्धयोः,
मं स्तनयोः, सं वक्षसि, घं कुक्षौ, शं पार्श्वयोः, वृन् नाभौ,
मं लिङ्गे, लं पृष्ठे, यं कट्थं, भं गुदे, लं मेढ्रे, यं ऊर्ध्वोः,
हं जात्रुनोः, फट् जङ्घयोः, स्वां गुल्फयोः, दां पादयोः, मूलं सर्वा-
ङ्गेषु । इति मूलमन्त्रन्यासः ॥

अथ वैवतन्यासः । ओं ह्रीं मायादेव्यै वादणीवात्सलीसहितायै
नमो मस्तके । ह्रीं मोहिग्र्यै श्रीवापहीकुलसुन्दरीसहितायै नमो मुपे ।
ह्रीं बालादेव्यै श्रीकृषरीकौलिनीसहितायै नमो हृदि । श्रीं भगवति-
रिदेव्यै श्रीकुण्डीकुत्सितासहितायै नमः कुक्षौ । ह्रीं भगवासादेव्यै
श्रीकुटिलाकुहसाहितायै नमो नाभौ । ह्रीं भेरुहादेव्यै श्रीकुन्ताकुम्भे-
भ्यरीसहितायै नमो गुल्फे । ह्रीं मृशनीदेव्यै श्रीकुन्ताकृचरीसहितायै
नमो गुल्फयोः । श्रीं ह्रीं यन्त्रेभ्यरीदेव्यै श्रीकारुणिकृत्तिसहितायै नमः
पादयोः । इति वैवतन्यासः ॥

पूषण्डृष्यादिन्यासे ? पीठन्यासे कुर्यात् । यथा—मण्डूकाय नमो मूला-
धोर, कालामित्रद्राय नमः स्वाधिष्ठानि । आधारशक्ये नमो मणिपूरके ।
प्रहृत्यै नमो हृदये । कमठाय० शेषाय० मुधाखेवासनाय० पृथिव्यै०
इन्द्रमुद्राय० मोदिरासमुद्राय० घृतसमुद्राय० दुग्धसमुद्राय० दक्षांसं,
धर्माय० यामांसं, ज्ञानाय० यामोरी, यैराग्याय० दक्षोरी, ऐश्वर्याय०
मूष, अधर्माय० धामपार्श्वे, अज्ञानाय० नाभौ, अयैराग्याय० दक्ष-
पार्श्वे, अर्नभर्याय० हृदि । पुनर्हृदि—मायार्य० विद्यार्य० अनन्ताय०
धर्माय० आनन्दकन्दाय० संविद्राताय० प्रकृतिमयपद्मभ्यो० पिङ्गति-
मयकेतवेभ्यो० पञ्चाशद्वर्णपीताम्बुनयैतत्परुषार्यै कर्णिकार्यै० अं अक्षं-
मण्डलाय० सौ सोममण्डलाय० र यद्विमण्डलाय० आ आत्मन० अ
अन्तरात्मन० पं परमात्मन० ह्रीं ज्ञानात्मन० ह्रीं पीतात्मनाय० ह्रीं वद्
वशात्मनाय० ओं हृद् मद्भक्षदक्षकमलकर्णिकार्यै० ह्रीं श्यामात्मनाय० ॥ पद्मा-
त्मनाय० ह्रीं श्यामात्मनाय० ह्रीं येशात्मनाय० ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् स्याद्वा कृत्वा-
ज्जपोद्राय नमः इति पीठन्यासं कृत्वा, तत्रैव स्यामन्त्रेन ओम्शालामु-
खांशयोः श्यामन्त्रं । यथा—

श्यालापर्यन्तमन्त्रिना विनयना पीठप्रथापिष्टिना

ज्जालाट्भगभृश्रिनां गुरदना नित्यामङ्ग्यां जनैः ।

पद्चक्राम्बुजमध्यगां वरशराम्भोजामयान् विभ्रतीं

चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥

इति हृत्कमले श्रीदेवीं ध्यात्वा, स्वैक्येन विमान्य मूलविधया स्वशि-
रसि पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, पुनर्हृदयकमले यथोक्तरूपां देवीं साक्षां साव-
रणां सशिवां ध्यात्वा, वक्ष्यमाणप्रकारेण पीठपूजापूर्वकं मानसैरुप-
चारैः संपूज्य नैवेद्यं दत्त्वा भोजनावसरेऽन्तर्वैश्वदेवं कुर्यात् । तत्र
मूलाधारे आरमान्तरात्मपरमात्मज्ञानात्मेत्यात्मचतुष्टयं सत्त्वतुरश्रं कुण्ड-
लिन्यग्निसमुज्ज्वलं कुण्डं ध्यात्वा, तत्र श्रीपरदेवतां ध्यात्वा तन्मुखे
मूलान्ते "अहन्तां जुहोमि स्वाहा" इत्यमहन्तासत्यपैशुन्यकामक्रोध-
लोभमोहमदमात्सर्याणि सुपुञ्जाबुद्धसक्लमन-स्त्वैष्य प्रत्येकं हुत्वा, धर्मा-
धर्मद्विविधे स्वात्माग्नौ मनसा बुद्ध्या । सुपुञ्जावर्त्मना नित्यमक्षु-
ब्धीर्जुहोम्यहम् स्वाहा ॥ प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीबुधम् ।
धर्माधर्मकलाक्षेहपूर्णां वद्धा जुहोम्यहम् स्वाहा ॥ इति हुत्वा, अथवा—

अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमाने

मायान्धकारपरिपन्थिनि मंविदप्रौ ।

कस्यांचिदद्भुतविकासिमरीचिभूमौ

विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्, स्वाहा ॥

इति हुत्वा, पुनर्हृदयकमले श्रीदेवीं ध्यात्वा, उत्तरायेशानादि-
सर्वापचारैराराध्य, मूल यथाशक्ति जपित्वा, प्राणायामादिना जपे
समर्प्य र्धागुरु प्रणम्य स्वदेहं गन्धादिना संभूष्य मनसा यथाशक्ति
जपहोमादिकं च कृत्वा, स्वशरीरं कामकलारूपं ध्यायन् स्वदेहं पूजा-
योग्यं कृत्वा सामान्यार्प्यं कुर्यात् । तत्र स्वदेहे त्रिकोणवृत्तादिभ्य
चक्रं विधाय, तत्र "आधारशक्तये नमः" इति संपूज्य तदुपरि
त्रिपादिकां संस्थाप्य 'रचद्विमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्य,
तत्र अस्त्राय फडिति चालितपात्रं शङ्खादिकं वा संस्थाप्य, ("अ सूर्य-
मण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः" इति संपूज्य शुद्धजलेन तत्प्राप्रमाप्य
'सा साममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति संपूज्य,) तत्र
"गङ्गा च यमुन चैव इत्यादिना तीर्थान्वावाह्य गन्धाक्षतपुष्पाणि नि क्षि-
पेत् । एष सूर्यसोमकला- संपूज्य घेनुमुद्रा प्रदर्शयन्निनि सामान्याभ्यंविधिः ॥

ततः स्वचामे पदकोणान्तर्गतत्रिकोणद्वयविन्दुं बाह्यवृत्तविम्बं मण्डल
विरचय्य, तत्र “मण्डूकाय नमः” इत्यादिपाठपूजाक्रमेण पाठपूजामा-
रभेत् । ततो नमः इत्याधार प्रक्षाल्य मण्डलोपरि सस्थाप्य “र
चद्विमण्डलाय दशकलात्मने नमः” इति संपूज्य, फडिति कलश
प्रक्षाल्य कारणेन प्रपूर्य रक्तवस्त्रमाद्यादिना समूष्य श्रीदेवीबुद्ध्या
सस्थाप्य “अ अक्रमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः” इति कलशं
संपूज्य, “सो चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः” इति द्रव्य
संपूज्य, फडिति सरस्व्य ह्रिमिलयगुरुर्य मूलेन सर्वाङ्ग मूलेन गन्ध-
माघ्राय, कुम्भे पुष्प वस्त्रा शोभोचन कुपात् । यथा—

ॐ एकमेव पर ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।

कचोद्भवा ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्पहम् ॥ १ ॥

ॐ सूर्यमण्डलमभूते वरुणालयसभवे ।

अमावीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम् ॥ २ ॥

ॐ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमय यदि ।

तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ ३ ॥

इति त्रि. , ततो धा वाँ वू ये योँ ध प्रक्षयापमोयिताये सुरादेव्यै नमः
इति त्रि. , ह्रीं श्रीं प्रा क्रीं नू क्र को कं कृष्णशोभ मोचय २ अमृतं
आवय स्वावय स्वाहा इत्यपि त्रि. पठित्वा । ॐ ह्रीं नमस्तेजोराशेऽ-
शेषसंश्रद्धादिनि मयूरमुखि अमोघसिद्धिदायिनि महोत्साहानिमित्ते कपा
लिनि यर्ध २ रङ्ग २ समय मे प्रयच्छ २ रुद्रोद्भुरासवे शुभशोभनिकृ
न्तनि ब्रह्महत्याहरे ह्रीं इ ला लू फट् फट् स्वाहा, इति शुक्रशापहरीविद्या
दशधा जपेत् । आ हस शुचिपद्मसुरन्तरिक्षसद्गोता वेदिपदतिथिदुरा-
णसत् नृपद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गाजा ऋतजा अट्टिजा ऋतम् ॥
इत्यपि त्रि पठेत् । तत आनन्दमैरव सुरादेवीं च ध्यायेत् । यथा—

सूर्यकोटिप्रतीकाश चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।

अष्टादशभुजं देव पञ्चयक्त त्रिलोचनम् ॥ १ ॥

अमृतार्थमभयस्य ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम् ।

उपावृद्ध नीलमण्ड सराभरणभूषितम् ॥ २ ॥

कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाढमरुवादिनम् ।

पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसलधारिणम् ॥ ३ ॥

खड्गखेटकपट्टीश-मुद्गरशूलकुन्तिनम् ।

विचित्रखेटकं मुण्डवरदाभयपाणिकम् ॥ ४ ॥

लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ।

दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं कुम्भे जपेदानन्दभैरवम् ॥ ५ ॥

इत्यानन्वभैरव ध्यात्वा सुरादेवीं ध्यायेत् । यथा—

समुद्रे मध्यमाने तु चीराब्धौ सागरोत्तमे ।

तत्रोत्पन्ना सुरादेवी कुमारीरूपधारिणी ॥ ६ ॥

भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्यवुत्तप्रभाम् ।

हिमकुन्देन्दुधवला पञ्चवक्त्रा त्रिलोचनाम् ॥ ७ ॥

अष्टादशभुजैर्युक्ता सर्वानन्दकरोद्यताम् ।

प्रहसन्तीं निशालार्चीं देवदेवस्य समुत्तीम् ॥ ८ ॥

इति सुरादेवीं ध्यात्वा " हसरत्नमलययुक्त आनन्दभैरवाय घोषद् , सहस्रमलवरयुक्त सुरादेव्यै वौषद् " इति देवदेव्यौ त्रि सपूज्य , दशधा मूल सजप्य , दक्षिणावर्तेन त्रिपङ्क्तया अ १६ क १६ य १६ इत्य कथाविशक्तिचक्र विलिख्य , त-मध्ये हस्त च सालिख्य , एतन्ममाये-शाद् द्रव्यमध्येऽमृत विचिन्त्य , धेनुमुद्रयामृतीकृत्य यमिति सुधा-पीज मूलमप्यष्टधा घट धृत्वा पठित्वा , आत्मधीचक्रयोर्मध्ये त्रिकोण-पदकोणवृत्तचतुरस्र विलिख्य , चतुरस्रे -ॐ पूर्णगिरिपीठाय नम , ॐ उब्झीयाणपीठाय नम , ॐ कामरूपपीठाय नम , ॐ जाल-धरपीठाय नम इति सपूज्य , पङ्क्तन पदकोण प्रपूज्य , त्रिकोणस्याग्र ओं नम इक्षे ह्रीं नम वामे श्रीं नम , इति त्रिकोण सपूज्य , मध्ये ओं ह्रीं आधारशक्त्य नम इति सपूज्य , त्रिकोणगर्भ पदकोणभूषिता यन्त्रिका सस्याप्य सामान्यार्ध्यजलनाभ्युष्य पूजयेत् । यथा—य धूम्राविष्य नम , १ ऊर्ध्वायं० लज्जालिन्त्यं० , य ज्वालिन्यं० ॥ विष्णुलिङ्गै० , ५ सुधिये० स मूरुपायं० इ कपिलायं० , छ ह-यवादायं० , स

कव्यवाहाये नमः, इति संपूज्य, मध्ये "रं वह्निमण्डलाय दशकला-
त्मने नमः" इति संपूज्य, षट्कोणे षडङ्गं च संपूज्य, मध्ये मूलेन
देवीं संपूज्य, इहं ब्रह्माण्डचक्राय फट् स्वाहा, इति नारिकेलपात्रं
प्रक्षाल्य, यन्त्रिकोपरि संस्थाप्य, तत्र—ऊं तपिन्यै नमः, खं
तापिन्यै०, गं धूम्रायै०, घं मरीच्यै०, ङं ज्वलिन्यै०, चं
वच्यै०, छं सुपुत्रायै०, जं भोगदायै०, झं विश्वायै०, ञं
बोधिन्त्यै०, टं क्षमायै०, ठं धारिण्यै नमः, अ अकर्मण्डलाय
द्वापकलात्मने नमः इति संपूज्य, त्रिकोणं षट्कोणं सचतुरक्षं पात्रे
विलिख्य बीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य, षडङ्गं षट्कोणं संपूज्य, ततो
विलोममामृकां षट्पद्मतेन त्रिकोणं प्रपूयं जलेन च भागमेकं संपूयं
तत्र सुगन्धादि निक्षिप्य, अं अमृतायै नमः, आं मानदायै, इ
पूषायै, ईं तुष्यै, उं पुष्यै, ऊं रत्यै, ऋ धृत्यै, ॠ शशिन्यै,
लं चन्द्रिकायै, लृं कान्त्यै, एं ज्योत्स्नायै, ऐं धियै, औं प्रीत्यै,
अं ब्रह्मदायै, अं पूर्णायै, आः पूर्णामृतायै, सौं षोडशकलात्मने
सोमण्डलाय नमः इति संपूज्य, पूर्ववद् द्रव्ये यन्त्रं विलिख्य,
बीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य, षडङ्गं षट्कोणं संपूज्य, गङ्गात्पादिना
तीर्थमावाह्य आनन्दमैरवभैरव्यां स्वस्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वं ग्लू नाग-
नरलेभ्यो नमः । वत्से स्तू स्वर्गरलेभ्यो नमः । उत्तरे स्तू मर्त्यर-
लेभ्यो नमः । पश्चिमे स्तू पातालरतेभ्यो नमः । मध्ये स्तू नागर-
लेभ्यो नमः । इति संपूज्य, मांसादिकं संशोषयेत् । यथा—तत्र
स्थात्रे चतुरक्षं विधाय तत्र मांसादिपात्रं संस्थाप्य, यमिति संशोष्य,
रमिति सन्ध्या, यमित्यमृतेनास्नाय, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, मूलं तदु-
परि दशधा प्रजप्य, क्रमेण शोषयेत् । यथा—ओं प्र तद्विष्णु, स्तपते
धीरेण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्यारूपे त्रिषु विक्रमण-
प्यधित्तियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ इति द्वितीयशोधनम् । ओं त्र्यम्बरं
यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बधनामृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् ॥ इति मीनशोधनम् । 'ओं तद्विष्णोः परम पदं' इत्या-
दिना मुद्राशोधनम् । ओं विष्णुर्वाणि कल्पयतु त्रया रूपानि पिशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधानु ते ॥ गर्भं धादि सिनीवालि
गर्भं धादि सरस्वति । गर्भं ते त्रिभिर्ना दशराधना पुष्पाधना ॥

इति पञ्चमं शोधयेत् । ततः पात्रोपरि हृमित्यवगुण्ठ्य वमित्यमृती-
कृत्य तालत्रयेण दिशः संवद्ध्य, तदुपरि मूलं सप्तधा प्रजप्य योनि-
मुद्रां प्रदर्शयेत् । ततः श्रीपात्रोपरि कुरङ्गलिन्वाः प्रयोगेण राजदन्त-
वर्मणा निःसृताममृतधारां योनिमुद्रोल्लासितेन करेणानीय, मूलं ओं
ब्रह्माण्डस्रगदसंभूतमशेषरससंभूतम् । आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमा-
वह ॥ ऐं अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं ज्ञायय २
ओंजुंसः स्वाहा इत्यभिमन्त्र्य, सौः तद्रूपेणैकरस्यं च दृष्ट्वाद्यै तत्स्व-
रूपिणि । भूत्वा परामृताकार मयि चित्स्फुरं कुह ॥ इत्यभिमन्त्र्य,
हस्तौ नमः इति संपूज्य, शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य पङ्क्तेन सफलीकृत्य मत्स्यमु-
द्रया पात्रमाच्छाद्य मूलं दृष्ट्वा संजप्य पात्रं देवीरूपं भावयेदिति
श्रीपात्रस्थापनावधिः ॥

ततो देव्या आज्ञामादाय घटसमोपे गुरुपात्रं ततः शक्तिपात्र-भोग-
पात्र-स्वपात्र-योगिनीपात्र-घोरपात्र-शलिपात्र-पाद्यपात्रार्घ्यपात्राचमनीय-
पात्र-मधुपर्कपात्रमित्येतानि पात्राणि संस्थाप्य, ततश्चर्चणयुतकारणेन
तत्त्वमुद्रया श्रीपात्रामृतमिन्दून् समुद्धृत्य, ङसरत्नमलवयुजं सुरादेव्यै
घौषद् आनन्देश्वरैरर्चं तर्पयामि नमः सुरादेव्यो तर्पयामि नमः इति
त्रिः सन्तर्प्य, ततो गुरुपात्रामृतेन श्रीपादुकामुच्चार्य श्रीमच्छ्री-अमुका-
नन्दनाथ-श्रीपादुकां पू० इति त्रिः सन्तर्प्य, एवं परमगुरुं परमाचार्य-
गुरुं परमोष्ठिगुरुं च श्रीगुरुपात्रामृतेन सन्तर्प्य, ततः श्रीपात्रामृतेन
मूलं श्रीमच्छ्रीमहादेवभैरवसहितां सवाहनां समुद्रां सपरिकरां सायुधां
श्रीज्वालामुष्णीं तर्पयामि नमः इति स्वहृदि सन्तर्प्य, प्रोक्षणीपार्थ
संस्थाप्य श्रीपात्रामृतमिन्दुना संस्मृत्य मूलेन स्वात्मानं संमोक्षयेत् ।
अनेनैव जलनं यागभूमिवस्तूनि च प्रोक्षयेत् । इति कलशस्थापनावधिः ॥

ततः पूर्ववत् पीठन्यासक्रमेण श्रीचक्रपौत्रेपरि पीठपूजां विधाय
कुसुमाञ्जलिं शृङ्गीत्वा, श्रीदेव्यो ध्यात्वा यमिति वायुवीजेन स्वहृदया-
द्रामनासापुटेन श्रीदेव्यो तेजोमयीं कुसुमाञ्जलिं ममानीय, तत्र विधिवद्
ध्यात्वा, ओं देवेशि भक्तिमुल्लभे परिचारसमन्विते । यावत् त्वां पूज-
यिष्यामि तावद् देवि इहावह ॥ इति पीठन्यासं कुसुमाञ्जलिं श्री-
चक्रोपरि निक्षिपेत् । ततो मूलं श्रीमहादेवसहिते ज्वालामुष्णि
इदामन्त्र्य २ इह संतिष्ठ २ इह सनिधत्स्व २ इह संनिधत्वा भय २

मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृह्य २ स्वाहा, इत्यावाहनादिमुद्राः
प्रदर्श्य श्रीचक्रपीठोपरि लेलिहानमुर्ध्वा प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।
ओं आर्होर्हो हंस. सोहं श्रीज्वालामुख्याः प्राणा इह प्राणाः १३ जीव
इह स्थितः १३ सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि १३ वाहमनश्चतुःधोत्रजि-
ह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं विरं लिप्सन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठां
विधाय, दशदिग्बन्धनं च विधाय, हुमित्यवगुरुष्य, अमृतमुद्रयामृ-
तीकृत्य, पङ्कजेन सकलौकृत्य, परमीकृत्य चेतुषोनिमुद्रे प्रदर्श्य, श्री-
पात्रामृतेन मूत्रं श्रीमहादेवमैरवसहिता श्रीज्वालामुखीं तर्पयामि नम इति
वि. सन्तर्प्य, मू० श्रीमहादेवमैरवसहितायै श्रीज्वालामुखीभगवत्यै एतत्पा-
दयोः पादं नमः । एव मू० अर्घ्यं स्वाहा । मू० एतश्चमनाय स्वधा ।
एतन्मधुपर्कं सुधा । मू० पुनराचमनीयं सुधा । मू० एतत्क्षानीयं नमः ।
इति गङ्गादिजलेन सङ्गंजे सस्नाप्य, शुद्धदुर्गूलेनाक्ष प्रोञ्ज्य, विबिजप-
दपलकुङ्कुमकस्तूरीचन्दनासन्दूरमुकुटकुण्डलहारदिनानालङ्कारान् दत्त्वा,
पुनराचमनीयं दद्यात् । ततो मध्यमानामाहुष्टैः, मूलं एव गन्धो
नमः इति तिलक ललाटे कुर्यात् । अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां मूलं श्रीमहादे-
वमैरवसहितायै श्रीज्वालामुख्यै अक्षतपुष्पाणि वीरद इति पुष्पैः
संपूज्य, धूपपात्रं फडिति संपूज्य पुरतः स्थापयित्वा यामतर्जनीभ्यां
स्पर्शन् श्रीपात्रामृतेन धूप निवेद्यामीति निवेद्य, “ ओं जगद्धरनि-
मन्ममत. स्वाहा ” इति षष्टा संपूज्य वामेन पाणिना तां वादयन्
मध्यमानामाहुष्टैः पात्रं धृत्वा, मूलं श्रीज्वालाकृपित्यै विष्टे जगद्ध-
रित्यै श्रीमहि तप्तो ज्वालामुखी प्रबोदयात् । मू० “ वनस्पतिरसो-
त्पन्नो गन्धाद्गो गन्ध उत्तमः । ओम्नेयः सर्वदेयानां धूपोऽयं प्रति-
गृह्यतान् ॥ ” इति त्रिधातोत्पन्नं देवीं धूपयेत् । ततो दीपं समुपे-
संस्थाप्य पूर्ववत् प्रोक्षणपूजने कृत्वा याममध्यमया दीपपात्रं सस्पृ-
शन् दीपं निवेद्यामीति निवेद्य, पूर्ववत् षष्टा वादयन् मध्यमाना-
मामध्ये दीपपात्रमङ्गुष्ठेन धृत्वा दर्शयन् गायत्रीं च पठन् “ ओं सुप्र-
पायो मदादीपः सर्वतस्तमनायकः । प्रसीद मम देवेशि दीपोऽयं
प्रतिगृह्याताम् ॥ ” इति वीरयेत् । ततः स्वर्णादिपात्रे कुङ्कुमेन वस्तु-
पत्र चन्द्रकपं च हृत्वा मध्ये दीपमेकमष्टपत्रेण दीपाष्टकं संस्थाप्य,
धीं सां. ग्लु. स्तु. ग्लु. स्तु. सी. धीं धीरसेभ्यै नमः । त्यम्यर्घ्यं,

मूलेन चाभ्यर्च्य स्थालकमामस्तकमुद्धृत्य नववारं मूलं "समस्तचक्रचक्रेषीयुते देवि नवात्मके । आरात्रिकमिदं देवि गृहाण नमसिद्धये ॥" इति चक्रमुद्रया नीराजयेदिति नीराजनविधिः ॥

ततो नानानैवेद्यं स्वर्णपात्रे निक्षिप्य हूमित्यवगुण्ठ्य वामित्यमृतीकृत्य, मूलं सप्तधा सज्जप्य वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन् मूलान्ते "हेमपात्रगतं दिव्यं परमात्रं सुसंस्कृतम् । पञ्चधा पङ्क्तोपेतं गृहाण परमेश्वरि" नैवेद्यं निवेदयामीति दक्षानामाङ्गुष्ठाभ्यां निवेदयेत् । ततो मूलं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा इत्यपोशानं दत्त्वा, पञ्च प्राणादिमुद्राः प्रदर्श्य सुतृप्तां देवीं भावयित्वा, पुनराचमनीयं दत्त्वा मूलान्ते कर्पूरादियुक्तं ताम्बूलं निवेदयामीति ताम्बूलं दद्यात् । ओं नमः उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गिनि सर्पघशङ्करि स्वाहा श्रीशेषिकापादुकां पूजयामि इदमुच्छिष्टभोजनं कल्पयित्वा देवी-ईशाने त्रिकोणे क्षिपेत् । ततः सर्वेषामर्घ्यपात्रजलेनोत्सर्गः कार्यः । ततस्तत्त्वमुद्रया श्रीपात्रामृतेन देवीं त्रिः सप्तर्ष्य, हवि क्षोभिर्षी, सुप्ते द्राविर्षी, भूमध्ये आकर्विर्षी, ललाटे वशिर्षी, ब्रह्मरन्ध्रे आहादिर्षी, इति पञ्चमुद्रामयीं योनिमुद्रां प्रदर्श्य, कृताञ्जलिः श्रीज्वालामुखि ते आवरणं पूजयामि, इत्याद्यां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत । यथा—

तत्रादौ पूर्वत आरभ्य दक्षावर्तेन, ओं ह्रीं गांगीगूं गणेशश्रीपा० पूर्वं, ओं ह्रीं धं धर्मराजश्रीपा० दक्षे, ओं ह्रीं धं वासुकिश्रीपा० पश्चिमे, ओं ह्रीं नं नरसिंहश्रीपा० उत्तरे, इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य भूपुरे प्रथमावरणम् । तत्रैव गुरुपूजनम् ॥

ततः षोडशपद्मेषु षोडशज्वाला वामावर्तक्रमेण पूजयेत् । यथा—
 ओं श्रीं वादणीश्रीपा० । ओं ह्रीं वात्यालीश्रीपा० । ओं ह्रीं वाराहीश्रीपा० ।
 ओं ह्रीं कुलसुन्दरीश्रीपा० । ओं ह्रीं कूचरीश्रीपा० । ओं ह्रीं कुलिकाश्रीपा० ।
 ओं श्रीं कुरठीश्रीपा० । ओं श्रीं कुत्सिताश्रीपा० । ओं श्रीं कुटिलाश्रीपा० ।
 ओं ह्रीं कुहूश्रीपा० । ओं श्रीं कुन्तीश्रीपा० । ओं ह्रीं कुम्भेश्वरीश्रीपा० ।
 ओं श्रीं कुन्ताश्रीपा० । ओं श्रीं कूचरीश्रीपा० । ओं श्रीं कादणीश्रीपा० ।
 ओं ह्रीं श्रीपेक्षीमैः कृतिश्रीपा० । इति गन्धपुष्पाक्षतैः संपूज्य षोडशदले द्वितीयावरणम् ॥

ततोऽष्टदलेषु अष्टौ रुद्रा वामावर्तेन पूजयेत् । यथा—
 श्रीं माया-

धीपा० । ह्रीं मोहिनीधीपा० । ऐं ह्रीं सौः बालाधीपा० । ओं ह्रीं भै भग-
रुपिणीधीपा० । ओं ह्रीं भगवासाधीपा० । ओं ह्रीं भीष्महाधीपा० ।
ओं ऐं सौः मृदानीधीपा० । ओं ह्रीं धीं ऐं सौः ह्रीं चैन्दवेश्वरीधीपा० । इति
गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य तृतीयावरणम् ॥

ततोऽन्तर्दशपत्रेषु दशज्वालाः पूजयेत् । यथा—ओं ह्रीं प्राज्ञी-
धीपा० । २ं शा श्याम्भवाधीपा० । २ं हुं दुर्गाधीपा० । २ं यां वारा-
हीधी० । २ं कुं कुलकामिनीधीपा० । २ं ना नारसिंहीधीपा० । २ं
कीं कौमारीधीपा० । २ं मां मातङ्गीधीपा० । २ं भै भद्रकालीधीपा० ।
२ं र्रीं उग्रताराधीपा० । इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य चतुर्थावरणम् ॥

तत ऊर्ध्वप्रिकोणे ओं ह्रीं त्रिपुरासुन्दरीधीपा० । ततोऽधः ओं ह्रीं
दक्षिणकालिकाधीपा० । ततो मध्ये त्रिन्दी मूलं महादेवभैरवसहितधी-
ज्वालामुखीधी० । ओं ह्रीं ज्वालिनीधी० । २ं जटिनीधी० । २ं जाती-
धी० । २ं जालन्धरीधी० । इति चिन्ता संपूज्य सप्तम्यं योनिमुद्रया
प्रणमैदिति पञ्चमावरणम् ॥

ततश्चतुःसमुद्रान् पूजयेत् । ओं ह्रीं सः सुपासमुद्रधी० । ओं ह्रीं
धारसमुद्रधी० । ओं ह्रीं दधिसमुद्रधी० । ओं ह्रीं लयसमुद्रधी० । इति
विदिग्गते चतुरधके चतुःसमुद्रान् संपूज्य सप्तम्यं, अत्रेयायुधानि
पूजयेत् । यथा—ओं ह्रीं परधी० । २ं मं भगवधी० । २ं श्रीं कन-
कधी० । २ं धीं शरधी० । इत्यायुधानि संपूज्य सप्तम्यं, अत्रेयास-

हृदयाय नमः स्वाहा, एवमस्नानं पङ्कजाहुतीहुत्वा, आवरणदेवता अपि हुत्वा देवीं स्वहृदयानीयाग्निं विसर्जयेदिति नित्यहोमविधिः ॥

तत ईशाने मण्डलं कृत्वा “वां वटुकाय नमः, ओं ह्रीं श्रीं एहो हि देवीपुत्र वटुरुनाथ कपिलजटाभारमास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय २ सर्वोपचारसहितां पूजां यत्ति गृह २ स्वाहा” इति वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां यत्ति दद्यात् । तत आग्नेये यां योगिनीभ्यो नमः, “ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा पाताले वानले वा पयनसलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा । क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपद्मा धूपदीपालिमांसैः प्रीता देव्यः सदा नः शुभप्रलिविधिना पान्तु धीरेन्द्रवन्द्याः” ॥ यां योगिनीभ्यो नमः “सर्वयोगिभ्यो हूं फट् स्वाहा” इति वामाङ्गुष्ठमभ्यमाभिर्विसृजेत् । ततो नैऋते “ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः, ओं ह्रीं श्रीं क्षेत्रपालः क्षेत्रपालालियलिसहितं यत्ति गृह २ स्वाहा, “योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः । स प्रीतो वलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥” इति वामाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां यत्ति मुत्सृजेदिति । ततो पायध्ये “गांगीगुणं गणपतये घर वरद सर्व जनं मे यशमानय यत्ति गृह २ स्वाहा” इति वामाङ्गुष्ठमभ्यमाभ्यां यत्ति मुत्सृजेदिति । तत उत्तरे ओं सर्वभूतेभ्यो नमः “ओं ह्रीं सर्वविघ्न-हृद्गयः सर्वभूतेभ्यो हूं स्वाहा एष यत्ति नमः” इति सर्वाङ्गुलीभिर्वलि-मुत्सृजेदिति यत्ति पञ्चकं दद्यात् । अशक्त एकाग्र एव कुर्यात् । अस्मि-न्नेवावसरे छागादिवलि दद्यात् । तत्र मूलेन पशुं संस्त्राप्य गन्धस्त्र-गादिभिरलङ्कृत्य देव्यग्रे संस्थाप्य, मूलेन प्रोक्षणीजलेन प्रोक्ष्यास्त्राय फडिति सरस्य द्रुमित्यवगुण्ठ्य मूलेन धेनुमुद्रयामृतीकृत्य “सर्वदेव-ताकृषिणं यत्ति रूपायामुकपश्ये नमः” इति गन्धादिना त्रिः संपूज्य, तस्य दक्षकर्णे “ओं पशुपाशाय विघ्ने विघ्नकर्णाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।” इति पशुपाशयो त्रिः पठित्वा, पुरतः सङ्गं निधाय “ओं कालि कालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डाय नमः” इति गन्धादिना त्रिरभ्यर्च्य, तस्य मुष्टौ ओं ह्रीं श्रीं योगेश्वरी प्रह्लाभ्यां नमः, मध्ये ४ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, ४ उमामहेश्वराभ्यां नमः इति संपूज्य तं भूत्वा मन्त्रयेत् । “ओं चङ्गायामुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर । पशुशृङ्ग-स्तपसा शीघ्रं पङ्कनाथ नमोऽस्तु ते ॥” इत्यभिमन्त्र्य, गन्धाक्षत-

जलादिकमादाय, मूलं मासादिकमुत्क्रीत्यामुकगोत्रोऽमुकशर्मा मुककामः
 धौज्वाला मुचया इमं पश्ये तुभ्यमर्पयाम्यहं संप्रसीद, इति पठित्वा
 पशोः शिरसि निगन्धिषेत् । ततस्तच्छिद्यो पृत्वा, ज्योत्स्नार्थं पशवः
 पृथा यज्ञार्थं पशुघातनम् । अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञं यधोऽ-
 वयः ॥ शिवायत्तमिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां गतः । उद्गुह्यस्व पशो
 त्वं हि नाशिवस्त्वं शिवोऽसि हि ॥ इति संवोधयित्वा खड्गमादाय
 " सौः अस्माय फट् क्षिप्रं २ स्वाहा " इति पठ्वा तस्य स्कन्धे
 योजयेत् । ततः स्वयं देवीरूपो भूत्वा निर्विकल्प एकेन प्रहारेण
 च्छिन्नात् । सविकल्पः परदस्तेन च्छेदयेत् । अत्रैव ब्राह्मणातिरिक्तैः
 स्वास्त्रादिपालिदैवैः । इति यत्निं दत्त्वा मूलदेवीं संपूज्य रक्तेन सन्तर्प्य,
 जलममृतीकृत्य मूलं शिरभिमन्त्र्य, मूलं धौज्वाला मुखे इमं जलं गृहा-
 णेति जलं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् । ततः कुमारो मुखमरुणेण मूलं
 पूजयेत् । ततो मूलं मूलदेवीं संपूज्य, प्राणायामर्प्यादिकरपटङ्ग-
 ग्यासान् विधाय स्वात्मानं कामकलारूपं ध्यापन् मालामादाय, जौमां
 माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्धर्मस्त्यपि न्यस्तस्त-
 स्माम्मे सिद्धिदा भव ॥ इति संपूज्य, नं अविष्टं कुक्ष माले त्वं तर्प-
 भावेतु सर्वदा, इति दक्षकरेण मालां गृहीत्वा स्वशिरसि धीशुर्यं,
 कण्ठे पीतवर्णा मूलविद्यां, हृदये ज्वाला मुखीदेवीं, धीशुरुचरणयोः
 स्वात्मानं ध्यात्वा, भूमये तेषां चतुर्धामैभ्यः विभाज्य, विशुद्धां चतु-
 र्धमैर्काभूतमानीय देवतारूपं कर्णं ध्यात्वा, मूलं स्मरन् यथाशक्ति
 जपे कृत्वा, जपान्तं " त्वे माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
 शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देदि मे ॥ इति मालां स्वशि-
 रसि संस्थाप्य पुनरपि प्राणायामर्प्यादिकरपटङ्गग्यासान् विधाय " गृह्णा-
 तीति " सामान्यार्प्यामृतेन यामहस्ते तेजामयं जपफले समर्प्य, मालां
 संपूज्य रक्तः स्थापयेत् । ततो मूलदेव्यं पुण्याञ्जलिं दत्त्वा, कण्ठसद-
 यनाम-लोत्रपाठं कृत्वा धीदेवीं सन्तोष्य, प्रागुक्तगुरुस्त्वरेण धीशुर्यं
 स्तुत्या प्रणम्य, सर्वशक्तिरूपोऽतिप्रभिधामहमात्मिकाम् । देवस्य
 वेरतां कञ्चित् सावेत्सुखमयो धव ॥ इति नत्वा समापयेत् ।

भूर्मा स्पलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।

लायि जातापराधानां तमेव शरणं शिवे ॥

अपराधो भवत्येव मेवकस्य पदे पदे ।

जलादिक्रमादाय, मूलं मासादिकमुत्कीर्त्यामुकगोत्रोऽमुकशर्मांमुककामां
 ध्रुवालाभुषया इमं पशुं तुभ्यमर्पयाम्यहं संप्रसीद, इति पठित्वा
 पशोः शिरसि निःक्षिपेत् । ततस्तच्छिद्यो धृत्वा, औपशार्थं पशवः
 यथा यथार्थं पशुघातनम् । अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे यथोऽ-
 वयः ॥ शिवायत्तमिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां गतः । उदुघ्यस्व पशो
 त्वं हि नाशिवस्त्वं शिवोऽसि हि ॥ इति संघोधयित्वा जङ्गमादाय
 “ सौः अस्माय फट् द्विन्धि २ स्वाहा ” इति खड्गं तस्य स्कन्धे
 योजयेत् । ततः स्वयं देवीरूपो भूत्वा निर्विकल्प एकेन प्रहारेण
 चिद्यन्तात् । सविकल्पः परहस्तेन च्छेदयेत् । अत्रैव ब्राह्मणातिरिक्तैः
 स्यान्नादियलिर्देवः । इति यलिं दद्यात् मूलदेवीं संपूज्य रक्तेन सन्तर्प्य,
 जलममृतीकृत्य मूलेन धिरभिमन्त्र्य, मूलं ध्रुवालाभुषि इमं जलं गृह्णा-
 णेति जलं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् । ततः कुमारीं सूक्ष्मक्रमेण मूलेन
 पूजयेत् । ततो मूलेन मूलदेवीं संपूज्य, प्राणायामर्प्यादिकरणद्वङ्ग-
 न्यासान् विधाय स्यात्मानं कामकलारूपं ध्यायन् मालामादाय, औमां
 माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि । क्षतुर्गस्तवधि न्यस्तस्त-
 रमान्मे सिद्धिदा भव ॥ इति संपूज्य, गं अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्व-
 भावेषु सर्वदा, इति दक्षरेण मालां गृहीत्वा स्वशिरसि श्रीगुरुं,
 कण्ठे पीतवर्णां मूलविद्यां, हृदये ज्वालामुखीदेवीं, श्रीगुरुचरणयोः
 स्यात्मानं ध्यात्वा, भूमध्ये तेषां क्षतुर्गामैस्त्वं विभान्य, धिगुर्जा क्षतु-
 र्धमंक्राभूतमानीय देवतारूपं क्षणं ध्यात्वा, मूलं स्मरन् यथाशक्ति
 जपं कृत्वा, जपान्तं “ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
 शुभं कुरुष्व मे भद्रं यशो वीर्यं च देहि मे ॥ इति मालां स्वशि-
 रसि संस्थाप्य पुनरपि प्राणायामर्प्यादिकरणद्वङ्गन्यासान् विधाय “ गुह्या-
 तीति ” सामान्यार्थ्यामृतन घामदस्ते तेजोमयं जपकलं समर्प्य, मालां
 संपूज्य रहः स्थापयेत् । ततो मूलदेव्यं पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, कथञ्चसह-
 स्ननाम-स्तोत्रपाठं कृत्वा श्रीदेवीं सन्तोष्य, प्रागुक्तगुरुस्तोत्रेण श्रीगुरुं
 स्तुत्या प्रणम्य, सर्वशक्तिरूपोद्भूतिप्रभिधामहमात्मिकाम् । देवस्य
 देवतां काञ्चित् सच्चिन्मुचमयीं श्रय ॥ इति नत्या क्षमापयेत् ।

भूर्मां स्थलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।

तपि ज्ञात्रापराधानां तमेव शरणं शिवे ॥

अपराधो मात्से मेरुस्य पदे पदे ।

कोऽपरः सहते लोके केवलं स्वामिनं विना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।

समक्षं सविध सर्वमिति मातः क्षमस्व मे ॥

इति प्रणामपूर्वं क्षमाप्य, अर्घ्योदक चुलुकेन गृहीत्वा, ओं इत. पूर्व प्राण-
बुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा
पद्मयामुदरेण शिश्ना यत् स्मृत यदुक्त यत् कृत तत् सर्वं श्रीदेव्यर्प-
णमस्तु स्वाहा, इत्यनेन देव्याश्चरणारविन्दयोग्यगृहीतोदकदानेनात्मान
समर्प्य, कृताञ्जलिभूत्वा,

यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पुष्पं पत्रं फलं जलम् ।

निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि ॥

कर्मणा मनसा वाचा नास्ति वान्धा गतिर्मम ।

अन्तधारेण भूताना रक्ष त्वं परमेश्वरि ॥

मातर्योनिसहस्रेषु येषु येषु ब्रजाम्यम् ।

तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा तयि ॥

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत् ।

देवी जयति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि ॥

यदचरपदभ्रष्ट मात्राहीनं च यद्वतम् ।

चन्तुमर्हसि देवेशि कस्य न स्खलितं मनः ॥

क्षमस्व देवदेवेशि ज्वालाप्रसि मद्देश्वरि ।

तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥

इति पुष्पे क्षमापयित्वा, योनिमुद्रया प्रणम्य शङ्खमुदघृत्य देव्युपरि ध्यापयित्वा,

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।

तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥

इति देवीशङ्खहस्ते शङ्खजलं किञ्चिद् दत्त्वा, शङ्खं स्वस्थाने संस्थाप्य,

तज्जलं किञ्चिद्दामहस्ते निधाय मूलेन सप्तधाभिमण्ड्य स्वात्मानमभ्या-

स्थूलसूक्ष्मपराख्यदेहरूपाभिमानिनं जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा, इति
 क्षुलकचतुष्टयं स्वीकृत्य तत्पात्रं कराभ्यामावाय, मूलं गुरुपादुकासुधार्य,

ॐ प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीक्षुचम् ।

धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णा वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ॥

इति तज्जलमश्नीयात् । ततः कराभ्यां मूर्धादिपादान्तं पदत्रिंशत्तत्त्वा-
 त्मकतां भावयन् स्वदेहं स्पृशेत् । ततः स्वसामयिकैः सह यथाशक्त्य
 गुरुपदिष्टविधिना पात्रवन्दनं कुर्यात् । तत्रादौ मूलाभारात् कुण्डलि-
 नीमिष्टदेवतारूपामुत्थाप्य स्वजिह्वाग्रान्तमानीय पात्रं वामदस्तकृतत्रिस-
 रबोपरि वक्षहस्तेनाच्छाद्य श्लोकं पठेत् ।

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पात्रवन्दनमीश्वरि ।

तत्कालं यद्वरानन्दपात्रं देवैश्च वन्दितम् ॥ १ ॥

पूजायां पात्रमानन्दभरितं परमेश्वरि ।

गुरुणा दत्तमभ्यर्च्य प्रणमेच्छिरसा तदा ॥ २ ॥

श्रीमज्जैरवशेखरप्रबिलसच्चन्द्रामृतस्नावितं

चेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः समाराधितम् ।

आनन्दागमकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतं

वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम् ॥ ३ ॥

ॐ आत्मतत्त्व शोधयामि स्वाहा ।

ह्रिमं चैश्वरसावहं दधितया दत्तं च पेयादिभिः

किञ्चिच्चञ्चलरक्त्रपङ्कजदृशा सानन्दमालोकितम् ।

वामे स्वादुविशुद्धशुद्धिशकलं पाणौ निधाय स्वके

वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दैरुसंवर्धनम् ॥ ४ ॥

ॐ विद्यातत्त्व शोधयामि स्वाहा ।

ॐ सर्वाग्रायकलाकलापकलितं कौतूहलोद्द्योतनं

चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशंभुवरुणवज्रादिभिः सेवितम् ।

ध्यातं देवगणैः परं मुनिगणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा

चन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधसमम् ॥ ५ ॥

ओं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

मद्यं मीनरसाग्रहं हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितं

मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं चाराम्स्ताविक्राश्रितम् ।

आचार्यार्चितमष्टभैरवकलान्यासेन चाच्छादितं

पायात् पञ्चमकारतत्त्वनिलयं पात्रं चतुर्थं नुमः ॥ ६ ॥

महत्तितत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलं

द्रव्यं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः ।

सोहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणैरक्षतै-

रादित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः ॥ ७ ॥

पुरुषतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

सर्वज्ञग्रामलभद्रपीठपरमानन्दोदयादायकं

रम्यं राज्यकरं सदा मुखकरं सायुज्यसाम्राज्यदम् ।

नानाव्याधिभयान्धकारहरणं जन्मान्तरध्वंसनं

श्रीमद्भैरवभैरवीप्रियतरं पात्रं च षष्ठं नुमः ॥ ८ ॥

मनस्तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

आप्रत्सप्तसुषुप्तिगोधपवनं चैतन्यसाक्ष्यप्रदं

विद्युद्भास्करवद्विचन्द्रधनुषा ज्योतिष्कलाव्यापितम् ।

वामापिङ्गलमध्यमा त्रिवलया तस्याः प्रगोधोद्धतं

पात्रं सप्तममूपणैर्न तरुणानन्दप्रदं पातु माम् ॥ ९ ॥

पुञ्जितत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

१ 'धीः' ग पाठ । २ 'अयम्' ख पाठ । ३ 'आचार्यार्चितमष्टभैरव' ग पाठ ।

४ 'मय' ग पाठ । ५ 'सप्त सामरभद्र' ग पाठ । ६ 'द्वय दावक बाजोरन्तिम-

नोदर' ग पाठ । ७ 'मुपेरन' ग पाठ । ८ 'मय कुण्डली बोध्य' ख, पाठ ।

खड्गं श्रीगुरुपादुकां च तिलकं कण्ठेऽपि सारस्वतं
 शत्रोर्वाम्बलशौर्यकार्यहरणं देहस्थितेः कारणम् ।
 वाञ्छासिद्धिकरं मनःस्थितिकरं चावर्जनं योषितां
 पात्रं चाष्टममष्टसिद्धिकरणं श्रौढप्रसन्नं भजे ॥ १० ॥

अद्वक्ता तत्त्व शोधयामि स्वाहा ।

सर्वानन्दकरं सदा शिवपदं सन्नर्थसंपत्प्रदं
 साम्राज्यार्थकरं समस्तसुखदं चाज्ञानविध्वंसनम् ।
 आयुष्कान्तियशोविवर्धनकरं ससारमोहच्छिदं
 पात्रं लक्ष्मणुखात्मकं च नवमं श्रौढप्रताप भजे ॥ ११ ॥

शक्तितत्त्व शोधयामि स्वाहा ।

ब्रह्मविष्णुमहेशानां देवानां च विशेषतः ।

दुर्लभं पावनं पात्रं दशमं प्रणमाम्यहम् ॥ १२ ॥

भैरवतत्त्व शोधयामि स्वाहा ।

पापघ्नं शान्तिशुभदं दिव्यं म्वादु सुखावहम् ।

पात्रमेकादशं उन्दे गुरुसेवासुखागतम् ॥ १३ ॥

सर्वतत्त्व शोधयामि स्वाहा । इति पात्रवन्दनं कृत्वा पात्रप्रशस्ता कुर्यात् ।

पात्रं कृता करे भवती सर्वकर्म लभेत्सुखी ।

इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते भैरवो भवेत् ॥ १४ ॥

करे पात्रं मुखे स्तोत्रमानन्दो हृदयाम्बुजे ।

भक्तिर्गुरुरूपदाम्भोजे स्मरणं किमतः परम् ॥ १५ ॥

एकेन शुष्कचणकेन घटं पिबामि

नारपीं पिबामि सहसा लग्नाद्र्रिकेण ।

ग्राम्याद्यं माममलिरोहितमुखण्डखण्ड

गङ्गां पिबामि यमुनां यदृ सागरेण ॥ १६ ॥

करे मालां मुखे हालां वामे रामां मुक्तमाला ।

त्रिपुरा हृदये बाला यागशाला गृहे गृहे ॥ १७ ॥

पात्रं भैरवपात्र गोत्रं श्रीनाथपादुकागोत्रम् ।

शास्त्रं संविच्छास्त्रं ज्ञानं तच्चावरोधकं ज्ञानम् ॥ १८ ॥

अलिपिशितपुरन्ध्रीभोगपूजापरोऽहं

बहुविधकूलमार्गारम्भसंभावितोऽहम् ।

पशुजनचिमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहं

गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥ १९ ॥

वामे चन्द्रमुखी मुखे च मदिरा पार्श्वं कराम्भोक्षे

मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसम् ।

जिह्वायां जपसाधनं परिणतिः कौलक्रमाभ्यासने

ये सन्तो निपतं पिबन्ति सरसं ते भुक्तिमुक्ती गताः ॥ २० ॥

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-

मग्रे मुद्राधयकबटकाः शूकरस्रोष्णशुद्धिः ।

स्कन्धे वीणा सरमकविता सद्गुरोः सत्कथायां

कौलो मार्गः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ २१ ॥

पीता पीता पुनः पीता यावत् पतति भूतले ।

उत्थाय च पुनः पीता पुनर्जन्म न विधत्ते ॥ २२ ॥

धर्माधर्महविर्दीप्ते त्वात्माग्नी मनसा शुचा ।

सुपुत्रारत्नना नित्यमक्षतृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥ २३ ॥

मकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीशुचा ।

धर्माधर्मकलाग्नेहपूर्णा वह्नी जुहोम्यहम् ॥ २४ ॥

यारत्र चलते वृष्टिर्वावच चलते मनः ।

तारत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम् ॥ २५ ॥

एतत् पाद्यप्रशस्ता हन्वा तन स्वसामयिकान् यथाशक्त्वा गुरुपदिष्ट-
शिथिला संपूज्य सनत्पुं, पूर्वस्थापितबलिपात्ररूपमघ्रादिकमकस्मिन्

पात्रे कृत्वा तद्गृहाहुत्थाय सोदकपात्रदस्तौ बद्धिर्गत्वा, जलेन शुचौ
 देशे चतुरश्रवृत्तप्रिकोणात्मकं मण्डलं कृत्वा, तत्र "गवाक्षिशूलडम-
 कपात्रदस्तं त्रिलोचनम् । कृष्णामं भैरवं देवं सर्वविघ्नविनाशनम् ' ॥
 इत्युच्छिष्टभैरवं ध्यात्वा, गन्धादिना सपूज्य, "ॐ उच्छिष्टभैरव एहोदि
 बलिं गृह २ हूं फद स्वाहा" इति पात्रस्थ बलिद्रव्यं तत्र मण्डले
 विस्तृत्य, तत्पात्रे दस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य, तत्पात्रं जलेनापूर्य
 पूजागृहद्वारं गत्वा प्रविश्य स्वासने समुपविश्य तत्पात्रस्थजले धोषा-
 प्रजलपिण्डुं दत्त्वा तेन जलेन स्वात्मानमभिषिञ्चन् शान्तिस्तोत्रं पठेत् ।
 तदुक्तं श्रीदेवीरहस्ये (२१ प०) । यथा—

देवि वक्ष्यामि पूजान्ते शान्तिस्तोत्रमनुत्तमम् ।

वीरा येन परानन्दपदं प्राप्स्यन्त्यनामयम् ॥ १ ॥

योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृपण्डितवेष्टितम् ।

नमामि शिरसा नाथं भैरवं भैरवीप्रियम् ॥ २ ॥

अनादिघोरसंसारव्याधिध्वंसैकहेतवे ।

नमः श्रीनाथवैद्याय कुलौपाधिप्रदायिने ॥ ३ ॥

व्यापदो दुरितं रोगाः समयाचारलङ्घनात् ।

वे सर्वेऽत्र न्यपोदन्तु दिव्यचक्रस्य मेलनात् ॥ ४ ॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिर्लामः सुखं जगः ।

कान्तिर्मनोरथमास्तु पान्तु सर्वाथ देवताः ॥ ५ ॥

संपूजकानां परिपालकानां यतीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम् ।

देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् इलेराः ॥ ६ ॥

नन्दन्तु सिद्धगुरवः स्वगुरुक्रमौघा

ज्येष्ठानुगाः समयिनो वदुकाः कुमार्यः ।

पद्मयोगिनीप्रवरवीरकुलमधूता

नन्दन्तु भूमिपतिगोद्विजसाधुलोकाः ॥ ८ ॥

नन्दन्तु नीतिनिपुणा निरवघनिष्ठा

निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च ।

नित्या निरञ्जनरता गुरवो निरीहाः

शाक्राश्च शान्तमनसो हृत्शोकशङ्काः ॥ ९ ॥

नन्दन्तु योगनिरताः कुलयोगयुक्ता

आचार्यसामयिकसाधकपुत्रकाश्च ।

गावो द्विजा ध्रुवतयो यतयः कुमार्यो

धर्मे भवन्तु निरता शुद्धमक्रियुक्ताः ॥ १० ॥

नन्दन्तु साधककुला आश्रमादिनिष्ठाः

शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।

सा शास्त्रमयी स्फुरतु कापि ममाध्यवस्था

यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥ ११ ॥

पाशक्रमभूमिकान्ततयो नाडीषु वा संस्थिता

याः कायद्रुमरोमरूपनिलया याः संस्थिता धातुषु ।

उच्छ्वासोर्मिमरुत्तरङ्गनिलया निःश्वासनासाश्च या-

स्ता देव्यो रिपुपञ्चमचखपरास्तृप्यन्तु कौलादिभिः ॥ १२ ॥

या दिव्यक्रमपालिकाः चित्तिगता या देवतास्तोषणा

या नित्यं प्रथितप्रभाः शिखिगता या मातरिश्वाश्रयाः ।

या व्योमामृतमण्डलामृतमया याः सर्वगाः सर्वदा-

स्ताः सर्वाः कुलमार्गपालनपराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे ॥ १३ ॥

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा
 पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ।
 क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
 प्रीता देव्यः सदा नः शुभत्रलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः १४
 ब्रह्मशेषेशदुर्गागुह्यवडुकगणा भैरवाः क्षेत्रपाला
 वेतालादित्यरुद्रग्रहप्रसुमनुसिद्धाप्सरोगुह्यकाद्याः ।
 भूता गन्धर्वविद्याधरऋषिपितृयक्षासुराहिप्रभूता
 योगीशाश्चारणाः किंपुरुषमुनिवराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे ॥ १५ ॥
 देहस्थाखिलदवता गजमुखाः क्षेत्राधिपा भैरवा
 योगिन्यो बडुकाश्च यक्षपितरो भूताः पिशाचा ग्रहाः ।
 अन्ये भूचरदिहूचराश्च सचरा वेतालकाश्चेटका-
 स्तृप्ताः स्युः कुलपुत्रकस्य पिवतः पान सदीप चरुम् ॥ १६ ॥
 सत्य चेद्गुरुवाक्यमेव पितरो देवाश्च चैद्योगिनी-
 प्रीतिश्चेत् परदेवता च यदि चेद्वेदाः प्रमाणं च चेत् ।
 शाक्त्येयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेवास्ति चेत्
 सन्त्यत्रापि च कौलिनाश्च यदि चेत् स्थान्मे जयः सर्वदा ॥ १७ ॥
 तृप्सन्तु मातरः सर्वाः समुद्राः समणाधिपाः ।
 योगिन्यः क्षेत्रपालाश्च मम देहे व्यरस्थिताः ॥ १८ ॥
 शिवाद्यननिर्ष्यन्त ब्रह्मादिस्तम्भं धृतम् ।
 कालाभ्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्सतु ॥ १९ ॥
 पठित्वेदं नमोद्वीरान् वीरवन्दनमाचरेत् ।
 स्तुवेद्वीरान्नमोद्वीरान् मन्त्रमिद्विः प्रजायते ॥ २० ॥

इत्य शान्तिस्तोत्रं पठित्वा वारवन्दनस्तात्र पठेत् ।

जगत्त्रयाभ्यर्चितशामनेभ्यः

परार्थमपादनकोटिदेभ्यः ।

समुद्धृतज्ञेशमहोरगेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ १ ॥

प्रहीणसर्वाश्रयवासनेभ्यः

सर्वार्थितत्त्वोदितसाधनेभ्यः ।

सर्वप्रजाभ्युद्धरणोद्यतेभ्यो

नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥ २ ॥

विधूतकेशालिकपालिकेभ्यः

सुरासवाररुचिलोचनेभ्यः ।

नवीनकान्ता-स्ततत्परेभ्यो

नमो नमः शम्भविशामवेभ्यः ॥ ३ ॥

निभूतिलिप्ताङ्गदिगम्बरेभ्य-

क्षिताग्निधूमाग्निमयानकेभ्यः ।

कपालपाशामृतपानकेभ्यः

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ४ ॥

सिद्ध्यष्टकाधानमहामुनिभ्यः

श्रीभैरवाचारकृतादरेभ्यः ।

स्वाधीनतान्यवकुतर्निर्जरेभ्यो

नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥ ५ ॥

भनेन वीरस्तवकीर्तनेन

समुद्धृतज्ञेशसुवासनोऽहम् ।

संसारकान्तारमहार्णवेज्जि-

निमज्जमान जगद्देवम् ॥ ६ ॥

इति शान्तिस्तोत्रं धीरवन्दनं च पठित्वा सर्वान् सामयिकानभिषिञ्च्य,
विशेषार्घ्यपात्रमुद्धृत्य शिरःस्थाय धौगुर्ये समर्प्य तथैव तत्पादुका-
नि संपूज्य मूलविधया गुह्यपादुकाविधाने च, स्वाहेति नमःस्त्राधा-

रकुरङ्गलिन्यात्मकपरदेवतामुक्ते द्वनवुद्भ्या तज्जलं पात्रान्तरे कृत्वा-
 श्रीयत् । शेष प्रियशिष्याय प्रसादबुद्ध्य किञ्चिद् दद्यात् । सोऽपि
 स्वपात्रे कृत्वा तज्जलं प्राश्रीयदित्यमर्घ्यप्रतिपत्तिः । ततः स्वगुरुप-
 दिष्टविधिना शेषकृत्यं समापयेन् । ततस्तान्नाविपात्रे गन्धपुष्पाक्षतान्वित
 जलमापूर्य , " ओं नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विश्वुतेजसे । जग-
 त्पवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने ॥ ओंद्वाहोस. सूर्य एष तेऽर्घ्य. स्वाहा "
 इत्यर्घ्यं सूर्याय दत्त्वा कृताञ्जलिः—“ ओं यक्षश्छिद्रं तप.च्छिद्रं यच्छिद्रं
 पूजने मम । अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं भास्करस्य प्रसादत. ॥ ” इत्यच्छि-
 द्रमवधारयेत् । ततो मूलेन प्राणायामप्यादिकरपङ्कन्यासान् विधाय पडा-
 सन-वाग्देवताष्टकन्यासान् विधाय प्रागुक्तगुरुस्तोत्रं पठित्वा , श्रीगुरु
 प्रणम्य मूलविधया द्वितीयकूटेन निर्माल्यं शिरसि धृत्वा मूलविधयैव
 चरणोदकं स्वीकृत्य श्रीपरदेवतामक्रेभ्यो नैवेद्यादिक विमज्ज्य सुहृद्-
 धान्धवजनैः साक भुक्त्वा स्वात्मान कामकलारूप भावयन् सुख
 विहरेदिति ॥

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी ।

ज्वालासर्वस्वरूपापि न देया तत्त्ववादिभिः ॥

श्रीज्वालापद्धतिर्गुह्या नित्यार्चनक्रमाङ्किता ।

गुह्यातिगुह्यगुह्याद्या गोपनीया मुमुक्षुभिः ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविचारदस्ये

श्रीज्वालामुखीपद्धतिः । २ ॥



अथ

श्रीज्वालामुखीकवचम् ।

—ॐ ह्रीं क्लीं—

श्रीभैरव उवाच ।

मृणु देवि जगन्मातृज्वालामुखा ब्रवीम्यहम् ।
कवचं मन्त्रगर्भं च त्रैलोक्यविजयाभिधम् ॥ १ ॥
अप्रकारयं परं गुह्यं न कस्य कथितं मया ।
विनामुना न सिद्धिः स्यात् कवचेन महेश्वरि ॥ २ ॥
अवक्तव्यमदातव्यं दुष्टायासाधकाय च ।
निन्दकायान्याशिष्याय न वक्तव्यं कदाचन ॥ ३ ॥

श्रीदेव्युवाच

त्रैलोक्यनाथ वद मे बहुधा कथितं मया ।
स्वयं तथा प्रसादीष्यं कृतः स्नेहेन मे प्रभो ॥ ४ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

प्रभाते चैव मध्याह्ने सायंकालेऽर्धरात्रके ।
कवचं मन्त्रगर्भं च पठनीयं परात्परम् ॥ ५ ॥
मधुना मत्स्यमांसादिभोदकेन समर्चयेत् ।
देवतां परया भक्त्या पठेत् कवचमुत्तमम् ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं मे पातु मूर्धनं ज्वाला अक्षरमातृका ।
ओं ह्रीं श्रीं मेऽवतारालं अक्षरी विश्वमातृका ॥ ७ ॥
ओं ऐं ह्रीं सौंः ममान्यात् सा देवी माया भुवौ मम ।
ओं अं ब्राह्मं ह्रीं सौंः पापान्मेवे मे विश्वसुन्दरी ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँसौः पातु नासां उंऊं कर्णौ च मोहिनी ।
 ॠंॠल्लंॠहसौः मे वाला पायाद् गण्डौ च चक्षुषी ॥ ९ ॥
 ऐँऐँओँओँ सदाव्यान्मे मुखं श्रीभगरूपिणी ।
 अंअः ॐह्रीँकीँसौः पायाद् गलं मे भगधारिणी ॥ १० ॥
 कंखंखंॠहसौः पायात् स्कन्धौ मे त्रिपुरेश्वरी ।
 छंछंछंॠहसौः वक्षः पायाच्च वैन्दवेश्वरी ॥ ११ ॥
 भंजंठंॠहसौः ऐँकीँहं ममाव्यात् सा भुजान्तरम् ।
 डंडंणं त्तनौ पायाद् भीरुण्डा मम सर्वदा ॥ १२ ॥
 धंदंधनं कुक्षिं पायान्मम ह्रीँश्रीं परा जया ।
 पंफंथंॠह्रीँसौः पार्श्वं मृडानी पातु मे सदा ॥ १३ ॥
 भंमंयंरंॠहसौःलंबं नाभि मे पान्तु कन्यकाः ।
 शंपंसंदं सदा पातु गुह्यं मे गुह्यकेश्वरी ॥ १४ ॥
 लंचः पातु सदा लिङ्गं ह्रीँश्रीं लिङ्गनिवासिनी ।
 ऐँकीँसौः पातु मे मेढ्रं पृष्ठं मे पातु वारुणी ॥ १५ ॥
 ॐ श्रीह्रीँकीँहं पातु ऊरू मे पात्वमां सदा ।
 ॐ ऐँकीँसौःयां वात्याली^१ जङ्घे पायात् सदा मम ॥ १६ ॥
 ॐ श्रीमौँकीँ सदा पायाजानुनी कुलसुन्दरी ।
 ॐ श्रीह्रीँहं कूचरी^२ च गुल्फौ ऐँश्रीं ममावतु ॥ १७ ॥
 ॐ श्रीह्रीँकीँहमौः पायात् कुण्ठी कीँह्रीँहमौः मे तलम् ।
 ॐ श्रीश्रीं पादौ हसौः पायाद् ह्रीँश्रींकीँ कुत्सिता मम ॥ १८ ॥
 ॐ ह्रीँश्रीं कुटिला ह्रीँकीँ पादपृष्ठं च मेऽवतु ।
 ॐ श्रीह्रीँश्रीं च मे पातु पादस्था अङ्गुलीः सदा ॥ १९ ॥
 ॐ ह्रीँहसौःऐँ कूहः मजां ॐ श्रीं कुन्तीं^३ ममावतु ।
 रत्नं कुम्भेश्वरी ऐँकीँ शुक्रं पायाच्च कूचरी ॥ २० ॥

पातु मेऽङ्गानि सर्वाणि ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रौं सौः सदा ।
 पादादिमूर्धपर्यन्तं ह्रीं क्रीं श्रीं कारुणीं सदा ॥ २१ ॥
 मूर्धादिपादपर्यन्तं पातु ह्रीं श्रीं कृतिर्मम ।
 ऊर्ध्वं ये पातु त्वां ब्राह्मी अधः श्रीं शान्मवी मम ॥ २२ ॥
 दुर्गं दुर्गा पातु मे पूर्वं त्वां वाराही शिवालये ।
 ह्रीं क्रीं ह्रीं च मां पातु उत्तरे कुलकामिनी ॥ २३ ॥
 नारसिंही ह्रौं ऐं ह्रीं वायव्ये पातु मा सदा ।
 ॐ श्रीं क्रीं ऐं च कौमारी पश्चिमे पातु मां सदा ॥ २४ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं निर्घन्तौ पातु मातङ्गी मा शुभङ्गरी ।
 ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं सदा पातु दक्षिणे भद्रकालिका ॥ २५ ॥
 ॐ श्रीं ऐं ह्रीं सदा त्र्यम्बामुग्रतारा सदावतु ।
 ॐ त्वां दशदिशो रचन्मां ह्रीं दक्षिणकालिका ॥ २६ ॥
 सर्वकालं सदा पातु ऐं सौः त्रिपुरसुन्दरी ।
 मारीभये च दुर्भिक्षे पीडाया योगिनीभये ॥ २७ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं ज्येष्ठरी पातु देवी ज्वालामुखी मम ।
 इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ २८ ॥
 त्रैलोक्यविजयं नाम मन्त्रगर्भं महेश्वरि ।
 अस्य प्रसादादीशोऽहं भैरवाणां जगत्त्रये ॥ २९ ॥
 सृष्टिकर्ता पर्वता च पठनादस्य पार्वति ।
 कुङ्कुमेन लिखेद्भजे आसवेन स्मरेत्तप्ता ॥ ३० ॥
 तन्मयेदखिलान् देवान् मोहयेदखिलाः प्रजाः ।
 मारयेदखिलान् शत्रून् वशयेदपि देवताः ॥ ३१ ॥
 बाहौ धृता चरेद्युद्धं शत्रूञ्जिता गृहं प्रजेत् ।
 पाते रणे विवादे च काराया रोगपीडने ॥ ३२ ॥

ग्रहपीडादिकालेषु पठेत् सर्वं शमं व्रजेत् ।
 इतीदं कवचं देवि मन्त्रगर्भं सुरार्चितम् ॥ ३३ ॥
 यस्य कस्य न दातव्यं विना शिष्याय पार्वति ।
 मासैकेन भवेत् सिद्धिर्देवानां या च दुर्लभा ।
 पठेन्मासत्रयं मर्त्यो देवीदर्शनमाप्नुयात् ॥ ३४ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
 श्रीज्वालामुखीकवचम् ॥ ३ ॥

अथ

श्रीज्वालामुखीसहस्रनामकम् ।

श्रीभैरव्युवाच ।

भगवन् सर्वधर्मज्ञं देवानामभयकुर ।
 पुरा मे यत् त्वया श्रोत्रं वरं कैलाससानुतः ॥ १ ॥
 कृपया परया नाथ तं मे दातुं क्षमो भव ।

श्रीभैरव उवाच ।

सत्यमेतत् त्वया श्रोत्रं वरं वरय पार्वति ॥ २ ॥
 तं प्रयच्छामि संसिद्धये मनसा यदभीप्सितम् ।

श्रीभैरव्युवाच ।

ज्वालामुख्यास्तया देव सहस्राणि च तत्त्वतः ॥ ३ ॥

प्रोक्तानि ब्रूहि मे भक्त्या यदि मे तत्कृपा भवेत् ।

श्रीभैरव उवाच ।

प्रवक्ष्यामि महादेवि ज्वालानामानि तत्त्वतः ॥ ४ ॥

सहस्राणि कलौ नृणां वरदानि यथेप्सितम् ।

अमक्ताय न दातव्यं दुष्टायासाधकाय च ॥ ५ ॥

या सा ज्वालामुखी देवी त्रैलोक्यजननी स्मृता ।

तस्या नामानि वक्ष्यामि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥ ६ ॥

विना नित्यबलिं स्तोत्रं न रक्ष्यं साधकोत्तमैः ।

दुर्भिक्षे शत्रुभीतौ च नारणे स्तम्भने पठेत् ॥ ७ ॥

सहस्राख्यं स्तवं देव्याः सद्यः सिद्धिर्भविष्यति ।

विना मन्धाचतैः पुष्पैर्धूपैर्दोषैर्विना बलिम् ॥ ८ ॥

न रक्ष्यं साधकेनैव देवीनामसहस्रकम् ।

दत्त्वा बलिं पठेद् देव्या मन्त्री नामसहस्रकम् ।

देवि सत्यं मया प्रोक्तं सिद्धिदानिस्ततोऽन्यथा ॥ ९ ॥

अस्य श्रीज्वालामुखीसहस्रनामस्तवस्य, भैरव श्रापिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ह्रीं बीजं, धीं शक्तिः, ओं कीलकं पाठे विनियोगः ॥ भैरवश्रापये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि । ह्रीं बीजाय नमो नाभौ । धीं शक्तये नमो गुह्ये । ओं कीलकाय नमः पादयोः । विनियोगाय नमः सर्वज्ञेषु । ओं ह्यामिति षड्दीर्घयुक्तमायया करणद्वयानि विधाय ध्यायेत्—

उद्यच्चन्द्रमरीचिसंनिभमुखीमेकादशाराञ्जगां

पाशाम्भोजवराभयान् करतलैः संविभ्रतीं सांदरात् ।

अग्नीन्द्रकविलोचना शशिकलाचूडां त्रिवर्गोज्ज्वलां

प्रेतस्थां ज्वलदग्निमण्डलशिखां ज्वालामुखीं नौम्यहम् ॥

उर्ध्वज्वालामुखी जैत्री श्रीज्योत्स्ना जयदा जया ।
 औदुम्बरा भद्रानीला शुक्ललुप्ता शची श्रुतिः^१ ॥ १ ॥
 सयदा सयहर्त्री च सरशशुभ्रियङ्करी ।
 मानदा मोहिनी मचा माया बाला बलन्धरा ॥ २ ॥
 भगरूपी भगावासा मीरुण्डा भयधातिनी ।
 मीतिर्भयानकास्या च भ्रूः सुभ्रूः सुखिनी सती ॥ ३ ॥
 शूलिनी शूलहस्ता च शूलिचामाङ्गवासिनी ।
 शशाङ्कजननी शीता शीतला शारिका शिवा^२ ॥ ४ ॥
 क्षुचिका मधुमन्मान्या त्रिवर्गफलदायिनी ।
 त्रेता^३ त्रिलोचना दुर्गा दुर्गमा दुर्गतिर्गतिः ॥ ५ ॥
 पूता प्लुतिर्विमैशा च सृष्टिकर्त्री सुखावहा ।
 सुखदा सर्वमध्यस्था लोकमाता महेश्वरी ॥ ६ ॥
 लोकेष्टा वरदा स्तुत्या स्तुतिर्दुर्गतितुतिः ।
 नयदा नयनेत्रा च नवग्रहनिषेविता ॥ ७ ॥
 अम्या वरुधिनी वीरजननी वीरसुन्दरी ।
 वीरसुर्वारुणी वार्ता वराऽभयकरा वधूः ॥ ८ ॥
 वानीरतलगा वाम्या वामाचारफलप्रदा ।
 वीरा शौर्यकरी शान्ता शार्दूलतरू च शर्वरी ॥ ९ ॥
 शलभी शास्त्रमर्यादा शिवदा शम्बरान्तका ।
 शम्बरारिप्रिया शम्भुकान्ता शशिनिमानना ॥ १० ॥
 शस्त्राणुषधरा शान्तिर्ज्योतिर्दोषिर्जगत्प्रिया ।
 जगती जितरा जारी मार्जारी पशुपालिनी (१००) ॥ ११ ॥

१ 'श्रुतिः' ख. पाठः । २ 'माया' ख. पाठः । ३ 'शिवा' ग. पाठः । ४ 'प्रिया-
 चना' ग. पाठः । ५ 'विसर्गा' ख. ग. पाठः । ६ 'दुर्गतिः' ख. पाठः ।
 ७ 'वीरा' ख. पाठः । ८ 'वीरा' ग. पाठः ।

मेरुमध्यमता मैत्री मुसलायुधधारिणी ।
 गान्धा मन्त्रेष्टदा माध्वी माध्वीरसविधूर्णिता ॥ १२ ॥
 नोदकाहारनत्ता च मत्तमातङ्गनाभिनी ।
 महेश्वरप्रियोन्नत्ता दार्वी दैत्यविमर्दिनी ॥ १३ ॥
 देवेष्टा साधक्रेष्टा च साध्वी सर्वत्रगाऽस्तमा ।
 सन्तानकत्तरश्वापासन्तुष्टाऽध्वभमापहा ॥ १४ ॥
 शारदा शरदञ्जाची वरदानञ्जनिमानना ।
 नम्राङ्गी कर्कशाङ्गी च वज्राङ्गी वज्रधारिणी ॥ १५ ॥
 वज्रेष्टा वज्रकङ्काला वानरी वायुवेगिनी ।
 वराकी कुलका काम्या कुलेष्टा कुलकामिनी ॥ १६ ॥
 कुन्ता कामेश्वरी क्रूरा कुन्त्या कामान्तकारिणी ।
 कुन्ती कुन्तधरा कुञ्जा कष्टहा वगलाशुखी ॥ १७ ॥
 मृडानी मधुरा मूका प्रमत्ता वैन्दवेश्वरी ।
 कुमारी कुलजाऽकामा कूबरी नटकूबरी ॥ १८ ॥
 नगेश्वरी नगावामा नगपुत्री नगारिहा ।
 नागकन्या कुहूः कुण्ठी^१ करुणा कृपयान्विता ॥ १९ ॥
 ककारवर्णरूपाद्या द्वीर्लजा श्रीः शुभाशुभा ।
 खेचरी खगपती च खगनेत्रा खगेश्वरी ॥ २० ॥
 खाता खनित्री खस्ता च जप्या जाप्याऽमरा ध्रुतिः^२ ।
 जगती जन्मदा जम्भी जम्बुवृक्षतलस्थिता ॥ २१ ॥
 जाम्बूनदाप्रिया सत्या सात्त्विकी सत्त्ववर्द्धिता ।
 सर्वभावा समालोका लोकाख्यातिर्लयात्मिका ॥ २२ ॥
 लूता लतारतिर्लजा वाजिगा (२००) वाक्परी वशा ।
 कुटिला कुरिस्ता प्राङ्गी ब्रह्माङ्गी ब्रह्मदायिनी ॥ २३ ॥

व्रतेष्टा वाजिनी वस्तिर्वाग्नेत्रा वशङ्करी ।
 शङ्करी शङ्करेष्टा च शशाङ्कतशेखरा ॥ २४ ॥
 कुम्भेश्वरी कुरुक्षी च पाण्डवेष्टा परात्परा ।
 मदिषासुरसंहर्त्री माननीया मनुप्रिया ॥ २५ ॥
 दक्षिणा दक्षजा दक्षा द्राक्षा दूती द्युतिर्धरा ।
 धर्मदा धर्मराजेष्टा धर्मस्या धर्मपालिनी ॥ २६ ॥
 धनदा धनिका धर्म्या पताका पार्वती प्रजा ।
 प्रजावती पुरी प्रज्ञा पूः पुत्री पत्रिवाहिनी ॥ २७ ॥
 पत्रिहस्ता च तातङ्गी पत्रिका च पतिव्रता ।
 पुष्टिः मुखा रमशानस्या देवी धनदसेविता ॥ २८ ॥
 दयावती दया दूरा दूता निकटवासिनी ।
 नर्मदाऽनर्मदा नन्दा नाकिनी नाकसेविता ॥ २९ ॥
 नासा सङ्क्रान्तिरीक्ष्या च भैरवी त्रिभुवमस्तका ।
 श्यामा श्यामाम्बरा पीता पीतवस्त्रा कलावती ॥ ३० ॥
 कौतुकी कौतुकाचारा कुलधर्मप्रकाशिनी ।
 श्याम्भवी शारङ्गीविद्या गङ्गासनसंस्थिता ॥ ३१ ॥
 विनता वैनतेयेष्टा वैष्णवी विष्णुपूजिता ।
 वार्तादा वालुका वेत्री वेत्रहस्ता वराहना ॥ ३२ ॥
 त्रिवेकलोचना विज्ञा निशाला विमला क्षमा ।
 विवेका प्रचुरा लुप्ता नौनारायणपूजिता ॥ ३३ ॥
 नारायणी (३००) च सुमुखी दुर्जया दुःखहारिणी ।
 दौर्भाग्यहा दुराचारा दुष्टहन्त्री च द्वेनिधी ॥ ३४ ॥
 वाम्बधी भारती भाषा मयी लेखकपूजिता ।
 लेखपत्री च लोलार्धे लासा हासा प्रियङ्गरी ॥ ३५ ॥

प्रेमदा प्रणयज्ञा च प्रमाणा प्रत्ययाङ्किता ।
 वाराही कुब्जिका कारा काराबन्धनमोचदा ॥ ३६ ॥
 उग्रा चोग्रतरोग्रेष्टा नृमान्या नरसिंहिका ।
 नरनारायणस्तुत्या नरवाहनपूजिता ॥ ३७ ॥
 नृमुण्डा नृपुराद्या च नृमाता त्रिपुरेश्वरी ।
 दिव्यायुधोग्रतारा च त्र्यम्बा त्रिपुरमालिनी ॥ ३८ ॥
 त्रिनेत्रा कोटराची च पदचक्रस्था क्रिमीश्वरी ।
 क्रिमिहां क्रिमियोनिश्च कला चन्द्रकला चमूः ॥ ३९ ॥
 चर्माम्बरा च चार्वङ्गी चञ्चलाची च भद्रदा ।
 भद्रकाली सुभद्रा च भद्राङ्गी प्रेतवाहिनी ॥ ४० ॥
 सुपमा स्त्रीप्रिया कान्ता कामिनी कुटिलालका ।
 कुशब्दा कुगतिर्मेधा मध्यमाङ्गा च कारयणी ॥ ४१ ॥
 दक्षिणाकालिका काली कालभैरवपूजिता ।
 क्लौंकारी कुमतिर्बाणी बाणासुरनिघ्नेदिनी ॥ ४२ ॥
 निर्ममा निर्मेष्टा च निरयोनिर्निराश्रया ।
 निर्विकारा निरीहा च निलया नृपपुत्रिणी ॥ ४३ ॥
 नृपसेन्या विरिञ्चीष्टा विशिष्टा विश्वमातृका ।
 मातृकाऽर्णविलिप्ताङ्गी मधुसूता मधुद्रवा ॥ ४४ ॥
 शुक्रेष्टा शुक्रसन्तुष्टा शुक्रलाता कुशोदरी ।
 वृषा वृष्टिरनावृष्टिर्लभ्या लोभविवर्जिता ॥ ४५ ॥
 अन्धश्च (४००) ललना लक्ष्म्या लक्ष्मी रामा रमा रतिः ।
 रेवा रम्भोर्वशी वरया वासुकिप्रियकारिणी ॥ ४६ ॥
 शेपा शेषरत्ना श्रेष्ठा शेषशायिनमस्कृता ।
 शय्या शर्वप्रिया शस्ता प्रशस्ता शम्भुसेविता ॥ ४७ ॥

आशुशुचिनेत्रा च चणदा चणसेविता ।
 क्षुरिका कर्णिका सत्या सचराचररूपिणी ॥ ४८ ॥
 चरित्रा च धरित्रा च दितिर्देवलेन्द्रपूजिता ।
 गुणिनी गुरुरूपा च त्रिगुणा निर्गुणा घृणा ॥ ४९ ॥
 घोषा गजाननेष्टा च गजाकारा गुणिप्रिया ।
 गीता गीतप्रिया तथ्या पथ्या त्रिपुरसुन्दरी ॥ ५० ॥
 पीनस्तनी च रमणी रमणीष्टा च मैथुनी ।
 पद्मा पद्मधरा वत्सा धेनुर्मरुधरा मघा ॥ ५१ ॥
 मालती मधुरालापा मातृजा मालिनी तथा ।
 वैश्वानरप्रिया वैद्या चिकित्सा वैद्यपूजिता ॥ ५२ ॥
 वेदिका वारपुत्री च ययस्या चाग्भवी प्रसूः ।
 क्रीता पद्मासना सिद्धा सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ॥ ५३ ॥
 सत्त्वश्रेष्ठा सत्त्वसंस्था सामान्या सामवायिका ।
 साधकेष्टा च सत्पत्नी सत्पुत्री सत्कुलाश्रया ॥ ५४ ॥
 समदा प्रमदा श्रान्ता परलोकगतिः शिवा ।
 घोररूपा घोररावा मुक्तेशी च मुक्तिदा ॥ ५५ ॥
 मोक्षदा बलदा शुष्टिर्मुक्तिर्वलिप्रियाऽभया ।
 तिलप्रघ्ननासा च प्रघ्ना कुलशीर्षिणी ॥ ५६ ॥
 परद्रोहकरी (५००) पान्था पारावारसुता भगा ।
 मंगप्रिया भर्गशिखा हेला हैमवतीश्वरी ॥ ५७ ॥
 हेरुकृष्टा वटुस्था च वटुमाला वटेश्वरी ।
 नटिनी त्रोटिनी श्रान्ता न्वसा सारवती सभा ॥ ५८ ॥
 सौभाग्या भाग्यदा भाग्या भोगदा भूः प्रभावती ।
 चन्द्रिका कालहन्त्री च ज्योत्स्नोन्काऽशनिराक्षिका ॥ ५९ ॥

ऐदिकी चौष्मिकी चोष्मा ग्रीष्मांशुद्युतिरूपिणी ।
 ग्रीवा ग्रीष्मानना गव्यां कैलासाचलवासिनी ॥ ६० ॥
 मल्ली मार्तण्डरूपा च मानहर्त्री मनोरमा ।
 मानिनी मानकर्त्री च मानसी तापसी तुष्टिः ॥ ६१ ॥
 पयःस्था तु परब्रह्मस्तुता स्तोत्रप्रिया तनुः ।
 तन्वी तनुतरा मूत्तमा स्थूला शूरप्रियाऽधमा ॥ ६२ ॥
 उच्चमा मणिभूपाढ्या मणिमण्डपसंस्थिता ।
 मापा तीक्ष्णा त्रपा चिन्ता मण्डिका चर्विका चला ॥ ६३ ॥
 चण्डी चुल्ली चमत्कारकर्त्री हर्त्री हरीश्वरी ।
 हरिसेव्या कपिश्रेष्ठा चर्विता चारुरूपिणी ॥ ६४ ॥
 चण्डीश्वरी चण्डरूपा मुण्डहस्ता मनोगतिः ।
 पोता पूता पवित्रा च मञ्जा मेध्या सुगन्धिनी ॥ ६५ ॥
 सुगन्धा पुष्पिणी पुष्पा प्रेरिता पवनेश्वरी ।
 श्रीता क्रोधाकुला न्यस्ता न्यक्कारा सुरवाहिनी ॥ ६६ ॥
 स्रोतस्वती मधुमती देवमाता सुधान्वरा (६००) ।
 मत्स्या मत्सेन्द्रपीठस्था वीरपाना मदातुरा ॥ ६७ ॥
 पृथिवी तैजसी वृषिर्मूलाधारा प्रभा पृथुः ।
 नागपाशधरानन्ता पाशहस्ता प्रबोधिनी ॥ ६८ ॥
 प्रसादना कलिङ्गाख्या मदनाशा मधुद्रवा ।
 मधुवीरा मदान्धा च पापनी वेदना स्मृतिः ॥ ६९ ॥
 बोधिका बोधिनी पूषा काशी वाराणसी गया ।
 कौशी चोज्जयिनी धारा कारभीरी कुङ्कुमाकुला ॥ ७० ॥
 भूनिः त्रिन्धुः प्रभाता च गङ्गा गौरी शुभाश्रया ।
 नानाविद्यामयी चेत्रवती गोदावरी गदा ॥ ७१ ॥

गदहर्त्री गजारूढा इन्द्राणी कुलकौलिनी ।
 कुलाचारां कुरुषा च सुरूषा रूपवर्जिता ॥ ७२ ॥
 चन्द्रभागा च यमुना यामी यमचयङ्करी
 काम्मोजी सरयूश्चित्रा वितस्तैरावती क्षपा ॥ ७३ ॥
 चपिका पथिका तन्त्री वीणा वेषुः प्रियंवदा ।
 कुण्डलिनी निर्विकल्पा गायत्री नरकान्तका ॥ ७४ ॥
 कृष्णा सरस्वती तार्पी पयोष्णी शतरुद्रिका ।
 कावेरी शतपत्राभा शतबाहुः शतद्वदा ॥ ७५ ॥
 रेवती रोहिणी क्षिप्या क्षीणा चोष्णी चमा चया ।
 क्षान्तिर्भ्रान्तिर्गुरुर्गुर्वी गरिष्ठा गोकुला नदी ॥ ७६ ॥
 नादिनी कृषिणी कृष्णा सत्कुटी भूमिका (७००) भ्रमा ।
 विभ्राजमाना तीर्थ्या च तीर्था तीर्थफलप्रदा ॥ ७७ ॥
 तरुणी तामसी पाशा विपाशा पाशधारिणी ।
 पशूपहारसन्तुष्टा कुक्कुटी हंसवाहना ॥ ७८ ॥
 मधुरा विपुलाऽकाङ्क्षा वेदकाण्ठी विचित्रिणी ।
 स्वप्नावती सरित् सीताधारिणी मत्सरी च मुत् ॥ ७९ ॥
 शतद्रुर्भारती कद्रूनन्तानन्तशास्त्रिणी ।
 वेदना वासवी वेश्या पूतना पुष्पहासिनी ॥ ८० ॥
 त्रिशक्तिः शक्तिरूपा चाचरमाता जुरी जुधा ।
 मन्दा मन्दाकिनी मुद्रा भूता भूतपतिप्रिया ॥ ८१ ॥
 भूतेशा पञ्चभूतमी स्वचा कोमलहासिनी ।
 वासिनी कुङ्किता लम्भा लम्बकेशी सुकेशिनी ॥ ८२ ॥
 ऊर्ध्वकेशी निशालाची घोरा पुष्यपतिप्रिया ।

१ 'निर्विकल्पा' ग. पाठ । २ 'तृष्णा' ग. पाठः । ३ 'धारा' ख. पाठः ।

४ 'तापमी' ख. पाठ । ५ 'पतिमता' ग. पाठः ।

पांसुला पात्रहस्ता च सर्परी खर्परायुधा ॥ ८३ ॥
 केकरी काकिनी कुम्भी सुफला केकराकृतिः ।
 विफला विजया भीदा भीदसेव्या शुमङ्गरी ॥ ८४ ॥
 शैत्या शीतालया शीघ्रपात्रहस्ता कृपावती ।
 कारुण्या विधसारा च करुणा कृपया कृपा ॥ ८५ ॥
 प्रज्ञा ज्ञाना च पङ्गर्गा पडास्या पणमुत्प्रिया ।
 क्रौञ्ची क्रौञ्चाग्निनिलया दान्ता दारिद्र्यनाशिनी ॥ ८६ ॥
 शाला चामासुरा साध्या साधनीया च सामगा ।
 सप्तखरा सप्तधरा सप्तसप्तिलोचना ॥ ८७ ॥
 स्थितिः चेमङ्गरी स्वाहा वाचाली (८००) विविषाम्बरा ।
 कलकण्ठी घोषधरा सुग्रीवा कन्धरा कधिः ॥ ८८ ॥
 शुचिसिता समुद्रेष्टा शशिनी वशिनी सुवृक् ।
 सर्वज्ञा सर्वदा शारी सुनासा सुरैकन्यका ॥ ८९ ॥
 सेना सेनासुता शृङ्गी शृङ्गिणी हाटकेश्वरी ।
 होटिका हारिणी लिङ्गा भगलिङ्गस्वरूपिणी ॥ ९० ॥
 भगमाता च लिङ्गाख्या लिङ्गश्रीतिः^१ कलिङ्गजा ।
 कुमारी पुषती प्रौढा नवोढा प्रौढरूपिणी ॥ ९१ ॥
 रम्या रजोवती रज्जू रजोली राजसी वटी ।
 कैवर्ती रावसी रात्री रात्रिश्चरव्यङ्गरी ॥ ९२ ॥
 महोग्रा मुदेता भिष्ठी भल्लहस्ता भयङ्गरी ।
 तिलाभा दारिका द्वाःस्था दारिका मध्यदेशगा ॥ ९३ ॥
 चित्रलेखा वसुमती सुन्दराङ्गी वसुन्धरा ।
 देवता पर्वतरूपा च परभूः परमाकृतिः ॥ ९४ ॥

१ 'दक्षिणी' स पाठ । २ 'हारिणी' ग पाठ । ३ 'जुलि' ग पाठ ।

४ 'प्रौढा' ग पाठ ।

परमूर्तं मुण्डमाला नागयज्ञोपवीतिनी ।

रमशानकालिका रमश्रुः प्रलयात्मा प्रलोपिनी ॥ ६५ ॥

प्रस्थस्था प्रस्थिनी प्रस्था धूम्रार्चिर्धूम्ररूपिणी ।

धूम्राक्षी धूम्रकेशा च कपिला कालनाशिनी ॥ ६६ ॥

कङ्काली कालरूपा च कालमाता मलिम्लुची ।

शर्पाणी रुद्रपत्नी च रौद्री रुद्रस्वरूपिणी ॥ ६७ ॥

सन्ध्या त्रिसन्ध्या संपूज्या सर्वेश्वर्यप्रदायिनी ।

कुलजा सत्यलोकेशा सत्यवाक् सत्यवादिनी ॥ ६८ ॥

सत्यस्वरा सत्यमयी हरिद्वारा हरिन्मयी ।

हरिद्वलमयी राशि (६००) ग्रहतारातिथितनुः ॥ ६९ ॥

तुम्बुरुस्तुटिका त्रोदी भुवनेशी भयापहा ।

राक्षी राज्यप्रदा योग्या योगिनी भुवनेश्वरी ॥ १०० ॥

तुरी तारा महालक्ष्मीर्भाडा मार्गी भयानका ।

कालरात्रिर्महारात्रिर्महाविद्या शिवालय ॥ १०१ ॥

शिवासङ्गा शिवस्था च समाधिरग्निवाहना ।

अग्नीधरी भद्राभ्यामिर्बलाका बालरूपिणी ॥ १०२ ॥

वटुकेशी विलासा च सदसत्पुरभैरवी ।

विमहा खलहा गाथा कथा कन्या शुभाम्बरा ॥ १०३ ॥

ऋतुहा ऋतुजा क्रान्ता माधवी चामरावती ।

अरुणाक्षी विशालाक्षी पुण्यशीला विलासिनी ॥ १०४ ॥

सुमाता स्कन्दमाता च कृत्तिका भरणी वलिः ।

जिनेश्वरी सुकुशला गोपी गोपतिपूजिता ॥ १०५ ॥

गुप्ता गोप्यतरा ख्याता प्रकटा गोपितात्मिका ।

कुलाम्नायवती कीला पूर्णा स्वर्गाङ्गदोत्सुका ॥ १०६ ॥

उत्कण्ठा कलकण्ठी च रूपा पानपाऽमला ।
 संपूर्णचन्द्रवदना यशोदा च यशस्विनी ॥ १०७ ॥
 आनन्दा सुन्दरी सर्वानन्दा नन्दात्मजा लषा ।
 विद्युत् खद्योतरूपा च सादरा जविका जविः ॥ १०८ ॥
 जननी जनहर्षी च खर्परा खञ्जनेषणा ।
 जीर्णा जीमूतलक्ष्या च जटिनी जयवर्धिनी ॥ १०९ ॥
 जलस्या च जयन्ती च जम्भारिवरदा वया ।
 सहस्रनामसंपूर्णा देवी ज्वालागुप्ती स्मृता (१०००) ॥ ११० ॥
 इति नाम्नां सहस्रं तु ज्वालागुल्याः शिषोदितम् ।
 चतुर्वर्गप्रदं नित्यं धीजत्रयप्रकाशितम् ॥ १११ ॥
 मोक्षैकहेतुमतुलं मुक्तिप्रुक्तिप्रदं नृणाम् ।
 स्तुत्यं च साधनीयं च सर्वस्य सारमुत्तमम् ॥ ११२ ॥
 महामन्त्रमयं विद्यामयं विद्याप्रदं परम् ।
 परब्रह्मरूपं च साक्षादमृतरूपणम् ॥ ११३ ॥
 अद्वैतरूपं नाम्नां सहस्रं भैरवोदितम् ।
 यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥ ११४ ॥
 भक्त्या युतो महादेवि स भक्तेरैवोपमः ।
 शिवरात्र्यां च संक्रान्तौ ग्रहणे जन्मवासरे ॥ ११५ ॥
 भैरवस्यं बलिं दत्त्वा मूलमन्त्रेण मायिकः ।
 पठेन्नामसहस्रं च ज्वालागुल्याः सुदुर्लभम् ॥ ११६ ॥
 अनन्तफलदं गोप्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेत् सुधीः ।
 अग्निमादिविभूतीनामीश्वरो धार्मिको भवेत् ॥ ११७ ॥
 अर्धरात्रे समुत्थाय शून्यगेहे पठेद्विदम् ।
 नाम्नां सहस्रकं दिव्यं त्रिवारं साधकोत्तमः ॥ ११८ ॥

कर्मणा मनसा वाचा ज्वालामुख्याः सुतो भवेत् ।
 मध्याह्ने प्रत्यहं गत्वा प्रेतभूमिं विधानवित् ॥ ११६ ॥
 नरमांसवलिं दत्त्वा पठेत् सहस्रनामकम् ।
 दिव्यदेहधरो भूत्वा विचरेद्भुवनत्रयम् ॥ १२० ॥
 शनिवारे कुजेऽष्टम्यां पठेन्नामसहस्रकम् ।
 दत्त्वा चीरवलिं तस्यै करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १२१ ॥
 विना नैवेद्यमात्रेण न रक्ष्यं साधकोत्तमैः ।
 कुजवारे सदा देवि दत्त्वाप्तवलिं नरः ॥ १२२ ॥
 पठेत् साधक एवाशु लभेद् दर्शनमुत्तमम् ।
 शनिवारे सदा विद्यां जप्त्वा दत्त्वा वलिं प्रिये ॥ १२३ ॥
 कपोतस्य महेशानि पठेन्नामसहस्रकम् ।
 तद्गृहे वर्धते लक्ष्मीर्गोकर्णमित्रं नित्यशः ॥ १२४ ॥
 शतावर्तं चरेद्रात्रौ साधको दर्शनं लभेत् ।
 बन्ध्या वा काकबन्ध्या वा कुङ्कुमेन लिखेदिदम् ॥ १२५ ॥
 स्वस्तन्येन च शुक्रेण भूर्जे नामसहस्रकम् ।
 गले वा वामबाहौ वा धारयेत् प्रत्यहं प्रिये ॥ १२६ ॥
 बन्ध्यापि लभते पुत्राब्जशूरान् विद्याधरोपमान् ।
 इदं शृत्वा सव्यनाहौ गत्वा रणधरा प्रति ॥ १२७ ॥
 निजित्य शत्रुसङ्घातान् मुक्तीं याति स्वकं गृहम् ।
 वारद्वयं पठेन्नित्यं शत्रुनाशाय पार्वति ॥ १२८ ॥
 वारद्वयं पठेन्नित्यं मुक्त्यै तु शतधा पठेत् ।
 वश्यार्थे दशधा नित्यं मारणार्थे च विंशतिर्धै ॥ १२९ ॥
 स्वप्नभनार्थे पठेन्नित्यं सप्तधा मान्त्रिकोत्तमः ।
 भूम्यर्थे त्रिंशतिं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ॥ १३० ॥

प्रत्यहमेकवारं तु मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ।
 अमकारयमदातव्यमवक्त्रव्यममक्तिषु ॥ १३१ ॥
 अशक्तायाकुलीनाय कुपुत्राय दुरात्मने ।
 गुरुभक्तिविहीनाय दीक्षादीनाय पार्वति ॥ १३२ ॥
 दत्त्वा कुष्टी मवेल्लोके परत्र नरकं व्रजेत् ।
 श्रद्धापुङ्गाय भक्ताय साधकाय महात्मने ।
 साक्षाराय सुशीलाय दत्त्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १३३ ॥

इति श्रीकृद्रयामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
 श्रीज्वालामुखीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ४ ॥



अथ

श्रीज्वालामुखीस्तोत्रम् ।



श्रीभैरव उवाच ।

वारं यो भजते मातर्बीजं तव सुधाकरम् ।
 पारावारमुता नित्यं निश्चला तद्गृहे वसेत् ॥ १ ॥
 शून्यं यो दहनाधिरूढममलं वामाधिमसेवित
 सैन्दवं चिन्दुयुतं यवानि वरदे भ्रान्ते स्मरेत् साधकः ।
 मूकस्यापि सुरेन्द्रसिन्धुजलवद्गन्धेयता भारती
 मद्यः पद्यपयी निर्गलतरा मानर्गुखे तिष्ठति ॥ २ ॥

शुभं वह्नयारूढं प्रतिपुतमनन्पेष्टफलदं

सविन्दीन्दुं मन्दो यदि जपति बीजं तव प्रियम् ।

तदा मातः स्वःस्त्रीजनविहरणक्लेशसहितः

मुखमिन्द्रोघाने स्वपिति स भवत्पूजनरतः ॥ ३ ॥

ज्वालागुह्यीति जपते तव नामवर्णान्

यः साधको गिरिशपति सुभक्तिपूर्वम् ।

तस्याङ्घ्रिपद्मपुगलं सुरनाथवेरयाः

सीमन्तरत्नकिरणैरनुरञ्जयन्ति ॥ ४ ॥

पाशाम्बुजाभयधरे मम सर्वशत्रून्

शब्दं त्विति स्मरति यस्तव भग्नमध्ये ।

तस्याद्रिपुत्रि चरणौ बहुपांसुयुक्तौ

प्रचालयन्त्यरिवधूनयनाधुपाताः ॥ ५ ॥

मद्यपद्रवमिदं यदि भक्त्या साधको जपति चेतसि मातः ।

स स्मरारिरिव सत्प्रसादतस्तत्पदं च लभते दिवानिशम् ॥ ६ ॥

कूर्चबीजमनघं यदि ध्यायेत् साधकस्तव महेश्वरि योऽन्तः ।

अष्ट हस्तकमलेषु सुवस्थास्तस्य अम्बकसमस्तसिद्धयः ॥ ७ ॥

ठड्यं तव मनूत्तरस्थितं यो जपेत् परमप्रभावदम् ।

तस्य देवि हरिशङ्करादयः पूजयन्ति चरणौ दिवीकसः ॥ ८ ॥

ओंदीर्घीं श्रीं अक्षरे देवि सुरासुरनिम्नदिनि ।

त्रैलोक्याभयदे मातर्ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

उदितार्कयुते^१ लक्ष्मि लक्ष्मीनाथसमर्चिते ।

वराभुजाभयधरे ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥

सर्वसारमयि शर्वे सर्वाभरणमस्कृते ।

सत्ये सति सदाचारे ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥

यस्या मूर्ध्नि शशी विलोचनगता यस्या रत्नान्द्वयः

पाशाम्भोजवराभयाः करतलाम्भोजेषु सद्देतयः ।

गात्रे कुङ्कुममन्त्रिभा शुक्तिरहिर्यस्यागले सन्ततं

देवीं कोटिसहस्ररश्मिसदृशीं ज्वालामुखीं नैम्यहम् ॥ १२ ॥

निद्रां नो भजते चिन्धिर्भगवति शङ्का शिवं नो त्यजेद्

विष्णुर्व्याकुलतामलं कमलिनीकान्तोऽपि धृषे भयम् ।

वृष्टा देवि त्वदीयकोपदहनज्वालां ज्वलन्तीं तदा

देवः कुङ्कुमपोतगण्डयुगलः संक्रन्दनः क्रन्दति ॥ १३ ॥

यामाराध्य दिवानिशं सुरमरिचोरे स्तवैरात्मभू-

वयद्भास्वरधर्मभालुसदृशीं भासोऽमरज्येष्ठताम् ।

दारिद्र्यघोरगदष्टलोकाग्रितयोसंजीविनीं मातरं

देवीं तां हृदये शशाङ्कशकलाचूडावर्तसां भजे ॥ १४ ॥

व्यापोनस्तनध्रोणिभारनमितां कन्दर्पदपोंम्बलां

लावण्याहृतरम्यगण्डयुगलां यस्त्वां स्मरेत् साधकः ।

वरयास्तस्य धराभृदीश्वरसुते गीर्वाणवामभ्रुवः

पादाम्भोजतलं भजन्ति त्रिदशा गन्धर्वतिद्धादयः ॥ १५ ॥

हत्वा देवि शिरो विधैर्यदकरोत् पात्रं कराम्भोरुहे

शूलप्रोतमधुं हरिं व्यगमयत् सद्रूपणं स्कन्धयोः ।

कालान्ते त्रितयं मुसेन्दुकुहरे शुम्भोः शिरः पर्वति

शम्भातर्जुवने विचित्रमखिलं जाने भवत्याः शिवे ॥ १६ ॥

गायत्री प्रकृतिर्गलेऽपि विधृता सा ते शिवे वेधसा

श्रीरूपा हरिणापि वचासि धृताप्यर्धाङ्गभागे तथा ।

शर्वेणापि भवानि देवि सकलाः ख्यातु न शक्ता वयं

तद्रूपं हृदि मादृशां जडधियां ध्यातुं कथंवास्ति का ॥ १७ ॥

ज्वालामुखीस्तवमिमं पठते यदन्तः

श्रीमन्नराजसहितं विभवैकहेतुम् ।

इष्टप्रदानसमयं भुवि कल्पवृक्षं

स्वर्गं व्रजेत् सुरवधूजनसेवितः सः ॥ १८ ॥

इति श्रीपरमाज्ज्वालातत्त्वं पञ्चाङ्गमीरितम् ।

परारहस्यकं श्यामासर्वस्वं कुलसुन्दरि ॥ १९ ॥

गोप्यं गुह्यतमं सारं शिवदं पुण्यवर्धनम् ।

कोटियज्ञफलप्राज्यं कुलाचारैककारणम् ॥ २० ॥

स्तुत्यं रोगापहं दिव्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ।

सर्वस्वभूतं देवेशि रहस्यं मम पार्वति ॥ २१ ॥

परशिष्याय नो देयं दत्त्वा हानिर्भवेन्मनोः ।

गुरुपूजां विधायಾದौ गुरुं सन्तोष्य यत्नतः ॥ २२ ॥

गृह्णीयात् परमेशानि ज्वालामुख्या यथाविधि ।

पञ्चाङ्गमखिलं दिव्यं रहस्यं पारदैवतम् ॥ २३ ॥

सर्वसिद्धिर्भवेदाद्यु देवानामपि दुर्लभा ।

श्रीदेव्युवाच ।

क्रीतास्मि भवतानेन स्तोत्रेणापि महेश्वर ।

सर्वथा तव दास्यस्मि पञ्चाङ्गश्रवणेन हि ॥ २४ ॥

श्रीमैरव उवाच ।

इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम् ।

पञ्चाङ्गमखिलं देव्या गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ २५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशत्रिंशदारहस्ये

श्रीज्वालामुखीस्तोत्रम् ॥ ५ ॥

ममाप्तं श्रीज्वालामुखीपञ्चाङ्गम् ॥

अथ

श्रीशारिकापञ्चाङ्गम् ॥

श्रीमैत्रेय उवाच ।

मृणु देवि प्रवक्ष्यामि पटलं देवदुर्लभम् ।
मर्षातिद्विकरं दिव्यं सर्वभयप्रदायकम् ॥ १ ॥
या देवदेवी वरदा शारिका त्रिपुरेश्वरी ।
त्रैलोक्यजननी दुर्गा विद्या मन्त्रावली परा ॥ २ ॥
सप्तशिखेश्वरी सैव मन्त्रलोकान्तराधया ।
सप्तद्वीपमयी पृथ्वी शून्यरूपा कुलेश्वरी ॥ ३ ॥
या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका ।
मर्वेप्सितप्रदा नित्यं प्रद्युम्नपीठमाश्रिता ॥ ४ ॥
प्रवक्ष्यामि पटलं तस्या मन्त्रोद्धारप्रकाशकम् ।
यन्त्रोद्धारं लयाङ्गाद्यं यथावदर्थयामि ते ॥ ५ ॥
मन्त्रोद्धारं महद्गोप्यं सर्वमिद्विप्रदं कला ।
मन्त्रं हितार्थं लोकानां तत्रादी मृणु पार्वति ॥ ६ ॥

तारं परमातमसिन्धुरार्थाः

स्वं शर्म तन्मध्यगतं च नाम ।

अन्तेऽश्मरी पार्वति शारिकाया-

स्त्रयोदशाक्षो मनुस्ति गोप्यः ॥ ७ ॥

मन्त्रस्यास्य महादेवि न विमो नापि दूषणम् ।

न विपर्ययभोलोके मिद्विमाध्यागिमशयः ॥ ८ ॥

पुरुषर्षाफलं नापि न कायज्ञेशसंग्रहः ।

मासान् मिद्विप्रदो मन्त्रः सर्वविघ्नोद्धारकः ॥ ९ ॥

ब्रह्महत्या-सुरापान-महापातकजं मलम् ।

प्रक्षालयति मन्त्रोऽयमभक्ष्यभक्षणं द्रुतम् ॥ १० ॥

मन्त्रमुत्कीलयेदादौ मन्त्रं सञ्जीवयेत्ततः ।

सिद्धं मन्त्रं जपेन्मध्ये दद्यादन्ते च संपुटम् ॥ ११ ॥

ततः सिद्धमनुः सिद्धो नामाधो भवति ध्रुवम् ।

अस्य मन्त्रस्य देवेशि प्रसादाद्देवोऽस्यचहम् ॥ १२ ॥

विष्णुर्नारायणो देवि ब्रह्मा लोकपितामहः ।

न देयः परमिष्याय भक्तिहीनाय पार्वति ॥ १३ ॥

अन्यथा सिद्धिहानिः स्यादुभयोः शिवशापतः ।

मन्त्रस्यास्य ऋषिः प्रोक्तो महादेवो महेश्वरि ॥ १४ ॥

त्रिष्टुप् छन्दः समाख्यातं शारिका देवता स्मृता ।

शर्म बीजं रमा शक्तिः सिन्धुरं कीलकं स्मृतम् ॥ १५ ॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इतीरितः ।

तारपरारमात्रीजैः पङ्क्तिर्घोषाररूपकैः ॥ १६ ॥

न्यासं कुर्यात् पङ्क्तादि येन देवीमयो भवेत् ।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि जगन्नैतन्यकारणम् ।

येन ध्यातेन देवेशि परानन्दः प्रजायते ॥ १७ ॥

वालाङ्गुलीकटिद्युतिमिन्दुचूडा

वरागिचक्राभयनाहुमागाम् ।

मिहाधिरूपां शिवयामदेह-

लीनां भजे चेतसि शारिकेशीम् ॥ १८ ॥

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि गाधकानां गुमानहम् ।

सर्वार्थमाधकं दिव्यं सर्वाशापरिहरकम् ॥ १९ ॥

खत्रिकोण-वसुकोणमुष्टचोव-

घोतनागदलपृत्त(सतत्रि)मण्डलम् ।

भृगुर्हं शिखिरवीन्दुभाञ्चितं

वधमेतदुदितं शिवांऽऽलयम् ॥ २० ॥

शारिकाया महायज्ञं त्रैलोक्योद्धारकारकम् ।

न देयं परशिष्येभ्यो दत्त्वा तु ब्रह्महा भवेत् ॥ २१ ॥

लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि ब्रह्मविष्णुसमर्चितम् ।

यश्वराजस्य देवेशि चतुर्वर्गप्रदायकम् ॥ २२ ॥

गणेशधर्मचरुणाः कुबेरसहिताः शिवे ।

पूज्या दूर्वाचितः पुष्पैश्चतुर्द्वारेषु सायकैः ॥ २३ ॥

इन्द्राद्याश्चैव दिक्पालास्तथेशानक्रमेण च ।

माद्री च वैष्णवी देवी चण्डिकापराजिता ॥ २४ ॥

कौमारी शाम्भवी चैव वाराही नारासिंहिका ।

पूज्या वामक्रमेणैता मातृवक्त्रसमातरः ॥ २५ ॥

तत्रैव गुरवोऽभ्यर्च्यस्त्रिषु वृत्तेषु सायकैः ।

गुरुं च परमं देवि परापरगुरुं तथा ॥ २६ ॥

परमंष्ट्रिगुरुं देवि तुत्वा पूज्याश्च भैरवाः ।

संहारो भीषणो देवि रूपान्धुन्मत्तभैरवो ॥ २७ ॥

क्रोधश्चण्डो रुक्थैवमसिताङ्गो महेश्वरि ।

इत्येतान् भैरवान् देवि वसुपत्रेषु पूजयेत् ॥ २८ ॥

ब्राह्मण्याद्या मातरो यत्र तत्र संपूजयेत् मदा ।

भैरवान् दक्षिणावृत्त्या मातृवक्त्रं तु वामतः ॥ २९ ॥

अमा कामा च चार्वङ्गी देवी च टडूषारिणी ।

तारा च पार्वती देवि संपूज्या यक्षिणी शिवा ॥ ३० ॥

वामावर्तक्रमेणैव वसुकोणगताः शिवे ।

कालिका त्रिपुरा दुर्गा पूज्या मध्यत्रिकोणगाः ॥ ३१ ॥

ईशानक्रमयोगेन यथाभीष्टफलप्रदाः ।

मध्ये श्रीशारिकादेवीं वामदेवाद्भूमध्यगाम् ॥ ३२ ॥

मकारैः पञ्चभिः कौलः कौलाचारपरायणः ।

सपूजयेन्महादेवि साधको मन्त्रसाधकः ॥ ३३ ॥

वरं चक्रं च खड्गं च पूजयेदभयं तथा ।

मिन्दौ पुष्पाचर्तैश्चैव धूपदीपादितर्पणैः ॥ ३४ ॥

नैवेद्याचमनीयाघैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।

लयाङ्गमिदमाख्यातं प्रयोगाञ्छृणु पार्वति ॥ ३५ ॥

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणं तथा ।

वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ ३६ ॥

एतेषां साधनं वक्ष्ये रहस्यं परमाद्भुतम् ।

येन साधनमात्रेण साधको भैरवो भवेत् ॥ ३७ ॥

(१) रवौ स्नात्वा शिवे कूपे कृत्वा कर्मादिकं तथा ।

अर्धरात्रे निराहारो जपेन्मूलं चतुष्पदे ॥ ३८ ॥

अथ नियमेनैव दशांशं होममाचरेत् ।

घृतरास्त्राशटीर्चाद्र-कुरुलामादिभिः शिवे ॥ ३९ ॥

ब्रह्मा हरिः शिवो जिष्णुः स्तम्भवान् भवति ध्रुवम् ।

(२) चन्द्रे मयाद्भुतमये वेतसीमूलमण्डले ॥ ४० ॥

त्रिकाणं मण्डलं कृत्वा श्रीचक्रं पूजयेत्ततः ।

अथ प्रजपेन्मूलं नियमेन सुरेश्वरि ॥ ४१ ॥

हृत्पदाभ्यामप्योमत्स्य-रुद्ररामवतञ्जगाः ।

शीताद्भुतं देवेशि भस्मना तिलकं चरेत् ॥ ४२ ॥

तस्य दर्शनमात्रेण त्रैलोक्यं मोहमेप्स्यति ।

- (३) भौमे निशामुले गत्वा श्मशानमयुतं जपेत् ॥ ४३ ॥
 चितायां तत्र दीप्ताग्नौ हुनेदाज्यं सगोमयम् ।
 शमीमूले नरास्त्रीनि शत्रुनाम्ना निखातयेत् ॥ ४४ ॥
 अपि देवसमो वापि शत्रुर्मृत्युमुखं व्रजेत् ।
- (४) पुधे गत्वा वनं देवि वटाश्वस्थतले जपेत् ॥ ४५ ॥
 अयुतं मूलमेकाकी हुनेत् पुष्पचयं सितम् ।
 साज्यं सासवरकं च पुष्पाणि च महेश्वरि ॥ ४६ ॥
 मेनका पीनवचोज्ञा प्रातः प्रादुर्भविष्यति ।
- (५) गुरौ गत्वा शवामीनो जपेन्मूलं चतुष्पथे ॥ ४७ ॥
 अयुतं वायुतार्धं वा हुनेत् पायसमायवम् ।
 स्वयं चासग्लोलाक्षः साज्यं ताम्बूलमिधितम् ॥ ४८ ॥
 इन्द्राग्रियममासाद-वरुणानितवित्तदाः ।
 सैथराः सहसा तस्य वशमेष्यन्त्यसंशयम् ॥ ४९ ॥
- (६) शुक्रेऽर्धरात्रे विष्ट्यां वा गत्वा प्रेतालयं परम् ।
 एकाकी प्रजपेत्तत्र कृत्वा पानाञ्जनं शिरे ॥ ५० ॥
 अयुतं तु चितावह्नी हुनेदाज्यं सकाशिकम् ।
 चितान्नारचये देवि रिपोरुचाटनं भवेत् ॥ ५१ ॥
- (७) शनौ मध्याह्नसमये स्नात्वा कृत्वादिक् क्रियाम् ।
 गत्वा देवालयं देवि देवीं ध्यात्वा यथाविधि ॥ ५२ ॥
 तदग्रे पूजयेद्यत्र जपेन्मूलमधायुतम् ।
 तत्र त्रिकोणकूपडे तु हुनेदाज्यं समररवम् ॥ ५३ ॥
 रुक्मामं कुलेशानि कुक्कुटस्य शिरस्तथा ।
 सद्यः सर्वभयानां च शान्तिर्भवेति पार्यति ॥ ५४ ॥
- (८) मष्टम्यां च चतुर्दश्या गत्वा प्रेतालयं शिरे ।
 जपेदयुतमर्धं वा हुनेत् पायसशर्कराम् ॥ ५५ ॥

मृद्रीकां त्रींश्च मघादीन्महापुष्टिः प्रजायते ।
 इत्येष विधिराख्यातः सर्वतन्त्रेषु गोपितः ॥ ५६ ॥
 नाख्येयो नच देष्टव्यो योगिनीचक्रपूजकैः ।
 इत्येष पटलो गुह्यः सकलागमसारवान् ।
 रहस्यभूतोऽयं देवि गोपनीयो मृमुक्षुभिः ॥ ५७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
 शारिकादेवीपटलः ॥ १ ॥



अथ

श्रीशारिकापूजापद्धतिः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अधुना पद्धतिं वक्ष्ये शारिकार्चनसंयुताम् ।
 गद्यपद्यमयीं गोप्यां सकलागमनिधिताम् ॥ १ ॥
 प्रातः कृत्यमकृत्वा तु यो देवीं च समर्चयेत् ।
 तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥ २ ॥

तत्रादौ ब्राह्मणे मुहूर्ते प्रातःकृत्यं विधाय नद्यां स्नानसम्पत्तादि कर्म
 कृत्वा, गृहमागत्य पूजामण्डपद्वारेवेयताः पूजयेत् । यथा—उर्द्धां द्वार-
 धेयै नमः ऊर्ध्वे, गं गणपतये नमः वक्त्रे, दां क्षेत्रपालाय नमः घात्रे,
 गां वास्तुपुरुषाय नमः वेष्टव्यां, इत्यभ्यर्च्य घामपादपुरःसरमन्तः प्राप्य-

य, स्वासने उपविश्य, अस्य श्री आसनयोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ श्रुतिः
 सुतले चन्द्रः कूर्मो देवता आसनयोधने विनिर्बोधः । "पृथिव त्वया
 धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं
 कुरु चासनम् ॥ " "ओं ह्रीं आधारशक्तिरुक्तमलासनाय नमः" इत्यासनं
 संपूज्य, "अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता
 विप्रकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाङ्गया ॥ पाषाण्डकारिणो भूता भूता भूम्य-
 भ्रारिणः । अपसर्पन्तु ते सर्वे ते नश्यन्तु शिवाङ्गया ॥ भूताः प्रेताः
 पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः । अपसर्पन्तु ते सर्वे देव्या अस्त्रेण
 त्वाङ्किताः ॥ " इति तालत्रयेण तर्जनीमध्यमाभ्यामूर्ध्वोर्ध्वं तालत्रयदानेन
 यामपाणिघातत्रयेण च दिव्यदृष्ट्या च विविधाविप्रानुत्साये, दशभिः
 रक्षोदिकामिदंशविग्रहधनं इत्या चतुर्विंशं चाङ्गप्रकारं साञ्चित्य, प्राणा-
 यामत्रयं कुर्यात् । १६ पूर्वकम् ६४ कुम्भकम् ३२ रेचकम् इत्येकः,
 विपर्वणेण द्वितीयः, प्रथमवत् तृतीयः, । इति प्राणायामत्रयेण निरस्त्र-
 सकलरित्तिषं रुद्रदेव देवताग्राधनयोगं विभात्य न्यासं कुर्यात् । अस्य
 श्रीशारिकाभमयतीमन्त्रस्य, महादेव श्रुतिः, त्रिष्टुप् कुम्भः, श्रीशारि-
 कादेवी देवता, शो भोजं श्री शक्तिः प्रां कालकं धर्मायकाममोक्षाये
 पूजने विनियोगः, इति कृताञ्जलिर्देव । महादेवश्रुपये नमः शिरसि,
 त्रिष्टुप्कुम्भं नमो मुखे, श्रीशारिकादेवतायै नमो हृदि, शो वांजाय
 नमो गुह्ये, श्री शक्तये नमः पादयो, प्रां कालकाय नमो नाभौ, पूजने
 विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । इति श्रुत्यादिन्यासः । ओं ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठा
 भ्यां नमः, ओं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ओं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ओं
 ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः, ओं ह्रीं कनिष्ठाभ्यां नमः, ओं ह्रीं अङ्गु-
 लपृष्ठाभ्यां नमः, । इति करन्यासः । च षट्क्षेप्यपि न्यसेत् । इति
 न्यासैर्देवं सप्रह्य,

"मूलाधारे मूलपिण्डो विष्णुकोटिसमप्रभाम् । सूर्यकोटिप्रतीकाशं
 चन्द्रकोटिप्रभां प्रिये ॥ विस्तन्तुस्वरूपां तां विन्दुत्रियलयां प्रिये ।
 ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन सहजेन धरानने ॥ मूलशक्तिवृद्धयेव मध्यशक्तिप्रबो-
 धनः । परमानन्दसन्तोदसानन्दं विस्तयेत् पराम् ॥ " इत्यन्तर्ध्वजं
 इत्या, मूलाधारे आमान्तवामपरमात्मज्ञानावेत्यामन्त्रतुष्टयं सचतुरधं
 रुद्रस्वप्तिममुज्ज्वलं रुद्रं ध्यात्वा, तन्मुखं मूलाग्रे "अहस्तां

जुहोमि स्वाहा” इत्यहन्तां समर्प्य, असत्यं वैशुष्यं कामं क्रोधं लोभं मर्दं मात्सर्यं जुहोमि सुपुञ्जासक्तमनस्तुवेण प्रत्येकं कृत्वा, अथवा “धर्मा-धर्मद्विर्द्विति स्वात्माग्नौ मनसा जुचा । सुपुञ्जावर्त्मना नित्यमजपृच्छी-जुहोम्यहम् ॥ इति कृत्वा पुनः इत्कमले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा भान-सोपचारैराराध्य यथाशक्ति जपहोमादिकं च मनसैव कृत्वा, कामक-लारूपं स्वात्मानं विचिन्त्य स्वदेहं गन्धादिना संपूज्य कलशस्थापनं कुर्यात् ।

तत्र स्वदत्ते त्रिकोणं वृत्तमण्डलं विधाय “आधारशक्ते नमः” इत्यभ्यर्च्य, तत्राधारं निधाय तदुपरि अस्त्राय फडिति शोधितं, नमः इति पूरितं, पात्रं शङ्खं वा संस्थाप्य, तत्र गङ्गे च यमुने वैवेत्यादि-ना तीर्थाभ्याषाह्य, ओमिति गन्धादि निगलित्य “वह्निसूर्यसोमकलाभ्यो नमः” इति संपूज्य धेनुमुत्रां प्रक्षर्य स्वमन्त्रेण संपूजयेदिति सामा-न्यार्प्य विधाय । ततः स्वयामे पट्टेणाभ्यर्गत्रिकोणविन्दुषाह्यवृत्तच-तुर्थं विधाय सामान्यार्प्योदकेन तं मण्डलमभ्युक्ष्य, तत्र “आधारशक्ति-भ्यो नमः” इति संपूज्य आधार संस्थाप्य “रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः” इति संपूज्य, फडिति कलश प्रक्षाल्य फारणेन संपूर्य, रक्तवस्त्रमाढ्यादिना संपूष्य देवीमुद्ध्या संस्थाप्य, “अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः” इति कलशं संपूज्य, “सौ सौममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः” इति द्रव्यं संपूज्य फडिति संरक्ष्य, हूमित्यवगुण्ठ्य, मूलेन संवीक्ष्य, नम इत्यभ्युक्ष्य मूलेन गन्ध-माघ्राय, कुम्भे पुष्पं दत्त्वा शापमोचनं कुर्यात् ।

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् । कर्त्तोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन० ते नाशयाम्यहम् ॥ सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे । अमाधोजमयि देवि शुक्रशपाह्निमुच्यताम् ॥ वेदानां प्रणयो बीजं ब्रह्मानन्दमयो यदि । तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु ॥ इति त्रिः पठित्वा, ततो “वांशीं वूं धं वीं चः ब्रह्मशपमोचितायै सुरदेव्यै नमः” इत्यपि त्रिद-न्यायं, हंस शुनिपदित्यादि अद्रिजा ऋतमित्यन्तं त्रिः पठित्वा, आनन्दमेरुचमष्टादशभुज त्रिनयनं पञ्चमुख सुरादेवीसहितं ध्यात्वा, “ॐ आनन्दमैरवाय नौपद् सहस्रमलवरयुक्त सुरादेव्यै नौपद्” इति त्रिः संपूज्य, द्रव्यमध्ये दक्षिणावर्तेन त्रिपंक्त्या अं १६ क १६ थं १६

इति विलिख्य, तन्मध्ये हंसः इति, तत्समावेशाद् द्रव्यमध्येऽमृतं वि-
चिन्त्य, धेनुमुद्रयामृतीकृत्य यमिति सुधावीजं मूलमपि चाष्टधा
पठेत् । तयोर्मध्ये त्रिकोणपदकोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य चतुरश्रे 'पूर्ण-
गिरिपीठाय नमः, उड्डीयानपीठाय नमः, कामरूपपीठाय नमः,
जालधरपीठाय नमः, इति संपूज्य, पदकोणे षडङ्गं संपूज्य, त्रिखण्डेन
त्रिकोणाग्रदक्षोत्तरं संपूज्य, मध्ये "आधारशक्त्यै नमः" इति संपूज्य,
त्रिकोणगर्भे यन्त्रिकां संस्थाप्य, नम इति सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य
मध्ये "रं यद्विमण्डलाय दशकलात्मने नमः" इति संपूज्य, फडिति
पात्रं प्रक्षाल्य यन्त्रिकोपरि संस्थाप्य, तत्र "शं अर्कमण्डलाय द्वाद-
शकलात्मने नमः" इति संपूज्य, त्रिकोणवृत्तपदकोणं पात्रे विलिख्य
समस्तव्यस्तमन्त्रेण संपूज्य यं मूलं धिलोममानृकां च पठन्नमृतेन त्रिको-
णं प्रपूर्य तत्र गन्धादि नि लिप्य "सौ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने
नमः" इति संपूज्य पूर्ववद्यन्त्रं द्रव्ये विलिख्य, त्रिकोणत्रिरेखायां शं
१६ कं १६ शं १६ इति विलिख्य मूलेन त्रिकोणं त्रिः संपूज्य, षडङ्गेन
पदकोणं संपूज्य, गङ्गेच यमुने चैवेति तीर्थमायाहा, भानन्दभैरवभैरव्यौ
स्वस्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वादितः न्तु गगनरत्नेभ्यो नमः पूर्वे । स्तूं स्वर्ग-
रत्नेभ्यो नमः दक्षिणे । म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः पश्चिमे । प्लूं पातालरत्ने-
भ्यो नमः उत्तरे । न्तु नागरत्नेभ्यो नमः मध्ये । इति संपूज्य मांसादि
संशोधयेत् । मांसपात्रमानीय फडिस्त्राय फडिति सामान्यार्घ्यैर्वकेनाभ्युक्ष्य
हुमित्यगुणैश्च यमित्यमृतमुद्रयामृतीकृत्य मूलं सप्तधोधार्य "प्र तद्वि-
ष्णुः स्तवते" इत्युच्चा संशोधयेत् । अम्यर्कं यजामहे" इत्युच्चा मीनं
शोधयेत् । "ओं विष्णुर्गोत्रं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आसिञ्चतु
प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते । गर्भं धेहि सिनीधाले गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अभिर्ता देवा आघस्ता पुष्करस्तजम् ॥" उं ह्रस्वः धीं जुंसः अमृते
अमृताद्भ्ये अमृतगर्णिणे अमृत आयय २ स्वाहा, इति कुण्डगोला-
दिकं संशोष्यावगुणैर्यामृतीकृत्य नदुपरि सप्तधा मूलं सज्ज्य तत्र
देवोमायाहा, तालत्रयेण दिग्बन्धन विधाय योनिमुद्रा प्रक्षर्ये ह्रस्वी नमः
इति संपूज्य शतमुद्रा प्रक्षर्य, षडङ्गेन सकलौकृत्य मन्त्र्यमुद्रया पात्र-
माच्छाद्य मूलमुच्चरन् पात्रं देवीरूपं विभाषयेत् । ततो घटमपीपे गु-
ह्यशक्तिभोगम्यपात्रयागिनी योग्यलिपाद्याप्यां च मनोपमधुपर्कपात्राणि प्रमेण

संस्थापयेत् । ततश्चर्वण्युत्कारणेन तन्त्रमुद्रया श्रीपात्राद् विन्दुस्तमुद्र-
त्य “आनन्दप्रैर्यं तर्पयामि नमः” इति त्रिः सन्तर्प्य, ततः “श्रीमच्छ्री
अमुकानन्दनाथधीगुरुपादुकां तर्पयामि नमः” इति त्रिः, एवं परमगुरु
परमाचार्यादीन् सन्तर्प्य, श्रीपात्रामृतेन मूलेन भीक्षुं सायुधां सवा-
हनां सपरिवारां तर्पयामि नमः, इति सन्तर्पयेदिति कलशस्थापनम् ॥

ततः पीठपूजा कुर्यात् । ॐ मण्डूकाय नमः, कालाग्निकृदाय०,
मूलप्रकृत्यै, आधारशक्त्यै, कमठाय, अनन्ताय, पृथिव्यै, सुधारणाय
रत्नहीपाय, कल्पवनाय, नन्दनोद्यानाय, मणिमण्डपाय, मणिषोदिका-
यै, रत्नसिंहासनाय, सूर्यसोमबह्निमण्डलेभ्यो, हस्तौः सदाशिवमहाप्रै-
तासनाय नमः, इति पीठं संपूज्य, वायुर्याजेन घामनासापुटेन स्वह-
व्याद् देवीं कुसुमाञ्जलीं सयोज्य, “देवेशि भक्तिमुलभे परिवारसम-
न्विते । पाषात् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देवि इहावह ॥” इति पठित्वा,
मूल श्रीवामदेवसहिते श्रीशारिकाभगवति इहागच्छ २ इह संतिष्ठ
२ इह स्निधेहि २ स्निच्छा भव २ नमः सर्वोपचारसहिता पूजा
गृह २ इत्याद्याहनादिमुद्राः प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठा लेलिहानमुद्रया
विधाय, दशदिग्बन्धनं कृत्वा अवगुण्य च धेनुयोनीं प्रदर्श्य घरा-
सिचक्रामयमुद्राञ्च प्रदर्श्य, श्रीपात्रामृतेन सायुधा सवाहना सप-
रिवारा सावरणा श्रीशारिकाभगवतीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति
त्रिः सन्तर्प्य, मूल श्रीवामदेवसहितशारिकाभगवत्यै पाद्य नमः, एवमर्घ्यं
स्वाहा, आचमनीयं सुधा, मधुपर्कं सुधा मुखे, स्नानीयं नमः, “पादुके
परिधायाथ शारिके रत्ननिर्मित । स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शुक्ति-
गताम् ॥” मूलेन स्नात्वा, पुनः “शारिके परिधायाथ पादुके रत्न-
निर्मिते । आगच्छ निर्मित रम्यमलङ्कारस्य मण्डपम् ॥” इति सुस्नाप्य
शुद्धदुकूलेनाङ्गं प्रोञ्छ्य, विचित्रपटवस्त्रकुङ्कुमकस्त्रचन्दनसिन्दूरमुकुट-
कुण्डलहारादि-नानालङ्कारान् दत्त्वा, मूलेन मध्यमानामाहुष्टाप्रगन्धो
नमः, एवमहुष्टनर्जनीभ्यां पुष्पाणि वीर्यं “उ जगद्भूमिमन्त्रमात
स्वाहा” इति घण्टा संपूज्य वामेन पाणिना तां चादयन् मूलेन धूप
दद्यात् । एव दीपचामर-लङ्घनज्वलादर्शनवेद्यादीन् निवेदयेत् । ततस्त-
त्त्रमुद्रया देवीं त्रिः सन्तर्प्य कृताञ्जलिं “श्रीशारिकाभगवति आवरण
ते पूजयामि नमः” इत्याद्या गृहोत्थावरणपूजामारभेत ।

तथादी चतुर्द्वारपूजा । ओं ह्रीं श्रीं गणपतिर्धापादुकां पूजयामि
नमस्तर्पयामि नमः । ॐ ध धर्मश्री० । ॐ वं वरुणश्री० । ॐ कुं कुवेर-
श्री० । पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति चतुर्द्वारप्रथमरेखायां
पूर्वादिकमेव पूजनम् ।

अथ द्वितीयरेखायां । ओं ह्रीं श्रीं इन्द्रधर्मापादुकापू० । ॐ अग्निश्री० ।
ॐ यमश्री० । ॐ निष्कान्तिश्री० । ॐ वरुणश्री० । ॐ वायुश्री० । ॐ
कुवेरश्री० । ॐ ईशानश्री० । ॐ ब्रह्मश्री० । ॐ विष्णुश्री० । पुष्पाञ्जलिं
दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति ।

ततस्तृतीयरेखायामेतेषामायुधानि पूजयेत् । यथा ॐ पद्मश्री० ।
ॐ शक्तिश्री० । ॐ दण्डश्री० । ॐ खड्गश्री० । ॐ पाशश्री० । ॐ ध्वजश्री० ।
ॐ गदाश्री० । ॐ त्रिशूलश्री० । ॐ पद्मश्री० । ॐ चक्रश्री० । पुष्पाञ्ज-
लिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति प्रथमावरणम् ।

अथ त्रिवृत्तपूजा । तत्रादौ प्रथमरेखाया मूलं दिव्यौघपराव्यगुरुरपक्-
कृतिश्रीपा०, द्वितीयरेखाया मूलं सिद्धोष्मापराव्यगुरुरपक्कृतिश्रीपा०, तृती-
यरेखायां मूलं मानवौघपराव्यगुरुरपक्कृतिश्रीपा०, अर्धेव ॐ स्वगुरुश्री०,
ॐ परमगुरुश्री०, ॐ परमोष्ठिगुरुश्री०, ॐ परमाचार्यगुरुश्री०, इति पुष्पा-
ञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेदिति द्वितीयावरणम् ।

ततोऽष्टदलेषु मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा अष्ट मातृकाः पूजयेत् ।
यथा—स्वाप्रदलमारभ्य चाम्रावर्तेन पूजनम् । ॐ ब्राह्मीश्री० । ॐ वैष्ण-
वीश्री० । ॐ अष्टिकाश्री० । ॐ अपराजिताश्री० । ॐ कौमारीश्री० ।
ॐ शम्भवीश्री० । ॐ वाराहीश्री० । ॐ नारासिंहिकाश्री० । इति संपूज्य
सप्ततर्प्यं, अष्टदलकेसरेषु दत्तावर्तेनाष्टभैरवान् पूजयेत् । ॐ असिता-
ङ्गभैरवश्री० । ॐ रुद्रभैरवश्री० । ॐ अष्टमैरवश्री० । ॐ क्रोधेशभैरव-
श्री० । ॐ उन्मत्तभैरवश्री० । ॐ कपालभैरवश्री० । ॐ भोषणभैरव-
श्री० । ॐ सहारभैरवश्री० । इति संपूज्य सप्ततर्प्यं योनिमुद्रया प्रण-
मेदिति तृतीयावरणम् । (तत्रैव वामावृत्त्या ब्राह्म्यादीनां पूजा कार्या ।)

अथ त्र्यम्बके मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ॐ अमाश्री० । ॐ कामा-

श्री० । ३ चारुर्द्धाधी० । ३ दङ्गधारिणीधी० । ३ ताराधी० । ३ पार्य-
ताधी० । ३ यक्षिणीधी० । ३ शिवाधी० । इति संपूज्य सन्तर्प्य योनि-
मुद्रया प्रणमेदिति चतुर्ष्वपरणम् ।

ततस्त्रिकोणेऽप्रकोणमारभ्य ३ कालिकाधी० । ईशाने ३ त्रिपुरसु-
न्दरीधी० । आग्नेये ३ धीतुर्गाधी० । इति संपूज्य सन्तर्प्य योनिमुद्रया
प्रणमेदिति पञ्चमावरणम् ।

ततो बिन्दो मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा तत्र यथोक्तरूपां श्रीदेवीं ध्यात्वा,
पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलं सप्तधोत्रायै श्रीमच्छ्रीयामदेवसहित श्रीशा-
रिकाभगवतीश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः, इति संपूज्य
सन्तर्प्य पूर्णपद् गन्धकुसुमधूपदीपच्छत्रादिभिः संपूजयेत् । (तत्रेष
चरामयी यङ्गचक्रे यथोक्तविधिना पूज्यौ ।) ततः कवचमहस्त्रनामस्तौ-
त्राणि पठेत्, नित्यहोमं च कुर्यात् । ततो यथाशक्ति मूलं जपरा
"गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं" इत्यादिना तर्पणं कुर्यात् ।

सर्वमङ्गल्यमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये व्यग्रकं गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

इति सप्तवारं प्रदक्षिणीकृत्य, सामयिकैः सह मूलेन पात्रघन्दनं
कृत्वा, पात्रमुद्भृत्य मस्तकान्तं नीत्वा देव्या प्रसादीकृतं विभाव्य,
मूलं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मू० विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा,
मूलं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, मूलं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा,
इति चुलकचतुष्टयं पीत्वा शेषं मूलमन्त्रं पठन् पिबेत् । चयणं च स्वीकृत्य,
नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ।

अवस्था शान्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुह्यः सदा ॥

इत्यादि शान्तस्तोत्रं पठित्वा, ईशाने मण्डलं विधाय तत्र निर्माल्येन
"निर्माल्ययासिन्ये नमः" इति संपूज्य सन्तर्प्य, सामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा
"इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थामु मनसा
वाचा कर्मणा पदभ्यामुदरेण शिश्रा यन्कृतं तन्मयं मदीयं श्रीशारिकाभग-
वतीचरणार्पणमस्तु स्वाहा" इति सन्तर्प्य, सामान्यार्घ्यपात्रं गृहीत्वा ।

साधु वासाधु यन्कर्म यथादाचरित मया ।

तत्सर्वं कृपया देवि गृह्णान्न मम मिदये ॥

इत्यपश्चक्रोपरि त्रिः परिभ्राम्य देवीहस्ते जलं निधाय शेषजलं
स्ववामहस्ते संस्थाप्य मूलं पठन् सप्तधा स्वात्मानं प्रोक्षयेत् । ततः

“ गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि ।

यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम् ॥ ”

इति पुष्पाञ्जलिना देवीं क्षमापयित्वा, संहारमुद्रया चक्रात् पुष्पं गृहीत्वाप्राप्य

“ तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि ।

यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ ”

इति स्वहृदये देवीं मानाय सुखं विहरेदिति ॥

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी ।

शारिकातर्कस्वरूपा न देया तत्त्ववादिभिः ॥

शारिकापद्धतिर्गुह्या नित्यार्चनक्रमाङ्किता ।

अदीक्षितान्यशिष्येभ्यो गोपनीया तु देशिकैः ॥

इति धीरुद्रयामले तन्त्रे दशविंशत्यध्याये

श्रीशारिकायाः पद्धतिः ॥ २ ॥

अथ

श्रीशारिकाकवचम्

श्रीभैरव उवाच ।

अधुना 'मृणु देवेशि शारिकाकवचं परम् ।

त्रैलोक्यमोहनं नाम मूलमन्त्रमयं परम् ॥ १ ॥

देवि वक्ष्यामि ' त्रै- पाठः ।

'यस्य श्रवणमात्रेण सर्वभङ्गफलं लभेत् ।
 सर्वापत्तारणं दिव्यं सर्वसिद्धिप्रदं कलौ ॥ २ ॥
 सर्वस्वं मे रहस्यं मे परमं परमाद्भुतम् ।
 धारणादस्य देवेशि विष्णुना स जलोद्भवः ॥ ३ ॥
 दानवेन्द्रो हतः शीघ्रमन्धकारो यथेन्दुना ।
 मयापि त्रिपुराभ्यक्तो दानवो जिष्णुना^१ बलः ॥ ४ ॥
 जम्भो वृत्रासुरो देवि प्रभावादस्य वर्मणः ।
 कचस्यास्य देवेशि ऋषिर्भैरव ईरितः ॥ ५ ॥
 त्रिष्टुप् छन्दो देवता च त्रैलोक्यमोहनेश्वरी ।
 शारिका शर्म बीजं च मा शक्तिः कीलकं गजः ।
 त्रैलोक्यमोहविद्यार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

अस्य श्रीशारिकाभगवतीकवचस्य, श्रीभैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः,
 त्रैलोक्यमोहनेश्वरी शारिकाभगवती देवता, शां बीजं श्रीं शक्तिः फ्रां
 कीलकं, त्रैलोक्यमोहनकवचपाठे विनियोगः । भैरवऋषये नमः शिरसि ।
 त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीशारिकादेवतायै नमो हृदि । शा बीजाय
 नमो नाभा । श्रीं शक्तये नमो गुह्ये । फ्रां कीलकाय नमः पादयोः ।
 त्रैलोक्यमोहनकवचविनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । शामिति पञ्चदीर्घयुक्तबी-
 जेन करपङ्क्त्यासौ कृत्वा ध्यायेत् ।

श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां

नागेन्द्रहारवलायां सितकण्ठमान्याम् ।

सिन्दूरकुङ्कुममहस्रमरीचिदीप्तिं

श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ॥

ओं मे दुर्गा शिरः पायादेकाक्षरविभूषणा ।

ओं ह्रीं चण्डी ललाटे मे जगदुल्लासरूपिणी ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बरा पातु भुवौ मे भगमालिनी ।

- ओं ह्रीं श्रीं हूं च नेत्रेऽव्यात् सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ ८ ॥
 ओं ह्रीं श्रीं हूं फ्रां अव्यान्मे श्रुती शङ्करवज्रभा ।
 ओं ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं-पातु नासां नारायणेश्वरी ॥ ९ ॥
 ओं ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां मे पातु वक्त्रं सरस्वती ।
 अंआंईं रदान् पातु मातृकाशेखरेश्वरी ॥ १० ॥
 उंऊंअंअं लंलंएं पायादोष्ठौ भवप्रिया ।
 आंआंअंअः गलं पातु नीलकण्ठासनेश्वरी ॥ ११ ॥
 कंखंघंघं मे पातु स्कन्धौ स्कन्दसमर्चिता ।
 'चंछंजंभंजं मे पायाद् वक्षो वामप्रियाभिवका ॥ १२ ॥
 टंठंढंढं मे पायात् पार्श्वौ पर्वतनन्दिनी ।
 तंथंदंथं मे पातु कुक्षिं कुलाकुलेश्वरी ॥ १३ ॥
 पंफंभंभं मे पातु नाभिं नारदसेविता ।
 घंरंलंवं गुदं पातु गुह्यकेशरपूजिता ॥ १४ ॥
 शंपंसं कटिं पातु देवी कात्यायनी सदा ।
 लंलः ऊरू सदा पातु सर्वसारस्वतप्रदा ॥ १५ ॥
 ओं शां जान् शिवा पातु उंआं जङ्घेऽवतादुभा ।
 ओं फ्रां पादां सदा पातु राजमातङ्गिनी वम ॥ १६ ॥
 ओं हूं पादादिमूर्धान्तं वपुर्मे पातु कुम्भिका ।
 ओं श्रीं मूर्धादिपादान्तं वपुर्मे पातु शरदा ॥ १७ ॥
 ओं ह्रीं सप्ताक्षरी पातु शारिका सकलं वपुः ।
 पूर्वं मां पातु ब्रह्माक्षी वह्नौ मे वैष्णवी सदा ॥ १८ ॥
 दक्षिणेऽवतु मां चण्डी नैर्ऋते माऽपराजिता ।
 पश्चिमेऽवतु कौमारी वायव्ये शाम्भवी च याम् ॥ १९ ॥
 वाराही चोत्तरे पायादीशाने नारसिंहिका ।

प्रभाते माममा पातु मध्ये कामाऽवताच्च माम् ॥ २० ॥
 चार्वङ्गी मां दिनान्तेऽव्यान्निशादौ टङ्कधारिणी ।
 निशीथेऽव्यादुग्रतारा निशान्ते पार्वती च माम् ॥ २१ ॥
 सर्वत्र यचिणी पातु शिवा मां पातु सर्वदा ।
 असिताङ्गः चित्तेः पातु रुक्मा पातु पाथसः ॥ २२ ॥
 चण्डो मां पातु मरुतः क्रोधोऽव्यान्मां हुताशनात् ।
 उन्मत्तः सोमतः पातु कपाली सूर्यतोऽवतु ॥ २३ ॥
 भीषणो यज्ञविघ्नातु संहारः शून्यमण्डलात् ।
 रणे मां कालिका पातु द्यूते त्रिपुरसुन्दरी ॥ २४ ॥
 दुर्गावतु विवादे मां श्रीचक्रं सर्वदावतु ।
 सर्वत्र सर्वदा देवी पातु मा शारिका परा ॥ २५ ॥
 धनं पुत्रं सुतान् दारान् गृहं यद्वस्तु मामकम् ।
 तत्तन्मम शिवः पातु वामदेवश्चिदीश्वरः ॥ २६ ॥
 इत्येतत् कञ्चं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
 त्रैलोक्यमोहनं नाम शारिकाया रहस्यकम् ॥ २७ ॥
 विनामुना न सिद्धिः स्यात् कवचेन्द्रेण पार्वति ।
 कोटिलक्षप्रजस्य मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ॥ २८ ॥
 तस्मात् पठेच्छिवे वर्म मनुगर्भमनुत्तमम्^१ ।
 सर्वोत्पातप्रशमनं बलबुद्धिप्रवर्धनम् ॥ २९ ॥
 परमानन्ददं लोके परमैश्वर्यकारणम् ।
 यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥ ३० ॥
 स एव भैरवाध्यक्षत्रैलोक्यविजयी विभुः ।
 रवौ भूर्जे लिखेद्दर्भं स्वयम्भूदुमुपसृजा ॥ ३१ ॥
 कुमुमेनाष्टगन्धेन स्तन्येन निजरेतसा ।

धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥ ३२ ॥
 धनकामी लभेद्वित्तं पूत्रकामी लभेत् प्रजाम् ।
 रणे रिपून्मरो हन्ता कन्याणीं गृहमाविशेत् ॥ ३३ ॥
 धृत्वा वृत्तमि देवेशि वाग्मिन्नं जायते क्षणात् ।
 बन्ध्या च काकान्ध्या च मृतवत्सा लभेत् सुतान् ॥ ३४ ॥
 मार्कण्डेयायुषो देवि साक्षाद्भयणोपमान् ।
 किंकिं न लभते मर्त्यः पठन् कवचमुत्तमम् ॥ ३५ ॥
 यः पठेदर्धरात्रे तु रमशाने मुक्तकुन्तलः ।
 पीत्वा शीघ्रं स देवेशि देवीदर्शनमाप्नुयात् ॥ ३६ ॥
 स्तम्भयेद्भास्करं वायुं मोहयेत् त्रिजगद् ध्रुवम् ।
 बहु किं कथ्यतां तस्य कवचस्यास्य धारणात् ॥ ३७ ॥
 पठनाच्छ्रवणाद् वापि स भवेद् भैरवोपमः ।
 इतीदं कवचं देवि त्रैलोक्यवश्यकारणम् ॥ ३८ ॥
 त्रैलोक्यमोहनं नाम गोपनीयं सुरेश्वरि ।
 यस्य कस्य न दातव्यं विना शिष्येण पार्वति ॥ ३९ ॥
 दीक्षिताय कुलीनाय दत्त्वा मोक्षमावप्नुयात् ।
 विना दानं न गृहीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना ॥ ४० ॥
 दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 अन्यथा यस्तु गृह्णीयाद् दद्याद्वा कवचेश्वरम् ॥ ४१ ॥
 पुत्रान् दारान् सुतांश्चैव (तस्य) योगिन्यां भक्षयन्ति हि ।
 अज्ञात्वा कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलां शिवे ॥ ४२ ॥
 स भवेच्छिवहा सत्यं सर्वोपद्रवसङ्कुलः ।
 धृत्वा यः कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलां शिवे ॥ ४३ ॥
 स एव परमां सिद्धिं लभते नात्र संशयः ।

इतीदं कवचं देवि सारं सर्वस्वमुत्तमम् ॥ ४४ ॥
 रहस्यं शारिकारत्नं गोपनीयं स्थयोनिवत् ।
 सर्वकामप्रदं दिव्यं त्रैलोक्यमोहनाभिधम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
 श्रीशारिकायाः त्रैलोक्यमोहनकवचम् ॥ ३ ॥



अथ

श्रीशारिकासहस्रनामकम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

या सा देवी पुराख्याता शारिकारूपधारिणी ।
 जालन्धरराक्षसघ्नी प्रद्युम्नशिखरे स्थिता ॥ १ ॥
 तस्या नामसहस्रं ते मन्त्रगर्भं जयावहम् ।
 कथयामि परां विद्यां सहस्राख्याभिधां शिवे ॥ २ ॥
 शिलायाः शारिकाख्यायाः परसर्वस्वरूपिणीम् ।
 विना नित्यक्रियां देवि विना न्यासं विनार्चनम् ॥ ३ ॥
 विना पुरस्क्रियां जाप्यं विना होमं च तर्पणम् ।
 विना श्मशानगमनं विना समयपूजनम् ॥ ४ ॥
 यया लभेत् फलं सर्वं तां विद्यां शृणु पार्वति ।
 या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका ॥ ५ ॥

भुजत्ववति विश्वं तु संहरिष्वति तामसी ।
 सैव संसारिणां देवि परमैश्वर्यदायिनी ॥ ६ ॥
 परपदप्रदाप्यन्ते महाविद्यात्मिका शिला ।
 तस्या नामसहस्रं ते वर्णयामि रहस्यकम् ॥ ७ ॥
 रहस्यं मम सर्वस्य सकलाचारवल्लभम् ।
 यो जपेत् परमां विद्यां पठेदात्म्यसहस्रकम् ॥ ८ ॥
 धारयेत् क्वचं दिव्य पठेत् स्तोत्रेश्वरं परम् ।
 किं तस्य दुर्लभं लोके नाप्नुयात् पद्यदीश्वरि ॥ ९ ॥
 अस्य नाम्ना सहस्रस्य महादेव ऋषिः स्मृतः ।
 ब्रह्मोऽनुष्टुप् देवता च शारिका परिकीर्तिता ॥ १० ॥
 शर्म बीजं रमा शक्तिः सिन्धुरः कीलकं स्मृतम् ।
 धर्मार्थकाममोक्षार्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ११ ॥
 ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु पर्वतनन्दिनि ।

अस्य ध्याशारिकामगवतीसहस्रनामस्तोत्रस्य, ध्यामहादेव ऋषिः,
 अनुष्टुप् छन्दः, ध्याशारिकाभगवती देवता, शार्थज ध्याशक्ति प्राकीलकं
 धर्मार्थकाममोक्षार्थं विनियोगः । ऋष्यादिन्यास कृत्वा, हाभामित्यादिना
 कराङ्गन्यासौ ॥ ध्यानम्

बालार्ककोटिसदृशीमिन्दुचूडा कराम्बुजैः ।
 वरचक्राभयार्सीध धारयन्ती हसन्मुखीम् ॥ १ ॥
 सिंहारूढा रक्तवस्त्रा रक्ताभरणयूषिताम् ।
 वामदेवाङ्गमिलया हृत्पथे शारिका भजे ॥ २ ॥
 बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूडा
 वरामिचक्राभयबाहुमाद्याम् ।

सिंहाधिरूढां शिववामदेह-
 लीना भजे चेतसि शारिकेशीम् ॥ ३ ॥

जोर्हीर्ध्रुंकांआंशांश्रीशारिका श्यामसुन्दरी ।

शिला शारी शुक्ली शान्ता शमन्तमानसगोचरा ॥ १ ॥

शान्तिस्था शान्तिदा शान्तिः श्यामा श्यामपयोधरा ।

देवी शशाङ्कविम्बाभा शशाङ्ककृतशेखरा ॥ २ ॥

शशाङ्कशोभिलावण्या शशाङ्कमध्यवासिनी ।

शार्दूलवाहा देवेशी शार्दूलस्थितिरुत्तमा ॥ ३ ॥

शार्दूलचर्मवसना शक्तिः शार्दूलवाहना ।

गौरी पद्मावती पीना पीनवचोऽजकुटुमला ॥ ४ ॥

पीताम्बरा रक्तदन्ता दाडिमीकुसुमोपमा ।

स्फुरद्गङ्गाशुसचिता रत्नमण्डलविग्रहा ॥ ५ ॥

रक्ताम्बरधरा देवी रत्नमालाविभूषणा ।

रत्नसंमूर्छिताभा च दीप्ता दीप्तशिखा दया ॥ ६ ॥

दयावती कल्पलता कम्पान्तदहनोपमा ।

भैरवी भीमनादा च सद्भानकमुखी भया ॥ ७ ॥

कारा कारुण्यरूपा च भगमालाविभूषणा ।

भगेश्वरी भगस्था च कुरूकुलां कृशोदरी ॥ ८ ॥

कादम्बरी पटोत्कृष्टा परमा परमेश्वरी ।

सती सरस्वती सत्या सत्यासत्यस्वरूपिणी ॥ ९ ॥

परम्परा पटाकारा पाटला पाटलप्रभा ।

पद्मिनी पद्मवदना पद्मा पद्मकरा शिवा ॥ १० ॥

शिवाश्रया शरच्छोन्ता शची रम्भा विभावरी ।

द्युमन्तिस्तरणा पाठा पीठेशी पीवराकृतिः ॥ ११ ॥

१ 'शान्ति' न्व पाठः । २ 'प्रभा' ख पाठः । ३ 'सीवा' ख, पाठा ।

४ 'श्री' ख, पाठा । ५ 'कचोरकटा' न्व, पाठा । ६ 'सरस्वती' ख, पाठा ।

७ 'शरकान्त' न्व, पाठा । ८ 'प्रसवरा' न्व पाठा । ९ 'पीवरा' न्व पराकृति ख, पाठा ।

अचिन्त्या मुमलाधारा मातङ्गो मधुरम्बना ।
 वीरामीतप्रिया गाधा गारुदी गरुडध्वजा ॥ १२ ॥
 अतीवसुन्दराकारा सुन्दरी सुन्दरालका ।
 अलका नाकमध्यस्था नाकिनी नाकिपूजिता ॥ १३ ॥
 पातालेश्वरपूज्या च पातालतलधारिणी ।
 अनन्तानन्तरूपा च सञ्ज्ञाता (१००) ज्ञानवर्धिनी ॥ १४ ॥
 अमेया ह्यप्रमेया च अनन्तादित्यरूपिणी ।
 द्वादशादित्यसंपूज्या शशी रयामाकवीजिनी ॥ १५ ॥
 विधासा भासुरवर्णा समस्तासुरधाविनी ।
 सुधामयी सुधामूर्तिः सुधा सर्वमियद्वरी ॥ १६ ॥
 सुखदा च सुरेशानी कुशानुवर्द्धमा हविः ।
 स्वाहा स्वादेशनेत्रा च सप्रिवकाप्रितपिता ॥ १७ ॥
 सोमसूर्याग्निनेत्रा च भूर्भुवःस्तःस्वहृदिणी ।
 भूमिर्भूदेवपूज्या च स्वयम्भूः स्वात्मपूजका ॥ १८ ॥
 स्वयम्भूपुष्पमालाढ्या स्वयम्भूपुष्पवर्द्धभा ।
 आनन्दकन्दली कन्दा स्कन्दमाता शिलालया ॥ १९ ॥
 चेतना चिद्भयाकारा भवपत्नी भयापहा ।
 निमेश्वरी गणेशानी निमेषिष्वमिनी निशा ॥ २० ॥
 वरया वशिजनस्तुत्या स्तुतिः श्रुतिधरा श्रुतिः ।
 शास्त्रविधानविज्ञा च वेदशस्त्रार्थक्रोविदा ॥ २१ ॥
 वेद्या वेदमयी विद्या विधातृवरदा वधूः ।
 वधूरूपा वधूपूज्या वधूपानप्रवर्तिता ॥ २२ ॥
 वधूपूजनसन्तुष्टा वधूमालाविभूषणा ।
 रामा रामेश्वरी राम्या कुलाकुलविचारिणी ॥ २३ ॥

वितर्कतर्कनिलया प्रलयानलसन्निभा ।

यज्ञेश्वरी यज्ञमुखा याजका यज्ञपात्रका ॥ २४ ॥

यज्ञेश्वरी यज्ञधात्री पार्वती पर्वताश्रया ।

पिलम्पिता पदस्थाना पददा नरकान्तका ॥ २५ ॥

नारी नर्मप्रिया श्रीदा श्रीदश्रीदा (२००) शरायुधा ।

कामेश्वरी रतिर्हृतिराहुतिर्हव्यवाहना ॥ २६ ॥

हरेश्वरी हरिचधूर्हाटकाङ्गदमण्डिता ।

हृषुपा स्वर्गतिर्वैद्या सुमुखा च महौषधिः ॥ २७ ॥

सर्वरोगहरा माध्वी मधुपानपरायणा ।

मधुस्थिता मधुमयी मधुदानविशारदा ॥ २८ ॥

मधुवृत्ता मधुरूपा मधूककुसुमप्रभा ।

माधवी माधवीवल्ली मधुमत्ता मदालसा ॥ २९ ॥

मारप्रिया मारपूज्या मारदेवप्रियङ्गुरी ।

मारेशी च मृत्युहरा हरिकान्ता मनोन्मना ॥ ३० ॥

महावैद्यप्रिया वैद्या वैद्याचारा सुरार्चिता ।

सौमन्ता पीनवपुषी गुटी गुर्वी गरीयसी ॥ ३१ ॥

कालान्तका कालमुखी कँठोरा करुणामयी ।

नीला नैभी च वागीशी दूर्वा नीलसरस्वती ॥ ३२ ॥

अपारा पारगा गम्या गतिः प्रीतिः पयोधरा ।

पयोदसदृशञ्जया पारदाकृतिलालसा ॥ ३३ ॥

सरोजनिलया नीतिः कीर्तिः कीर्तिकरी कर्था

१ 'यानपात्रमा' ख पाठ. २ 'स्वमुखा' ख पाठ. ३ 'सुमन्ता' ख पाठ.

४ 'कचोरा' ख पाठ. ५ 'नादानादा इति' ख. पाठः.

६ 'रुपा' ख पाठ.

काशी कांम्या कपर्दाशा काशपुष्पोपमा रमा ॥ ३४ ॥

रामा रामप्रिया रामभद्रदेवममर्चिता ।

रामसपूजिता रामसिद्धिदा रामराज्यदा ॥ ३५ ॥

रामभद्रार्चिता रेखा देवकी देवप्रत्सला ।

देवपूज्या देवप्रिया देवदायनचर्चिता ॥ ३६ ॥

दूती द्रुतगतिर्दम्भा दामिनी विजया जया ।

अशेषसुरसपूज्या निःशेषामुरस्रदिनी ॥ ३७ ॥

वटिनी वटमूलस्था लास्यहास्यकगल्लभा ।

अरुणा निर्गुणा सत्या सदासन्तोषवर्धिनी ॥ ३८ ॥

मौम्या यजुर्ह्रा याम्या (३००) यमुना यामिनी यमी ।

दाच दया च उरदा दान्भ्रमेभ्या पुरन्दरी ॥ ३९ ॥

पौरन्दरी पुलोमेशी पौलोमी पुलकाङ्कुरा ।

पुरस्था वनभूर्वन्या गानरी वनवारिणी ॥ ४० ॥

समस्तवर्णनिलया समस्तवर्णपूजिता ।

समस्तवर्णवर्णाढ्या समस्तगुरुवर्द्धभा ॥ ४१ ॥

समस्तमृण्मालाढ्या मालिनी मधुपलना ।

कौशप्रदा कोशवाता चमत्कृतिरलम्बुसा ॥ ४२ ॥

हासदा सदसद्रूपा सर्ववर्णमयी स्मृतिः ।

सर्वाक्षरमयी त्रिधा मूलविधेश्वरीश्वरी ॥ ४३ ॥

अकारा षोडशाकारा कारान्धविमोचिनी ।

ककारव्यञ्जनाक्रान्ता सर्वमन्त्राक्षरालया ॥ ४४ ॥

अणुरूपाप्यमला च त्रैगुण्याप्यपराजिता ।

अम्बिकाभ्यालिङ्का चाम्बा अनन्तगुणमेखला ॥ ४५ ॥

अपर्या पर्यशाला च सादृहासा हसन्तिष्ठ ।

अद्रिकन्याप्यट्टहासाप्यजरास्यौप्यरुन्धती ॥ ४६ ॥
 अञ्जाक्षी चान्जिनी देवी ह्यम्बुजासनपूजिता ।
 अञ्जहस्ता ह्यञ्जपादा चान्जपूजनतोपिता ॥ ४७ ॥
 अकारमातृकादेवी सर्वानन्दकरी कला ।
 आनन्दसुन्दरी आद्या आधूर्णरुणलोचना ॥ ४८ ॥
 अदिदेवान्तकाऽकूरा आदित्यकुलभूषणा ।
 आंवीजमण्डना देवी चाकारमातृकावलिः ॥ ४९ ॥
 इन्दुस्तुतेन्दुविम्बास्या इनकोटिसमप्रभा ।
 इन्दिरा मन्दुराशाला चेतिहासा कथा स्मृतिः ॥ ५० ॥
 इला चेलुरसास्वादा इकाराचरभूषिता ।
 इन्द्रस्तुता चेन्द्रपूज्या इनभद्रा इनेश्वरी ॥ ५१ ॥
 इभगतिरिभगीतिरिकाराचरमातृका ।
 ईश्वरी वैभवप्रख्या चेशानीश्वरवल्लभा ॥ ५२ ॥
 ईशा कामकलादेवी ईकाराश्रितमातृका [४००] ।
 उग्रप्रभोग्रचिच्छा च उग्रवामाङ्गवासिनी ॥ ५३ ॥
 उषा वैष्णवपूज्या च उग्रतारोन्मुक्तानना ।
 उमेश्वरीश्वरी श्रेष्ठा उदकस्या ह्रुदेश्वरी ॥ ५४ ॥
 उदकाच्छोदकदा च उकारोद्भासमातृका ।
 ऊष्मा प्यूषा ऊषणा च तथोचितवरैप्रदा ॥ ५५ ॥
 ऋणहर्त्री ऋकारेशी ऋत्त्वर्णा त्ववर्णभाक् ।
 लृकारभुकृटिर्वाला बालादित्यसमप्रभा ॥ ५६ ॥
 एणाङ्गमुकुटा चेहा एकाराचरवीजिता ।
 एणप्रिया एणमध्यवासिनी एणवत्मला ॥ ५७ ॥

१ 'मा' ख. पाठः । २ 'जव' ख. पाठः ।

३ 'गविप्रभा' उदिनादिम्यमुग्रभा' ख. पाठः ।

एणाङ्गमध्यमंस्था च ऐकारोद्गामकूटिनी ।
 लोकारशेखरा देवी औचित्यपदमण्डिता ॥ ५८ ॥
 अम्भोजनिलयस्याना अःस्वरूपा च स्वर्गतिः ।
 षोडशस्वरूपा च षोडशस्वरगायिनी ॥ ५९ ॥
 षोडशी षोडशाकारा कमला कमलोद्भवा ।
 कामेश्वरा कलाभिज्ञा कुमारी कुटिलालका ॥ ६० ॥
 कुटिला कुटिलाकारा कुटुम्बसंयुता शिवा ।
 कुलाकुलपदेशानी कुलेशी कुञ्जिका कला ॥ ६१ ॥
 कामा कामप्रिया कीरा कमनीया कपर्दिनी ।
 कालिका मद्रकाली च कालकामान्तकारिणी ॥ ६२ ॥
 कपालिनी कपालेशी कर्पूरचयचर्चिता ।
 कादम्बरी कोमलाङ्गी कारमीरी कुङ्कुमधुविः ॥ ६३ ॥
 कुन्ता कूर्चार्णवीजाढ्या कमनीया कुलाकुला ।
 करालास्या करालाची विकरालस्वरूपिणी ॥ ६४ ॥
 काम्यालका कामदुषा कामिनी कामपालिनी ।
 कन्धाधरा कृपाकर्त्री कङ्कारावरमातृका ॥ ६५ ॥
 खड्गहस्ता खर्परेशी खेचरी खगगामिनी ।
 खेचरीमुद्रया युक्ता खेचरतन्द्रायिनी ॥ ६६ ॥
 खगामना खलोलाङ्गी खेटेशी खलनाशिनी ।
 खेटकायुधहस्ता [५८०] च खराशुशुनिसन्निभा ॥ ६७ ॥
 खान्ता खमोजनिलया खकारोद्भासमातृका ।
 खमरी खीजनिलया यस्या खेचरवल्लभा ॥ ६८ ॥
 गुण्या गजाम्बजननी गणेशवग्दा गया ।

१ 'मद्रमातृका' ख पाठ । २ 'यया स्वस्या' ख पाठ ।

३ 'विजालिका' ख पाठ । ४ 'खलावीजाढ्या' ख पाठ ।

गोदावरी गदाहस्ता गङ्गाधरवरप्रदा ॥ ६६ ॥
 गोधो गोवाहनेशानी गरलाशनवल्लभा ।
 गाम्भीर्यभूषणा गङ्गा गकारार्णविभूषणा ॥ ७० ॥
 घृणा घोणाकरस्तुत्या घुर्घुरा घोरनादिनी ।
 घटस्था घटजसेन्या घनरूपा घुणेश्वरी ॥ ७१ ॥
 घनवाहनसेन्या च घकाराक्षरमातृका ।
 डान्ता डवर्णनिलया डाणुरूपा डणालया ॥ ७२ ॥
 डेशा डेन्ता डनाजाप्या डवर्णाक्षरभूषणा ।
 चामीकरवचिधान्त्री चन्द्रिका चन्द्ररागिणी ॥ ७३ ॥
 चला चलञ्चला चेला चन्द्रा चन्द्रकरा चली ।
 चञ्चुरीकस्वनालापा चमत्कारस्वरूपिणी ॥ ७४ ॥
 चडुली चाडुकी चार्वी चम्पा चम्पकमन्त्रिभा ।
 चीनाशुकधरा चाट्टी चकारार्णविभूषणा ॥ ७५ ॥
 छत्री छत्रधरा छिन्ना छिन्नमस्ता छटञ्छविः ।
 छायासुतप्रिया छाया छरणांमिलमातृका ॥ ७६ ॥
 जगदम्बा जगज्ज्योतिर्ज्योतीरूपा जटाधरा ।
 जयदा जयकर्त्री च जयस्था जयहामिनी ॥ ७७ ॥
 जगत्प्रिया जगत्पूज्या जगत्कर्त्री जरातुरा ।
 ज्वरघ्नी जम्भदमनी जगत्प्राणा जयाचहा ॥ ७८ ॥
 जम्भारिवरदा जैत्री जीवना जीववारूप्रदा ।
 जाग्रती च जगन्निद्रा जगद्योनिर्जलन्धरा ॥ ७९ ॥

१ 'गदाधरप्रिया गति' ख पाठ । २ 'गाता' ख पाठ ।

३ 'विमहा' ख पाठ । ४ 'गायत्री गजवाहना' ख पाठ । ५ 'घाण्या' ख, पाठ ।

६ 'गुणेश्वरी' ख पाठ । ७ 'चापा' ख पाठ । ८ 'चित्रा' ख पाठ ।

जालन्धरधरा जाया जकाराचरमातृका ।
 भम्पा भिम्भेश्वरी भान्ता भकाराचरमातृका ॥ ८० ॥
 जाणुरूपा जिणायासा (६००) जकारेशी जणायुधा ।
 जवर्गपीजभूपाद्या जकाराचरमातृका ॥ ८१ ॥
 टङ्गायुधा टकाराद्या टोटाची टसुकुन्तला ।
 टङ्गायुधा टलीरूपा टकाराचरमातृका ॥ ८२ ॥
 ठक्कुरा ठक्कुरेशानो ठक्करत्रितयेश्वरी ।
 ठःस्वरूपा ठवर्णाद्या ठकाराचरमातृका ॥ ८३ ॥
 डक्का डक्केश्वरी डिम्भा डवर्णाचरमातृका ।
 दिणी देश दिङ्गहस्ता ढकाराचरमातृका ॥ ८४ ॥
 येशा यान्ता यवर्गान्ता यकाराचरभूषणा ।
 तुरी तुर्या तुलारूपा त्रिपुरा तामसप्रिया ॥ ८५ ॥
 तोतुला तारिणी तारा सप्तविंशतिरूपिणी ।
 त्रिपुरा त्रिगुणा ध्येया त्र्यम्बकेशी त्रिलोकधृत् ॥ ८६ ॥
 त्रिवर्गेशी त्रयी त्र्यची त्रिपदा वेदरूपिणी ।
 त्रिलोकजननी भ्राता त्रिपुरेश्वरपूजिता ॥ ८७ ॥
 त्रिकोणरूपा त्रिकोणेशी कोणत्रयनिवासिनी ।
 त्रिकोणपूजनतुष्टा त्रिकोणपूजनप्रिता ॥ ८८ ॥
 त्रिकोणदानसलशा सर्वकोणशुभार्थदा ।
 वसुकोणस्थितादेवी वसुकोणार्थवादिनी ॥ ८९ ॥
 वसुकोणपूजिता च षट्चक्रक्रमवासिनी ।
 नागपत्रस्थिता शारी त्रिवृत्पूजनार्थदा ॥ ९० ॥
 चतुर्द्वाराग्रगा चक्रवाद्यान्तरनिवासिनी ।
 तामसी तोमरप्रख्या तुम्बुरुस्वननादिनी ॥ ९१ ॥

तुलाकोटिस्वना तार्पा तपसा फलवर्धिनी ।
 तरलाधी तमोहरी तारकामुरपातिनी ॥ ६२ ॥
 तरी तरणिरूपा च तकाराक्षरमातृका ।
 स्यली स्यविरूपा च स्थूला म्याली स्वलाब्जिनी ॥ ६३ ॥
 स्यावरेशा स्थूलमुखी धकाराक्षरमातृका ।
 द्वितिका शिवद्वी च दण्डायुधधरा द्युतिः ॥ ६४ ॥
 दया दीनानुकम्पा च दम्भोलिधरवल्लभा ।
 देशानुचारिणी द्वेका द्वाविडेशी दवीपती ॥ ६५ ॥
 दाचायणी द्रुमलता (७००) देवमाताधिदेवता ।
 दधिना दुर्लभा देवी देवता परमाक्षरा ॥ ६६ ॥
 दामोदरसुपूज्या च दामोदरचरप्रदा ।
 दनुपुत्री विनाशा च दनुपुत्रकुलार्चिता ॥ ६७ ॥
 दण्डहस्ता दण्डिपूज्या दमदा च दमस्थिता ।
 दशधेनुरूपा च दकाराक्षरमातृका ॥ ६८ ॥
 धर्म्या धर्मप्रसूधन्या धनदा धनवर्धिनी ।
 धृतिर्धूर्ता धन्यवधूर्धकाराक्षरमातृका ॥ ६९ ॥
 नलिनीनालिका नाय्या नाराचायुधधारिणी ।
 नीपोपवनमध्यस्था नागेशी नरोत्तमा ॥ १०० ॥
 नरेश्वरी नृपाराध्या नृपपूज्या नृपार्थदा ।
 नृपसेव्या नृपपन्था नरनारायणप्रसूः ॥ १०१ ॥
 नर्तकी नीरजाक्षी च नवर्णाक्षरभूषणा ।
 पद्मेश्वरी पद्ममुखी पत्रयाना परापरा ॥ १०२ ॥
 पाराशरसुता पाठा परमर्गविमर्दिनी ।
 पूः पुरारिवधूः पम्पा पत्नी पत्रीशवाहना ॥ १०३ ॥
 पीवरामा पतिप्राणा पीनलाक्षी पतिव्रता ।

- पीठा पीठस्थितापीठा पीतालङ्कारभूषणा ॥ १०४ ॥
 पुरुरवस्तुता पात्री पुत्रिका पुत्रदा भजा ।
 पुष्पोत्तसा पुष्पवती पुष्पमालाविभूषणा ॥ १०५ ॥
 पुष्पमालातिशोभाख्या पकाराक्षरमातृका ।
 फलदा स्फीतगुह्या च फेरवारावभीषणा ॥ १०६ ॥
 फल्गुनी फल्गुतीर्थस्था फवर्णाकृतमण्डला ।
 बलदा बालाखिन्या च बाला बलारिपुमिया ॥ १०७ ॥
 बाल्यारस्था वर्धरेशी वकाराकृतिमातृका ।
 भद्रिका भीमपत्नी च भीमा भर्गशिखाऽभया ॥ १०८ ॥
 भयभी भीमनादा च भयानकमुखेवणा ।
 भिल्लीश्वरी भीतिहरा भद्रदा भद्रकारिणी ॥ १०९ ॥
 भद्रेश्वरी भद्रधरा भद्राख्या भाग्यवर्धिनी (८००) ।
 भगमाला भगावासा भगानी भवतारिणी ॥ ११० ॥
 भगयोनिर्भगाकारा भगस्था भगरूपिणी ।
 भगलिङ्गामृतप्रीता भकाराक्षरमातृका ॥ १११ ॥
 मान्या मानप्रदा मीना मीनकेतनलालसा ।
 मदोद्धता मनोन्मान्या मेना मैनाकवत्सला ॥ ११२ ॥
 मधुमत्ता मधुपूज्या मधुदा मधुमाधवी ।
 मासाहारा मासप्रीता मासभक्ष्या च मासदा ॥ ११३ ॥
 मारार्ता मत्स्यरूपा च मत्स्यघाता महत्तरा ।
 मेरुनृत्ताग्रतुङ्गास्या मोदकाहारपूजिता ॥ ११४ ॥
 मातङ्गिनी मधुमत्ता मदमत्ता मदेश्वरी ।
 मञ्जा मुग्धानना मुग्धा मकाराक्षरभूषणा ॥ ११५ ॥
 यशस्विनी यतीशानी यजकर्त्री यजुःप्रिया ।

यज्ञधात्री यज्ञफला यजुर्वेदघृचांफला ॥ ११६ ॥
 यशोदा यतिसेव्या च यात्रा यात्रिकवत्सला ।
 योगेश्वरी योगगम्या योगेन्द्रजनवत्सला ॥ ११७ ॥
 यदुपुत्री यमप्री च यकाराक्षरमातृका ।
 रत्नेश्वरी रमानाथसेव्या रथ्या रजस्वला ॥ ११८ ॥
 राज्यदा राजराजेशी रोगहर्त्री रजोवती ।
 रत्नाकरसुता रम्या रात्री रात्रिपतिप्रभा ॥ ११९ ॥
 रघोष्ठी राघवसेशानी रघोनाथममर्चिता ।
 रतिप्रिया रतिमुखा रकाराकृतिशेखरा । १२० ॥
 लम्बोदरी ललजिह्वा लास्यतत्परमानसा ।
 लूतावन्तुवितानास्या लक्ष्मीर्लजा लयालिनी ॥ १२१ ॥
 लोकेश्वरी लोकधात्री लाटस्या लक्षणाकृतिः ।
 लम्बा लम्बकचोलासा लकाराक्षरवर्धिनी ॥ १२२ ॥
 लिङ्गेश्वरी लिङ्गलिङ्गा लिङ्गमाला लसद्द्युतिः ।
 लक्ष्मीरूपा रसोल्लासा रामा रेवा रजस्वला ॥ १२३ ॥
 लयदा लक्षणा (६००) लोला लकाराक्षरमातृका ।
 वाराही वरदात्री च वीरसुर्वीरदायिनी ॥ १२४ ॥
 वीरेश्वरी वीरजन्या वीरचर्चणचर्चिता ।
 वरायुधा वराका च वामना वामनाकृतिः ॥ १२५ ॥
 वधूता वधकावध्या वध्यभूर्वाणिजमिया ।
 वसन्तलक्ष्मीर्वटुकी वटुका वटुकेश्वरी ॥ १२६ ॥
 वटुप्रिया वामनेया वामाचारैकलालसा ।
 वार्ता वाम्या वरारोहा वेदमाता वसुन्धरा ॥ १२७ ॥
 वयोयाना वयस्या च वकाराक्षरमातृका ।
 शम्भुप्रिया शरच्चर्चा शाद्रला शशिवत्सला ॥ १२८ ॥

शीतद्युतिः शीतरसा शोणोष्ठी शीकरप्रदा ।
 श्रीवत्सलाञ्छना शर्वा शर्ववामाङ्गवासिनी ॥ १२६ ॥
 शशाङ्कामललक्ष्मीश्च शार्दूलतनुरद्रिजा ।
 शोषद्वी शमीमूला शकाराकृतशेखरा ॥ १२७ ॥
 षोडशी षोडशीरूपा षडा षोडा षडानना ।
 षडहृटा षडूसास्वादा षडशीतिमुखाम्बुजा ॥ १२८ ॥
 षडास्यजननी षण्ठा षवर्णाक्षरमातृका ।
 सारस्वतप्रसूः सर्वा सर्वगा सर्वतोमुखा ॥ १२९ ॥
 समा सीता सतीमाता सागराभयदायिनी ।
 समस्तशोपशमनी सालम्बजी सुदक्षिणा ॥ १३० ॥
 सुषुप्तिः सुरसा साध्वी सामगा सामवेदजा ।
 सत्यप्रिया सोममुखी सूत्रस्या मृतवल्गभा ॥ १३१ ॥
 सनकेशी सुनन्दा च स्वर्गस्था सनातनी ।
 सेतुभूता समस्ताशा सकाराक्षरवल्गभा ॥ १३२ ॥
 हालाहलप्रिया हेलो हाहारावविभूषणा ।
 हाहाहृहृस्वरूपा च हलधायी हलिप्रिया ॥ १३३ ॥
 हरिनेत्रा घोररूपा हविष्याहुतिवल्गभा ।
 हंसचञ्चःस्वरूपा च सर्वमातृकपूजिता ॥ १३४ ॥
 ओं ऐं सौं ह्रीं महाविद्या त्र्यम्बांकां हृस्वरूपिणी (१०००) ।
 इति श्रीशारिकादेव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १३५ ॥
 पुण्यं पुण्यजनस्तुत्यं नृत्यं वैष्णवपूजितम् ।
 इदं यः पठते देवि धावयेद्यः मृणोति च ॥ १३६ ॥
 स एव भगवान् देवः मलयं सत्यं सुरेश्वरि ।
 एककालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः ॥ १३७ ॥

वामाचारपरो देवि तस्य पुण्यफलं शृणु ।
 मूकत्वं बधिरत्वं च कुष्ठं हन्याच्च श्वित्रिकाम् ॥ १४१ ॥
 वातपित्तकफान् गुल्मान् रक्तसावं विषूचिकाम् ।
 सद्यः शमयते देवि श्रद्धया यः पठेन्निशि ॥ १४२ ॥
 अपस्मारं कर्णपीडां शूलं रौद्रं भगन्दरम् ।
 मासमात्रं पठेद्यस्तु स रोगैर्मुच्यते ध्रुवम् ॥ १४३ ॥
 भौमे शनिदिने वापि चक्रमध्ये पठेद्यदि ।
 सद्यस्तस्य महेशानि शारिका वरदा भवेत् ॥ १४४ ॥
 चतुष्पथे पठेद्यस्तु त्रिरात्रं रात्रिभ्यत्यये ।
 दत्त्वा पतिं सुरा मुद्रां मत्स्यं मासं सभक्तकम् ॥ १४५ ॥
 बन्धूलत्वग्रसाकीर्णं शारी प्रादुर्भविष्यति ।
 यः पठेद् देवि लोलायां चिताया शवसन्निधौ ॥ १४६ ॥
 पायंपायुं त्रिवारं तु तस्य पुण्यफलं शृणु ।
 ब्रह्महत्यां गुरोर्हत्यां मर्त्यपानं च गोवधम् ॥ १४७ ॥
 महापातकमद्वातं गुरुतल्पगतोद्भवम् ।
 स्तेयं वा भ्रूणहत्यां वा नाशयेन्नात्र संशयः ॥ १४८ ॥
 स एव हि रमापुत्रो यशस्वी लोकपूजितः ।
 वरदानक्षमो देवि वीरेशो भूतवल्लभः ॥ १४९ ॥
 चक्रार्चने पठेद्यस्तु साधकः शक्तिसन्निधौ ।
 त्रिवारं श्रद्धया पुत्रः स भवेद्भैरवेश्वरः ॥ १५० ॥
 किंकिं न लभते देवि साधको वीरसाधकः ।
 पुत्रवान् धनवाञ्छेन सत्याचारपरः शिवे ॥ १५१ ॥
 शक्तिं सपूज्य देवेशि पठेत् स्तोत्रं परमियम् ।

१ 'एव नाशयेच्छा' ख पाठ । २ 'वृक्षे' ख पाठ । ३ 'वीर' ख पाठ ।

४ 'सुरापान' ख पाठ । ५ 'धनसपन्न' ख पाठ । ६ 'वर शुभम्' ख पाठ ।

इदं लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ १५२ ॥

इति नामसहस्रं तु शारिकाया मनोरमम् ।

गुह्यं गुह्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १५३ ॥

इति धीरुद्रधामले तन्त्रे दशविंशत्यक्षरे
धीशारिकाया सहस्रनामस्तोत्रकम् ॥ ४ ॥

—() o ()—

अथ

श्रीशारिकास्तोत्रम्

—o—

ज्येष्ठं ज्येष्ठे तव मनुशिरोमौलिमाखिवभूतं
ध्यायेच्चित्ते शशिधरकलाविन्दुविम्बावतंसम् ।

यो मन्त्रीशो जपति मनसा माननीयो महद्भि-
र्धन्यः पुण्यैः स भवति मरुद्धीज्यमानो मरुत्वान् ॥ १ ॥

परावीजं तेजोनिधिमधिमनौ यः प्रजपते
जगन्मोहध्वान्तामितपटलसूर्योदयमिदम् ।
स लोकेशो भूत्वा विचरति महामाश्रिकमखि-
र्धरायां वा नाके कणिपुरि यथेच्छं त्रिभुवने ॥ २ ॥

मावीजमानन्दजमिन्दुचूडं
सिद्धो जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये ।
स देवि देवेश्वरविष्टरार्धं
निविष्ट ईषन्मदिरारुणाक्षः ॥ ३ ॥

कूर्चं चमत्कारलसत्प्रमादं
जपेच्छिवे यः स्मरकेलिलोलः ।
हुंकारमात्रेण स वैरिवर्गं
हत्वा भवेद्भूपतिसार्वभौमः ॥ ४ ॥
गजार्णमाकर्ण्य जपेत् क्षणं यो
मृगेक्षणापीनकुचान्तरस्थः ।
स मेनकाकामरुणप्रवीणो
लीलावतीं केलिकलां करोति ॥ ५ ॥

शून्यं बीजं मन्त्रमध्ये जपेद्यो
मूढो जाड्याम्भोधिमग्नोऽरिभग्नः ।
तस्यास्यान्जान्निःसरन्ते सुवाचो
गर्भैः पर्यैर्मद्यसारप्रचाराः ॥ ६ ॥

कन्याण्वीजं यदि साधकेन्द्रो

जपेच्छिवे चेतसि वार्धरात्रे ।

स भोगवाङ्मयपरो नरेन्द्रो

भोगावर्ती प्राप्य भवेद्भगेशः ॥ ७ ॥

श्रीशारिकार्यं तत्र मन्त्रमध्ये

यो नाममन्त्र जपते महेशि ।

तस्याजिभूमौ नृपवर्गलक्ष्मी-

र्वशे भवेत् साधकलोकमौलेः ॥ ८ ॥

अरमरीबीजमन्त्रान्न यो जपेदर्धरात्रके ।

सिंहासना भगवती वरदा दर्शनप्रदा ॥ ९ ॥

विन्दुत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तनाग-

पत्रत्रिभुजधरणीगृहमण्डलस्थाम् ।

बालार्कपिम्बसदृशाननपिम्बपद्मा

यो ध्यायतेऽन्म स भवेद्भुवि सार्वभौमः ॥ १० ॥

यो विन्दुः स पितामहो हगिरसौ सूर्यः स्वरः कीर्तितो

यो रेफो दुरितौघमर्दनकरो बद्रः सदा गीयते ।

यः प्राणः स परः स एव भगवाच्चादः शिवः सर्वदा

देवी चन्द्रकला कलङ्करहिता माये ॥ तुभ्यं नमः ॥ ११ ॥

श्रीशारिकास्तवामिष पठति प्रभाते

यो वार्धरात्रसमयेऽर्चनकर्मकाले ।

इन्द्रः सुरासुरयुवः स्वयमेति तस्य

पूजा विधाय ददते त्रिदिवाधिपत्यम् ॥ १२ ॥

सीत देवि पञ्चाङ्ग शारिकाया रहस्यकम् ।

रेव परम गुह्य त्रैलोक्योद्धारस्यसमम् ॥ १३ ॥

पुष्प पवित्रमायुष्य धेयस्कर यशस्करम् ।

मकारैः पञ्चभिः पूज्यं साध्यं साधकसत्तमैः ॥ १४ ॥

संरक्ष्ये पुत्रवद् देवि दर्शयेदिष्टमित्रवत् ।

इदं रहस्यमाख्यातं शारिकासारमुत्तमम् ॥ १५ ॥

अभक्ताय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने ।

निन्दकायान्यशिष्याय स मन्त्री निरयी भवेत् ॥ १६ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् भवतानेन पञ्चाङ्गकथनेन हि ।

क्रीतास्मि तव दास्यस्मि किमन्यत् कथयामि ते ॥ १७ ॥

भीमैरव उवाच ।

पञ्चाङ्गतत्त्वमीशानि शिलासर्वस्वमुत्तमम् ।

गुह्यं गोप्यतमं देवि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥ १८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये

श्रीशारिकास्तोत्रम् ॥ ५ ॥



समाप्तं चेदं श्रीशारिकापञ्चाङ्गम् ॥



अथ

श्रीमहाराज्ञीपञ्चाङ्गम् ।

श्रीशैलशिखरामीन भगवन्तमुमापतिम् ।
चन्द्रार्धमुकुट देवं सूर्यसोमायिलोचनम् ॥ १ ॥
गजचर्मपरीधानं विरूपाक्ष सुराधिपम् ।
गणगन्धर्वमन्त्रेन्द्र-देवासुरनमस्कृतम् ॥ २ ॥
विहसन्तं जपन्तं च पठन्तं च मुहुर्मुहुः ।
नागाभरणभूषाढ्य ब्रह्माच्युतनमस्कृतम् ॥ ३ ॥
उत्थाय प्रणम्य भूत्वा पर्यपृच्छत भैरवी ।
श्रीदेव्युवाच ।

भगवन्स्त्वं परो देवः सुरासुरनमस्कृतः ।
गुणी वेदान्ततन्त्रज्ञो गुणातीतश्चिदीश्वरः ॥ ४ ॥
सर्वत किञ्जपासकस्तत्त्वं सर्वोत्तमं प्रभो^१ ।
अद्याप्यविदितं यन्मे तत्तत्त्वं वक्तुमर्हसि ॥ ५ ॥
श्रीभैरव उवाच ।

या देवी निष्कला श्यामा निराभामा निरञ्जना ।
महाश्रीषोडशीविद्या सा राज्ञीति निगद्यते ॥ ६ ॥
सकला राज्यदा लोके विद्याराज्ञी महेश्वरी ।
देवी पञ्चदशी सैव परब्रह्मकुटुम्बिनी ॥ ७ ॥
नृणां दारिद्र्यनाशाय प्रादुर्भूताय भारते ।
यस्याः पञ्चदशीविद्या गुह्यामविदिता पुरा ॥ ८ ॥

तां जपामि महाविद्यां तत्पञ्चाङ्गं स्मराम्यहम् ।

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् करुणाम्भोधे शरणागतवत्सल ।

या देवी लोकमातेति राज्ञी राज्यप्रदायिनी ॥ ९ ॥

दारिद्र्यहारिणी त्वद्य तत्पञ्चाङ्गं वदस्व मे ।

तत्त्वतो वेदतन्त्राख्यं यद्यहं प्रेयसी तव ॥ १० ॥

श्रीमैत्रव उवाच ।

मृणुष्यावहिता भूत्वा पटलं मन्त्रविग्रहम् ।

राश्याः सर्वस्वभूतं मे रक्ष्यं देवदुर्लभम् ॥ ११ ॥

मन्त्रोद्धारं महादेवि राश्या मद्बदनोदितम् ।

श्रुत्वा गोपय यत्नेन येन सिद्धिः प्रजायते ॥ १२ ॥

तारं माया मानलः कामशक्ती

मध्ये चाख्या भगवत्यै च राश्यै ।

मायावीजं ठद्वयं देवि राश्या

मन्त्रोद्धारो वर्णितो गोपनीयः ॥ १३ ॥

नास्यान्तरायो न क्लेशो न विपर्ययभीः शिवे^१ ।

सर्वसिद्धिप्रदो देवि मन्त्रोऽयं भाग्यवर्धनः ॥ १४ ॥

मन्त्रमुत्कीलयेदादौ ततः सञ्जीवयेन्मनुम् ।

सिद्धं मन्त्रं जपेद् देवि ततः संसृष्टितं चरेत् ॥ १५ ॥

ततो मन्त्रोऽयमीशानि साक्षात् सिद्धिप्रदो भवेत् ।

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ॥ १६ ॥

सर्वसंपत्प्रदं चैव सर्वार्थसाधकं तथा ।

सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वानन्दमयं तथा ॥ १७ ॥

सर्वसंमोहनं चक्रं पीठार्चाया प्रपूजयेत् ।

विन्दुस्त्र्यश्रं षडक्षं च वृत्ताष्टदलमण्डितम् ॥ १८ ॥
 उत्तत्रयं धरामग्र राज्ञीश्रीचक्रमीरितम् ।
 लयाङ्गमस्य देवेशि शृणु वेदागमोद्धृतम् ॥ १९ ॥
 यस्य श्रवणमात्रेण पूजायुतफलं लभेत् ।
 गणेशो भीमराजश्च कुमारो जाङ्गलेश्वरः ॥ २० ॥
 इन्द्राद्या लोकपालाश्च पूजनीयाश्च भृगुदे ।
 पृथत्रयेऽभ्यर्चनायां गुरुपञ्चित्रयी शिवे ॥ २१ ॥
 दिव्यसिद्धाधमर्त्यायाः पूज्या गन्धाद्यैः प्रिये ।
 रामकिर्नीलनागश्च तच्चक्रः पद्मनागकः ॥ २२ ॥
 पूर्वादिदिक्षु सपूज्या विदिक्षु शृणु पार्वति ।
 काकोटकः शङ्खपालः कुलिकः शेष ईश्वरि ॥ २३ ॥
 आग्नेयक्रमतः पूज्या नाईम्याद्या मातरस्त्वया ।
 भैरवास्त्यष्ट सपूज्या वामावर्तेन पार्वति ॥ २४ ॥
 ब्राह्मी च वैष्णवी चैव रुद्राणी चापराजिता ।
 कौमारी चैव चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ॥ २५ ॥
 असिताङ्गो रुक्मण्डः क्रोधेशोन्मत्तभीषणाः ।
 कपालीशश्च सहारः पूजनीया यथाक्रमम् ॥ २६ ॥
 श्रीदुर्गा शारिकादेवी वैखरी च शिवा शिवे ।
 कालिका त्रिपुरा चैव वामानुज्या षडश्रके ॥ २७ ॥
 लक्ष्मीः सरस्वती गाला पूजनीयास्तिकोणके ।
 विन्दो राज्यप्रदा राज्ञी विद्या पञ्चदशाक्षरी ॥ २८ ॥
 भूतेश्वर शिव देवि सङ्ग पञ्च ममर्चयेत् ।
 रुक्मिण च मुनापात्र पूजयेद्भद्रक तथा ॥ २९ ॥
 योगिनीः क्षेत्रपालाश्च भूतः भूतत्रिणापकम् ।

रामेश्वरं महेशानि स्तयाङ्गमिदमीरितम् ॥ ३० ॥

श्रीराज्ञीमूलमन्त्रस्य ऋषिर्नृणां समीरितः ।

गायत्री छन्द ईशानि राज्ञीदेवी च देवता ॥ ३१ ॥

माया बीज शरच्छक्तिः कामः कीलकमीश्वरि ।

भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तिता ॥ ३२ ॥

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि सात्त्विकं कामनावहम् ।

सर्वसिद्धिप्रदं देवि मन्त्रकोटिफलप्रदम् ॥ ३३ ॥

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रा

सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम् ।

खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्ता

राज्ञीं भजामि विकसद्ददनारविन्दाम् ॥ ३४ ॥

(चतुर्भुजा चन्द्रकलार्धशेखरा

मिंढासनस्था भुजगोपवीतिनीम् ।

पाशाङ्कुशाम्भोरहखड्गधारिणीं

राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्) ॥ ३५ ॥

अधुना देवि वक्ष्यामि प्रयोगानष्ट तत्त्वतः ।

येषां साधनमात्रेण मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ ३६ ॥

स्तम्भन मोहनं चैव मारणाकर्षणे प्रिये ।

वशीकारं तथोचाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ ३७ ॥

एतेषां साधनं वक्ष्ये प्रयोगाणां महेश्वरि ।

(१) रवौ स्नान्त्वा जपेन्मूलं रमशानेऽयुतसंख्यया ॥ ३८ ॥

हुनेच्छितानले सर्पिर्मालिनीकेशसञ्चयम् ।

स्तम्भनं जायते वारिचन्द्रवार्तार्कपाथसाम् ॥ ३९ ॥

(२) चन्द्रे तथा रमशानम्यः शयवेशधरः सुधीः ।

जपेन्मन्त्रायुतं सम्यक् कुर्याद् होमं दशांशतः ॥ ४० ॥

घृतजानीरशाखाभिर्लवङ्गैर्मोहनं भवेद् ।

(३) भौमे स्नात्वा रमशाने च चित्तान्ने संजपेन्मनुम् ॥ ४१ ॥

हुनेद् दशांशतः सर्पिर्मानिक्यटकगोमयान् ।

शत्रुः कालसमानोऽपि मृत्युमेप्सति पार्वति ॥ ४२ ॥

(४) बुधे रमशाने देवेशि जपेन्मन्त्रायुतं निशि ।

हुनेदाज्यं दशांशेन सचण्डालकचं प्रिये ॥ ४३ ॥

रम्भा तिलोत्तमा चापि प्रातः प्रादुर्भविष्यति ।

(५) गुरौ जपेन्मनुं देवि रमशाने मुक्तकुन्तलः ॥ ४४ ॥

अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सपायसम् ।

सशरं घनसारं च भृत्यत्रां याति वासवः ॥ ४५ ॥

(६) शुक्रे रमशानदेशे तु जपेदयुतसंख्यया ।

दिगम्बरो मुक्तकेशा हुनेदाज्यं च सौन्दुकम् ॥ ४६ ॥

सर्वाशर्करं हुत्वा रिपुमुच्चाटयिष्यति ।

(७) शनौ रमशाननिलये जपेद्वाक्कीमनुं सुधीः ॥ ४७ ॥

अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सशम्भुकम् ।

समेप्लीहकारं च शमयेदभितो भयम् ॥ ४८ ॥

(८) रवौ रमशाने सज्जप्य मूलं चायुतसंख्यया ।

हुनेत् कपोतमासाज्यमाहिपं पलमद्रिजे ॥ ४९ ॥

पितृणां देवतानां च पुष्टिदोष्यं प्रयोगकः ।

इत्येष पटलो राक्षसाः सर्वागमरहस्यवान् ॥ ५० ॥

अन्याश्लिष्याय न देयो दुर्बेनाय विशेषतः ।

गुरुभक्तिनिहीनाय कुचैलाय दुरात्मने ॥ ५१ ॥

अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा निरयमाप्नुयात् ।

देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्त्या पार्वति ॥ ५२ ॥
 दीप्तिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च ।
 इदं रहस्य परम तव भक्त्या मयोदितम् ।
 गुह्यं गोप्यतमं लोके गोपनीय स्वयोनिवत् ॥ ५३ ॥

इति श्रीगङ्गायामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
 श्रीमहाराज्ञीपटलम् ॥ १ ॥

अथ

श्रीमहाराज्ञी-पूजापद्धतिः ।



श्रीभैरव उवाच ।

अंधुना देवि वक्ष्येऽहं पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ।
 श्रीराज्ञीनित्यपूजायास्तत्त्वतः सौख्यदायिनीम् ॥ १ ॥
 प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यो देवीं भक्तितोऽर्चयेत् ।
 तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥ २ ॥

तत्र श्रीमान्साधका ब्राह्मस्य मुहूर्ते शयनतलात् उत्थाय नरचर
 णादि प्रक्षाल्य निजामने उद्धपन्नामनं सुमुपविश्य स्वशिरस्थमण्ड
 साराधोमुखकमलकर्णिका-तर्गतं निजगुरुं स्वशक्त्या सहितं ध्यात्वा
 मानसेरुपचारैः संपूज्य दण्डवत्प्रत्वा तत्र सशिवा द्वा ध्यात्वा मूल
 यथाशक्त्या जप्त्वा जपं गुरुव्यं समर्प्य नदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य

१ 'अनुना पद्धतिं वक्ष्ये श्रीराज्ञ्यचनमनुनाम् ।

गद्यपद्यमयी गोप्या सकलागमानिधनाम् ॥ ५४ पाठः ।

मलादिशोधनं विधाय नद्यादौ गत्वा वर्षोक्तं शौचं कृत्वा, "ओं ह्रीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इति दम्बान्विशोध्य मलापकर्षणं कृत्वा, मृत्युत्रयं मूलेन संशोध्य जले धीवरु योनिचक्रं वा विमान्य, तत्र "गांगी गङ्गे च यमुने चैव" इत्यादिनाकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य, तत्र "बालार्ककोटिसदृशे भूतेश्वरसमन्विते । महापञ्चदशीविधे जलेऽस्मिंस्त्व-निहाय ह ॥" इत्याद्यादौनादिमुद्राः प्रदर्श्य, मृदमङ्गे विलिप्य मूलमुच्चापं कुम्भमुद्रया जले त्रिवारं पुनर्मञ्जित् । ततो "ओं ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय ५५ तेऽर्घ्यो नमः ॥" इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, मूलं पद्माशक्त्या जप्त्वा याससी परिधाप्य, वैदिकीं संख्यां निर्वर्त्य तान्त्रिकीं कुर्यात् । तत्र मूलपङ्कजं विधाय वामहस्ते जलं निधाय पञ्चमूलमन्त्रेण परं धत्वा सप्तधामिमन्त्रं, तत्त्वमुद्रयाच्छाद्य मूलमुच्चरस्तद्गतितोदकापिन्दुभिः सप्तवारं शिरः प्रोक्ष्य, दक्षिणहस्ते धृत्वा इड्या देहान्तर्नात्वा पापं प्रक्षाल्य, तज्जलं पिङ्गलाया शिरिष्य वामहस्ते तज्जलं सकलुपं वामभागस्थशिलायां फडिति निःक्षिपेत् । इत्यधर्मपणं कृत्वा, प्रणवमायाभ्यां प्राणायामत्रयं कृत्वा, ओं ह्रीं ध्यातमत्त्वं शोधयामि स्वाहा । ओं ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा । ओं ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा । इत्याबन्ध, पङ्कज-न्यास ओं ह्रीं इत्यादिना विधाय गायत्रीं जपेत् । ओं राज्यम-दायै विद्महे ह्रीं पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि श्रीं तन्नो महाराज्ञो प्रचोदयात् ३ । गायत्रीं मूलविद्यां च जप्त्वा, गायत्र्या धीमहाराज्ञो-भूतेश्वराभ्यामिदमर्घ्यं स्वाहा इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, पुनर्जले योनिचक्रं विमान्य मूलं सप्तधोन्धार्य 'धीसाक्षा सबाह्वा सायुधा सपरिच्छन्ना भूते-श्वरसहिता धीमहाराज्ञी तृप्यतां' इति सप्तवारं सन्तप्य, भूते-श्वरं पूषद् द्विः सन्तप्य, परिधायान् प्रणवमायाभ्यां सहस्रं सन्तप्य, गुरुपरमगुरुपरमोष्ठिगुरुन् पितृश्च सन्तप्य, पूर्ववत् स्यांयाध्यत्रयं दत्त्वा पुनर्देवदेव्यो इति 'समानीय, नार्घ्यं विसृज्य वागगृहमागज्येदिति संभ्याविधिः ॥

दावे त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चा-
सनम् ॥ ॐ आं आधारशक्तये नमः । कूर्माय नमः । अनन्ताय नमः ।
अष्टदलपद्माय नमः । सहस्रदलपद्माय नमः । तत्रोपविश्य , अपस-
र्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते
नश्यन्तु शिवाङ्गया ॥ इति तालत्रयं दत्त्वा भौमान् विघ्नानुत्सार्य ,
नाराचमुद्रां प्रदर्श्य , भूताः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे देव्यस्त्रेण तु पीडिताः ॥ इति वामपार्श्वघातत्रयं
दत्त्वा गुरु प्रणमेत् । अघानतिनिराघस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । ब-
ज्रकूर्मालितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः । ॐ प-
रमगुरुभ्यो नमः । ॐ परापरगुरुभ्यो नमः । परमोष्टिगुरुभ्यो नमः ।
इति संपूज्य ।

अस्य श्रीमहाराष्ट्रीमन्त्रस्य , ब्रह्मा ऋषिः , गायत्रं छन्दः , श्री-
भूतेश्वरीमहाराष्ट्रीदेवता , ह्रीं धीजे , सौः शक्तिः , क्लीं कीलक , चतुर्वर्गपुरुषा-
र्थसिद्धये विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः शिरसि , गायत्रीछन्दसे नमो
मुखे , राक्षोदेवतायै नमो हृदि , ह्रीं धीजाय नमो नाभौ , सौः शक्तये नमो
शुद्धे , क्लीं कीलकाय नमः पादयोः , पूजायां विनियोगाय नमः सर्वा-
ङ्गेषु । ॐ ह्रीं मङ्गलाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां
नमः । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं
करतलपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः । एव वङ्गन्यासः ।

इत्थे न्यासं विधाय भूतशुद्धिं कुर्यात् । ॐ ह्रीं इत्याधारात् कुण्ड-
लिनीं प्रवीपकलिकाकारा सुपुञ्जामागेण प्रहृष्टयान्तर्नात्वा परमशिव
प्राप्य तयाः सामरस्य विधाय , तद्गुह्यतानन्दामृतभास्या कुलगुरुन्
सन्तर्प्य , पुनः पदचक्रं भित्त्वा स्वस्थानमानीय , वामकुक्षौ पापपुरु-
षमङ्गुष्ठमात्राकारं कृष्णवर्णं रक्तश्मश्रुलं ध्यात्वा प्राणायामयोगेन शोष-
णादिं कुर्यात् । आदां यमिति वायुवीजेन षोडशवारजप्तं शोषयेत् ।
रमित्यग्निवीजेन षोडशवारजप्तं दाहयेत् । यमिति घट्टणवीजेन षोडश-
वारजप्तनाप्लावयेत् । लामिति भूथवीजेन षोडशवार जप्तं देहं दृढं विधि-
न्य , इमित्याकाशवीजेन षोडशवार जप्तं स्वात्मानं दिव्यदेहमुपाय
प्राणप्रतिष्ठा कुर्यात् ।

ॐ ह्रीं आर्षोत्तोददत्तं मम प्राणा इदं प्राणाः ॐ मम जीव १८

स्थितः ८ मम वाद्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा , इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय पूर्ववत् प्राणायामं कृत्वा , तत्त्वत्रयेणाचम्य न्यासं कुर्यात् । ओंनमो ब्रह्मरन्ध्रे , ह्रीं शिरसि , धौ-
नेत्रयोः , रां कर्णयोः , क्लौं नासोग्रे , सौः मुखे , भं कण्ठे , मं भुजयोः ,
वं वक्षसि , ल्यं कुक्षौ , रां नाभौ , श्वै गुह्ये , ह्रीं जान्वोः , स्वां ज-
ङ्घयोः , हां नमः सर्वाङ्गेषु । इति मूलमन्त्रन्यासः ॥

ओंह्रीं हृदयाय नमः । ओंह्रीं शिरसे स्वाहा । ओंह्रू शिखायै वषट् ।
ओंह्रै कवचाय हुं । ओंह्रौ नेत्राभ्यां वौषट् । ओंह्रः अस्त्राय फट् ।
ओंरां हृदयाय० , अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ओंरौ शिरसे० , तर्जनीभ्यां नमः ।
ओंकं शिखायै० , मध्यमाभ्यां नमः । ओंरै कवचाय० , अनामिका-
भ्यां० । ओंरौ नेत्राभ्यां० , कनिष्ठिकाभ्यां० । ओंरः अस्त्रायफट् , कर-
तपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ओंसौः क्लौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ओंसौः क्लौं तर्जनी-
भ्यां० । ओंसौः फल्लं मध्यमाभ्यां० , ओंसौः क्लौं अनामिकाभ्यां० । ओंसौः-
क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां० । ओंसौः क्लौं करतलपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादि
पदङ्गन्यासः ॥

ओंह्रीं जालधरपीठाय नमो मूलाधारे । ओंह्रीं उद्भांजानपीठाय
नमः स्याधिष्ठाने । ओंरां कामरूपपीठाय नमः अनादिते । ओंक्लौं मधुपुरी
पीठाय नमो मणिपुरे । ओंसौः वाराणसीपीठाय नमो विशुद्धौ । ओंह्रीं
अनन्तपीठाय नमः आद्याया । ओंस्वाहा शारदापीठाय नमो ब्रह्मरन्ध्रे ।
इति पीठन्यासः ॥

ओंश्रृङ्गश्र्यां हृदयाय नमः । ओंह्रीं त्रिंशद् शिरसे स्वाहा । ओंभ्रौ उदंश्रु
शिखायै वषट् । ओंरापतंश्रं कवचाय हुं । ओंक्लौं त्रिंश्रु नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ओंसौः श्रंश्रं अस्त्राय फट् । एवं करन्यासः ॥ इति शुद्धमातृकान्यासः ॥

ततो मातृकान्यासं च कृत्वा , ओं आत्मतत्त्वाय हृदयाय नमः ।
ह्रीं विद्यातत्त्वाय शिरसे० । ध्रीं शिवतत्त्वाय शिखायै० । यः शक्तिवत्त्वाय
कवचाय० । क्लौं शिवतत्त्वाय नेत्रेभ्यो० । सौः सर्वतत्त्वाय अस्त्राय फट् ।
एव करन्यासः , इति तत्त्वन्यासः ॥ ओंह्रीमिति पूर्वपक्षे पदङ्ग विधाय
कामकलारूप स्वात्मानं विचिन्त्य , इत्कर्णिकाया धीभूतेभ्यः राद्वगतां
धीमदाराङ्गीं विचिन्त्य मानसेरूपवारैः संपूज्य , यदि धीवक्त्रं विन्दु-
विम्बोत्पलित-त्रिकोणविराजमान - पद्मशोभित-वसुदत्तालङ्कृत-पुष्पत्रयो-

द्भासित-चतुर्द्वारोपशोभितं विलिख्य वा संस्थाप्य योगपीठ परिक-
 ल्य योगपीठपूजां कुर्यात् । ॐ ह्रीं मण्डकाय नमः । २ कालाग्निरुद्राय० ।
 २ मूलप्रकृतये नमः । २ आधारशक्त्यै० । २ वराहाय० । २ कूर्मा-
 य० । २ अनन्ताय० । २ पृथिव्यै० । २ सुधाम्बुधये० । मध्ये २ सुव-
 र्णद्वीपाय० । २ कल्पवनाय० । मध्ये २ मणिगेहाय० । रत्नवेदिकायै० ।
 तन्मध्ये २ चिन्तामणिमण्डपाय० । तत्र २ श्मशानाय० । २ धर्मज्ञान-
 धैराग्यैश्वर्येभ्यो० । तद्दामे २ अधर्माह्वानावैराग्यानैश्वर्येभ्यो० । त-
 दुपरि २ रं षड्मण्डलाय नमः । २ अं अर्कमण्डलाय० । २ सौ सो-
 ममण्डलाय० । २ तं तमसे० । २ रं रजसे० । २ सं सत्त्वाय० । मूलं
 सहस्रदलकमलाय० । संविद्यालाय० । प्रकृतिमयपत्रेभ्यो० । विकृतिम-
 यकेसरेभ्यो० । पञ्चाशद्व्याजभूषितकर्णिकायै० । मूलं मातृकामुधार्य
 श्रीयोगपीठाय नमः । इत्यक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य , श्रीयोगपीठोपरि श्रीचक्रं
 (संस्थाप्य वा) विभाव्य , आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये पात्रार्चनं कुर्यात् ।
 तत्र स्वधामे वृत्तपदकोणचतुरश्रं मण्डलं विलिख्य मूलेन पङ्क्तेनार्चा
 विधाय , “ ॐ ह्रीं श्रीमद्द्वाराधीभगवती—सामान्यार्घ्यमण्डलाय नमः ” ।
 इत्यक्षतैरभ्यर्च्य , “ रवद्विमण्डलाय दशकलात्मने नमः ” इत्यक्षतैर-
 भ्यर्च्य , तत्राधारं संस्थाप्य , “ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने
 नमः ” इत्यभ्यर्च्य , विसोममातृकया शङ्खं संपूर्य “ तत्र सौः सोम-
 मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ” इत्यभ्यर्च्य , तत्र सूर्यमण्डलावकु-
 शमुद्रया तीर्थानि , “ गङ्गे च यमुने चैव ” इत्यादिनावाह्य , शुद्धं
 भावयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः ॥

सामान्यार्घ्यस्य धामे त्रिकोणपदकोणवृत्तचतुरश्रं मण्डलं विधाय
 पङ्क्तेनाभ्यर्च्य , मूलविधामुधार्य “ श्रीराक्षोक्लेशमण्डलाय नमः ” त-
 त्राधारं संस्थाप्य , “ र षड्विमण्डलाय दशकलात्मने नमः ” इति सं-
 पूज्य , तत्राक्षरालितकलशं संस्थाप्य , “ अं अर्कमण्डलाय द्वादशक-
 लात्मने नमः ” इति संपूज्य , तत्रानामिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन
 कलशमापूर्य , तत्र “ सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ” इति
 पुष्पाक्षतैः संपूज्य , “ ॐ ह्रीं श्रीं रं रं रं रं रं अमृते घनृतोद्भवे घन-
 तपशिणि अमृत स्नायय २ शुक्रशपं नोचय २ ॐ ह्रीं श्रीं सुरादेव्यै वी-

पद" इति त्रिरभिमन्य मूलं दशधा जप्त्वा , आनन्देश्वराय विद्महे
सुरादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्धनारीश्वरः प्रचोदयात् ३ । इति त्रिरानन्द-
भैरवगायत्रीं जप्त्वा हस्तमलवरयजं आनन्दभैरवाय वोपद् , सहस्र-
मलवरयजं आनन्दभैरवांसुरादेवीपादुकाभ्यो नमः इति संपूज्य , ओं ह्रीं
सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे । श्रमावीजमये देवि शुक्रशापाद्भि-
मुच्यताम् ॥ ओं ह्रीं वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि । तेन स-
त्येन वेषेति ब्रह्महत्या विहन्यतु । ओं ह्रीं एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्म-
मयं ध्रुवम् । कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ ओं ह्रीं
पावमानः पराजयः पवमानः परोरसः । पवमानं परं ज्ञानं तेन ते
पापयाम्यहम् ॥ ओं ह्रीं कृष्णशापयिनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः । वि-
मुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव सांप्रतम् ॥ इति संपूज्य , मूलं त्रिधा
जपन् द्रव्योपोरि धेनुयोनिसंस्त्यमुद्राः प्रदर्श्य , कुम्भं पूर्णमित्युक्त्वा
सुधामयं ध्यात्वा तत्त्वमुद्रयाच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः ॥

ओं ह्रीं कृताघतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत् । बलिना
निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च ॥ भवानीपरितोषार्थं स्वयं मी-
नोऽभयत् प्रभुः ॥ मीनोपरि मूलं त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं प्रदर्श्य , ओं
ह्रीं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः । बल्यर्थं देवदेव्योश्च प-
वित्री भय सांप्रतम् ॥ इति , ओं ह्रीं राष्ट्रीयभार्चनाकाले यानि पा-
नीद सिद्धये । यस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सांप्रतम् ॥ मूलं
त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं प्रदर्श्य , कलशादुत्तरतः पाद्यार्घ्यमधुपर्काचम-
नीयपात्राणि संस्थाप्य गुरुशक्तिवटुकसाधकपात्राणि च संस्थाप्य
सामान्यार्घ्ययत् संपूज्य धीवक्रं पूजयेदिति पात्रस्थापनम् ॥

तत्र हव्यकमलाद्भूतेश्वराद्वोपविष्टां धीराणां स्रुपुष्पामार्गेण बहिरा-
नीय धीवक्रविन्दुपीठोपरि संस्थाप्य , वत्रायाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य क-
क्षपकलशागृतपात्रमुद्राः प्रदर्श्य , मूलेन प्राणप्रतिष्ठापनार्थे प्राणान्
वत्त्वा , मू० धीभूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां पाद्यार्घ्याचमनीयादि परिकल्पया-
मि नमः । मू० भूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां प्रधुपर्काचमनीयगन्धाक्षतपुष्पा-
दीन् परिकल्पयामि नमः । मूलेन नैवेद्याचमनीयताम्बूलादि समर्प्य ,
मूलपञ्चकं त्रिधाप्य भैरवाणां गृहीत्वा , देवदेव्यौ नृत्वा परिवारादेयीर्दि-
वित्स्य दण्डपत्राणिपत्य चतुरर्धं पूजयेत् ।

ओंह्रीं सर्वाशपारपूरकचक्राय नमः । इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा , ओंह्रीं-
गांगेश्वरथीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १ँ भैमीमराजथीपा-
दुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः । २ँ ह्रींकुमारथीपादुकां पू० । २ँ जुंजाङ्ग-
लेश्वरथीपादुकां० इति । तत्रैव दिग्विदिक्षुः । २ँ इन्द्रथी० । २ँ अग्नि-
थी० । २ँ धर्मराजथी० । २ँ निर्ऋतिथी० । २ँ वरुणथी० । २ँ वायु-
थी० । २ँ कुबेरथी० । २ँ ईशानथी० । ऊर्ध्वं २ँ ब्रह्मथी० । अधः
२ँ अनन्तथी० । इति गन्धाक्षतैरर्चयित्वा च तैर्न संपूजयेदिति । पुनस्तत्रैव-२ँ
वज्रथी० । २ँ शक्तिथी० । २ँ दण्डथी० । २ँ खड्गथी० । २ँ पाशथी० ।
२ँ ध्वजथी० । २ँ गदाथी० । २ँ त्रिशूल० । २ँ पद्मथी० । २ँ चक्रथी० ।
इति पुष्पाक्षतैरर्चयेदिति प्रथमावरणम् ॥

ततो वृत्तत्रये ओंह्रींसर्वसंपत्प्रदचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा,
ओंह्रींशुद्धीपादुकां० । २ँ परमशुद्धी० । २ँ परापरशुद्धी० । २ँ
परमेश्विशुद्धी० । इति गन्धाक्षतैरभ्यर्चयेदिति द्वितीयावरणम् ॥

ततो धनुर्वले । ओंह्रींसर्वार्थसाधकचक्राय नमः इति पुष्पा-
ञ्जलिं दत्त्वा , ओंह्रींपासुकिभीपादुकां० । २ँ नीलनागथी० । २ँ तल-
कथी० । २ँ पद्मनागथी० , इति पूर्वाविदिक्षु , २ँ कार्कोटकथी० । २ँ
शङ्खपालथी० । २ँ कुलिकथी० । २ँ शेषनागथी० । इति विदिक्षु गन्धाक्ष-
तैरभ्यर्चयेदिति । तत्रैव ओंह्रींशसिताम्भैरवयुतब्राह्मीथी० । २ँ स्वभैरवयु-
तपैम्बवीथी० । २ँ चण्डभैरवयुतरुद्राणीथी० । २ँ क्रोधभैरवयुतापराजि-
ताथी० । २ँ उग्रभैरवयुतकौमारीथी० । २ँ भीष्मभैरवयुतजामुण्डा-
थी० । २ँ कपालभैरवयुतवाराहीथी० । २ँ संहारभैरवयुतनारासिंहिकाथी० ।
इति धनुर्वले यामार्धेन गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्चयेदिति तृतीयावरणम् ॥

ततः षट्कोणे । ओंह्रींसर्वसिद्धिप्रदाय धीचक्राय नमः इति
पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा , यामार्धेन । ओंह्रींदुर्गाथी० । २ँ शारिकाथी० । २ँ
पैम्बरीथी० । २ँ शिवाथी० । २ँ कालिकाथी० । २ँ त्रिपुराथी० ।
इति गन्धाक्षतैरभ्यर्चयेदिति षट्पुष्पावरणम् ॥

ततस्त्रिकोणे ईशानाग्नेयाग्रतो । ओँह्रौंसर्धसंमोदनधक्राप नमः
इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ओँह्रौं लक्ष्मोर्ध्वी० । २ सरस्वतीथो० । २ बाला-
र्ध्वी० । इति गन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्चयेदिति-पञ्चमावरणम् ॥

ततो बिन्दौ । ओं ह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा
मूलविद्यां सप्तवारमुच्चार्य ओं ह्रीं श्रीभूतेश्वरभूतेश्वरीधीपादुकां० । मूलं
श्रीमहाराष्ट्रीं० । २ श्रीराज्यप्रदात्रीं० । २ पञ्चदशाक्षरीं० । २
भूतेश्वरीं० । २ सङ्ग्रीं० । २ पद्मं० । २ कलशं० । २ सुधा-
पात्रं० । इति गन्धपुष्पाक्षतैः पूजयेदिति षष्ठावरणम् ॥

भैरवचक्रे मूले भूतेश्वरभूतेश्वरीभ्यां गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपावमनीय-
नैवेद्यताम्यूलच्छत्रचामरापात्रिकादीन् निवेद्य, नैवेद्यं च “ अमृतोपस्त-
रयमसि त्वाहा ” इति । बलिमुत्सृजेत्, ओं ह्रीं देवीं पुत्रवटुकनाथ क-
पिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख इमे बलिं पूजां गृह्णन् नमः वाञ्छि-
तां सिद्धिं देहि २, इति दक्षिणे । ओं यांयायूं योगिनीगणेशेभ्यो नमः
स्याहा इत्युत्तरे । ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ओं ह्रीं भूतेश्वरपालाय रामेश्वराय धौपद
इति पश्चिमे । ओं गां ग्लांगणपतये नमः इति पूर्वे । ओं सौः सर्वविप्रकृद्भ्यो
भूतेभ्यः स्वाहा, इति बलिमुत्सृज्य निश्च्युतिदिशि संस्थाप्य, पूर्ववन्म-
न्त्रसंकल्पं विधाय मूलपङ्क्तं कृत्वा देवीं ध्यात्वा मालामभ्यर्च्य दक्षि-
णहस्ते धृत्वा यथाशक्त्या मूलविद्यां जपेत् । ततो “ गुह्यातिगुह्यमो-
क्षी त्वं ” इत्यादिना ऊपं देव्या हस्ते समर्प्य तेजोरूप जपफलं
गृहीत्वा, देवदेव्योरप्रतः कक्ष-सद्वस्त्रनाम-स्तयपाठं विधाय तदपि
समर्प्य, प्रातःप्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरन्ततः । यत्करोमि जग-
न्मातस्तदस्तु तव पूजनम् ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्र-
णम्य, संहारमुद्रया देवदेव्यौ पुष्पेण नासाग्रप्रमानीय हृत्कमलकार्यिकायां
प्रापयित्वा, देवीरूपोऽहं सोऽहमिति विचिन्त्य स्थिराशक्त्या सह सुखं
विहरेत् । पात्रार्पणं कृत्वा च राक्षीरुतविग्रहो भूत्यानन्दरुतं स्वा-
त्मानं विभावयेदिति नित्यपूजाविधिः ॥

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी ।

राज्ञीसर्वस्वरूपा हि न देया तत्त्ववादिभिः ॥

श्रीराज्ञ्याः पद्मविर्गुला नित्यार्चनक्रमाङ्किता ।

गुह्यातिगुह्यतत्त्वाद्या गोपनीया मुमुक्षुभिः ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविचारद्वये
भीमहाराज्ञी—नित्यपूजापद्धतिः ॥ २ ॥

अथ

श्रीमहाराज्ञीकवचम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि राज्ञीकवचमुत्तमम् ।
त्रैलोक्यविजयं नाम दिव्य भोगापवर्गदम् ॥ १ ॥
मूलमन्त्रमयं मुख्यमष्टसिद्धिप्रदायकम् ।
सर्वैश्वर्यप्रदं लोके सर्वागमविनिश्चितम् ॥ २ ॥
पठनाद् धारणाद् देवि महापातकनाशनम् ।
महोत्पातप्रशमनं मूलविद्यामनोहरम् ॥ ३ ॥
त्रिरूपाक्षः शिवो देवि विष्णुर्नारायणो बली ।
ब्रह्मा पितामहो लोके जिष्णुर्गर्वाखनायकः ॥ ४ ॥
महोनिधिस्तथा सूर्यस्तारकाधिपतिः शशी ।
रत्नाकरश्च जलधिः शेषथानन्तता गतः ॥ ५ ॥
श्रीराश्याः कवचस्यास्य पठनाद् धारणात् सदा ।
बहुनोक्तेन देवेशि कवचस्यास्य धारणात् ॥ ६ ॥
मर्त्योऽप्यमरता याति राज्ञीपदमप्राप्नुयात् ।

अपिरस्य महादेवि ब्रह्मा च्छन्दः समीरितम् ॥ ७ ॥

गायत्री देवता राज्ञी माया बीजमुदाहृतम् ।

शरच्छक्तिः कीलकं च कामराजः सुरेश्वरि ॥ ८ ॥

भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोग इति स्मृतः ।

इस्य श्रीमहाराष्ट्रीत्रैलोक्यविजयकवचस्य, श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहाराष्ट्री वेषता, श्री बीजे, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगाप-वर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः । ब्रह्मप्रवचने नमः शिरसि । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । महाराष्ट्रीवेषतायै नमो हृदि । श्रीं बीजाय नमो नाभौ । सौः शक्तये नमो गुह्ये । क्लीं कीलकाय नमः पादयोः । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । ॐ ह्रीं क्लीं शक्तिं शिवं ध्यायेत् ।

उद्यदिवाकरसहस्ररुचि त्रिनेत्रां

सिंहासनोपरिगताधुरगोपवीताम् ।

खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां

राज्ञीं भजामि विकसद्दन्तारविन्दाम् ॥ १ ॥

चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां

सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम् ।

पाशाङ्कुशाम्बोखहस्तधारिणीं

गङ्गां भजे चेतसि राज्यदायिनीम् ॥ २ ॥

जो लक्ष्मीमें शिरः पातु ह्रीं ललाटे सरस्वती ।

श्रीं वासा पातु मां नेत्रे ज्येष्ठं पातु ध्रुवी मम ॥ ६ ॥

रां दुर्गा पातु मे नासां क्लीं मुखं पातु शारिका ।

सौः कण्ठं वैखरी पातु भं भुजां पातु मे शिवा ॥ १० ॥

गं हस्तौ पातु मे काली वं वक्षसिपुरावतु ।

पदत्रं पातु मे मध्यं वृत्तं पादौ ममावतु ॥ ११ ॥

त्ये पृष्ठं पातु मे ब्राह्मी रां नाभिं पातु वैष्णवी ।

श्यं गुदं पातु रुद्राणी ह्रीं रुटि मेऽपराजिता ॥ १२ ॥
 स्वा कौमारी पातु जानू हा जह्नेऽवतु चण्डिका ।
 स्वाहा गुल्फौ च वाराही ओं पादौ नारसिंहिका ॥ १३ ॥
 विस्मारितं च यत् स्थानं यत् स्थानं नामवर्जितम् ।
 तत् सर्वं पातु मे राज्ञी मूलविद्यामयी परा ॥ १४ ॥
 वासुकिः पूर्वतः पातु नीलनागोऽनलेऽवतात् ।
 तच्चक्रो दक्षिणे पातु नैऋते पद्मनागकः ॥ १५ ॥
 कार्कोटकः पश्चिमेऽप्याच्छङ्खपालस्तु चायुगे ।
 कुलिकश्चोचरे पातु शेष ईशानमण्डले ॥ १६ ॥
 ब्राह्मी ब्राह्ममुहूर्तेऽप्याद् दिनादौ वैष्णवी मम ।
 रुद्राणी पातु मध्याह्ने सायं पत्न्यपराजिता ॥ १७ ॥
 निशादौ पातु कौमारी निशीथे चण्डिकावतु ।
 निशान्ते पातु वाराही सर्वदा नारसिंहिका ॥ १८ ॥
 असिताङ्गः क्षितेः पातु पयसो रुद्रभैरवः ।
 चण्डो मा पवनात् पातु क्रोधेशः पातु मानलात् ॥ १९ ॥
 उन्मत्तः सोमतः पातु भीषणः क्षर्षतोऽवतु ।
 याजकाच्च कपालीशो व्योम्नः संहारकोऽवतात् ॥ २० ॥
 सदा समन्ततः पातु वपुर्वसुदल मम ।
 गुरवः पान्तु सर्वत्र दिगीशाः पान्तु सर्वतः ॥ २१ ॥
 श्चत्रयं पातु नित्यं धरागेहं सदावतु ।
 श्रीचक्रं पातु भीतिभ्यो योगिन्यः पान्तु सर्वदा ॥ २२ ॥
 ऊर्ध्वं चाधः सदा पातु देवो रामेश्वरः शिवः ।
 सर्वत्र सर्वदा सत्य वपुर्भूतेश्वरोऽवतात् ॥ २३ ॥

१ 'वायव्या शङ्खपालक' ख पाठ । २ 'रुद्रमौ पातु पायस' ख पाठ ।

३ 'सर्वत' ख पाठ । ४ 'तथा' ख. पाठ. ।

पादादिमूर्धपर्यन्तं वपुः सर्वत्र मेऽवतु ।
 शिरसः पादपर्यन्तं राज्ञी पञ्चदशाक्षरी ॥ २४ ॥
 इतीदं कवचं राज्ञ्या मन्त्रगर्भं जयावहम् ।
 त्रैलोक्यविजयं नाम दारिद्र्यभयनाशनम् ॥ २५ ॥
 मर्वरोगहरं साक्षात् सिद्धिदं पापनाशनम् ।
 महाभयहरं देवि मूलविद्यामयं परम् ॥ २६ ॥
 परमार्थप्रदं नित्यं भोगमोक्षैककारणम् ।
 यः पठेत् कवचं देवि रणे राजभये क्षणात् ॥ २७ ॥
 सग्रामेषु रिपूञ्जित्वा विजयी गृहमेत्यति ।
 पठनात् कवचस्यास्य राजकोपः प्रशाम्यति ॥ २८ ॥
 धूते धनं लभेद् धूती श्मशाने सिद्धिमाप्नुयात् ।
 त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ रेतःस्त्रावे मरेश्वरि ॥ २९ ॥
 तस्य राज्ञी महाविद्या स्वप्नेऽभीष्टप्रदा भवेत् ।
 स्वयम्भूकुसुमैः शुद्धै रेतसाः चोभयाङ्कितैः ॥ ३० ॥
 रसैर्भुजै लिखेद्धर्म रवौ मातर्मरेश्वरि ।
 शीततन्तुभिरव्यक्तं लाक्षया वेष्टितं तथा ॥ ३१ ॥
 सुवर्णगुटिकान्तःस्थं पूजयेद्यत्र राजवत् ।
 गुटिकेण महानिद्या राज्ञी मूर्तिरिवापरा ॥ ३२ ॥
 मूलविद्यामयी देवि सर्वाभीष्टफलप्रदा ।
 शिरःस्था धनदा देवि कण्ठस्था वाक्प्रदायिनी ॥ ३३ ॥
 वक्षःस्था पुनदा देवि कटिस्था भोगदायिनी ।
 पृष्ठस्था बलदा नित्यं कुक्षिस्था रोगनाशिनी ॥ ३४ ॥
 मर्वायमाभिनी लोके यथाभीष्टफलप्रदा ।
 गुटिकेय शुभा राज्ञ्या न देया यस्य कस्यचित् ॥ ३५ ॥

इदं कवचभीशानि मूलविद्यामयं ध्रुवम् ।
 सारस्वतप्रदं लक्ष्मीपुत्रपौत्रविवर्धनम् ॥ ३६ ॥
 आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम् ।
 चतुष्पष्ट्यादितन्त्राणां सारमादाय वर्णितम् ॥ ३७ ॥
 श्मशाने यः पठेत् सायं महाचीनक्रमेश्वरः^१ ।
 स साधको महादेवि राज्ञीपुत्रो भविष्यति ॥ ३८ ॥
 इतीदं मम सर्वस्वं त्रैलोक्यविजयाभिधम् ।
 कवचं मन्त्रगर्भं तु गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ३९ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
 श्रीमहाराष्ट्याल्लैलोक्यविजयं नाम कवचम् ॥ ३ ॥



अथ

महाराज्ञीसहस्रनामकम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

भगवन् वेदतत्त्वज्ञ मन्त्रतन्त्रत्रिचक्षुः ।
 शरण्य सर्वलोकेश शरणागतवत्सल ॥ १ ॥
 कथं श्रियमवाप्नोति लोके दारिद्र्यदुःखभाक् ।
 भान्निको भैरवेशान तन्मे गदितुमर्हसि ॥ २ ॥

श्रीमैरव उवाच ।

या देवी निष्कला राज्ञी भगवत्यमलेश्वरी ।
 सा स्रजत्यवति व्यक्तं संहरिष्यति तामसी ॥ ३ ॥
 तस्या नामसदृशं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति ।
 अवाच्यं दुर्लभं लोके दुःखदारिद्र्यनाशनम् ॥ ४ ॥
 परमार्थप्रदं नित्यं परमैश्वर्यकारणम् ।
 सर्वागमरहस्याख्यं सकलार्थप्रदीपनम् ॥ ५ ॥
 समस्तशोकशमनं महापातकनाशनम् ।
 सर्वमन्त्रमयं दिव्यं राज्ञीनामसदृशकम् ॥ ६ ॥

अस्य श्रीमहाराज्ञीनामसदृशस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः,
 श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं वाज, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, महा-
 राज्ञीसदृशनामपाठे विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः शिरासे । गायत्री-
 छन्दसे नमो मुखे । श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि । ह्रीं-
 वाजाय नमो नाभौ । सौ शक्तये नमो गुह्ये । क्लींकीलकाय नमः
 पादयोः । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । उद्गामित्यादिना करपङ्क्त्यालं
 विधाय ध्यानं कुर्यात् ।

या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरेका
 सिंहासनस्थितिमतीमुरर्गवृतां च ।
 देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
 तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम् ॥ १ ॥
 चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
 सिंहासनस्था भुजगोपवीतिनीम् ।
 पाशाङ्कुशाम्भोरुद्वन्द्वपारिणीं
 राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम् ॥ २ ॥
 ओं ह्रीं श्रीं महाराज्ञीं श्रीमौःपञ्चदशाक्षरी ।
 श्रीस्वाहाय्यक्षरीविद्या पद्मभगवती विभा ॥ १ ॥

भास्वती भद्रिका भीमा भर्गरूपा महस्विनी ।
 माननीया मनीषा च मनोज्ञा च मनोज्ञा ॥ २ ॥
 मानदा मन्त्रविद्या च महाविद्या पडचरी । *
 पद्महृता च त्रिहृता च त्रयी वेदत्रयी शिवा ॥ ३ ॥
 शिवाकारा निरुपाक्षी शशिसण्डायनमिनी ।
 महालक्ष्मीर्महोरस्का महौजस्का महोदया ॥ ४ ॥
 मातङ्गी मोदकाहारा मदिरारुणलोचना ।
 साध्वी शीलवती शाला सुधाकलशधारिणी ॥ ५ ॥
 स्वर्णिनी पद्मिनी पद्मा पद्मकिञ्जल्करञ्जिता ।
 हृत्पद्मवामिनी हृद्या पानपात्रधरा धरा ॥ ६ ॥
 धराधरेन्द्रतनया दक्षिणा दक्षजा दया ।
 दयावती महामेधा मोदिनी बोधिनी गदा ॥ ७ ॥
 गदाधराचिन्ता गोधा गङ्गा गोधावरी गया ।
 महाप्रभाजसहिता महोरगविभूषणा ॥ ८ ॥
 महाभुनिकृतातिथ्या माध्वी मानवती मघा ।
 बाला सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गा दुर्गतनाशिनी ॥ ९ ॥
 शारी शरीरमध्यस्था वैखरी खेचरेश्वरी ।
 शिवदा शिववचःस्था कालिका त्रिपुरापुरी ॥ १० ॥
 पुरारिकुक्षिमध्यस्था पुरारिहृदयेश्वरी ।
 बलारिराज्यदा चण्डी चामुण्डा मुण्डधारिणी ॥ ११ ॥
 मुण्डमालाञ्जिता मुद्रा क्षोभणा कर्षणक्षमा ।
 ब्राह्मी नारायणीदेवी कौमारी चापराजिता ॥ १२ ॥
 रुद्राणी च शचीन्द्राणी वाराही वीरसुन्दरी ।

नारसिंही भैरवेशी भैरवाकारभीषणा ॥ १३ ॥

नागालङ्कारशोभाढ्या नागयज्ञोपवीतिनी ।

नागकङ्कणकेयूरा (१००) नागहारा सुरेश्वरी ॥ १४ ॥

सुरारिघातिनी पूता पूतना डाकिनीक्रिया ।

क्रियावती कुरी कृत्या डाकिनी लाकिनी लया ॥ १५ ॥

लीलावती रसाकीर्णा नागकन्यामनोहरा ।

हारकङ्कणशोभाढ्या सदानन्दा शुभङ्करी ॥ १६ ॥

महासिनी मधुमती सरसी स्मरमोहिनी ।

महोदधिवपुषी वार्ता वामाचारप्रिया सिरा ॥ १७ ॥

सुधामयी वेषुकरा वैरिणीवीरसुन्दरी ।

वारिमध्यस्थिता वामा वामनेत्रा शशिप्रभा ॥ १८ ॥

शर्मदा शङ्करी सीता रवीन्दुशिखिलोचना ।

मदिरा वारुणी वीर्यामीविज्ञा मदिरावती ॥ १९ ॥

वटस्था वारुणीशक्तिर्वटजा वटवासिनी ।

वटुकी वीरसूचन्या सत्पुत्री मोहिनी च शुर्व ॥ २० ॥

मुद्राराङ्कुशहस्ता च वराभयकरा कुटी ।

पाटीरदुमवल्ली च वटिका वटुकेश्वरी ॥ २१ ॥

इष्टदा कृषिभूः कीरी रेवतीरमणप्रिया ।

रोहिणी रेवती रम्या रमणा रोमहर्षिणी ॥ २२ ॥

रसोद्भासा रसासारा सारिणी तारिणी तन्नि ।

तरीतरित्रहस्ता च तौतुला तरणिप्रभा ॥ २३ ॥

रत्नाकरप्रिया रम्भा रत्नालङ्कारशोभिता ।

रुचमाङ्गदा गदाहस्ता गदाधरवरप्रदा ॥ २४ ॥

पद्मा द्विरसा माला मालाभरणभूषिता ।

मालती मल्लिकामोदा मोदकाहारयज्ञभा ॥ २५ ॥
 यल्लभी मयुरा माया काशी काञ्ची ललन्तिका ।
 हसन्तिका हसन्ती च भ्रमन्ती च वसन्तिका ॥ २६ ॥
 चेमा चेमदूरी जामा चौमवस्त्रा (२००) चणेश्वरी ।
 चणदा चेमदा सीरा सीरपाणिसमर्चिता ॥ २७ ॥
 क्रीता क्रीतानपा क्रूरा कमनीया कुलेश्वरी ।
 कूर्चनीजा कुठाराढ्या कूर्मिणी कूर्मसुन्दरी ॥ २८ ॥
 कारुण्या चैव कारमीरी दूती द्वारवती ध्रुवा ।
 ध्रुवस्तुता ध्रुवगतिः पीठेशी रगलामुखी ॥ २९ ॥
 सुमुखी शोभनानीतिः^१ रत्नज्वालामुखी नतिः ।
 अलकोजयिनी भोग्या भङ्गी भोगावती बला ॥ ३० ॥
धर्मराजपुरी पूता पूर्णसत्त्वाऽमरावती ।
 अयोध्या योधनीया च युगमाता च यक्षिणी ॥ ३१ ॥
 यज्ञेश्वरी योगगम्या योगिध्येया यशस्विनी ।
 यशोवती च चारङ्गी चारुहासा चलाचला ॥ ३२ ॥
 हरीश्वरी हरेर्माया मायिनी वायुवेगिनी ।
 अम्बालिकाऽम्बा भर्गेणी भृगुकूटा महामतिः ॥ ३३ ॥
कोशेश्वरी च कमला कीर्तिदा कीर्तिवर्धिनी ।
 कठोरवाक्कुहूमूर्तिः चन्द्रनिम्नममानना ॥ ३४ ॥
 चन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्गी कनकाचलवासिनी ।
 मलयाचलसानुस्था हिमाद्रितनयातनुः ॥ ३५ ॥
 हिमाद्रिकुचिदेशस्था कुब्जिका कोमलेश्वरी ।
 करैकनिगडा गूढा गूढगुल्फातिगोपिता ॥ ३६ ॥
 तनुजा तनुरूपा च चाणचापधरा नुतिः ।

धुरीणा धूम्रवासदी धूम्रकेशाऽरुणानना ॥ ३७ ॥

अरुणेशी रतिः स्वातिर्गिरिष्ठा च गरीयसी ।

महानमी महाकारा सुरासुरभयङ्करी ॥ ३८ ॥

अणुरूपा महज्ज्योतिरनिरुद्धमरस्वती ।

श्यामा श्याममुखी शान्ता श्रान्तसन्तापहारिणी ॥ ३९ ॥

गौर्गण्ड्या गोमयी गुह्या गोमती गुरुवागऽर्या ।

गीतसन्तोषसंस्क्रा (३००) ग्राहिणी ग्रहिणी ग्रहा ॥ ४० ॥

गणप्रिया गजगतिर्गन्धारी गन्धमोदिनी ।

गन्धमादनसानुस्था सहाचलकृतालया ॥ ४१ ॥

गजाननप्रिया गव्या^१ ग्राहिका ग्राहवाहना ।

गुहमङ्गुहावासा ग्रहमालाविभूषणा ॥ ४२ ॥

कौवेरी कुङ्का अन्तिस्तर्कविद्या प्रियङ्करी ।

पीताम्बरा पटाकारा पताका सृष्टिजा मुधा ॥ ४३ ॥

दाक्षायणी दक्षमुता दक्षयज्ञविनाशिनी ।

ताराचक्रस्थिता तारा तुरी तुर्या तुदिस्तुला ॥ ४४ ॥

सन्ध्यात्रयी सन्धिजरा सन्ध्यातारुण्यलालिता ।

ललिता लोहिता लम्पा चम्पा कम्पाकृता सृष्टिः ॥ ४५ ॥

सतिः सत्यवती स्वस्था समाना मानवर्धिनी ।

महोमयी मनस्तुष्टिः कामधेनुः सनातनी ॥ ४६ ॥

सूक्ष्मरूपा सूक्ष्ममुखा स्थूलरूपा कलावती ।

तलातलाश्रया सिन्धुस्यम्बिका लम्पिका जया ॥ ४७ ॥

सौदामिनी मुधादेवी सनकपिममर्चिता ।

मन्दाकिनी च यमुना विपाशा नर्मदानदी ॥ ४८ ॥

१ 'दा' घ. पाठः । २ 'गुरुवागयया' ज. पाठः । ३ 'गव्याप्रासिका' ख. पाठः ।

गण्डकपैरावती सिन्धु वितस्ता च सरस्वती ।
 रेवा चैरावती' चेक्षुमती सागरवासिनी ॥ ४९ ॥
देवकी देवमाता च देवेशी देवसुन्दरी ।
 दैत्यघ्नी दमनी दात्री दितिर्दितिसुन्दरी ॥ ५० ॥
 विद्याधरी च विदेशी विद्याधरजसुन्दरी ।
 मेनका चित्रलेखा च चित्रिणी च तिलोत्तमा ॥ ५१ ॥
 उर्वशी मोहिनी रम्भा चाप्सरोगणसुन्दरी ।
 यक्षिणी यक्षलोकेशी नरवाहनपूजिता ॥ ५२ ॥
 यक्षेन्द्रतनया योग्या यक्षनायकसुन्दरी ।
 (गुणधवती चिता गन्धा सुगन्धा गीततत्परा ॥ ५३ ॥
 गन्धर्वतनया नम्रा (४००) गीतिर्गन्धर्वसुन्दरी ।)
 मन्दोदरी करालाक्षी मेघनादवरप्रदा ॥ ५४ ॥
 मेघवाहनसन्तुष्टा मेघमूर्तिश्च राक्षसी ।
 रक्षोहन्त्री केकसी च रक्षोनायकसुन्दरी ॥ ५५ ॥
 किन्नरी कम्बुकण्ठी च कलकण्ठस्वना सुधा ।
 किंमुखी हयवक्त्रा च केला किन्नरसुन्दरी ॥ ५६ ॥
 पिशाची राजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थिता ।
 महापिशाचिनी चान्द्री पिशाचकुलसुन्दरी ॥ ५७ ॥
 गुह्येश्वरी गुह्यरूपा गुर्वी गुह्यकसुन्दरी ।
 सिद्धिप्रदा सिद्धवधूः सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी ॥ ५८ ॥
 भूतेश्वरी भूतालया भूतधात्री भयापहा ।
 भूतभीतिहरी भग्या भूतजा भूतसुन्दरी ॥ ५९ ॥
 पृथ्वी पार्थिवलोकेशी पृथा विष्णुसमर्चिता ।

वसुन्धरा वसुनता पृथिवी भूमिसुन्दरी ॥ ६० ॥

अम्भोधितनयाऽलुप्ता जलजाची जलेश्वरी ।

अमूर्तिरम्मयी मारी जलस्या जलसुन्दरी ॥ ६१ ॥

तेजस्विनी महोदारी तैजसी सूर्यविम्बगा ।

सूर्यकान्तिः सूर्यतेजास्तेजोरूपैकसुन्दरी ॥ ६२ ॥

वायुगदा वायुमुखी वायुलोकैकसुन्दरी ।

गगनस्या रेचरेशी शून्यरूपा निराकृतिः ॥ ६३ ॥

निराभासा भासमाना द्युतिराकाशसुन्दरी ।

चितिमूर्तिधराऽनन्ता चितिमृद्भोकसुन्दरी ॥ ६४ ॥

अब्धियाना रत्नशोभा वरुणेशी वरायुधा ।

पाशहस्ता पोषणा च वरुणेश्वरसुन्दरी ॥ ६५ ॥

अनलैकरुचिज्योतिः पञ्चानिलगतिस्थितिः ।

प्राणापानसमानेच्छा चोदानव्यानरूपिणी ॥ ६६ ॥

पञ्चवातगतिर्नाडीरूपिणी वातसुन्दरी ।

अग्निरूपा वह्निशिखा वह्निवानलसन्निभा ॥ ६७ ॥

हेतिर्हविर्हुतज्योतिरग्निजा वह्निसुन्दरी ।

सोमेश्वरी सोमकला सोमपानपरायणा ॥ ६८ ॥

सौम्यानना सौम्यरूपा सोमस्या सोमसुन्दरी ।

सूर्यप्रभा सूर्यमुखी सूर्यजा सूर्यसुन्दरी ॥ ६९ ॥

याज्ञिकी यज्ञभागेच्छा यज्ञमानरप्रदा ।

याज्ञिकी यज्ञविद्या च यज्ञमानैकसुन्दरी (५००) ॥ ७० ॥

आकाशगामिनी चन्द्रा शब्दजाकाशसुन्दरी ।

मीनप्रिया मीननेत्रा मीनाशा मीनसुन्दरी ॥ ७१ ॥

कूर्मपृष्ठगता कूर्मी कूर्मजा कूर्मरूपिणी ।
 वाराही वीरसूरर्क्षा वरारोहा मृगेक्षणा ॥ ७२ ॥
 वराहमूर्तिर्वाचाला दंष्ट्रा वराहसुन्दरी ।
 नरसिंहाकृतिर्देवी दृष्टदैत्यनिघदिनी ॥ ७३ ॥
 प्रद्युम्नवरदा नारी नरसिंहैकसुन्दरी ।
 वामजा वामनाकारा नारायणपरायणा ॥ ७४ ॥
 बलिदानवदर्पणी वाम्या वामनसुन्दरी ।
 रामप्रिया रामकीर्तिः चक्रवंशचयङ्करी ॥ ७५ ॥
 'दनुपुत्री राजकन्या रामा परशुधारिणी ।
 भार्गवी भार्गवेष्टा च जामदग्न्यवरप्रदा ॥ ७६ ॥
 कुठारधारिणी रात्रिर्जामदग्न्यैकसुन्दरी ।
 सीतालक्ष्मणसेव्या च रक्षःकुलविनाशिनी ॥ ७७ ॥
 रामप्रिया च शत्रुघ्नी शत्रुघ्नभरतेष्टदा ।
 लावण्यामृतधाराढ्या लवणामुरधातिनी ॥ ७८ ॥
 लोहितास्या प्रसन्नास्या स्वागमा रामसुन्दरी ।
 कृष्णकेशा कृष्णमुखी यादवान्तकरी लया ॥ ७९ ॥
 यादोगणार्चिता योज्या राधाश्रीकृष्णसुन्दरी ।
 बुद्धप्रसुर्बुद्धदेवी जिनमार्गपरायणा ॥ ८० ॥
 जितक्रोधा जितालस्या जिनसेव्या जितेन्द्रिया ।
 जिनवंशधरोद्या च नीलान्ता बुद्धसुन्दरी ॥ ८१ ॥
 काली कोलाहलप्रीता प्रेतवाहा सुरेश्वरी ।
 कल्किप्रिया कम्बुधरा कालिकालैकसुन्दरी ॥ ८२ ॥
 विष्णुमाया ब्रह्ममाया शाम्भवी शयशाहना ।

इन्द्रावरजवचःस्था स्यात्पुष्पा पलालिनी ॥ ८३ ॥
जम्बिणी जम्बद्वी च जम्बमाखकचालका ।
 कुलाकुलपदेशानी पददानफलप्रदा ॥ ८४ ॥
 कुलवागीश्वरी कुल्या कुलमा कुलसुन्दरी ।
 पुरन्दरेष्टो तारुण्यालया पुण्यजनेश्वरी ॥ ८५ ॥
 पुण्योत्साहा पापहर्त्री पाकशासनसुन्दरी ।
 सूर्यकोटिप्रतीकाशा सूर्यतेजोमयी मयी ॥ ८६ ॥
 लेखिनी भ्राजिता रज्जुत्पिणी सूर्यसुन्दरी (६००) ।
 चन्द्रिका च सुधाधारा ज्योत्स्ना शीताशुसुन्दरी ॥ ८७ ॥
 लोलाक्षी च शताक्षी च सहस्राक्षी सहस्रपाद् ।
 सहस्रशीर्षा चेन्द्राक्षी सहस्रभुजगलिका ॥ ८८ ॥
 कोटिरत्नाशुशोभा च शुभ्रवस्त्रा शतानना ।
 शतानन्दा श्रुतिधरा पिङ्गला चोग्रनादिनी ॥ ८९ ॥
 सुपुष्पा हारकेयूरनूपुरारावसङ्कुला ।
 घोरनादा घोरमुखी चोन्मुखी चोन्मुकायुधा ॥ ९० ॥
 गोपिता गूर्जरी गाथा गायत्री उदवल्लभा ।
 वल्लकीस्वननादा च नादमिथा नदीतटी ॥ ९१ ॥
त्रिन्दुमूषा चक्रयोनिर्त्रिन्दुनादस्वरूपिणी ।
 चन्द्राक्षी भैरवेशी महाभैरवगल्लभा ॥ ९२ ॥
 रालभैरवभार्या च कृष्णान्तरद्वनर्तकी ।
 प्रलयानलभृगुभा योनिमध्यकृतानया ॥ ९३ ॥
 भूचरी मन्त्रीमुद्रा नवमुद्रालिलामिनी ।
 त्रियोमिनी ज्ञानानम्बा ज्ञानानर्चनतोपिता ॥ ९४ ॥

भास्वराङ्गी भर्गशिखा भर्गवामाङ्गवासिनी ।

भद्रकाली विश्वकाली श्रीकाली मेघकालिका ॥ ६५ ॥

नीरकाली कालरात्रिः काली कामेशकालिका ।

इन्द्रकाली पूर्वकाली पश्चिमाम्नायकालिका ॥ ६६ ॥

रमशानकालिका भद्रकाली श्रीकृष्णकालिका ।

क्रींकारोत्तरकाली श्रीहृद्दीदक्षिणकालिका ॥ ६७ ॥

सुन्दरी त्रिपुरेशानी त्रिकूटा त्रिपुरार्चिता ।

त्रिनेत्रा त्रिपुराध्यक्षा त्रिपुटा पुटभैरवी ॥ ६८ ॥

त्रिलोकजननी त्रेता महात्रिपुरसुन्दरी ।

कामेश्वरी कामकला कालकामशसुन्दरी ॥ ६९ ॥

त्र्यक्षरी त्र्यक्षरीदेवी भावना भुवनेश्वरी ।

एकाक्षरी चतुष्कूटा त्रिकूटेशी लयेश्वरी ॥ १०० ॥

चतुर्वर्णा च वर्णेशी वर्णाढ्या चतुरक्षरी ।

पञ्चाक्षरी च पङ्कजत्रा पट्कूटा च षडक्षरी ॥ १०१ ॥

सप्ताक्षरी नवानेवी परमाष्टाक्षरेश्वरी ।

नवमी पञ्चमी षष्ठी नागेयी च नवाक्षरी ॥ १०२ ॥

दशाक्षरी दशास्यशी देविकैकादशाक्षरी ।

द्वादशादित्यमङ्गाशा (७००) द्वादशी द्वादशाक्षरी ॥ १०३ ॥

त्रयोदशी वेदगमा बाधा त्रयोदशाक्षरी ।

चतुर्दशाक्षरी विद्या विद्यापञ्चदशाक्षरी ॥ १०४ ॥

षोडशी मर्षविद्येशी महाश्रीषोडशाक्षरी ।

महाश्रीषोडशौविद्या चिन्तामणिमनुप्रिया ॥ १०५ ॥

द्वाविंशत्यक्षरी श्यामा महाकालकुटुम्बिनी ।

वज्रतारा कालतारा नारी तारोग्रतारिणी ॥ १०६ ॥

कामतारा शब्दतारा 'स्पर्शतारा' रसाश्रया ।

त्वतारा गन्धतारा महानीलसरस्वती ॥ १०७ ॥
 कालज्वाला वह्निज्वाला ब्रह्मज्वाला जटाकुला ।
 विष्णुज्वाला जिष्णुशिखा भद्रज्वाला करालिनी ॥ १०८ ॥
 विकरालमुखीदेवी कराली भूविभूषणा ।
 चिताशयासना चिन्ता चितामण्डलमध्यगा ॥ १०९ ॥
 भूतभैरवसेव्या च भूतभैरवपालिनी ।
 बन्धकी घट्टसंमुद्रा भवबन्धविनाशिनी ॥ ११० ॥
 भवानी देवदेवेशी दीक्षा दीक्षितपूजिता ।
 साधकेशी सिद्धिदात्री साधकानन्दवर्धिनी ॥ १११ ॥
 साधकाश्रयभूता च साधकेष्टफलप्रदा ।
 रजोवती राजसी च रजको च रजस्वला ॥ ११२ ॥
 पुष्पमिया पुष्पवती स्वयम्भूपुष्पमालिका ।
 स्वयम्भूपुष्पगन्धाढ्या पुलस्त्यसुतधातिनी ॥ ११३ ॥
 पात्रहस्ता मुक्ता पौत्री पीताम्बा पीतभूषणा ।
 पिङ्गानना पिङ्गकेशी पिङ्गला पिङ्गलेश्वरी ॥ ११४ ॥
 मङ्गला मङ्गलेशानी सर्वमङ्गलमङ्गला ।
 पुरुरवेश्वरी पाशधरा चापधराऽधुरा ॥ ११५ ॥
 पुण्यधात्री पुण्यमयी पुण्यलोकनिवासिनी ।
 होत्रसेव्या हकारस्था सकारस्था मुखावती ॥ ११६ ॥
 सखी शोभावती मत्या सत्याचारपरायणा ।
 सतीशानकलेशानी वामदेवकलाश्रिता ॥ ११७ ॥
 सद्योजातकलादेवी शिवाऽघोरकलाकृतिः ।
 शर्वरी क्षीरसदृशी क्षीरनीराविबेकिनी (८००) ॥ ११८ ॥
 वितर्कनिलया नित्या नित्यक्रिया पराम्बिका ।
 पुरारिदयिता दीर्घा दीर्घनामाऽन्यभाषिणी ॥ ११९ ॥

काशिका कौशिकी कोशया कोशदा रूपवर्धिनी ।

तुष्टिः पुष्टिः प्रजाप्रीता प्राजिका पूजकप्रिया ॥ १२० ॥

प्रजावती गर्भवती गर्भपोषणपोषिता^१ ।

शुक्लवासाः शुक्लरूपा शुचिवासा जयावहा ॥ १२१ ॥

जानकी जन्यजनका जनतोषणतत्परा ।

वादप्रिया वाद्यस्ता वादिता वादमुन्दरी ॥ १२२ ॥

रामस्तम्भिनी कीरवाणी धीराधीरा धुरन्धरा ।

स्तनन्धयी सामिधेनी निरानन्दा निरालया ॥ १२३ ॥

समस्तसुखदा सारा वारानिधिरप्रदा ।

वालुकी वीरपानेष्टा वसुधात्री वसुप्रिया ॥ १२४ ॥

शुक्रनान्दा शुक्ररसा शुकपूज्या शुकप्रिया ।

शुकी च शुकहस्ता च समस्तनरकान्तदा ॥ १२५ ॥

समस्तनरानिलया भगरूपा भगेश्वरी ।

भगविम्बा भगाह्वया भगलिङ्गम्वरुपिणी ॥ १२६ ॥

भगलिङ्गेश्वरी श्रीदा भगलिङ्गामृतस्रवा ।

क्षीराशना क्षीररुचिराज्यपानपरायणा ॥ १२७ ॥

मधुपानपरा प्रौढा पीवरामा परपरा ।

पिलम्पिला पटोलेशा पाटलारणलोचना ॥ १२८ ॥

क्षीरामृधिप्रिया क्षीरा मरला मरलायुधा ।

सगामा मुनया सस्ता ममृतिः मनकेश्वरी ॥ १२९ ॥

कन्या वनकरंगा च कान्यकुब्जनिवासिनी ।

काञ्चनाभतनुः काष्ठा कुम्भरोगविनाशिनी ॥ १३० ॥

रुद्राग्रमर्धना रुन्ती कुन्तायुधधरा गतिः ।

- चर्मभिरा क्रूरनखा चकोराक्षी चतुर्भुजा ॥ १३१ ॥
 चतुर्वेदप्रिया चाक्षी चतुर्वर्गफलप्रदा ।
 ब्रह्माण्डचारिणी स्फूर्तिर्ब्रह्माणी ब्रह्मसंमता ॥ १३२ ॥
 सन्कारकारिणी मृतिः स्मृतिका लतिकालता । (६००)
 कल्पवल्ली कृपाङ्गी च कल्पपादपवासिनी ॥ १३३ ॥
 कल्पपोशा महाविद्या विद्याराज्ञी सुखाश्रया ।
 भूतिराज्ञी विश्वराज्ञी लोकराज्ञी शिवाश्रया ॥ १३४ ॥
 ब्रह्मराज्ञी विष्णुराज्ञी रुद्रराज्ञी जटाश्रया ।
 नागराज्ञी वंशराज्ञी धीरराज्ञी रजःप्रिया ॥ १३५ ॥
 सत्पराज्ञी तमोराज्ञी गुरुराज्ञी चलाचला ।
 वसुराज्ञी सत्यराज्ञी तपोराज्ञी जपप्रिया ॥ १३६ ॥
 मन्त्रराज्ञी वेदराज्ञी तन्त्रराज्ञी श्रुतिप्रिया ।
 वेदराज्ञी मन्त्रराज्ञी दैत्यराज्ञी दयाकरा ॥ १३७ ॥
 कालराज्ञी प्रजाराज्ञी तेजोराज्ञी हराश्रया ।
 पृथ्वीराज्ञी पयोराज्ञी वायुराज्ञी मदालसा ॥ १३८ ॥
 सुधाराज्ञी सुराराज्ञी भीमराज्ञी भयोविभवा ।
 तथ्यराज्ञी जपाराज्ञी महाराज्ञी कलांकृतिः ॥ १३९ ॥
 वामराज्ञी चीर्नराज्ञी हरिराज्ञी हलीश्वरी ।
 पराराज्ञी यक्षराज्ञी भूतराज्ञी शिवामना ॥ १४० ॥
 बहुराज्ञी प्रेतराज्ञी शेषराज्ञी शमप्रदा ।
 आकाशराज्ञी राजेशी राजराज्ञी रतिप्रिया ॥ १४१ ॥

१ 'कल्पवल्ली' ख. पाठः । २ 'जप' ख. पाठः । ३ 'रजःप्रिया' ख. पाठः ।

४ 'वेदराज्ञी मन्त्रराज्ञी' ख. पाठः । ५ 'विष्णुराज्ञी' ख. पाठः ।

६ 'जप' ख. पाठः । ७ 'शिवामना' ख. पाठः ।

पातालराज्ञी भूराज्ञी प्रेतराज्ञी विषापहा ।
 सिद्धराज्ञी विभाराज्ञी तेजोराज्ञी विभामयी ॥ १४२ ॥
 भास्वद्राज्ञी चन्द्रराज्ञी ताराराज्ञी खवासिनी ।
 ग्रहराज्ञी लताराज्ञी वृक्षराज्ञी मतिप्रदा ॥ १४३ ॥
 धीरराज्ञी मनोराज्ञी मनुराज्ञी च काश्यपी ।
 मुनिराज्ञी रत्नराज्ञी युगराज्ञी मणिप्रमा ॥ १४४ ॥
 मिन्धुराज्ञी नदीराज्ञी नदराज्ञी दरीस्थिता ।
 निन्दुराज्ञी नादराज्ञी आत्मराज्ञी च सद्गतिः ॥ १४५ ॥
 पुत्रराज्ञी ध्यानराज्ञी लयराज्ञी सदाश्वरी ।
 ईशानराज्ञी राजेशी स्नाहाराज्ञी महत्तरा ॥ १४६ ॥
 वह्निराज्ञी योगिराज्ञी यज्ञराज्ञी चिदाकृतिः ।
 जगद्राज्ञी तत्त्वराज्ञी वाग्राज्ञी विश्वरूपिणी ॥ १४७ ॥
 पञ्चदशाक्षरीराज्ञी ओङ्गीभूतेश्वरेश्वरी । (१०००)
 इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रात्रीनाममहत्तमम् ॥ १४८ ॥
 पञ्चदशाक्षरीतन्त्रं मन्त्रमारं मनुप्रियम् ।
 सर्वतन्त्रमयं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ १४९ ॥
 सर्वसिद्धिप्रदं लोके सर्वरोगनिवर्हणम् ।
 मर्योत्पातप्रशमनं ग्रहशान्तिकरं परम् ॥ १५० ॥
 सर्वदेवप्रियं प्रार्ज्यं सर्वशत्रुभयापहम् ।
 सर्वदुःखौघशमनं सर्वशोकैरिनाशनम् ॥ १५१ ॥
 पठेद्वा पाठयेच्चाप्ता सहस्रं शक्तिसंनिधौ ।
 दरादेव पलायन्ते विपदः शत्रुभीतयः ॥ ४५२ ॥
 राक्षसा भूतवेतालाः पन्नगा हरिणद्विपः ।

‘सदश्वरी’ ख पाठ । २ ‘वाग्राज्ञी’ ख पाठ । ३ ‘पुण्य’ ख पाठ ।

‘जाम’ ख पाठ ।

- पठनाद्रिद्रवन्त्याशु महाकालादिव प्रजाः ॥ १५३ ॥
 श्रवणात्पातकं नश्येच्छ्रावयेद्यः मं भाग्यवान् ।
 (नानाविधानि भोगानि संशुज्य पृथिवीतले ॥ १५४ ॥)
 गमिष्यति परां भूमिं त्वरितं नात्र सशयः ।
 अश्वमेधसहस्रस्य वाजिपेयस्य कोटयः ।
 गङ्गास्नानसहस्रस्य चान्द्रायणायुतस्य च ॥ १५५ ॥
 तप्तकृच्छ्रकलवस्य राजसूयस्य कोटयः ।
 सहस्रनामपाठस्य कलां नार्घन्ति षोडशीम् ॥ १५६ ॥
 सर्वसिद्धीश्वरं साध्यं राज्ञीनामसहस्रकम् ।
 मन्त्रगर्भं पठेद्यस्तु राज्यकामो महेश्वरि ॥ १५७ ॥
 वर्षमेकं शतावर्तं महाचीनक्रमाकुलः ।
 शक्तिपूजापरो राज्ञी न लभेद्राज्यमीश्वरि ॥ १५८ ॥
 पुत्रकामी पठेत् सायं चिताभस्मानुलेपनः ।
 दिगम्बरो मृकुकेशः शतावर्तं महेश्वरि ॥ १५९ ॥
 रमशाने तु लभेत् पुत्रं साक्षाद्भूषणोपमम् ।
 परदारार्चनरतो भगविभ्यं स्मरन् सुधीः ॥ १६० ॥
 पठेन्नामसहस्रं तु वसुकामी लभेद् धनम् ।
 रत्नं वारत्रयं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ॥ १६१ ॥
 मृदुविष्टरनिर्विष्टः क्षीरपानपरायणः ।
 स्वप्ने सिंहासनां राज्ञीं वरदां भुवि पश्यति ॥ १६२ ॥
 क्षीरचूर्णसन्तुष्टो वीरयानरसाकुलः ।
 यः पठेत् परया भक्त्या राज्ञीनामसहस्रकम् ॥ १६३ ॥
 न सद्यो मुच्यते घोरान्महापातकजात्रपात् ।
 यः पठेत् साधको भक्त्या शक्तिवच्चःकुटासनः ॥ १६४ ॥

शुक्रोत्तरणकाले तु तस्य हस्तेऽष्टसिद्धयः ।
 यः पठेन्निशि चक्राग्रे परस्त्रीध्यानतत्परः ॥ १६५ ॥
 सुरासवरसानन्दी स लभेत् संयुगे जयम् ।
 इदं नामसहस्रं तु सर्वमन्त्रमयं शिखे ॥ १६६ ॥
 भूर्जत्वचि लिखेद्रात्रौ चक्रार्चनसमागमे ।
 अष्टगन्धेन पूतेन घेष्टयेत् स्पर्शपत्रके ॥ १६७ ॥
 धारयेत् कण्ठदेशे तु सर्वसिद्धिः प्रजायते ।
 यो धारयेन्महारचां सर्वदेवातिदुर्लभाम् ॥ १६८ ॥
 रणे राजकुले द्यूते चौररोगाद्युपद्रवे ।
 स प्राप्नोति जयं सद्यः साधको वीरनायकः ॥ १६९ ॥
 श्रीचक्रं पूजयेद्यस्तु धारयेद्भर्म मस्तके ।
 पठेन्नामसहस्रं तु स्तोत्रं मन्त्रात्मकं तथा ॥ १७० ॥
 किं किं न लभते काम देवानामपि दुर्लभम् ।
 सुरापन्नं ततः संविचर्वणं मीनमांसकम् ॥ १७१ ॥
 नवकन्यासमायोगो मुद्रा वीणारवः प्रिये ।
 सत्सङ्गो गुरुसान्निध्यं राज्ञीश्रीचक्रमग्रतः ॥ १७२ ॥
 यस्य देवि स एव स्याद्योगी ब्रह्मविदीश्वरः ।
 इदं रहस्यं परमं भक्त्या तत्र मयोदितम् ॥ १७३ ॥
 अन्नकारयमदानव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।
 अन्यशिष्याय दुष्टाय दर्जनाय दुरात्मने ॥ १७४ ॥
 गुरुभक्तिविहीनाय सुरास्त्रीनिन्दकाय च ।
 नास्तिकाय कुशीलाय न देय तत्त्वदर्शिभिः ॥ १७५ ॥
 देय शिष्याय शान्ताय भक्तायाद्वैतवादिने ।
 दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च ॥ १७६ ॥

दत्ता भोगापवर्गत्वं लभेत् साधकसत्तमः ।
इति नामसहस्रं तु राज्ञ्याः शिवमुखोदितम् ।
अल्पन्तदुर्लभं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १७७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविधारहस्ये
श्रीमद्वाराक्षोसदस्यनामकम् ॥ ४ ॥

अथ

श्रीमहाराज्ञीस्तोत्रम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

अपुनः कथयिष्यामि स्तोत्रराजं परात्मकम् ।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं तत्त्वभूतं मनोहरम् ॥ १ ॥
राज्ञीप्रियं पापहर लक्षपूजाफलप्रदम् ।
जपलक्षसमं स्तोत्रं ध्यानकोटिसमं प्रिये ॥ २ ॥
राज्ञीस्तोत्रस्य देवेशि ब्रह्मा ऋषिरुदाहृतः ।
गायत्रं छन्द इत्युक्तं श्रीराज्ञी देवतेरिता ॥ ३ ॥
माया बीजं परा शक्तिः कामः कीलकमीश्वरि ।
भोगापवर्गसिद्धयर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

अस्य श्रीमद्वाराक्षोस्तवराजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्र छन्दः
श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता ह्रींबीजं सा शक्तिः क्रीं कीलक भोगाप-
वर्गसिद्धये विनियोगः । ब्रह्मसृष्टये नमः शिरसि, गायत्रं छन्दसे नमो
मुखे, श्रीराज्ञीभूतेश्वरीदेवतायै नमो हृदि, ह्रींबीजाय नमो नाभौ,
सा शक्तये नमो गुह्ये, क्रींकीलकाय नमः पादयोः विनियोगाय नमः ।

सर्वाङ्गेषु । ध्यानम्—

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां
 सिंहासनोपरि गतामुरगोपवीताम् ।
 खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
 राज्ञीं भजामि विकसद्बदनारविन्दाम् ॥ १ ॥

तारमिन्दुकलिकावतंसितं
 वेदसागरमणिं मनोहरम् ।
 यो जपेदुपसि रत्नमालया
 राज्यमाशु लभते स साधकः ॥ २ ॥

भूतिमिन्दुनवविन्दु (म्ब) मण्डितां
 नादविन्दुललितां जपेत्तु यः ।
 वारमेकमुखवारणस्थितो
 जेष्यति स्मयमयानरीन रणे ॥ ३ ॥

रमां जपेद्यो भुवनेशि मन्त्री
 लन्मन्त्रमध्ये भदनोपतप्तः ।
 रम्भां समालिङ्ग्य विमानचारी
 लीलां भजेन्नन्दनवाटिकायाम् ॥ ४ ॥

वह्निबीजमणिमादिसिद्धिदं
 विन्दुविम्बशशिखण्डमण्डितम् ।
 यो जपेन्नशि धनाभिलाषवान्
 स क्षणाद्भवति विचक्षोपमः ॥ ५ ॥

कामराजममराभिवन्दितो
 यो जपेन्निधुवनेऽक्षमालया ।

तस्य यान्ति वशतां सुराङ्गनाः

किं पुनर्जगति भूमृदङ्गनाः ॥ ६ ॥

शक्तिं भक्त्या यो जपेज्जपूजा-

काले कालीपादपद्मार्पितान्तः ।

नक्तं तस्य स्मेरवक्त्रा घृताची

वेश्या वरया स्वर्गता वा शची च ॥ ७ ॥

भगवत्यै तथा राह्यै नाममन्त्रमिति स्मरेत् ।

यो देवि तस्य वरयाः स्युर्भैरवस्याष्टसिद्धयः ॥ ८ ॥

मायार्णमन्ते यदि साधकेन्द्रो

जपेन्महेशानि शबालयस्थः ।

तत्रैव देवीं परमार्थराज्ञीं

परयेत् स सद्यो वरसिद्धिदात्रीम् ॥ ९ ॥

उद्वयं यदि जपेन्निशाचये

चौरभृङ्गं मुतटिनीतटास्थितः ।

जिष्णुविष्णुकमलासनेश्वरा

यान्ति देवि वशतां तदा चयात् ॥ १० ॥

भूगहवृक्षत्रयनामपत्र-

पङ्कथपोन्मथ्रकविन्दुविम्वे ।

निपेदुषीं राजकुलाधिदेवीं

राज्ञीं भजे राजकुलावतंसाम् ॥ ११ ॥

देवि श्रीभूतधात्रि प्रवरमुण्मये जिष्कले निर्गुणे मे

माये मातः शरण्ये गिरिवरतनये चिन्मये तत्त्वरूपे ।

दुर्गे चण्डि प्रमत्ते त्रिपुरविजयिनि स्मेरवक्त्रे वरेण्ये

कारुणपाद्वे प्रशस्ते सुरादितिजनुते राज्ञि त्वं वै प्रसीद ॥ १२ ॥

इति स्तोत्रं मन्त्रस्फुरणकरुणानन्दनिलयं
 पठेद्भक्त्या प्रातस्तव गिरिसुते यो निरलसम् ।
 भवेत् सद्यो भूमौ नृपमुकूटनीराजितपदो
 मृतो मुक्तिं मर्त्यस्तव भवनमामोति वरदे ॥ १३ ॥
 इति राश्याः पर तत्त्वं पञ्चाङ्गमखिलं शिवे ।
 सर्वस्वं च रहस्यं मे सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १४ ॥
 आनन्दवर्धनं गुह्यं परमैश्वर्यकारणम् ।
 भोगापवर्गदं पुण्यं दारिद्र्यभयनाशनम् ॥ १५ ॥
 राज्यप्रदं भक्तिकरं सर्वशत्रुनिवर्हणम् ।
 पञ्चाङ्गमखिलं देव्या न वक्रव्यं दुरात्मने ।
 तव भक्त्या मयारूपात्तं गोपनीयं ग्रयस्ततः ॥ १६ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

भगवन् करुणाम्भोधे क्रीतास्मि भगवाधुना ।
 दास्यस्मि तव भक्तास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो ॥ १७ ॥
 पञ्चाङ्गकथनेनास्या राश्या देव्या महेश्वर ।
 भवत्प्रसादाद् देव्यस्मि किमन्यत् कथयामि ते ॥ १८ ॥

श्रीभैरव उवाच ।

इदं रहस्यं पञ्चाङ्गं राक्षीदेव्या मयेरितम् ।
 कौलानां सिद्धिदं वामाद्गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १९ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
 श्रीमहाराक्षीस्तोत्रम् ॥ ५ ॥

समाप्तमिदं श्रीमहाराक्षीपञ्चाङ्गम् ।

अथ

वालात्रिपुरापञ्चाङ्गम्

वालापटलम् ।

कैलासशिखरासीनं भगवन्तमुमांषतिम् ।
चन्द्रार्धमुकुटं देवं सोमसूर्याग्निलोचनम् ॥ १ ॥
गजचर्मपरीधानं विरूपाक्षं सुरार्चितम् ।
गणगन्धर्ववक्षेन्द्र-देवासुरनमस्कृतम् ॥ २ ॥
विहसन्तं जपन्तं च पठन्तं च मुहुर्मुहुः ।
उत्थाय प्रणता भूत्वा चेदं पृच्छति भैरवी ॥ ३ ॥

श्रीभैरवी ।

भगवन् करुणाम्भोधे सर्वागमविशारद ।
त्वत्पसादान्मया सर्वाः श्रुता विद्याः सुरेश्वर ॥ ४ ॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि वालां त्रिपुरसुन्दरीम् ।
देवास्ति यदि मे देव वद विद्यां महेश्वर ॥ ५ ॥

श्रीभैरवः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पञ्चाङ्गं साधकेष्टदम् ।
पटलं पद्मं वर्म तथा नाग्रां संहस्रकम् ॥ ६ ॥
स्तवराजं महादेवि शृणुष्वैकाग्रमानसा ।
श्रीवाला परमेशानी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ ७ ॥

राज्यं देयं शिरो देयं गृहं लक्ष्मीयुतं तथा
 सर्वं देयं महादेवि न देयमिदमुत्तमम् ॥ ८ ॥
 अस्या विद्यायाः सदृशी विद्या नान्या कलौ युगे ।
 श्रीबालात्रिपुराविद्या शीघ्रं सिद्धिप्रदा स्मृता ॥ ९ ॥
 देया शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिरताय च ।
 नाभक्ताय प्रदातव्या विद्येयं परमेश्वरि ॥ १० ॥
 मन्त्रोद्धारं तथा यत्नं प्रस्तार ध्यानमेव च ।
 प्रयोगान् संप्रवक्ष्यामि देवदेव्या महेश्वरि ॥ ११ ॥
 प्रथमं शृणु देवेशि मन्त्रोद्धारं फलप्रदम् ।
 गोपनीयं प्रयत्नेन येन सिद्धिः प्रजायते ॥ १२ ॥
 वाग्भवं कामराजश्च शक्तिमध्येऽभिधं न्यसेत् ।
 नमोऽन्ते देवि बालाया मन्त्रोऽयं चाष्टवर्णकः ॥ १३ ॥
 नापि विघ्नो न वाशौचो न वारनियमस्तथा ।
 स्वयं सिद्धो महादेवि मन्त्ररानः कलौ युगे ॥ १४ ॥
 दक्षिणामूर्तिपङ्क्त्यौ च मुनिरञ्जन्दः क्रमात् स्मृतम् ।
 देवता त्रिपुरा नाला आद्यन्ते वीजशक्तिके ॥ १५ ॥
 क्लीं क्लीलकं समादिष्टं भर्मकामार्धमुक्तये ।
 शिरसि वदने देवि हृदये गुह्यदेशके ॥ १६ ॥
 पादयोर्नाभिकमले सर्वाङ्गे च तथा न्यमेत् ।
 श्रुत्यादिकं महादेवि कुर्यान्न्यासत्रिकल्पनाम् ॥ १७ ॥
 करन्यासं पङ्क्तं च गीजैः कुर्यान्महेश्वरि ।
 अस्या ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितप्रदम् ॥ १८ ॥

रत्नाम्बरा चन्द्रकलावतंसा

समुद्यदादित्यनिभा त्रिनेत्राम् ।

विद्याक्षमालाभयदानहस्तां

ध्यायामि बालामरुण्याम्बुजस्थाम् ॥ १६ ॥

इति ध्यात्वा महादेवीं जपेन्मन्त्रं सुसिद्धिदम् ।

लघुत्रयं पुरश्चर्याविधौ साधकसत्तमः ॥ २० ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम् ।

साधकस्य महादेव्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ २१ ॥

मिन्दुत्रिकोणवसुकोणकनागपत्र-

वृत्तत्रयाञ्चितमहीसदनत्रयं च ।

बालादिचक्रमिदमार्तिहरं गिरीशे

ब्रह्मेन्द्रविष्णुनमितं गदितं मया ते ॥ २२ ॥

एवं किलिलिते यन्त्रे पीठशक्तीः प्रपूजयेद् ।

इच्छाज्ञानक्रियाश्चैव कामिनी कामदायिनी ॥ २३ ॥

रती रतिप्रियानन्दा मनोन्मन्यपि वान्तिमा ।

पीठशक्तीरिमा इष्ट्वा पीठं तन्मनुना दिशेद् ॥ २४ ॥

व्योमपर्वततार्तीयं सदाशिवमहापदम् ।

पीठपद्यामनायान्ते नमोन्तः पीठमश्रकः ॥ २५ ॥

योऽङ्गशार्ङ्गस्ततो मूर्त्तां क्रियायां मूलमन्त्रतः ।

आवाह्यं पूजयेद् देवीपुष्पाङ्गैः पृथग्विधैः ॥ २६ ॥

देवीमिष्ट्वा मध्ययोनीं त्रिकोणे मतिपूर्वकः ।

वामकोणे रतिं दत्त्वे प्रीतिमग्रे मनोभवाम् ॥ २७ ॥

योग्या तु बहिःकोणादारङ्गानि परिपूजयेत् ।

मध्ययोन्यां बहिः पूर्वदिक्षु चाग्रे स्मरान्त्रपि ॥ २८ ॥

राणदेवीस्तद्वदेव शक्तीरष्टासु योनिषु ।

सुभगाख्या भया पश्चाच्चृतीया भयमर्पिणी ॥ २९ ॥

भगमाला तथानङ्गाद्यानङ्गकुसुमा परा ।
 अनङ्गमेखलानङ्गमदनेत्यष्टशक्रयः ॥ ३० ॥
 पद्मकेसरगा त्राक्षीमुखः पत्रेषु भैरवाः ।
 दलाग्रेऽप्यष्ट पीठानि कामरूपाख्यमादिमम् ॥ ३१ ॥
 मलयं कौलगिर्याख्यं चौहाराख्यं कुलान्तकम् ।
 जालन्धरं तथौढ्याणं देवकूटमयाष्टमम् ॥ ३२ ॥
 भूगृहे च धरादिञ्च हेरुकं त्रिपुरान्तकम् ।
 वेतालमग्निजिह्वं च कालान्तककपालिनौ ॥ ३३ ॥
 एकपादं भीमरूप मलयं हाटकेश्वरम् ।
 शक्राद्यानायुधैः सर्वैः स्वस्वदिञ्च सचर्मयेत् ॥ ३४ ॥
 तद्गहिर्दिञ्च वटुकं योगिनीः चेप्रपालकम् ।
 गणेशं विदिशासु चै वसन् सूर्यं शिवं तथा ॥ ३५ ॥
 (सर्वभूतान् समभ्यर्च्य पूजयेदायुधांस्तथा) ।
 बालां मध्ये विभाव्यादौ कामेश्वराङ्गमध्यगाम् ॥ ३६ ॥
 मकारैः पञ्चभिः कौलः कौलाचारपरायणः ।
 संपूजयेन्महादेवि साधको मन्त्रसाधकः ॥ ३७ ॥
 बिन्दौ गन्धाक्षतैः शुष्पैर्धूपदीपादितर्पणैः ।
 लयाङ्गमिदमाख्यातं प्रयोगाञ् शृणु पर्वति ॥ ३८ ॥
 यान् विधाय मनुः शीघ्रं सिद्धिमाप् भवति ध्रुवम् ।
 स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे तथा ॥ ३९ ॥
 वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।
 एतत्साधनमाचरे सारभूत मनोः प्रिये ॥ ४० ॥
 अदेयं देव्यभक्ताय गोप्यं गुह्यतमं पशोः ।

(१) प्रतिपद्दिवसे देवि स्नात्वा कृत्वाहिकीं क्रियाम् ॥ ४१ ॥

मध्याह्ने निर्वनं गत्वा यथावदधुतावधि ।

होमो दशांशतः कार्यो घृतपायसवर्हकः ॥ ४२ ॥

संतर्प्य देवताः सद्यः स्तम्भनं जायते ध्रुवम् ।

राजस्येन्दुवातानां दस्युवादिमुखेषु च ॥ ४३ ॥

२) दशै सायं रमशाने तु जपेदुलूकविष्टरः ।

अयुतं तद्दशांशेन होमं सर्पिस्सुरान्वितैः ॥ ४४ ॥

कर्णकैसरपद्माचैर्मोहनं जगतां भवेत् ।

(३) भूताख्ये वासरे देवि गत्वा प्रेतालयं निशि ॥ ४५ ॥

चिताग्रे संजपेद्विधां वीरेन्द्रः षोडशाक्षरीम् ।

अयुतं च हुनेन्मन्त्री चिताग्नौ घृतगुग्गुलम् ॥ ४६ ॥

चण्डालकेशसहितं त्रियते रिपुहृत्कटः ।

(४) अष्टम्यां शुक्रपक्षे तु जपेद्रहसि साधकः ॥ ४७ ॥

अयुतं मूलविद्याया ध्यात्वा कान्तां मनोगताम् ।

होमो दशांशतः सर्पिर्लाक्षापुष्पवतीरजः ॥ ४८ ॥

करीरपूलगोधूमैः स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।

(५) नवम्यां साधकः स्नान्वा कृत्वा कर्मादिकं त्रिये ॥ ४९ ॥

अयुतं घृतमत्स्यण्ड-पद्ममुक्कणरोमभिः ।

होमो विधेयो वरिष्ठैः (?) वासवो दासतां व्रजेत् ॥ ५० ॥

(६) चतुर्थ्यां कृष्णपक्षे तु जपेच्चन्द्रोदये शिवे ।

नदीतीरे भुञ्जुं वीरांस्युतं शीर्षासनस्थितः ॥ ५१ ॥

दशांशेन हुनेत्तत्र घृतनीलोत्पलत्वचः ।

लवङ्गमरिचाम्लादीन् रिपोरुच्चाटनं भवेत् ॥ ५२ ॥

(७) पञ्चम्यां निशि देवेशि जपेदधुतसंख्यया ।

हुनेद् दशांशतः सर्पिर्मत्स्यमत्स्यण्डखर्परान् ॥ ५३ ॥

महामय-महामीति-महोपद्रवशान्तये ।

- (८) महाष्टम्यां नरः स्नात्वा पीठे श्रेष्ठे दशाधिकाम् ॥ ५४ ॥
 चीरो दशाङ्गसाहस्रीं हुनेत्तत्र दशांशतः ।
 घृतखर्जूरमृद्वीका-नागवल्लीदलस्रजः ॥ ५५ ॥
 द्वागमांसं सरक्लं च महापुष्टिः प्रजायते ।
 इदं रहस्पमाख्यातं सर्वतत्त्वनिरूपणम् ॥ ५६ ॥
 सर्वस्वं मम देवेशि रहस्यं गोपयेत् कलौ ।
 सूर्यादिवारेषु जपैर्दशसाहस्रसंख्यकैः ॥ ५७ ॥
 सर्वसिद्धिमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
 इत्येष पटलो दिव्यः स्नेहात् तव प्रकाशितः ।
 गोप्याद् गोप्यो गोप्यतरो गोपनीयः स्वपोनिवत् ॥ ५८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे
 श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीपटलः ॥ १ ॥



अथ

श्रीवालायाः पद्धतिः ।

अधुना कथयिष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ।
 श्रीबालात्रिपुरेश्वर्यास्तत्त्वतः सौम्यदायिनीम् ॥ १ ॥

प्रातः कृत्यमकृत्वा तु यो देवीं भक्तितोऽर्चयेत् ।

तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया ॥ २ ॥

धीमान् साधको प्रातरेषे मुहूर्ते शयनतलादुत्थाय करचरणमुखादि
प्रक्षाल्य, चक्षुषप्रासनः समुपविश्य स्वशिरःस्थसदसाराधोमुखकम-
लकारिकान्तर्गतं मित्रगुहं स्वशक्त्या सहितं ध्यात्वा, मानसोपचारैः
संपूज्य दण्डवत्पत्वा, गुरुकृपाधिना प्रातःकृत्यमजपाजपं च विधाय,
स्वकार्यानुष्ठानाय भूमिं प्रार्थ्य भ्यासानुसारं तस्यां पादाबुपन्यस्य,
गृहाद्विनिःसृत्य, नैर्ऋत्यां याम्यां वा दिशि मूलमूषोत्तरं — शौचा-
धमन — दन्तधायनादिकं विधाय नद्यादौ गत्वा वैदिकं निर्वृत्य ता-
म्रिकमारभेत । तत्रादौ मूलयुक्तत्वत्रयेणाचम्य, द्वौस्वाहा इत्यनेन
वाचम्य, मूलं स्मरन् मलापकर्षणस्नानं विधाय, पुनराचम्य अथेत्या-
दिमासाद्युत्कीर्तनं विधाय, श्रीकुलदेवताप्रोतये ताम्रिकविधिना ज्ञान-
महं करिष्ये इति संकल्प्य, जले त्रिकोणचक्रं विमाप्य सूर्यमण्डलात्
“ गङ्गे च समुले चैव ” इत्यादिनाकुशमुद्रया तीर्थमावाह्य, पुरःकल्पि-
ततीर्थे संयोग्याचम्य स्वात्मानं प्राश्य, मूलेन भृदा जपनं विधाय,
मूलं पठन्नावाहिता स्वदेवतां त्रिरभिषिच्य, भवणादिसप्तचिद्वाणि
निरूप्य त्रिनिर्मज्ज्योन्मज्जेदिति ज्ञानविधिः ॥

अथ संध्या । तत्र पूर्ववदाचम्य स्वमूलप्राणायामभ्यामविकरषडङ्गं
विधाय पूर्ववत्तीर्थमावाह्य, वामहस्ते तज्जलं निधाय दक्षहस्तेनाच्छाद्य
परंबलदं इति पाञ्चभौतिकमन्त्रे सप्तवारमभिमन्त्र्य, मूलविधया त्रिर-
भिनम्य, तज्जलविन्दुभिर्वामाहुष्ठानामिकाभ्यां मूलविधया स्वशिरसिः
प्रोत्थावशिष्टजलं वामहस्ते निधाय, त्रिरभिमन्त्र्य मूलमुत्तरंस्तत्त्वमुद्र-
या मुष्टिं समधा मूलेन च त्रिधाम्युच्य, शेषं जले दक्षहस्ते समा-
दाय तेलोरूपं ध्यात्वा, इदया वेदान्तापापं प्रक्षाल्य, कृष्णवर्णं त-
ज्जलं पापरूपं पिबन्नप्या पिरित्य वामे कल्पितवज्रशलायां फटिति
निक्षिपेत् । ततोऽर्घ्यं विधाय, ओम्हाहोस श्रीमार्तण्डभैरवाय प्र-
काशशक्तिमहिनाय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि स्वाहा इति त्रिरर्घ्यं कु-
लसूर्याय दत्त्वा, हृन्पथात् सूर्यमण्डले मूलदेवीं नीत्वा तत्र विधिवद्-
ध्यात्वा, एं वागीश्वर्यं चित्रोदं क्रीं वामेश्वर्यं धीमहि सो तन्नः श-
क्तिः प्रचोदयात्, इत्यनया मलगायत्र्या चतसृषु संध्यासु सूर्यमण्ड-

ले मूलदेव्यै अर्घ्यं दत्त्वा यथाशक्ति जपेत् । ततश्चतसृषु संध्याः
क्रमशः मूलाधार—हृत्कमल—भ्रूमध्य—ब्रह्मरन्ध्रेभ्यो देवीतेजः समा-
कृष्य इडया विरेच्य, कल्पितषड्विंशत्यंशचन्द्रतारामण्डलेषु निक्षिप्य
तत्र बालयौवनप्रौढचिद्रूपां देवीं ध्यात्वा, ततः ऐं त्रिपुरादेव्यै विश्वे
वागीश्वर्यं धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्, इति प्रातः । ॐ त्रिपुरा-
देव्यै विश्वे कामेश्वर्यं धीमहि तन्नः किष्ना प्रचोदयात्, इति मध्याह्ने ।
सौः त्रिपुरादेव्यै विश्वे शक्तेश्वर्यं धीमहि तन्नोऽमृते प्रचोदयात्, इति
सायं । ऐं वागीश्वर्यं विश्वे ॐ कामेश्वर्यं धीमहि सौः तन्नः शक्तिः
प्रचोदयात्, इति अर्धरात्रे । इति स्वस्वगायत्र्यार्घ्यं दत्त्वा यथाश-
क्ति स्वस्वगायत्रीं च जप्त्वा, पुनर्मूलगायत्रीं च जप्त्वा स्वस्वयीजा-
लं सर्वं मूलं च जप्त्वा, प्राणायामादिना जपं समर्थं मण्डलेभ्यो
देवीतेजः स्वस्थाने देवीं च हृद्यानोप ध्यायेदिति संप्र्याधिधिः ॥

ततस्तर्पणम् । तत्र पूर्ववदाद्यस्य प्राणायामादि कृत्वा तीर्थमावा-
ह्य, मूलेन जलं सप्तधामृतमुद्रयामृतीकृत्य तत्र जले यन्त्रं ध्यात्वा,
तत्र देवीं हृदयात् सपरिवारामानीय षडङ्गयोगेन सकलांकृत्य कुण्डलि-
न्याः प्रयोगेणामृतेनाभिषिच्य विधिवत् प्रपूज्य, पेशान्यां ॥ श्रीकौला-
नन्दनाथभैरवस्तुष्यताम् इति त्रिः संतर्प्य, ब्रह्मै ॐ परमगुरुं,
नैर्ऋत्यां ॐ परमाचार्यं, धायव्ये ॐ परमेश्वरगुरुं, त्रिः सकृद्वा संतर्प्य,
दिव्यौघसिद्धौघमानवौघानपि गुरुन् संतर्प्य जले यन्त्रं विभाज्य, मूले
कामेश्वरसहिता बालात्रिपुरावागीश्वरी तृष्यतामिति त्रिः संतर्प्य परि-
वारानपि संतर्प्य, प्राणायामादि विधाय देवीं स्वहृदि विस्मृजेत् तीर्थं
च स्वस्थाने विस्मृजेदिति तर्पणम् ॥

ततो योगोद्दमागत्य जलादिना द्वारदेवताः पूजयेत् । ऊं धात्रे
नमः, ऊं विधात्रे नमः, दत्ते । गणेशायै नमः, य यमुनायै नमः,
वामे । ऋषधियै नमः वास्तुपुरुषाय नम ऊर्ध्वे । वेदहृत्यै
नमः इत्यधः संपूज्य, स्वासनमास्तीर्य ' ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय
नमः ' इति संपूज्य वीराद्यासनेनोपविश्य, "पृथिव्य त्वया धृता
लोकाः" इत्यादिना पृथिवीं प्रार्थ्य, मण्डकाय नमः, कालाग्निकद्राय० ।
ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय० । ह्रीं पीठाम्नाय० । इत्यासने संपूज्य,
तदुपरि समुपविश्य, सविदं यथामन्त्रं स्वीकुर्यात् । तद्विधिर्यथा—

द्रां क्षोभणवाणाय नमः अद्भुष्टयोः , द्रौ द्रावणवाणाय नमः तर्जन्योः , क्लीं थाकर्षणवाणाय नमो मध्यमयोः , ब्लूं वर्शोकरणवाणाय नमः अनामिकयोः , इति वाणन्यासः ॥

सौः कामाय नमः अद्भुष्टयोः , क्लीं मन्मथाय नमः तर्जन्योः , ऐं कन्दर्पाय नमो मध्यमयोः , ब्लूं मकरध्वजाय नमः अनामिकयोः , क्लीं भेनकेतवे नमः कनिष्ठिकयोः , इति कामकरन्यासः ॥

अथ स्वमूलकरन्यासः । ऐं अद्भुष्टाभ्यां नमः , क्लीं तर्जनोभ्यां , सौः मध्यमाभ्यां , ऐं अनामिकाभ्यां , क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां , सौः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । एव हृदयादिन्यासः । ततोऽन्तर्मातृकान्यासं यद्दिर्मातृकान्यासं च कृत्वा मातृकाविद्यान्यासं कुर्यात् । यथा—ऐं नमः माण्डव्ये , क्लीं नमः तले , सौः अग्रे , इति दक्षकरे । एवं वामकरे । ऐं नमः कले , क्लीं कुरपरे , सौः पाणो , इति दक्षे । एवं वामेऽपि । ऐं नमः अधः कले , क्लीं जाजुनि , सौः पादाग्रे इति दक्षे । एवं वामे । ऐं नमो लिङ्गे , क्लीं हृदि , सौः नादाग्रे , इति विद्यान्यासः ।

अथ नवयोनिन्यासः । ऐं नमो दक्षकणे , क्लीं वामे , सौः चिह्नके , ऐं दक्षशङ्खे , क्लीं वामे , सौः मुखे , ऐं दक्षनेत्रे , क्लीं वामे , सौः नासाया , ऐं दक्षबाहौ , क्लीं वामे , सौः कुक्षौ , ऐं दक्षजाजुनि , क्लीं वामे , सौः नाभौ , ऐं दक्षपादे , क्लीं वामे , सौः गुह्ये , ऐं दक्षपार्श्वे , क्लीं वामे , सौः हृदि , ऐं दक्षस्तने , क्लीं वामे , सौः कण्ठे , इति नवयोनिन्यासः ॥

अथ रत्यादिन्यासः । मूलाधारे ऐं रत्यै नमः , हृदि क्लीं प्रीत्यै० , भूमध्ये सौः मनोप्रवायै० । पुनरप्येषु स्थानेष्वेता विन्यसेत् । सौः अमृतेश्वर्यै नमः , क्लीं योगेश्वर्यै नमः , ऐं विश्वयोग्यै नमः । ततः पुनरपि पङ्क्त्यन्यासः संप्रदायिन । ऐं हृदयाय नमः , क्लीं शिरसे० । सौः शिखायै० , ऐं कवचाय० , क्लीं नेत्राभ्यां० , सौः अस्त्राय फट् , इति न्यासेर्देहं सनह्य । “ मूलाधारे मूलविद्या विद्युत्कोटिसमप्रभाम् ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ॥ विसतनुस्वरूपा तां विन्दुविवलया प्रिये । ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन सद्भजेन पुराणे ॥ मूलशक्तिदृढत्वेन मध्यशक्तिप्ररोधतः । परमानन्दसंदोहसानन्दं चिन्तयेत् परम् ॥ ” इत्यन्तर्यजन कृत्वा पीठपूजा न्यासेन

मणिपूरकं समानीय, तत्र बद्धौ जलं लीनं विभाव्य तस्माद्वह्निना सदानादृतं समानीय, तत्र वायौ वह्निं लीनं विचिन्त्य तस्माद्वायुना सह विशुद्धं समानीय, तत्रस्थाकाशे वायुं लीनं विचिन्त्य तस्मादाकाशेन सदाष्टाचक्रं समानीय, तत्र मनस्थाकाशं लीनं विचिन्त्य, मनो नादे लीनं विभाव्य, ध्वनौ ध्वनिं समर्प्य, सहस्रदलकमलकरिंकास्थचन्द्रमण्डलमभ्यगतत्रिकोणान्तर्गततेजोमयविन्दुरूपपरमशिवे देवतां समर्प्य, प्राणायामविधिना यमिति वायुबीजं धूम्रवर्णं षोडशवारं जपन् शरीरं पापपुरुषं, “वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम् । ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम् ॥ सुरापानदृढा युक्तं शुक्ल-एकद्विद्वयम् । तत्संसर्गिणद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ॥ उपपातकरोमा-यं रक्तश्मश्रुविलोचनम् । खड्गचर्मधरं क्रुद्धं पापं कुक्षौ विचिन्तयेत् ॥” इत्थं संशोष्य, यमिति वह्निबीजं रक्तवर्णं चतुष्पाष्टिवारं जपंस्तमेव संदध्य, यमित्यमृतबीजं शुक्लवर्णं सहस्रारे विचिन्त्य द्वात्रिंशद्वारं जपंस्तदुद्भवामृतघृष्टया निष्पापं शरीरमुत्पाद्य, ललाटेस्थ-लमिति पृथ्वीबीजेन पीतवर्णेन सुदृढीकृत्य, ह्रीमिति मूलस्थेन यीजेन सैश्वर्यविधाय, सोहमिति मन्त्रेण कुण्डलिनीममृतलोलीभूतां पञ्चभूतानि जीवारमानं च ब्रह्ममार्गेण स्वस्वस्थाने नियोजयेत् । ततो देवीरूप-मात्मानं विचिन्त्य हृदि हस्तं निधाय प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

‘ओंआंहींकोहंसः श्रीबालात्रिपुरायाः प्राणा इह प्राणा. १३ जी-प इह स्थित. १३ सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि १३ वादमनश्चक्षु-भोत्रघ्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा’ इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, स्वमूलऋष्यादिविन्तनं विदधीत । यथा—

अस्य श्रीबालात्रिपुरामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्री-बालात्रिपुरा देवता ऐं बीजं सौ शक्तिं क्लीं कीलकं पूजादौ विनियोगः इति कृताञ्जलि स्मृत्वा यथाविधि न्यसेत् । दक्षिणामूर्तिं ऋषये नमः शिरसि, पङ्क्तिच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीबालात्रिपुरादेवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौः शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमो नाभां, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु । ऐं नमो नाभ्यादिपादान्त, क्लीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तं, सौः नमो मूर्धादेकण्ठान्तम् ॥ ऐं नमो वामपाणितले क्लीं नमो दक्षे, सौः नमः उभयोः ॥

रक्तोत्पलदलाकार-पादपल्लवशोभिताम् ।

नचत्रमात्रासङ्काश-सुक्रामञ्जीरमण्डिताम् ॥ ७ ॥

वामेन पाणिनैकेन पुस्तकं चापरेण तु ।

अभयं च प्रयच्छन्तीं साधकानां वरानने ॥ ८ ॥

अक्षमालां च वरदं दक्षपाणिद्वयेन तु ।

दधतीं चिन्तयेद् देवीं वरयसौभाग्य-प्रदाम् ।

वीरकुन्देन्दुधवलां प्रसन्नां संस्मरेत् प्रिये ॥ ९ ॥

इति श्रीवाल्मीकिपुरां ध्यात्वा मानसोपचारैराश्रित्य मनसा यथा-
शक्ति जपहोमादिकं च कृत्वा, "धर्माधर्मद्विवर्तिं स्वात्मान्मन-
सां ह्रुवा । सुपुत्रायार्तना नित्यमक्षवृत्तोजुहोम्यहं स्वाहा ॥" काम-
कलां विचिन्त्य तदुपरि श्रीवालां यथोक्तां ध्यायन्, स्वयामभागे प-
दकोणाभ्यन्तर्गतत्रिकोणद्वयविन्दुवाह्यवृत्तचतुरश्रं कृत्वा स्वदक्षे त्रिकोणं
वृत्तषष्ठ्यं मण्डलं भूमौ विरच्य तत्राधारशक्तिं संपूज्य, तत्राधारं
निगतिष्य, तदुपर्यन्तमन्त्रेण शोधितं हृन्मन्त्रेण पूरितं पात्रं शंखादिकं
या संस्थाप्य तत्र 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना तीर्थमावाह्य
गन्धादीन् प्रणयेन निगतिष्य, वह्निसूर्यसोमकलाभिः संपूज्य धेनुमुद्रां
मन्त्रं स्वमन्त्रेण च संपूजयेदिति विधिविहितसामान्याप्यौर्वकेन स्व-
यामे कृतमण्डलमभ्युदय, तत्र 'आधारशक्तिभ्यो नमः' इत्यादि पी-
ठगुणाक्रमेण संपूज्य, नमः इत्याधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि संस्थाप्य,
"रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः" इति संपूज्य, फट्ति फ-
लये प्रक्षाल्य, कारणेन प्रपूर्य रक्तप्रत्नमाहवादिना संभूय देवायुद्-
द्या संस्थाप्य, "शं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः" इति
फलये संपूज्य, ओं चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः" इति द्वये
संपूज्य, फट्ति संरक्ष्य ह्रमित्यवगुण्ठ्य मूलैकं संवीर्य, नमः इ-
त्यभ्युदय मूलैकं गन्धमाप्राप्य, कुम्भे पुष्पं दत्त्वा शायमोचनं कुर्यात् ।

एकमेव परं प्रह्वं स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् । कचोन्नयां प्रह्वदत्तां
तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ सूर्यमण्डलसंभूतं यकणालयसंमये । अमाशो-
जमपि देवि शुक्रशापादिमुच्यताम् ॥ वेदानां प्रणयोऽपीजं प्रह्वानन्द-
मयं यदि । तेन सत्येन देवेशि प्रह्वदत्ता व्यपोहन्तु ॥ पयमानः प-

स्जदेहे कुर्यात् ।

मूलाधारे आधारशक्तये नमः , प्रकृत्यै नमः , स्वाधिष्ठाने कमटा-
य० , मणिपूरे शेषाय० , अनादिते पृथिव्यै० , तत्रैव सुधाम्बुधये० ,
मणिद्वीपाय० , चिन्तामणिगृहाय० , रत्नवेदिकायै० , मणिपीठाय० ,
विष्णु नानामुनिगणेश्वर्यो० , नानादेवेश्वर्यो० , धर्माय नमः दत्तासे । ज्ञाना-
य० वामांसे । वैराग्याय० वामोरौ । ऐश्वर्याय० दक्षोरौ । अधर्मा-
य० दक्षकुक्षौ । अज्ञानाय० दक्षपृष्ठे । अवैराग्याय नमः वामपृष्ठे ।
अनैश्वर्याय० वामकुक्षौ । शेषाय० । पद्माय० । प्रकृतिमयपत्रेश्वर्यो० ।
विकृतिमयकेसरीश्वर्यो० । पञ्चाशद्वर्णभूषितकणिकायै० । सूर्यमण्डलाय० । सो-
ममण्डलाय० । वह्निमण्डलाय० । सं सत्त्वाय० । रं रजसे० । त तमसे० । आ-
त्माने० । अ अन्तरात्माने० । पं परमात्माने० । ह्रीं ज्ञानात्माने० । पत्रेषु वा-
मायै० । ज्येष्ठायै० । रौद्रायै० । अम्बिकायै० । इच्छायै० । क्षान्तायै० । क्रियायै० ।
कुम्भिकायै० । चित्रायै० । विषाग्नििकायै० । दूतयै० । आनन्दायै० । मध्ये म-
नोन्मन्यै० । ऐं परायै० । अपरायै० । परापरायै० । इत्सौ सदाशिवमहाप्रेतप-
ञ्चासनाय नमः । परमशिवपर्यङ्काय नमः , इति पीठं यस्यस्य तत्रैव हव्ये
भीवालाभ्यायेत् ।

मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं विसतन्तुतनीयसीम् ।

अमद्भ्रमरनीलाम-धम्मिल्लामलपुष्पिणीम् ॥ १ ॥

ब्रह्मरन्ध्रस्फुरद्भिन्न-मुखरेखाविराजिताम् ।

मुखरेखालशरत्नतिलकां मुकुटोज्ज्वलाम् ॥ २ ॥

विशुद्धमुक्तावज्राढ्य-चन्द्ररेखाकिरीटिनीम् ।

अमद्भ्रमरनीलाम-नयनत्रयराजिताम् ॥ ३ ॥

सूर्यभास्वनमहारत्नकुण्डलालङ्कृतां पराम् ।

शुक्राकारस्फुरन्मुक्ता-हारभूषणभूषिताम् ॥ ४ ॥

त्रैवेयाङ्गदपत्रालि-स्फुरत्कान्तिजितामृताम् ।

गङ्गातरङ्गकर्पूर-शुभ्राम्बरविराजिताम् ॥ ५ ॥

श्रीखण्डवल्ली-सदृशबाहुवल्लीविराजिताम् ।

कङ्कणादिलसद्भूषा-मणिवन्धलसत्प्रभाम् ॥ ६ ॥

रानन्दः पवमानः परो रसः । पवमानं परं ज्ञानं तेन ते
पावयाम्यहम् ॥ कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः । विमुक्ता
रुद्रशापेन पवित्रा भव सांप्रतम् ॥

इति त्रिः पठित्वा, ततः ॐ वाँवाँवूँवूँवाँवः ब्रह्मशापमोचिताये
सुरादेव्यै नमः इत्यपि त्रिः । ह्रीँर्थाँकाँफीँकूँर्कौँकः सुराकृष्णशापं
मोचय २ अमृतं स्रावय २ स्वाहा इति त्रिः । हंसः शुचिपद्मसुरन्त-
रिक्षसङ्गोता घेदिपदतिथिर्दुरोणसत् । नृपद्मरसदृतसद्बोमसद्वज्रा गो-
त्रा धृतजा अद्रिजा धृतं ॥ इत्यपि त्रिः पठित्वा, आनन्दभैरवं सु-
रादेव्यौ च तत्र ध्यात्वा, 'हसरक्षमलययजं आनन्दभैरवाय वौषट्,
सहस्रमलययजं सुरादेव्यै वौषट्' इति देवदेव्यौ त्रिः संपूज्य द्रव्य-
मध्ये वक्षिणायतनं त्रिः पञ्चया अं १६ कं १६ धं १६ इति शक्तिचक्रं
विलिख्य तन्मध्ये हस्तं च, तत्समावेशाद् द्रव्यमध्येऽमृतं विचिन्त्य,
धेनुमुद्रायामृतीकृत्य यमिति सुधावीजं मूलमप्यष्टधा घटं धृत्वा पठि-
त्वा, आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये त्रिकोणपदकोणवृत्तचतुरस्रं विलिख्य।
चतुरश्रे पूर्णगिरिपीठाय नमः, उद्दीयानपीठाय०, कामरूपपीठाय०,
जालम्भरपीठाय०, इति संपूज्य, पदकोणे पङ्कजं संपूज्य, त्रिजण्डेन
त्रिकोणाग्रदक्षोत्तरं संपूज्य, मध्ये आधारशक्तीः संपूज्य त्रिकोणगर्भे
पञ्चिकां संस्थाप्य, नमः इति सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य, यं धूम्राब्जिपे
नमः । रं ऊष्मायै० । ल त्वलिन्धै० । यं ज्वालिन्धै० । शं विस्फु-
लिङ्गिन्धै० । पं सुधियै० । सं स्वरूपायै० । हं कपिलायै० । लं ह-
व्यवाहायै० । तं कव्यवाहायै० । मध्ये रं यद्विमण्डलाय दशकलात्मने
नमः इति संपूज्य, पदकोणे पङ्कजं संपूज्य, मध्ये मूलेन देव्यां स-
पूज्य, पात्रं फडिति प्रज्ञादय, यन्त्रिकोपरि संस्थापयेत् । तत्र कंभ
तप्पिन्धै० नमः । खं धं तापिन्धै०, गं फं धूम्रायै० । घं पे मरीच्यै० ।
टं न त्वलिन्धै० । चं धं रुच्यै० । छं दे सुपुष्पायै० । जं धं भोगदा-
यै० । झं तं-विन्धायै० । अं खं बोधिन्धै० । इं टं धारिन्धै० । उं डं
क्षमायै नमः । अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति संपूज्य,
त्रिकोणवृत्तपदकोणं पात्रे विनिर्य समस्तव्यस्तमन्त्रेण संपूज्य, वरु-
णवीजं मूलं त्रिलोममातृका च पठन्, अमृतं तत्र त्रिकोणं प्रपूर्य जले-
न च भागमेकं प्रपूर्य तत्र सुगन्धादि निक्षिप्य, अं अमृतायै
नमः । आ मानदार्यै० । ई पूषायै० । ईं तुष्ट्यै० । उ पुष्ट्यै० । ऊ

रत्ये० । ऋं धृत्यै० । ॠ शशिन्यै० । ॡ चण्डिकायै० । ॢ का-
न्यै० । ऐ ज्योत्स्नायै० । ॣ ध्रियै० । । प्रीत्यै० । ॥ अङ्गदायै०
अं पूर्णायै० । अः पूर्णामृतायै नमः । ॐ सोममण्डलाय षोडशक-
लात्मने नमः इति संपूज्य, पूर्ववन्मन्त्रं द्रव्ये विलिख्य त्रिकोणत्रिरे-
खायां अं आं इत्यादि क्षः इत्यन्तं मातृकां त्रिस्त्रिर्विलिख्य, मूलल-
एङ्नयेण त्रिकोणं संपूज्य पदकोणे वडङ्गं च, गङ्गेत्यादिना तीर्थमावा-
ह्य, आनन्दभैरवभैरवौ स्वमन्त्रेण संपूज्य, पूर्वार्धितः मूलं गगनरत्ने-
भ्यो नमः । मूलं स्वर्गरत्नेभ्यो० । मूलं मर्त्यरत्नेभ्यो० । मूलं पातालर-
त्नेभ्यो० । मध्ये मूलं नागरत्नेभ्यो० । इति संपूज्य, मांसादि संशो-
ध्य हृमित्यवगुण्ठ्य अमृतीकृत्य, तालत्रयेण विष्टः संवद्व्य, तदुपरि
सप्तधा मूलं संपूज्य तत्र देवीमावाह्य, तालत्रयेण दिग्बन्धने विधाय
अवगुण्ठ्यामृतीकृत्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, हस्तौ नमः इति संपूज्य,
शंखमुद्रां प्रदर्श्य पङ्कजेन सकलीकृत्य मरस्यमुद्रया पाममासाद्य
मूलं दशधा जपत्वा पात्रं देवीरूपं विभावयेदिति । ततो देव्याङ्गा-
मादाय घटस्पर्शे गुदपात्रं ततः शक्तिपात्रं भोगपात्रं स्वपात्रं योगि-
नीपात्रं यीरपात्रं बलिपात्रार्थं चमनीपपात्राणि संस्थाप्य, चर्पणयुत-
कारणेन तत्त्वमुद्रया भीमाङ्गाद् बिन्दून् समुदधृत्य, आनन्दभैरव तपयामि
नमः इति तन्मन्त्रेण त्रिः सन्तर्प्य, ततः भीगुरु भीमच्छ्रीममुक्तानन्द-
नाथभीमाङ्गुकां पूजयामि तपयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य, भीमा-
ङ्गामृतेन मूलदेव्यां सामुर्धा सप्ताहनां सपरिवारां तपयामि नमः इति
सन्तर्पयेदिति कलशपूजाविधिः ॥

अथ भीमक्रोपरि पीठपूजां पूर्वादिधाय भीमालां ध्यात्वा मा-
युधीजेन धामनासापुटेन देव्यां स्वहृदयात् कुसुमाञ्जलापानां च भीमके
संस्थाप्य, “देवेशि भक्तिमुखने परिवारसमान्विते । यावत्त्वां पूजयि-
ष्यामि तावद् देवि इहावद ॥” इति पठित्वा, मूलं भीमाङ्गमभ्यर्चि-
यसहिते चालात्रिपुरे इदामच्छ २ इदं तिष्ठ २ इह स्निषेहि २ इह
सेनिकया भय २ मम सर्वोपकारसाक्षिता पूजा गृहाण २ इत्याद्याहना-
दिमुद्राः प्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठा भीमके लेलिहानमुद्रया विधाय वय-
दिग्बन्धं कृत्वावगुण्ठ्य सकलीकृत्य परमौकृत्य, धेनुयोनिसुन्दं प्रदर्श्य
परामयपुस्तकाधमाधानाङ्गुपाशयापवापकपालकमतादिमुद्राः प्र-

र्ष्य, श्रीपात्रामृतेन सायुधां सवाहनां सपरिवारां साचरणां श्रीका-
 मेश्वरभैरवसहितां श्रीवालात्रिपुरां तर्पयामि नमः इति त्रिः सन्तर्प्य,
 पुनरपि मूलेन श्रीवालात्रिपुराश्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः स-
 न्तर्प्य, मूलमुच्चार्य, एतत्पाद्यं श्रीकामेश्वरसहितश्रीवालात्रिपुरायै नमः
 पादयोः पाद्यं । एवमर्घ्यं स्वाहा शिरसि । आचमनीयं मधुपर्कं च
 सुधा मुखे । स्नानीयं नमः सर्वाङ्गे, इति सुस्नाप्य, शुद्धकुलेनाङ्गं
 प्रोक्ष्य, विचित्रपटवस्त्रं कुङ्कुमकस्तूरीचन्दनसिन्दूरमुकुटकुण्डलदा-
 रादिनानालङ्कारान् दत्त्वा पुनराचमनीयं दद्यात् । ततो मभ्यमानामा-
 ङ्गुष्ठैः गन्धो नमः इति गन्धं, अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां पुष्पाणि धौपद् इति
 पुष्पैः संपूज्य, धूपपात्रं फडिति संपूज्य पुरतः स्थापयित्वा वामत-
 र्जेन्या संपृश्यन् श्रीपात्रामृतेन धूपं निवेदयामि इति निवेद्य, जगद्भू-
 निमन्त्रमातः स्वाहा इति घण्टां संपूज्य धामेन पाणिना तां वादयन्,
 मभ्यानामाङ्गुष्ठैर्धूपं धृत्वा गायत्रीं मूलमन्त्रं च पठन् “वनस्पतिरसो
 दिव्यो गन्धाक्त्यो गन्ध उच्चमः । आह्वानं सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति-
 गृह्यताम् ॥” इति त्रिधोचोक्त्य देवा धूपयेत् । ततो दीपं संमुपे
 संस्थाप्य पूर्ववत् प्रोक्षणपूजने कृत्वा वाममभ्यमया दीपपात्रं स्पृश्यन्
 दीपं निवेदयामि इति निवेद्य पूर्ववद् घण्टां वादयन्, मभ्यानामामभ्ये
 दीपपात्रमङ्गुष्ठेन धृत्वा दर्शयन्, गायत्रीं मूलं च पठन् “सुप्रकाशो
 महादीपः सर्वत्र तिमिरापहः । सवाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-
 गृह्यताम् ॥” इति दीपयेत् । ततः सुवर्णादिपात्रे कुङ्कुमेन वसुपर्णं
 चन्द्ररूपं च च कृत्वा मध्ये दीपमेकमष्टपत्रेषु दीपाष्टकं संस्थाप्य ‘श्रीं
 सांः ग्लंस्लंस्लंस्लंस्लंसांः श्रीं रत्नेभ्यर्च्य नमः, इत्यभ्यर्च्य मूलेन चाभ्यर्च्य,
 स्थालकं मस्तकान्तमुदधृत्य नववारं मूलं “समस्तचक्रचक्रेषुयुते
 देवि नयात्मिके । आराधिकमिदं देवि गृहाण मम सिद्धये ॥ इति
 चक्रमुद्रया नीराजयेत् ।

ततो नानानिवेद्य सुवर्णादिपत्रो निक्षिप्य ह्रमित्यष्टगुण्य धेनु-
 मुद्रयामृतीकृत्य, मूलं सप्तधा जप्या वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृश्यन्
 मूलान्ते “देमपात्रगतं दिव्यं परमाद्यं सुसंस्कृतम् । पञ्चधा पद्मसोपेतं
 गृहाण परमेश्वरि ॥” नैवेद्यं निवेदयामीति दत्तानामाङ्गुष्ठाभ्यामुत्पृजेत् ।
 ततः पुनराचमनीयं दत्त्वा मूलान्ते कर्पूरादियुक्तमूलं निवेदयामीति

पूर्वेवद् दद्यात् । सर्वेषामर्घ्यपात्रजलेनोत्सर्गः कार्यः । ततस्तत्समुद्रया
देवीं त्रिः सन्तर्प्य पूर्वोक्ताः मुद्राः प्रदर्श्य, योनिं हृदि, लोमिणीं
मुखे, द्वाविणीं भूमध्ये, आकर्षिणीं ललाटे, वशिनीं ब्रह्मरन्ध्रे,
आह्लादिनीं पञ्चमुद्रामयीं प्रदर्श्य, कृताञ्जलिः श्रीवालात्रिपुरं आयरस्त्रानि
ते पूजयामीत्याज्ञां गृहीत्वाचरणपूजामारभेत ।

तत्राक्षौ प्राग्धोनिमध्ययोन्धोरन्तराले गुरुपात्रे (त्रेख) अमुकानन्द-
नायधीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः । एवं परमगुरुधीपा-
दुकां पू० । परमाचार्यधी० । परमेष्ठिगुरुधी० । दिग्यौघगुरुधी० ।
सिद्धौघगुरुधी० । मानवौघगुरुधी० । पुनः स्वगुरुधी० । इति पूजयेत्त-
र्पयेच्च ॥

आग्नेये हृदयधीपा० । ईशाने शिरःधीपा० । नैऋते शिखाधीपा० ।
वायव्ये कवचधीपा० । मध्ये नेत्रधीपा० । विष्णु चतुर्धा अस्त्रधी० ।
इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

ततस्त्रिकोणे आग्नेये षं रं रतिभीपा० । ईशाने ज्ञीं प्रीं प्रीतिभीपा० ।
अप्रकोले सौः मं मनोभवधीपा० । इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

तत्रस्त्रिकोणस्यैकोत्तरे । त्रां सोमणवाणधी० । द्वां द्रावणवाणधी० ।
ज्ञीं आकर्षणवाणधी० । म्लूं वशीकरणवाणधी० । तद्वमे सः उन्मादन-
वाणधी० । इति संपूज्य सन्तर्प्य, तत्रैव तदुत्तरे । सौः कामधी० ।
ज्ञीं मम्मधधी० । तद्वत्ते षं कन्दर्पधी० । म्लूं मकरध्वजधी० । अग्ने
र्यौ मीनकेतुधी० । इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

ततोऽष्टयोनिषु पूर्वोदितः । अनङ्गकुसुमाधी० । अनङ्गमेखलाधी० ।
अनङ्गमदनाधी० । अनङ्गमदनातुराधी० । सुभगाधी० । भगाधी० ।
भगसर्पिणीधी० । भगमालाधी० । इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

ततोऽष्टपत्रेषु पूर्वोदितः । अं असिताम्बरवधी० । आ प्राप्ती-
धी० । ई रुक्मैरवधी० । ई मादम्बरवधी० । उं चण्डमैरवधी० ।
ऊं कामाक्षीधी० । ऋ क्रोधमैरवधी० । ॠ वैष्णवीधी० । ॡ उ-
न्मत्तमैरवधी० । लृ वाराहीधी० । ए कपालिमैरवधी० । ऐ मादे-
न्द्राधी० । औ भीष्ममैरवधी० । ओ चामुण्डाधी० । अं सद्धारमे-
रवधी० । अ. नारसिद्धाधीपा० । इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

ततो ग्रन्थिस्थानेषु पश्चिमादितः । कामरूपपीठधी० । मलय-
गिरिपीठधी० । कालगिरिपीठधी० । कुलान्तकपीठधी० । चौदारपीठधी० ।

जालन्धरपीठथी० । उद्धाणथी० । देवकूटथी० । इति पूजयेत्तर्पयेच्च ॥
 ततो वृत्तमण्डले पश्चिमादित ऊर्ध्वमधश्च । द्वेकभैरवथी० ।
 घेतालभैरवथी० । त्रिपुरान्तकभैरवथी० । अग्निजिह्वभैरवथी० । का-
 ज्ञान्तकभैरवथी० । कपालिभैरवथी० । एकपादभैरवथी० । भीमरूप-
 भैरवथी० । मलयभैरवथी० । द्वाकटेश्वरभैरवथी० । इति पूजयेत्त-
 र्पयेच्च ॥

ततश्चतुरस्रे पूर्वादितः । इन्द्रथी० । अग्निथी० । यमथी० । नि-
 ऋतिथी० । वरुणथी० । वायुथी । कुबेरथी० । ईशानथी० ।
 इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्मथी० । वरुणराक्षसयोर्मध्ये विष्णुथी० । इति
 पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

ततस्तारसमीपे । वज्रथी० । शक्तिथी० । दण्डथी० । खड्गथी० ।
 पाशथी० । ध्वजथी० । गदाथी० । विश्वलक्ष्मीपादुका पूजयामि त० ॥
 ततश्चतुरस्रे पश्चिमे । धां चटुकाय नमो चटुकथी० । उत्तरे या
 योगिनीभ्यो नमो योगिनीथी० । पूर्वे चा क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपा-
 लथी० । दक्षे गां गणपतये नमो गणपतिथी० । इति पूजयेत्तर्पये-
 च्च । ततो वायव्ये अष्टवसुभ्यो नमः, ईशाने द्वादशादित्येभ्यो
 नमः, आग्नेये एकादशरुद्रेभ्यो नमः, नैऋते सर्वेभ्यो भूतभ्यो नमः,
 इति पूजयेत्तर्पयेच्च । ततो देवीसमीपे दक्षहस्ते अक्षमालाथी० । व-
 रथी० । तद्वामे पुस्तकथी० । अभयथी०, इति पूजयेत्तर्पयेच्च ।
 पुनरिन्दौ मूलदेवीं पर्वयत् सपूज्य स-तर्प्य पुष्पाञ्जलिप्रयेण स
 पूज्य नित्यहोममाचरेत् ।

तद्यथा अग्नौ घृक्ष विभाव्य विलिख्य जले घा, प्राणाय स्वा-
 हा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समा-
 नाय स्वाहा, इति हुत्वा षडङ्गाहुतीं कुर्यात् । ततो मूलेन स्वदे-
 व्यै हुत्वा, स्वहृदि विस्तृत्य ईशाने मण्डलं वृत्त्वा, वा चटुकाय
 नमः एहोहि देवीपुत्रचटुकनाथ कपिलजटाभारमास्वर त्रिनेत्र ज्वाला
 मुग्य सर्वान् विज्ञान् नाशय २ सर्वापचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वा-
 हा ॥ आग्नेये । या योगिनीभ्यो नमः । “ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा
 दिवि गगनतले भूतले निष्फले वा पातालं वा तले वा सलिलपवन-
 योर्यत्र कुत्र स्थिता वा । ऊर्ध्वं श्रीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदी-
 पादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभजलियिधिना पान्तु वीरेन्द्रवर्या ॥

यां योगिनीभ्यो नमः स्वाहा , इति योगिनीबलिः ॥ नैर्ऋते चांक्षींक्षुं
 चैर्ऋतः क्षेत्रपाल आलेवलिसद्वितं बलिं गृह २ स्वाहा , इति दे-
 पालबलिः ॥ वायव्ये सांगोंगुं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमा-
 नय बलिं गृह २ स्वाहा , इति गणपतिबलिः ॥ इत्थं बलिं विर-
 चय्य षड्भुजादिबलिमप्यागमोक्तविधिना दत्त्वा गुरुदेव्यौ ध्यायन्
 यथाशक्ति जपे विधाय , पुनरपि प्राणायामप्यादिकराङ्गन्यासानन्तरं
 “गुह्यातीति” तर्पणेन तेजोरूपं जपफलं देवीवामहस्ते समर्प्य , क-
 ष्वचसहस्रनामस्तत्रपाठे पठित्वा साष्टाङ्गं प्रणिपत्य प्रदक्षिणां कृत्य साम-
 यिकैः सङ्घं पूजोक्तरूपेण पात्रचन्दनं विधाय “नन्दन्तु साधकाः सर्वे
 विनश्यन्तु विदूषकाः । अथस्या शान्मधी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः
 सदा ॥ इत्यादि पूजोक्तं शान्तिस्तोत्रं पठित्वा , ईशाने “निर्मात्यघा-
 सिन्यै नमः” इति निर्माणं त्यजेत् । ततः ‘इतः पूर्वं आपत्स्व-
 मसुपुत्स्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेण शिखा प्राणदेह-
 धमाधिकारतो यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं मदीयं श्रीबालात्रिपुरारपणमस्तु ।
 ताप्रादिपात्रेऽर्घ्यं घृत्वा “ओंहांहीसः सूर्य एव तेऽयं स्वाहा” इत्य-
 र्घ्यं सूर्याय दत्त्वा , अग्निद्रुमवधारयेत् । नैवेद्यादि वाग्यैः साकं भुक्त्वा
 स्यात्मानं कामकलारूपं भावयन् सुखं विहरेत् ॥

श्रीबालात्रिपुरादेव्यास्त्रैलोक्यपतिना कृता ।

पद्धतिः पूर्णतां प्राप्ता निजमङ्गदयालुना ॥

इति श्रीचन्द्रबालले तन्त्रे भैरवभैरवीसेवादे

श्रीबालात्रिपुरापद्धतिः ॥ २ ॥

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचम् ।

श्रीमैरवी ।

देवदेव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्धन ।

सूचितं यन्मया (तया) देव्याः कवचं कथयस्व मे ॥ १ ॥

श्रीभैरवः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम् ।

अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥ २ ॥

कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरन्यथः ।

पङ्क्तिश्छन्दः समुद्दिष्टो देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगस्तु साधने ॥ ३ ॥

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिश्चपिः पङ्क्ति-
श्छन्दः श्रीबालासुन्दरी देवता ऐं बीजं सो. शक्तिं ज्ञां कीलकं चतुर्व-
र्गसाधने विनियोगः । दक्षिणामूर्तिश्चपये नमः शिरसि , पङ्क्तिच्छ-
न्दसे नमो मुखे , बालासुन्दरीदेवतायै नमो हृदि , ऐंबीजाय नमो
गुह्ये , सौ.शक्तये नमो नामौ , ज्ञांबीजाय नमः पादयोः , विनि-
योगाय नमः सर्वाङ्गेषु । ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ज्ञां तर्जनीभ्यां नमः ।
सौः मध्यमाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः । ज्ञां कनिष्ठिकाभ्यां ।
सौ. करतलपृष्ठाभ्यां । एव हृदयादिन्यासः । ध्यानम् -

मुक्ताशेखरकुण्डलाङ्गदमणिर्ग्रमेयदारोर्मिका-

विद्योतद्बलयादिकङ्कणकटिमूत्रा स्फुरन्नुपुराम् ।

माणिक्योदरबन्धकम्पुकनरीमिन्दोः कला विभ्रती

पाशं चाङ्गुशपुस्तकाक्षमलय दक्षोर्ध्वगङ्गादितः ॥ ४ ॥

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं त्रीं कामस्तु तथा हृदि ।
 १ सौःशक्तिवीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥ ५ ॥
 ऐंकोसौः बदने पातु चाला मां सर्वसिद्धये ।
 हसकलहौ सौः पातु मैरवी कण्ठदेशतः ॥ ६ ॥
 सुन्दरो नामिदेशेऽन्यार्ध्यापिका सकला सदा ।
 भूनासयोरन्तराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥ ७ ॥
 ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः ।
 भगोदेवी तु हृदये उदरे भगसर्पिर्मां ॥ ८ ॥
 भगमाला नामिदेशे लिङ्गे पातु मनोमया ।
 गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा ॥ ९ ॥
 चैतन्यरूपिणी पातु पादयोज्ज्वलम्बिका ।
 नारायणी सर्वरात्रे सर्वकार्ये शुभहारी ॥ १० ॥
 महाशी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा ।
 पश्चिमे पातु चाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥ ११ ॥
 आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्म्यौध नैर्ऋते ।
 वायव्यां पातु चाग्र्युषडा इन्द्राणी पातु चेशके ॥ १२ ॥
 जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला ।
 आकाशे पातु चरदा सर्वतो भुवनेश्वरी ॥ १३ ॥
 इदे तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम् ।
 पठेत् प्रातः सप्रुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥ १४ ॥
 नामयो न्यापयस्तस्य न भय च कचिद्भवेत् ।
 न च मारीभयं तस्य शतकृत्ना भयं तथा ॥ १५ ॥
 न दारिद्र्यवशं गच्छेत्तिष्ठेन्मृत्युवशे न च ।
 गच्छेत्क्षिप्रपुरे देवि सत्यं मत्वं वदाम्यहम् ॥ १६ ॥
 इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्या यो जपेच्छिवे ।

स नामोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छक्रघातकम् ॥ १७ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवीभरवसंवादे
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीकवचम् ॥ ३ ॥

अथ

बालासहस्रनामकम् ।

समाध्वुपरतं काले कदाचिद्विजने मुदा ।
परमानन्दसन्दोहमुदितं प्राह पार्वती ॥ १ ॥
श्रीदेवी ।

श्रीमन्नाथ तवानन्दकारणं ब्रूहि शङ्कर ।
योगीन्द्रप्राप्यं देवीशं प्रेमपूर्णं मुधानिधे ।
कृपया यदि मे शम्भो मुगोप्यमपि कथ्यताम् ॥ २ ॥
श्रीभैरवः ।

निर्भरानन्दसन्दोहः शक्तिभावेन जायते ।
लावण्यसिन्धुस्तत्रास्ति बालाया रमकन्दरः ॥ ३ ॥
तामेवानुचर्यं देवीं चिन्तयामि ततः शिवाम् ।
तस्या नामसहस्राणि कथयामि तव प्रिये ॥ ४ ॥
मुगोप्यान्यपि रम्भोरु गम्भीरस्नेहविभ्रमात् ।
तामेव स्तुवतो देवि ध्यायतोऽनुचर्यं मम ।

१ 'शुभे' ग. पाठः । २ 'मुदिता' ख ग पाठः । ३ 'देवे' ख. ग पाठः ।

४ 'कन्दरा' क. ग. पाठ । ५ 'सहस्र ते' उ पाठः ।

मुखसन्दोहसंभावो ज्ञानानन्दस्य कारणम् ॥ १ ॥

अस्य धोवालात्रिपुरसुन्दरीसदृशनामस्तोत्रस्य भार्गवश्रुतिः
ब्रह्म १ छन्दः धोवालात्रिपुरा देवता ऐं० सौ० श० क्ली० सौ० सम-
स्तपुरुषार्थं समन्ययसाग्रथं पाठे विनियोग । भार्गवश्रुत्ये नमः शिर-
सि । शत्रुघ्नपुत्रस्य नमो मुखे । धोवालादेवतायै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो
गुह्ये । सौः शक्तये नमः पादयो । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ । विनियो-
गाय नमः सर्वाङ्गेषु । ऐं ब्रह्माभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां । सौः मध्यमा-
भ्यां । ऐं क्षणामिकाभ्यां । क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां । साः करतलपृष्ठा-
भ्यां । एव हृदयादिभ्यासः । ध्यातम् ।

रक्ताम्बरां चद्रकलावतंसां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ।

विद्याचमालामयदानहस्तां ध्यायामि बालामक्याम्बुजस्थाम् ॥

आनन्दासिन्दुरानन्दाऽऽनन्दमूर्तिर्विनोदिनी ।

त्रिपुरासुन्दरी प्रेमपाथानिधिरनुत्तमा ॥ १ ॥

यामार्धगङ्गारा भूतिर्विभूतिः शाङ्करी शिवा ।

शृङ्गारमूर्तिररदा रमा च शुभगोचरा ॥ २ ॥

परमानन्दलहरी रती रङ्गवती गतिः ।

रङ्गमालानङ्गकला केली कैवल्यदा कला ॥ ३ ॥

रसकल्पा कल्पलता कुतूहलवती गतिः ।

विनोददिग्धा मुस्निग्धा मुग्धामूर्तिर्मनोरमा ॥ ४ ॥

मालार्ककोटिकिरणा चन्द्रकोटिसुशीतला ।

द्रौपदीमृपदिग्धाङ्गी स्वर्गार्थपारिकल्पिता ॥ ५ ॥

कुरङ्गनवना कान्ता सुगतिः सुखसन्ततिः ।

राजराजेश्वरी राज्ञी महेन्द्रपरिचन्दिका ॥ ६ ॥

प्रपञ्चगतिरीशानी प्रपञ्चगतिरुत्तमा ।

१ 'यमाद्रम' ग्य पट । २ 'मवन' क, ख पाठ । ३ धा' क ख पाठ ।

४ 'ना' ग पाठ ।

दुर्वासा दुःसहाशक्तिः शिञ्जत्कनकनूपुरा ॥ ७ ॥
 मेरुमन्दरवज्रोजा सृणिपाशवरायुधा ।
 शरकोदण्डसंसंक्रपाणिद्वयविराजिता ॥ ८ ॥
 चन्द्रबिम्बानना चारुमुकुटोत्तंसचन्द्रिका ।
 सिन्दूरतिलका चारुधम्मिल्लामलमालिका ॥ ९ ॥
 मन्दारदाममुदिता रत्नमालाविभूषिता ।
 सुवर्णाभरणग्रीता मुक्ताधाममनोरमा ॥ १० ॥
 ताम्बूलपूर्णवदना मदनानन्दमानसा ।
 सुखाराध्या तपःसारा कृपापारा 'विधीश्वरी' ॥ ११ ॥
 वच्चःस्थललसद्रत्नप्रभा मधुरसोन्मदा ।
 बिन्दुनादात्मकोच्चाररहिता तुर्गरूपिणी ॥ १२ ॥
 कमनीयाकृतिर्धन्या शाङ्करी प्रीतिमञ्जरी ।
 प्रपञ्चा पञ्चमी पूर्णा पूर्णपीठनिवासिनी ॥ १३ ॥
 राज्यलक्ष्मीश्च श्रीलक्ष्मीर्महालक्ष्मीः सुराजिका ।
 सन्तोषसीमा संपत्तिः शातकौम्भी तथा युतिः ॥ १४ ॥
 परिपूर्णा जगद्धात्री विधात्री बलवर्धिनी ।
 सार्वभौमनृपश्रीश्च साम्राज्यगतिरम्बिका ॥ १५ ॥
 सरोजार्वा दीर्घदृष्टिः साचीचण्विचक्षणा ।
 रङ्गस्रवन्ती रसिका (१००) प्रधाना रसरूपिणी ॥ १६ ॥
 रससिन्धुः सुगात्री च धूमरी मैथुनोन्मुखा ।
 निरन्तरगुणासक्ता शक्तिर्निधुवनात्मिका ॥ १७ ॥
 कामाक्षा कमनीया च कामेशी भगमद्भला ।
 सुभगा भोगिनी भोग्या भाग्यदा सुभगा भगा ॥ १८ ॥

१ 'मन्दार' क पाठ २ 'सयुक्त' घ पाठ । ३ 'विधी' भ. पाठ ।

४ 'रसमन्ता' क पाठ ।

भगलिङ्गानन्दकला भगमध्यनिवासिनी ।
 भगरूपा भगमयी भगवन्ना भगोत्तमा ॥ १९ ॥
 योनिमुद्रा कामकला कुलामृतपरायणा ।
 कुलकुण्डालपा सूक्ष्मा जीवात्मा लिङ्गरूपिणी ॥ २० ॥
 मूलक्रिया मूलरूपा मूलाकृतिस्वरूपिणी ।
 सोत्सुका कमलानन्दा चिद्भावाऽऽत्मगतिः शिवा ॥ २१ ॥
 श्वेतरूपा बिन्दुरूपा वेदयोनिर्ध्वनिच्छा ।
 षण्ढाकोटिरवा रावा रविबिम्बोत्थिताऽद्भुता ॥ २२ ॥
 नादान्तलीना संपूर्णा पूर्णस्या बहुरूपिका ।
 भृङ्गारावा वंशगतिर्वादित्रा मुरजध्वनिः ॥ २३ ॥
 वर्णमाला सिद्धिकला पदचक्रमवासिनी ।
 मूलकेलीरता स्वाधिष्ठाना तुर्यनिवासिनी ॥ २४ ॥
 मणिप्रसक्तिः स्निग्धा कर्मचक्रपरायणा ।
 अनाहतगतिर्दीपशिखा मणिमयाकृतिः ॥ २५ ॥
 पिशुदा शब्दसंशुद्धा जीवनोपस्थली रवा ।
 आद्याचक्राब्जसंस्था च स्फुरन्ती निपुणा विष्टुर्व ॥ २६ ॥
 चन्द्रिका चन्द्रकोटित्रीः सूर्यकोटिप्रभामयी ।
 पद्मरागादृशच्छाया नित्याऽऽह्लादमयी प्रभा ॥ २७ ॥
 पानथ्रीश्च प्रियामात्मा निश्चलाऽमृतनन्दिनी ।
 कान्ताङ्गसङ्गमुदिता मुधामाधुर्यसंभृता ॥ २८ ॥
 महामञ्जस्यिताऽलिप्ता वृत्ता दृष्टा सुसंभृतिः ।
 श्रवस्वीयुपसंसिक्ता रकार्णवविवर्धिनी ॥ २९ ॥

१ 'जीवामुलिङ्ग' ग, पाठः । २ 'विषयपथा' ख पाठः । ३ 'दुता' ग, पाठः ।

४ 'मुक्तकयी' क, पाठः । ५ 'जा' ग, पाठः । ६ 'मन्दमया सुतिः' ख, ग, पाठः ।

७ 'त्रयी' ख, पाठः ।

मुरक्ता प्रियसंसिक्ता शशत्कुण्डालयाऽभया (२००) ।
 श्रेयःश्रुतिश्च प्रत्येकानवकेशिफलावली ॥ ३० ॥
 ग्रीता शिवा शिवप्रिया शाङ्करी शाम्भवी विभा ।
 स्वयंभूः स्वप्रिया स्वीया स्वकीया जनमातृका ॥ ३१ ॥
 सारामा स्वाश्रया साध्वी सुधाधाराऽधिकाधिका ।
 मङ्गलोज्जयिनी मान्या सर्वमङ्गलसङ्गिनी ॥ ३२ ॥
 भद्रा भद्रावली कन्या कलितापेन्दुविमर्भाक् ।
 कन्याणलतिक्ता^१ काम्या कुकर्मा कुमर्तिर्मनुः ॥ ३३ ॥
 कुरङ्गाची चीवनेत्रा चारा रसमदोन्मदा ।
 वारुणीपानमुदिता मदिरैराचिताश्रया ॥ ३४ ॥
 कादम्बरीपानरुचिर्विपाशा पार्श्वभीतिनुत् ।
 मुदिता मुदितापाङ्गा दरदोलितदीर्घदृक् ॥ ३५ ॥
 दैत्यकुलानलशिखा मनोरधसुधाद्युतिः ।
 मुवासिनी पीनगात्री पीनश्रेणिपयोधरा ॥ ३६ ॥
 सुचारुकवरी दन्तदीधितिदीप्रमौक्तिका ।
 निम्बाधरा द्युतिमुखा प्रबालोत्तमदीधितिः ॥ ३७ ॥
 तिलप्रसूननासाग्रा हेमककोलभालका ।
 निष्कलङ्केन्दुवदना बालेन्दुमुकुटोज्ज्वला ॥ ३८ ॥
 नृत्यत्खञ्जननेत्रश्रीर्विस्फुरत्कर्णशङ्कुली ।
 बालचन्द्रातपत्रार्धा मणिमूर्यकिरीटिनी ॥ ३९ ॥
 हेममाणिक्यताटङ्का मणिकाञ्चनकुण्डला ।
 सुचारुचिबुका कम्बुकण्ठी मणिमनोरमा ॥ ४० ॥
 गङ्गातरङ्गहारोर्मिर्मत्तकोकिलनिःस्वना ।

१ 'विन्दु' क. पाठ. । २ 'ललिता' ख. पाठ. । ३ 'मन्दिरा' क. पाठ. ।

४ 'पाप' क. पाठ. । ५ 'बलिमनोरमा' क. ग. पाठ. ।

- मृणालविलसद्बाहुः पाशाङ्कुशधनुर्धरा ॥ ४१ ॥
 केपूरकटकाञ्चना नानारत्नमनोरमा ।
 ताम्रपङ्कजपाणिश्रोर्नखरत्नप्रभावती ॥ ४२ ॥
 अङ्गुलीपमणिश्रेणिचञ्चदङ्गुलिसन्ततिः ।
 मन्दारद्वन्द्वसुकुचा रोमराज्रीध्वङ्गका ॥ ४३ ॥
 गम्भीरनाभिसिखलीवलाया च सुमध्यमा ।
 रणत्काञ्चीगुणोन्नदा पद्माङ्कुसुमीविका ॥ ४४ ॥
 मेरुगुण्डीनितम्बाद्या भजगण्डोक्तयुग्मयुक् ।
 सुजानुमन्दरासकलसज्जङ्गाद्वयान्विता ॥ ४५ ॥
 गूढगुल्फा मञ्जुशिञ्जन्नमणिनूपुरमण्डिता ।
 योगिध्वेयपदद्वन्द्वा सुधामाऽमृतसारिणी ॥ ४६ ॥
 लावण्यसिन्धुः सिन्दूरतिलका कुटिलालका ।
 साधुसिद्धा सुबुद्धौ च बुधा वृन्दारकोदया ॥ ४७ ॥
 बालार्काकिरणश्रेणीशोभा श्रीप्रेमकामधुक् ।
 रसगम्भीरसरसीपद्मिनी [३००] रससारसा ॥ ४८ ॥
 प्रसन्नाऽऽसन्नवरदा शारदा च सुभाग्यदा ।
 नटराजमिया विम्बनाद्या नर्तकनर्तकी ॥ ४९ ॥
 विचित्रयन्त्रा चित्तन्त्रा विधावल्ली गतिः शुभा ।
 कूटारकूटा कूटस्था पञ्चकूटा च पञ्चमी ॥ ५० ॥
 चतुष्कूटा त्रिकूटाद्या पदकूटा वेदपूजिता ।
 कूटपोडशसंपन्ना तुरीया परमाकला ॥ ५१ ॥
 पोडशी मन्त्रयन्त्राणामीश्वरी मेरुमण्डला ।

१ 'मणि' ख. ग. पाठः । २ 'गरदा' ख. ग. पाठः । ३ 'मञ्जुशङ्खोरयुग्मका' ख.

पाठः । ४ 'सुन्दरी' ख. पाठः । ५ 'चतुष्पा च' ख. पाठः ।

पोडशार्णा त्रिवर्णा च बिन्दुनादस्वरूपिणी ॥ ५२ ॥
 वर्णातीता वर्णमाता शब्दब्रह्ममहासुखा ।
 चैतन्यवल्ली कूटात्मा कामेशी स्वप्नदृश्यगा ॥ ५३ ॥
 स्वप्नावती बोधकरी जागृतिर्जागराश्रया ।
 स्वप्नाश्रया सुषुप्तिश्च तन्द्रामुक्ता च माधवी ॥ ५४ ॥
 लोपामुद्रा कामराज्ञी मानवी वित्तपार्चिता ।
 शाकम्भरी नन्दिविद्या भास्वद्विद्योत्तमालिनी ॥ ५५ ॥
 मोहन्त्री स्वर्गसंपत्तिर्दुर्वासःसेविता श्रुतिः ।
 साधकेन्द्रगतिः साध्वी सुलभा सिद्धिरुन्दरा ॥ ५६ ॥
 पुरत्रयेशी पुरजिदर्चिता पुरदेवता ।
 पुष्टिर्विघ्नहरी भूतिविंशुणा पूज्यकामधुरू ॥ ५७ ॥
 हिरण्यमाता गणपा गुह्यमाता नितम्बिनी ।
 सर्वसीमन्त्रिनी मोक्षा दीक्षा दीक्षितमातृका ॥ ५८ ॥
 साधकाम्बा सिद्धमाता साधकेन्द्रा मनोरमा ।
 यौवनोन्मादिनी तुङ्गा सुश्रोणिर्मदमन्धरा ॥ ५९ ॥
 पद्मरक्तात्पलवती रक्तमान्यानुलेपना ।
 रक्तमालारुचिः शिखाशिरसिण्डन्यतिसुन्दरी ॥ ६० ॥
 शिखशिण्डनृत्तसन्तुष्टा सौरभेयी वसुन्धरा ।
 सुरभी कामदा काम्या कमनीयार्थकामदा ॥ ६१ ॥
 नन्दिनी लक्ष्णवती वैसिष्ठालयदेवता ।
 गोलोकदेवी (४००) लोकश्रीर्गोलोरुपरिपालिका ॥ ६२ ॥
 हविर्धानी देवमाता वृन्दारकवरानुयुक् ।

१ 'तन्त्रा' क पाठ । २ गहमाता क. पाठः । ३ तु वसुगा ख. पाठः ।

४ 'विशिष्टा' ख. पाठः । ५ 'चेदमाता' ख. पाठः । ६ 'वरान्त' ख. पाठः ।

रुद्रपत्नी भद्रमाता सुधाधाराऽम्बुविद्यतिः ॥ ६३ ॥
 दक्षिणा यज्ञसंमूर्तिः सुचाला घोरनन्दिनी ।
 वीरपूर्णार्थवगतिः सुधायोनिः सुलोचना ॥ ६४ ॥
 रामानुगा सुसेव्या च सुगन्धालयवासंगा ।
 सुधारिणा सुनिपूरा सुस्तनी स्तनवत्सला ॥ ६५ ॥
 रजस्वला रजोयुक्ता रजिका रङ्गमालिका ।
 रक्तप्रिया सुरक्ता च रतिरङ्गस्वरूपिणी ॥ ६६ ॥
 रजःशुक्राम्बिका निष्ठा रतिनिष्ठा रतिस्पृहा ।
 हावभावा कामकेलिसर्वस्वा सुरजीविका ॥ ६७ ॥
 स्वयम्भूकुसुमानन्दा स्वयम्भूकुसुमप्रिया ।
 स्वयम्भूप्रीतिसन्तुष्टा स्वयम्भूनिन्दकान्तकृता ॥ ६८ ॥
 स्वयम्भूत्या शक्तिपुटी रतिसर्वस्वपीठिका ।
 अत्यन्तसमिका द्वी विदग्धा प्रीतिपूजिता ॥ ६९ ॥
 कुल्लिका यन्ननिलया योगपीठाधिवातिनी ।
 सुलक्षणा रसरूपा सर्वलक्षणलक्षिता ॥ ७० ॥
 नानालङ्कारसुभगा पञ्चबाणसमर्चिता ।
 ऊर्ध्वत्रिकोणनिलया बाला कामेश्वरी तथा ॥ ७१ ॥
 गणध्याया कुलाध्यक्षा लक्ष्मीश्चैव सरस्वती ।
 वसन्तसमयप्रीता प्रीतिः कुचयरानता ॥ ७२ ॥
 कलाधग्मुखाऽमूर्धा पादवृद्धिः कलावती ।
 पुष्पप्रिया धृतिश्चैव रतिकण्ठी मनोरमा ॥ ७३ ॥
 मदनोन्मादिनी चैव मोहिनी पार्वणीकला ।
 शोषिणी वशिनी राजिन्यत्यन्तसुभगा भगा ॥ ७४ ॥
 पूषा वशा च सुमना रविः प्रीतिर्धृतिस्तथा ।

श्रद्धिः सौम्या मरीच्यंशुमाला प्रत्यङ्गिरा तथा ॥ ७५ ॥
 शशिनी चैव सुच्छाया संपूर्णमण्डलोदया ।
 तुष्टा चामृतपूर्णा च भगवन्ननिवासिनी ॥ ७६ ॥
 लिङ्गयन्त्रालया (५००) शम्भुरूपा संयोगयोगिनी ।
 द्राविणी बीजरूपा च अक्षुब्धा साधकप्रिया ॥ ७७ ॥
 राजबीजमयी राज्यसुखदा चाञ्छितप्रदा ।
 रजःसंवीर्यशक्तिश्च शुक्रविच्छिन्नरूपिणी ॥ ७८ ॥
 सर्वसारा सारमया शिवशक्तिमयी प्रभा ।
 संयोगानन्दनिलया संयोगप्रीतिमातृका ॥ ७९ ॥
 संयोगकुसुमानन्दा संयोगा योगवर्धिनी ।
 संयोगसुखदाप्रस्था चिदानन्दैकसेविता ॥ ८० ॥
 अर्घ्यपूजकसंपत्तिरर्घ्यद्रव्यस्वरूपिणी ।
 सामरस्या परा प्रीता प्रियसङ्गमरूपिणी ॥ ८१ ॥
 ज्ञानदूती ज्ञानगम्या ज्ञानयोनिः शिवालया ।
 चित्कला ज्ञानसकला सकुला सकुलात्मिका ॥ ८२ ॥
 कलाचतुष्टया पद्मिन्यतिमूक्ष्मा परात्मिका ।
 हंसकेलित्यली च्छाया हंसद्वयविकासिनी ॥ ८३ ॥
 विरागता मोक्षकला परमात्मकलावती ।
 विद्याकलान्तरात्मस्था चतुष्टयकलावती ॥ ८४ ॥
 विद्यासन्तोषणा तृप्तिः परब्रह्मप्रकाशिका ।
 परमात्मपरा वस्तुलीना शक्तिचतुर्थ्या ॥ ८५ ॥
 शान्तिर्योधकलावाप्तिः परज्ञानात्मिकाकला ।
 पश्यन्ती परमात्मस्था चान्तरात्मकलाऽकुला ॥ ८६ ॥
 मध्यमा वैखरी चात्मकलानन्दा कलावती ।
 तारिणी तरुणी तारा शिवलिङ्गालयाऽऽत्मनि ॥ ८७ ॥

परस्परशुभाचारा ब्रह्मानन्दविनोदिनी ।
 रत्नाक्षरा दूरासा सार्था सार्थप्रिया हुमा ॥ ८८ ॥
 जात्यादिरहिता योगियोगिन्यानन्दवर्धिनी ।
 वीरमानप्रदा दिव्या वीरसर्वोरमावदा ॥ ८९ ॥
 पशुताभिबीरगतिर्नोरसङ्गमहोदया ।
 मूर्धाभिपिक्ता राजश्रीः चत्रियोत्तममातृका ॥ ९० ॥
 शस्त्रास्त्रकुशला शोभा रसस्या युद्धजीविका ।
 विजया योगिनी यात्रा परसैन्यविमर्दिनी ॥ ९१ ॥
 पूर्णा [६००] विचैषिणी विक्ता वित्तसञ्चयशासिनी ।
 भाण्डागारसिता रत्ना रत्नभेद्यधिवासिनी ॥ ९२ ॥
 महिषी राजभोग्या च गणिका गन्धभोगभृत् ।
 करिणी बडवा योग्या मल्लसेना पदातिका ॥ ९३ ॥
 सैन्यश्रेणी शौर्यरता पताका ध्वजवासिनी ।
 सुच्छत्रा चामिका चाम्पा प्रजापालनसद्गतिः ॥ ९४ ॥
 सुरभिः पूजकाचारा राजकार्यपरायणा ।
 ब्रह्मचयमयी सोममूर्यान्तर्यामिनी स्थितिः ॥ ९५ ॥
 पौरोहित्यप्रिया साध्वी ब्रह्माणी यज्ञसन्ततिः ।
 सोमपानपरा प्रीता जनाढ्या तपना चमा ॥ ९६ ॥
 प्रतिग्रहपरा दात्री सृष्टा जातिः सतांगतिः ।
 गायत्री वेदलभ्या च दीक्षा सन्ध्यापरायणा ॥ ९७ ॥
 रत्नसद्दीधितिर्विश्रवासना विश्वजीविका ।
 कृषिवाणिज्यभूतिश्च वृद्धिर्धी च कुसीदिका ॥ ९८ ॥
 कुलाधारा सुप्रमारा मनोन्मनी परायणा ।
 शूद्रा विप्रगतिः कर्मकरी कौतुकपूजिका ॥ ९९ ॥
 नानाविनारचतुरा बाला प्रौढा कलामयी ।

मुकर्णधारा नौः पारा सर्वाशा दुर्गमोचनी ॥ १०० ॥
 दुर्गा विन्ध्यवनस्था च कन्दर्पनयपूरणी ।
 भूभारशमनी कृष्णा रचाराध्या रसोल्लसा ॥ १०१ ॥
 त्रिविधोत्पातशमनी समग्रमुखशेवधिः ।
 पञ्चावयववाक्यश्रीः प्रपञ्चोद्यानचन्द्रिका ॥ १०२ ॥
 सिद्धसन्दोहमुखिता योगिनीवृन्दवन्दिता ।
 नित्यापोडशरूपा च कामेशी भगमालिनी ॥ १०३ ॥
 नित्यक्लिन्ना च भीरुण्डा वह्निमण्डलवासिनी ।
 महाविद्येश्वरीनित्या शिवदूतीतिविश्रुता ॥ १०४ ॥
 स्वरिता ग्रथिता ख्याता विख्याता कुलसुन्दरी ।
 नित्या-नीलपताका च विजया सर्वमङ्गला ॥ १०५ ॥
 ज्वालामाला (७००) विचित्रा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
 गुरुवृन्दा परगुरुः प्रकाशानन्दनाथिनी ॥ १०६ ॥
 शिवानन्दानाथरूपा शक्त्यानन्दस्वरूपिणी ।
 देव्यानन्दानाथमयी कौलेशानन्दनाथिनी ॥ १०७ ॥
 दिव्यौघगुरुरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
 शुक्रदेव्यानन्दनाथा कुलेशानन्दनाथिनी ॥ १०८ ॥
 क्लिन्नाङ्गानन्दरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
 वेदानन्दनाथमयी सहजानन्दनाथिनी ॥ १०९ ॥
 सिद्धौघगुरुरूपा च अपरागुरुरूपिणी ।
 गगनानन्दनाथा च विश्वानन्दस्वनाथिनी ॥ ११० ॥
 विमलानन्दनाथा च मदनानन्दनाथिनी ।
 भुवनाद्या च लीलाद्या नन्दनानन्दनाथिनी ॥ १११ ॥
 स्वात्मानन्दानन्दरूपा प्रियाद्यानन्दनाथिनी ।
 मानवौघगुरुश्रेष्ठा परमेष्ठिगुरुप्रभा ॥ ११२ ॥

- परगुहा गुरुराक्तिः स्वगुरुकीर्तनप्रिया ।
 त्रैलोक्यमोहनख्याता सर्वाशापरिपूरका ॥ ११३ ॥
 सर्वसंचोभिणी पूर्वाभ्नायप्रथितवैभवा ।
 शिवाशक्तिः शिवशक्तिः शिवचक्रत्रयालया ॥ ११४ ॥
 सर्वसौभाग्यदाय्या च सर्वार्यसाधिकाद्वया ।
 सर्वरक्षाकराख्या च दक्षिणाम्नायदेवता ॥ ११५ ॥
 मध्यार्कचक्रनिलया पश्चिमाम्नायदेवता ।
 नवचक्रकृतावासा कौबेराम्नायदेवता ॥ ११६ ॥
 कुबेरपूज्या कुलजा कुलाम्नायप्रवर्तिनी ।
 बिन्दुचक्रकृतावासा मध्यसिंहासनेश्वरी ॥ ११७ ॥
 श्रीविद्या च महालक्ष्मीः लक्ष्मीः शक्तित्रयात्मिका ।
 सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीश्च पञ्चलक्ष्मीतिविधुता ॥ ११८ ॥
 श्रीविद्या च परज्योतिः परानिष्कलशाम्भवी ।
 मातृका पञ्चकोशी च श्रीविद्या त्वरिता तथा ॥ ११९ ॥
 पारिजातेश्वरी चैव त्रिकूटा पञ्चबाणगा ।
 पञ्चकल्पलता पञ्चविद्या चामृतपीठिका ॥ १२० ॥
 तुषाक्ष रमणेशाना चाम्रपूर्णा च कामधुक ।
 श्रीविद्या सिद्धलक्ष्मीश्च मातङ्गी श्रवणेश्वरी ॥ १२१ ॥
 वाराही पञ्चरत्नानामीश्वरी मातृवर्णगा ।
 पराज्योतिः कोशरूपा ऐन्दवी कलया युता ॥ १२२ ॥
 परितः स्वामिनी शक्तिदर्शना रविबिन्दुयुक् ।
 ब्रह्मदर्शनरूपा च शिवदर्शनरूपिणी ॥ १२३ ॥
 विष्णुदर्शनरूपा च सृष्टिचक्रनिवासिनी ।
 सौरदर्शनरूपा च स्थितिचक्रकृताब्जया ॥ १२४ ॥
 बौध्मदर्शनरूपा च महानिपुरसुन्दरी ।

तत्त्वमुद्रास्वरूपा च प्रसन्ना (८००) ज्ञानमुद्रिका ॥ १२५ ॥
 सर्वोपचारसन्तुष्टा दृन्मयी शीर्षदेवता ।
 शिखास्थिता ब्रह्ममयी नेत्रत्रयविलासिनी ॥ १२६ ॥
 अस्त्रस्था चतुरस्रा च द्वारका द्वारवासिनी ।
 अलिमा पश्चिमस्था च लाघिमोत्तरदेवता ॥ १२७ ॥
 पूर्वस्था महिमेशित्वा दक्षिणद्वारदेवता ।
 वशित्वा वायुकोणस्था प्राक्काम्येशानदेवता ॥ १२८ ॥
 अग्निकोणस्थिता भुक्तिरिच्छा नैर्ऋतवासिनी ।
 प्राप्तिरिद्धिरवस्था च प्राक्काम्यार्धविलासिनी ॥ १२९ ॥
 ब्राह्मी मातृशरीरं चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
 वाराहैन्द्री च चामुण्डा महालक्ष्मीर्दिशांगतिः ॥ १३० ॥
 चोभिणी द्वात्रिणीमुद्राऽऽरुणोन्मादनकारिणी ।
 महाङ्कुशा खेचरी च बीजाख्या योनिमुद्रिका ॥ १३१ ॥
 सर्वाशापूरचक्रस्था कार्यसिद्धिकरी तथा ।
 कामाकर्षिकाशक्तिर्बुद्ध्याकर्षणरूपिणी ॥ १३२ ॥
 अहङ्काराकर्षिणी च शब्दाकर्षणरूपिणी ।
 स्पर्शाकर्षणरूपा च रूपाकर्षणरूपिणी ॥ १३३ ॥
 रसाकर्षणरूपा च गन्धाकर्षणरूपिणी ।
 चित्ताकर्षणरूपा च धैर्याकर्षणरूपिणी ॥ १३४ ॥
 स्मृत्याकर्षणरूपा च बीजाकर्षणरूपिणी ।
 अमृताकर्षिणी चैव नामाकर्षणरूपिणी ॥ १३५ ॥
 शरीराकर्षिणीदेवी आत्माकर्षणरूपिणी ।
 षोडशस्वरूपा च स्रग्तीक्ष्णमन्दिरा ॥ १३६ ॥
 त्रिपुरेशी सिद्धरूपा कलादलनिवासिनी ।
 सर्वसंचोभचक्रेशी शक्तिर्गुप्ततराभिधा ॥ १३७ ॥

अनङ्गकुसुमाशक्तिरनङ्गकटिमेखला ।

अनङ्गमदनाऽनङ्गमदनातुररूपिणी ॥ १३८ ॥

अनङ्गरेखा चानङ्गवेगानङ्गाकुशाभिधा ।

अनङ्गमालिनी शक्तिरष्टवर्गदिगन्विता ॥ १३९ ॥

वसुपत्रकृतावासा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।

सर्वसाम्राज्यसुखदा सर्वसौभाग्यदेश्वरी ॥ १४० ॥

संप्रदायेश्वरी सर्वसंचोभणकरी तथा ।

सर्वविद्राविणी सर्वार्कपणोपप्रकारिणी ॥ १४१ ॥

सर्वाह्लादनशक्तिश्च सर्वजृम्भणकारिणी ।

सर्वस्तम्भनशक्तिश्च सर्वसंमोहिनी तथा ॥ १४२ ॥

सर्ववश्यकरीशक्तिः सर्वसर्वानुराजिनी ।

सर्वोन्मादनशक्तिश्च सर्वार्थसाधकारिणी ॥ १४३ ॥

सर्वसम्पत्तिदाशक्तिः सर्वमन्त्रमयी तथा ।

सर्वद्वन्द्वचयकरी (६००) सिद्धिस्त्रिपुरवासिनी ॥ १४४ ॥

सर्वार्थसाधकेशी च सर्वकार्यार्थसिद्धिदा ।

चतुर्दशारचक्रेशी कलायागसमन्विता ॥ १४५ ॥

सर्वसिद्धिप्रदादेवी सर्वसंपत्प्रदा तथा ।

सर्वप्रियङ्करीशक्तिः सर्वमङ्गलकारिणी ॥ १४६ ॥

सर्वकामप्रपूर्णा च सर्वदुःखप्रमोचिनी ।

सर्वभृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ १४७ ॥

सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी सर्वसौभाग्यदायिनी ।

त्रिपुरेशी सर्वसिद्धिप्रदा च दशकोणमा ॥ १४८ ॥

सर्वरचाकरेशी च निगर्भायोगिनी तथा ।

सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यप्रदा तथा ॥ १४९ ॥

सर्वज्ञानमयीदेवी सर्वव्याधिविनाशिनी ।

सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ॥ १५० ॥
 सर्वानन्दमयीदेवी सर्वरक्षास्वरूपिणी ।
 महिमाशक्तिदेवी च देवीसर्वसमृद्धिदा ॥ १५१ ॥
 अन्तर्दशारचक्रेषु देवीत्रिपुरमालिनी ।
 सर्वरोगहरेशी च रहस्यायोगिनी तथा ॥ १५२ ॥
 वाग्देवी वशिनी चैव देवीकामेश्वरी तथा ।
 मोदिनी विमला चैव अरुणा जयिनी तथा ॥ १५३ ॥
 सर्वेश्वरी कौलिनी च स्रष्टारसर्वसिद्धिदा ।
 सर्वकामप्रदेशी च परापररहस्यावित् ॥ १५४ ॥
 त्रिकोणचतुरस्था च सर्वेश्वर्याऽऽयुधात्मिका ।
 कामेश्वरी बाणरूपा कामेशी चापतूपिणी ॥ १५५ ॥
 कामेशी पाशरूपा च कामरयङ्गुशरूपिणी ।
 कामेश्वरीन्द्रशक्तिश्च अग्निचक्रकुवालय ॥ १५६ ॥
 कामगिर्यधिदेवी च त्रिकोणस्थाऽप्रकोणगा ।
 दक्षकोणेश्वरी विष्णुशक्तिर्जालन्धराश्रया ॥ १५७ ॥
 सूर्यचक्रालया रुद्रशक्तिर्वामाङ्गकोणगा ।
 सोमचक्रग्रहशक्तिः पूर्यगिर्यनुरागिणी ॥ १५८ ॥
 श्रीमत्त्रिकोणभुवना त्रिपुरात्ममहेश्वरी ।
 सर्वानन्दमयेशी च निन्दुगतिरहस्यभृत् ॥ १५९ ॥
 परब्रह्मस्वरूपा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
 सर्वचक्रान्तरस्था च ममस्तचक्रनापिका ॥ १६० ॥
 सर्वचक्रेश्वरी सर्वमन्त्राणामीश्वरी तथा ।
 सर्वविद्येश्वरी चैव सर्वरागीश्वरी तथा ॥ १६१ ॥
 सर्वयोगीश्वरी चैव पीठेश्वर्यसिलेश्वरी ।

सर्वकामेश्वरी सर्वतत्त्वैश्वर्यागमेश्वरी ॥ १६२ ॥
 शक्तिः शक्तिदृग्गुह्यासा निर्द्वन्द्वा द्वैतगमिणी ।
 निष्प्रपञ्चा महामाया सप्रपञ्चा स्ववासिनी ॥ १६३ ॥
 सर्वविद्योत्पत्तिपात्री परमानन्दसुन्दरी (१०००) ।
 इत्येतत्कथितं दिव्यं परमानन्दस्मरणम् ॥ १६४ ॥
 लावण्यसिन्धुलदरीबालायास्तोपमन्दिरम् ।
 सदैस्रनाम तन्प्राणां सारमाकृष्य पार्वति ॥ १६५ ॥
 भ्रमेन स्तुयतो नित्यमर्धरात्रे निशामुखे ।
 प्रातःकाले च पूजायां सर्वकालमतः प्रिये ॥ १६६ ॥
 सर्वसाम्राज्यमुखदा बाला च परितुष्पति ।
 रत्नानि विविधान्यस्य वित्तानि प्रचुराणि च ॥ १६७ ॥
 मनोरथपथस्थानि ददाति परमेश्वरी ।
 पुत्राः यौवाश्च वर्धन्ते सन्ततिः सर्वकालिकी ॥ १६८ ॥
 राजवस्तस्य नश्यन्ति वर्धन्तेऽस्य बलानि च ।
 व्याधयस्तस्य दूरस्थाः सकलान्यौषधानि च ॥ १६९ ॥
 मन्दिराणि विचित्राणि राजन्ते तस्य सर्वदा ।
 कुचैः कलवती तस्य भूमिः कामदुषाण्वया ॥ १७० ॥
 स्फूर्तिः जनपदस्तस्य राज्यं तस्य निरीतिकम् ।
 मातङ्गाः पविण्यस्तुङ्गाः सिञ्चन्तो मदवारिभिः ॥ १७१ ॥
 द्वारे तस्य विराजन्ते दृष्टा नागतरङ्गमाः ।
 प्रज्जास्तस्य विराजन्ते निर्विवादाश्च भविष्यः ॥ १७२ ॥
 ज्ञातयस्तस्य तुष्यन्ति शीलं तस्यातिसुन्दरम् ।
 लक्ष्मीस्तस्य वशे नित्यं स्वासना च मनोरमा ॥ १७३ ॥
 गद्यपद्ययी बाणी तस्य गङ्गातरङ्गवत् ।

नानापदपदार्थानां वादचातुर्यसंभृता ॥ १७४ ॥
 समग्ररससंपरिशादिनी सास्यमालिनी ।
 मृदृष्टान्यपि शाय्यायि प्रकारयन्ते निरन्तरम् ॥ १७५ ॥
 निग्रहः परवाक्यानां सभायां तस्य जायते ।
 स्तुवन्ति वन्दिनस्तं वै राजानो दासवत्तथा ॥ १७६ ॥
 शस्त्राप्यस्त्राणि तदङ्गे जनयन्ति वजां नहि ।
 महिलास्तस्य वशगाः सर्वावस्था भवन्ति वै ॥ १७७ ॥
 विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं मयेन् ।
 परपद्यस्तम्भनं च प्रतिपद्यस्तजृम्भणम् ॥ १७८ ॥
 नबरात्रेण जायते स तदभ्यासयोगपितृ ।
 महोरात्रं पठेयस्तु निस्तन्द्रः शान्तमानसः ॥ १७९ ॥
 वशे तस्य प्रजा याति सर्वे लोकाः सुनिधितम् ।
 पणमासाभ्यासयोगेन योगमायाति निधितम् ॥ १८० ॥
 नित्यं कामकलाभ्यायन् यः पठेत् स्तोत्रमुत्तमम् ।
 वदनोन्मादकलिताः पुरन्ध्यस्तद्रशानुगाः ॥ १८१ ॥
 लावण्यमदनाः साचाद्वैदग्न्यमुदितेषणाः ।
 प्रेमपूर्णमपि वशे क्षुर्वशीं स हि विन्दति ॥ १८२ ॥
 भूर्जपत्रे रोचनया कुङ्कुमेन शुभे दिने ।
 लाचारसद्रवेणापि यावकैर्वा विशेषतः ॥ १८३ ॥
 धातुरागेण वा देवि लिखितं यन्ममञ्चितम् ।
 सुवर्णरौप्यगर्भस्थं सुमंपूतं सुसाधितम् ॥ १८४ ॥
 बालानुद्ध्या पूजितं च प्रतिष्ठितसमीरणम् ।
 धारयेन्मस्तके कण्ठे बाहुमूले तथा हृदि ॥ १८५ ॥
 नाभौ वापि धृतं धन्यं जयदं सर्वकामदम् ।
 रचयन् नापरं किञ्चिद्विद्यते भुवनत्रये ॥ १८६ ॥

प्रहोणादिभयहृत् मुखकृत्यविवर्धनम् ।
 बलवीर्यकरं भूरभूतशत्रुविनाशनम् ॥ १८७ ॥
 पुत्रपौत्रान् गुणगणैर्वर्धनं धनधान्यकृत् ।
 धरण्यां मा पुरी धन्या यत्रायं साधकोत्तमः ॥ १८८ ॥
 यद्गृहे लिखितं तिष्ठेत् स्तोत्रमेतद्द्वारानने ।
 तत्र चाहं शिरे नित्ये हारिष कमला तथा ॥ १८९ ॥
 वसामः सर्वतीर्थानामुत्पात्तिस्तत्र आयते ।
 यो वापि पाठयेद् मन्त्रा पठेद् साधकोत्तमः ॥ १९० ॥
 ज्ञानानन्दकलायोगादेऽप्ययुक्तिं स विन्दति ।
 स्तोत्रेणानेन देवेशि तव पूजाफलं लभेत् ॥ १९१ ॥
 षोडश्यामस्तनुर्भूता पठितव्यां प्रयत्नतः ।
 बलमा सर्वतन्त्राणां बालायाः पूजनमृतिः ॥ १९२ ॥
 तन्त्रोत्तमा षोडशार्णा तत्रेदं स्तोत्रमुत्तमम् ।
 नाशिष्याय प्रदातव्यमशुद्धाय शठाय च ॥ १९३ ॥
 अलसायामयजायाशिवाभङ्गाय सुन्दरि ।
 भक्तिहीनाय मलिने गुरुनिन्दापराय च ॥ १९४ ॥
 विष्णुभक्तिविहीनाय विकल्पावृतबुद्धये ।
 देयं भक्तवरे मुक्तेः कारणं भक्तिवर्धनम् ॥ १९५ ॥
 लतायोगे पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतद्द्वारानने ।
 सैव कल्पलता तस्य वाञ्छाफलकरी तथा ॥ १९६ ॥
 पुष्पिताया लतायोगे कुरङ्गमुखि भाषकः ।
 अनुग्रहः सन् पठेद्यस्तु शतयज्ञस्य पुण्यमाह ॥ १९७ ॥
 ब्रह्मादयोऽपि देवेशि प्रार्थयन्ति पदद्वयम् ।
 स्वयं शिवः स विज्ञेयो यो बालाभावलम्पटः ॥ १९८ ॥
 ब्रह्मानन्दमयी ज्योत्स्ना सदाशिवनिर्भूतिना ।

आनन्दो योऽपि यं वेदा उदन्त्यस्या वशे स्थिताः ॥ १६६ ॥

आह्लादनं चालाभ्यानाद्वालाया नामकीर्तनात् ।

सदानन्दाभ्यासयोगात् सदानन्दः प्रजायते ॥ २०० ॥

इति भीष्ट्रयामले तन्त्रे भैरवभैरवीसंघादे

भीषाष्टात्रिपुरमुन्दरीसङ्ग्रहनामकम् ॥ ४ ॥



अथ

श्रीवालास्तोत्रम् ।

अरुणकिरणजालै रञ्जिताशारकाया
 विधृतजपचटीका पुस्तकाभीविहस्ता ।
 इतरकरावल्या कुन्नफहारसत्ता
 निरसतु इदि बाला नित्यकन्यायत्ता ॥ २ ॥
 वार्त्ता जपेद् यत्तिपुरे भवान्या
 मौञ्ज निशोपे जडभारलीनः ।
 मयेत् स गीर्वाणगुरोर्गरीपान्
 गिरीशपति प्रभुतादि तस्य ॥ ३ ॥
 कामेश्वरि श्यधरीकादराज
 जपेद् दिनान्ते' तव मन्त्रराजम् ।
 रम्भापि जुम्भारिसभा विहाय
 भूर्मा भजेत् त कुलदीक्षित च ॥ ४ ॥
 तार्तीयक पीजमिद जपेद् य
 त्रैलोक्यमातसिपुरे पुरस्तात् ।
 विधाय सीता भुवने तथान्ते
 निरामय ब्रह्मपद प्रयाति ॥ ५ ॥
 धरामवाशिषुषाष्ट-पत्रपदकोणनागरे
 दिन्दुपीठेऽर्चयेद्बाला योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत् ॥ ६ ॥
 इति मन्त्रमय स्तव पठेद् य-
 स्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने ।
 स भवेद् भुवि सार्वभौममौलि-
 स्त्रिदिवे शक्रसमानशौर्यलक्ष्मीः ॥ ७ ॥
 इतीदं देवि पात्तायास्तोत्र मन्त्रमय परम् ।

अदातन्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे
श्रीवालात्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ॥ ५ ॥

समाप्तं श्रीवालापञ्चाङ्गम् ॥

अथ

उद्धारकोशः ।

एकदा स्फाटिकोर्वाभृत्सानौ वनसमाकुले ।
संस्थितौ पार्वतीशम्भू लोकरचक्षतत्परौ ॥ १ ॥
पार्वती परमेशानं प्रोवाच परमं हितम् ।
देवदेव सुरश्रेष्ठ दयात्रैगुण्यमानस ॥ २ ॥
देवी भगवती देव महात्रिपुरमुन्दरी ।
अस्मिन्धराचरे व्यक्ते कूरे केन प्रकाशिता ॥ ३ ॥
श्रीईश्वरः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गोप्यं तव कृतहलात् ।
रेवातटे महापुण्ये श्रीगर्भा नाम सत्पुरी ॥ ४ ॥
अस्ति त्रैलोक्यविरूपाता सर्वभूतलशेखरा ।
तस्या बभूव विप्रेन्द्रदेवगन्धर्वसेवितम् ॥ ५ ॥

पुण्यं तपोवनपदं नानावृत्तसमाकुलम् ।

तस्मिन्स्तपोवने पुण्ये सेवितेऽपि सुरेश्वरैः ॥ ६ ॥

अपिस्तु दक्षिणामूर्तिस्तदाराधनतत्परः ।

नानाशास्त्रान्विषोतोऽपि सर्वागमनिधिरभूत् ॥ ७ ॥

एकदा स्नातुमायातो रेवा पुण्यजलान्निताम् ।

प्राक्पुण्यकर्मणा तस्मै तुष्टा त्रिपुरसुन्दरी ॥ ८ ॥

जलमध्ये स्थिता गोप्त्री महात्रिपुरसुन्दरी ।

मूलं च शिखितो देव्याः शुद्धममृतरूपणम् ॥ ९ ॥

सत्त्वर फलदं गोप्यं स मुनीन्द्रशिरोमणिः ।

तदा प्रभृति तन्मन्त्रं ध्यायन् स्तोत्रं जपन् हृदि ॥ १० ॥

तत्प्रभावान्महादेवि ग्रन्थं कर्तुमियेष सः ।

तदनुग्रहमात्रेण स मुनीश्वरपूजितः ॥ ११ ॥

ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं चकार मन्त्रसागरम् ।

अन्यान् नानाविधान् ग्रन्थान् प्रेक्ष्य त्रैलोक्यपूजिते ॥ १२ ॥

तदा प्रभृति देवेशि प्रसिद्धं भूमिमण्डले ।

ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं सर्वागमविनिश्चितम् ॥ १३ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ।

श्रोतुमुद्धारकोशाख्यं नानागमविनिश्चितम् ॥ १४ ॥

इच्छामि परया प्रीत्या वक्तुमर्हसि भूर्जटे ।

श्रीशिवः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ह्युद्धार त्रिपुरादितः ।

देवीनां दशविद्यानां मन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ॥ १५ ॥

ग्रन्थमुद्धारकोशाख्यं सर्वागमविनिश्चितम् ।

सर्वग्रन्थाद्यपूज्यं च तच्छृणुष्व ब्रवीम्यहम् ॥ १६ ॥

तदनुग्रहमात्रेण सर्वानुद्धारसञ्चयान् ।

अब्रवीद् दक्षिणामूर्तिः शिष्यमचोभ्यनामकम् ॥ १७ ॥

शृणु छात्र महाभाग देवीभक्तिसमन्वित ।

रहस्यं सर्वलोकानां देवानामपि दुर्लभम् ॥ १८ ॥

देवि तस्मिन्नवसरे शिष्याय प्रियवादिने ।

मुनीन्द्रो दक्षिणामूर्तिरब्रवीद् ग्रन्थमुत्तमम् ॥ १९ ॥

भाषितं यत्पुरा तेन तत्प्रभावान्महेश्वरि ।

देवानां देवतानां च तच्छृणुष्व ब्रवीम्यहम् ॥ २० ॥

तन्नामो त्रिपुरामन्त्रोद्धारः । तदुक्तं वामकेश्वरतन्त्रे—

१) लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तियुक्ता

तारं च भूतिकमला कथितापि विद्या ।

शक्त्यादिकं तु विपरीततया च प्रोक्तं

श्रीषोडशाक्षरविधिः शुभदोऽस्तु पूर्णः ॥ १ ॥

इति । उद्दामरे च—

क्षीरोदसम्भवा भूतिः कामं वाग्भवमेव च ।

शक्तिः प्रणयलजे तु लक्ष्मीः शक्त्यादिकं ततः ॥ १ ॥

विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी ।

(त्रिकृटा सकला भद्रे विद्येयं षोडशाक्षरी) ॥ २ ॥

इति । रुद्रयामलेऽपि—

हरिणाक्षी तथा माया कामराजश्च वासना ।

शरत् त्र्यम्बं तथा चामा लक्ष्मीः शक्त्यादिकं तथा ॥ १ ॥

विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी ।

तत्रै लक्ष्मीर्वीजनामानि , उक्तं च त्रिपुरारहस्ये—

लक्ष्मीः पद्मा हरिणाक्षी सरोरुहनिवासिनी ।

कमला रुक्मिणी चैव नारायणमिया प्रिये ।

लक्ष्मीबीजानि सप्तैव कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥ १ ॥

(वान्तं बहिसमापुङ्गं रतिविन्दुविभूषितम् ।

लक्ष्मीबीजमिति प्रोक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ २ ॥)

अपरे च त्रिपुरातिलके —

इमे द्वे कमला पद्मा हरिकान्ता तथैव च ।

श्रियो बीजानि पञ्चैवमनृतान्यपराणि तु ॥ १ ॥

श्री-इति लक्ष्मीबीजम् । अथ पराबीजनामानि, उक्तं वाग्मयातद्धरे—

परा भूतिस्तथा लज्जा मायापि सकला कृशा ।

समस्तापि तथा घामा देवीप्रणववीरकौ ॥ १ ॥

वारणार्थं सुधाबीजं कृत्रिमाण्यपराणि तु ।

(वामाक्षिबहिसंयुक्तं विन्दुनादविभूषितम् ।

शिवबीजं महेशानि लज्जाबीजमुदाहृतम् ॥ २ ॥

ईशानमुद्धृत्य पुरारिबीजं

सत्रिन्दुकं नादविभूषितं च ।

सवामकर्णं परितः प्रकल्प्य

मायां वदन्तीह मनीषिणस्ताम् ॥ ३ ॥)

श्री-इति पराबीजम् । ततो मन्मथबीजनामानि, उक्तं च भैरवतन्त्रे—

कामः पञ्चपुरेवं च मदनो मन्मथस्तथा ।

मारः प्रद्युम्नकन्दर्पावनृतान्यपराणि तु ॥ १ ॥

श्री-इति मन्मथबीजम् । ततो वाग्भवबीजनामानि, उक्तं च त्रिपुरासारसार्यस्वे—

वाग्भवमूर्ध्वबीजं च चारुणं चण्डकेशरः ।

चन्द्रोऽपि चर्मवसनं वासनापि तथैव च ॥ १ ॥

चार्चक्ष्णपि च चर्माण्यमसत्यान्यपराणि तु ।

(द्वादशस्वरवर्णं स्याच्चादविन्दुनिभूषितम् ।

वाग्भवं बीजमित्युक्तं सर्ववाक्यविशुद्धये ॥ २ ॥)

ऐं-इति वाग्भयबीजम् । चार्यंतीबीजो द्वी , ऐं ह्रीं च । अथ शक्ति-
बीजनामानि , उक्तं च चिद्विद्याशिरोमण्या—

शक्तिः शर्मापि विज्ञेये शरच्चङ्गे तथैव च ।

शक्तिबीजानि चत्वारि कृत्रिमायपराणि तु ॥ १ ॥

सौं-इति शक्तिबीजम् । शर्मबीजो द्वी , सौं शं च । ततस्तारबीजना-
मानि , तत्रैव—

प्रणयं च धनुस्वारं व्यक्तं तोमापि व्यञ्चकः ।

प्रासस्तारक एतानि बीजानि प्रणयस्य च ॥ १ ॥

अपराणि ह्यसत्यानि मया प्रोक्तानि पार्वति ।

विपरीततया प्रोक्ता विद्या श्रीषोडशाक्षरी ॥ २ ॥

ओं-इति तारबीजम् प्रकाशम्, ।—ओं ह्रीं ह्रीं ऐं सौं : ओं ह्रीं ध्रीं कर्परलह्रीं,
हसकदलह्रीं , सकलह्रीं , सौं ऐं ह्रीं ह्रीं ध्रीं । इति श्रीत्रिपुरामन्त्रोद्धारः ॥
अथ दश विद्याः । उक्तं चागमलक्ष्यम्—

त्रिपुरा श्रीश्च वाग्देवी तारापि भुवनेश्वरी ।

मातङ्गी शारिका राज्ञी भीडा ज्वालामुखी तथा ॥ १ ॥

दश विद्याः स्वयं चैता भाविताः कृत्त्रिमाससा ।

एता दशैव पठन्या योजिता षोडशाक्षरी ॥ २ ॥

दशविद्या भद्रकाली तुरी च चिन्नमस्तका ।

देविणाकालिका श्यामा कालरात्र्यपि सुन्दरि ॥ ३ ॥

एतासां मूलमन्त्रेण योजितैकाक्षरेण च ।

ब्रह्मादिदेवतैः पूज्या विद्या श्रीषोडशाक्षरी ॥ ४ ॥

वामकेश्वरे षोडशाक्षरी विद्या, इति ।

ततो लक्ष्मीमन्त्रोद्धारः । उक्तं च रुद्रयामले—

(२) हरिणाक्षी परा ज्यक्षं लक्ष्मीनीजत्रयं त्विदम् ।

विपरीततया प्रोक्तं सत्त्वरं फलदायकम् ॥ १ ॥

चामा शङ्कापि नीरं तदन्ते प्रोक्तं शिष्योत्तम ।

तत्र नीरवीजनामानि, यदुक्तमुद्ग्रामरे—

आपो वनं तथा नीरं ठद्वयं च पयस्तथा ।

लक्ष्मीजानि प्रोक्तानि ह्यसत्यानि पराणि तु ॥ १ ॥

स्वाहा-इति नीरवीजम् । ओं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि महालक्ष्मि सर्वकामप्रदे
सर्वसौभाग्यदायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वं भवंगते सर्वस्वकृपे सर्वदुर्ज-
यविमोचिनि ह्रींसोः स्वाहा, इति मूलम् । शारदायाम्—

वाग्भवं शम्भुवनिता रमा मकरकेतनः ।

तार्क्ष्यं च जगत्पार्थो बह्विचीजसमुज्ज्वलः ॥ १ ॥

उ—दीर्घाद्यो भृगुस्त्यै हन्मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः इति ॥ ततः सरस्वतीमन्त्रोद्धारः
यदुक्तं शारदापटले—

(३) तारं लज्जा वाग्भवं च परा प्रणवमेव च ।

वीजं पञ्चशिरो ज्ञेयमन्ते प्रोक्तं नम इति ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं वाग्देव्यै नमः ॥ (शारदायाम्—

तारं पराऽधरो बिन्दुः शक्तिस्तारं सरस्वती ।

डेन्ता नत्यन्तिको मन्त्रः प्रोक्त एकादशाक्षरः ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः ।) नमोवीजनामानि, उक्तं
चागमालङ्कार—

नमो विश्वं तथा स्तम्भमौरमकं चारमरी तथा ।

अन्यानि कृत्रिमाण्येव सुरासुरनमस्कृते ॥ १ ॥

इति ॥ ततस्त्वारामन्त्रोद्धारः । उक्तं च भैरवमन्त्रे—

(४) तारं व्योषं तथा कान्ता माया वाग्भवमेव च ।

कूर्चं चैव महेशानि हन्ते फट् ठद्वयं तथा ॥ १ ॥

तत्र व्योषयीजनामानि, उक्तं चागमसिन्धौ—

स्कन्दं व्योषं च हिम्वं च संयोज्य हरमित्यतः ।

हां-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतमावदेत् ॥ १ ॥

हां-इति व्योषयीजम् । ततः कान्तायीजनामानि, उक्तं च यामकेश्वरे—
कान्ता च कमलाक्षी च प्रियापि परमापि च ।

लम्भापि ललना लज्जा ह्यसत्यन्यपराणि तु ॥ १ ॥

(पोडशव्यञ्जनं वद्विवामाक्षिबिन्दुसंयुतम् ।

चन्द्रयीजे समारूढं वधूयीजमिदं स्मृतम् ॥ २ ॥)

स्त्री-इति कान्तायीजम् । एकाक्षीयीजञ्च । ततः कूर्चयीजनामानि,
उक्तं च च्छिन्नारहस्ये—

कूर्चं कूलं तटं तीरमसत्यान्यपराणि तु ।

हं-इति कूर्चयीजम् । ततः फट्यीजनामानि, च्छिन्नारहस्ये—

हरं फट् तुरगं चान्यदसत्यं तु महेश्वरि ।

ओं हां स्त्रीं हां ऐं हं उग्रतारे फट् स्वाहा इति ॥ अथ भुवनेश्वरी-
मन्त्रोद्धारः । उक्तं च कुण्डिकासर्वस्ये—

[५] प्रणवं तु तथा माया कमला मन्मथस्तथा ।

अन्ते विश्वं नाम मध्ये प्रोक्तं वै तुं सुरेश्वरि ॥ १ ॥

प्रोक्तोऽयं भुवनेश्वर्या मनुस्तुर्याचराभिधः ।

तत्र मनुयीजनामानि, उक्तं च स्वतन्त्रे त्रिपुराटीकायाम्—

मन्त्रो मनुर्हरश्चैव हनुर्बालं विदुर्बुधाः ।

बीजान्येतानि मन्त्रस्य कृत्रिमान्यपराणि तु ॥ १ ॥

हरयीजौ द्वौ, मन्त्रः फट् च । प्रकाशं—ओं हां थीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः
इति ॥ ततो मातङ्गीमन्त्रोद्धारः । उक्तं हि कुलसिद्धासन्ताने—

[६] वोमा काली तथा लक्ष्मीर्वागुराद्वयमेव च ।

चारुकं रसयीजानि ह्यादौ प्रोक्तानि शम्भुना ॥ १ ॥

अन्ते जिह्वा तथा पञ्चं लज्जा नीरजमेव च ।

वासना पङ्कजं चैव वनं प्रोक्तं च शूलिना ॥ २ ॥

इति । तत्र जिह्वाबीजनामानि , कालीबीजोद्गाराणि च कुलचूडामणौ—
काली कुन्ती रसज्ञापि जिह्वापि रसना तथा ।

फ्री-बीजानि च ह्येतानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ २ ॥

फ्री-इति जिह्वाबीजम् । अथ वागुराबीजनामानि—

वागुरा वायुपूज्यापि वातुदास्य त्रिवीजकम् ।

फ्री-बीजानि तु प्रोक्तानि ह्यसत्यान्यपराणि तु ॥ १ ॥

फ्री-इति वागुराबीजम् । अथ चादकबीजनामानि , मुखमालातन्त्रे—
चारुकं चैव चार्वङ्गी चारुतोच्छूनबीजकम् ।

चतुष्टयं च चूर्णी-बीजे असत्यान्यपराणि च ॥ १ ॥

चार्वङ्गीबीजौ द्वौ चूर्णी ये च ॥ ततः पद्मबीजनामानि , उक्तं च वामकेश्वरे—
पद्मं पङ्कजपयोजे नीरजमम्बुजं तथा ।

पञ्च ठकारबीजानि ह्यसत्यान्यपराणि च ॥ १ ॥

ठः इति पद्मबीजम् । प्रकाशम्—ओंफ्रींभींफ्रींफ्रीं उच्छिष्टचण्डालिनि
वेचि मद्वापिशालिनि मातङ्गीदेवि फ्रींठः ह्रींठः पैंठः स्वाहा । इति मात-
ङ्गीमूलम् ॥ अथ शारिकामन्त्रोद्गारः, उक्तं स्वकृतौ त्रिपुराशिरोमणौ—

(७) तारं मायां त्रियं कूर्चं सिन्धुरं शून्यमेव च ।

कन्याशं शरिकादेव्या बीजं सप्ताक्षरं स्मृतम् ॥ १ ॥

अन्ते स्तम्भं च विज्ञेयं शारिकामन्त्रप्रचमम् ।

तत्र सिन्धुरबीजनामानि , उक्तं च वामकेश्वरे—

सिन्धुरं च गणं घोणाहस्तिनं दिरदं तथा ।

फ्रांवीजानि चैव चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

फ्रां-इति सिन्धुरबीजम् ॥ ततः शून्यबीजनामानि, उक्तं च भैरवतन्त्रे—
शून्यं खमम्बरं न्योम आंवीजे च चतुष्टयम् ।

१ ' वास्त ' ख. ' वास्तु ' ग. पाठः । २ ' तटवे ' ख. पाठः । ३ ' इरवं ' ख. पाठः ।

४ ' दि ' ख. पाठः ।

हकारं चापि विज्ञेयमुक्तं तद्बुद्रयामले ॥ १ ॥

असत्यमपरं ज्ञेयं ताराभक्तिसमन्विते ।

आमिति (ह च) शून्यबीजम् ॥ ततः कत्याख्यबीजनामानि , तत्रैव—
कन्याणं चैव शर्मापि शं शुभं च चतुष्टयम् ।

अपरमनृतं ज्ञेयं पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ १ ॥

शर्मबीजे द्वे सो श च । प्रकाशं—ओं ह्रीं थीं ह्र फ्रा आ शा शारिकायै
नमः । इति ॥ ततो राक्षीमन्त्रोद्धार , श्यामातन्त्रे—

(८) तारं लज्जा त्रियमग्निः कामः शक्तिः पडत्तरः ।

बीजं च पदशिरो ज्ञेयं ततः पञ्चवमुद्धरेत् ॥ १ ॥

भगवत्यै तथा राक्ष्यै ह्यन्ते माया च ठद्वयम् ।

एभिः सह मनुः प्रोक्तो राक्ष्याः पञ्चदशाक्षरः ॥ २ ॥

इति । तत्र अग्निबीजनामानि , श्यामातन्त्रे—

अग्नी रेफश्च वहिश्च हुतभृग् हव्यवाहनः ।

र-बीजोद्धारमेतद्धि कृत्रिममपर स्मृतम् ॥ १ ॥

र-इत्यग्निबीजम् । प्रकाशम्—ओं ह्रीं थीं रा ज्ञीं सौ । भगवत्यै राक्ष्यै ह्रीं
स्वाहा । इति ॥ अथ भीडामन्त्रोद्धार , कुलचूडामणौ—

(९) प्रणवं च विभूतिश्च हरिकान्ता तथैव च ।

वियञ्जत्यग्निबीजानि संयोज्य वाग्भवं तथा ॥ १ ॥

मदन्तं च तथा शङ्कानीजं सप्ताक्षरं वेदेत् ।

ठद्वयेन समायुक्तः प्रोक्तो विंशाक्षरो मनुः ॥ २ ॥

(तारं परा रमा वेदी चन्द्रमन्मथशक्रयः ।

भीडामभयतीत्येव हमरूपिणि ठद्वयम् ॥ ३ ॥)

प्रकाशम्—ओं ह्रीं थीं ह्रस्वा ऐं ज्ञीं सौ भीडामभयति हसरूपिणि स्वाहा ।

इति ॥ अथ ज्वालामुखीमन्त्रोद्धार , शारदातिलकटीकाया—

(१०) तारं लज्जा त्रिषु चैवमन्ते कूर्चं हरं पयः ।

बीजं च त्रैलोक्यं देव्या ज्वालाप्लुष्याः सुरेश्वरि ॥ १ ॥

(तारं लज्जा त्रियं चैव ज्वालाप्लुषि ममेति च ।

सर्वशत्रून् भक्षय—द्विरन्ते कूर्चं हरं पयः ॥ २ ॥)

प्रकाशम् — ओं ह्रीं श्रीं ज्वालाप्लुषि मम सर्वशत्रून् भक्षय २ ह्रीं फट्
स्वाहा । इति ॥

दशविद्या मयाख्याता यथागमचिनिधिताः ।

साधकेष्टप्रदा देव्यो नानारत्नचिभूषिताः ॥ १ ॥

एतासां दशविद्यानां गुणान् वक्ष्यामि त्वं शृणु ।

दक्षिणामूर्तिः ।

भुक्तिं ददाति त्रिपुरा लक्ष्मीं लक्ष्मीर्ददाति च ।

विद्या ददाति वाग्देवी प्रत्येकं जन्मनिश्चलाम् ॥ २ ॥

तारा ज्ञानं तथा मोक्षं ह्यैश्वर्यं भुवनेश्वरी ।

मातङ्गी राक्षसीशत्रुभीतिं हरति नित्यशः ॥ ३ ॥

शारिका शं ददात्येव राक्षी राज्यं प्रयच्छति ।

भीडादेवी ददात्येव सन्ततिं विश्वव्यापिनीम् ॥ ४ ॥

धनं ज्वालाप्लुषी देवी भक्तेभ्यः संप्रयच्छति ।

दशविद्या यथा एता भक्तेभ्यः फलमिष्टम् ।

प्रयच्छन्ति महादेव्यः पूजाहोमजपादिभिः ॥ ५ ॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे

दशविद्यामन्त्रोद्धारकोशाख्यानं प्रथमं कल्प ॥ १ ॥

अथ

द्वितीयः कल्पः ।

श्रीईश्वरः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि त्रिपुरां परिवारिताम् ।
पद्मसखीभिरहं तासा मन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ॥ १ ॥
अचोभ्य उवाच ।

गुरो विधातृसंभूत नानाशास्त्रविशारद ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं मन्त्रान् सर्वान् संमुक्तिहेतवे ॥ २ ॥
दक्षिणामूर्तिः ।

शृण्वचोभ्य महाभाग सर्वं वक्ष्यामि तत्पुनः ।
दशविद्या भद्रकाली तुरी च च्छिन्नमस्तका ॥ ३ ॥
दक्षिणाकालिका श्यामा कालरात्रीति सुन्दर ।
पद्मसखीनामहं तासा मन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते ॥ ४ ॥

तत्रादौ भद्रकालीमन्त्रोद्धार । श्यामातन्त्रे—

(१) कालीप्रयं हृर्चयुगं लज्जायुग्मं च भद्रिका ।
भद्रकालिपदं शृण्वद् बीजानि प्रतिलोमतः ॥ १ ॥
ठद्वयेन समायुक्तो भद्रकाल्या' महामनुः ।

तत्र भद्रिकाबीजनामानि, मुण्डमालान्त्र

भद्रिका भास्वती भीमा मैत्रीजे त्रितय स्मृतम् ।

अनृतमपरं ज्ञेय ब्रह्मान्वयसमुद्भव ॥ १ ॥

प्रकाशम्—क्रीं ३ ह्र २ ह्रीं २ भ भद्रकालि भे ह्रीं २ ह्र २ श्रीं ३ स्वाहा । इति ॥

अथ तुरीयमन्त्रोद्धारः । स्वतन्त्रे—

(२) प्रणवं तारका ज्योतिस्तारा हन्ते नम इति ।

तुर्पा मूलमिदं प्रोक्तं स्वतन्त्रे शम्भुना स्वयम् ॥ १ ॥

अथ तारकाज्योतिस्ताराबीजोद्धारः, कामेश्वरे तन्त्रे—

अचं भं तारका ज्योतिस्तारा बीजानि पञ्च च ।

ओं त्रुं श्रीं श्रीं महातुर्वै नमः । इति प्रकाशम् ॥ अथ द्विषमस्तमन्त्रो-
द्धारः । क्षिप्ताशिरोमणौ—

(३) ज्यम्बकैः सकला पद्मा चारुकं च सुरेश्वरि ।

हन्ते उच्छूनपीजं फट् ठडयेन समायुतम् ॥ १ ॥

प्रकाशम्— ओं ह्रीं श्रीं श्रीं द्विषमस्तके च्छ्रीं फट् स्वाहा । इति ॥ द्वितीये
भेदे, आगमलहयां—

लक्ष्मीं लज्जां तथा मायां मात्रां द्वादशिकामथ ।

वज्रवैरोचनीये द्वे माये फट्स्वाहया युते ॥ १ ॥

प्रकाशम्— श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा । इति ॥

अथ दक्षिणाकालीमन्त्रोद्धारः, श्यामातन्त्रे—

(४) कुन्तीत्रयं तीरपुग्मं क्षामापुग्मं ततोऽभिषाम् ।

दक्षिणे—कालिकेत्येवमन्ते कालीत्रयं पुनः ॥ १ ॥

कूर्चपुग्मं परापुग्मं पयश्चैव सुरेश्वरि ।

दक्षिणायाः कालिकाया मनुर्द्राविंशदक्षरः ॥ २ ॥

प्रकाशम्— श्रीं ३ हुं २ ह्रीं २ दक्षिणे कालिके श्रीं ३ हुं २ ह्रीं २ स्वाहा ।

इति ॥ अथ श्यामामन्त्रोद्धारः । तत्र श्यामातन्त्रे—

(५) हरिणाची तथा लज्जा काली जिहावतुष्टयम् ।

ततः सुधारसे श्यामे कृष्णशार्पं विमोचय ॥ १ ॥

अमृत स्नायय स्वाहा श्यामामश्रमुदाहृतम् ।

प्रकाशम्— श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं सुधारसे श्यामे कृष्णशार्प वि-
मोचय अमृत स्नायय स्वाहा । इति ॥ अथ कालरात्रीमन्त्रोद्धारः । उक्तं च

कालरात्रौकट्ये—

(६) प्रणयं वासना माया मन्मथः कमलोद्भवम् ।

बीजे पञ्चाशिरो ज्ञेयं ततः^१ पल्लवप्रदरेत् ॥ १ ॥

ततो मध्येऽभिधां त्यक्त्वा ह्यन्ते सर्वं वशं कुरु ।

नीरो^२ देहि-युगं मध्ये त्यक्त्वाभिधां च कामिनि ॥ २ ॥

गणेश्वर्यं तथा चान्ते त्रिशं च समुदाहृतम् ।

प्रकाशम्— ॐ ए ह्रीं क्लीं श्रीं काष्ठेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्त-
म्भिनि सर्वराजयशहरि सर्वदुष्टनिर्दालिनि सर्वस्त्रीपुष्टपकर्षिणि वन्द्यी
शृङ्खलाखोटय २ सर्वशत्रून् भञ्जय ३ ड्रेप्यान् निर्दलय २ सर्वोस्तम्भय २
मोहनास्त्रेण द्वेषिणमुच्चाटय २ सर्वं यश कुरु स्वाहा देहि २ सर्वका-
लरात्रि कामिनि गणेश्वर्यं नमः । अथ भेदाः—

देवेशि त्रिपुराणालं विज्ञेयं द्वादशात्मकम् ॥ ३ ॥

उक्तं च मुग्धमालातन्त्रे—

द्वादशात्मकं विज्ञेयं देवि तत्त्रिपुराहनुम् ।

केवलं मुक्तये देवि यत्प्रोक्तं नञ्छुभं स्मृतम् ॥ १ ॥

उद्दामरे—

अष्टात्मिका च विज्ञेया त्रिधा श्रीषोडशाक्षरी ।

परं यन् मूचितं देवि सद्यो मुक्तिप्रदं स्मृतम् ॥ १ ॥

तथा स्वकृतौ त्रिपुराशिरामर्णा—

अष्टान्मकमिदं बीजं त्रिपुरायाः स्मृतं तथा ।

अष्टभिर्ऋत्मरैर्वापि मार्मरष्टभिरेव च ॥ १ ॥

अष्टभिर्दिवसैर्वापि जानीयान्मुञ्जिलक्षणम् ।

लक्ष्मीभेदद्वयं ज्ञेयं भाषितं कृत्तिवाममा ॥ २ ॥

लक्ष्मी च रुक्मिणी चैव त्रिभिर्वर्षः फलं लभेत् ।

अथ सरस्वतीभेदा , कामिनीकट्ये—

वाग्देवी च तथा बाष्पी सरस्वत्यनलपिपा ।

भेदास्तेते तु विरूपादाः फलं वर्षचतुष्टये ॥ १ ॥

ततस्ताराभेदाः, भैरवतन्त्रे—

तारापि तारिणी चैवमेकजटा तथैव च ।

नीलसरस्वती चैवमुग्रतारा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥

ताराभेदास्तु पञ्चैवमचोभ्येष्ट प्रकाशिताः ।

अथ भुवनेश्वरीभेदाः, भैरवतन्त्रे—

भैरवी भीमरूपा च भीमापि भुवनेश्वरी ।

भक्त्या कलप्रदा देवी नित्यं वर्षचतुष्टये ॥ १ ॥

अथ मातङ्गीभेदाः, कट्यामन्त्रे—

मातङ्गीसुमुह्योरैक्यं मतङ्गमुनिना स्मृतम् ।

मातङ्गी चक्रिणी देवी कुञ्जिका शाम्बरी तथा ॥ १ ॥

देव्या भेदानि चत्वारि फलं वर्षचतुष्टये ।

अथ शारिकाभेदत्रयम्—

शारिकापि तथाऽप्यर्था फलदापि द्विवर्षिके ।

अथ राक्षीभेदाः—

राक्षीभेदद्वयं प्रोक्तं राक्षी च खगमामिनी ।

द्विवर्षमध्ये भक्त्या च राक्षी राज्यं प्रयच्छति ॥ १ ॥

कुलिकार्णवे—

भीठा भेदविहीना च प्रजाभाष्यविवर्धिनी ।

अथ ज्वालामुक्ताः, ज्वालाशिरोगणी—

ततो ज्वालामुक्ती चैवमम्बिका भगवत्पिणी ।

यथेष्टफलदं प्रोक्तं ज्वालाभेदत्रयमिदम् ॥ १ ॥

एतासां दशविद्यानां नानाभेदमुदाहृतम् ।

तत्राद्या त्रिपुराभेदाः, त्रिपुरातिलके मुरट्टमालातन्त्रे च—

त्रिपुरा भैरवीविद्या हिङ्गुला चण्डिका तथा ।

चामुण्डा नारसिंही च ऐन्द्री हैमवतीश्वरी ॥ १ ॥

मृडानी वारुणी दुर्गा महात्रिपुरसुन्दरी ।

देव्या द्वादशभेदास्तु प्रोक्ता ह्येते विशुलिना ॥ २ ॥

श्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरेऽपि चन्द्रवसने' कामः शरद्वैरवि

ओं ह्रीं श्रीं हिङ्गुले तथैव कमला चामः त्र्यचं चण्डिके ।

चामुण्डे हसकलह्रीं च सकलह्रीं श्रीनारसिंहि तथा

ह्यैन्द्रि चारणमेव ह्रीं च मदनः कामं परा रुक्मिणी ॥ ३ ॥

देवी हैमवतीश्वर्यपि कमला लज्जा तथा मन्मथ-

श्वन्दो वारुणि वा कपर्दिलपरा दुर्गे स्मृता शम्भुना ।

श्रीं ह्रीं क्लीं चारण शरदपि तथा त्र्यचं परा रुक्मिणी

विद्याश्रीर्विपरीतभावसहिता स्यात् षोडशात्माधिधिः ॥ ४ ॥

इति षोडशाक्षरीभेदाः ॥ प्रकाशम्-श्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरे ॥ ऐं क्लीं सौ भैरवि ॥

ओं ह्रीं सौं हिङ्गुले ॥ श्रीं ह्रीं ओं चण्डिके ॥ हसकलह्रीं चामुण्डे ॥ सकलह्रीं

श्रीं नारसिंहि ॥ ओं ह्रीं क्लीं ऐन्द्रि ॥ क्लीं ह्रीं श्रीं देवि हैमवतीश्वरि ॥ श्रीं

ह्रीं क्लीं मृडानि ॥ ऐं वारुणि ॥ कपर्दिलह्रीं दुर्गे ॥ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौ

ओं ह्रीं श्रीं , कपर्दिलह्रीं , हसकलह्रीं , सकलह्रीं , सौ. ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं

महात्रिपुरसुन्दरि । इति ॥

श्रीदेव्युवाच ।

महेश्वर त्रिकालज्ञ शरणागतयत्सल ।

भेदैर्युताना देवीना मन्त्रैः त्वं उक्तुमर्हसि ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच ।

दयया तव देवेशि तद्वक्ष्यामि समासतः ।

अथ श्रिया मन्त्राद्वार यदुक्तं भैरवतन्त्रे—

ओं ह्रीं श्रीं हरिणाक्षीमीजद्वय फलप्रदं सद्यः ।

अथ चं ह्रीं शक्तिनीरमन्ते प्रोक्तमथापि धूर्जटिना ॥ १ ॥

अथ रुक्मिण्या मन्त्रोच्चारः—

ओं ह्रीं चैवं तु रुक्मिण्यास्तारं लक्ष्मीस्तथा ।

अन्ते प्रोक्तं महेशानि लक्ष्मीमेदं द्वयं त्विदम् ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि ओं ह्रीं स स्वाहा । ओं ह्रीं रुक्मिणि
ओं श्रीं स्वाहा ॥ अथ सरस्वतीभेदा—

तौमा परा वाग्मवमेव क्षामा तारं च प्रोक्तं परमेश्वरेण ।

वाग्देवतायाः फलदं हि वालं तृणां परो मुक्तिंपरायणानाम् ॥ ४ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं वाग्देवतायै नमः ॥ अथ वाणीभगवत्या मन्त्रः—

तारं लज्जाध्वंजीं च ह्यन्ते स्तम्भमुदाहृतम् ।

प्रकाशम्—ओं ह्रीं ऐं वाणीभगवत्यै नमः ॥ अथ सरस्वतीमन्त्रः—

चार्यद्ग्वपि विभूतिश्च अथं सरस्वत्यै ततः ।

नमोऽन्ते परमेशानि मया प्रोक्तं नगरमने ॥ ५ ॥

प्रकाशम्—ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः ॥ अथानलप्रिया मन्त्रः—

तारं लज्जा वाग्मवं च मध्येऽनलप्रिये ततः ।

अथं विश्व तथान्ते च पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ ६ ॥

देव्याश्चत्वारि भेदानि सरस्वत्या वरानने ।

प्रकाशम्—ओं ह्रीं ऐं अनलप्रिये ओं नमः ॥

अथ तारामेदाः, प्रकाशम्—ओं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं तारे फट् स्वाहा । ओं ह्रीं ऐं ह्रीं
उग्रतारे फट् स्वाहा । ओं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं एकजटे फट् स्वाहा । ओं ह्रीं ऐं ह्रीं नीलसर-
स्वति फट् स्वाहा । ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं उग्रतारे फट् स्वाहा । इति तारामेदाः ॥

अथ सुवनेश्वर्या भेदाः, ओं भेरये नमः । ओं ह्रीं श्रीं भीमरूपायै नमः ।
ओं ह्रीं श्रीं भीमायै नमः । ओं ह्रीं श्रीं श्रीं सुवनेश्वर्यै नमः । इति ॥

अथ मातङ्गीभेदाः, प्रकाशम्—ओं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ओं अक्षिपृच्छादालिनि
देवि मर्माग्यानि मातङ्गि देवि मूर्ध्नि ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं स्वाहा ॥ ह्रीं चि-
शान्तये मन्त्रः—सुमुखा व्याहृता या । ओं अक्षिपृच्छादालिनि सुमुखि

देवि महाविशाचिनि ह्रीं ठः (२२) ॥ अथ चक्रियाः—ओं श्रीं चूर्णं महा-
घक्रिणि ऐं ठः स्वाहा ॥ अथ कुब्जिकायाः—ओं श्रीं श्रीं कुब्जिके देवि
ह्रीं ठः स्वाहा ॥ अथ शाम्बर्याः—ओं श्रीं देवि शाम्बरि क्रौं ठः स्वाहा ॥

अथ शारिकाभेदद्वयम्—तत्राऽपर्णामूलम्, ओं हूं चूर्णं भांशां देव्यै अपर्णा-
यै नमः ॥ (अथ हैमवतीभ्वरीमूलम्—ओं ह्रीं श्रीं हैमवतीभ्वरि ह्रीं स्वाहा) ॥
भीजा भेदविहीना इत्यलम् ॥

ज्वालामुर्खभेदाः, तत्राम्यकामूलम्—ओं ह्रीं मातरभ्यके ह्रं फट् स्वाहा ॥
अथ भगरूपियाः—ओं श्रीं देवि भगरूपिणि ह्रं फट् स्वाहा ॥

एतानि भेदमन्त्राणि मया प्रोक्तानि पार्वति ।

एतासां दशविद्यानामन्यासां गृणु वच्म्यहम् ॥ ७ ॥

भद्रकाली यथा देवी दक्षिणा कालिका तथा ।

तुरी भेदविहीनास्ति यथेष्टफलदायिनी ॥ ८ ॥

प्रकाशम्—क्रीं ३ ह्रं २ ह्रीं २ भै भद्रकालि भै ह्रीं २ ह्रं २ क्रीं ३ स्वाहा ॥
क्रीं ३ ह्रं २ ह्रीं २ दक्षिणे कालिके क्रीं ३ ह्रं २ ह्रीं २ स्वाहा (२२) ॥

अथ त्रिचमस्ताद्विधिधा—ओं ह्रीं श्रीं त्रूं त्रूं त्रिचमस्तके त्रूं फट् स्वाहा ।
द्वितीया—ओं ह्रीं श्रीं ऐं वज्रवैरोचनि ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

दक्षिणा कालिका श्यामा कालरात्री सुरेश्वरि ।

एता भेदविहीनाश्च यथाकामफलप्रदाः ॥ ९ ॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिधिरचिते उद्धारकोशे सर्वांगमसोर
पद्मदेवीमन्त्रोद्धारकोशभेदसूचको द्वितीयः कल्पः ॥ २ ॥

—॥८३॥—

अथ

तृतीयः कल्पः ।

ईश्वर उवाच ।

अथो देवि प्रवक्ष्यामि देवीनां मन्त्रमुत्तमम् ।
शृणुष्वैकाग्रमनसा ब्रवीमि त्वत्कुतूहलात् ॥ १ ॥
दक्षिणामूर्तिना तस्मिन् कालेऽन्तेवासिने तथा ।
भाषिता षोडशीविद्या ननन्दाद्योभ्यक्तो मुनिः ॥ २ ॥
तस्मिन् काले मुनेस्तस्य चाश्रमं मुनिसेवितम् ।
आयुर्मुनयः सर्वे सोत्सुका मन्त्रकाङ्क्षिणः ॥ ३ ॥
लोहितोद्दालकौ शङ्खमावकौ पुण्डरीकजौ ।
शाण्डिल्यगालवौ चैवमेते तस्माश्रमं ययुः ॥ ४ ॥
सर्वे मिलिता मुनिपुङ्गव ते
श्रीदक्षिणामूर्तिमिदं तमूचुः ।
परस्परं वै स्वकुलेष्टदेवी-
मन्त्रांश्च वन्द्यान् शुभदान् पप्रच्छुः ॥ ५ ॥
श्रीदक्षिणामूर्तिस्त्वाच ।
शृणुष्वं मुनयः सर्वे वक्ष्याम्याश्रयमुत्तमम् ।
चराचरेऽलिङ्गति देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥ ६ ॥
नैव तावृक् कचिदास्ति देवीसीमन्तशेखरा ।
तस्याथ वदनाम्भोजान् सप्त देव्यः ध्रुवा मया ॥ ७ ॥
पथेष्टफलदायिन्यः सर्वरोगमयापहाः ।

अचिरेणैव कालेन फलदास्तन्मुखाच्छ्रुताः ॥ ८ ॥

अप्य ऊचुः ।

का देव्यः कानि नामानि कीदृशानि मनूनि हि ।

प्रसादं कुरु विप्रर्षे चेदस्मासु दया तव ॥ ९ ॥

मुनिरुवाच ।

देवीनां परया प्रीत्या मन्त्रान् शृणुध्वमग्रतः ।

येन श्रवणमात्रेण हयमेघफलं लभेत् ॥ १० ॥

ईश्वर उवाच ।

मुनीश्वरान् पुनर्देवो दक्षिणामूर्तिरग्रवीर्त्तु ।

सप्त विद्याः पुरा प्रोक्ता वज्रयोगिन्यादिदेवताः ॥ ११ ॥

तासां वक्ष्यामि नामानि पर्यतेश्वरनन्दिनि ।

दक्षिणामूर्तिना तेषां प्रकाशितानि तत्त्वतः ॥ १२ ॥

श्रीवज्रयोगिनी देवी चाराही शारदा तथा ।

कामेश्वरी तथा गौरी ह्यन्नपूर्णा तथैव च ॥ १३ ॥

कुलवागीश्वरी ह्येताः सप्त देव्यः श्रुता मया ।

दक्षिणामूर्तिना तेषां सप्त विद्याः प्रकीर्तिताः ॥ १४ ॥

एतासां बलमाश्रित्य देवी त्रिपुरसुन्दरी ।

समृजे जगदेतच्च पान्यते च सुरेश्वरि ॥ १५ ॥

हस्तेऽपि तथा विश्वं चराचरसमन्वितम् ।

अपिरुवाच ।

एतद्वाचकमृतं तस्यां मुक्ताम्भोजाच्छ्रुतं मया ।

तासां वक्ष्यामि मन्त्राणि शृणुध्वं मुनिपुङ्गवाः ॥ १६ ॥

अथ मन्त्रोद्धारा तत्रादौ वज्रयोगिनीमन्त्राद्वार उक्तं च स्वतन्त्रे—

(१) प्रणवः सफला चैव बीजा द्वौ फलदायकौ ।

मध्येऽपि वज्रयोगिन्यै हन्ते नीरमुदाहृतम् ॥ १ ॥

प्रकाशम् — ओ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा ॥

अस्या मन्त्र समुच्चार्य यः संग्रामं प्रविशति ।

स निर्जित्य रिपून् सर्वान् कल्याणी गृहमाविशेत् ॥ १७ ॥

अस्या बीजद्वयं देवि जपते यदि मानवः ।

द्वादशदिवसं तावत्सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥ १८ ॥

अस्या बीजावुपादिश्य ह्येकान्ते प्रजपेन्नरः ।

ऋतुस्ताताया भार्याया मैथुनं कुरुते नरः ॥ १९ ॥

शुक्रेण सह देवेशि सप्तभिरौषधैर्लिखेत् ।

लिखित्वा स भवेद्राजा अस्या यन्त्रं ममत्रकम् ॥ २० ॥

लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।

अस्याः संभोगकाले तु मन्त्रं जपेत् सुरेश्वरि ॥ २१ ॥

कान्ताया मैथुनं कुर्याद् बहुपुत्रयुतो भवेत् ।

अस्या यन्त्रं समन्त्रं च गृही यो धारयेन्नरः ॥ २२ ॥

यावज्जन्म भवेत्तस्य तावच्छत्रुर्न जीवति ।

अस्या यन्त्रं समन्त्रं च हृदि यो धारयेन्नरः ॥ २३ ॥

यावज्जन्म भवेत्तस्य तावल्लक्ष्मीर्भविष्यति ।

अस्या यन्त्रं समन्त्रं च कुक्षौ यो धारयेन्नरः ॥ २४ ॥

अनुवादे स शत्रूणां वाक्यज्ञः सहसा भवेत् ।

तस्यास्त्रिपुरसुन्दर्या मुखाम्भोजान्मया श्रुतम् ॥ २५ ॥

फलमेतन्महाश्रयकारकं मुनिपुङ्गवाः ।

इति वज्रयोगिनी ॥ अथ वाराहीमन्त्राद्वार उरुच स्वकृतौ त्रिपुरातिलके—

(२) वासना चैव वान्हीकं तमोरीजममन्वितम् ।

चाग्मव सौश्रमकं चैव ततः पल्लवमुदरेत् ॥ १ ॥

भगवति च वार्तालि तथा वाराहि देवते ।

वराहमुखि चैवं तु वासना च मठं तथा ॥ २ ॥

ततः पङ्कजप्योजौ हरं नीरं महेश्वरि ।

भगवत्यास्तु वाराह्या एकत्रिंशाक्षरो मनुः ॥ ३ ॥

तत्र बाल्हीकबीजनामानि , मुण्डमालातन्त्रे—

बाल्हीकं मठसंज्ञं च हिङ्गुबीजं मृनीश्वराः ।

ग्लौ-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतपावदेत् ॥ १ ॥

अथ तमोपीजनामानि , स्वतन्त्रे—

तमोबीजं तथा ध्वान्तं मोहं तिमिरमेव च ।

लं-बीजोद्धारयेतानि कृत्रिमाणपराणि तु ॥ १ ॥

प्रकाशम्—पेंग्लौलपें नमो भगवति घातार्त्तलि वाराह्नि देवते वराहमुखि
पेंग्लौठःठः फट् स्वाहा , इति वाराही ॥ अथ शारदामन्त्रोद्धारः , उक्तं
च शारदापटले—

(३) तारं माया च मदनं शरद्विजेयमौरमकम् ।

मध्रं च पद्-शिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत् ॥ १ ॥

भगवत्यै-शारदायै चान्ते लज्जा च ठद्वयम् ।

प्रकाशम्—जौहौहौलौ. नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा ॥ अथ कामे-
श्वरीमन्त्रोद्धारः , भैरवपटले—

(४) माया च हरिणाची च चन्द्रः शीतांशुरेव च ।

मदनमूर्मिध्वान्तौ द्वौ संयोज्य स्तनबीजकम् ॥ १ ॥

मनुः सप्तशिरो ज्ञेयस्ततः पल्लवमुद्धरेत् ।

जृम्भणाख्ये ततो देवि कामेश्वरि तथैव च ॥ २ ॥

ततो बाणदेवतेऽपि ह्यन्ते नीरमुदाहृतम् ।

कामेश्वर्या महादेव्या द्वाविंशदक्षरो मनुः ॥ ३ ॥

तत्र चन्द्रबीजनामानि , कालीसर्वस्वे—

चन्द्रः शीतांशुग्निदुश्च शर्वरीपतिरेव च ।

ताराधिपः सुधारश्मिः कृत्रिमाणपराधि च ॥ १ ॥

चन्द्रर्पाक्षौ द्वौ पैं द्वां च । अर्घ्यामिवाजनामानि, तत्रैव—

ऊर्मिर्नोचिस्तथा चैव तरङ्गस्त्रितयं स्मृतम् ।

बलं-बीजोद्धारनामानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ २ ॥

मध स्तनवीजनामानि, वरुं वागमालशूरे-

स्तनपीजं कुचं चैवसुरोजो हृज्जमेव च ।

अं-बीजनामान्येतानि कृत्रिमायपरणि च ॥ १ ॥

प्रकारम्—दांभोद्ग्राद्रीर्लोत्तुजं जुष्मणास्ये कामेश्वरि वाणदेवदे स्वाहा ।

इति भैरवपटलोकम् । अथ गौरीमन्त्रोच्चार , त्रिपुण्यारोमणौ—

(५) प्रणवं कमला चैव माया बान्दीकमेव च ।

शिवबीजं तथा देवि गौरि शर्बच्च ठदयम् ॥ १ ॥

भगवत्या महागौर्या बालस्तु द्वादशाक्षरः ।

इति । तत्र शिष्यपीजनामानि, अहं च कुलचूडामणौ—

शिवजीनं च शम्भुम् शर्वः शङ्कर एव च ।

गं-वीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

प्रकाशम्—जोर्ध्वान्ग्लोम वेचि यौरि गो स्वादा (१२) ॥ अधाप्रपूर्वामन्त्रो

आर. , कामेश्वरीतन्त्रे—

(६) तारं परापि कमला मीनकेतन एव च ।

विश्वं ततो भगवति माहेश्वरि ततः पुनः ॥ १ ॥

अन्नपूर्णे ठपुगले मनुविशाचरः स्मृतः ।

मीनकेतन इति वक्षः । उक्तं च स्वरुतौ त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्ये-

अथ च मायापि पञ्चा च कामं विश्वमुदाहृतम् ।

बीज तु पद्मशिरो ज्ञेयं विधेन सह भामिनि ॥ १ ॥

इत्युक्तः । प्रकाशम् — ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते माहभार मन्त्रपूज

स्थादा ॥ अथ कुलवागाश्वरामनादात्, उक्तं च सुप्रसन्नोत्तम —
(१) ————— वैश्वं चान्नं प्रायश्चित्तमिति ।

(७) प्रणव मदन च व स्कन्द नारायणत्रयान् ।

तटं तथेच्छापीजं च ततः पल्लवमुदरेत् ॥ १ ॥

भूपदस्ते ततः पथात् कुलवागीश्वरि तथा ।

अन्ते च वासनापीजं पद्मं काङ्क्षापि नीरजम् ॥ २ ॥

नर्तकीपीजमम्भोजं पयधैव सुरेश्वरि ।

कुलवागीश्वरीदेव्यास्तुर्यविंशाचरो मनुः ॥ ३ ॥

तत्रेच्छापीजनामानि , घामकेश्वरे —

इच्छापीजं स्पृहा काङ्क्षा लिप्ता पीजचतुष्टयम् ।

भङ्ग-पीजस्यैव नामानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

अथ नर्तकीपीजनामानि , चिद्वन्नारहस्ये —

नर्तकीपीजमत्युग्रं वेरयापि गणिका तथा ।

पण्यस्त्री पञ्च नामानि प्रीति-पीजस्यानृतं परम् ॥ १ ॥

अभ्युज्जाम्भोजयोरेक्यमिति दोषः । प्रकाशम् — ओं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रीं भू
भूपदस्ते कुलवागीश्वरि देव भूतः प्रीति स्यादा (२४) ॥

एता मया महेशानि सप्त विद्याः प्रकीर्तिताः ।

अद्याहं तव भक्त्या ते हृदि यद्वोचते प्रियम् ॥ २६ ॥

वद मे सत्वरं देवि तद्वक्ष्यामि सुविस्तरम् ।

श्रीदेव्युवाच ।

पञ्चानां चालकाख्यानां कीदृशास्ते मनूचमाः ।

कृपयापि पुरा मह्यं सूचिता न प्रकाशिताः ॥ २७ ॥

मुनय ऊचुः ।

ब्रह्मर्षे सर्वशास्त्रज्ञ त्वन्मुखत्सकलं श्रुतम् ।

मनून् पञ्चकुमाराणामस्माकं वक्तुमर्हसि ॥ २८ ॥

दक्षिणामूर्तिर्मुनीन् प्रति , ईश्वरः पार्वतीं प्रति ब्रवीति ।

श्रीईश्वर उवाच ।

शृणु पार्वति देवेशि महर्षीणां पुरा शिवे ।

दक्षिणामूर्तिनोक्तं यत् तच्चे वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ २९ ॥

हेरम्बशरजन्मानौ कार्तवीर्यार्जुनस्तथा ।

हनुमद्भैरवावेते भाषिताः पञ्च बालकाः ॥ ३० ॥

इति । भैरवात्तत्रे वामकेश्वरे च—

हेरम्बशरजन्मानौ महामृत्युञ्जयस्तथा ।

कार्तवीर्यार्जुनश्चैव हनुमद्भैरवौ तथा ॥ १ ॥

स्वयं मया च तत्रोक्ता भाषिताः पट् कुमारकाः ।

वद्रयामलेऽपि—

गणेशो वटुकश्चैव स्कन्दो मृत्युञ्जयस्तथा ।

कार्तवीर्यार्जुनोऽप्येवं सुग्रीवो हनुमास्तथा ॥ १ ॥

यामले रुद्रशब्दादौ भाषिताः सप्त बालकाः ।

तत्रादौ गणेशमन्त्रोद्धारः, वद्रयामले—

[१] प्रणवं कमलां लज्जा कन्दर्प मठवीजकम् ।

शङ्करं पद्-शिरोमन्त्रं ततः पञ्चवमुदरेद् ॥ १ ॥

गणपतये नमः पश्चाद् वर-वरद एव च ।

सर्वजनं ततः पथान्मे वशमानवेति च ॥ २ ॥

अन्तेऽपि ठद्रयं ज्ञेयमष्टाविंशाचरो मनुः ।

मकारम्—ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लीं ग गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय

स्वाहा । इति ॥ अथ कुमारस्य मन्त्रोद्धारः, कुलबूडामणौ—

[२] प्रणवं छविबीजं च मन्त्रं तु द्विशिरः स्मृतम् ।

मध्ये कुमाराय नमो ह्यन्ते नीरुद्धाहृतम् ॥ १ ॥

तत्र छविबीजनामानि, सिद्धसारखेते—

छविबीजं कान्तिबीजं शोभाऽपि सुषमा तथा ।

द्रा-बीजानि च चलारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रा कुमाराय नमः स्वाहा, इति ॥ अथ कार्तवीर्या-

र्जुनमन्त्रोद्धारः, उरु खोड्डामरतत्रे—

[३] प्रणवं वायुपूज्यापि चारुकं मन्मथस्तथा ।

अन्नेऽपो भैरवसायं मनुष्यादशाचरः ॥ २ ॥

तथाभ्रवीजनामानि, यामकेभ्यरे—

अभ्रवीजं च जीमूतमम्बुदं जलदं धनम् ।

वी-वीजानि च पञ्चैवमनृतानि पराणि च ॥ १ ॥

अपान्धिर्वीजनामानि, त्रिपुरातिलके—

आन्धिर्वीजं तथा सिन्धुः सांवरं सागरस्तथा ।

रं-वीजानि च चत्वारि (कृत्रिमाण्यपराणि च) ॥ १ ॥

रकार—रकारेयोर्भेदेन रमन्निर्वीजं कमित्यन्धिर्वीजम् । अग्नयश्चोरस्त-

रादन्तरमिति निर्दोषः । अथ कल्पवीजनामानि, आगमालङ्कारे—

कल्पवीजं च संवर्तं प्रलयं चयवीजकम् ।

धामिकं क्षुरकं चौद्रं तथा कल्पान्तवीजकम् ॥ १ ॥

धु-वीजान्येवमष्टौ च कृत्रिमाण्यपराणि च ।

अथ शतपत्नीर्वीजनामानि, आगमलहर्षाम्—

शतपत्नी रयालिका रयामा शाद्रला शुक्ला तथा ।

मी-वीजानि तु पञ्चैवमसत्यान्यपराणि च ॥ १ ॥

मकाशम्—ओं ह्रीं वीं रं धुं ह्रीं ह्रीं वदुकभैरवाय नमः स्वाहा ॥

अथ महामृत्युञ्जयस्य मन्त्रोद्धारः, आनमलहर्षाम्—

[६] ज्यवं हृजं शक्तिशोभेऽपि शङ्का

मां तस्माद्वै पालय-द्रौ तथैव ।

तस्मान्जक्तिः खं शरद् हृजतारौ

मन्त्रोद्धारो देवि मृत्युञ्जयस् ॥ १ ॥

मकाशम्—ओं जुंसः हसः मां पालय २ सोहंसः जुं ओं ॥ अथ सुप्रीवस्य

मन्त्रोद्धारः, आगमशिरोमणौ—

[७] तारं भाया वाग्मवं मन्मथं च

शक्तिर्मध्ये नाम त्यक्त्वा तथान्ते ।

कालीपद्मौ कूर्चपद्मौ समस्ता-

पद्मौ नीरमेष सुग्रीवमन्त्रः ॥ १ ॥

प्रकाशम् — ओं ह्रीं ऐं क्लीं सः सुग्रीवाय क्लींठः हुंठः ह्रींठः स्वाहा ॥

मयास्याता मदेशानि श्येते वै सप्त बालकाः ।

दक्षिणामूर्तिकृत्वा च ।

मृणुध्वमृषयः किञ्चिद्युष्माकमस्ति यद्गृदि ।

ब्रवीमि भवतां प्रीत्या आज्ञापयितुमर्हय ॥ ३१ ॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वांगमसारे

सप्तदेवी सप्तकुमारकोशाख्यान तृतीयः कल्पः ॥ ३ ॥



अथ

चतुर्थः कल्पः ।

।



अपय ऊचुः ।

प्रक्षर्षे सर्वतत्त्वज्ञ शास्त्राम्भोनिधिपारग ।

नवग्रहाणामस्माक मन्त्रास्तं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच ।

तस्मिन् काले महर्षीणां यदुक्तं धातृक्षनुना ।

नवग्रहाणां मन्त्राश्च तान् वक्ष्यामि समासतः ॥ २ ॥

आदित्येन्दुजशुक्राश्च शुर्विन्दू परमेश्वरि ।

एते पञ्च महेशानि पञ्चेशोर्बाण्यदेवताः ॥ ३ ॥

मौमाकिराहयश्चैव त्रय एते मुनीभराः ।

देवस्य खण्डपरशोलोचनत्रयदेवताः ॥ ४ ॥

केतुश्च परमेशानि भूमेर्देवः प्रकीर्तितः ।

एते नव ग्रहाः प्रोक्ताः शम्भुना रुद्रयामले ॥ ५ ॥

अथादौ पञ्चग्रहमन्त्रोच्चारः । तत्रादावादित्यस्य मन्त्रोच्चारः, विश्वना-
थसारोच्चारः—

(१) प्रणवं चाम्बरं लक्ष्मीर्गोपवीजं तथैव च ।

बीजं तुर्यशिरो ज्ञेयं ततः पञ्चवमुद्धरेत् ॥ १ ॥

ग्रहाधिराजाय तत आदित्याय तथैव च ।

अन्ते पयस्तु विज्ञेयं मनुद्वर्षशाचरः स्मृतः ॥ २ ॥

तत्राम्बरबीजनामानि, भैरवतन्त्रे—

अम्बरं वल्लभीजं च शून्यं शक्तिरिति द्वयम् ।

हरितं हरिणीबीजं हरिद्राबीजमेव च ॥ १ ॥

इसौः—बीजानि सप्तैव कृत्रिमाण्यपराणि च ।

अम्बरबीजौ हौ इसौः आ च । प्रकाशम् — ओं इसीः श्रीं आ प्रहा-
धिराजाय आदित्याय स्वाहा । अर्थ बुधस्य मन्त्रोच्चारः, स्वतन्त्रे—

[२] प्रणव च तथा स्कन्दं रसज्ञा च पटाननः ।

मध्येऽपि ग्रहनाथाय बुधायान्ते च ठद्वयम् ॥ १ ॥

बुधस्य ग्रहनाथस्य मनुष्यतुर्दशाचरः ।

तत्र पटाननबीजनामानि, कुम्भिकासर्वस्वे—

पटाननः शरजन्मा स्कन्दः कुमारबीजकम् ।

शाम्भवः शालिनीबीजं तथा पण्मुखबीजकम् ॥ १ ॥

ट—बीजानि च सप्तैवमनूबान्यपराणि च ।

प्रकाशम् — ओं ह्रीं क्रीं ट ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा ॥ अथ शुक्रस्य

मन्त्रोद्धारः, आगमशिरोमणौ—

[३] प्रणवमूर्ध्वबीजं च स्तनबीजसमन्वितम् ।

शिवबीजं ततो मध्ये ग्रहेश्वराय वै पुनः ॥ १ ॥

शुक्रायान्तेऽश्मरी चैव बालश्रतुर्दशाक्षरः ।

प्रकाशम् — ओं ऐं जं मं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः ॥ अथ बृहस्पतेर्मन्त्रोद्धारः, त्रिपुरातिलके —

[४] त्र्यक्षं मायापि सौभाग्या सुरासुरनमस्कृते ।

तरङ्गवेश्ये संयोज्य चार्वङ्गी हिङ्गुबीजकम् ॥ १ ॥

ऊर्ध्वं च पद्मशिरोबीजं ततः पद्मवमुदरेत् ।

ततो ग्रहाधिपतये बृहस्पतये एव च ॥ २ ॥

पुनर्वारिवहं चैव पद्मं लक्ष्मीस्तु नीरञ्जम् ।

वासना पङ्कजं चैवमन्ते प्रोक्तं वनं शिवे ॥ ३ ॥

हर्युद्धारः । सौभाग्येति दोषः । वलिणामूर्तिस्तु—“तस्य धिगस्तु मुनयः स्वयं यस्य न धीर्भवेत् । कं रुक्मिणी कं सौभाग्यं घोभुवोरन्तरं महत् ॥” इति दोषः । उक्तं च स्वकृतौ सुन्दरीसर्वस्ये—“प्रणव सकला चैव देवेशि रुक्मिणी तथा ।” ततो धारिवहमिति दोषः । वामकेभ्ये—

प्रणवं च परा लक्ष्मीर्वीचिवेश्येऽपि योजयेत् ।

चन्द्रो मठं ततः पश्चाद् ग्रहाधिपतये नमः ॥ १ ॥

ततो बृहस्पतयेऽपि ततो जीमूतबीजकम् ।

पद्मं लक्ष्मीर्नीरञ्जं च वासना पङ्कजं तथा ।

अन्ते नीरं समारूपातं पञ्चविंशाक्षरो मनुः ।

प्रकाशम्—ओं ह्रीं श्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रौंठः पैंठः श्रींठः स्वाहा ॥ अथ चन्द्रस्य मन्त्रोद्धारः, कालीपटले—

[५] त्र्यक्षं च हरिणाक्षी च कुन्तीबीजसमन्वितम् ।

हेरतिशब्दं संयोज्य शून्यानुस्वारसंयुतम् ॥ १ ॥

नाट्यबीजं ततो मध्ये चन्द्रायान्तेऽश्मरी स्मृता ।

तत्र नाट्यबीजनामानि भैरवतन्त्रे ,

नाट्यबीजं च नटनं ताण्डवं नृत्तबीजकम् ।

चं-बीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं श्रीं क्रीं ह्रीं चं चन्द्राय नमः ॥

एते वै पञ्चवाणानां प्रहाः पञ्च प्रकीर्तिताः ।

अथ विप्रहमन्त्रोद्धारः । तत्रादौ भौमस्य मन्त्रोद्धारः , शारदाटीकायाम्

[६] चारुणं हरिणीबीजं रुक्मिणी शर्वरीपतिः ।

वेधोपीजं ततो मध्ये ग्रहाधिपतये ततः ॥ १ ॥

भौमायान्ते पर्यः प्रोक्तो मनुः पञ्चदशाक्षरः ।

तत्र वेधोपीजनामानि , छिन्नारहस्ये —

वेधोपीजं विधिर्मेष्टा स्वयम्पूर्वाजमेव च ।

कं-बीजान्यपि चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ये ह्रसौः श्रीं ह्रीं कं प्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा ॥

अथ शनैश्वरस्य मन्त्रोद्धारः , आगमलहरीम्—

[७] तारं लज्जां श्रियं चैव बीजं त्रिशिरं ऊर्ध्वगः ।

ग्रहचक्रवर्तिनेऽपि शनैश्वराय वै ततः ॥ १ ॥

मदनं वासना शक्रिन्ते नीरमुदाहृतम् ।

शनैश्वरस्य देवस्य मनुर्विशाक्षरः स्मृतः ॥ २ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्वराय ह्रीं ऐंस्वः स्वाहा ॥ अथ

रादोर्मन्त्रोद्धारः , तत्रैव —

[८] प्रणवं रसनायुग्मं तटयुग्मं च गर्जितम् ।

ततएकधारिणे च राहवे हन्यवादनः ॥ १ ॥

लज्जा लक्ष्मीस्तथा भौमा ह्यन्ते वनमुदाहृतम् ।

रादोर्विशाक्षरो वालो यथर्भोऽष्टफलमदः ॥ २ ॥

तत्र गर्जितबीजनामानि , स्वतन्त्रे —

गर्जितं खनवीजं च स्तनितं रसितं तथा ।

टं-वीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं क्रीं क्रीं हं ह्र ट टट्टधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं भै स्वाहा । इति

शम्भोर्नेत्रत्रयाणां च देवता भाषिता मया ।

सुदिने साधको मन्त्रान् ग्रहाणां साधयेच्छिवे ॥ १ ॥

अथ केतुमन्त्रोद्धारः, मन्त्रमुक्तावल्याम्—

[६] प्रणवं सकला वृष्टिस्ततोऽपि क्रूररूपिणे ।

केतवेऽपि ततः पश्चाच्चन्द्रः शङ्का पयस्तथा ॥ १ ॥

केतोरयं मनुः प्रोक्तो देवि पञ्चदशाक्षरः ।

तत्र वृष्टिबीजनामानि, मुण्डमालातन्त्रे—

वृष्टिबीजं च करकं वर्षोपलस्तु वार्षिकैः ।

क्रूं-वीजानि च चत्वारि कृत्रिमाण्यपराणि तु ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं ह्रीं क्रूं क्रूररूपिणे केतवे ऐं सौः स्वाहा ॥ इति,

एतेषां नवग्रहाणां मनवो भाषिता मया ।

अथाहं तव देवेशि वर्णानां वन्मि वै मनून् ॥ १ ॥

कोशं लोकोपकारार्थं गोप्याद्गोप्यतमं कुरु ।

येन विज्ञानमात्रेण मान्त्रिकः साधको भवेत् ॥ २ ॥

इति र्थादक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वांगमसारे

नवग्रहमन्त्रोद्धारकोशाख्यानं चतुर्थं कल्पं ॥ ५ ॥

अथ

पञ्चमः कल्पः ।

—:ॐ:—

ऋषय ऊचुः ।

ब्रह्मर्षे ब्रह्मपुत्रस्तमागमाण्यर्वापरग ।

प्रसन्नोऽसि महाभागिभस्मासु कृपया प्रभो ॥ १ ॥

नानाशास्त्राणि ह्यस्माभिः श्रुतानि तन्मुखाम्नुजात् ।

वर्णानां श्रोतुमिच्छामो मन्त्रकोशानि च वयम् ॥ २ ॥

श्रीदक्षिणामूर्तिः ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मत्तो यूय यथाविधि^१ ।

वर्णानां मन्त्रकोशं च निगद्यत त्रिपुरामुखात् ॥ ३ ॥

शृणुध्वमृषयः सर्वे मन्त्रकोश सुविस्तरम् ।

सुनीनां सूचितं यच्च दक्षिणामूर्तिना पुरा ॥ ४ ॥

त्रिपुरातिलके—

(अ) आत्मबीजमकार च स्वान्त हर्दयमेव च ।

मानसं च मनोबीजं पैतामहमिति स्मृतम् ॥ ५ ॥

अपरमनृत ज्ञेयमकारस्य सुरेश्वरि ।

(आ) शून्य खमम्बर व्याम वैष्णव चेति मापितम् ॥ ६ ॥

आकारस्यानृतमन्यदुक्त भैरवतन्त्रके ।

(इ) इन्द्रबीजं तथा जिष्णुर्मरुतान् मघमा हरिः ॥ ७ ॥

शैवमिकारवर्णस्य कृत्रिममपरं वदेत् ।

मया प्रोक्तं सुरेशानि ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥ ८ ॥

(ई) वृद्धिबीजं तथा मेघा धीबीजं च मतिस्तथा ।

ऐन्द्रं तथैव विज्ञेयमीकारस्यानृतं परम् ॥ ९ ॥

मया प्रोक्तं सुरेशानि त्रिपुरातिलके शिवे ।

इन्द्रबीजौ द्वौ ई ई च ।

(उ) रुतिबीजं तथा नन्दा वामनं वीतुंबीजकम् ॥ १० ॥

सौर्यमुकारपीजानि कृत्रिमाण्यपराणि च ।

मयाख्यातानि सर्वस्वे कुञ्जिकायाः सुरेश्वरि ॥ ११ ॥

(ऊ) कचबीजं तथा केशं शिरोरुहं च मूर्धजम् ।

ऐन्दवमनृतमन्यदुकारस्य सुरेश्वरि ॥ १२ ॥

शिरोमणौ मया प्रोक्ताः सुन्दर्याः परमेश्वरि ।

(ष्ट) पाप्मवीजं तथा पापं किम्बिपं कन्मपं तथा ॥ १३ ॥

किङ्करीबीजमेवं च मङ्गलमनृतं परम् ।

ऋकारस्य रहस्येऽसिन् कान्याः प्रोक्तं मया शिवे ॥ १४ ॥

(ऋ) कृपाबीजं दयाबीजं करुणा कार्पिकं तथा ।

ऋकारस्यानृतमन्यद् भाषितं विष्णुयामले ॥ १५ ॥

(लृ) विश्वबीजं द्रपं ज्ञेयं लृकारं च नम इति ।

व्यक्रुवीजं जगद्बीजं गौर्वे प्रोक्तं मया शिवे ॥ १६ ॥

लृकारस्यानृतमन्यदुक्तं च रुद्रयामले ।

(लृ) गङ्गाबीजं सुर्नदी च नाकवापी च स्वर्धुनी ॥ १७ ॥

शाक्रमन्यदनृतं च लृकारस्य मया स्मृतम् ।

ग्रन्थे च स्वकृतौ देवि मन्त्रसागरतन्त्रके ॥ १८ ॥

(ए) एकादशी मात्रिका च लताबीजं तथैव च

वल्लीपीजं च वाराकी चान्यदनृतमावदेत् ॥ १६ ॥

अपरं च मयाख्यातमेकारस्य सुरेश्वरि ।

कुलचूडामणौ ग्रन्थे रचिते मात्रिकोत्तमैः ॥ २० ॥

(ऐ) वाग्मवमूर्ध्वनीजं च चारुणं चाण्डिकेश्वरः ।

वण्डोऽपि चर्म वसनं वासना च तथैव च ॥ २१ ॥

चार्वह्मणपि च चर्माणं मात्रां द्वादशिकामथ ।

राहु ख्यातं मया देवि ऐकारस्यानृतं परम् ॥ २२ ॥

त्रिपुरासारसर्वस्वे दक्षिणामूर्तिना कृते ।

(ओ) प्रणवं च ततस्तारं व्यञ्जं तोमापि त्र्यम्बकः ॥ २३ ॥

त्रासस्तारकं देवेशि कैतवं च मया स्मृतम् ।

लिनाशिरोमणौ ग्रन्थे रचिते वै मया स्वयम् ॥ २४ ॥

(औ) मोक्षपीजं तथा मुक्तिर्ज्ञान निर्वाणपीजकम् ।

आगस्त्यं च मया ख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥ २५ ॥

(अ) अंबीजं वृक्षपीजं च पादपं धरणीरुहम् ।

भूकृद् च मयाख्यातमनृतमपरं वदेत् ॥ २६ ॥

सिद्धसारस्वते ग्रन्थे प्रणयैव प्रकाशितम् ।

(अः) नागबीजं भूधरं च भार्गवीजं च भानवम् ॥ २७ ॥

ध्रीवं ख्यातं मया देवि अःशब्दस्यानृतं परम् ।

ग्रन्थे त्रिपुरसुन्दर्याः सर्वस्वे विश्वदुर्लभे ॥ २८ ॥

(क) ककारं च शिरोपीजं मूर्ध्वपीजं च चारुणम् ।

वेधावीजं विधिर्ब्रह्मा स्वयम्भूवीजमेव च ॥ २९ ॥

ककारस्य मया ख्यातमनृतमपरं वदेत् ।

ग्रन्थे लिङ्गारहस्येऽस्मिन् पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ ३० ॥

१ 'चन्द्रोऽपि' अ. वा. ३. २ 'धनुस्ता' अ. वा. ३. ३ 'तार च' ग. वा. ३. ४ 'वर्ण' अ. वा. ३. ५ 'वृक्ष' अ. वा. ३. ६ 'वर्ण' अ. वा. ३. ७ 'वर्ण' अ. वा. ३.

८ 'वर्ण' अ. वा. ३. ९ 'वर्ण' अ. वा. ३. १० 'वर्ण' अ. वा. ३. ११ 'वर्ण' अ. वा. ३.

- (ख) नभावीजं पुष्करं च द्यौवीजं चक्रवालकम् ।
 वैष्टश्रवणीजं च श्रोत्रं त्रिपुरया खयम् ॥ ३१ ॥
 आगमामृतमञ्जरीं दुर्लभायां मयापि च ।
- (ग) शिववीजं च शम्भुश्च शर्वः शङ्कर एव च ॥ ३२ ॥
 गकारस्यानृतमन्यद् भाषितं च मया शिवे ।
 कुलचूडामणौ ग्रन्थे दुर्लभे त्रिदिवे प्रिये ॥ ३३ ॥
- (घ) जिनवीजं पद्मिजं मारजिद्वीजमेव च ।
 मायात्मजोऽर्कचन्द्रश्च गौतममनृतं परम् ॥ ३४ ॥
 यकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे वै रुद्रयामले ।
- (ङ) पद्माननः शरजन्मा स्कन्दः कुमारवीजकम् ॥ ३५ ॥
 शाम्भवः शालिनीवीजमनृतमपरं स्मृतम् ।
 कुम्भिकासर्वस्वे ख्यातं मया त्रैलोक्यपूजिते ॥ ३६ ॥
- (च) नाट्यवीजं च नटनं ताण्डवं नृत्तवीजकम् ।
 चकारस्य मया ख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥ ३७ ॥
- (छ) शनिवीजमर्कजं च पङ्कवीजं तथैव च ।
 कालं च सौरवीजं च स्रुतिः सुन्दरवीजकम् ॥ ३८ ॥
 छकारस्य मया श्रोत्रं ग्रन्थे कामेश्वरे शिवे ।
 शनिवीजौ द्वौ छं जं च ।
- (ज) स्तनवीजं कुक्षं चैवमुरोजो हृज्जमेव च ॥ ३९ ॥
 जकारस्य मयाख्यातमन्यदनृतमावदेत् ।
 आगमालङ्कारे च ग्रन्थे भैरवनिर्मिते ॥ ४० ॥
- (झ) इन्द्रावीजं स्पृहा काह्ला लिप्तावीजं चतुष्टयम् ।
 झकारस्य मया ख्यातमसत्यमपरं स्मृतम् ॥ ४१ ॥
 त्रैलोक्यप्रथिते ग्रन्थे देवि वै वामकेश्वरे ।
- (ञ) यमवीजं कालवीजं कृतान्तसमवर्तिनौ ॥ ४२ ॥

कीनाशं मृत्युबीजं च अकारस्य मया स्मृतम् ।

त्रिपुरासर्वस्वे ग्रन्थे त्रिजगद्दुर्लभे प्रिये ॥ ४२ ॥

कालबीजौ द्वौ जं छं च ।

(ट) गर्जितं स्वनबीजं च स्तनितं रसितं तथा ।

ढकारस्य मया ख्यातं स्रुतञ्चे देववन्दिते ॥ ४४ ॥

(ठ) पपं पङ्कजपयोजौ नीरञ्जमम्बुजं तथा ।

पञ्च ठकारबीजानि कृत्रिमाण्यपराणि च ॥ ४५ ॥

मया ख्यातानि देवेशि तन्ने वै वामकेश्वरे ।

(ड) सिंहिका सरसीबीजं रेणुकारीजमेव च ॥ ४६ ॥

अञ्जनीरीजकं ख्यातमनृतमपरं स्मृतम् ।

डकारस्य मया देवि ग्रन्थे वै रुद्रयामले ॥ ४७ ॥

(ढ) वायुबीजं चानिलं च समीरणं मरुत्तया ।

समीरं चाशुगं ज्ञेयं वातं श्वसनबीजकम् ॥ ४८ ॥

ढकारस्य मया ख्यातमन्यदनुतभावदेव ।

वायुबीजौ द्वौ ढं यं च ।

(ण) बाणबीजं मार्गणं च पत्रिणमाशुगं तथा ॥ ४९ ॥

णकारस्यानृतमन्यद् ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ।

आशुगबीजौ द्वौ ढ ण च ।

(त) रात्रिबीजं तमीबीजं तामसीबीजमेव च ॥ ५० ॥

घपा च क्षणदाबीजमन्यदनुतभावदेव ।

कुञ्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे तंबीजं च मया स्मृतम् ॥ ५१ ॥

(थ) विलबीजं च बिबरं सुपिरं च नागलोककम् ।

थकारस्य मया ख्यातं तन्ने वै कुलिकार्णवे ॥ ५२ ॥

(द) चक्रिबीजं व्यालबीजं सर्पः काकोदरोरगौ ।

भोगिबीजं भुजङ्गं च भुजङ्गनमिति स्मृतम् ॥ ५३ ॥

दकारस्य मया ख्यातमनृतमपरं स्मृतम् ।

स्वतन्त्रे देवदेवेशि दक्षिणामूर्तिना कृते ॥ ५४ ॥

(घ) पुष्पबीजं प्रसूनं च प्रवृत्तिः सुप्रजास्तथा ।

धकारस्यानृतमन्यत् त्रिपुरातिलके स्मृतम् ॥ ५५ ॥

(न) चारवीजं च लवणं सैन्धवं सूकरं वृकम् ।

वाराहमनृतमन्यन्मया ख्यातं सुरेश्वरि ॥ ५६ ॥

त्रैलोक्यप्रथिते ग्रन्थे त्रिपुरायाः शिरोमणौ ।

(प) कूर्ममीनपदव्याप्तौ बीजार्यं सदृशं प्रिये ॥ ५७ ॥

फकारस्य पकारस्य भेदो नास्ति परस्परम् ।

भाषणोद्धारत्रिपये लिखने प्रकृतिः पृथक् ॥ ५८ ॥

मत्स्यं च मीनबीजं च शफरीबीजमेव च ।

भूपबीजं मयाख्यातं ग्रन्थे छिन्नाशिरोमणौ ॥ ५९ ॥

(फ) कूर्मबीजं च कमठं कर्कटोऽपि कुलीरकम् ।

फञ्जपमनृतमन्यन्मयाख्यातं च भामिनि ॥ ६० ॥

शारदापटले ग्रन्थे त्रैलोक्यप्रथिते शिवे ।

(ब) ऊर्भिर्वीचित्तथा चैवं तरङ्गस्त्रितयं स्मृतम् ॥ ६१ ॥

असत्यमपरं ज्ञेयं मयाख्यातं सुरेश्वरि ।

कालिकाकुलसर्वस्वे ब्रह्मणैव प्रकाशिते ॥ ६२ ॥

(भ) भद्रिका भास्वतो भीमा भकारस्यानृतं परम् ।

स्वतन्त्रे वै मुण्डमालायां मयाख्यातं सुरेश्वरि ॥ ६३ ॥

(म) डुलिवीजं शिलीवीजं मण्डूकं दुर्दूरं तथा ।

भेकीवीजं मयाख्यातमसत्यमपरं स्मृतम् ॥ ६४ ॥

आगमामृतमञ्जरी पर्वतेश्वरनन्दिनि ।

(य) वायुबीजं तथा वाग्मि वत्चालं वरयबीजकम् । ६५ ॥

वीराशार्यं तथा वापी मयाख्यातं स्वतन्त्रके ।

- (र) अथी रेफश्च वट्टिश्च हुतभृग् हन्यवाहनः ॥ ६६ ॥
रकारस्य मयाख्यातं श्यामातन्त्रे सुरेश्वरि ।
- (ल) तमोबीजं तथा ध्वान्तं मोहं तिमिरमेव च ॥ ६७ ॥
लकारस्य मयाख्यातं स्वतन्त्रे मुनिवन्दिते ।
भूषीजं धरणीबीजं लकारं भाषितं मया ॥ ६८ ॥
- (व) अत्रं मेघं च जीमूतमम्बुभृदम्बुदं धनम् ।
वकारस्य मयाख्यातं तन्त्रे वै वामकेश्वरे ॥ ६९ ॥
- (श) कल्याणं चैव शर्मापि शं शुभं च चतुष्टयम् ।
शकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे भैरवतन्त्रके ॥ ७० ॥
- (घ) शम्पाधीजं तद्विद्बीजं विद्युच्चतुर्दं तथा ।
ह्लादिनीबीजकं चैवमसत्यमपरं स्मृतम् ॥ ७१ ॥
मयाख्यातं सुरेशानि ग्रन्थे वै रुद्रयामले ।
- (स) शक्तिः शर्मापि विष्णवे शरच्छङ्के तथैव च ॥ ७२ ॥
सकारस्य मयाख्यातं ग्रन्थे छिन्नाशिरोमणौ ।
- (ह) छविबीजं कान्तिबीजं शोभा भा सुषमा तथा ॥ ७३ ॥
आकाशं च हकारस्यानृतमन्यन्मयोदितम् ।
सिद्धसारस्वते ग्रन्थे नित्य माश्रिकपूजिते ॥ ७४ ॥
- (च) देवबीजं निर्जरं च त्रिदशं त्रिदिवेशकम् ।
सुरबीजं च गीर्वाण लेखममरबीजकम् ॥ ७५ ॥
चकारस्य मया श्रोत्रं कुलचूडामणौ प्रिये ।
वर्णानां देवदेवेशि कोश श्रोत्रं मया शिवे ।
नानामन्त्रपुत्र देवि सर्वाङ्गमविनिश्चितम् ॥ ७६ ॥

अथ

षष्ठः कल्पः

श्रीईश्वरः ।

द्रव्यवराणां पृथङ्नाम क्रीप्रोश्रीर्होदसौः तथा ।
पृथङ्नाम सुरेशानि सकलागमनिश्चितम् ॥ १ ॥
अद्य वक्ष्यामि ते देवि तिस्रो भुवनदेवताः ।
दक्षिणामूर्तिना पूर्वमृषीणां मापिताः स्वयम् ॥ २ ॥
भवानी देवदेवेशि द्वितीया वगलामुखी ।
इन्द्राक्षी सा तृतीया च तिस्रो भुवनदेवताः ॥ ३ ॥
आसामहं ते मन्त्राणि वक्ष्यामि शृणु पार्वति ।
यस्य कस्य न वक्तव्यं न वक्तव्यं वरानने ॥ ४ ॥

सत्रादी भवानीमन्त्रोद्धारः, मुण्डमालातन्त्रे—

(१) प्रणवं चैव द्वे पदे व्यचयुग्मं परा पुनः ।

हरिणाक्षी-द्रयं कूर्चं हरं ठद्वयसंपुतम् ॥ १ ॥

प्रकाशम् — ओं श्रीं श्रीं ओं ओं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रं फद् स्वाहा , इति ॥

अथ वगलामुखया मन्त्रोद्धारः, आगमलक्ष्याम्—

(२) तारकं चैव मृषीजं म्भरं समुदाहृतम् ।

मन्त्रं च द्वि-शिरो ज्ञेयं ततः पञ्चवमुदरेत् ॥ १ ॥

भगवति वगला च मुखे देवि ततः पुनः ।

ततोऽपि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं तथा ॥ २ ॥

स्तम्भय द्विस्तथा विद्वां कीलय द्विर्बुद्धिं तथा ।

विनाशय द्विवारं च मृत्तिकानीजकं तथा ॥ ३ ॥

अथमन्ते पयो ज्ञेयं द्विपञ्चाशाचरो मनुः ।

तत्र मृद्धीजनामानि, भैरवतन्त्रे—

मृद्धीजं मृत्तिकावीजं मृत्स्वावीजं प्रशस्तिका ।

मृत्साञ्जितं परं ज्ञेयं पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ १ ॥

ह्रीं इति मृद्धीजम् । प्रकाशम्—ओं ह्रीं भगवति वगलामुखि देवि सर्व-
दुष्टना वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ जिह्वां कक्षिय २ बुद्धिं विनाशय २
ह्रीं ओं स्वाहा [५२] इति ॥ अष्टेन्द्राद्या मन्त्रोद्धारः, रुद्रयामले—

(३) अथ कुन्तीद्वयं देवि कूर्चयुग्मं तथैव च ।

प्रस्थवीजं परां पद्मां चर्माणं च ततोऽभिषाम् ॥ १ ॥

इन्द्राक्षि वज्रहस्तेऽन्ते लक्ष्मीं लज्जां च पुष्करम् ।

वीरयुग्मं रसने द्वे वासधन्द्रो हरं वनम् ॥ २ ॥

इन्द्राक्ष्या देवदेव्याश्च सप्तविंशाचरो मनुः ।

तत्र प्रस्थवीजनामानि, शारदापटले—

प्रस्थवीजं सानुवीजं शिखरं पुष्करं तथा ।

मूर्त्तौ-बीजोद्धारमेतद्धि चान्यदनृतमावदेत् ॥ १ ॥

प्रकाशम्—ओं श्रीं श्रीं हूं हूं मूर्त्तौ ह्रीं भीं ऐं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते भीं ह्रीं
मूर्त्तौ हूं हूं श्रीं श्रीं ओं ऐं फट् स्वाहा [२०] इति ॥

श्रीर्देश्वरः ।

विश्व एता मया लप्ता देवि ध्रुवनदेवताः ।

दक्षिणामूर्तिना भक्त्या संसारेऽस्मिन् प्रकाशिताः ॥ १ ॥

अथाहं देवदेवेशि खेचर्या वक्ष्यि वै मनुम् ।

यानाधित्य लभेद्योषी खेचरीं सिद्धिदां कलाम् ॥ २ ॥

विश्वयामले, खेचरीमन्त्रोद्धारः—

(१) गीर्वाणदशमं वर्षं चोद्धरेत् प्रतिलोपतः ।

तमोर्वीजं ततो दद्यान्मायावीजं ततः परम् ॥ १ ॥

ततो दद्यान्मृद्धीजं कूटोज्यं परिकीर्तितः ।

मन्त्रं (बीजं) तुर्यशिरो ज्ञेयं योगी दद्यात्ततोऽभिधाम् ॥ २ ॥
 सेचये च ततो दद्यादन्ते ह्यौरमक्रमेव च ।

प्रकाशम्—मूल्होसोः सेचये नमः, इति ॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिविरचिते उद्धारकोशे सर्वागमसारे
 त्रिदेवीनां स्तेचर्पाश्च कोशाख्यानं पष्ठः कल्पः ॥ ६ ॥

अथ

सप्तमः कल्पः

श्रीईश्वरः ।

अथ वक्ष्यामि ते देवि ध्यानानागमनिश्चितान् ।
 एतासां देवतानां त्वं शृणु पार्वति तत्त्वतः ॥ १ ॥
 तत्रादौ दशविधानां ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु ।
 वामकेश्वर-तन्त्रोक्तं त्रिपुरायाः सुरेश्वरि ॥ २ ॥
 दिव्याम्बराङ्कितवर्तुं मिहिराग्निचन्द्र-
 नेत्रां सुधांशुमुकुटां हिमसन्निभाम् ।
 सिंहासनां परशुखलधरां भुजाभ्यां
 ब्रह्मेन्द्रविष्णुनमितां त्रिपुरां भजेऽहम् ॥ ३ ॥
 अथ वक्ष्ये त्रियो ध्यानं भाषितं रुद्रयामले ।
 मुनिसाधकगीर्वाण—विघ्नवर्गैः सुपूजितम् ॥ ४ ॥
 लक्ष्मीं पद्मासनगतकटिं सूर्यशोभांशुनेत्रा-
 मुद्यन्नास्वत्कनकरुचिभिः पद्मशङ्खासिपाणिम् ।

नानामुक्तामणिसुकलशा भूषिताङ्गीं द्विषाहुं

नित्यं लोकत्रितयफलदां नौम्यह मङ्गिपूर्वम् ॥ ५ ॥

अथ वक्ष्यामि वाग्देव्या ध्यान विद्याप्रद शिवे ।

तत्रमुक्तावलौ ग्रन्थे दुर्लभे त्रिदिनेऽपि च ॥ ६ ॥

चारुणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभा

चन्द्रार्धाङ्कितमस्तका निजकरैः सत्रिभ्रतीमादरात् ।

वीणामच्चगुण सुधाढ्यकलश विद्या च तुङ्गस्तनीं

दिन्यैराभरणैर्विभूषिततनुं सिंहाधिरूढा भजे ॥ ७ ॥

अथ वक्ष्यामि ताराया ध्यान भैरवतन्त्रके ।

देव्या भेदविहीनाया मुनिसाधकपूजिते ॥ ८ ॥

देवीं पद्मगभूषिता दिमरुचिं शीताशुशङ्खप्रभा

मुक्तारत्नपरीतफण्डवलया रक्ताम्बर त्रिभ्रतीम् ।

शृङ्गाञ्जासिगदाधरा सुरगणैर्वेङ्कणमुख्यैः स्तुता

नित्यं लोकत्रयैकरचणपरा तारा त्रिनेत्रा भजे ॥ ९ ॥

अथाह भुवनेश्वर्या ध्यान वक्ष्यामि तच्छृणु ।

साधकेष्टप्रदे ग्रन्थे निःसृत रुद्रयामले ॥ १० ॥

उद्यद्भानुसहस्रसन्निभमुखीं पीनस्तनीं पद्मगा

दोर्भिरङ्कुशपाशपुस्तकजपान् सत्रिभ्रतीं सादरम् ।

ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरेन्द्रमुनिभिर्नित्यं स्तुता वन्दनैः

स्तोत्रार्चैर्भुवनेश्वरीं त्रिनयना हृत्पङ्कजेऽह भजे ॥ ११ ॥

अथ वक्ष्यामि मातङ्ग्या ध्यान परतनन्दिनि ।

कुञ्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे ममाप्यत्यन्तदुर्लभे ॥ १२ ॥

चन्द्रार्धाङ्कितशेखरा त्रिनयना कोटीन्दुमूर्त्यप्रभा

नानारत्नसहस्रवद्भरणा प्रेतासने मथिताम् ।

शङ्खं तोमरपट्टिसाञ्जयुगलान् दोर्भिर्वहन्तीं मुदा

ध्यायेऽहं हृदये सदा भगवतीं मातङ्गिनीं हारिणीम् ॥ १३ ॥

अथ वक्ष्ये महेशानि शारिकाध्यानमुत्तमम् ।

आगमामृतमञ्जया निःसृतं दुर्लभं जनैः ॥ १४ ॥

श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां

नागेन्द्रहारचलयाङ्कितकण्ठमालाम् ।

सिन्दूरकुङ्कुमसहस्रमरीचिदीप्तिं

श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये सरामि ॥ १५ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि राज्ञीध्यानमनुत्तमम् ।

चामकेश्वरतपोऽर्कं पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ १६ ॥

शीतांशुवालार्ककृशानुनेत्रां

चतुर्भुजामेणतगासनस्थाम् ।

शङ्खाञ्जशूलासिधरां महेशीं

राज्ञीं भजेऽहं तुहिनाद्रिरूपाम् ॥ १७ ॥

अथ वक्ष्यामि भीडाया ध्यानमिच्छाफलप्रदम् ।

निःसृतमागमोद्योते मया विरचिते स्वयम् ॥ १८ ॥

उद्यन्तीतांशुररिमद्युतिचयसदृशीं फुल्लपत्रोपविष्टां

वीरानागेन्द्रशङ्खायुधपरशुरां दोर्भिरीज्यैश्चतुर्भिः ।

मुक्ताहारशुनानामणियुतहृदयां शीघ्रपात्रं वहन्तीं

वन्दे भीडां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम् ॥ १९ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि ज्वालामुख्या अनुत्तमम् ।

ध्यानं मया विरचिते ग्रन्थे ज्वालाशिरोमणी ॥ २० ॥

ज्वालापरीतास्याशिरोरुहां तां

सरोजशङ्खासिगदाधरां च ।

सिंहासनस्थापितपादयुग्मां

ज्वालामुखीं सन्दृश्ये स्मरामि ॥ २१ ॥

अथाहं भद्रकान्याश्च ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।

स्वयं मया विरचिते तत्रे वै वामकेश्वरे ॥ २२ ॥

मुण्डं विश्वस्य कर्तुः करकमलतले धारयन्तीं हसन्तीं

नाहं तृप्ता वदन्तीं सकलजनमिदं भवयन्तीं सदैव ।

श्यामां विष्णुं गिरीशं भुजनिवहचलाञ्छूलश्रोतं वहन्तीं

ध्यायेऽहं भद्रकालीं नवजलदनिभां प्रेतमध्यासनस्थाम् ॥ २३ ॥

तुरीध्यानमहं वक्ष्ये निःसृतमागमामृते ।

अस्मिन्धराचरे रूपाते ब्रह्मणैव प्रकाशिते ॥ २४ ॥

नानारत्ननिबद्धचन्द्रशकला मौली जटाभिर्वृते

पाशाम्भोजधरां हिमांशुधवलां दोभ्यां द्विबाहुं शिवाम् ।

सूर्येन्द्रग्निलोचनां सितमुखीं प्रेतासने संसितां

ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरैश्च नमितां देवीं भजेऽहं तुरीम् ॥ २५ ॥

अथाहं छिन्नमस्ताया ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।

स्वकृते त्रिपुरायाश्च ग्रन्थे देवि शिरोमणौ ॥ २६ ॥

पञ्चाङ्गांशुपरीतभालफलका बालार्ककोटिप्रभां

ज्वालावद्महार्घरत्नचया कन्दर्पदर्पोज्ज्वलाम् ।

शूलसङ्कुशपाशवेषुमुसलाम्भोजामयान् विभ्रतीं

भैरवेष्टां छिन्नमस्तका भगवतीं ध्याये हृदन्त्रे सदा ॥ २७ ॥

दक्षिणाकालिकायाश्च ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।

ग्रन्थे कालीरहस्येऽस्मिन् परितेश्वरनन्दिनि ॥ २८ ॥

भद्रोपेन्द्रशिवासिमुण्डरशना ताम्बूलरक्षाधरा

वर्षामेषनिभा विशूलमुसले पद्मासिपाशाङ्कुसान् ।

शस्त्रं सादियुगं वरं दशभुजैः संविभ्रतीं प्रेतगां
 देवीं दक्षिणकालिकां भगवतीं रक्ताम्बरां तां स्मरे ॥ २६ ॥
 अथ वक्ष्यामि श्यामाया ध्यानं पर्वतनन्दिनि ।
 श्यामातन्त्रे मयारूपातं सकलागमसागरे ॥ २७ ॥
 त्रैलोक्यपूजितपदाम्बुरुहद्वयां तां
 कृष्णाम्बुभृत्सदृशरूपधरां त्रिनेत्राम् ।
 शूलासिशङ्खमहतींश्च भुजैर्वहन्तीं
 श्यामां भजे शवशरीरकृतासनस्थाम् ॥ २८ ॥
 अथाहं कालरात्र्यास्ते ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।
 मया विरचिते देवि तन्त्रे वै वामकेश्वरे ॥ २९ ॥
 शूलान्जपाशाङ्कुशपद्महस्तां
 चतुर्भुजां धूम्रनिभां त्रिनेत्राम् ।
 सिंहासनस्थां धृतपीतवस्त्रां
 ध्याये महेशीं हृदि कालरात्रीम् ॥ ३० ॥
 नानाभरणसंयुक्ते देवि वक्ष्यामि त्वं शृणु ।
 श्रीवज्रयोगिनीध्यानं निःसृतं कुलिकार्णवे ॥ ३१ ॥
 इन्द्रप्रिसर्पनयनां पाशाङ्कुशधरां शिवाम् ।
 द्विभुजां सिंहमध्यस्थां भजेऽहं वज्रयोगिनीम् ॥ ३२ ॥
 अथ वक्ष्यामि वाराह्या ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम् ।
 यथामीष्टप्रदं देवि कुलचूडामणौ प्रिये ॥ ३३ ॥
 चन्द्रार्धचूडां द्विभुजां भुजाभ्यां
 शूलान्कुशौ श्याममुखीं वहन्तीम् ।
 सूर्याग्निचन्द्रीकृतनेत्रपद्मां
 ध्याये हृदन्त्रे विमलां वराहीम् ॥ ३४ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि शारदाध्यानमुत्तमम् ।

शारदापटले ग्रन्थे रचितेऽपि मया स्वयम् ॥ ३८ ॥

पङ्कजा त्रिनयनां सिताम्बरा

शाण्डिल्यपिनुतपादपङ्कजाम् ।

पर्वतस्थितवतीं धृतशला

शारदा भगवतीं हृदि ध्याये ॥ ३९ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि त्वं शृणु ध्यानमुत्तमम् ।

कामेश्वर्यास्त्रिपुरायाः सर्वस्य तन्त्रकोशमे ॥ ४० ॥

त्रिलोचना सूर्यसहस्रशोभा

सिंहासनस्था द्विभुजा धृतासिम् ।

पीताम्बरा विष्णुमहेशसेव्या

कामेश्वरीं तां हृदये स्मरामि ॥ ४१ ॥

अथ वक्ष्यामि गौर्यास्ते ध्यानं भैरवतन्त्रके ।

ग्रन्थे मया विरचिते पर्वतेश्वरनन्दिनि ॥ ४२ ॥

गौराङ्गीं धृतपङ्कजा त्रिनयनां श्वेताम्बरा सिंहगा

चन्द्रोद्भासितशेखरा सितमुखीं दोर्भ्यां वहन्तीं गदाम् ।

विष्ण्वन्द्राम्बुजयोनिशम्भुत्रिदशैः सपूजिताङ्घ्रिदया

गौरीं मानसपङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे ॥ ४३ ॥

अथाहमन्नपूर्णया ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु ।

निःसृतं भैरवीतन्त्रे मया देवि प्रकाशिते ॥ ४४ ॥

चन्द्रार्धमालिं द्विभुजा त्रिनेत्रा

शलाचमाले द्विभुजे वहन्तीम् ।

एणामनस्था भुजगोपवीता

तामन्नपूर्णां हृदये स्मरामि ॥ ४५ ॥

कुलरागीश्वरीध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु प्रिये ।

आगमामृतमञ्जयां दुर्लभायां ममापि च ॥ ४६ ॥

त्रिशूलासिधरां दोर्भ्यां रक्तास्यां वह्निसन्निभाम् ।

व्यक्षां सिंहासनगतां कुलवागीश्वरीं भजे ॥ ४७ ॥

अथ वक्ष्ये गणेशस्य ध्यानं गीर्वाणपूजिते ।

आगमामृतपीयूषे दुर्लभे भुवनेऽम्बिके ॥ ४८ ॥

द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं

मुसलाम्मोजधरोरगोपवीतम् ।

द्विमृगाधिपगामिनं त्रिनेत्रं

शिवपुत्रं द्विरदाननं भजेऽहम् ॥ ४९ ॥

अथ ध्यानं कुमारस्य वक्ष्यामि शृणु पार्वति ।

निःसृतभागमोद्द्योते मया विरचिते स्त्रयम् ॥ ५० ॥

हिमाद्रिगौरं^१ द्विभुजं भुजङ्गैः

परीतगात्रं शिखिविष्टरस्यम् ।

नगेन्द्रकन्याप्रियपुत्रमाद्यं

हृदि स्मरेऽभीष्टप्रदं कुमारम् ॥ ५१ ॥

हैहयस्य ब्रवीम्येवं ध्यानं तव कुतूहलात् ।

यथाभीष्टप्रदं नृणामुद्दामरविनिश्चितम् ॥ ५२ ॥

सहस्रभुजमण्डलीनिततभीचरेशाधिपं

द्विमांशुसदृशाननं धृतसहस्रतूष्णीरकम् ।

सिताम्बरधरं सदा तुरगराजमध्यस्थितं

स्मरामि भुवनाधिपं हृदि तु कार्त्तवीर्यार्जुनम् ॥ ५३ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि ध्यानं तस्य विनिःसृतम् ।

मृत्युञ्जयस्य देवस्य ग्रन्थे कुञ्जाशिरोमणौ ॥ ५४ ॥

चन्द्रोज्जासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बृहद्
इस्तान्जेन सुधांशुकोटिविमलं इस्तस्थपङ्केरुहम् ।

सूर्योर्गान्दुविलोचनं करतलैः पाशाचस्रत्राङ्कुशा-

म्भोजान्विभ्रतमत्तयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं सरे ॥ ५५ ॥

सुग्रीवस्याथ वक्ष्येऽहं ध्यानं पर्वतनन्दिनि ।

कुलचूडामणौ ग्रन्थे निर्मिते मन्त्रसागरे ॥ ५६ ॥

पालं षोडशहायनं कपिपतिं बहिप्रमामास्वरं

दोभिर्द्विचगदाधनुःशरचयान् संविभ्रतं चादरात् ।

सीतौमार्गणसकृवानरवलैराराध्यमानं भजे

काकुत्स्थं भजमानमर्कतनयं सुग्रीवदेवं हृदि ॥ ५७ ॥

अथाहं ते हनुमतो ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।

कुलचूडामणौ ग्रन्थे परितेश्वरनन्दिनि ॥ ५८ ॥

रामेष्टामित्रं जगदेकवीरं

सुवक्त्रराजेन्द्रकृतप्रणामम् ।

सुमेरुशृङ्गाभमचिन्त्यमाद्यं

हृदि सरेऽहं हनुमन्तमीड्यम् ॥ ५९ ॥

अथ ते भैरवस्याहं ध्यानं वक्ष्यामि पार्वति ।

निःसृतं भैरवे तन्त्रे यथाभीष्टफलप्रदम् ॥ ६० ॥

कपालहस्तं भुजगोपवीरं

कृष्णञ्जलिं दण्डधरं त्रिनेत्रम् ।

अचिन्त्यमाद्यं मधुपानसक्रं

हृदि सरे भैरवमिष्टदं तम् ॥ ६१ ॥

अथ वक्ष्यामि सूर्यस्य ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम् ।

‘चन्द्रासृताञ्जावित’ म. पाठः । २ ‘सादरात्’ म. पाठः । ३ ‘वक्ष्य
रत्नरूपिण्य रघुपतिमादाधयन्त सुधा ध्यायेऽहं भगवन्तमर्कतनय’ ख. पाठः ।

त्रिपुरासर्वस्वे ग्रन्थे दक्षिणामूर्तिना कृते ॥ ६२ ॥

प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्र-

मरीचिभिः शोभितभूमिदेशम् ।

सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं

देवं भजेऽहं मिहिरं हृदन्जे ॥ ६३ ॥

अथ वक्ष्यामि सौम्यस्य ध्यानं भैरवतन्त्रके ।

यथाभीष्टप्रदं सत्यं सुरासुरनमस्कृते ॥ ६४ ॥

सोमात्मजं हंसगतं दिवाहुं

शङ्खेन्दुरूपं ह्यसिपाशहस्तम् ।

दयानिधिं भूषणभूषिताङ्गं

बुधं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ६५ ॥

अथ वक्ष्यामि शुक्रस्य ध्यानं तन्त्रविनिश्चितम् ।

कुब्जिकासर्वस्वे ग्रन्थे ब्रह्मणैव प्रकाशिते ॥ ६६ ॥

सन्तप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं

पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वन्द्वशूलम् ।

कौश्चासनं ह्यसुरसेवितपादपद्मं

शुक्रं स्मरे दिनयनं हृदि पङ्कजेऽहम् ॥ ६७ ॥

अथ वक्ष्यामि जीवस्य शृणु पार्वति तत्त्वतः ।

ध्यानं भैरवतन्त्रोक्तं सकलार्थप्रदं नृणाम् ॥ ६८ ॥

तेजोमयं शक्तिविशूलहस्तं

सुरेन्द्रज्येष्ठैः स्तुतपादपद्मम् ।

मेघानिधिं हस्तिगतं दिवाहुं

गुरुं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ६९ ॥

अथ वक्ष्यामि चन्द्रस्य ध्यानं देवि शृणु प्रिये ।
 निःसृतमागमोद्योते नानाध्यानसरित्पतौ ॥ ७० ॥
 शङ्खप्रभमेणप्रियं शशाङ्क-
 मीशानमौलिस्थितमील्यवृत्तम् ।
 तमीपतिं नीरंजयुग्महस्तं
 ध्याये हृदये शशिनं ग्रदेशम् ॥ ७१ ॥
 अथ वक्ष्यामि भौमस्य ध्यानं तत्रविनिश्चितम् ।
 आगमामृतमञ्जयां शृणुष्वैकमनाः प्रिये ॥ ७२ ॥
 प्रतप्तगाङ्गेयनिभं ग्रदेशं
 सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम् ।
 सुरासुरैः पूजितपादपद्मं
 भौमं दयालुं हृदये स्मरामि ॥ ७३ ॥
 अथ वक्ष्ये शनेर्ध्यानं यथाभीष्टफलप्रदम् ।
 निःसृतं च महेशानि शुभदमागमामृते ॥ ७४ ॥
 नीलाञ्जनाभं मिहिरेष्टपुत्रं
 ग्रेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम् ।
 सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं
 शनिं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ७५ ॥
 अथाहं सैहिकेयस्य ध्यानं वक्ष्यामि त्वं शृणु ।
 निःसृतं फलदं नृणां तत्रै वै नामकेधरे ॥ ७६ ॥
 शीतांशुमित्रान्तकमील्यरूपं
 धोरं च वैदर्पनिभं विवाहुम् ।
 प्रैलोक्यरक्षापरमिष्टदं च
 राहुं ग्रहेन्द्रं हृदये स्मरामि ॥ ७७ ॥

अथ वक्ष्यामि केतोश्च ध्यानमागमनिश्चितम् ।

निःसृतमागमोद्घोते ग्रन्थे वै तत्रसागरे ॥ ७८ ॥

लाङ्गुलपुङ्कं भयदं जनानां

कृष्णाम्बुभृत्सन्निभमेकवीरम् ।

कृष्णाम्बरं शक्तित्रिशूलहस्तं

केतुं भजे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ७९ ॥

अथ वक्ष्यामि देवेशि भवानीध्यानमुत्तमम् ।

कुलचूडामणौ ग्रन्थे निःसृतं भुवनेश्वरि ॥ ८० ॥

अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्

सुधनुःशूलकर्जनीर्दधानाम् ।

भयदां महिषोत्तमाङ्गसंस्थां

नवदूर्वासदृशीं भजे भवानीम् ॥ ८१ ॥

अथाहं वगलामुख्या ध्यानं वक्ष्यामि निःसृतम् ।

आगमामृतमञ्जर्यां सुरासुरनमस्कृते ॥ ८२ ॥

नानारत्ननिबद्धरम्यमुकुटां पीताम्बरां भाग्यदां

धर्माश्वग्निशशाङ्कररिमनयनां सिंहासनस्थां शिवाम् ।

सच्चण्डोशरता^१ महार्घमणिभिरुद्भासिताङ्गीं सदा

देवीं श्रीवगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदां मुक्तिदाम् ॥ ८३ ॥

अथ वक्ष्ये शृणोषि तमिन्द्राक्षीध्यानमुत्तमम् ।

निःसृतं जगदीशानि ग्रन्थे वै रुद्रयामले ॥ ८४ ॥

१ 'मन्त्र' ख, पाठः । २ 'र्दधाना' । भवती महिषोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वा-
सदृशी धियेऽस्तु दुर्गा' क. पाठः । ३ 'सच्चण्डोशरता' ख,
सद्गङ्गाक्षेपनिभा ग. पाठः ।

मालास्यङ्कुशयन्त्रयुग्मकधरां चक्षुःसहस्राङ्कितां

मत्सैरावणपृष्ठगां शशिमुखीं त्रैलोक्यरक्षापराम् ।

दोर्मिर्गानरतां स्फुटाम्बुजनिभां ब्रह्मादिदेवैः स्तुता-

मिन्द्रार्चीं जनमातरं हृदि मजे कारुण्यरूपां पराम् ॥ ८५ ॥

अथ वक्ष्ये महेशानि खेचरीं ध्यानमुत्तमम् ।

पां ध्यात्वा खेचरीं योगी जीवन्मुक्तो भवेत् कलौ ।

ग्रन्थे भैरवतन्त्राख्ये निःसृतं त्रिदशार्चिते ॥ ८६ ॥

विनिन्द्रकमलोत्पलैर्मुनिभिरर्चिताङ्घ्रिद्वयां

सितां सितकराम्बुजां सितकरोज्ज्वलच्छेराम् ।

रवीन्दुशिखिलोचनामभयपुस्तकौ विभ्रतीं

स्मरामि हृदि खेचरीं भुवनमातरं सिद्धिदाम् ॥ ८७ ॥

एतासां देवदेवेशि मन्त्रध्यानचयं स्मृतम् ।

यस्य कस्य न दातव्यं ग्रन्थमुद्धारकोशकम् ॥ ८८ ॥

ऋषय ऊचुः ।

धन्यः स यस्य पुत्रस्त्वं सकलागमपारगः ।

जय त्वं स्वर्गं गन्तुमाज्ञापयितुमर्हसि ॥ ८९ ॥

दक्षिणामूर्तिः ।

गच्छध्वं मुनयः सर्वे क्षमध्वं कृपया मम ।

इत्युक्त्वा मुनयो जग्मुः स्वर्गं मन्त्रलालसाः ॥ ९० ॥

श्रीर्धर उवाच ।

दक्षिणामूर्तिना तेन दृष्ट्वा तन्मन्त्रान्मनोरमान् ।

कृतमुद्धारकोशाख्यं ग्रन्थं गोप्यतमं कुरु ॥ ९१ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

क्रीतासि भवतानेन ग्रन्थेनाहं सुरेश्वर ।

इत्युक्त्वा सुमहाकुञ्जं कैलासाद्रेथ जगत्तुः ।

उभौ तावम्बिका देवी देवश्च चन्द्रशेखरः ॥ ६२ ॥

इति श्रीदक्षिणामूर्तिमुनिधिरचिते उद्धारकोशे
सर्वागमसारे षोडशदेवी—सतदेवी—सप्तकुमार—नवग्रह—
त्रिदेवी—खेचरीभ्यानकोशनिरूपण सप्तमः कल्प ॥ ७ ॥

JAYNADAS THAKAR

18, 253, STOK-M

BOMBAY 400 022 INDIA

—————) & (—————

समाप्तश्चायमुद्धारकोश इति शिवम् ।

